सबलसिंह-चौहान-विरचित

महाभारत

अठारहों पर्व

क्षत्रिय तनु धरि रन चलें, धन्य धन्य हम आज।

उत्तरा



अभिमन्यु

त्यागें विलम्बु न मानियें, भयो सफल सब काज॥

प्रकाशक—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

नवाँ बार]

[मूल्य ६)

सन् १६४६ ई०

विषय-सूची

भीष्मपर्व

द्रोणपर्व

कर्णपर्व

शल्यपर्व

गदापर्व

सौप्तिकपर्व

—:०:—

महाभारत

आदिपर्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण की रीति पर
दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है.

जिसमें

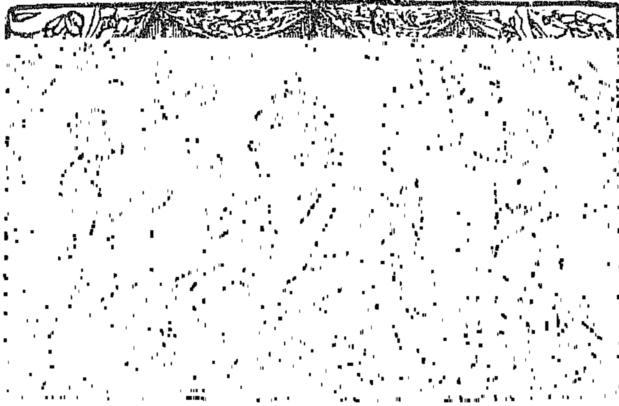
संक्षिप्त ब्योरा कौरव पाण्डवों के वंशानुचरित का कौरव पाण्डवों
के गेंद खेलने और विरोध की कथा द्रोणगुरु का आना और
अस्त्रविद्या सीखनी लाक्षाभवन बनाकर पाण्डवों को
दुःख देना व सुरंग द्वारा वन में निकल जाना व
द्रौपदी विवाहादि अनेक कथा वर्णित हैं.

तेरहवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बिपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से
मुन्शी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छापी गई

सन् १९४६ ई० ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारतभाषाआदिपर्व ॥

दो० गजमुख सुखकर दुखहरण, तोहिं कहौं शिरनाय ।
कीजै यश लीजै विनय, दीजै ग्रन्थ बनाय ॥
जगदीश्वर को धन्य जिन, उपजायो संसार ।
क्षिति जल नभ पावक पवन, करि इनको बिस्तार ॥
नृपहि दास दासहि नृपति, पवितृणातृणहिंपखान।
जलधिअल्पसर लघुसरहि, उदधि करै क्षणमान ॥

प्रथमहिं आदिपुरुष को ध्यावों ❀ जा प्रसाद शिक्षा सब पावों
परमपुरुष आखण्डित रूपा ❀ है सर्वोतम रूप अनूपा
अक्षर कृष्ण अक्षर मंझारा ❀ जाने देखत सब संसारा
अक्षर भये हैं कृष्ण अभङ्गा ❀ परमपुरुष कर रूप अनङ्गा
जो सर्वज्ञ लेप निर्लेपा ❀ ता महिमा को कह संक्षेपा
जाके नाम तरत संसारा ❀ जाहि नाम दुखशोक सँहारा
एक ब्रह्म ते अगणित रङ्गा ❀ बरण बरण संसारप अङ्गा
ता माया सब देवता भयऊ ❀ त्रिगुण एक ते गुण निर्मयऊ
पुरुषकबीज मूल पुनि स्वारहि ❀ मूलरूप बरणों निरकारहि
हरिहर कृष्ण तो शाखा भयऊ ❀ जन्म बोध संहारण लयऊ

दो० एक ब्रह्म बहुरूप है, जानि जात नहिं भेद ।
नानारूपक त्याहि बिषे, महिमा भाषत बेद ॥

कहौं निरञ्जन पुरुष प्रधाना ❀ पुनःव्यास मुनि गुणकेनिधाना
हरिविरंचि कोउ भेद न पावहिं ❀ कै भाषा संक्षेप कछु गावहिं
महामुनी जो व्यास बखाना ❀ श्रीभगवन्त चरित जिनजाना
जनमेजय राजा अवतारा ❀ धर्मरूप न्रुप्सता कुमारा
एकै समय व्यासमुनि आये ❀ राजसभा के माहिं सिधाये
पूजार्घा तब राजा कीन्हों ❀ हर्ष गात कछु पूछै लीन्हों
सबही देख्यो तुम महभारथ ❀ कौरव पाण्डवकर पुरुषारथ
कौन प्रकार चरित्र अपारा ❀ मारे कौरव पंच कुमारा

दो० औरौ बंश चरित्र जो, सुनिये तोहिं प्रसाद ।
जाहि सुनत जो महामुनि, नाशत चित्तबिषाद ॥

सुनिकै व्यास कहै नृप पाहीं ❀ यह अब कहैके अवसर नाहीं
वैशम्पायन शिष्य हमारा ❀ सो तो कहै चरित्र अपारा
यहकहिव्यासमुनिबनहिंसिधाये ❀ वैशम्पायन कथा सुनाये
प्रथमहिं कहो बंश बिस्तारा ❀ जामें भये नृप अमित प्रकारा
कृष्णपुत्र मारीच सु भयऊ ❀ मारिच सूरसभा निर्मयऊ
सूरसभा पुत्र सूर्यावतारा ❀ सूर्य पुत्र स्वायम्भु भुवारा
स्वयम्भुपुत्र नक्षत्रपति भयऊ ❀ बुद्धनाम सुत ता निर्मयऊ
ताके पुत्र अनूपम आही ❀ वेद पुराण प्रशंसत जाही
अनुपम पुत्र नहंस भुवारा ❀ नहंस पुत्र संजाति संसारा
संजाति पुत्र मरे जनमाहीं ❀ संजाति पुत्र अनूपम आहीं

दो० संजातिपुत्र है प्रहजम्मा, जगत महासंचार ।
तस्य पुत्र जो भोज भे, सुनो जो बचन सुसार ॥

भोजपुत्र भयो सन्त अवतारा ❀ भरत नाम भयो तासु कुमारा
मञ्जमीठ ताके सुत भयऊ ❀ तासु पुत्र महा निर्मयऊ
बिष्णुसुता सत्य भुवनके माहीं ❀ तासुपुत्र शन्तनु नृपआहीं
बिचित्रवीर्य है तासु कुमारा ❀ तीन्हो जासु पाण्डु अवतारा
भये पाण्डुसुत अर्जुन नामा ❀ अर्जुनसुत अभिमन्यु गुणधामा

अभिमन्युपुत्र परीक्षित रहाऊ ❀ जनमेजय तिनके सुत भयऊ
यहि प्रकार भा वंश बिस्तारा ❀ सोम वंश शंतनु है भुवारा
महाबली जानत संसारी ❀ करै राज्य नित नीति बिचारी
अधमा नाम रहै पटरानी ❀ रूपवन्त ना जाइ बखानी
गौरी रति जब देखि लजाहीं ❀ तीनिलोक तासम है नाहीं
दो० ब्रह्माका मन मोहिकै, हरण भयो तब ज्ञान।
तासु रूप देखे बिना, भूलिजात सब ज्ञान॥
शंतनु राजा गये शिकारा ❀ ब्रह्मा शंतनु गेह सिधारा
ब्रह्मा रानी के ढिग गयऊ ❀ करि बहुयतन कामसुख लयऊ
करिकै भोग ब्रह्मलोक सिधाये ❀ शंतनु राजा गृह तब आये
रानी कथा सबै बिस्तारा ❀ शंतनु लज्जित क्रोध अपारा
स्त्री जानि बधन नहिं करेऊ ❀ तब राजा संगति परिहरेऊ
सो रानी बहु लज्जा पाई ❀ गङ्गाजी में प्राण गँवाई
आगे सुनु राजा मन जानी ❀ शंतनु के घर नहिं है रानी
पूर्व बशिष्ठ है सुर पुरमाहीं ❀ अष्टबासु हैं तहां जो आहीं
गौ बशिष्ठ की चोरी कीन्हा ❀ क्रोधित ऋषै शाप तब दीन्हा
आपन गवसचोर भो आपा ❀ मानुष जन्म मृत्यु परितापा
दो० मानुष जन्म होउगे, भुगतौ लोक मँझार।
शापै दीन्ह बशिष्ठ तब, अतिक्रोधित संचार॥
सब देवन मिलि कीन्ह बिचारा ❀ अष्टबासु जन्महिं संसारा
तब देवन गङ्गा हँकराई ❀ शाप हेतु तब कह समुझाई
तुम्हरे गर्भ जन्म पर भावैं ❀ अष्टबासु मुक्त तन पावैं
मानुषरूप धरौ अवतारा ❀ जन्म बर्षलौं गर्भ मँझारा
गङ्गा जाना पर उपकारी ❀ मानुष रूप मध्य कै धारी
खोजा सबहि जगत संसारा ❀ कहां जाउँ को पुरुष हमारा
करै बिचार कहै तब बाता ❀ शंतनु भूप सबै जग ज्ञाता
राजा तबै अखेटक गयऊ ❀ बन महँ गङ्गा दर्शन दयऊ

शंतनु मोहे देखत नारी ❁ तब गङ्गासन कह्यो बिचारी
कौन रूप बन हेतु हौ काहा ❁ कहौ सत्य सो हमहीं पाहा
दो० गङ्गा कह्यो बात असि, देवाङ्गना हम जान ।
बाचा बँध सोई पुरुष, कन्या कहा बखान ॥
राजा हर्षित बाचा कीन्हीं ❁ तब गङ्गा यह बोलै लीन्हीं
कौनौ कर्म करत जब राऊ ❁ तामहँ भङ्ग देव जनि पाऊ
तादिन हमहिं न पैहौ राजा ❁ यहि बाचा सो बंध है काजा
तब राजा घरको लै आये ❁ हर्षवन्त बधाय बजवाये
राजा रहै हर्ष मन माहीं ❁ परम हर्ष सों बासर जाहीं
बहुतक दिन बीते यहि भांती ❁ बालक एक गर्भ जन्माती
राजा हर्ष बहुत मन कीन्हा ❁ बहुत दान बिप्रनकहँ दीन्हा
गङ्गा कर्म अचरजा सारा ❁ बालक लैकै जलमहँ डारा
अन्त प्राण बालक के गयऊ ❁ बिस्मय मनमहँ राजा भयऊ
कहत नहीं कछु बाचाबांधे ❁ रहा दुःख हिरदयमहँ साधे
दो० यहि प्रकार सों गङ्ग तब, सात पुत्र जलडार ।
बाचा बँध हित राजा, महादुखित खंभार ॥
अष्टम गर्भहि भा संचारा ❁ तब शंतनु बिनती अनुसारा
सात पुत्र के नाशे आना ❁ याहि पुत्र हमको देउ दाना
हँसिकै गङ्गा तब यह कही ❁ इतने दिन तुम्हरे सँग रही
बाचा छल आजुइ भा आनी ❁ हम हैं गङ्गा कहत बखानी
अष्टम राजा आप बचाया ❁ यह कनिष्ठ जो अष्टम आया
यह बृत्तान्त कहौं तोहिं पाहीं ❁ राजा सुनौ कथा मनमाहीं
कामधेनु बशिष्ठ की आही ❁ अष्टबासु हरण कर ताही
याही पाप शाप उन दीन्हो ❁ मानुष कर्म चोर इन कीन्हो
ताते शाप लेउ समुदाई ❁ यहै कनिष्ठ हरण कर गाई
दो० यहै हेतु हम मनुष तन, गङ्गा कहत बिचार ।
परउपकार के कारणै, मेरोहि साथ तुम्हार ॥

गङ्गा पुत्र गोद कर लीन्हा ❀ स्वर्गहिलोक गमन तब कीन्हा
इन्द्र बरुण यम पावक पाहीं ❀ औ दिक्पाल मिलायो ताहीं
सब ते कहा पुत्र यह मोरा ❀ ताते दरश करौं जो तोरा
सबहिं कृपा कीजै यहि काजा ❀ गङ्गा भाष्यो देव समाजा
रण में अजय होहु बरदेवा ❀ पुत्र हमार जानु यह भेवा
सबहि देवता कहि तब बाता ❀ रण में अजय होइ कह माता
जब लग अस्त्र रहै करमाहीं ❀ तीनि लोक कोउ जीतहि नाहीं
सौंपा शन्तनु को तब जाई ❀ और कहा बहुतक समुझाई
और एक कंकण तब दीन्हा ❀ हर्षि गात राजा लै लीन्हा
जाके हाथ बराबर होई ❀ ताकर ब्याह करब नृप सोई

दो० यह कहिकै तब जाह्नवी, भई जो अन्तर्द्धान ।
राजा पुत्रहिं पालही, सबलसिंह चौहान ॥

पांच सात बर्ष कर भयऊ ❀ परशुराम पहँ पढ़ने गयऊ
परशुराम किरपा बहु कीन्हा ❀ विद्या राजनीति सब दीन्हा
अस्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा ❀ आपु समान कीन्ह संचारा
भृगुपति बहुत दया तब कीन्हा ❀ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हा
पढ़ि जो विद्या भीषम आये ❀ बैशम्पायन कथा सुनाये
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ ❀ महाहर्ष शंतनु मन ठयऊ
आगे कही कथा बिस्तारा ❀ सावधान होइ सुनो भुवारा
जैस ब्यासमुनि को अवतारा ❀ सत्यवती के गर्भ मँझारा
जैसे सत्यवती अवतारा ❀ तासु पुत्र मुनिब्यास कुमारा
सुनत कथा पाप कर नासा ❀ पावत अन्त परमपद बासा

दो० भारत कथा पुण्यफल, राजा सुनु बिस्तार ।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोबिन्द अपार ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

वैशम्पायन करत बखाना ❀ जनमेजय राजा सुनि ध्याना
वस्वरुपचर राजा बलवन्ता ❀ महासुशील बीर गुणवन्ता
गिरिका नाम तासु यह रानी ❀ रूप शील नहिं जाइ बखानी
रजस्वला सो रानी भयऊ ❀ तादिन राउ अखेटक गयऊ
मारे साउज मृगा अपारा ❀ जल आश्रम राजा पगुधारा
सरवर एक अनूप सुहावा ❀ नाना जन्तु कमल बहुछावा
कञ्ज महा भँवरा इक आही ❀ केलिकरत भँवरी के पाही
राजा देखि कामबश भयऊ ❀ भूलि ज्ञान राजा का गयऊ
रानी रूप हृदय धरि राऊ ❀ वीर्यपात भयो वाही ठाऊ
राजा कही बीर्य दे आहीं ❀ तासुको तेज पताकहि जाहीं

दो० मन बिचार कर राजा, पक्षी शुकहिं बुलाइ ।
पद्मपत्र दोना कियो, ताहि बीर्य सौंपाइ ॥

भाष्यउ राज पक्षि सों बानी ❀ देहु बीर्य यह जहँ है रानी
कहि संदेश तुरत मो आवहु ❀ तब पक्षी तुम बात सुनावहु
पक्षी बीर्य चलेउ लै तबहीं ❀ आधो मारग पहुँचो जबहीं
नदी एक के ऊपर आयो ❀ पक्षि सकल देखन तब धायो
तिन्हैं देखि गहि जानि अहारा ❀ दूनौं पक्षिन युद्ध सँचारा
एक बुन्द जल महँ पर सोई ❀ महा युद्ध पक्षिनमहँ होई
जौन बुन्द जल माहीं डारा ❀ एक मच्छि तब कीन्ह अहारा
दूनौं पक्षी लरत सो जाहीं ❀ दोना कतहूं गयो उड़ाहीं
जौनि मच्छ सो कीन्ह अहारा ❀ गर्भवन्त भै जल मंझारा

दो० बहुत दिना तब बीतिगे, बिधि परपञ्च उपाइ ।
धीमर एक अखेट कहँ, मच्छि हेतु तहँ जाइ ॥

ओही मच्छि जालमहँ परी ❀ दीरघ मच्छि देखि सुखकरी
हासा राम तहां कर राऊ ❀ धीमर मीन लाइ ता दाऊ
राजा मच्छि देखि बिस्तारा ❀ तब मच्छीकर उदर बिदारा

तासु उदर में देखि भुवारी ❀ कन्या एक अनूप कुमारी
मच्छराज मन हर्ष अपारा ❀ बोल्यउ वचन समय अनुसारा
मच्छ देश पति राजा सोई ❀ निश्चय राजा जानहु होई
कन्या नृप केवट को दीन्हा ❀ मच्छोदरी नाम त्यहि कीन्हा
बहुत प्रीति केवट सों राऊ ❀ कन्या पालत अपने ठाऊ
सात बर्ष की कन्या भयऊ ❀ नदी माहिं सो कन्या गयऊ
केवट व्याधी तनमों गही ❀ नाव घाट में कन्या रही

दो॰ यहि प्रकारते राजा, सुनौ और बिस्तार।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पगुधार॥

नदी घाट पाराशर जाई ❀ मच्छोदरि को देख्यउ आई
कन्या देखि मोहि मुनि गयऊ ❀ कामातुर पाराशर कहेऊ
लगन देखि ऐसा मुनि ताही ❀ जन्महि पुत्र सो पण्डितमाही
कन्या पाहिं कहा मुनिबाता ❀ नदीघाटकर मत सख्याता
काम जो अनी पंचशर मारा ❀ स्त्री मानहु वचन हमारा
रति दानहिं दे हमको नारी ❀ सुनि कन्या लज्जा भइ भारी
कन्या कहा बाल तन मोरा ❀ जानों काह कामगति तोरा
दिवस माहिं देखहिं नर नाना ❀ कैसे तुम मांगो रति दाना
ऋषि जो कहत न वचन बिचारी ❀ योजनगन्धा नाम तुम्हारी
यौवनवन्त होहु क्षणमाही ❀ अन्ध कुहिर होवै पुनि ताही

दो॰ यौवनवन्त भई सुता, औ सुगन्ध तनु सान।
दशौदिशा अँधियार भा, कन्यादिय रतिदान॥

रति रस पाराशर तब कीन्हा ❀ व्यासदेव जन्महिं तब लीन्हा
जन्मेउ बालक गर्भ मँझारा ❀ पिता संग तब बन पगु धारा
पुत्र हेतु रोवत सो रानी ❀ तबै व्यास अस कहउ बखानी
बिष्णू माया जन्म हमारा ❀ कौन काज दुख करो अपारा
तप के काज पिता सँग जैहौं ❀ सुमिरत मन्त्र तुरतही ऐहौं
कन्या कह मम भयो कलंका ❀ लोकलाज कर्महु मौबंका

पाराशर भाष्यो बिस्तारी ❀ आशिष मोर होहु सुकुमारी
पाराशर वन तबहीं गयऊ ❀ ब्यासदेव पुत्रहि सँग लयऊ
कन्या तब अपने गृह आई ❀ यह बृत्तांत सुनौहो राई
ऐसो ब्यासदेव अवतारा ❀ भाष्यो मुनिवर सुनो भुवारा

दो० ब्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान।
पुण्य कथा श्री भारत, जा सुनि पाप नशान॥

शंतनु राजा कैतिक काला ❀ उपजा चित्तहेतु सो बाला
पुरबै गङ्गा कंकण दीन्हा ❀ जगतसकल उमान सो कीन्हा
काहू के कर होत सो नाहीं ❀ खोज्यो सकलजगत के माहीं
मत्स्योदरि केवटकै बारी ❀ ताके करमहँ भयो बिचारी
राजा कहै सुन्यो तब बाता ❀ ब्याहव सा कन्या बिख्याता
भीषम कहै जाति की हीना ❀ कौन बुद्धि यहि बिधिने दीना
शंतनुहूं कीन्ह्यो यह कामना ❀ भीषम कह्यो ब्याह अनबना
भीषम केवट सन कह जाई ❀ राजा ब्याह करन तव आई
केवट कह बाचा करि लेऊं ❀ तब कन्या राजा कहँ देऊं
मोरि कन्या के गर्भ अवतारा ❀ सोई राज्य करब संसारा

दो० भीषम तब कीन्हो सोई, बचनबन्ध परमाण।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण॥

भीषम प्रण कीन्हो ता पाहा ❀ जगतमाहँ ना करौं बिवाहा
योग रूप रैहौं सेवकाई ❀ कन्या देउँ पिता को जाई
बाचाबन्ध जब भीषम कीन्हा ❀ केवट राजहि कन्या दीन्हा
ऐसे शंतनु ब्याही जाई ❀ सत्यावती नाम सो पाई
सत्यवती पटरानी भयऊ ❀ राज्यभोग तब शंतनु कियऊ
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा ❀ बिचित्रबीर्य दूसर अवतारा
दूनौं पुत्र भये नृप बारा ❀ महाबली गुण रूप अपारा
चित्राङ्गदहि राज्य तब दीन्हा ❀ कछुकहिदिवसराज्य उनकीन्हा
अन्तकाल शंतनु को भयऊ ❀ स्वर्गलोक राजा तब गयऊ

दो० क्रिया कर्म शन्तनु कर, कीन्हो तीनि कुमार।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार॥

देशराज्य भीषम रखवारा ❀ चित्राङ्गद भो राजभुवारा
महायशी राजा यह भयऊ ❀ वैशम्पायन राजहि कह्यऊ
भीषम जो प्रतिपालहिं राजहिं ❀ धर्मशास्त्रकाहत हरि काजहिं
यहि प्रकार भारत बिस्तारा ❀ आदि पर्व संक्षेप पसारा
कहत होत बहु कथा अपारा ❀ राजा सुनु यह बहुबिस्तारा

दो० भारतकथा पुण्य फल, कहतहि पाप बिनाश।
सबलसिंह चौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

वैशम्पायन उवाच॥

राजा सुनौ कथा बिस्तारा ❀ काशीराजा बीर भुवारा
कन्या तीनि तासुघर रहई ❀ तिनके नाम सुनौ तौ कहई
अम्बे जेठि अम्बिका नामा ❀ सबते छोटि अँबालिका जाना
बरषैं दश बीते जब तासू ❀ तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू
देश देशके राजा आये ❀ सत्यावती कतहुँ सुनि पाये
भीषम पाहिं कहा तब रानी ❀ बन्धु बिवाहो कन्या आनी
जीति स्वयम्बर कन्या लीजे ❀ दूनौं बन्धु ब्याह करदीजे
यह सुनिकै भीषम रथसाजा ❀ काशी गये जहां सब राजा
तीनौं कन्या रूप अपारा ❀ पटभूषणयुत यज्ञ मँझारा
मन वाञ्छित बर चाहत सोई ❀ हाथे माल उपस्थित होई

दो० तीनौं कन्या एक सँग, जयमाला लिये हाथ।
मन बाञ्छित बर चाहतीं, आये बहु नर नाथ॥

तीनौं कन्या एकहि साथा ❀ भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा
तीनौं कन्या रथहि चढ़ाई ❀ हांका रथ तब चला उड़ाई

कन्या आरत नाद पुकारा ❀ रण ठाढ़े तब सबै भुवारा
भयो युद्ध तहँ बरणि न जाई ❀ भीषम जीते सब जगराई
राजन अस्त्र अनेक प्रहारे ❀ भीषम बीर काटि सब डारे
देवन को बर भीषम पाहीं ❀ को जीते सन्मुख रणमाहीं
हारे सब राजा बलधारी ❀ भीषम लैगयो तीनिउ क्वांरी
तीनों कन्या गहि लै आये ❀ सत्यावती मातु सुख पाये
चित्राङ्गद अम्बिका विवाही ❀ बिचित्रवीर्य अम्बि उरलाही
दोउ बन्धु दुइकन्या ब्याहीं ❀ अम्बालिका कह भीषम पाहीं

दो० हमको हरण कीन तुम, गह्यो बांह सों बांह।
जो अपना सुख चहौ तुम, हमसन करौ बिवाह॥

भीषम कह प्रणहवै हमारा ❀ स्त्री भोग तजा संसारा
स्त्री भोग पुत्र जो होई ❀ राजबंश दुइ होई सोई
हम तजि राज्य तात के कारन ❀ स्त्री भोग तजा संसारन
कन्या सुनतहि भई निरासा ❀ रोवतिचलि भृगुपति के पासा
भीषम केर गुरू उनजाना ❀ ता कारण तहँ कीन पयाना
जाइ दुःख भृगुपति सों कहै ❀ भीषम पाप करत जो अहै
हरि लायो ममकारण ब्याहा ❀ ताते कहौं बात भृगुनाहा
परशुराम क्रोधित मन भयऊ ❀ कन्या लै भीषम पहँ गयऊ
भीषम पाहिं कह्यो भृगुनाथा ❀ तुम हरिलायो पकर्‌यो हाथा

दो० नारि भोग अरु राज्यसुख, तजा पिता के काज।
अब जो ब्याहहि कीजिये, होत जन्म कुललाज॥

परशुराम तबहीं अस भाषहिं ❀ जीतो युद्ध हमारे साथहिं
बचन हमार करौ परमाना ❀ नातरु रण ठानहु मैदाना
तोहिं जीतिहौं कन्या देऊ ❀ भृगुनन्दन काहै यह भेऊ
भीषम प्रण करिकै रणठाना ❀ गुरुशिष्यकीन कठिनसंधाना
सातदिनालौं भा रणभारी ❀ दोऊ बीर महा धनुधारी
सुर बरदानिक भीषम आही ❀ जगत माहिं को जीतन चाही

अतिही मारु करै भृगुनाथा ❀ जय नहिं पायो भीषम साथा
सात दिना लौं भो रण भारी ❀ भीषम युद्ध भयो अनुहारी
बहुतक शर मारे भृगुनाथा ❀ जय नहिं पायो भीषम साथा
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना ❀ तब अकुलाय शाप यह दीना

दो० गुरु अपमान कीन तुम, क्षत्री है संसार।
अस्त्रहीन है मृत्यु तुव, सन्मुख रण मंझार॥

कीन्ह्यो क्षत्री गुरु अपमाना ❀ तब अपमान तजौ रणग्राना
और प्रतिज्ञा यहै हमारा ❀ जेतक क्षत्री जगत मँझारा
इन्हें अस्त्र देवें अब नाहीं ❀ यहै प्रतिज्ञा अब मन माहीं
परशुराम तौ यह कहि जाई ❀ भै निराश कन्या वहि ठाई
पक्ष करत हारे भृगुनाथा ❀ हमको विधना कीन्ह अनाथा
धिक है जीवन जन्म हमारा ❀ अब धिक रहौं जगत मंझारा
तब भीषम पहँ कहे रिसाई ❀ तो कहँ भीषम मारब जाई
भोरे पाप तोर शिर भारा ❀ मो दरशन ते रण संहारा
यहै शाप भीषम कहँ दीन्हा ❀ तब कन्याहिं सरारचि लीन्हा
महादुखित पावक तनु जारा ❀ सोई कन्या भइ जरि छारा

दो० यहि प्रकार ते कन्या, तजि पावक में प्रान।
सोई जन्मी द्रुपदघर, जाहि शिखण्डी नाम॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❀ विदरदेश महँ एक नरेशा
शुद्रानाम तब कन्या अहई ❀ ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा ❀ विचित्रवीर्यकी दासी कीन्हा
वैशम्पायन कहत बखानी ❀ सुनु राजा तुव वंश कहानी
भीषम महावीर जग जाना ❀ बानावरि नाहिं वीर समाना
देश राज प्रतिपालन करई ❀ राजा काज सदा मन धरई
भारत कथा पाप नहिं रहई ❀ तृणसमान अघ पावक दहई

दो० महभारत भाष्यउ यह, कीन्ही अल्प बखान।

सबलसिंह चौहान कह, सर्व पाप क्षय जान ॥
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्वे
वर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा सवधाना ❀ वैशम्पायन करत बखाना
चित्राङ्गद राजा पुर माहीं ❀ प्रेमरु हर्ष सदा मनमाहीं
इक दिन राजा गये शिकारा ❀ महा अगम कानन मंझारा
तहँ चित्राङ्गद गन्ध्रब रहई ❀ राजा देखि क्रोध सो कहई
मानुष है के गन्ध्रब नामा ❀ अब निश्चयकरि तजिहै जामा
बन में गन्ध्रब तबै प्रचारा ❀ चित्राङ्गद सों रण बिस्तारा
गन्ध्रब बीर बाण सौ मारे ❀ पैदल हय दल सब संहारे
गन्ध्रब गये स्वर्ग अस्थाना ❀ देशराज सब ब्याकुल नाना
दो० भीषमचितचिन्ता भई, कहँ गये बन्धु नरेश ।
बहुप्रकार ते खोजहीं, कतहुँन मिल्यो अँदेश॥
क्रियाकर्म ताहीकर कीन्हा ❀ बिचित्रबीर्यको राज्यहि दीन्हा
सत्यवती सो ब्याकुल होई ❀ पुत्रके हेतु मरत सो रोई
भीषम ज्ञान बुझावै ताहीं ❀ करि बिचार या मन के माहीं
यूवारूप कन्त का शोगा ❀ ताके ऊपर भयो बियोगा
रात्रिकाल गङ्गासुत जाई ❀ रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई
जाते मनै शान्ति दृढ़ आवै ❀ नीति कर्म सो कथा सुनावै
दिन केतिक तो ऐसे गयऊ ❀ बिचित्रबीर्य तब चरचै लयऊ
सर्व रात्रि माता के पाहीं ❀ भीषम कहा करै निशिमाहीं
पाप चित्त कै राजा जाई ❀ देखि पराक्रम जाइ दुराई
भीषम उत्तम अशन बनाये ❀ माता को तहँ लै बैठाये
दो० आप ज्ञान उपदेश ते, भाष्यउ तहां पुरान ।
जाते माता थीर मन, प्रकट होइ मन ज्ञान ॥
यहै कर्म देख्यउ तब राई ❀ त्राहि त्राहि करि चलेउ पराई

तब मनमें नृप करै बिचारा ❀ मनसों पाप न मिटै हमारा
प्रातकाल नृप रचेउ उपाई ❀ तब पूछ्यो भीषमसों आई
सुनौ बन्धु आशा कर मोहीं ❀ पुण्य अर्थ पूछौं मैं तोहीं
मनसा पाप जो चित में करै ❀ कौन प्रकार जगत में तरै
गुरुजन पर जो पाप सँचारा ❀ कैसे बन्धु होइ निस्तारा
भीषम भाष्यो अर्थ पुराना ❀ पूछि सहज मनमें असजाना
अनदोषहि जो दोष लगावै ❀ तौ गुरुजन को जगत सतावै
काशी माहँ जो करै प्रवेशा ❀ पावक महँ तनु दहै नरेशा
ताको पाप हरण तब होई ❀ अर्थ पुराण बँधो है सोई

दो० रंच रंच शर शर सबै, दाह करत जो आप।
तब बंधव सौं भाष्यउ, उर्ग होत सो पाप॥

सुनिकै राजा बिस्मय माना ❀ कहा न काहुहि कीन्ह पयाना
याहि भेद तौ काहु न पाई ❀ तब राजा बाराणसि जाई
तहां जाइकै दहेउ शरीरा ❀ येही रूप तजा नृप बीरा
पाछे भीषम जानै पायो ❀ महाशोक तब मनमें आयो
सत्यवती बहु रोदन करई ❀ बंश नाश भो धीर न धरई
महाशोक तब भीषम पायो ❀ बंश नाश भो पाप बढ़ायो
सत्यवती तब करै बिचारा ❀ पूर्व पुत्र तौ ब्यास हमारा
पितु के संग तपस्या जाई ❀ ताहि ध्यानधरि लेहुँ बुलाई
सत्यावती ध्यान तब धारा ❀ आये ब्यास तहां मंझारा
सत्यावती कहेउ तब बाता ❀ करो उपाय बंश भो पाता

दो० भई दया देखत हृदय, कहा बचन बिस्तार।
धीर्य धरौ तुम मातजू, होय बंश अवतार॥

तुव बधूनके गृह महँ जाई ❀ दृष्टि भोग करबै हम माई
नागिनिहोइबस्तरताजि आवहिं ❀ पुत्रदान बिधना सों पावहिं
बधू ज्येष्ठि अम्बे जेहि नामहिं ❀ सत्यवती तब ताहि बखानहिं
बस्त्र डारि कै नग्न शरीरा ❀ रहियो गृह सन्ध्यामहँ धीरा

सत्यवती तब असकहि आई ❀ सन्ध्यासमय व्यास तब जाई
बिकट रूप भयानक होई ❀ अम्बे पाहिं गये मुनि सोई
अम्बे कहँ तब लज्जा आई ❀ और हृदय महँ परम उपाई
जाते मूँदि नयन जो आई ❀ ताते व्यास बचन अस कहई
होय पुत्र अम्बा अवतारा ❀ महाबीर जन्महि संसारा
सत्यवती ते भाष्यउ जाई ❀ नयन मूंदि कै हम पर आई

दो० ताते अन्धा पुत्र कै, जन्महि गर्भ तुम्हार।
वंशहोय तुव जगत महँ, नहीं राज्य अधिकार॥

तबहिं अम्बिका के गृह जाई ❀ अम्बिका केर चरित्र उपाई
राजाकुल लज्जा उन पाई ❀ अंगोगात पिंडोर लगाई
गये मुनीश तासु गृह जबहीं ❀ बिकटरूप देखा मुनि तबहीं
अंगोगात स्वेत सब अहहीं ❀ स्वेत बरण देखतभे सबहीं
श्वेत रूप देखा तब चीन्हा ❀ तहां व्यास अस बोले लीन्हा
जन्महि पुत्र गर्भ मंझारा ❀ पाण्डु होय तब पुत्र भुवारा
बिचित्रबीर्य के दूसरि नारी ❀ शुद्रसोहागिनि रही सो भारी
दासि समान रही सो ताहीं ❀ व्यास गये ताके गृह माहीं
शूद्रा सुनत अनँद तब पाई ❀ बिहँसतबदन सो मुनिपहँ आई
देखत मुनि तब हर्षित भयऊ ❀ तबहिं महामुनि असबर दयऊ

दो० तोर पुत्र जन्महि जगत, महाभक्त भगवान।
अन्तर्द्धान भये मुनि, कीन्हा तुरत पयान॥

पूरब कथा सुनो अब राऊ ❀ तीनों बधू गर्भ उपजाऊ
ऋषिमाण्डव्य तबतज्योशरीरा ❀ गये तुरत यमराज के तीरा
यमराजा बहु आदर कीन्हा ❀ बालदोष मुनिकहँ कहि दीन्हा
शिशुतापन में टीड़ी मारेउ ❀ ता अपराध इहां पगुधारेउ
तब मुनीश प्रति उत्तर दयऊ ❀ शिशुतापन का दोष न लयऊ
नयन मूंदि यम रहे चुपाई ❀ क्रोधित मुनि तब बचन सुनाई
शाप हमार लेउ अब राई ❀ मनुषरूप जन्महु जगजाई

शाप देइ मुनि त्यहिक्षणजाई ❀ यम के मनहिं अँदेशा आई
जाना व्यास केर उपकारा ❀ शूद्रा गर्भहि जाय मँझारा
बिदुर भये तब तासु कुमारा ❀ शूद्रा गर्भ लीन्ह अवतारा
अंबिका गर्भ पांडु अवतारा ❀ सबशरीर पाण्डव बिस्तारा

दो० अम्ब गर्भ धृतराष्ट्र भे, महाबीर बलवान।
यहि प्रकारते बंश भो, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

वैशम्पायन उवाच॥

राजा सुनो कथा परकाशा ❀ जाते होइ पाप को नाशा
यजाति पुत्र कुम्भजै बखाना ❀ कुन्ती भोजराज अनुमाना
दूसर पुत्र सिंहासन माहीं ❀ नृपगन्धार देश इक आहीं
गन्धा नाम जो राजा अहई ❀ गन्धारी कन्या घर रहई
सो तौ शङ्कर भक्ति अराधै ❀ इक शत सुत इक कन्या साधै
तबहीं बर यह शङ्कर दीन्हों ❀ भीषम यहै सुता तब लीन्हों
सोई सुता स्वयम्बर माहीं ❀ भीषम हरिलाये तब ताहीं
भाष्यो मन में अन्धकुमारा ❀ होन पुत्र ता शत अवतारा
धृतराष्ट्रक का कीन्ह बिवाहा ❀ महा हर्ष भीषम मन माहा
गांधारी तब कन्त निरीखै ❀ दूनौं नयन अन्ध करि दीखै

दो०पियदेखागन्धारिजब, अन्ध जन्म अवतार।
बांधी पट्टी नयन महँ, बिधि यह लिखा लिलार॥

धृतराष्ट्रक की आज्ञा लीन्हा ❀ भीषम राज्य पाण्डु कहँ दीन्हा
राजा पाण्डु सबै जग जाना ❀ आगे राजा सुनौ बखाना
जो श्रीकृष्ण पितामह अहै ❀ शूरसेन राजा त्यहि कहै
कन्या पुत्र जो दश हैं ताही ❀ ज्येष्ठ पुत्र बसुदेव जो आही
कुन्तीभोज मित्र तौ आही ❀ शूरसेन की कन्या ताही
प्रथमहिं नाम तासुका अहै ❀ कुन्तिभोज प्रतिपालन चहै

शूरसेन सो कन्या दीन्हा ❀ पुत्री कहि प्रतिपालन कीन्हा
कुन्ती नाम दीन पुनि ताहीं ❀ कन्या रहि राजा गृहमाहीं
बहुत प्रीति कन्या पर करई ❀ मनसा बचन कर्मना धरई
दो० प्रेमहर्ष सों कन्यका, राजा गृह सो आह।
वैशम्पायन भाष्यउ, सुनु राजा नरनाह॥
एक समय तब ऋषि दुर्वासा ❀ आये कुन्तिभोज नृपपासा
भाष्यउआह करब अवसासा ❀ चारिमास रहिबे तुम पासा
पै जो मानहु बचन हमारा ❀ इच्छा भोजन देव अहारा
जबहीं इच्छा होय हमारी ❀ तबहीं भोजन देहु विचारी
तपत अन्न तत्क्षणहीं पाऊं ❀ जबहीं भोजन चाहब राऊं
राजासुनि अन्तःपुर गयऊ ❀ सबके पहँ पूछत तब भयऊ
सब रानी तब कहैं बुझाई ❀ कोउ न कहत करब सेवकाई
कुन्ती तब भाष्यउ नृप पासा ❀ राखहु तात मुनिहिं चौमासा
मैं तो सेवा करिहौं ताही ❀ भोजन देउँ जो मन में आही
राजा राख्यउ मुनि कहँ जाई ❀ कुन्ती मुनि सेवा को आई
दो० जो जो चाहत मुनि मनहिं, सो सो कुन्ती देइ।
प्रेम हर्ष सो महामुनि, बसि कुन्ती के सेइ॥
ऐसा हर्षै महामुनि कहे ❀ वर्षा चारि मास तहँ रहे
कुन्ती भक्ति तुष्ट मुनि भयऊ ❀ मालमन्त्र दुर्वासा दयऊ
मालमन्त्र जाको तुम ध्यावो ❀ तौन देवको दरसन पावो
ऐसे मालमन्त्र तौ दयऊ ❀ मुनिवर बिदा भूपसों भयऊ
दुर्वासा तब बनमहँ जाई ❀ कुन्ती मनमें रच्यो उपाई
मन्त्र परीक्षा कुन्ती करई ❀ सूरज देखि मन्त्र उच्चरई
सूर्य चन्द्र प्रत्यक्षै देवा ❀ मन्त्र परीक्षा कीन्हेसि भेवा
हीन बुद्धि नारी अज्ञाना ❀ माला जपै सूर्यकर ध्याना
दो० ध्यान धरतही देवकर, तत्क्षण तब तहँ आउ।
बर प्रसाद तब दीन्हों, पुत्रहेत तुव जाउ॥

सुनत लाज तब कुन्ती भयऊ ❀ दिनकर तब बोलै यह लयऊ
भो नहिं ब्याह रही मैं क्वांरी ❀ भो बरदान जन्मभरि गारी
भो कलङ्क तुम्हरे परसादा ❀ कुन्ती करति महा बिसमादा
होइ प्रसन्न तब कह दिनमाना ❀ कर्ण मार्ग जन्महिं परवाना
महाबीर दानी जग जाना ❀ बिद्यावान बीर बलवाना
यह कहि अन्तर्गत रबि भयऊ ❀ सूर्य प्रताप पुत्र सो उयऊ
कर्ण मार्ग कर भो अवतारा ❀ कुन्ती ताहि नीर में डारा
शूद्र अधीरथ धीमर नामहिं ❀ सोतो गयो गङ्ग अस्थानहिं
देखा सुन्दर बालक आहीं ❀ सो लै गो अपने गृहमाहीं
राधा नाम तासु के नारी ❀ प्रतिपालन कीन्हो त्यहि भारी

दो० यहिप्रकारते कर्ण भे, कुन्ती प्रथम कुमार ।
करि संक्षेप बखानेऊं, कीन नहीं बिस्तार ॥

पांचै सात बर्ष के भयऊ ❀ बालकसँग खेलन तब गयऊ
सब मिलि देहिं कर्ण को गारी ❀ तेरो कहां पिता महतारी
केवट लै प्रतिपाला तोहीं ❀ जानत मात पिता नहिं ओहीं
कर्ण सुन्यो लज्जा तब होई ❀ संकरबर्ण कहत सब कोई
गङ्गा तीर कर्ण तब जाई ❀ तन त्यागै का रच्यो उपाई
जबहीं तन त्यागै का चहै ❀ दिनकर हर्षि हाथ तब गहै
काहे तन त्यागो तुम बारा ❀ मैं जगज्योतिहुँ पिता तुम्हारा
सुनतै हर्ष कर्ण तब माना ❀ बोल्यउ कर्ण धन्य जगजाना
पिता हमार सूर्य परमाना ❀ मो सम भाग्य न दूसर आना
बिनती एक हमारी ताता ❀ तुम तौ पिता कौन है माता

दो० काके गर्भहि जन्म मम, कहु कृपाल दिनमान ।
तौ चित मोरा होइ थिर, कीन्हो कर्ण बखान ॥

तबहीं सूर्य परीक्षा कीन्हा ❀ बस्तर एक कर्ण को दीन्हा
अग्नि चीर जानै संसारा ❀ जो पहिरै सो मातु तुम्हारा
कै कै छल पहिरै जो कोई ❀ मोर प्रताप भस्म सो होई

यहि प्रकार तब कर्ण बुझाई ❀ अन्तर्द्धान भयो दिनराई
कर्ण वीर बहुतै सुख पायो ❀ बस्तर लै तब गृहको आयो

दो० बस्तर लै गृहराख्यऊ, चितदै सुनहु भुवार ।
बिद्या के हित कर्ण तब, कीन्हो हृदय बिचार ॥

परशुराम पहँ छलसों जाई ❀ बिप्ररूप करिगे वहि ठाई
परशुराम तब बिद्या दीन्हा ❀ निजसमान धनुधारी कीन्हा
कर्ण चतुर्दशि चले अन्हाई ❀ परशुराम तब आगे जाई
पत्र कदम्ब पुहुप हैं नाना ❀ आधे हने तजे असमाना
खरी तेल तौ हाथहि लाई ❀ पाछे परशुराम तब जाई
देखेउ सब खण्डित हैं फूला ❀ यहि प्रकार देखे सब तूला
भूमिष धरौं तौ होई पापा ❀ उछलै तपै कटोरा आपा
मारेउ बाण बाट सब सोई ❀ लीन्हा रोंकि कटोरा ओई
कै अस्नान चले तब राई ❀ वही बृक्षतर पहुँचे आई
परशुराम भाष्यो तब बाता ❀ आधे हनै कौन सख्याता

दो० कर्ण कहा हम काटेऊ, सुनत हर्ष भृगुनन्द ।
भयो शिष्य सापुत्र तव, मनमें भये अनन्द ॥

शयन करेउ दिनके भृगुनाथा ❀ धरा कर्ण जंघापर माथा
बज्र कीट कीड़ा तौ राही ❀ कर्ण जंघ छेदत कर ताही
ताते रक्त जो तन महँ लागे ❀ परशुराम चौंके तब जागे
क्रोधित परशुराम तब कहई ❀ कहु रे शिष्य जाति को अहई
हौ क्षत्री मोसों छल कीन्हा ❀ पांच बाण तब भृगुपति दीन्हा
कर्ण पाहिं तब कह परकाशा ❀ बिद्या दै का करौं बिनाशा
यही बाण ते मृत्यु तुम्हारा ❀ बर औ शाप है दोउ हमारा
जबलगि बाण जो तोपहँ रहई ❀ तबलगिजगतअजयत्वहिंकहई
रिपु के हाथ बाण जब जाई ❀ मरिहौ कर्ण कहा समुझाई
कर्ण बाण पांचौ तब लीन्हा ❀ अपने भवन गमन तब कीन्हा
कर्ण बाण लै त्रोणहिं राखा ❀ अतिआनन्द बढ़ो अभिलाषा

दो० सदा रहहिं हर्षित मन, कर्ण बीर गृह जाइ।
भारतकथा पुनीत अति, सुनतहि पाप नशाइ॥
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदि
पर्ववर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

वैशम्पायन उवाच॥

जनमेजय अब होउ सुध्याना ❀ बैशम्पायन करत बखाना
कुन्ती भोज राय परमाना ❀ कुन्ती केर स्वयम्बर ठाना
देश देश के राजा आये ❀ कुन्त देश सब भूप सिधाये
कुन्ती देखा अगणित भूपा ❀ देखे राजा अगणित रूपा
कर्मलिखा को मेटन हारा ❀ पाण्डुराउ को कीन्ह बिचारा
जयमाला पाण्डव कहँ दीन्हा ❀ याही भांति स्वयम्बर कीन्हा
कुन्ती पाण्डु भयो तब ब्याहा ❀ देश देश के गे नरनाहा
दायजु दीन बहुत तब राजा ❀ पाण्डव हर्ष परम सुखसाजा
दायजु कन्या गृह लै आये ❀ प्रेम हर्ष तब भीषम पाये
ऐसे कुन्ती पाण्डु बिवाहा ❀ सो सब कथा सुनौ नरनाहा

दो० यह गाथा जनमेजय, सुनौ बचन परमान।
सुनत पाप सब नाशहीं, बैशम्पयन बखान॥

राजा पाण्डु सबै जग जाना ❀ परजा लोग हर्ष अति माना
पुरी हस्तिना उत्तम साजा ❀ भीषम प्रतिपालत है राजा
मद्र सुदेश मद्रपति राऊ ❀ कन्या यक ता गृह जन्माऊ
माद्री नाम जगत जग जाना ❀ समय संयोग स्वयम्बर ठाना
तब भीषम वह जीति लै आये ❀ पाण्डु राउ को ब्याह कराये
ऐसी भई माद्री रानी ❀ पटेश्वरी दोनों जग जानी
पाण्डवराज भयो रजधानी ❀ कुन्ती और माद्री रानी
देवराज के कन्या रहै ❀ पाराशरी नाम त्यहि कहै
भीष्म बीर तब कीन बिचारा ❀ बिदुरहि ब्याह तासु अनुसारा
बिदुरौ कहँ सो दीन बिवाही ❀ प्रेम हर्ष सत्यावति आही

प्रतिपालक तौ भीषम अहै ❀ राज्य देश की रक्षा चहै
यहि प्रकार जनमेजय राजा ❀ तोरे वंश चरित के काजा
दो० बिदुर पाण्डु धृतराष्ट्र का, तीनों बन्धु प्रमान।
यह चरित्र तुववंश के, सुनु राजा दे कान ॥
शंकर वर अनुकम्पा व्यासा ❀ गन्धारी के गर्भ प्रकासा
उदर गर्भ तब भो परकासा ❀ बारह बर्ष गर्भ यह बासा
महाकष्ट तब भइ गन्धारी ❀ भेषज कहेउ उदर तब फारी
उदर माहिं तौ नाहिं उबारा ❀ व्यास तहां तब मन्त्र संचारा
मन्त्रराज गन्धारि बचाई ❀ महादुःख गन्धारी पाई
मांस पिण्ड देखा गन्धारी ❀ करते आप लिलारहि मारी
शतपुत्रन हित शंकर ध्याये ❀ एक पुत्र नहिं जग में पाये
तब मुनि व्यास कहैं समुझाई ❀ शत पुत्रहु होइहैं तुव आई
बचन एक मैं कहौं उपाई ❀ सोई मन्त्र करौ मनलाई
चिन्ता तजि मानहु बच मोरे ❀ शत आत्मज होइहैं अब तोरे
दो० यकशत कुण्ड खनाइकै, घृतभरिये ता आहिं।
शत खण्डन करु मांस यह, डारो लै लै ताहिं ॥
शीतल जल सों करौ पखारा ❀ कुण्डहि प्रतिही होइ कुमारा
सुनि गन्धारी कुण्ड खनाये ❀ शतकुण्डनमहँ घृतहि भराये
शीतल जल सों पिण्ड पखारा ❀ एकोत्तर तब भाग संचारा
यक यकभाग कुण्ड महँ डारी ❀ दोई भाग एक महँ धारी
भये तहां दुर्योधन बारा ❀ प्रकटभये तहँ सकल कुमारा
दुसर अंश इक कन्या जाना ❀ और पुत्र सब भे बलवाना
अंगुष्ठ प्रमाण पुत्र अवतारा ❀ तब प्रतिपालहिं सबै कुमारा
दुश्शासन अरुबिबिसुत भयऊ ❀ चित्रसेन बिक्रम निर्भयऊ
परभृत्यु दुर्मुख इकबारा ❀ बत्स्यासुर योधन अवतारा
औरो नाम अनेकन जाना ❀ जन्मे बीर अन्ध हर्षाना
दो० शतपुत्रन प्रतिपालही, गन्धारी मनलाय।

परमहर्ष तब भीषम, देखा बंश उपाय ॥

एकदिन राजा पाण्डु नरेशा ❀ मृग बिहार कर बन परवेशा
दैवीगति कछुजानि न जाहीं ❀ ऋषि यक भोगकरे दिनमाहीं
मृग स्वरूप को लै संचारा ❀ यहि अवसर राजा शर मारा
स्त्री पुरुष के भेदहु बाणा ❀ दीनशाप तब मुनि परमाणा
स्त्री भोग जबै परकाशै ❀ ताही क्षणहिं तोर तन नाशै
शाप देइ मुनि तजा शरीरा ❀ महाशोच बश भयो नृप बीरा
शोच करै अपुत्रा भयऊ ❀ महाशाप मुनिवर तब दयऊ
ताही बनमें ऋषि बहु अहैं ❀ तिन्हैं जाय पाण्डव नृप कहैं
भीषम पाहिं कहेउ तिन जाई ❀ ऐसो शाप मुनीश कराई
ताते बनमें तप अब करिहैं ❀ जाकारण ते जग में तरिहैं

दो० बन अखण्ड के माहँ तब, रहहिं पाण्डु नरेश ।
ऐस शाप यह पायऊ, कहा राउ अन्देश ॥

आये मुनि सब भीषम पाहा ❀ सब बृत्तान्त जाय तिन काहा
भीषम सुनिकै पूछहिं गाथा ❀ कहां अहैं पाण्डव नरनाथा
मैं उनको लै आवत जाई ❀ बनोबास जहँ करत हैं राई
भीषम चलेउ पाण्डु के पाहां ❀ दूनो रानि चलीं पुनि ताहां
कुन्ती और माद्री नारी ❀ कन्त के पास चलीं अनुसारी
आखण्डित बन पहुँचे जाहां ❀ भीषम गये तुरत ही ताहां
बहुबिधि ते भीषम तब कहै ❀ पाण्डव के मनमें नहिं अहै
पाण्डव करत इहां बनबासा ❀ रहिबे तात तजो तुम आसा
बहु प्रकार गङ्गज समुझायो ❀ पै पाण्डव के मन नहिं आयो
याही बन में रहेउ भुवारा ❀ तब भीषम रणको पगु धारा
बन में राजा हर्षित रहिहैं ❀ कुन्ती हमरी सेवा करिहैं
महाशोक ते राजा रहई ❀ पुत्र हेत चिन्ता मन गहई
तबै सकल मुनि भाषैं बाता ❀ तजो शोक पाण्डव नरनाथा
तोर पुत्र होइहै बलधारी ❀ यह आशिष है पाण्डु हमारी

ऐसे रहे तब बनहीं राजा ❀ होत शोच पुत्रन के काजा
बिना पुत्र के कुल अँधियारा ❀ कैसे पितृ होय उद्धारा
तब कुन्ती काहे पिय बासा ❀ मन्त्र एक है हमरे पासा
यह जो माल मन्त्र मम पाही ❀ ध्यावों जाहि देव सो आही
जौन देव आराधहि कुन्ता ❀ तौन देव बर देइ तुरन्ता
ताते होय पुत्र अवतारा ❀ कन्त तजो मन को खम्भारा

दो० यहि प्रकार ते कुन्तिहू, कन्तहि धीरज दीन।
माला मन्त्र सुहाथ लै, देव अराधन कीन॥

माला मन्त्र कीन परमाना ❀ प्रथमहिं धर्म केर धरि ध्याना
ताते धर्म युधिष्ठिर भयऊ ❀ महाहर्ष पाण्डव मन ठयऊ
दूजे पवन केर धरि ध्याना ❀ ताते भीम भयो बलवाना
दोनों पुत्र भये तब भारी ❀ तब फिरि मनहिं बिचारेउ नारी
अब काको मन धरिये ध्याना ❀ कै बिचार इन्द्रहि कहँ ठाना
अर्ज्जुननाम सो भयउ कुमारा ❀ इन्द्र तेज तब भयो संसारा
माता हर्षवन्त तब भाखै ❀ अर्जुन नाम पुत्रकर राखै
पाण्डवराय देखि सुख पाये ❀ श्यामस्वरूप देखि मनभाये
नयन बिशाल श्याम है देहा ❀ पाण्डवराउ करत बहुनेहा
श्यामल रूप देखि पितु भाखै ❀ कृष्णसुनाम पिता तब राखै

दो० दुई नाम तब प्रथमहीं, मात पिता धरि ताहिं।
प्रेम हर्ष तन बन महा, राज रहैं सुखमाहिं॥

माद्री पुत्र हेत मन लाई ❀ कुन्ती बहिनी बैन सुनाई
तब कुन्ती माला वहि दीन्हा ❀ औ पुनि नाममन्त्र कहि दीन्हा
माद्री मालमन्त्र तब पाये ❀ अश्विनिकुमारहितबतेहिध्याये
ताते पुत्र भयो अवतारा ❀ नकुलनाम जानत संसारा
तब माला कर तेजहि जाई ❀ अन्तर्द्धान भयो वहि ठाईं
मन्त्र को तेज शक्ति तब गयऊ ❀ कुन्ती महादुःख तब कियऊ
पुत्रन को प्रतिपालहिं माई ❀ प्रेम हर्ष राजा तब पाई

चारि पुत्र हैं दुइ हैं माता ❀ प्रेम हर्ष पाण्डव नरनाथा
इहां पाण्डवा बन में रहईं ❀ उतही भीष्म देश में रहईं
राज दियो दुर्योधन राऊ ❀ प्रतिपालैं भीषम सो भाऊ

दो॰ राजा भये अन्ध सुत, पाण्डु रह्यो बनबास।
अब राजा सुनु आगे, कहत कथा तव पास॥

सूरज बरतहिं पाण्डु भुवारा ❀ पाण्डुराव तब गयो शिकारा
भानु अस्त होई बिस्तारा ❀ रानी मनमा करै बिचारा
तादिन माद्रि रजस्वल भयऊ ❀ पूरणदिन नहान तब कियऊ
माद्री कह कुन्ती के पाहीं ❀ जबलग पति आवै घरमाहीं
सुन्दरि रथ राखो अटकाई ❀ जाते कन्त तो भोजन खाई
सम्मुख रबि बैठी सो रानी ❀ सूरज रथ तहँ जो ठहरानी
पाण्डव राइ तबै गृह आये ❀ दिवसजानिकै अन्नहिं खाये
पाछे माद्री उठि गृह जाई ❀ रात्री भई तुरत गृह आई
तब राजा आश्चर्यहि कियऊ ❀ कुन्ती सकल भेद तब कहेऊ

दो॰ माद्रीरूपहि देखिकै, अस्थिर भये जो भानु।
सुनत पाण्डु राजा तबै, लगे मैन के बानु॥

माद्री पहँ राजा तब जाई ❀ करि रति केलि ज्ञान भुलवाई
ऋषिहि शाप तब आइ तुलाना ❀ अन्तकाल भे पाण्डव माना
गर्भवती माद्री तब भई ❀ पाण्डव नृपति देह तजि दई
देखा पाण्डु भयो तन नाशा ❀ द्वउ रानी तब रुदनप्रकाशा
दाह कर्म राजा कर कीना ❀ गर्भ हेत माद्री रहहीना
कछु दिन गये पुत्र अवतारा ❀ माद्री तनहिं तजा संसारा
कन्त के शोक माद्री गयऊ ❀ सुतप्रतिपालन कुन्ती कियऊ
सहदेव नकुल माद्री नन्दा ❀ तीनि पुत्र कुन्ती के बन्दा
पांच पुत्र कुन्ती तब पाला ❀ माद्री केर भयो जब काला
ऋषि ब्राह्मण सब करत उपाई ❀ भीषम पाहिं कहा तब जाई

दो॰ पाण्डव नृपतिरु माद्री, बनमें तजा शरीर।

पांच पुत्र प्रति पालन, कुन्ती करत गँभीर ॥
ऋषिवर ते भय पंच कुमारा ❁ पाण्डव नृपति वंश अवतारा
कुन्ती पांच पुत्र लै रहई ❁ शतबालक गंधारि के अहई
भीषम सुन्यो तुरन्त सिधाये ❁ कुन्ती कहँ घरही लै आये
पांच सात बय के तब भयऊ ❁ प्रतिपालन भीषम तब ठयऊ
खेलन को जब जात समाजा ❁ कौरव पाण्डव एकहि साजा
पांच पुत्र कुन्ती के आहीं ❁ ताहि समान एकसौ नाहीं
खेलि भीम सों सकेउ न कोई ❁ दुर्योधन तब चिन्ता होई
दिन दिन बालक पांचौ ऐसे ❁ केहरि के समान हैं जैसे
दो० दुर्योधन को चित्त हो, पांच देखि बरियार ।
रिपु बिचार देखै तहां, कुरुपति मन खम्भार ॥
इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्ववर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
वैशम्पायन उवाच ॥
राजा सुनौ जो कुन्ती अहई ❁ पांच पुत्र यहि ऐसे कहई
तुम्हरे पिता केर यह राजू ❁ कर्म दोष ते भयो अकाजू
सुनिकै पांचौ चिन्ता करहीं ❁ पिताराज याहै संचरहीं
खेलन करन जात सब साथा ❁ पांचौ बान्धव औ कुरुनाथा
खेलन भीम कहै यह साथा ❁ राज्य हमार करौ नरनाथा
हमरे पिता केर यह देशा ❁ बिधिबश भा कह नाथ नरेशा
खेलत भीम और सौ भाई ❁ भीम कहै तौ जीति न जाई
एक वृक्ष पर हैं सब भाई ❁ चढ़े जाइ तब भीम हराई
धाइ वृक्ष तब भीम हलायो ❁ गिरे सबै तौ थाह न पायो
पेड़ हलाय दीन तो झांका ❁ परे भूमि जिमि सब फल पाका
दो० भीमसेन की करि हँसी, हर्षित हैं सौ भाइ ।
बहु प्रकार दुर्योधन, मन मैं करै उपाइ ॥
एकहि बार गहैं दश भाई ❁ पटकि भीम तब चरण घुमाई

सदा बिवाद भीम सों होई ❀ शत भाई जीता नहिं कोई
जहँ वे खेलन करहिं पयाना ❀ शतबान्धव तहँ कर अपमाना
चिन्ता करि दुर्योधन राई ❀ मारन भीम को रच्यो उपाई
महाबली सो मरत न मारा ❀ दैकै गरल करौं संहारा
यकदिन प्रीति बहुत तब कीन्हा ❀ छलकरि गरल भीम को दीन्हा
खाते गरल चेत ना रहई ❀ हर्षि गात दुर्योधन कहई
तब गङ्गा में दीन बहाई ❀ बूड़े भीम पतालहि जाई
भोगवती गङ्गा है जहां ❀ बहत भीम पहुँचे गे तहां
तहां बीर तब पहुँच्यो जाई ❀ गङ्गा धार रह्यो अटकाई

दो० नागसुता अस्नान को, आई सुनौ सो राउ।
देखि कलेवर भीमको, सुता हर्ष तब पाउ॥

शंकर शाप देखिकै बारी ❀ ता कहँ कन्या बरे बिचारी
शंकर शाप हेतु सुनु राई ❀ प्रतिदिन हर पूजे सो जाई
नाग कि कन्या पुजै महेशा ❀ पुष्परु बेलपत्र धर बेशा
यकदिन फूल और नहिं पाये ❀ बासी पुष्प तो जाइ चढ़ाये
ताते हरहि क्रोध बहु कीना ❀ दीन शाप तब यह परवीना
मृतक पुष्प लै पूजेउ मोहीं ❀ मृतकै पुरुष प्राप्ति होइ तोहीं
तब कन्या यह बिनती लाई ❀ उग्र शाप कब होइ गोसांई
हर भाष्यउ मृतकहि बर पाई ❀ पाछे अमृत पान जियाई

दो० कन्या सोई शाप हित, भीमहिं दीन जिआय।
अतिसुन्दर पति देखिकै, हृदय बहुत हर्षाय॥

खबरिके हेत सो जाइ भुवारा ❀ नागसुता यह प्रीति बिचारा
तबहीं बर कीन्हेउ मन लाई ❀ पाछे तबहिं शेष पहँ जाई
अमृत दैकै भीम बचाये ❀ पुरपाताल भीम सुख पाये
चारि बन्धु कुन्ती महतारी ❀ महाशोक कीन्हो तब भारी
भीम केर उपदेश न पावा ❀ महाशोक कुन्ती मन आवा
कुन्ती कह हम जन्म दुखारी ❀ कहां गये सुत भीम हमारी

महाशोच मे चारिउ भाई ❀ कहूं न खोज भीम कर पाई

दो॰ चारि बन्धु अरु कुन्तिहू, पावत शोक अपार ।
यहि प्रकार राजा तहां, रहैं भीम पतार ॥

यकदिन भीम गये चलि तहां ❀ अमृत सात कुण्ड हैं जहां
सातौ कुण्ड कीन्ह तब पाना ❀ भागे रक्षक नाग पराना
शंकर सुन्यउ सकल व्यवहारा ❀ मनमें कीन्हे क्रोध अपारा
खायउ अमृत उदर अघाई ❀ मृत्युलोक को सुमिरेउ भाई
चलेउ सुभीम मृत्युपुर जबहीं ❀ महादेव घेरा पुनि तबहीं
महा मारु कीन्हेउ संहारा ❀ शंकर भीम तौ पुरी पतारा
महादेव को क्रोध अपारा ❀ तब त्रिशूल लै उदर जो फारा
अमृत सातौ कुण्ड निकारी ❀ हर्षित गात महेश पुरारी
मृतकहि भीम भवानी जाना ❀ महादेव सों कीन्ह बखाना
धन्य धन्य तुम बीर अपारा ❀ खायो अमृत पुरी पतारा

दो॰ धन्य बीरबल साहसी, गौरी कहत बिचारि ।
कृपा करौ तुम स्वामिजू, देहु जीव संचारि ॥

जीव दान शंकर तब दीन्हा ❀ उठ्यो भीम तब रिस बहु कीन्हा
रहु रहु कहि तौ उठा जुझारा ❀ महादेव तब हर्ष अपारा
केहरिनाद तहां तब कीन्हा ❀ तुरतहि नाम बृकोदर दीन्हा
हर्षित गात भीम बलवाना ❀ महादेव तब कीन्ह पयाना
बासुकि महाहर्ष तब भयऊ ❀ नाना मणी भीम कहँ दयऊ
बिदा मांगि तब भीम भुआरा ❀ तब चलने को हृदय बिचारा
हर्षित भीम बिदा सो भयऊ ❀ अहिलमतीशोकाहि त्यहिठयऊ
बिबिध भांति समझायो ताहीं ❀ कछु दिन में ऐहौं तुम पाहीं
चले हर्ष नरपुर को आये ❀ मात बन्धु तब दर्शन पाये
मिल्यउ पुत्र हर्षित महतारी ❀ दुर्योधन अचरज भा भारी
दीन्हो बिष पुनि मारिय जिआये ❀ बर्ष दिना बीते पुनि आये

दो॰ कुन्ती माता हर्ष तब, हर्षित धर्म भुआर ।

के संक्षेप बखानेउँ, भारत कथा अपार ॥
धर्मराज यह कह तब बाता ❀ भीमआदि सुनियो मम भ्राता
सावधान तें रहब सँभारा ❀ दुर्योधन है शत्रु हमारा
एकहि संग रहब सवधाना ❀ याहै मन्त्र धर्मसुत ठाना
यह बिचार करि पांचो भाई ❀ बिस्मय रहैं सचेत सदाई
यहि प्रकार ते रहैं सवधाना ❀ बैर के बीज प्रथम हित ठाना
यहि प्रकार पाण्डव रह ताहां ❀ पांचो बन्धु सचेतन माहां
महाबीर वृकओदर अहै ❀ कौरव सब मन शङ्का रहै
आपै आप रहै सवधाना ❀ बैशम्पायन करत बखाना
यहि बिधि ते तौ भो अवतारा ❀ कुरु पाण्डव दोउ बंश भुआरा
दो० राजा जनमेजय सुनो, भारत कथा अनूप ।
उत्पति यही प्रकारते, कुरुपाण्डव दुइभूप ॥
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
बैशम्पायन उवाच ॥
राजा सुनौ कथा अनुसारा ❀ कुन्ती हर पूजा बिस्तारा
सोइ लिङ्गको यह परभावै ❀ राजा स्त्री पूजन पावै
कुन्ती पूजै प्रतिदिन जाई ❀ औ गन्धारी पूजन आई
कुन्ती भेद न जान गँधारी ❀ नहिं कुन्ती गन्धारी नारी
यहि प्रकार ते पूजा ठावहिं ❀ एक एक को देखन पावहिं
प्रतिदिन तौ यह पूजा करहीं ❀ दूनों त्रिय हरिभक्ति सँचरहीं
राजेश्वरि महीश जग जाना ❀ प्रतिदिन तब पूजत परमाना
दो० राजा जनमेजय सुनो, आगे कथा बखान ।
भारतकथा सुपुण्यफल, जाते पाप नसान ॥
भीषम कीन्हेउ हृदय विचारा ❀ बिद्यावन्त न एक कुमारा
कुरु पाण्डव दोऊ सो अहहीं ❀ बिद्यावन्त न एको रहहीं
द्रोणाचार्य कि चिन्ता करहीं ❀ जो आवै विद्या संचरहीं

भृगुपति केर शिष्य जो अहै ❋ विद्याशास्त्र ज्ञान तौ रहै
यह तौ चिन्ता भीषम पाई ❋ खेलनको सब बान्धव जाई
सब बान्धव अरु कुरुपति साथा ❋ खेलत गेंदहि कुँवरन हाथा
विधिवश गेंद कूप में परई ❋ सबमिलि शोच तहां सब करई
कन्दुक परेउ कूप महँ जाही ❋ कोऊ काढ़ि न सकतो ताही
कुरुपति गेंद लेन सो चहही ❋ काढ़ौ हठकरि राजा कहही
बालकरूप कहैं सब कोई ❋ काढ़ैं गेंद समर्थ न होई
दो० यहिप्रकार ते बाल सब, करते युक्ति उपाइ ।
बहुत प्रकार बिचारत, गेंद काढ़ि नहिं जाइ ॥
ताही समय द्रोण गुरु आये ❋ द्रुपद माहँ जो मान गँवाये
द्रुपद समीप जान जो चाहा ❋ द्वारपाल तब रोंकेउ ताहा
राजा पास जान नहिं दीनो ❋ भयो उदास द्रोण मनहीनो
यहि अन्तर हस्तिनपुर आये ❋ बालक सब सो देखन पाये
युक्ति करत तौ गेंदके काजा ❋ दुर्योधन सौ बन्धु समाजा
देखि द्रोण तब कहेउ सुनाई ❋ गेंद काढ़ि देहौं मैं भाई
धनुषगाहिं तृण शर संचारा ❋ पढ़िकै मन्त्र गेंदको मारा
गेंद उठाय सो ऊपर आयो ❋ दुर्योधन तब आनँद पायो
गेंद उठाय कै लीन भुवारा ❋ भीषम के पासहि पगुधारा
भीषम पाहिं कह्यउ समुझाई ❋ कन्दुक परेउ कूप में जाई
दो० बहुत युक्ति कीन्हीं हमहुँ, गेंद काढ़ि नहिं जाइ ।
यहि अन्तर यकब्राह्मण, तहां सो पहुँचे आइ ॥
देखत विप्र कहा तब बाता ❋ कन्दुक काढ़ि दीन सख्याता
सींकको शर शायक संधाना ❋ कूप मध्य मारेउ तब बाना
गेंद कूपते बाहर आई ❋ भीषम ते कह कुरुप सुनाई
तब भीषम मन करत विचारा ❋ दूजो विप्र नहीं संसारा
परशुराम कर शिष्य सुजाना ❋ द्रोणाचार्य तासुको नामा
करि आदर तब बेगि बुलाये ❋ चरण धोइ आसन बैठाये

भीषम बचन कहा उन पाहीं ❀ आपु रहौ हस्तिनपुर माहीं
बालक सब तौ अहैं हमारा ❀ बिद्यावन्त करहु अवसारा
याहे बात कहन तब लीन्हा ❀ पाँच गाँउ सामर्पण कीन्हा
हर्षित द्रोण रहे पुनि ताहीं ❀ स्त्री पुरुष हर्ष मनमाहीं

दो० द्रोणाचार्य रहे तहां, पुरी हस्तिना मांह ।
यहि प्रकार ते गुरु भये, सुनौ बचन नरनाह ॥

कुरु सौबान्धव एक समाजा ❀ पांचबन्धु पाण्डव तहँ साजा
भीषम सौंपि द्रोणके पाहा ❀ और हर्ष सों बातें काहा
इन सबहिन को क्षत्री करिये ❀ विद्या अस्त्र ज्ञान संचरिये
अस्त्र शस्त्र सिखये मन जानी ❀ हर्षित भीषम कहत बखानी
सुनतहि द्रोण बहुत सुखमाना ❀ जो तुम कहा सोई परमाना
बिद्याशाला एक बनावा ❀ उत्तमस्थान सो देखि सोहावा
कुरु पाण्डव एकहि सब साथा ❀ बिद्या पढ़त नाइ गुरु माथा
अग्निबाण जलबाण कहाये ❀ पवनबाण गुरु जानि सिखाये
अहिकर बाण नाग शर साधा ❀ केकाबाण मोर बहु बाधा
खग शायक पिप्पील प्रमाणा ❀ अन्धकार औरहु रवि बाणा

दो० जो बिद्या है युद्ध की, सिखत सो गुरुके पास ।
बाणावरी अस्त्र सब, सिखे क्षत्रियन आस ॥

पारथ के बाणावरि माहीं ❀ पावत नहिं कोई जगमाहीं
सबै लोग तौ देत बड़ाई ❀ धन्य धन्य पारथ की माई
स्वर्ग पताल मृत्यु असमाना ❀ कम्पमान पारथ के बाना
सदा कर्ण आवहिं पुनि ताहां ❀ बैठत आनि द्रोण के पाहां
परशुराम को शिष्य तौ अहै ❀ अतिही प्रीति द्रोणपर रहै
राजनीति औ शस्त्र बिधाना ❀ द्रोणाचार्य तौ सिखवै नाना
प्रतिबासर नाना व्यवहारा ❀ पढ़तरु सुनत अनेक प्रकारा

दो० राजा याहि प्रकारते, बिद्या सिखवत ताहि ।

सौबान्धव कुरुनाथ जो, पाण्डव पांचौ आहि ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनौ कथा परवेशा ❀ कौतुक यक बड़ भयो नरेशा
कुन्ती शिवपूजन को जाई ❀ यहि अन्तर गन्धारी आई
दासी सब लै संग गँधारी ❀ हरके मण्डप तब पगु धारी
गन्धारी कुन्ती कहँ देखी ❀ पूछै बात तौ कहौ बिशेखी
कारण कौन इहां को आई ❀ ताकर भेद कहौ समझाई
कुन्ती करत शम्भु की सेवा ❀ दूनौं कहँ तब एकहि भेवा
कहत गँधारी तू कत आई ❀ राज स्त्री तौ पूजन जाई
इहां सदा हम पूजत अहई ❀ तू कत आइ गँधारी कहई
पेता गर्भ तोरभी अहई ❀ राजेश्वर हर पूजन चहई

दो० कुन्ती कह हम पूजतीं, प्रथमहिं राज्य हमार ।
आदिहु ते हम पूजतीं, जानै सब संसार ॥

दूनौं महाद्वन्द तब कीन्हा ❀ एक एक कहँ गारी दीन्हा
महादेव तब भाष्यउ बानी ❀ काहेका दोउ भइउ अयानी
जो पूजा कर भक्ति हमारा ❀ ताकर हम कहैं सुनौ बिचारा
शैलसुता अर्द्धाङ्गी आहीं ❀ ताहू केर बश्य हम नाहीं
पूजत श्रद्धा भक्ति जो कोई ❀ ताके बश्य जगत हम होई
तजौ द्वन्द मानौ मैं कहऊं ❀ जो मो भक्ति तासु मैं अहऊं
बचन एक भाषत मैं नारी ❀ तजहु कलह तुम द्वन्द बिचारी
कनक फूल अरु सुगँध उपाई ❀ जो कोउ पूजत आनि चढ़ाई
औ ताहीकर सुनहु बिचारा ❀ तासु पुत्र तौ होइ भुवारा
ऐसा कहि हर अन्तर्द्धाना ❀ परम हर्ष गन्धारी माना

दो० कहत गँधारी कन्त से, महाहर्ष परिहास ।
कहौ जाइ सब सुतन ते, करौ पुष्प परकास ॥

कहि गन्धारी गृह को जाई ❀ पुत्रनते कहि तबहिं बुझाई
कनकके फूल सहस बनवाई ❀ दीजै पुत्र तौ हमको ल्याई
राजा सुनतहि कनक मँगायो ❀ चम्पा पुष्प अनेकगढ़ायो
गढ़त सुनत तौ पुष्प उपाई ❀ तब कुन्ती गृह बिस्मय जाई
बैठी जाय शोच के भवनहिं ❀ भोजन अन्न तौ कीन्हों कछुनहिं
महादुःख मनमें उपजाये ❀ विद्यापढ़ि आत्मज सब आये
क्षुधावन्त भीमहि तब जाई ❀ क्षुधा लागि भोजन दे माई
कुन्ती तब उत्तर नहिं दीन्हा ❀ महाक्रोध भीमहि तब कीन्हा
तीनिबार तौ बोलि कुमारा ❀ उतर न दीन मातुसिसकारा
रांधन केरि समा सब रहै ❀ सोतो भीम राजासन कहै

दो० दोय पहरमें पठन करि, आये घरके माहिं ।
अजहूं भोजन है नहीं, माता बोलत नाहिं ॥

गुरुके पाहिं दुःख सहि आवै ❀ घरमें कछु भोजन नहिं पावै
माता बोल न उत्तर देई ❀ कहु बन्धव काकरिये सोई
आज्ञा देहु समा सब अहै ❀ खाऊं जाइ बृकोदर कहै
धर्मराज कहै ऐसी बाता ❀ भीमसेन केरे सख्याता
माता क्षुधावन्त जो आही ❀ कैसे कै सुनु भोजन खाही
माता कह तौ पूछौ जाई ❀ मोरे कहे न बोलत माई
राजा कह अर्जुन तुम जाहू ❀ पूछौ जाइ कौन दुख आहू
पारथ गे माता के पासा ❀ हाथ जोरिकै बचन प्रकासा
विद्या पढ़ी क्षुधा तौ पाई ❀ भोजन का तौ आवै माई

दो० अजहूं रांधन कीन नहिं, कौन दुःख मनमाहिं ।
सत्यसत्य जो मातु है, सो भाषहु हम पाहिं ॥

माता कही होब कह पूता ❀ ऐसी बात भई अजगूता
पारथ कहो कहो तुम माई ❀ करब सत्य जो कीन्हा जाई
तब कुन्ती भाषै यह बाता ❀ गन्धारी को द्वन्द सख्याता
कनक पुष्प पूजे जो कोई ❀ तासु पुत्र महिराजा होई

उन सुवर्ण दीन्हों सो नाना ❋ पुष्पहि गढ़त अनेक विधाना
हमहूं कहां सुवर्णहि पाई ❋ जाको पुष्प लै आनि बनाई
अर्जुन कहा सुनो हो माता ❋ यह तुम कहा कौनि बड़िबाता
प्रातहिकाल देव हम माता ❋ रांधन करहु आप सख्याता
सुनि कुन्ती आनन्दित भई ❋ रांधनकरन तबहिं चलिगई
भोजन पान करे सबकोई ❋ रात्रीकाल प्रकट तब होई

दो० अर्जुन सों कुन्ती कहत, आनों पुष्प तुरन्त।
प्रातकाल पूजन चहौं, शंकर हेतु तुरन्त॥

प्रातकाल की बेरा भयऊ ❋ घरी दोइ निशि बाकी रह्यऊ
कुन्ती कहत देव अब आई ❋ पारथ कहा देउँ अब माई
धनुष बाण तब अर्जुन गहई ❋ माता धीर धरौ अस कहई
जहां कुबेर केर बगवाना ❋ तहां सो अर्जुन मारे बाना
काटे तरुवर पुष्प उड़ाये ❋ बाणके तेज पुष्प बहु आये
शिवके मण्डप पुष्प जो आये ❋ भीतर बाहर पुष्प जु छाये
शिवमण्डप फूलन सों पाटे ❋ औरो बाण जो अर्जुन छांटे
कनक पुष्प चम्पा अनुहारा ❋ शोभा बहुत सुगन्ध अपारा
शिवमण्डप पुष्पन सों छाये ❋ अर्जुन पाहिं बाण तब आये

दो० अर्जुन कह माता सुनो, पूजौ शंकर जाइ।
जितिक फूल मनमानहीं, मण्डपमा लेवजाइ॥

कुन्ती सुनत हर्ष मन भई ❋ करि अस्नान मण्डपहिं गई
देखा पुष्प अनेक प्रकारा ❋ पूजत कुन्ती हर्ष अपारा
तुष्टवन्त गिरिजापति भयऊ ❋ आशिर्वाद कुन्तिकहिं दयऊ
तोर पुत्र होइहै महि राजा ❋ पुरी हस्तिना नगर समाजा
यह बर दीन्ह्यो तब त्रिपुरारी ❋ कुन्ती तब गृहको पगु धारी
यहि अवसर गन्धारी आई ❋ कनकपत्र बहु पुष्प भराई
जातहि देख्यो मण्डप माहीं ❋ अगणित पुष्प भरे ता आहीं
बाहर भीतर पुष्प सोहाये ❋ तब कुन्ती कहँ देख न पाये

पूछै बात कुन्ति के पाहीं ❁ कहो पुष्प तुम पाये काहीं
कुन्ती कह हम भेद न पायो ❁ अर्जुन पुष्प कहां ते ल्यायो
दो० तुष्टवन्त गिरिजापतिहि, मोहिं दीन्ह बरदान।
असकहिकै शंकर तबै, भये जो अन्तर्द्धान॥
ऊर्ध्व श्वास गन्धारी लीन्हा ❁ अपने गेह गमन तब कीन्हा
भाष्यो जाय पुत्र के पाहीं ❁ कुन्ती धन्य जगत में आहीं
कहा पुत्र सौ कहा पचासा ❁ अकिले अर्जुन पुरई आसा
कहा पुत्र हमरे सौ भयऊ ❁ अर्जुन जो पुरुषारथ कियऊ
महादुःख में भइ गन्धारी ❁ कहा राज्य धन वृथा हमारी
सकल राज्य धन महिकर होई ❁ अर्जुन पुत्र धनंजय सोई
यहि प्रकार दुःखित गन्धारी ❁ कुन्ती तब गृहको पगुधारी
अर्जुन पाहिं कहै तब बानी ❁ मस्तक चूमि अशीशैं रानी
तुमहिं धनंजय पुत्र हमारा ❁ आश हमारी पुरवनहारा
बहुप्रकार ते दीन अशीशा ❁ बारबार तब चूमति शीशा
दो० यह इतिहास पुनीतअति, सुनत पाप उद्धार।
कुरु पाण्डवसब एकही, विद्या पढ़ि चटसार॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेआदिपर्व वर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥ ९॥

वैशम्पायन उवाच॥

गुरु के पहँ बैठे सब ताहा ❁ नाना अस्त्र शस्त्र अवगाहा
एकबार चटशालै माहां ❁ कर्णआदि बैठे सब ताहां
यहि अन्तर भीषम चलि आये ❁ तहां जायके बचन सुनाये
को कस विद्या लह्यो कुमारा ❁ करौ परीक्षा अस्त्र हमारा
आपुइ आपु दिखावो सोई ❁ काके विद्या केतिक होई
सबही बीर अस्त्र तो करहीं ❁ भीषम पाहिं सबै अनुसरहीं
दुर्योधन शतबन्धव धाये ❁ पाछे पांच पण्डवा आये
करत अस्त्र अर्जुन सब ताहां ❁ सन्मुख तौ भीषम के पाहां

जबहिं अस्त्र अर्जुन ने कीन्हा ❀ धन्य धन्य सब बोलै लीन्हा
भीषम कह्यउ धनंजय पाहीं ❀ त्वहिं समान कोउ जग में नाहीं
दो० तोर अस्त्र अस देख्यऊँ, बहुत मोर मनमान।
तव समान कोऊ नहीं, भीषम कहत बखान॥
सुनिकै कर्ण कहन तब लागे ❀ सभा मांझ भीषम के आगे
अर्जुन कै तुम कीन बड़ाई ❀ हीन कीन कौरव शतभाई
मोर अस्त्र जो देखन पावहु ❀ तौ अर्जुन को ज्ञान भुलावहु
कर्ण वीर अस्त्र तौ करई ❀ मानहु वज्र भूमि में परई
कम्पमान अवनी तौ होई ❀ ऐसा अस्त्र कर्ण कर सोई
कर्ण केर पुरुषारथ देखी ❀ दुर्योधन मन हर्ष विशेखी
आलिङ्गन तब कर्णहिं दीन्हों ❀ मित्र बोलि सत्या तब कीन्हों
राजाकर्ण दोउ शत लीन्हों ❀ पुहुमीमाहिं मन्त्र तौ कीन्हों
दो० दुर्योधन अरु कर्णहू, तत्क्षण भये सँघात।
हर्ष गात दूनौ भये, भीषम के सख्यात॥
कहा कर्ण दुर्योधन पाहीं ❀ आशा एक मोर मन माहीं
मल्ल युद्ध देखो तुम राऊ ❀ हारत कौन कौन के दाऊ
सुनिकै अर्जुन सह्यो न भारा ❀ क्रोधवन्त कर्णहिं परचारा
द्रोण गुरू अर्जुन ते कहै ❀ तोरे सन्मुख शत्रु न रहै
महाबीर अर्जुनकहँ जाना ❀ मल्लयुद्ध करिबे को ठाना
पुत्र सनेह इन्द्र नभ छाये ❀ पुत्र हेत सूरज चलि आये
युद्ध साज साजे हैं दोऊ ❀ चकित भये देखत सब कोऊ
किरपाचार्य कहै तब बाता ❀ पाछे युद्ध करौ सख्याता
सोम बंश अर्जुन कहँ जाना ❀ आपन बंशहिं करौ बखाना
दो० शूद्रपुत्र तुम कर्ण हौ, मात पिता नाहिं जान।
कौने मुख कीन्हौं चहौ, अर्जुन सौं मैदान॥
तबै कर्ण सुनि लज्जा पाई ❀ दुर्योधन अस कह्यो सुनाई
राजा जौन छत्र विधि भाई ❀ सहसी क्षत्री उत्तम राई

बरणी बिक्रम राजा सोई ❀ अर्जुन कर्ण तुल्य जो होई
आधो आसन राज हमारा ❀ राजा कहै सो कर्ण तुम्हारा
अधिरथ तब यह सुनि कहुँ पाई ❀ अर्जुन कर्णहि होइ लड़ाई
पुत्र के हेतु तुरतही धाये ❀ सभाके मांझ ततक्षण आये
कहत सुपुत्र द्वन्द्व नहिं काजा ❀ होइ सो देख्यो राजहि राजा
सभा माहिं यह बचन सुनायो ❀ कर्ण लजाय कै माथ नवायो
भीमसेन भाषैं यह बानी ❀ सुनौ कर्ण तुम अति अज्ञानी
क्षत्रि सभा में बैठ्यउ जाई ❀ नेकु न लाज चित्त तुव आई

दो० क्षत्रि सभा के योग्य नहिं, अरे हीन अज्ञान।
सुनत कर्ण तब कोपेउ, सबलसिंह चौहान॥

क्रोधित कर्णहिं सूर्य निहारा ❀ प्रकटि सूर्य तब सभा मँझारा
भाषै रवि तू पुत्र हमारा ❀ कर्ण सुनो नहिं करो खँभारा
यह कहि सूरज अन्तर्धाना ❀ सभा सबै तब अचरज माना
सूर्य को पुत्र सभा सब जाना ❀ दुर्योधन तब करत बखाना
मूढ़ बृकोदर रे अज्ञाना ❀ बचन हमार सुनौ दै काना
घटते जन्म अगस्त्यहु लयऊ ❀ भृंगि गर्भ शृंगी ऋषि भयऊ
द्रोण गुरू सकल अवतारा ❀ जानौ तौ सर्वज्ञ सँसारा

दो० दुर्योधन की बात यह, सुनौ सकल दै कान।
सभा के लोग उठे तबै, सन्ध्या भो परमान॥

कछु दिन तो यहिविधि ते गयऊ ❀ विद्या पढ़ि संपूरण भयऊ
गुरुदक्षिणा सबहिं तब दीन्हों ❀ हर्षि द्रोण गुरु भाष्यो लीन्हों
अर्जुनसों तब भाष्यउ बाता ❀ स्वारथ मोर करो सख्याता
द्रौपद राजा मित्र हमारा ❀ मारि किरीटहि राज्य बिठारा
अर्द्ध राज्य वहिं हमहीं दीन्हा ❀ शपथ कीन्ह तबहीं हम लीन्हा
थाती राजै दै बन गयऊं ❀ पूरणतप मैं पुनि तहँ ठयऊं
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों ❀ मेरो तौ अपमानहिं कीन्हों
ता कारण मैं मांगत येहू ❀ द्रुपदहिं बांधि चरणतर देहू

अर्जुन सुनतहि तुरत सिधाये ❀ द्रुपद पाहिं सो युद्ध लगाये
लगतबाण तब अर्जुन साधे ❀ द्रुपदराज को तुरतहि बांधे
दो० नाग पास सों बाँधिकै, लै आयो गुरुपास।
द्रुपदबहुतलज्जितभयो, विनय कीन्ह परकास॥
कह्यो मित्र मैं तो नहिं जाना ❀ मेरो कीन्हों है अपमाना
गुरू द्रोण किरपा तब करेऊ ❀ अब नहिं ऐसे भ्रम में परेऊ
खोलिकै बंधन बिदा कराये ❀ महा हर्ष द्रोणा गुरु पाये
आशिर्ब्बाद तुरतही दीन्हा ❀ धन्य धन्य अर्जुन को कीन्हा
कीन्ह उचित तुम स्वार्थ हमारा ❀ अबते पारथ नाम तुम्हारा
तुम्हरे सन्मुख शत्रु बिनाशा ❀ हर्षित गुरू बचन परकाशा
यही प्रकार शस्त्र व्यवहारा ❀ भयो सभा सो सुनहु भुवारा
अपने गृह पारथ तब जाई ❀ परम हर्ष भो देखत माई
या विधि पाण्डवकेरि कहानी ❀ सुनते होय पाप कै हानी
जाते मनबाञ्छित फल पावहि ❀ अन्तकाल बैकुण्ठ सिधावहि
दो० पाण्डव बिजय कथा यह, राजा सुनु दै कान।
बिजयहोय सबजगतमैं, होय शत्रु क्षयजान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामदशमोऽध्यायः॥ १०॥

वैशम्पायन उवाच॥

दुर्योधन तब रचा उपाई ❀ पांडुके पुत्र प्रबल भे आई
भीम भयंकर खल मति अहई ❀ सो बिबाद हमसों नित चहई
भाखा जाय तातके पासा ❀ भीषम राजा होत उदासा
पांचौ कण्टक राज्य हमारा ❀ राज्य हमारि तौ कहै बिचारा
दिनदिन होत सबै बरियारा ❀ तात करो कछु मन्त्र बिचारा
तिनहिंन देखि क्रोध हमपावहिं ❀ सदा दुष्ट भीषम परभावहिं
तात करो कछु मन्त्र बिचारा ❀ होइनिकण्टक राज्य हमारा
जानौ तात सत्य मन माहीं ❀ राज्य दुष्ट तौ पांचौ आहीं

येतो सांच होत मन माहा ❀ शत्रु हमार निकासै आहा
दो० ताकारण सुनु तात अब, भला न होई सोइ।
शत्रु रहत है निकटहीं, मम कस भला जो होइ॥
धृतराष्ट्र सु मन्त्री हंकारे ❀ बैठि एकान्तहि मन्त्र बिचारे
मन्त्रिन ते राजा तब कहई ❀ मोर पुत्र तौ राजा अहई
पाण्डव पुत्र राज्य मनलावै ❀ पिता राज्य के सबहिं सुनावै
करौ मन्त्र मन्त्री अनुसारा ❀ होइ निकण्टक पुत्र हमारा
धृतराष्ट्र की बातैं सब सुनी ❀ मन्त्री मन्त्र करत हैं पुनी
सब मन्त्री कहैं मन्त्र बिचारा ❀ सावधान होइ सुनौ भुवारा
दुर्बल शत्रु जानि कै राई ❀ निश्चिन्तहि होइ रहौ न भाई
बुद्धि करन औ यत्न प्रकाशा ❀ जाते शत्रु होइ तब नाशा
ब्याधिहिसे सब होइ सवधाना ❀ जाते ब्याधि न होत निदाना
शत्रू दुर्बल अग्नि समाना ❀ क्षणमा भस्म करै जगजाना
दो० ब्याधि शत्रु अरु नदी जल, स्त्री पावक नीर।
इन बिश्वास न मानिये, सुनौ मन्त्र सो धीर॥
करिये यहै मन्त्र ठहराई ❀ तातकालही जाइ नशाई
धीरज कीन्हे सिद्धि तौ होई ❀ करै उतायल भुलवै सोई
यह कहिकै मन्त्री सब आये ❀ मन्त्र बिचारन को मन लाये
काली नाम जो मन्त्री अहई ❀ दुर्योधन राजा सों कहई
मन्त्र हमार सुनौ जो राऊ ❀ करौ एक परपञ्च उपाऊ
लाक्षाभवन करिय निर्माना ❀ तामहँ जारहु शत्रु निदाना
यहै मन्त्र सबही ठहराई ❀ यत्न करहु जो होय सहाई
दो० सौबान्धव मिलि मन्त्रकरि, गये पिता के पास।
प्रेम हर्ष मन में बहुत, करत बचन परकास॥
दुर्योधन दुश्शासन अहहीं ❀ सो धृतराष्ट्र पितासों कहहीं
लाक्षा भवन करौ निर्माणा ❀ जामें पांचो तजिहैं प्राणा
सुनिकै मन्त्र सबन मन भावा ❀ बरुणनगर में महल बनावा

लक्ष भवन की आज्ञा पाये ❀ वरुणनगर में महल बनाये
पठये बिदुर देखिबे काजा ❀ कीन्हों लक्ष केर सब साजा
देखि बिदुर चकृत तब भयऊ ❀ यह दुष्पापके रचना ठयऊ
विश्वकर्मातें बिदुर सुनायो ❀ तहां सुरंग एक बनवायो
ताके ऊपर खम्भ लगावा ❀ याहि प्रकार बिदुर बनवावा
रत्नमुद्रिका करसों लीन्हा ❀ थवई बोलि हाथ तब दीन्हा
दुर्योधन जाने नहिं जैसे ❀ भाई सुनौ मन्त्र यह ऐसे

दो० यहि प्रकारते बिदुर करि, गे दुर्योधन पास।
उत्तम ठांव भवनभो, कहिन बात परकास॥

लक्ष भवन यहि रूप बनाये ❀ कुन्ती को धृतराष्ट्र बुलाये
भीमरु दुर्योधन इकठाऊ ❀ बनत नाहिं अस बोलत राऊ
बरुण नगर में महल बनाये ❀ तहँ तुम रहौ परम सुख पाये
सुनिकै कुन्ती सचकरि माना ❀ करि प्रणाम तब कीन पयाना
पांचौ पुत्र संग लै लीन्हा ❀ बरुणनगर तुरतै शुभकीन्हा
देखा उत्तम महल बनाये ❀ परम हर्ष तब कुन्ती पाये
ब्राह्मण भोज प्रतिष्ठा कीन्हा ❀ विविधदान विप्रनकहँ दीन्हा
व्याधी एक त्रिया तब आई ❀ तासु पती मारेउ बनराई
पांच पुत्र लै तब ह्वां आई ❀ कुन्ती गेह उपस्थी भाई
भोजन पान करेउ परवाना ❀ रात्रीकाल रही पुनि थाना

दो० पावकतन बिनतीकरी, गदा लीन्ह तब बीर।
पाँचपुत्र मातासहित, बनहिं चले मतिधीर॥

सुरँग मार्ग तब कीन पयाना ❀ पहुँचे नदी तीर परमाना
कियो स्नान तब चले चलाई ❀ बनबन फिरे तौ पांचौभाई
कुन्ती माता को सँग लीन्हा ❀ यही प्रकार गमनतबकीन्हा
लाक्षागृह पावक तब जारा ❀ लागी जोइ स्वर्गसों धारा
नगरलोक सब रोदन करई ❀ पाण्डव बिना धीर नहिं धरई
हाय युधिष्ठिर बृकोदर बीरा ❀ हा कुन्ती लक्ष्मणा शरीरा

हा माद्री के सुत बलधारी ❀ नगर लोग रोदनकर भारी
पांच पुत्र लै रहती ताहा ❀ ब्याधी केरि त्रिया जो आहा
धृतराष्ट्रक राजा के पाहां ❀ दूतन बात कही सब ताहां
रोदन महा भयो भयकारा ❀ धृतराष्ट्रक रोदन बिस्तारा
दो० बिदुर आदि रोदनकरैं, नगरलोग विस्तार।
कपटरूप धृतराष्ट्रकहु, रोदन करत अपार॥
क्रियाकर्म तिनको तब कीन्हा ❀ बिप्र बुलाय दान बहु दीन्हा
याहि प्रकार दुष्ट मन राजा ❀ दुर्योधन कीन्हों पुर साजा
यहिबिधि लाक्षाभवन जरावा ❀ जरतपाण्डवन कृष्णबचावा
श्रीहरि सदा भक्त रखवारा ❀ नाशहिं पाप उतारहिं पारा
सुनु राजा जनमेजय बाता ❀ याहि प्रकार बंश बिख्याता
दो० आदिपर्व गाथा सुनौ, कहौं भाषि संक्षेप।
श्रवण पानते अङ्गगत, रहत पाप नहिं लेप॥
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामएकादशोऽध्यायः॥ ११॥
वैशम्पायन उवाच॥
सुनु राजा अब कहौं बखाना ❀ कुन्ती बन में कीन पयाना
पांचौ पुत्र संग करि लीन्हा ❀ तबहिं प्रवेश महाबन कीन्हा
थकित भई तब कुन्ती माता ❀ क्षुधातृषा ते भयो तनु गाता
भीमै कुन्तिहिं कन्ध चढ़ाई ❀ सहदेव नकुल गोद लै जाई
धर्मराज अर्जुन द्वउ भाई ❀ एक गोद में दोऊ चढ़ाई
महाबली है भीम भयंकर ❀ प्रलय काल में जैसे शंकर
याहि प्रकार ते बन पगु धारी ❀ चले जात सुमिरत गिरिधारी
चलेजात मानहुं अति रङ्का ❀ महाबली है भीम अशङ्का
सन्ध्याकाल में उतरे जाई ❀ क्षुधा तृषा लागी बहुताई
कुन्ती लखि दुख सहै न भारा ❀ क्षुधा तृषा ते तनु बिकरारा
बटके तरु तर राखिनि जाई ❀ भीम करत जल हेतु उपाई

दो० जलके हेतु वृकोदर, बहुबन खोजत जाइ।
चारिबन्धु अरु कुन्तिहू, तुष्टनींद बहुआइ॥

बनके मध्य मिलो जल जाई ❀ करत बिलाप भीम बहुताई
माता देखि भीम दुख नाना ❀ विधि चरित्र नहिं जात बखाना
विचित्रवीर्य केरि बधुआहे ❀ शूरसेन नृप कन्या आहे
पाण्डव आनी जननि हमारी ❀ क्षुधा तृषा ते दुःखित भारी
राज्य देश सब छूट हमारा ❀ सहे दुःख बन मांझ अपारा
जासु तेज जहँ वीर भुआरा ❀ तासु दुःख अस सहैको पारा
धृतराष्ट्रक दुर्बुद्धि बिचारा ❀ जन्मेउ बंशहि धर्म बिसारा
दुर्योधन पाये मति भारा ❀ कर्णआदि सबहैं अबिचारा

दो० करत बिचार भीमतहँ, चारिबन्धु हैं सैन।
कुन्तीजननीसहितसब, रोइ भीम कह बैन॥

ताही समय हिडंबक दानो ❀ वहिबनरहै सो कालसमानो
मानुष गन्धै पाय बिशेखा ❀ उच्च वृक्ष चढ़िकै तब देखा
देखेउ मानुष छः जन अहै ❀ बहिनिहिडम्बिबयनतब कहै
छः मानुष को धरि लै आवहु ❀ परमानन्द ते भोजन पावहु
सुनत हिडम्बिनि आई तहँवां ❀ भीम आदि बन्धव सब जहँवां
देखि हिडम्बिनि भीमहिं कैसा ❀ महादिव्य पर्वत सम जैसा
बन्धव मोर हिडम्बहि नामा ❀ हमको तिनपठयो यहि कामा
सहित तुम्हैं छः बन्धव कारण ❀ यह देखौ आई हति मारण
रूप तुम्हार मोर मन पागा ❀ कामबाण हिरदय में लागा

दो० जारिदेह तुम आपनी, कहदोउ नाम विशेश।
परमसुन्दरी कौन सो, कतबन कीन प्रवेश॥

तुमहिं बरण चाहतहों आपहि ❀ पै हिडम्ब शङ्का मन आवहि
सुनत वृकोदर भाषेउ बाता ❀ यह सुन्दरी अहै मम माता
औ मम बन्धव हैं ये चारी ❀ ता कन्या ते बृहत बिचारी

जो तुम आयउ पास हमारा ❀ कहाहिडम्ब का करै तुम्हारा
देव दैत्य गन्ध्रब का करिहैं ❀ काहूके डर हम नहिं डरिहैं
सुनत हिडम्बिनि हर्षित भयऊ ❀ जबहिं बृकोदर बातैं कह्यऊ
भगिनी गही देखि जब जानौं ❀ क्रोधित है चलो पावकमानौं
देखि भगिनि मानुष तनधारी ❀ कामभाव से देखिसि नारी
देखत महाक्रोध सो भयऊ ❀ भगिनीकहँ मारन तब ठयऊ
मोर अहार बिघ्न तैं कीन्हा ❀ पठवौं यमपुर बोलै लीन्हा

दो० यह कहि मारनचलो तहँ, दीन भीम तब हांक।
अरे दैत्य मैं अधम तू, बचन बृकोदर भाक॥

मोर पियारी भै यह नारी ❀ तैं मतिहीन चहत है मारी
जेतक बल तन अहै तुम्हारा ❀ देखब तेज आज परचारा
सुनत हिडम्ब क्रोध सों कहै ❀ आजु काल जाना तौ गहै
धावा क्रोधवन्त इकबारा ❀ गहिकै कर दैत्यहिं फटकारा
पराजाय दश धनुष के पारा ❀ तुरतहिं उठि धावा बिकरारा
भीमहिं दानव धरि फटकारा ❀ आपु तेज ते भीम सँभारा
बृक्ष उखारि दैत्य लै धावा ❀ भीम बृक्ष तब एक चलावा
बृक्षहिं बृक्ष निवारण भयऊ ❀ बृक्ष युद्ध तब निरफल गयऊ
दूनौं महाबीर बल योधा ❀ दूनौं सरस आपने क्रोधा
कुन्तीसहित जो बन्धव चारी ❀ छूटी निद्रा चेत सँभारी

दो० देखा तहां हिडम्बि को, रूप अनूप तरङ्ग।
देखत कुन्ती देवि तब, पूछत ताके सङ्ग॥

कहौकहा तुम अपनो नामा ❀ कौन हेतु कीन्हों बन धामा
की तुम देव दैत्य की नारी ❀ आपन अर्थ कहो बिस्तारी
करिप्रणाम हीडम्बिनि कहई ❀ हमतौ जाति राकसिनि अहई
भाई मोर हिडम्बक नामा ❀ तिन हमहीं पठये यहि कामा
पुत्रसहित मारण तुव हेता ❀ यहि कारण हम आइ सचेता
पुत्र तुम्हार देखि हम पावा ❀ मोहित भई मोह मन आवा

हमतो बरे पुत्र तुव कारण ❀ बन्धु मोर तौ आयो मारण
तुम्हरे सुतनसों तेहि रण ठाना ❀ संगर महा होत मैदाना
सुनत बात तब चारों भाई ❀ तुरतहिं देखि भीम तेहिं ठाई
महायुद्ध दानव के साथा ❀ अर्जुन कहा भीमसों गाथा

दो० भर्मकरौ जनि बांधव, दुइजन मारब आइ।
नातर तुम बैठो इहां, हम यहि मारन जाइ॥

पारथ बचन सुनत भे क्रोधा ❀ पारथ दैत्यको अतिबल योधा
तब दानव को भीम पछारा ❀ मुष्टिक घाउ उदरपर मारा
लागत घाव शब्द घहराना ❀ परा भूमि में छांड़ेउ प्राना
दैत्यको बध्यो हर्ष तब कीन्हा ❀ दुष्टदैत्यको यमपुर दीन्हा
कन्या सो मानुष तनु धारी ❀ भीमके संग करत सुखभारी
नाना गिरि बन पर्वत देखा ❀ पांच बन्धु अरु कुन्ती पेखा
संग हिडम्बिनि पिय के पासा ❀ दीप दीप देखा परगासा
हिडम्बिनि गर्भ पुत्र अवतारा ❀ नाम घरूका बीर अपारा
घरवत कच्छ नाम बिस्तारा ❀ अस्त्र शस्त्र सिखये निस्तारा
तबहिं हिडम्बी कहत बुझाई ❀ जाउँ देश तौ आज्ञापाई

दो० मम सुमिरण जबहीं करौ, देखा बचन तुम्हार।
जो आज्ञा तुव पावऊँ, जाउँ देश अनुहार॥

पुत्र कहै तौ याहै बानी ❀ सुनतै भीम हर्ष तौ मानी
कुन्ती पाहिं भीम तौ कहई ❀ आनदेश अब जान को चहई
यह आज्ञा तब कुन्ती दीन्हा ❀ लै सँगपुत्र गवन वन कीन्हा
पांचौ बन्धव बनमें रहहीं ❀ राजा आगे मुनिबर कहहीं
देश देश भरमतहीं राई ❀ माता सँग लै पांचौ भाई
कुन्ती को दिन बनमहँ गयऊ ❀ इकदिनब्यास के दरशन भयऊ
कुन्ती कीन्ही सबहिं प्रणामा ❀ पांचौ बन्धु परे पद धामा
दुखी देखि पाण्डव बन माहीं ❀ करुणाकीन ब्यास मुनि ताहीं
आशिर्बाद ब्यास तब दीन्हीं ❀ औ कुन्ती सों बोलै लीन्हीं

सुत तुम्हार होइ नृप संसारा ❀ दुष्टन केरो बल संहारा
दो० चक्रनगर यक है यहां, तहां रहौ तुम जाइ ।
यहकहि ब्याससिधार्यो, कुन्ती को समुझाइ ॥
कुंती पुत्र संग सब लीन्हा ❀ तब यक चक्र नगर शुभ कीन्हा
रहे जाइ यक द्विज के गेहा ❀ भीख माँगि कै पालत देहा
पांचौ बन्धु मांगि लै आवैं ❀ जननी को लैकै पहुँचावैं
माता रांधत करत सुसारा ❀ आधा भीम को देत अहारा
आधा चारि बन्धु औ माता ❀ भोजन करैं प्रेम सुख गाता
बहुत दिना बीते यहि देशा ❀ माता सहित जो धर्मनरेशा
ब्राह्मणगृहमें रुदन जो करई ❀ महा बिलाप चित्तमहँ धरई
रोदन सुनेउ विप्रगृह माहीं ❀ कुन्तीमन चिन्ता तब आहीं
पुत्री पुत्र नारि लै साथा ❀ रोदनकरत बहुत द्विजनाथा
कौन दुःख तोहिं भा द्विजराई ❀ भीम के पाहँ कहत समुझाई
दो० येतेदिन द्विजगृहरहे, कहा दुःख द्विजपाव ।
भीमसेनके अग्रमहँ, कुन्ती कहत सुभाव ॥
जाते द्विज कि आपदा हरई ❀ सोई भीम करौ तुम सहई
यह तौ है निज धर्म हमारा ❀ कुन्ती तब यह कह्यो बिचारा
ब्राह्मणदुःख जो क्षत्री देखहि ❀ टारै दुःख सो क्षत्री लेखहि
इनके घरमें बास हमारा ❀ अब चहिये इनको दुखटारा
यहै धर्म है पुत्र हमारा ❀ यही धर्म ते उतरब पारा
धर्म करत जो पै दुख होई ❀ तबहुँ धर्म नहिं छांड़त कोई
धर्महिं ते होई धन राजा ❀ धर्महिं ते होई शुभकाजा
ताते भीम कहत समुझाई ❀ जाते द्विज को दुःख नशाई
सुनत बृकोदर करै बिचारा ❀ कौन दुःख जो है करतारा
जो माता की आज्ञा होई ❀ अवशि बिचार करब हम सोई
दो० माता पिता निदेशकहँ, पुत्र करत परमाण ।
धन्य जन्म ताको जगत, पावै पद निर्वाण ॥

भीमसेन माता समुझाई ❁ कौन दुःख द्विज पूछहु जाई
टारौं दुःख प्रातही यहै ❁ भीमसेन माता सों कहै
मारौं दुष्ट दैत्य संहारौं ❁ जो संकट द्विज के सो टारौं
अब माता पूछौ तुम जाई ❁ कौन हेतु रोवत द्विज राई
माता ताको धीर धरायो ❁ जो कुछ कष्ट पूछि सो आयो
कुन्ती तबै हर्ष मन भई ❁ तब द्विजपहँ सो पूछन गई
रोवै ब्राह्मण करै बिलापा ❁ रोवत पुत्र एक पुनि आपा
कन्या रोवति आपु पुकारी ❁ बिकलवन्त तब बहुद्विजनारी
ब्राह्मणकहत जबै लग ताहीं ❁ तुम तीनों रहिहो गृहमाहीं
पुत्र कहा जो मैं चलिजाऊं ❁ पिताके ऋण उबारतो पाऊं

दो० स्त्री अरु कन्या कहैं, हम जैहैं चलि ताह।
तुम रहिहो जो जगत में, बहुतक होइ बिवाह ॥

रोवत हैं चारों बिलखाई ❁ तब कुन्ती पूछन को आई
कौन दुःख रोदन करु भारी ❁ सो तुम हमसे कहो बिचारी
हमहैं तुम्हरे गृह मंझारा ❁ तुम दुख छूटै धर्म हमारा
सोई दुःख कहौ द्विज मोहीं ❁ सत्य कहौ दुख का द्विज तोहीं
मैं तो करब दुःख परत्राना ❁ मम आगे तुम करौ बखाना
हम तो दुःख छुटाउब माई ❁ तव आशिष हमार दुख जाई
आशिष तोर यहै कल्याना ❁ रोदन तजिकै करौ बखाना
तुव रोदन देख्यों अति राई ❁ कारण हम पूछन को धाई

दो० कौन दुःख केहि त्रासते, रोदन विस्मय आहिं।
ब्राह्मणिपै कुन्ती तबै, पूछै हित गहि बाहिं ॥

तबै ब्राह्मणी कहै बिचारी ❁ बिपदा मोरि सकै को टारी
नाम बकासुर दैत्य जो आहै ❁ प्रति दिन सो मानुषबलि चाहै
एकचक्र नगरी कर राजा ❁ मानुष एक खात नित साजा
बर्ष पांचमा यक घर परै ❁ ता घरको नर भक्षण करै
एक मनुष्य को चहै अहारा ❁ सो आपद है आजु हमारा

मोल लेइँ तौ शक्ति है नाहीं ❀ यह चरित्र होवै गृह माहीं
स्त्री पुत्र घर पुत्री अहै ❀ काहि देउँ रोवत द्विज कहै
सो सब जाई नगर भुवारा ❀ चारिउ जनको करहिं अहारा
भागे तीनि लोक नहिं जाऊं ❀ यहि बिचारमहँ दुःखहि पाऊं
सुनिकै कुन्ती सुतपहँ जाई ❀ भीमादिक तहँ हैं सब भाई

दो० कुन्ती भाष्यो विप्र सुनु, अमृत बचन सुधार ।
नगर तुम्हारे रहत हैं, है तौ धर्म हमार ॥

एक पुत्र घर कन्या एका ❀ तुम दोउ प्राणी कह सबिबेका
पांच पुत्र बल अहै हमारा ❀ यह तो करों तोर उपकारा
भीम नाम जो पुत्र है मोरा ❀ देखा नयनन ताकर जोरा
मारेउ दैत्य एक बल धारी ❀ सोई पुत्र मोर बल भारी
कुन्ती धीर बिप्र कहँ दीन्हा ❀ आइ भीम ते वैसे लीन्हा
सुनत भीम भा काल समाना ❀ अबहिं बकासुर तजिहै प्राना
ब्राह्मणि आनि अन्न कछु दीन्हा ❀ भीमसेन तब भोजन कीन्हा
मारि हँकारि जहाँ बकराई ❀ सुनतहि क्रोध बकासुर धाई
चला बकासुर क्रोधित अयना ❀ देख्यो भीमको अपने नयना

दो० भोजन करत सुठाढ़ तहँ, देखा दैत्य प्रकाश ।
क्रोधवन्त तब भाषेउ, रूप बरणि नहिं जाश ॥

दूनौं हाथ दौरिकर मारा ❀ करेउ न शङ्का पवनकुमारा
खातहि अन्न बृकोदर बीरा ❀ बकासुरहिं तब धरेउ शरीरा
करिकै अचमन भीम सुजाना ❀ बाम हस्त ते गह्यो निदाना
बृक्ष उखारि एक कर लयऊ ❀ दैत्यके मस्तक सों पुनि दयऊ
तबहिं बकासुर बृक्ष उखारा ❀ महाक्रोध करि भीमको मारा
बृक्ष बृक्ष ते निरफल जाई ❀ महायुद्ध प्रकटत भो आई
तब फिरि मल्लयुद्ध दोउ ठाना ❀ उठ्यो गर्द लोपित भे भाना
पीठि उपरि जंघा दियो भारा ❀ धरि ग्रीवा तब भूमि पछारा
मुखते रुधिर धार बहिराना ❀ परा भूमि में छांड़ेउ प्राना

मारि बकासुर भीम भुवारा ❀ सो द्विजकर आपदा उधारा
दो० भीम बकासुर को हन्यो, द्विज हरष्यो मनमाह ।
कुन्ती परमानन्द भै, सुनौ बात नरनाह ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

हर्षि गात द्विज आशिष दीन्हा ❀ पूजेउ भुजा हर्ष मन कीन्हा
मारि बकासुर भेट्यउ भाई ❀ कुन्तीचरण भीम परे जाई
रहे तहां पुनि हर्षित गाता ❀ सुनु जनमेजय कलिकी बाता
तबै ब्याससुनि आये तहां ❀ चक्रनगर पाण्डव हैं जहां
पाण्डव सबै कीन्ह परनामा ❀ मुनि सों कह पूरे मनकामा
आसन दीन्ह कीन्ह विश्रामा ❀ तवहिं ब्यासमुनिकह्योबखाना
पाँचौ बन्धु ते कहत बुझाई ❀ कन्या एक अहै सुनु राई
बड़ तप करि शंकर आराधे ❀ नृपन विजय बर इच्छा बाँधे
महादेव सेवा मन लाये ❀ तुष्टवन्त गिरिजापति आये
मांगु मांगु बोलत गङ्गाधर ❀ हर्षित कन्या मांग्यो तब बर
दो० पति पति देहू बचन कहि, मांगे पाँचौ बार ।
भुवन बिजय बर शंकर, पूरण आश हमार ॥

तुष्टवन्त शंकर तब कहहीं ❀ जो तुम्हरे मनइच्छा अहहीं
पांचौ पति शुभ होइँ तुम्हारा ❀ भुवन बिजय जीतहिं संसारा
सुनिकै बिलखि बदन भैबारी ❀ तब शंकर ने कहा बिचारी
पति नहिं दीन कलंक लगाये ❀ भल शंकर पूजा बर पाये
पुरबै शाप केर फल पाये ❀ पाछे शंकर बचन सुनाये
तुव पति कौरव बंश सँहारा ❀ यक बर शंकर दीन्ह उदारा
राजा द्रुपद केरि सो बारी ❀ ब्यास कहैं यह भेद बिचारी
बान्धव दोय तासु के अहैं ❀ भेद सु तास ब्यासमुनि कहैं
धृष्टद्युम्न द्रोण को मारै ❀ भीषम कोहि शिखण्डि सँहारै

यहि प्रकारते व्यास बुझाई ❋ सुनत चले जहँ पांचौ भाई

दो॰ तापस ह्वै पाण्डव चले, कुन्ती माता संग।
बन उपबन देखत फिरत, देश बिदेश बिहंग॥

चलत फिरत आये पुनि तहां ❋ मणिपुर ग्राम एक है जहां
तहँ गन्धर्व केर अस्थाना ❋ चित्ररथकेर बिश्रामहिं जाना
तहां रहस्य कथा सुनि राई ❋ चित्राङ्गद तेहि कन्या आई
ताल भङ्ग हमहीं दुख भारी ❋ ग्राह भई ता कारण बारी
ताते ग्राह भई सो नारी ❋ रहत तहां सरवर मंझारी
पांच बन्धु कुन्ती महतारी ❋ तासु नगर पहुँचे अनुसारी
चारौ बान्धव इत उत जाहीं ❋ इच्छाहेतु नगर के माहीं
पारथ गे अस्नान के काजा ❋ ग्राह रहै सो सर युत राजा
पारथ सरवर प्रबिशे जाई ❋ सोई ग्राह गह्यो पद आई

दो॰ पूर्बै दीन्हा शापतब, पुच्छकहै इमि ताहि।
पारथके पग परसते, शापसिन्धु तरिजाहि॥

ताते पारथ पद गह्यो आई ❋ तुरतहि मुक्ति शापसों पाई
पूरुब शाप पिताकी पाई ❋ भा उधार तुम परसि गुसांई
ताते हमहुं सत्य करि जाना ❋ तुम पारथ जानत परमाना
मैं तुव पद छांड़ौं अब नाहीं ❋ चलौ हमारे पिताके पाहीं
मैं तुव दासी पारथ जानौ ❋ कपटहेतु तुम जनि भय मानौ
पारथ कहै सुनो बर नारी ❋ जो तुम आशा करौ हमारी
याही नगर रहौ बर नारी ❋ तौ पुनि पैहौ दरश हमारी
यहि प्रकार धीरज तब दीन्हा ❋ मानिवचन उठिकै शिरलीन्हा

दो॰ तब पारथ अस्नान करि, गये तुरत निजबास।
पाँचौ बन्धव तहँ रहैं, प्रात चले परगास॥

चित्राङ्गद तब भई उधारा ❋ पांच पाण्डवा पुनि पगुधारा
ब्राह्मणरूप चले तौ आई ❋ नाना देश सो देखत जाई
मांगत खात चले तौ ताहां ❋ पांचलदेश उदीशन माहां

चलतहिं देशनिकट तब गयऊ ❀ महाहुलास चित्तमहँ भयऊ
कृष्णदेव द्वारावति रहैं ❀ मन में बहुत बिचारत अहैं
द्रुपदराज की एक कुमारी ❀ शंकर पूजि लयो बरभारी
इच्छा बर जो मांगहि लीन्हा ❀ पांच पती बर शंकर दीन्हा
ता कारण हरि करैं बिचारा ❀ पांच बन्धु हैं पाण्डु कुमारा
कुन्ती संग कहां धौं अहैं ❀ मनहीं मन श्रीपति तौ कहैं
कन्याका शंकर बर अहै ❀ ता कारण हरि शोचत रहै
ई कन्या को पति जो होई ❀ सकल कौरवा मारै सोई
पूरब शाप भवानी पाई ❀ ताते पांचपतिहिं निरमाई

दो॰ धर्मराज पारथ सहित, भीमसेन बल बीर।
कुन्ति नकुल सहदेव ये, कौने बन केहि तीर॥

सब जानत हैं अन्तर्यामी ❀ भक्त हेतु जन्मे जगस्वामी
यहि प्रकार शोचत भगवाना ❀ कुरुदलपाप पहाड़ बखाना
दुष्ट मनुष्य जन्म जो पावैं ❀ साधुन कष्ट सदा मनभावैं
ऐसे श्रीपति करैं बिचारा ❀ मारत दुष्ट सन्त प्रतिपारा
मोर भक्त जन संकट पावै ❀ ताते मन उद्वेग जनावै
श्रीपति तबै गरुड़ हंकारा ❀ तासों कहत सु नन्ददुलारा
भक्त मोर हैं पांचौ भाई ❀ कौने बन हैं देखहु जाई
भेंट होइ तौ कहि सब बाता ❀ द्रुपदकुमारी चरित सख्याता
पञ्चल देश रहौ तुम जाई ❀ तहां स्वयम्बर होई भाई
कोइ स्वयम्बर जीतिहि नाहीं ❀ तब वह पारथ जीतिहि ताहीं

दो॰ कन्या तासु अनूप है, सब सो मङ्गलदाय।
कहौ जाय बिनतासुवन, पांच बन्धु के ठाय॥

गरुड़ कीन बेगिय परनामा ❀ आज्ञा पाय चलेउ तब श्रामा
बन बन हम सो खोजत जाई ❀ बहु बन उपवन देशन आई
पांचौ पांडव कहुं नहिं पाये ❀ खोजत गरुड़ अनेकनठाये
धर्मराज इत कियो बखाना ❀ चारहु बन्धु सु अग्रसमाना

पूर्ब व्यास जो कहा बिचारी ❀ पञ्चल देश को करहु तयारी
ब्राह्मण रूप रहत हैं ताहां ❀ पञ्चल देश नगर के माहां
हमरे श्रीपति हैं जो सहाई ❀ कारण कौन शोचिये भाई
सबै जगत के तारण हारा ❀ सन्त तारि दानव संहारा
धर्मज की बातैं यह सुनी ❀ चारौ बन्धुन मनमहँ गुनी
पांच बन्धु माता सँग लीन्हे ❀ जहँ मन चहै तहां शुभ कीन्हे
गरुड़ मिले यहि अन्तर आई ❀ पाण्डव पाहिं कहत समुझाई

दो० श्रीपति कहेउ बिचारिकै, सुनौ धर्म के राज।
कन्या नृप पाञ्चाल की, तासु स्वयम्बर काज॥

द्रुपद राज घर द्रौपद बारी ❀ तहां स्वयम्बर होइहै भारी
ताते श्रीपति हमहिं पठावा ❀ सो सब बात मैं तुम्हैं सुनावा
सो कन्या पारथ को बरै ❀ कर्म लिखा सो कैसे टरै
ताते तुम अब चलिये ताहां ❀ पाञ्चल देश द्रौपदी जाहां
यह कहि गरुड़ तुरन्तहि गयऊ ❀ धर्मराज हर्षित मन भयऊ
सुनि संदेश चले अतुराई ❀ कुन्ती सह वे पांचौ भाई
पाञ्चल देश पाण्डवा जाहां ❀ देना दीश नगरके माहां
तापस रूप रहे तहँ जाई ❀ भीख मांगिकै दिवस गँवाई

दो० यहिप्रकार सब पाण्डवा, धरि तपसिनकर भेश।
गुप्तरूप निवसत भये, नृप पाञ्चाल सुदेश॥

जैसा उपजा यादव नाऊं ❀ ते दूनौं नृप द्रौपद ठाऊं
पूर्ब यज्ञ राजा तप कीन्हा ❀ ते दोऊ मुनि आहुति दीन्हा
अग्निकुण्ड में भयो कुमारा ❀ धृष्टद्युम्न नाम संचारा
नाम द्रौपदी सो निर्मयऊ ❀ जन्मैं जन्म कन्या को भयऊ
वेद बचन ते कन्या भयऊ ❀ देवन स्वर्गबाणि तौ कियऊ
यह कन्या ते कुरुबल नाशा ❀ नभ बाणी देवन परकाशा
यहि के भर्त्ता अर्जुन होई ❀ जाते कुरुबंशहि नाशि सोई
सुर बाणी जब यह सब सुनी ❀ पुत्र ते मृत्यु होइहै गुनी

द्रोणाचार्य है जाकर नाऊं ❀ धृष्टद्युम्न तेहि प्राण नशाऊं
यहै बात पूरब तौ सुनी ❀ द्रुपदराज तब मन में गुनी
दो० लाख भवन में दाह सुनि, मन में करै बिचार।
देववाक्य मिथ्या नहीं, पाण्डव हैं संसार॥
कैसहुकै परचै नहिं पाये ❀ तबै स्वयम्बर भूप उपाये
देश देश तब खबरि पठाये ❀ क्षत्री बीर भूप सब आये
धनुषयज्ञ जब रच्यउ भुवारा ❀ जाको मानुष चढ़ेउ न पारा
अतिबिस्तारिक कुण्ड खनाये ❀ तेल कड़ाहे बीच भराये
ताके तरे हुताशन लागी ❀ जाको देखि बीरता भागी
गाड़ा खम्भ बज्र कर ताहा ❀ ऊपर खम्भ मच्छकर आहा
हीराकनी के नयन बनाये ❀ ताके तरे सो चक्र भ्रमाये
निशिदिन सो फिरतो बिकरारा ❀ देखत तजा धर्म संसारा
जो कोऊ यह धनुष चढ़ाई ❀ बेधत राहु बाण ते आई
मीन नयन में बेधहि बाणा ❀ सो कन्या पावहि परमाणा
दो० यहै यन्त्र निर्माण करि, पठवा जगत सँदेश।
जहाँ जौन नरनाह है, क्षत्री जो जेहि देश॥
दुर्योधन बन्धव शत भाई ❀ देशहि देश जहां जो राई
राज सभा बैठे हैं जाहां ❀ तापसरूप पाण्डु हैं ताहां
बैठि सभा सब साज बनाई ❀ नानारूप बरणि नहिं जाई
कन्या नव शृंगार तब कीन्हा ❀ हाथ माहिं जैमाला लीन्हा
सब राजन को कन्यहिं देखा ❀ भूप अनूप जात नहिं लेखा
सब कहँ दीख द्रौपदी नयना ❀ धृष्टद्युम्न बोलेउ तब बयना
राहु बेध जाके बल होई ❀ बरिहै द्रौपदि कन्या सोई
यह कहिकै द्रौपदिहिं बुझाई ❀ चीन्हों सब राजागण जाई
कुरुपति कर्ण दुशासन अहई ❀ बिक्रमसेर कुबेर तौ कहई
जहां सुशर्मा भूपति भारी ❀ चित्रसेन बीरहु बलधारी
दो० एक एक सब राजनै, देखा कन्या ताहि।

महाबीर पुरुषारथी, बैठ सभा के माहि॥
कन्या रूपते मोह भुवारा ❀ आप आपुको करै शिंगारा
सुर आये सब चढ़े बिमाना ❀ जदुबंशी तहँ कीन पयाना
हलधर और प्रद्युमन बीरा ❀ श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गँभीरा
देव दुन्दुभी बाजत बाजा ❀ अन्तरित्त देवन कर साजा
महाबीर राजा हैं जेते ❀ क्षत्री बीर पराक्रम तेते
तब कुरुनाथ शल्य अनुसारा ❀ अश्वत्थामा आये जु भुवारा
आलिङ्ग कलिङ्ग के देश भुवारा ❀ भोजबंश बीरन पगु धारा
पुत्ररु पौत्र बीर यदुबंसी ❀ एकै एक करत परहंसी
धनुष माहँ गुण देनके काजा ❀ भये समर्थ न एकौ राजा
चक्र सुदर्शन कृष्ण पँवारा ❀ मायालोप लखै को पारा

दो० चक्रराय परत्यक्ष ह्वै, फिरता है दिन सोइ।
राहु बेध भूपति करौ, नहिं समर्थ जग कोइ॥

तब भीषम बोलै कहँ लागे ❀ धृष्टद्युम्न कुँवर के आगे
हम तौ ब्याह करब नहिं भाई ❀ पूरब शपथ कीन्ह हम राई
हमहिं जो लखिकै छेदन करई ❀ कुरुपति को कन्या सो बरई
यह कहिकै तब शारँग लीन्हों ❀ चरण भारते गुण बहु दीन्हों
तबहिं शिखण्डी दरशन दीन्हों ❀ महाखेद भीषम मन कीन्हों
जबहीं लखा शिखण्डि कुमारा ❀ तबहीं धनुष हाथ ते डारा
गुण उतारि तुरतहिं सो डारा ❀ देखि शिखण्डी भीषम हारा
द्रोणाचार्य कोपि उठि जबहीं ❀ भीषम बीर हारिगे तबहीं
करि प्राक्रम तब धनुष चढ़ाये ❀ बाण हाथ तब तुरत चलाये
चल्यो सुबाण तेजगति धाई ❀ लाग चक्रमो परो भु आई

दो० लज्जित भे तब द्रोण कुरु, हारे सर्व भुवार।
तब राजा लज्जितभये, द्रौपद मन खम्भार॥

पारथ तपो रूप तहँ रहे ❀ देखा हारि भूप सब गहे
द्विज समान ते पारथ आये ❀ सब द्विज तौ परिहास मचाये

यक द्विज कहा जातहौ काहा ❀ हारे बीर महाबल माहा
महाबीर नृप क्षत्री हारे ❀ कन्यालाभ बिप्र पशु धारे
सुता देखि द्विज बाउर भयऊ ❀ यह कहि द्विज बैठारन लयऊ
गहिकै भुज बिप्रन बैठारा ❀ बीर महाबल बैठ न पारा
पारथ उठे फेरि द्विज गह्यऊ ❀ धर्मपुत्र तब द्विजसन कह्यऊ
जानि पराक्रम जात हैं ताहां ❀ बेधी राहु आपनबल ताहां
आपन तेज आप सब जाना ❀ कारण कौन करों परमाना
सुनिकै बिप्र छांड़ि तब दीना ❀ पहुँच्यो जहां यन्त्र है मीना

दो० कहत बीर सब भूप तब, यों गुण शारँग लाव।
हानि लाभ जानत नहीं, द्विज को यही स्वभाव।

राजा करैं सबै उपहासा ❀ असम्भाव कह बिप्र प्रकासा
पारथ दीखे श्रीभगवाना ❀ चक्रका तेज हरणकर जाना
पारथ तब भुज धनुष चढ़ाये ❀ अलख पञ्चशर गुरुते पाये
मारा बाण क्रोध तब होई ❀ मीन नयन में बेधेउ सोई
राहु बेध पारथ तब कीन्हा ❀ हर्षित इन्द्र दुन्दुभी दीन्हा
देखि बिप्र हर्षित सुख पाये ❀ बेदध्वनि आनँद ते लाये
सबै भुवार देखि कहैं बाता ❀ सबको मानमथ्यो द्विज ज्ञाता
द्विज की बिधि क्षत्री अपमाना ❀ एक मते भे भूप अयाना
द्रुपदहि मारौ नगर उजारौ ❀ कन्या पावक माहीं डारौ
राज्य देश तौ देहु बहाई ❀ पै इक बिप्र बधो नहिं जाई

दो० यह बिचारिकै भूप सब, द्रुपद गुरू परधाव।
पारथ बेधेउ राहु को, क्षत्री लज्जा पाव॥

तब राजा शरणैं द्विज आवा ❀ पारथ धनुष हाथ परभावा
अस्त्र गहे राजा पर धारा ❀ अभय कीन्ह तहँ मनमंझारा
कर्ण बीर धनुष लै धाये ❀ दुर्योधन चक्र ते आये
अर्जुन कर्णहि पूर्व बिरोधा ❀ कर्ण बीर बल अर्जुन योधा
तपके तेज बिप्र रण ठाना ❀ चेति सूर्यसुत तब पछिताना

जब देखा यह तो कुरुराजन ❀ लज्जा भई बीर के काजन
दुश्शासन भगदत्त भुवारा ❀ जयद्रथ सोमदत्त बरियारा
जरासंध और शिशुपाला ❀ शल्यावधि जेतिक भूपाला
भूरिश्रवा सुशर्मा बीरा ❀ अलिंग कलिंग के हैं रणधीरा
शैल्याशल्य और चितकरना ❀ काशीराज बिराटपुर बरना

दो० अंशुमान अरु कीचकहु, बलि अरु जितक भुवार।
सकल बीर तब कोपेउ, यह द्विजकर संहार॥

शेलै शक्ति बाण की धारा ❀ मुद्गर खड्ग अस्त्र परिहारा
असंख्य अस्त्र द्विजपर सब बर्षे ❀ महाराज दुर्योधन हर्षे
घेरि बीर पारथ सब पेखी ❀ बाणहिं बाण परत सब देखी
बरषैं बाण असंख्य अपारा ❀ माया कीन्हेउ देव भुवारा
अलखित दुइगुण ताहां आये ❀ सो पारथ शारँग मनलाये
परम हर्ष भे पाण्डवनन्दन ❀ बरषत बाण बाणते खण्डन
बरषत बाणन भो अँधियारा ❀ प्रलयकाल प्रकटेउ संसारा
पारथ बाण छिपानेउ याना ❀ गज अनेक के मस्तक बाना
रथ अरु अश्व पैदल बहु मारा ❀ अर्जुन एक अनेक भुवारा
मारे बहु पैदल असवारा ❀ महायुद्ध परकट संचारा

दो० बहुत अस्त्र तब बरषहीं, मानो सावन धार।
अर्जुन बीर अकेलो, क्षत्री बहुत भुवार॥

पवन के पुत्र बृक्ष लै धाये ❀ नकुल और सहदेव जो आये
दोउ पुत्र सँग द्रौपद राजा ❀ महायुद्ध खेत महँ साजा
भीम तौ युद्ध शल्य ते ठाना ❀ रथते शल्य परा मैदाना
परावश्य शल्य कह जाना ❀ छांड़े ताहि बधे नहिं माना
हाहा करि सब ब्राह्मण धाये ❀ दशौ दिशा में शोर मचाये
कर्णबीर तब काहसि बाता ❀ तपके हेतु द्विजन के ताता
सुनि सब राजा भये सक्रोधा ❀ दशौ दिशा तब करै बिरोधा
महा मारु कीन्ही प्रभुताई ❀ दशौ दिशा ते छेड़ा जाई

दशौ दिशाते बर्षत बाना ❀ महायुद्ध नहिं जात बखाना
जौन दिशा को पारथ ताकै ❀ क्रोधवन्त बीरन रण हांकै

दो० जौनी दिशि राजा सबै, क्षत्री बीर अपार।
भारहोत जेहि दिशि सबै, तेहि दिशि परत पुकार॥

क्षत्री छेंकि लगे शर मारन ❀ सौते सहस सहस्र हजारन
बरषत बाण बुन्दगण घोरा ❀ पारथ बाण हाथ तब जोरा
पारथ बाण चहूं दिशि मारे ❀ युत्थ युत्थ क्षत्री संहारे
जौनि दिशा पारथ शर मारै ❀ भागैं बीर न कोउ सँभारै
जौनि दिशा हेरै जहँ जोई ❀ सम्मुख रणमहँ रहै न कोई
बिप्र मुनीश हते जहँ जेते ❀ करत बिचार कहैं सब तेते
जय जय शब्द बिप्र सब कीन्हा ❀ दिशानि बिजयसब बोलै लीन्हा
दशौ दिशा पारथ के बाना ❀ क्षत्री नृपति सबै भहराना
भागेउ दल पैदल असवारा ❀ पारथ बिजय कीन तेहिबारा

दो० जीतिभई द्विज कहत तब, बिस्मय सबै भुवार।
बिप्र नाहिं यह क्षत्रि है, नृप सब करत बिचार॥

राजा सब तब करत बिचारा ❀ नहीं बिप्र क्षत्री अवतारा
दुर्योधन तब करै बिचारा ❀ क्षत्री जानब येही बारा
शकुनी पाहिं कहत अस बाता ❀ काहो जाइ बिप्र सख्याता
ब्राह्मण कुल तुम करौ बिवाहा ❀ क्षत्री कुलै हेतु केहि चाहा
धनसम्पति मनमानो लीजै ❀ यह कन्या कुरुपतिको दीजै
शकुनि गयो तब हाथ उठाई ❀ पारथ पाहि कहा समुझाई
पारथ सुनी बात यह काना ❀ क्रोध भयो तब कालसमाना
भीमसेन तब मारण धाये ❀ पारथ क्रोधित बात सुनाये
राजा पाहिं कहो तुम जाई ❀ बात कहत लज्जा नहिं आई
राहु बधे समरथ नहिं भयऊ ❀ क्षत्री धर्म कहां तब रहऊ

दो० भानुमती जो रानिहै, सोइ आनि मोहिं देहु।
धन कुबेरको भवनसम, जो चाहो सो लेहु॥

सो सुनि क्रोध भयो कुरुराऊ ❀ महा मारु करने मन लाऊ
कर्ण द्रोण दुश्शासन धाये ❀ पै पारथ पै जीति न पाये
महा मारु तिनहिन सों होई ❀ बीच परे ब्राह्मण सब कोई
राजा सबै परम भय पाये ❀ हारि बीर सब अस्त्र गँवाये
अस्त्र के हीन भये सब राऊ ❀ अपने अपने देश सिधाऊ
राजा सबही देश तौ गयऊ ❀ परमहर्ष सब पाण्डव भयऊ
ब्राह्मणरूप हैं पांचो भाई ❀ जीते हर्ष स्वयम्बर आई

दो० जीति स्वयम्बर पाण्डवा, तब कन्या लै जाइ।
परम हर्ष पगु धरतभे, जहां रहति है माइ॥

कुम्भक नामक द्विज जो अहई ❀ ताके गृह में कुन्ती रहई
द्रौपद राजा करत उपाई ❀ भेद लेन कहँ पुत्र पठाई
धृष्टद्युम्न गुपित तौ जाई ❀ देखन अर्थै हेतु उपाई
पांचों बन्धु गये तब ताहां ❀ कुन्ती मातु बैठि है जाहां
माता पाहिं कहा तब जाई ❀ तव प्रसाद हम भिक्षा पाई
माता कह्यो भला भौ काजा ❀ पांचौ बन्धु भोग कर राजा
पाछे पारथ भेद बताई ❀ बिजय नाम अरु कन्या पाई
बिजयनाम सब द्विजन धराई ❀ कुन्ती सुनत लाज तब आई
पुनि कुन्ती तौ करत बखाना ❀ कर्म को लिखा होत नहिं आना
बचन हमार न मिथ्या होई ❀ पांचौ बन्धु भोगकर सोई

दो० यहि बिधि पुत्री गोदकरि, कुन्ती देवी ताह।
पांचपती यहि कारण, सुनौ बचन नरनाह॥

धृष्टद्युम्न यह देख्यो ताहीं ❀ वह चरित्र सब कुन्ती पाहीं
गुप्त भये देखा मन लाई ❀ यहि अन्तर कृष्णहु तब आई
बहुत प्रकार हर्ष तब माना ❀ पूजेउ चरण हर्ष भगवाना
बहु प्रकार ते कृष्ण बुझाये ❀ धीरज दै यदुपतिहु सिधाये
द्रौपद सुत देखेउ प्राकर्मा ❀ जाइ पितासों भाष्यउ मर्मा
राजा सुनौ हर्ष सब पाये ❀ रथ चढ़ि तहँवां आपु सिधाये

सुत सँग लै राजा तहँ जाई ❀ पाण्डव कहँ सब देत बड़ाई
प्रोहित सहित घरहि लै आयो ❀ परम हर्ष राजा तब पायो
राजा साज बहुत बिस्तारा ❀ दिये पाण्डु को द्रुपद भुवारा
रनिवासे कुन्ती तब गई ❀ बन्धू संग परम सुख लई

दो० प्रेम हर्ष ते रहेउ तहँ, पाण्डव पांचौ भाइ।
राजा परम अनन्द सों, मङ्गल बात चलाइ॥

परचै दीन युधिष्ठिर राऊ ❀ परम हर्ष तब द्रौपद पाऊ
पाण्डव नाम सुने पुरबासी ❀ देखत धाये प्रेम हुलासी
द्रौपद राजा कहत बुझाई ❀ तब बिवाह की बात चलाई
तुम हौ जेठे धर्म कुमारा ❀ उचित बरौ तुम कह्यो भुवारा
धर्म के राज कहिनि तब बाता ❀ बचन एक भाष्यो मम माता
पांचौ बन्धव बरहिं कुमारी ❀ सुनत द्रुपद बिस्मय भा भारी
माता आज्ञा मेटि न जाई ❀ धर्मराज भाषत समुझाई
द्रुपद कहा तुम धर्मकुमारा ❀ कौन शास्त्र में कहहु बिचारा
एक पुरुष के तिय बहु जाना ❀ नारिकेर पति होत न आना
धर्मराज काहैं तब बाता ❀ शास्त्र सर्ब जो आज्ञा माता

दो० यहै बात कहताहि सुनत, कथा प्रसंग उपाय।
त्यहि अन्तर वा ठौर में, व्यास मुनीशहि आय॥

पूर्ब कथा तब व्यास सुनाई ❀ व्यास बचन द्रौपद सुनि पाई
शंकर बचन सुना जब काना ❀ छूटेउ भ्रम तब द्रुपद सुजाना
लग्न धराइ ब्याह संचारा ❀ पांचबन्धु को ब्याह बिचारा
भयो ब्याह दायज बहुलायो ❀ रथ घोड़ा गज बहुतक पायो
पाण्डव कहँ पूजन तब कीन्हा ❀ कन्या धनहि दान बहु दीन्हा
द्रौपद कहा उचित यह काजा ❀ जब तुम होब महीपतिराजा
यहि प्रकार ते पांचौ भाई ❀ द्रौपदके घर रह तब जाई
प्रेमहिं हर्ष रहैं सुख पावैं ❀ महाअनन्दित दिवस गँवावैं

दो० यहि बिधि जनमेजय सुनो, भयो द्रौपदी ब्याह।

सबलसिंह चौहान कहि, सुनतहि परम उछाह ॥
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

सुनु राजा रहैं पांचौ भाई ❀ दुर्योधन सब अर्थहि पाई
शकुनी कर्ण दुशासन आये ❀ सबसों राजा बचन सुनाये
मन्त्रिन सहित गये सब तहँवां ❀ अन्धराय को मन्दिर जहँवां
धृतराष्ट्रक सुनिकै ब्यवहारा ❀ करौ मन्त्र जय होइ तुम्हारा
बिदुर न पावै भेद बखाना ❀ तैसे मन्त्र करो परमाना
दुर्योधन भाषै तब बाता ❀ द्रुपदकेर बल है बिख्याता
द्रुपद पाहिं अस कहौ बुझाई ❀ राज्य पाट धन लीजै भाई
पाण्डव कहँ अब देहु निकारी ❀ हौ हमरे तुम प्रीतम भारी
नाहिंत पठवौ दूती ताहां ❀ रानि द्रौपदी पास है जाहां

दो० करि उपहासहि जाइकै, अति आदर कै ताह ।
तब लज्जित कै द्रौपदी, त्यागब पाण्डव चाह ॥

नातरु गुप्त बीर कोउ जाई ❀ मारै भीमसेन को भाई
भीम मरै तौ पाण्डव मरई ❀ सहसा वीर जो कोउ यह करई
नाहिंत आनौ ताहि बुलाई ❀ समय बूझि कै मारब भाई
यह तौ बात सुनत सख्याता ❀ कर्ण कहै राजा सों बाता
जेतिक मन्त्र कहा तुम धीरा ❀ एकहु मन्त्र होब नहिं बीरा
सजग रहैं वे पांचौ भाई ❀ मारि न सकिहौ कोऊ पाई
सुनतहि धृतराष्ट्रक अस कहई ❀ कर्ण बात नीकी यह अहई
भीषम द्रोण बिदुर बुलवाई ❀ मन्त्र करो कछु आन उपाई
ऐसे सबै मन्त्र तब करहीं ❀ एकै एक बचन अनुसरहीं
भीषम कहेउ यह मन्त्र हमारा ❀ जो मानो तुम बचन भुवारा

दो० जैसे धृतराष्ट्रक तुम, तैसे पाण्डु हमार ।
गन्धारी अरु कुन्ति यक, सो मैं कहौं बिचार ॥

दुर्योधन जस अहै भुवारा ❀ तैस युधिष्ठिर धर्मकुमारा
आपन पुत्र औ पाण्डु कुमारा ❀ यक समान ते जानु भुवारा
जो राखौ मम बचन सनेहू ❀ बांटि राज्य दूनौ कहँ देहू
उनके कर्म सबै नृप सांचे ❀ महा महा बिपदा सों बांचे
केतिक जीवन है जगमाहा ❀ अयश जाइ लीजै नरनाहा
येही मन्त्र द्रोण मन माना ❀ कपटरूप धृतराष्ट्रहि जाना
दुर्योधन कपटी परमाना ❀ भीषम केर मन्त्र तब माना
धृतराष्ट्रक भाषै परमाना ❀ आपु बिदुर तुम करहु पयाना
आनौ जाइ कुन्ति कहँ साथा ❀ बन्धुनसहित धर्म नरनाथा
पांचौ बन्धु साथ लै आवो ❀ हमरे बचन सो जाइ सुनावो

दो० होकर हर्षित बिदुरतब, तुरतहि कीन पयान।
जहां द्रुपद राजा अहै, पहुँचे ताही थान॥

द्रुपदराज सों जाइ बखानौ ❀ धृतराष्ट्रक पठवा मोहिं आनौ
अर्धराज्य देवै निज सोई ❀ तब पाण्डव को अतिसुख होई
सत्य बात तो बिदुर बखाना ❀ सो सुनि धर्मपुत्र सुख माना
द्रौपद बहुत बड़ाई कीन्हा ❀ द्रुपदराज ने आज्ञा दीन्हा
कुन्ती सहित द्रौपदी लीन्हा ❀ अहोभाग्य पाण्डव को चीन्हा
पहुँचे जब निज देशहि जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कीन उपाई
भीषम द्रोण कर्ण बलबीरा ❀ आगे पठये हर्ष शरीरा
आगे होइ लेन हित आये ❀ नगरलोग सब देखन धाये
कुन्ती अन्धहिं कीन प्रणामा ❀ सब बान्धव पहुँचे निजधामा

दो० मिले धर्मसुत बन्धु शत, बैठे सभा मँझार।
प्रेम हर्ष भीषम तहां, कीन्ही प्रीति अपार॥

तब धृतराष्ट्र कही असि बाता ❀ कुन्ती सहित सुनौ सब भ्राता
आधा राज देब हम राजा ❀ इन्द्रप्रस्थ जहां लग साजा
सो सुख भोग करौ तुम जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कहेउ बुझाई
राजा कहँ कीन्ह्यो परनामा ❀ परम हर्ष पायो सुखसामा

कुन्ती सहित द्रौपदी साथा ❀ प्रेमहि हर्षि चले नरनाथा
इन्द्रप्रस्थ महँ कीन्ह्यो थाना ❀ रजधानी आपनि करि जाना
करि शुभ शकुन भये तब राजा ❀ आज्ञा भइ तब बाजहिं बाजा
प्रेम हर्ष मन राजा भयऊ ❀ सर्व कलेश नाश दुख गयऊ
कृष्णकृपा ते दुख भे नासा ❀ पाई राज्य भक्ति विश्वासा

दो० यहि प्रकार तब धर्मसुत, राजा तहँवां आइ।
बैशम्पायन महामुनि, तिनसों कहत बुझाइ॥

केतिक दिवस राज्य तब कियऊ ❀ एक दिना नारदमुनि गयऊ
राज अग्र तब कहे बखानी ❀ मन्त्र एक सुनु नृप विज्ञानी
तुम्हरे हित हम मन्त्र बखाना ❀ सुनौ करौ हिरदय परमाना
सुन्दर रूप रहे दुइभाई ❀ महाबीर बल बिक्रम राई
यक नारी तिन दुइते भाई ❀ ताही हेतु बिरोध उपाई
यहि कारण तब दोउ जुझारा ❀ आपु आपु में भे संहारा
यकपत्नी तुम पांचौ भाई ❀ ता कारण हम कहत बुझाई
जासु विरोध होइ नहिं राऊ ❀ सो राजा तुम करौ उपाऊ
द्रौपदिका प्रतिपाल दुराऊ ❀ ताते होइ सबहि सुख भाऊ
ऐसा कहि नारद परिमाणा ❀ दीन्हों सबै बांधि निर्माणा

दो० नेमकरी मुनि दीन्हे, कहा राउ सन बात।
जो कोइ यह लंघनकरै, लहै महाउतपात॥

नेम उलंघन करै जो कोई ❀ बारह बर्ष बास बन होई
यह कहिकै तब नारद जाई ❀ पांचौ बन्धु रहे तब राई
नेम समय द्रौपदि के पासा ❀ आप अक्षत में करै बिलासा
यक दिन राव युधिष्ठिर ठाऊ ❀ द्रुपदसुता आई सति भाऊ
तहां अस्त्र सब पारथ केरा ❀ उच्चस्वर यक ब्राह्मण टेरा
पारथ पारथ करै पुकारा ❀ पारथ सब है काज तुम्हारा
तस्कर एक मोर धन लीन्हो ❀ जातचला सो मैं कहि दीन्हो
सुनि पारथ तब आतुर भयऊ ❀ अस्त्रकार्य तुरतहि तब गयऊ

नारद बचनकि सुधि नाहिं राहा ❀ गये द्रौपदी राजा जाहा
आतुर भे वहि मन्दिर जाई ❀ देखत पारथ लज्जा पाई

दो० लज्जा पाई अस्त्र गहि, पारथ आयो धाय।
हतेउ तुरत तस्कर तहां, द्विजधनलीन्ह छुड़ाय॥

द्विजहिं धीर दै पारथ आये ❀ धर्मराज कहँ बात सुनाये
हम तो जाब तीर्थ के काजा ❀ विस्मयभयउसुनेउ तब राजा
पारथ कहेउ मुनिहि जो भाखा ❀ बारह बर्ष बनहि अवशाखा
यह कहिकै पारथ तब जाई ❀ देश देश चलि बेष बनाई
संन्यासी कर रूप बनाई ❀ पारथ बनोबास तब जाई
नाना तीरथ देख्यो ताहां ❀ नाना बन उपबन के माहां
तब पारथ के मनमहँ आई ❀ नाग अनन्तहिं देखहुँ जाई
भोगवती गङ्गा हैं जाहां ❀ तहँ अस्नान करौं अस काहां
यह बिचारि पाताल सिधाये ❀ शेशनाग के दरशन पाये
भोगवती महँ करि अस्नाना ❀ शेषै नाग परम सुख माना
प्रेमक भक्त प्रबल धनुधारी ❀ इन्द्रकुमार अमित गुणभारी
अजय सु मृत्युलोक महँ आही ❀ कन्या मोरि उन्हीं को चाही
नाम उलूपी कन्या रहै ❀ सो पारथ को देना चहै
यह बिचारि कै पारथ पाहीं ❀ कन्या सो तो दीन्ह्यो ब्याही
प्रेम हर्ष तब पारथ भयऊ ❀ शेषनाग कन्या को दयऊ

दो० सो कन्या पारथ लिये, मृत्युलोक तब आय।
संग उलूपी नारि है, प्रेम हर्ष मन पाय॥

शेष दई तब उलुपी नामा ❀ सँग लै आये मणिपुर ग्रामा
पूर्वसमय चित्राङ्गद प्यारी ❀ मणिपुर माहँ अहै सो नारी
सङ्ग उलूपी आये ताहां ❀ चित्राङ्गद युवती है जाहां
चित्राङ्गद बिवाह जब कीन्हा ❀ दान चित्ररथ बहु तब दीन्हा
रहे तहां पारथ सुख पाई ❀ चित्राङ्गद उलुपी सँग लाई
केतिक बर्ष उलूपी साथा ❀ उपबन महँ तब हर्षितगाता

नागराज के उपबन रहैं ❀ वृक्ष तहां दाड़िम के अहैं
पांचौ पेड़ दिखाये जाईं ❀ उलुपी पाहिं कहा समुझाई
जबहीं लगु हरि अन्तर रहै ❀ पारथ मर्म जगत में कहै
मृत्यु समय पांचौ तरु जरैं ❀ मृत्युलोक जो पारथ मरैं

दो० यहै परीक्षा रहसकी, कहेउ उलूपी पाहिं।
प्रेम हर्षमन पारथहु, रहत सुमणिपुर माहिं॥

कछु दिन बीते यहि परकारा ❀ चित्राङ्गद दुइ गर्भ सँचारा
गर्भके माहँ बास जब लयऊ ❀ बिन्दूबाहन उदर में भयऊ
गर्भ बास नारी भय सोई ❀ मन उदास पारथ तब होई
बारह वर्ष कहा बनबासा ❀ सोतो कीन्हेउ भोगबिलासा
यह बिचारि पारथ मन लाये ❀ मन को भेद न काहू पाये
बिना कहे तो पारथ गयऊ ❀ पाछे तिया महादुख लयऊ
रोदन करैं उभय तहँ नारी ❀ पारथ गे बन हमहिं बिसारी
पारथ बनोबास कहँ गयऊ ❀ चित्राङ्गदहि पुत्र तब भयऊ

दो० बिम्बाबाहन नाम तेहि, प्रतिपालै मन लाइ।
तासु राज भइ तहांपर, मणिपुर नग्र बसाइ॥

पारथ गमन तीर्थ उपदेशा ❀ नाना बन उपबन परवेशा
गौतमि अरु गोदावरि परशे ❀ गङ्गासागर हर्षित दरशे
गया प्राग तौ परशे जाई ❀ नीमषार दरशन किय आई
मथुरा बृन्दाबन तब देखा ❀ यमुनानदी सुपरशि बिशेखा
चारौ दिशा भर्मना कियऊ ❀ प्रदक्षिणा धरती को दयऊ
पारथ सब भरमें संसारा ❀ संन्यासी के रूप अपारा
जहँ लग तीरथ जगमें अहैं ❀ देखा सब पारथ मुनि कहैं
परकट कीन्हेउ तब संसारा ❀ नारद बचन के हेत बिचारा

दो० तीरथ भर्म गमन किय, देखा अगणित देश।

नारद बचनके हेत सों, पारथ सहेउ कलेश ॥

इति श्रीमहाभारतेश्रादिपर्वणिसबलसिंहचौहान भाषाकृतेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

धर्मराज अंदेशा करई ❀ पारथ हेतु तौ बिस्मय धरई
कौन देश कहँ पारथ गयऊ ❀ यहि चिन्ता में राजा भयऊ
पारथ देखा बन बन नाना ❀ नारद बचन हेतु परमाना
पारथ तहां तो हर्षित जाही ❀ जहां मुनी कोऊ नहिं श्राही
पारथ कहँ तब मुनि जो देखा ❀ पूछत रूप सँन्यासी बेखा
कौन हेतु बनको पगुधारा ❀ तब पारथ यह बचन उचारा
पांच बन्धु श्रौ द्रुपदी रानी ❀ नारद दील नेमकरि श्रानी
नेमालङ्घन करै प्रकासा ❀ बारह बर्ष जाइ बनबासा
एक दिना तौ धर्म भुवारा ❀ द्रुपदी हेतु संग सुवनारा
श्रारत नाद बिप्र यक करई ❀ मोरा धन तस्कर सब हरई
नारद बचन बिसरि तौ गयऊ ❀ अस्त्र हेतु तब गृह में गयऊ
राजा देखत लज्जा पाये ❀ श्रापु श्रापु तौ लाज लजाये
नारद बचन समझि मनमाहा ❀ तब हम तीरथ भर्मन चाहा
यहि कारण तब मुनिहिं बुझाई ❀ पारथ तीरथ भर्मत जाई
रैवा पर्वत देखा जाई ❀ तहँवां दर्श कृष्ण कर पाई
कृष्ण पार्थ को लाये ताहां ❀ द्वारावती नाम के पाहां
दो० पारथ कहँ लै राखेऊ, प्रेमरु हर्ष अपार ।
घरघर प्रीतियदुबंशीहित, नितनित देतश्रहार ॥
यकदिन तबै सहोद्रा देखी ❀ बलदाऊ सन कहा बिशेखी
भाषत बात सहोद्रा ताहा ❀ यह तौ बीर तपी नाहिं श्राहा
काम स्वरूप तेज तनु तासू ❀ प्रेम सदा हिरदय परकासू
कहत शेष ना जानहुं ताहीं ❀ प्रेमै सदा रहै मनमाहीं
एकबार जो कौतुक होई ❀ क्रीड़ा करहिं सखी सब कोई

चितै सहोद्रा तहँ पारथहीं ❀ प्रेमै सदा रहै मनमहहीं
लीन तबै पारथ पहिंचाना ❀ आन भेद जानहिं भगवाना
और न जानत यादव कोई ❀ पारथ हेतु सहोद्रा सोई
एकै बार सहोद्रा ताहां ❀ चलि अस्नान चढ़ी रथ माहां
जौन द्वार पारथ यदुराई ❀ तौने द्वार सहोद्रा जाई
पारथबीर बिलँब जनि लाऊ ❀ बेगि आपने धाम सिधाऊ
पारथ धाइ चढ़्यो रथ जाई ❀ चल्यो सहोद्रा लै तब राई
कृष्ण आदि औरो यदु जेते ❀ सजे युद्ध को क्रोधित तेते
पारथ रथ रोंका तब ताहां ❀ मारयो बाणन यदुदल माहां
तबै सहोद्रा कहत बिचारी ❀ मैं रथ हांकौं तुम करु मारी
तबहिं सहोद्रा रथहि चलाये ❀ पारथ बुंद बाण बरषाये
बामे हाथ गहे धनु जाना ❀ गहे चाप औ धनु संधाना
बायें हाथ चलावै बाना ❀ महाबीर नहिं जात बखाना

दो० यक समान शर हैकरे, देखा तब बलदेव ।
हल मूशल तब हाथलै, कोपि चले सुनु भेव ॥

नारायण सेना तब साजा ❀ यदुकुल मतौ बाजने बाजा
क्रोधवन्त बलदेव भे जबहीं ❀ आये कृष्ण बुझाये तबहीं
तपी रूप पारथ हे भाई ❀ मग आज्ञा कन्या लै जाई
कहि बलदेव तो बात बुझाई ❀ म्वहिं काहे नहिं बात जनाई
अबै बोलावो पारथ भाई ❀ करि बिवाह तब सौंपहु साई
तब श्रीपति पारथहिं बोलाये ❀ कन्या लै पारथ तब आये
वेद के मत से भयो बिवाहा ❀ हर्ष होइ बलदेव तो काहा
बड़ाबीर पारथ हम जाना ❀ दोऊ हाथ चलावत बाना
दोउ कर शायक एक समाना ❀ अति धनुधारी सब जग जाना
यहि प्रकार पारथ की करनी ❀ बारह बर्ष अन्त भौ भरनी

दो० बारह बर्ष बास बन, ऐसे गये सिराइ ।
पारथ लेइ सुभद्रा, अपने गृह तब आइ ॥

तौ पुनि निज देशहिं सो आये ❀ नारि सहोद्रा संगहि लाये
कृष्ण समेत राज्य को आये ❀ प्रेम हर्ष आनँद तब पाये
एकसमय कृष्ण हैं साथा ❀ पारथ आदि सभा नरनाथा
बिप्ररूप पावक सख्याता ❀ कही जो आइ सभा में बाता
सुनियो बात हमार बिचारा ❀ मयसुतनाम जो तहां भुवारा
बारह वर्ष यज्ञ तब कीन्हा ❀ ता कारण व्याधा तनु दीन्हा
द्वापर होइ कृष्ण अवतारा ❀ पारथ सन तुम्हार उद्धारा
ता कारण हम आये याही ❀ हमरो नाथ निबेड़ा चाही

दो० बाचा करौ तौ मांगहूं, कहा बचन परमान।
तब हरि पारथ भाषही, कीजै सत्य बखान॥

कैसे होइ व्याधि तनु नाशा ❀ सोई बचन करौ परकाशा
पारथ कहि यह बात बखाना ❀ इन्द्र केर आहै बगवाना
पशु पक्ष्यावतार बहु जाना ❀ ताहि देह ते व्याधि नशाना
वह बन दहै पाव जो साईं ❀ तौ हमरी तनु व्याधि नशाईं
मन्दानल हैं हम संसारा ❀ करौ हमार यहै उपकारा
सुनियो कृष्ण धनञ्जय सोई ❀ करि परतिज्ञा भाषत दोई
चलौ जाइ सो बनहिं जरैये ❀ जाते आपु परम सुख पैये
गहिकै अस्त्र चले पुनि ताहीं ❀ नर नारायण दूनों आहीं
सो बन देखा नयनन जाई ❀ मारे बाण बुन्द सम आई
शर पंजर बन ऊपर भयऊ ❀ बन भीतर पावक निर्भयऊ

दो० पावक बनमाहीं लगी, सुरपति क्रोध अपार।
प्रलयकाल के मेघ सब, आयउ बैर सँभार॥

बर्षेसि नीर सबै बन ताहां ❀ पावक जरै खाण्डबन जाहां
अन्धकार भैवन घन साजा ❀ अतिही क्रोधवन्त सुरराजा
चलो बुन्द जल भेदत नाहीं ❀ भै निशङ्क पावक बन खाहीं
पशु पक्षी अरु तरुवर जेते ❀ पावक सकल जराये तेते
जीव जन्तु सब करैं पुकारा ❀ दानव दैत्य भयो सब क्षारा

मयदानव भो यक सुनु राई ❋ सो पारथपहँ बिनती लाई
आपनि शरण राखु नृप मोहीं ❋ कबहुँक करब काज हम तोहीं
पारथ सुनेउँ हर्ष मनभारी ❋ देहु छांड़ि भाषत बनवारी
पावक पाहिं धनंजय भाखा ❋ सो दानव जारतही राखा
पारथ की अस्तुति बहु ठाना ❋ भाष्यो तुम दीन्हो जिव दाना

दो० पारथ हर्षित प्रेममन, पुलकित सबै शरीर।
खण्डित बन दाहन करै, पावक प्रकट गँभीर॥

घूर्मि नाम यक नागिनि रहई ❋ सोई सदा खण्ड बन अहई
पावक जरै भागि सो जाई ❋ तेज पुञ्ज आकाश उड़ाई
पारथ देखि बाण परिहारा ❋ पंख काटि पावक महँ डारा
सो जरि भस्म भई पलमाही ❋ पावक सबै खण्ड बन दाही
भे प्रसन्न पावक परमाना ❋ दीन्हेउ श्वेतबाहिनी नाना
महादेव आराधेउ जबहीं ❋ बाहन श्वेत दिव्यरथ तबहीं
सबै देवता हर्षित होई ❋ यक यक वर दीन्हेउ सब कोई
यह कहिकै बैसन्दर जाई ❋ गृह आये पारथ यदुराई
कछुदिन तहां रहे भगवाना ❋ पुनि द्वारावति कीन्ह पयाना
गये द्वारका श्रीयदुबीरा ❋ पाण्डु रहे सब हर्ष शरीरा

दो० यहि प्रकार जनमेजय, तोर बंश गुणमान।
प्रेमकथा अद्भुत सुनहु, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेआदिपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
पञ्चदशोऽध्यायः॥ १५॥

वैशम्पायन उवाच॥

देव पुहुप तौ नारद आना ❋ लै दीन्हो तब श्रीभगवाना
कृष्ण तो दीन रुक्मिणी पाहां ❋ सतिभामा क्रोधित भइ ताहां
पारिजात एहो भगवाना ❋ सतिभामा लाये बगवाना
तब रुक्मिणि बहुतै दुखपाई ❋ यहिते सरस फूल मनलाई
सुनि श्रीपति गे पारथ पासा ❋ जाय बचन कीन्हे परकासा

कदली बनहिं तुरतही जैये ❀ सुगँधराज पुष्पन लै ऐये
पारथ गये धनुष शर लयऊ ❀ कदलीबनमें प्रविशत भयऊ
तोरत फूल तहां रखवारे ❀ हनूमान सों जाय पुकारे
सो सुनि हनुमत क्रोधित भयऊ ❀ पारथ पाहिं कहन अस लयऊ
यही पुहुप पूजत रघुराई ❀ चोरी करत चोर अन्याई
दो० पारथ कह तब राम को, करत बड़ाई कीश।
जानेउ सब पुरुषार्थ हम, जौन राम अवधीश॥
मोहिं समान कौन धनुधारी ❀ क्रोधी पारथ कह्यो बिचारी
शारँग हाथ गहेउ रघुनाथा ❀ ढोये कस पर्वत कपिनाथा
कहौं न प्रभुता सुनु हनुमाना ❀ बांधौं सिन्धु पलक महँ जाना
झूठ बचन कस कहत अयाना ❀ बांधौ सिन्धु न हतिहौं प्राना
सुनु रे कीश महा अज्ञाना ❀ क्रोध कियो पारथ बलवाना
पारथ हनू सिन्धुतट आये ❀ बाण बुन्द पारथ झरि लाये
सौ योजन शरबांधि सँवारा ❀ हनूमान बिस्मय अतिभारा
देखि कहैं हनुमत यह बाता ❀ सेतुपार हम जाब सख्याता
यद्यपि बांध रहे दृढ़ होई ❀ मानहुँ सत्य धनुर्द्धर सोई
दो० पारथ कही बात यह, भरे गर्ब अहँकार।
केतिक बार तुम्हारही, करौं पार संसार॥
तब हनुमान क्रोध अति छायो ❀ उत्तर दिशा क्रोध करि धायो
योजन सहस बदन बिस्तारा ❀ औ लीन्हेउ पुनि बहुत पहारा
देखि रूप बिस्मय संसारा ❀ रोम रोम प्रति बँधे पहारा
आये तुरत पयोनिधि तीरा ❀ आपुहि आपु लड़त दोउ बीरा
पारथ देखत भूलेउ ज्ञाना ❀ सुमिरेउ तबहिं चरण भगवाना
अपने मनमें श्रीपति जाना ❀ भयो बिवाद पार्थ हनुमाना
हनू भार को जगमें सहै ❀ तीनिलोक को उलटन चहै
यहै बिचार करैं यदुबीरा ❀ कमठरूप तब धरेउ शरीरा
शरको बांधि पार्थ पुल कीन्हा ❀ तेहिमधि जाइ पीठि हरि दीन्हा

हनू भार पीठी पर धारा ❋ रक्त बहायो बदन सो फारा
दो॰ रक्त वर्ण तब देख्यो, करि बिचार हनुमान।
मोर भार संभार को, को है जगमें आन ॥
धरेउ ध्यान श्रीकृष्ण को पाये ❋ कूदि हनू तट ऊपर आये
निज रुधिरै देखेउ बनवारी ❋ पारथ हनु तौ अस्तुति सारी
श्रीपति कह दोउ एक समाना ❋ पारथ बीर और हनुमाना
याहि प्रकार प्रीति परमाना ❋ श्रीपति तब भे अन्तर्द्धाना
पारथ सखा भये हनुमाना ❋ यहि प्रकार ते ऋषिहि बखाना
पाछे पुहुप पार्थ लै गयऊ ❋ श्रीपति ताहि रुक्मिणी दयऊ
द्वारावती रहत बनवारी ❋ पारथ धन्य कहत गिरिधारी
यहै रहस्य कथा सुनु राऊ ❋ तोरे बंश चरित्र उपाऊ
इन्द्रप्रस्थ तब पाण्डव रहहीं ❋ कौरवदल हस्तिनपुर बसहीं
प्रेम अनन्दित सकल रजाई ❋ बैशम्पायन कथा सुनाई
दो॰ पाण्डव बिजय कथा यह, सुनत पाप को नाश।
बड़ बिस्तार न कीन्हेऊँ, करेउँ सँक्षेप प्रकाश ॥
कहैं बात तब श्रीयदुराई ❋ पारथ धन्य धन्य भक्ताई
तोहिं समान भक्त नहिं कोई ❋ भयो जगत में है नहिं होई
पारथ कहे सुनौ जगतारण ❋ मिथ्या कहौ आपु केहि कारण
मोहिं समान जगत बहुतेरे ❋ तीनिलोक में अहैं घनेरे
मैं पातकी कौन मंझारा ❋ नाथ जो तुमहिं सहाय हमारा
कहैं कृष्ण ऐसो नहिं कहहू ❋ तुम समान तुमहीं जग अहहू
और अहै तो आनि देखावहु ❋ झूठि बात केहि हेत सुनावहु
पारथ कहे जो आज्ञा पाऊं ❋ नाथ आनि अगणित दिखराऊं
तब श्रीपति यह आज्ञा दीन्हा ❋ पारथ गमन ततक्षण कीन्हा
खोजेउ पारथ सब संसारा ❋ माया हरि जानै को पारा
दो॰ कोइ न पायो आपुसम, मनमें करै बिचार।
सबजगकर्ता हरि अहै, माया जेहि संसार ॥

तब पारथ मन कीन्ह बिचारा ❀ हीन बस्तु देखा संसारा
बिष्ठा देखा पारथ तहँवां ❀ बांधि बस्त्र लै आये जहँवां
श्रीहरि अग्र कहैं तब बाता ❀ खोजा सबहिं जगत सख्याता
मोहिं समान जगत नहिं कोई ❀ पायो नहीं कहा प्रभु सोई
सर्ब जगत के अन्तर्यामी ❀ गूढ़ अगूढ़ लखो तुम स्वामी
एक अहहि तौ हमहिं समाना ❀ सुनौ देवपति तुम भगवाना
आपै अग्र दिखाइ न जाई ❀ हृदय प्रेम जानेउ यदुराई
महा प्रफुल्लित श्रीभगवाना ❀ धन्य धन्य पारथ बलवाना
डारि देउ मैं तौ सब जाना ❀ मोरे अर्द्धअङ्ग तुम प्राना
मोर तोर है एक शरीरा ❀ काहे दीन होत हौ बीरा

दो० मनुजरूप तुम पार्थहौ, माधैं श्रीभगवान।
नारायण जानो हमहिं, सुनियो बचन प्रमान ॥

विष्णु नाम मेरो परमाना ❀ नाम बिभत्सु तोर जगजाना
नाम बिभत्सु जबै हरि दयऊ ❀ सुनत पार्थ तब हर्षित भयऊ
तब बिष्ठा को दीन्हो डारी ❀ करि अस्नान परे पगु भारी
परे कृष्ण के चरणन जाई ❀ प्रेमहिं हर्ष भये यदुराई
कछुदिन रहे पार्थ पुनि ताहां ❀ बिदा होय आये घर माहां
अपने गृह तब पारथ गयऊ ❀ प्रेमै हर्ष जगतपति भयऊ
पाण्डव जै भारतहि बखाना ❀ जनमेजय सुनकर सुखमाना

दो० भारत कथा पुनीतअति, जाते पाप बिनास।
श्रवण पानके करतही, यमपुर छूटै त्रास ॥

जो फल ब्रत एकादशि कीन्हे ❀ जो फल होइ भूमि के दीन्हे
जो फल कोटिक कन्या दीन्हे ❀ जो फल सब तीरथ के कीन्हे
जो फल होय शरण के राखे ❀ जो फल होय सत्य के भाखे
जो फल यज्ञ धर्म करवावै ❀ सो फल या भारत सुनि पावै
भारत कथा सुनै अरु गावै ❀ ताके पाप निकट नहिं आवै
जो फल रणमें प्राण गँवाये ❀ सो फल श्रीभारत सुनि पाये

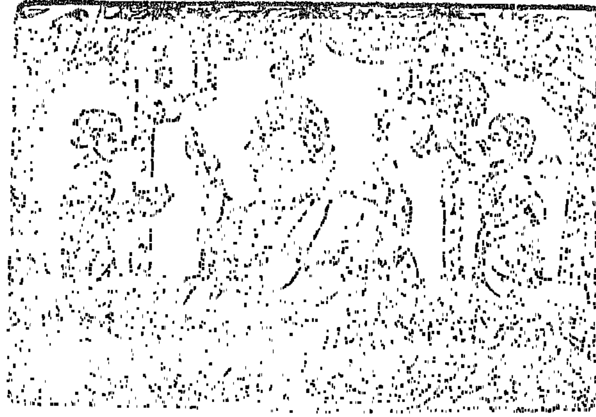
भारत कथा पुण्य परवेशा ❋ सावधान होइ सुनौ नरेशा
पैठे धर्म पाप क्षय जाई ❋ आयुर्बल होवे अधिकाई

दो० क्षत्री सुनत सुमार्ग लह, मानुष ज्ञान प्रकास।
सबलसिंह चौहान कह, होइ परमपद बास॥

इति श्रीमहाभारतेआदिपर्वणिसबलसिंहचौहान
भाषाकृतेषोड़शोऽध्यायः॥ १६॥

इति आदिपर्वसमाप्तम्॥





महाभारत

सभापर्व

सबलसिंह चौहान विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

शिशुपालवध-पूर्वक श्रीमहाराज युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ, मय-रचित सभा में भीमसेन करके दुर्योधन की अप्रतिष्ठा, दुर्योधन-रचित मययज्ञ में युधिष्ठिरादि की पराजय, द्रौपदी-चीरहरण, युधिष्ठिरादि को गान्धारीदत्त वरदान, पुनः द्वितीय यूपयज्ञ में युधिष्ठिरादि का पराजय तथा वन-वास-गमन आदि की कथा सविस्तार वर्णित है।

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बिपिनविहारी कपूर के प्रबन्ध से

मुन्शी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९४६ ई०।

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ सभापर्व ॥

दो० सुमिरि व्यासगणपतिचरण, गिरिजाहरभगवान।
सभापर्व भाषा भनत, सबलसिंह चौहान॥
सत्रह सौ सत्ताइसै, संवत शुभ मधु मास।
नवमी अरु गुरु पक्ष सित, भै यह कथा प्रकास॥

अब नृप सुनहु कथा भै जोई ❀ तव हित हेतु कहत मैं सोई
कुरु पाण्डव सोहैं दौ आछे ❀ जस समाज बरणों मैं पाछे
इन्द्रप्रस्थ दौ बसैं सुखारी ❀ मतिदृगअन्धराज्य अधिकारी
धन महि सेन सौंपि सब दीन्हा ❀ बुद्धिचक्षु निजसुत नृप कीन्हा
कानि राज्यपद की अतिभारी ❀ भीष्म द्रोण भे आज्ञाकारी
सोहत दुर्योधन नृप गादी ❀ भूमि पाण्डुनन्दन के सादी
इन्द्रप्रस्थ महँ पूरब ओरा ❀ कुरुसमाज सोहत घनघोरा
बसत तहां सब भूप समाजा ❀ भीषम बाह्लीक महराजा
बिदुरकृपागुणनिधि सुखधामा ❀ रविनन्दन अरु अश्वत्थामा

दो० भरद्वाज सुत आदि भट, दुर्योधन रुख देखि।
करतकाजकुरुनाथसँग, निशिदिनरहतबिशेखि॥

चित्ररम्य सोहहिं बहुभांती ❀ त्रिदशपुरी देखत सकुचाती
तेहि थल ते गत पश्चिम आसा ❀ योजन नव कुन्तीसुत बासा
तहां युधिष्ठिर राजहिं राजा ❀ बिपुलसम्पदा सहित समाजा
मतिदृग दीन्हे नगर पचीशा ❀ धर्मनन्द लीन्हे धरि शीशा
दुर्योधनहिं राज्य सब दीन्हा ❀ धर्मराज कछु गर्व न कीन्हा

भूमि अनेक नरेशन केरी ❀ जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ जीति लिये जहँ तहँ भुवराई
ते सब दण्ड देहिं नृप धर्महिं ❀ नाहिं डरपाहिं कुरुराजकुकर्महिं

सो० आवहिं बिपुल नरेश, जीते प्रथमहिं पाण्डुजे ।
करहिं बिनय उपदेश, देहिं दण्ड मतिदृगसुतहिं ॥

देन दण्ड कुरुपतिगृह आवहिं ❀ करि बिनती अनेक समुझावहिं
पाण्डुसुतनकी अति भय मानी ❀ दण्ड पठाइ देइँ रजधानी
दुर्योधनभय मिलन न जावहिं ❀ गुप्तरूप धन दण्ड पठावहिं
इन्द्र समान राज्य नृप करई ❀ चलै सुमार्ग सत्य नहिं टरई
नीति निपुणता जगमहिं छाई ❀ प्रजालोग सुख लहहिं अघाई
सम्पति गृह कुबेर ते भारी ❀ राज बन्धु सब आज्ञाकारी
मयकी सभा बनाई जोहै ❀ रचना अद्भुत लखि मन मोहै
महल अनेक बने शीशाके ❀ लखि मनमोहै सुरईशा के
जलअगाध थल नाहिं लखिपरई ❀ जहँ थल दृगजल मनहुँ भुसरई
लखिविचित्रथलचितभ्रमिजाई ❀ फिरसँभरत नाहिं कोटि उपाई

दो० भीमसेन अर्जुन नकुल, लघुभ्राता सहदेव ।
महाबीर बहुभुजबली, करहिं नृपति की सेव ॥

नृप पदवी शिर कौरव केरी ❀ तिनते अधिक धर्मनृप केरी
यकदिन धर्मराजमन आजा ❀ राजसूय करि होई काजा
निजमन्त्री अरु बन्धु बोलाये ❀ करि मत ठीक व्यासपहँ आये
भाइन सहित चरण शिर नावा ❀ कुशल पूछि ऋषिकण्ठ लगावा
ऋषिरुखपाइ धर्म महिपाला ❀ कहेउ मनोरथ सकल भुवाला
जाइ पार तौ करौं उपाई ❀ नतु चुप साधिरहौं ऋषिराई
कह ऋषिकुशलमनोरथ तोरा ❀ करहिं भूप वसुदेवकिशोरा
सुनत नरेश बिदा पुनि मांगी ❀ ऋषिपदपरसि चले अनुरागी
निज मन्दिर नृप आतुर आये ❀ देश देश कहँ पत्र पठाये
लिखि अनेकविधिविनय बड़ाई ❀ दीन्ह पत्र हरि नगर पठाई

दो० प्रियपरिजन परिवार अरु, हलधरसहितकृपाल ।
सबइ आइ करुणायतन, कीजै मोहिं दयाल ॥

बासुदेव द्वारका विराजत ❀ बलयुत यदुबंशी सब राजत
यकदिन माधव के मन आई ❀ नहिं कछु गजपुरकै सुधि पाई
ऊधो हलधर सभा घनेरी ❀ चरचा करत पाण्डवन केरी
बहुबिधि करत बिचार खरारी ❀ तेहि अवसर आये चर चारी
बेतपाणि तब खबरि जनाये ❀ सुनि यदुनन्दन तुरत बुलाये
जाय सबन नायो तहँ माथा ❀ उठिकै पत्र लीन यदुनाथा
बांचि सभा महँ सबन सुनाई ❀ दूतन दीन्हेउ बास दिवाई
तेहि अवसर ऋषि नारद आये ❀ हरिगुण गावत बीन बजाये

दो० ऋषिहि देखि करुणायतन, कीन्हेउ दण्ड प्रणाम ।
सहितसभाउठि मुनिचरण, धर्यो शीश निजराम ॥

दीन सुआसन अति अनुरागा ❀ प्रभु करजोरि रजायसु मांगा
हम सनाथ आगमन तुम्हारे ❀ निजजन जानि नाथ पगु धारे
अब कृपालु करि मोपर दाया ❀ आगम हेतु कहौ ऋषिराया
तब बोले ऋषि सहित सनेहू ❀ तुमहिं न उचितबचनप्रभुयेहू
तुव दरशन त्रिभुवन महराजा ❀ यहिते अधिक कवन बड़काजा
यह हरि केवल हेतु हमारा ❀ शक्र कहेउ कछु चलती बारा
भयउ कृपालु भूप शिशुपाला ❀ देत सुरन दुख कठिन कराला
अतिबल देवाङ्गना विलासी ❀ करत दशाननादि कै हांसी
सबन कहत मैं आप बिधाता ❀ संहरता करता अरु त्राता
तेहिकी नाथ पन्थ कर बासी ❀ करहु कृपालु सहज सुखरासी
श्रुतिमारग यहि निपट उलंघा ❀ पठइय शीश सुदर्शन संघा

दो० सुने श्रवण ऋषिमुखबचन, कृपासिन्धु भगवान ।
भृकुटिभङ्ग कीन्हेउ मनहुँ, उदय केतु अस्थान ॥

रिसबसयुगल बिलोचनलाला ❀ कहेउ न ऋषिबाचिहै शिशुपाला
काटौं शीश चक्र गहि हाथा ❀ करौं माथ सुरनाथ सनाथा

सुनिअस दैअशीश ऋषिनारद ❀ ब्रह्मसभा गे ज्ञान बिशारद
कह हरि उद्धव हलधर तेरे ❀ तात परम असमंजस मेरे
धर्म नरेश निमन्त्रण दीन्हा ❀ ऋषि नारद यह आयसु कीन्हा
युगल कर्म करतब्य हमारे ❀ कल न बिना शिशुपालहि मारे
अतिबल धर्मराज के भाई ❀ जीते जिन नरेशसमुदाई
हम बिन यज्ञ युधिष्ठिर करिहै ❀ गये बिना शिशुपाल उबरिहै
कहहु युगल तुम मन्त्र बिचारी ❀ पितुसम हौ हमरे हितकारी
जो कछु करत मोर अपराधा ❀ सो नहिं सकत नेकु करि बाधा
दाहत लोकपाल शिशुपाला ❀ सो यह होत हृदय मम शाला

दो० सुनत शत्रु बध सुरति करि, नैन तरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति, बोले बाणी बाम ॥

राखहिं भूलि रिपुहि जे जीती ❀ उदय न होत कहत अस नीती
यहि प्रकार रिपुमूल उखारी ❀ उदित यथातम नाशि तमारी
कीन्हे बिना शत्रु पद नाशा ❀ करिय प्रतिष्ठा की जनि आशा
जल बिन रजहि पङ्क करिदीन्हे ❀ थिर नहिं रहत यतन बहुकीन्हे
तबलगसुखनबिदिततनधरको ❀ जीवन जबलग एको अरिको
जिमिरबिशशिहिराहुदुखदेता ❀ सब सुर तव सहाय क्रतुकेता
अहिजिमि सत्य शत्रुहरि सोई ❀ देखि ठाढ़ि रोमावलि होई
हम न डरत सपनेहु रणकालहि ❀ भा रोमांच सुनत शिशुपालहि
ताते अब न नागपुर जाहू ❀ रिपु जगजीवत कल नहिं काहू
महिषमती पुर लीजे घेरी ❀ सजहु बाजिगज सैन्य घनेरी
गत दिन यदुकुल कै तलवारी ❀ लहा न दामिनिके छबि भारी
अब उडुगण तरवारि तरङ्गा ❀ लहैंसुछबि रबिकिरणिन सङ्गा
चलि शिशुपालप्राण हत कीजे ❀ करैं धर्म मख आयसु दीजे
अस कहि करन लगे मद पाना ❀ उगिलत बमत बचनकरि नाना
सुनि उद्धव ते सैन बुझाई ❀ तुम कछु कहहु कहेउ यदुराई

सो० सत्य सत्य यह बात, भाषे मूशलपाणि जो ।

सुनत मन्त्र मम तात, उद्धव यदुनन्दन कहेउ ॥
सहज जीति शिशुपाल न जैहै ❋ भूपसमूह सहायक ऐहै
रोगसमूह राजयक्ष्मा जिमि ❋ नृपसमूहशिशुपालप्रबल तिमि
समयपरे प्रभु मारिय ताही ❋ सहसा कर्म उचित अस नाही
अपर न हितदायक जग तोसे ❋ करत धर्म मख नाथ भरोसे
तुम विहीन करिहै मख नासा ❋ होइहै धर्म नरेश उदासा
अइहैं विपुल भूप मखमाहीं ❋ बांधि बांधि तब मरिये ताहीं
कारज युगल बनत अस कीन्हे ❋ प्रथम ताहि तुमहीं बर दीन्हे
सहि शत अधिक एक अपराधा ❋ करिहौं तब प्राणनकै बाधा
इन्द्रप्रस्थ अइहैं सब राजा ❋ खुलि जइहैं रिपुमित्रसमाजा
उठे सुनत हरि उद्धव बानी ❋ भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी
हने निशान साजि बहु सेना ❋ उठी धूरि जनु अर्क रहेना
दो० हलधर ऊधो सात्यकी, अपर लोग सब साथ ।
निज नरेश के द्वार पर, जात भये यदुनाथ ॥
उग्रसेन ते मांगि रजाई ❋ इन्द्रप्रस्थ कहँ चले गोसांई
हरिपुर ते दल चले समूहा ❋ चतुराननमुख जिमि श्रुतिजूहा
आवत सुन्यउ धर्म महराजा ❋ मिलनचले सँग सुभट समाजा
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागा ❋ हलधरसहित उमँगि अनुरागा
मिलत न प्रीति हृदय कहिजाती ❋ पुनि पुनि भेंटि जुड़ावत छाती
रबिनन्दिनि तट दल समुदाई ❋ दीन नृपति बिश्राम कराई
हरि बलदेव लोग कछु साथा ❋ चले अवास धर्म नरनाथा
सकल बन्धु तेहि अवसर आये ❋ हरिहि बिलोकि नयनजलछाये
दो० मिले वृकोदर बिजय नर, युगल बन्धु हरषाय ।
पूछी कुशल कृपाल तब, कहौ युधिष्ठिरराय ॥
कुशल देखि तव चरण मुरारे ❋ जो तुम दीन जानि पगुधारे
हलधर कीन्ह कृपा सब भांती ❋ अरु सात्यकि ऊधो संघाती
आये प्रभु मोहिं कीन्ह सनाथा ❋ प्रणतारातिभञ्जन यदुनाथा

सभा मध्य हरि हलधर गये ❀ शुभ सिंहासन बैठत भये
धर्म महीप कहत मृदुबाणी ❀ गे अन्तःपुर शारँगपाणी
मिलिरानिनकहँसहितहुलासा ❀ बहुरि गये कुन्ती के पासा
बन्दत चरण देखि अनुरागी ❀ पुनि पुनि कण्ठ लगावन लागी
द्रुपदसुता पूछत कुशलाता ❀ परमानन्द प्रफुल्लित गाता
कछुक मधुर पकवान मिठाई ❀ द्वारे हलधर दीन पठाई
राम सहित नृप भोजन कीन्हा ❀ उद्धवसहित सात्यकी दीन्हा
राम बहुरि अन्तःपुर आये ❀ उद्धव सात्यकि संग लगाये
कुन्ती रामहिं आवत जाना ❀ आगे चलि कीन्हेउ सनमाना
चरणन परे मातु उर लाये ❀ भूप सहित पुनि द्वारसिधाये

दो० उहां द्रौपदी हर्षयुत, करत बिबिध सनमान।
भोजन करवायो हरिहिं, बहुरि खवायो पान ॥

यदुपति कछुक घरी तहँ रहिकै ❀ चलत भये रानिन ते कहिकै
आये धर्म महीपति पासा ❀ बिछी प्रयंक सेज शुभवासा
तहां पौढ़ि प्रभु सोवन लागे ❀ रहा यामदिन यदुपति जागे
जुरी सभा बहु गायन आये ❀ सकल कलामहँ कुशल सोहाये
जागि धर्मसुत राम जगाये ❀ परम सुखद आसन बैठाये
आसव पान राम तब कीन्हा ❀ होय नृत्य अस आयसु दीन्हा
राम बचन सुनि गायन गाये ❀ बहुप्रकार करि नृत्य रिझाये
यहिबिधिदिनप्रतिसहितसनेहा ❀ कछु दिन कृष्णरहे नृपगेहा
अद्भुत यज्ञ दिवस नियराना ❀ आवत तहां महीपति नाना
जरासन्ध सुत प्रबल भुवारा ❀ आइ तहां दल कीन्ह जोहारा
भेंट देइ ऋतु शिबिर भुवाला ❀ तेहि अवसर आये शिशुपाला
धर्मराज तब नकुल बोलाये ❀ मनभावत शुभ बास देवाये
देश देश के भूपति आये ❀ धर्मराज पद शीश नवाये
भेंट अनेक भूप बतलावहिं ❀ करहिं प्रणाम बास शुभपावहिं
परहिं ते चरण कृष्ण के आई ❀ पुनिपुनि धर्मसुतहि शिर नाई

बीर बृकोदर आदिक मिलिकै ❀ बैठहिं भूपसभइ सबहिलिकै
भई भीर पाण्डव दरबारा ❀ कोउ न पावत और दुवारा
तब बोले हँसि शारँगधारी ❀ कुरुपति कहँ अब लेहु हँकारी

दो० चरबर बोलि नरेश तब, दीन्ह्यो तिनहिं रजाइ।
लै आवहु कुरुनाथ कहँ, करहिं सभा मम आइ॥

बहुरि बोलाय एक चर लीन्हा ❀ गङ्गासुतहि निमन्त्रण दीन्हा
बाहुलीक गृह एक पठावा ❀ करिबहुभांति बिनयसमुझावा
द्रोण कृपा गृह पत्र पठाई ❀ लिखिअनेकबिधिबिनयबड़ाई
बिपुल दूत नरनाह बोलाई ❀ दै पुङ्गीफल नृप समुझाई
जे सब बिपुल नागपुरबासी ❀ सचिव महाजन जे गुणरासी
पृथक पृथक कहि नाम नरेशा ❀ पठये चर बहु करि उपदेशा
सुनत निदेश प्रजाजन आये ❀ नैमन्त्रित अरु बिनहिं बोलाये
आवहिं चले प्रजा बहुतेरे ❀ ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे
उचित अवास दीन सब काहू ❀ मखदरशनहित अतिउत्साहू
चरबर उहां नागपुर गये ❀ सबकहँ देत निमन्त्रण भये
गयो दूत कुरुपति दरबारा ❀ दीन पत्र बहुबार जोहारा
तब कुरुपति शकुनी हँकराये ❀ बांचि पत्र सब भेद सुनाये
पूछि मन्त्र आज्ञा नृप कीन्ही ❀ साजिनिजसैन दुन्दुभीदीन्ही
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये ❀ कृपाचार्य सब साज बनाये
साजि दल चलत भयो कुरुराई ❀ बाजत पटह भेरि सहनाई
गज अरूढ़ कुरुपति छबि पाई ❀ चहुँदिशि तुरँग रहे ठहनाई
चरबर कहेउ कि कुरुपति आये ❀ धर्मनरेश सुनत सुख पाये
बन्धु बोलाइ सकल तिन लीन्हे ❀ मिलहु जाय नृप आयसु दीन्हे
बन्धु सकल अरु सुभट समाजू ❀ चले भीम भेंटन कुरुराजू
तब उठि साथ चले यदुनन्दन ❀ जेहि मग आवत कौरवनन्दन
प्रथमहिं मिले पितामह आगे ❀ हरिहि देखि रथ तजि अनुरागे
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा ❀ बाहुलीक बिकरण सरदारा

दो॰ अतिआदरमिलिसबनकहँ, भीमसहित यदुराय ।
किये नकुल सहदेव सँग, बास करावहु जाय ॥

नाना भाँति करहु सेवकाई ❀ असकहि अग्र चले यदुराई
मिलहिं बरूथ सुभट मगमाहीं ❀ करत जोहार चले सब जाहीं
बिदुर दीख यदुनन्दन आये ❀ द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये
पुनि पुनि कृपासिन्धु भगवाना ❀ मिले बहुत बिधिकरि सन्माना
तब पारथहि कहेउ यदुराई ❀ सुथल शिबिर करवावहु जाई
बिदुर समेत रम्य अस्थाना ❀ पारथ गुरुसँग कीन पयाना
भीम समेत चले यदुराई ❀ आगे आवत लखि कुरुराई
विविधभाँति बाजत बहु बाजा ❀ हय हींसत गर्जत गजराजा
कुरुपति भीमहिं आवत देखा ❀ सहित रमापति सुन्दर भेखा
शकुनी करण सहित अनुरागे ❀ तब कौरवपति कुञ्जर त्यागे
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई ❀ विविधभांति पूछी कुशलाई
आये भीमसेन अनुरागे ❀ कीन जोहार भेंट धरि आगे
अतिहित मिलत भये कुरुराई ❀ चले समेत समाज लेवाई
जहँ यमुनातट निपट सुपासा ❀ दीन तहां कुरुनायक बासा
पटल बितान गड़े बहुतेरे ❀ डेरा परे कुरुपतिहि केरे
यदुपति बहुरि सभामहँ आये ❀ समाचार सब नृपहिं सुनाये
सुनि नरेश तब अतिसुखलहेऊ ❀ तुरत बोलि मन्त्रिन सब कहेऊ
मख समाज सब साजहु जाई ❀ हयगजरथदल द्रव्य बनाई
धर्मराज कर आयसु पाये ❀ निजनिजकारजसकल सिधाये

दो॰ इहां करण शकुनी सहित, नृप लखि प्रातःकाल ।
शिबिरशिबिरमिलिभूपतिन, गयेजहाँशिशुपाल ॥

ते कुरुनाथहि आवत जाना ❀ आगे मिले त्यागि अभिमाना
तहँ कुरुनाथ रहे कुछ काला ❀ भये बिदा कहि सकल हवाला
देखत धर्म प्रताप महाना ❀ जात चले मनकृत अनुमाना
राजत तहां पाण्डुकुलदीपा ❀ उतरे चहुँदिशि विपुलमहीपा

ते लै भेंट घरन ते आये ❀ कुञ्जरपुर नरेश बहु छाये
बहुत भेंट पाण्डव के आवत ❀ हम राजा बिन हेतु कहावत
कुरुपति यह देखत निजनैनन ❀ शोचत मनमहँ कहि कहि बैनन
एक नगरमहँ दुइ अधिकारी ❀ भयो बड़ा यह अनरथ भारी
अबलग जगतबिदित लघुभाई ❀ ते अब भये तुल्य बलदाई
जगती बहु पदवी थल थोरे ❀ ते अब भये बरोबरि मोरे
गजपुर चलिहि न एक दोहाई ❀ करिहैं आज्ञा भङ्ग भजाई
होत अवज्ञा जे नृप केरे ❀ मरण नीक तेहि जीवन तेरे

दो० हमकहँ दण्ड न देहिं ते, देहिं धर्मजाहि जाइ ।
छलबलकरि बश कीजिये, असकछु होइ उपाइ ॥

यहि बिधि गे कुरुनाथ विताना ❀ नित्यनिमित्त करत अस्नाना
इहां धर्मसुत सँग सबभाई ❀ हलधर उद्धव अरु यदुराई
सुभट सकल दिशि शोभा पाये ❀ प्रथमहिं बाहुलीकगृह आये
करि नरनाह विनय करजोरी ❀ गये पितामह भवन बहोरी
दूरिहि ते अभिवादन कीन्हा ❀ उठि गाङ्गेय लाय उर लीन्हा
मिलि हलधरहि प्रेमयुतहीते ❀ कुशल प्रश्न पूछी सबहीते
मांगि बिदा सुतधर्म सिधाये ❀ द्रोणभवन अतिआतुर आये
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा ❀ विदुर ज्ञाननिधि परमउदारा
सबहि यथोचित मिलि नरपालू ❀ विनय सप्रेम कहेउ निजहालू
मांगी बिदा चले नरनाथा ❀ द्रोणकुमार भयो तब साथा
चैद्यभवन कुरुनाथ चले जब ❀ फिरे सहितहरिहलधर उद्धव
भूपति कहेउ हेतु अस्नाना ❀ है कछु भेद धर्मसुत जाना
लखि हलधर की भौंह तिरीछी ❀ फैलि रही यह बात सुतीछी
कहहिं परस्पर सब बिलखाहीं ❀ बिग्रह देखिपरत भल नाहीं

दो० सकलबन्धु अरु द्रोणसुत, सुभटसमाजबिशाल ।
आवत देखे धर्मसुत, सपदि उठे शिशुपाल ॥

पुनि पुनि भेंटेउ नृप शिशुपाला ❀ पूछिकुशल कहि सकल हवाला

सब मिलिकर भोरहिं मख कीजे ❀ बेगि जाव मैं आयसु दीजे
जरासन्धसुत गृह नृप आये ❀ यहि प्रकार सबभूप मँझाये
आये बहुरि सभा महँ राजा ❀ बोलि लीन सब सचिवसमाजा

युधिष्ठिर उवाच ॥

मखशालाकहँ अब तुम जाहू ❀ अद्भुत रचहु कहेउ सब काहू
तिन पुनि शकट अनेक पठाये ❀ कदलीखम्भ बिपुल भरिआये
षोड़श सहस खम्भ कञ्चन के ❀ चहुँदिशि सोहत हैं मञ्चन के
हरित मणिन के पत्र मँगाये ❀ पद्मराग के पुष्प सोहाये
सोहत मध्य अनूप चँदोवा ❀ कहि न जाय जानैं जिन जोवा
गजमुक्ता झालरि चहुँ पासा ❀ रङ्ग रङ्ग रत्नन की भासा
षोड़श सहस खम्भ कदलीके ❀ रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके
मखशाला अति चित्र बनाई ❀ देखत बिश्वकर्मा सकुचाई
बुधजन बिपुल देखि अनुरागे ❀ बहुबिधि चक्र बनावन लागे
आये धौम्य घटज ऋषिव्यासा ❀ शौनक नारद शुक दुर्बासा
शुक्राचार्य बृहस्पति आये ❀ कश्यप विश्वामित्र सोहाये

दो० यहि बिधि अट्ठासीसहस, आयगये ऋषिजानि ।
नृपप्रणामकीन्हेउ सबहिं, जोरि जोरि युगपानि ॥
सो० मखमण्डल महँ बास, दीनमहीपतिमहिसुरन ।
जहँ सब भाँति सुपास, थल बैठे आहुति चलै ॥

दूत उवाच ॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये ❀ दुर्योधन पहँ दूत पठाये
लावहु सहित समाज लेवाई ❀ चले दूत नृप आयसु पाई
जाय देखि कुरुपति दरबारा ❀ आवहिं मिलन महीप अपारा
कीन्ह जोहार नृपहिं तेहिकाला ❀ कहेउ बोलावत धर्मभुवाला
सुनि माँगेउ नरनाह तुरंगा ❀ शकुनी करण दुशासन संगा
तजि हयद्वार तहां पगुधारा ❀ जहँ नृपधर्मराज दरबारा
अर्जुन भीमसेन दरबानी ❀ लै आवहिं राजन सनमानी

सभा भेद नहिं जान महीशा ❀ जलतजि थलहिंचलेअवनीशा
भीम कहा कुरुपतिहि सुनाई ❀ दहिनेपन्थ न आवहु भाई
कपटी भूप क्रोध करि साना ❀ पवनतनयकर कहा न माना
जानेउ तर्क करत यहि बीचू ❀ जलमग मोहिं बतावत नीचू
चल सरोष आगे नरनाहा ❀ लागे बूड़न बारि अथाहा
हाहाकार भीम करि धाये ❀ चहुँदिशि लोग दौरि सब आये
गहि कर धाइ दुशासन लीन्हा ❀ नृपहिं वारिते बाहर कीन्हा

दो० करि अस्नान नरेश तब, पहिरे बसन नवीन ।
चहत चलन तेहि मग सँभरि, जहँ अर्जुन आसीन ॥

ऊपर महल सुता पंचाला ❀ तेहि देखे ये सकल हवाला
बिहँसि कहेउ सब सुनहु सहेली ❀ जानत है कुलरीति पहेली
अन्धसुवन जिमि प्रकट भयेरे ❀ मनहुँ भृङ्ग करसायल केरे
अस कहि बचन द्रुपद की जाता ❀ हँसी ठठाइ सुनी नृप बाता
भीम दुशासन अरु कुरुराई ❀ अपर न काहू सो सुनि पाई
भा नरेश मन क्रोध अपारा ❀ कहेउ न कछु आगे पगुधारा
परन पांवड़े बहुपट लागे ❀ चलत नरेश भये पुनि आगे
बिहँसि भीम कुरुनाथहि कहेऊ ❀ कपट सनेह सदा तुम रहेऊ
जो मग तुम कहँ दीन बताई ❀ गयो कपटवश तहां न भाई
अस कहि भीम ठाढ़ होइ रहेऊ ❀ कहत बचन आगुस महँ भयऊ

भीम उवाच ॥

पिता अन्ध क्यों सूझी पूता ❀ हँसे भीम करि तर्क बहूता
कौरवनाथ सुनी सो बाता ❀ क्रोध कृशानु जरे सब गाता
तब नरेश अस मन अनुमाना ❀ हमहिं बोलाय कियो अपमाना
तेहिते अधिक पाण्डवन केरा ❀ होय सुफल तब जीवन मेरा
यहिबिधिनृपनिजमनअनुमानी ❀ गये जहां पारथ दरबानी

दो० आवत नृपहि बिलोकि तब, उठे पार्थ हरषाय ।
करि जोहार पुनि पाणि गहि, लैगये सभा लेवाय ॥

बहुलज्जा कछु क्रोधाकि ज्वाला ❀ गयो नरेश सभा की शाला
उठे धर्म नृप आवत देखी ❀ कृष्णसहित सबसभा बिशेखी
लखि हलधर कह कुरुकुलदीपा ❀ कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा
मन वाञ्छित बर आशिष पाई ❀ मिले बहुरि धर्मज कुरुराई
लीन नरेश निकट बैठाई ❀ नीके रहेउ सुयोधन भाई
रूक्ष बचन तब कुरुपति कहेऊ ❀ हम नीके तुम नीके रहेऊ
धर्मसुवन कह मधुरी भासा ❀ कुशल हमारे सोहत पासा
बैठे कमलनयन यदुराई ❀ अपरकुशल हम कौनि बताई
मनमहँ रोषविवश कुरुनाथा ❀ भौंह मिरोरि मुच्छ धरि हाथा
राते नयन करत चहुँ ओरा ❀ तब बोले बसुदेवकिशोरा

दो० कुरुपति के गर्मी अधिक, देखि परत मुख भूर।
असकहि बिहँसे मधुर हरि, सहितसभाभरिपूर ॥

व्यङ्ग बचन सुनि यदुपतिकेरे ❀ अरुणनयन कुरुनाथ तरेरे
हरि मुसकानि बारि सुधिकैके ❀ रहे कुरुपतिहि अहित चितैकै
देखि भूप रुख बचन खरारी ❀ लागे किंकर करन बयारी
नाना भाँति सुगन्ध सिंचावा ❀ अतरगुलाब सकल छिड़कावा
कह नृप तात सुनहु नरनाहा ❀ आये पिता न कारण काहा
हम समस्त रनिवास बोलावा ❀ कोऊ एक भूलि नहिं आवा
जिनकरकाजसकलाविधिभारी ❀ आई कस न मातु गन्धारी
बोले कुरुपति बचन सोहाये ❀ हम नरेश सबकी बदि आये
कहेउ धर्मसुत तुम्हरे आये ❀ हम नरनाह बहुत सुख पाये
आये भीष्मादिक सरदारा ❀ सबप्रकार भल भयो हमारा
अब तुम मम आयसु उर धरहू ❀ यज्ञकाज सब निजकर करहू
तब बोले कुरुनाथ महीशा ❀ आयसु होइ करौं धरि शीशा
कहेउ धर्मसुत सकल खजाना ❀ कञ्चन रौप्य रतन मणि नाना
धातु लोह ताम्रादिक जेते ❀ अनुचर राखि देहु निज तेते
तुम्हरी सनद बिना कोउ आवै ❀ अपर कहा हमहूं नहिं पावै

जहँ लागै जेहि भांति विधाना ❀ करेउ तात तहँ निजमनमाना
दो० धर्मायसु कुरुनाथ सुनि, बोलि सकल जन लीन ।
कञ्चन कोष विशालपर, राखि शकुनि कहँ दीन ॥
पुनि कुरुपति गुरुसुतहिहँकारा ❀ सौंपि रतनमणिगण भण्डारा
मम परतीति बिना जनि कोई ❀ पावै धनद सुरेश कि सोई
पुनि सौबल नरनाह बोलाये ❀ रौप्य ताम्रके कोष सुहाये
सकल सौंपि कुरुनाथहि दीन्हा ❀ पुनि बोलाइ उनका नृपलीन्हा
रहेउ जो धातु लोह सब भारी ❀ कुरुपति कीन ताहि अधिकारी
देखि धर्मसुत सकल बनावा ❀ दुश्शासनहि बहोरि बोलावा
ममहित तुमहिं परिश्रम भाई ❀ कहेउ दुशासन होई राई
सुनि अस वचन भूप सुख माना ❀ सौंपि दीन सब मोदीखाना
मोदीभवन दुशासन आये ❀ थलप्रति शतशत वैश्य टिकाये
चिट्ठा सकल नरेशन केरे ❀ आवहिं चले दुशासन नेरे
दुश्शासन उवाच ॥
सनद पाइ पुनि मोदीखाना ❀ जाइ तुलावहिं विविध विधाना
दो० इहां धर्म नरनाह तब, बिकरण लीन बुलाइ ।
बसनकोष सौंपे सकल, कहि मृदु बचन बनाइ ॥
बहुरि नरेश दुमन्त बोलाये ❀ सौंपि माहिष गोवृन्द सोहाये
द्विरदहि बहुरि बोलाइ नरेशा ❀ सौंपि गयन्द यूथ उपदेशा
दुर्दर्शनहिं सो बहुरि बोलावा ❀ सौंपि तुरंगम साज सोहावा
सहदेवहि बोले नरनाहू ❀ भाजन भवन तात तुम जाहू
इंधन धनगृह सकल जे भाई ❀ राखि देहु तुम अनुचर जाई
शिबिरशिबिरप्रतिशकटभराई ❀ पठवहु जाइ नृपन कहँ भाई
कहेउ नाथ यह काज तुम्हारा ❀ कीजे कछु श्रम अङ्गीकारा
अस कहि बहुरि धर्मधुर धीरा ❀ जात भये रविनन्दन तीरा
कह रविसुत मम कारज होई ❀ माथे मानि करब हम सोई
दो० धर्मनन्द कह यज्ञ महँ, दानकर्म बहु होइ ।

प्रभु सब पर शिरताज होइ, करिय कृपा करि सोइ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

दुर्योधन आदिक जे करता ❀ सबन बोलि कह पाण्डव भरता
आयसु कर्ण करहिं जस जाही ❀ फेरहु पत्रन करहु न नाही
मांगहिं जो जब रविकुलकेता ❀ करब सकोच न सो तब देता
रविसुत कहेउ करन यह काजू ❀ मखगृह गये धर्म महराजू
जो यह बनी बस्तु बिधि नाना ❀ मेवा मधुर बिपुल पकवाना
नकुलहि भूप कीन अधिकारी ❀ लागे करन अनेक तयारी
लिये चतुर बिद्वान बोलाई ❀ जिन देखे मख बिपुल कराई
जे संकल्प ऋषिन के आगे ❀ धरहिं ते बोलहिं चतुर सभागे
आये मख ऋषि सहसअठासी ❀ अपर बिप्र जे गुणगणरासी
तिनकर भोजनादि सेवकाई ❀ सौंपि पार्थ कहँ धर्मजराई
इहां कुरुपतिहि सबहिं हँकारा ❀ करण दुशासनादि सरदारा

दो० करि दुर्बचन भीम बहु, द्रुपदसुता मम सङ्ग।
कहनृपकीजै अवशि सोइ, यज्ञ होहि जेहि भङ्ग ॥

ताते करण अवशि शिर धरहू ❀ दान प्रमान त्यागि तुम करहू
दुश्शासनहि कहेउ नरनाहू ❀ बिपुल सीध पठवहु सबकाहू
चिट्ठा द्विगुण त्रिगुण करि दीजै ❀ यश लीजै मखभङ्ग करीजै
रहहि न देश कोष जब सोई ❀ मखबिध्वंस हँसी सब कोई
कहहिं न तब कोइ धर्महिराजा ❀ चलहि न छत्र न बाजहिं बाजा
यहिबिधि भूपति आयसु दीन्हा ❀ सादर सबन मानि शिरलीन्हा
विकरण कहेउ युगल कर जोरी ❀ सुनिये विनय कृपानिधि मोरी
भीम द्रौपदीकृत अपराधा ❀ नाहिंन धर्मसुवन कृतबाधा
यह अनर्थ शिर तासु बिसाई ❀ नाथ लोक परलोक नशाई
बिहँसि नरेश कही सुनु भ्राता ❀ भीमसमेत द्रुपद की जाता
कीन्हेउ स्वल्प बचन अपराधा ❀ धर्मनरेश प्रबल कृत बाधा
चाहत होन युधिष्ठिर राजा ❀ होत भङ्ग ममपद पति लाजा

बन्धु नीति अस कहति पुकारे ❀ नहिं कल्याण शत्रु बिन मारे
नीति अधर्म न नेक विचारिय ❀ जिहिविधितेहिविधिशत्रुहिमारिय
जहँलगि चहियो करिये हानी ❀ कहतपुकारिनीति असिबानी
दो० सुनि भ्राता मुख बचन अस, बिकरण रहे चुपाय।
नृपआयसु सब शीश धरि, चलतभयो शिरनाय॥
होत प्रात याचकगण जागे ❀ जहँ तहँ बंश प्रशंसन लागे
आवहिं विप्रवृन्द बहुतेरे ❀ चहुँदिशि करत बितान घनेरे
सुनि अस शोर उठे जब जागे ❀ देन दान रविनन्दन लागे
लेखक मन्त्री करण बुलाये ❀ पत्र याचकन विप्रन पाये
कोउ तुरङ्ग गज कोउ निधि पावा ❀ कोउ मणि हाटकभार सोहावा
भाजन बसन लहै पुनि कोई ❀ कोउ अतिरङ्क धनदसम होई
जहँ रबिनन्दन चारि देवावहिं ❀ याचक जाहिं बीस तहँ पावहिं
सवन दुशासन दीजै आना ❀ बस्तु पठावत बिन अनुमाना
चिट्ठा द्विगुण त्रिगुण करि दीन्हे ❀ देत कि बार बीसगुण कीन्हे
यहिबिधि करहिं अधर्म अनेका ❀ छूटन हेतु धर्मसुत टेका
दो० लखिअनरथअति सात्यकी, हृदय परमदुखपाय।
सकल कथा बिस्तारते, भीमहिकह्योबुझाय॥
भीम हृदय पुनि भा दुख भारा ❀ आये देखि सकल व्यवहारा
भयो रोष उर अति दुख पाये ❀ सात्यकिसहित कृष्णगृहँ आये
कहेउ भीम हरि परम अकाजू ❀ भयो नाश युग लोकसमाजू
निपट यज्ञ यह अनरथ मूला ❀ हमपर भयो ईश प्रतिकूला
असकहिकहेउ सकल इतिहासा ❀ चलत न गद्गद बिक्रमभासा
प्रभु यहि कृत्य योग जगमाहीं ❀ सकल सुरेश धनद रहि नाहीं
सुनि अस भीमहिं गह्वर जानी ❀ धरहु धीर कह शारँगपानी
कहत वृथा तुम हमहिं सँदेशा ❀ कहहु जाइ जहँ धर्मनरेशा
अब कीजै हम कौन उपाऊ ❀ कीन्ह भूप करता कुरुराऊ
कछु न होत अब कौन हमारा ❀ करे भाग्य सब जो करतारा

अब तुम कहहु नरेशहि जाई ❀ मन भावत तस करैं उपाई

दो० [illegible], बोलि भीम सब बात ।
कहत भयो गद्गदगिरा, सुनत गये जरि गात ॥

धर्मसुतहि सब दूषण देहीं ❀ कीन कुसाज साज बिन जेहीं
उठे भीम सँग सकल समाजा ❀ चले जहां कुन्ती सुत राजा
धर्मनृपहि कृत सकल प्रणामा ❀ बहुरि एकान्त गये लै धामा
लागे कहन भीम कर जोरी ❀ सुनहु नाथ बिनती यक मोरी
कहेउ सात्यकी लखि अस रङ्गा ❀ बहुरि कहेउ निजगमनप्रसङ्गा
अनुचितसकलदेखिजिमिआये ❀ सबप्रसंग कहि सकल सुनाये
पुनि जस बचन कहेउ भगवाना ❀ कुरुपति केर कुकर्म बखाना
सुनि अस सहमि भूमि नृपपरेऊ ❀ धीरधुरीण धीर पुनि धरेऊ
उठि बैठे नृप मञ्च बिशाला ❀ बोले भीम नाइ पद भाला
अब नरेश मोहिं देहु रजाई ❀ कुरु अनुचर सब देउँ उठाई
जिनकै कीरति जगत प्रशंशी ❀ करिहैं काज सकल यदुबंशी

सो० [illegible] अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादि कुमार जे ।
ते सब बिगत बिरुद्ध, करिहैं कारज नाथ तव ॥

जनि बिचार कीजै नृप आना ❀ इनकर उचित करब अपमाना
जो कदापि कर आयुध धरिहैं ❀ तौ पुनि कठिन गदा मम मरिहैं
मतिहगबंश बीर अस को है ❀ रहै ठाढ़ मम सन्मुख जो है
तुम नृप यज्ञ करौ साजि साजा ❀ मैं मदनाश करौं कुरुराजा
बेगि भूप म्वहिं देहु रजाई ❀ देहुँ भगाइ कुरुपतिहि राई
यदुबंशिन प्रतिथल पुनि राखी ❀ कीजै दूरि पाप अभिलाखी
सब [illegible]धि मूढ़ चहत उपहासा ❀ मतिहगबंश करौं सब नासा

युधिष्ठिर उवाच ॥

कहेउ धर्मसुत चुप करि रहऊ ❀ भूलि न बात बन्धु अस कहऊ
जन्म प्रयंत सदा निज जाना ❀ करिय न काहूकर अपमाना
निज कृत कर्म मूढ़ फल पैहै ❀ हमहिं न रमारमण बिसरैहै

कहेउ भीम अबहीं लग राजा ❀ नहिं भारी कछु भयउ अकाजा
बड़ अकाज होई अब आगे ❀ यह कुरुनाथ धर्मपथ त्यागे
आयसु देहु युधिष्ठिर राई ❀ करौं बाद कुरुपति सन जाई
दो० कहेउ भूप अनुचित न अब, बोलहु बश अज्ञान ।
हम समेत कुरुनाथ कर, होत तात अपमान ॥
निज मन भाषहिं कौरवराजू ❀ ताते हम सौंपेउ सब काजू
कहेउ न कछु यदुबंशिन पाहीं ❀ गृहतजि अनतउचितअसनाहीं
यहिबिधिप्रियदुबंशिहित्यागी ❀ कीन आजु सो ममशिर लागी
अब अपमान किये बड़िहानी ❀ रहहु चुपाइ तात अस जानी
परहित लागि होइ अपराधा ❀ नहिं जग बुध करिहैं उपबाधा
पर अपमान बचे निज होई ❀ दोष न धरहिं बिबुधगण कोई
होइहि तात न हँसी हमारी ❀ सदा सहायक गिरिवरधारी
यह निश्चय आवत मन मोरे ❀ तात तजहु परतीति न भोरे
जे खल चहत आन अपमाना ❀ तिनकर सदा करत भगवाना
असजिय जानि शोकपरिहरहू ❀ यज्ञकाज सब प्रमुदित करहू
होइहि सो जु करहिं भगवाना ❀ तुमहिं हमारि शपथ पितुआना
अब नहिं प्रकट बात यह होई ❀ राखहु सकल हृदय निज गोई
धर्मराज के बचन सोहाये ❀ निजनिजकारज सकल सिधाये
दो० लखिअनरथ यदुबंशमणि, निजबिचार मनकीन ।
आठ सिद्धि नव निद्धि कहँ, बोलि सु आयसु दीन ॥
जे सब धर्मराज भण्डारा ❀ होइ तहां अब बास तुम्हारा
निकसै कोटिन मग किन कोई ❀ घटै न सो परिपूरण होई
होइ भक्त मम काज न भङ्गा ❀ करहिं न जग जेहि अयश प्रसङ्गा
ताते तुमहिं कहहुँ सिख येहू ❀ धर्मज बास कोश अब लेहू
करिहैं कुरुपति अति सेवकाई ❀ निज यश हेतु द्रव्य परजाई
नहिं सनमानि सकै करि जासू ❀ करेहु विविध तुम आदर तासू
सो हमहूं तुमहूं मिलि कीजै ❀ लेश कलेश न भक्तहि दीजै

कीन्ही बिदा सीख दै भूरी ❀ सब भण्डार भयो भरि पूरी
निकसत सकलबस्तुबिधिकोटी ❀ कोशप्रमाण होत नहिं छोटी
यह चरित्र कीन्हे भगवाना ❀ मर्म न दूसर जानत आना

दो० धर्मज भट निज यूथ सँग, गये देखि सब कोस ।
सुमिरत यदुनन्दनचरण, पुनि पुनि करत भरोस ॥
आयो दिन शुभ यज्ञकर, गहगह हने निशान ।
मखमण्डलमहँ धर्मसुत, प्रातहि करि असनान ॥

प्रथम विभूति सुखद सबकाला ❀ तापर डासि नागरिपुछाला
कुश आसन मृगचर्म सोहावा ❀ चित्रगलीचा अतिसुख पावा
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके ❀ पहिरे यज्ञविभूषण नीके
वेदमन्त्र द्विज करहिं उचारा ❀ आसन धर्मराज पगु धारा
जहँ तहँ विपुल बाजने बाजे ❀ आसन धर्मनरेश विराजे
प्रथम भूप पूजे गणनायक ❀ सोहत साथ आपु कुरुनायक
जहँ लागत मणि कञ्चनकाजू ❀ तहँ हर्षत बहु कौरवराजू
ऋषिगण देव पुजावन लागे ❀ चक्र नवग्रह अति अनुरागे
यज्ञक्रिया जस वेदन बरणी ❀ धर्मनरेश करत तस करणी
श्रुतिमारग जस पूजन कयऊ ❀ याम चारि गत बासर भयऊ
हवनसमय अब अतिनियराना ❀ आवनलगे महीपति नाना
मखमण्डल देखत तेहि काला ❀ आये सहदेवहि शिशुपाला
यातुधान लखि सहित समाजा ❀ कर गहि बैठारत कुरुराजा
बहु सनमान करत महिपाला ❀ बैठारे जहँ मञ्च बिसाला

दो० तेहि अवसर आवत भये, नरनाथन के वृन्द ।
बैठारत शकुनी करण, कुरुपति सहित अनन्द ॥

भीषम द्रोण बिदुर तब आये ❀ कर गहि दुश्शासन बैठाये
मगहराज के बन्धव आये ❀ आसन परम सुहावन पाये
जिनकै कीरति जगत प्रशंसी ❀ तेहि अवसर आये यदुबंसी
आसव पिय हल आयुधहाथा ❀ तेहि पाछे आवत यदुनाथा

ऊधव सात्यकि सहित कुमारा ❀ कर गहि भीम पन्थ बैठारा
लागेउ होन हुताशन काजा ❀ ग्रन्थिनिबन्धन कर महराजा
कृपाचार्य कुरुपतिहि बखाना ❀ अब नृप समय आइ नियराना
नृप शिर तिलककरै अब कोई ❀ राजसूय करता तब होई
तासु पखारि चरण नरनाहू ❀ करै बहोरि वरण सबकाहू
सकल तिलक भूपतिशिर करई ❀ तब नरनाह सुवा अनुसरई
दो० कुरुपति बालमीकिसन, कहेउ वचन शिरनाइ ।
नाथ तिलककरियज्ञहित, लीजै चरण धुवाइ ॥
कहेउआदिकविकश्यपहि, तिन घटसुतहिसुनाइ ।
यहिबिधिसबसबसौंकहत, उठतनकोउऋषिराइ ॥
कहेउव्यास सबऋषिअसकहहीं ❀ सकल भुवनपति सोहत अहहीं
तिनहिं बिलोकत उठत न कोई ❀ आवै जो सबबिधि बड़ होई
प्रथमहिं उठे रमापति आछे ❀ सब ऋषिवृन्द आइहैं पाछे
कहे भीम अब बेगि खरारी ❀ उठत न होत अकारज भारी
सुनि अस धर्मराज सुख पाई ❀ ठाढ़ भये उठि सहज सुभाई
त्यागि मञ्च मन अति हर्षाई ❀ मृगपति ठवनि चले यदुराई
लखिशिशुपालक्रोधअतिकीन्हा ❀ चर्म कृपाण हाथ गहिलीन्हा
गरजि जलदइव गिरा गँभीरा ❀ कहेउ नीच सुनु रे यदुबीरा
नहिं जानत निजजाति प्रभावा ❀ सकल सभामहँ उठि शठ धावा
दो० अब जनि पग आगेधरहु, नत मम चलत कृपान ।
तासुबचन अवलोकि तब, ठाढ़ रहे भगवान ॥
कुरुपतिआदि कुटिलमनहरषे ❀ मानभङ्ग लखि हलधर मरषे
चहत ताहि मूसल गहि मारन ❀ पुनि पुनि ऊधव करत निवारन
फरकत यदुबंशिन के बाहू ❀ जहँ तहँ सब बरजैं सब काहू
करत कोप शिशुपाल समाजा ❀ बरजि बरजि राखत ऋषिराजा
थर थर कांपत सब नर नारी ❀ कहहिं होत यह अनरथ भारी
विकल होत अति धर्मजराजा ❀ सबबिधि आपनजानिअकाजा

भीम कहेउ मृदुबचन सुनाई ❀ दमघोषकसुत रहो चुपाई
जनि दुर्वचन कहिय अब भारी ❀ होई अनरथ निपट पछारी
दो० भीमबचन दमघोषसुत, सुनि कछु कान न कीन्ह।
कहेउ दुर्बचन बहु हरिहि, प्रभु कछु उतर न दीन्ह॥
रे शठ निपट जाति कर हीना ❀ नाग नगरते भये कुलीना
सनकादिक ऋषिवृन्दन आगे ❀ रञ्चककानि न कीनि अभागे
हम बैठे सब बिपुल भुवारा ❀ ज्येष्ठबन्धु कहँ लघु करिडारा
बड़आश्चर्य द्विजन के आगे ❀ चरण अहीर धुवावन लागे
अब द्विजवृन्द भये पुनि कैसे ❀ शूद्र न मानत गुरु कहँ जैसे
प्रथम ग्वालगृह प्रकटि अभागा ❀ पुनि यदुबंश कहावनलागा
भयो बर्णसंकर जग जाना ❀ सबकर मूढ़ करत अपमाना
सुनि कटु बचन उठे यदुबंशी ❀ राखहिं उद्धव आदि प्रशंशी
पारथ भीम आदि सब योधा ❀ कहत न कछुक जरत उर क्रोधा
दो० निजमन्दिरलखिआगमन, कछु न कहततेहिपास।
शोचविवश नृप धर्मसुत, लखियदुनन्द उदास॥
हर्षविवश कुरुनायक आदी ❀ बिस्मयबश सब ऋषिसनकादी
सुनहु तात कह नृप मृदु बानी ❀ रहहु चुपाइ काज निज जानी
मखविध्वंस होइ मम ताता ❀ तुमकहँ लाभ कवनि बड़ि बाता
बचन न मानत धर्मज केरे ❀ कहत हरिहि बहुबचन करेरे
घूमि बैठु निज आसन जाई ❀ नत ह्वैहै मखभङ्ग लराई
धर्मनरेश बन्धुयुत नीचू ❀ धोवत ग्वालचरण मख बीचू
हरि उदास सुनि बचन तिरीछे ❀ आगे चलत न घूमत पीछे
देखि दशा यदुनन्दन केरी ❀ करुणा हृदय हलधरहि घेरी
सहि न सकत गहि ऊधव राखत ❀ पुनिशिशुपालबचनअसभाखत
दो० बिप्रवृन्द की कानि तजि, चरण धुवावन जात।
बीरहीन जानै अवनि, मूढ़ न मन खिसियात॥
यहिबिधि कहत बिपुल दुर्वादा ❀ बिन घन होत गगनमहँ नादा

भा दिग्दाह उलूक पुकारे ❀ महि डगमगत उदित भे तारे
यातुधान कटु कहत अनेका ❀ कृतअपराध अधिक शत एका
बोलन चहत अपर कटुबाणी ❀ कहेउ सरुष तब शारँगपाणी
अब रसना जनि चपल चलाई ❀ नतु जैहै शिर सहित उड़ाई
कहि अस बचन नयनरतनारे ❀ कालरूप कर चक्र सँभारे
लागेउ घूमन चक्र कराला ❀ कहेउ बचन गम्भीर कृपाला
अब न बचन निकसै मुखतेरे ❀ नतु जैहौ यमसदन बसेरे
सुनि कर गहेउ चर्म करवाला ❀ कहि दुर्बचन उठेउ शिशुपाला
यातुधान भट उठेउ सरोषा ❀ यदुजन अस्त्र गहहिं करि रोषा
पारथ झपटि धनुषगुण दीन्हा ❀ गदा उठाइ पवनसुत लीन्हा
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू ❀ गये युगल भट पहुँचि सचेतू
झपटिझपटि भट आयुध गहहीं ❀ धरु धरु मारु मारु धरु कहहीं

दो० भीष्म द्रोण शकुनी करण, दुर्योधन नरनाह ।
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत, जासुभङ्ग उतसाह ॥

बिकल धर्मसुत धरै न धीरा ❀ उमहे यातुधान यदुबीरा
रक्षण मखसमाज ऋषिधीरन ❀ कुरुपति ठाढ़किये निजबीरन
भीम दुशासनादि भट भारी ❀ रक्षहिं यज्ञसमाज सुखारी
अस मन चाहत कौरवराजू ❀ होइ महामख भङ्ग समाजू
गजपुर भयो कोलाहल भारी ❀ मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी
विकल शोकवश शत्रुअजाता ❀ मोहिं दारुणदुख दीन बिधाता
कुन्ती आदि सकल बर नारी ❀ बिकल होहिं निजकर उरमारी
व्यासआदि सब धर्मनरेशहि ❀ समुझावत करि बहुउपदेशहि
इहां होत बहु हाहाकारा ❀ दामिनिसम दमकहिअसिधारा
बिपुल सहायक जे भट भारी ❀ आइगये शिशुपाल पछारी
बहु यदुबंश सहायक राजा ❀ आये साजि बजावत बाजा

सो० हल मूसल निजपानि, गहेउ रेवतीरमण जब ।
परम रोषबश जानि, ऊधव करत प्रबोध बहु ॥

केवल एक छांड़ि शिशुपाला ❀ अपर न होइ जीव वश काला
जबलगि तुम नहिं करौ प्रहारा ❀ चली न अपर मनुज हथियारा
होइ सरोष भय देहु देखाई ❀ यातुधान जेहि जाइ पराई
जेहि बिधि धर्मजात मखभङ्गा ❀ होइ तात सोइ तजिय प्रसङ्गा
परम चतुर ऊधव मुखबानी ❀ हलधर लीन्ह सकल शिरमानी
उत शिशुपाल प्रचारत आवा ❀ बार बार हरि चक्र फिरावा
पाणि सुदर्शन भेष कराला ❀ डरत न कटुक कहत शिशुपाला
प्रलयसमय जिमि शंकर केरे ❀ तेहि प्रकार हरि नयन तरेरे
त्यागेउ हरि बहु बार भ्रमाई ❀ करत रमापति शम्भु दोहाई
रवि सम तपत सुदर्शन धाये ❀ दनुजन देखि महाभय पाये

दो० ताके कण्ठ सुदरशन, घूमेउ बार हजार ।
शीशकाटिप्रभुरुखनिरखि, गयो विष्णु आगार ॥

शीश बिहीन रुण्ड महि परेऊ ❀ देवन देखि सुमन झरि करेऊ
यदुबंशिन असि चर्म उठाये ❀ दनुजन देखि महाभय पाये
मूसल पाणि गहेउ हलधारी ❀ दनुजन देखि भयो भयभारी
अतिभयभीत निशाचर भागे ❀ पीछे यदुवंशी गण लागे
चपरि सँभारि समर समुहाहीं ❀ चलत न अस्त्र भाजि जेहिजाहीं
यहिविधि निशिचरनिकरपराने ❀ जहँ तहँ गये जात नहिं जाने
धावन धर्महिं खबर जनाई ❀ नाथ विजय यदुनन्दन पाई
चक्रपाणि गहि रूप कराला ❀ काटेउ दमघोषक सुत भाला
भयबश देखि अमित प्रभुताई ❀ गये निशाचर सकल पराई
खण्डितशीश परेउ शिशुपाला ❀ महाराज भूतल यहि काला

दो० सुनतमर्षि कह धर्मसुत, हरि यह नीक न कीन्ह ।
अपर कहहु केते सुभट, यमपुर शासन दीन्ह ॥

एक वैद्य बिन कह हलकारा ❀ अपर न गयो युगल दिशिमारा
सुनि सरोष भय कुरुनरपाला ❀ भृकुटी कुटिल बिलोचन लाला
फरकत अधर कहन अस लागे ❀ द्रोणी द्रोण धर्मसुत आगे

उचित न मखमण्डल महँ ऐसी ❀ भई पितामह बात अनैसी
मखहित प्रथम निमन्त्रण दीन्हा ❀ भवन बोलाइ तासु बध कीन्हा
यज्ञादिक कारज यश हेतू ❀ अपयश पूरि रह्यो भरि खेतू
मखबिध्वंस भयो सब भांती ❀ निपट बन्धु ये बंश कुजाती
तात यत्न कीजै अब सोई ❀ अपयश भङ्ग जौनबिधि होई
करिय साज सजि समर बहोरी ❀ जेहि संसार धरै नहिं खोरी
नतु महिहीन होइ यदुबंशी ❀ की जग रहै न कुरुकुलबंशी

दो० द्रोण पितामह सजग होइ, गहहु हाथ हथियार।
होइ नाश यदुकुल सकल, नतु अब बंश हमार॥

सम्मुख समर यदुन सन लेहू ❀ जियत न जान द्वारकहि देहू
महारथिन निज धनुष चढ़ाये ❀ सजग भये नृप आयसु पाये
निजदल नृप संदेश पठावा ❀ करहु समरहित सकल बनावा
धर्मराज रुख लखि सब भाई ❀ सजग ठाढ़ भे धनुष चढ़ाई
दीख बिदुर भा अनरथ भारी ❀ आयो धर्मनरेश पछारी
कहेउ गुप्त यह अनुचित ताता ❀ उचित तुमहिं नहिं शत्रुअजाता
बिन शिशुपाल हेतु मखरच्छा ❀ अपर बीर हरि बधे न इच्छा
यदुपति सदा करत हित तोरा ❀ करत शत्रुवत अन्धकिशोरा
सबबिधि चहत तुम्हार अकाजू ❀ ताते सजत समर हित साजू
हरि तव यज्ञ सुफल करवैहैं ❀ नृप निज चलत बिगार करैहैं
सुनि अस बचन भीम मनमाना ❀ भूप बिदुर सब सत्य बखाना
दुष्टरूप कुरुनाथ सुभाऊ ❀ हैं हमरे सब कछु यदुराऊ
पठै सँदेश द्रौपदी रानी ❀ हरिसन समर किये बड़ि हानी

दो० धर्मराज सुनि सुनि बचन, निजमन करत बिचार।
हरिबियोग इत अयश उत, उर दुख दुसह अपार॥

पुनि धीरज धरि धर्मनरेशा ❀ कह्यउ बिदुरमत भल उपदेशा
कह सुत धर्म पितामह पासा ❀ नाथ तुम्हार सदा हम दासा
अब करि यतन करहु प्रभु सोई ❀ मख रक्षा अबते कछु होई

तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई ❀ जेहि न होइ हरि संग लड़ाई

भीष्म उवाच ॥

कहेउ बात भलि जस मन मोरा ❀ मैं समझावों अन्धकिशोरा
अस कहि भीष्म तहां पगुधारा ❀ जहँ कोपत कुरुनाथ भुवारा
नृपहिं पितामह बहु समुझाये ❀ सहितसमाज धर्म पहँ आये
कहत काह पूछत कुरुनायक ❀ कहेउ नरेश होइ ज्यहिलायक
अब यह बिमल पितामहबानी ❀ हम तुम सकल करिय शिरमानी
कह कुरुनाथ उचित मत एहा ❀ समर सरोष त्यागि संदेहा
जिन नहिं नेकु कानि मनमानी ❀ दीन उतारि क्षणक में पानी

दो० नीचहोत तौ बध उचित, तुल्यसमर अब योग्य ।
अपर यतन करि अयशते, कबहुँ न होब अरोग्य ॥

बाहुलीक कह सुन नृप बानी ❀ सत्य बिबेक धर्म नयसानी
जेहि सब बधेउ दनुजकुल टीका ❀ करब तासु अस कहब न नीका
जबते भा हरि जन्म पुनीता ❀ बधत बली दुष्टन कहँ बीता
कोजगमिलहि तुमहिंसमयोधा ❀ करत समर यदुपतिहि प्रबोधा
हरिसन जे भट रणकृत भारे ❀ मानहुँ मरे प्रथम के मारे
तात समुझिपरिहरहु कुमतिही ❀ सोह न समर तुम्हैं यदुपतिही
चलिहि न बिक्रम सहित सहाई ❀ नाहक प्राण गँवैहौ जाई
चलिहि चक्र हल मूसल नाना ❀ हरि हलधर करिहैं घमसाना

दो० तब कहिहौ पछिताइ हम, काह कुमारग कीन्ह ।
तेहि अवसर हलधर सहित, यदुपति दर्शन दीन्ह ॥

गहे राम हल मूसल हाथा ❀ आगे तेहि पीछे यदुनाथा
चर्म कृपाण गहे कर माहीं ❀ उग्ररूप छूटत रिस नाहीं
यादवसात्यकिदुहुँदिशिआवत ❀ अस्त्र गहे बहु यदुपति धावत

कृष्ण उवाच ॥

कहेउ कृपाल धर्मसुत पाहीं ❀ हम शिशुपाल बधे मखमाहीं
यदपि भई यह बात अयोगू ❀ दोष तुम्हार न देहैं लोगू

अब तुम साज साजि मख करहू ❀ जनि बिसमय मन रञ्चक धरहू
नतु कीजै हमहूं तुम सोई ❀ कहहिं वचन कुरुनायक जोई
जो दमघोष सुवन कर अङ्गू ❀ होइ जो प्रकट करै रणरङ्गू
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला ❀ ताहि पठावहु भवन भुवाला
संग करहु सेनापति जाई ❀ आवहिं दण्ड बांधि बरिआई
जे नृप दण्ड चैद्य कहँ देता ❀ पठवहु निजचर सेन समेता
आवहिं दण्ड सबन प्रति बांधी ❀ भूप भई महि बिगतउपाधी

दो० धर्मराज सुनि हरिवचन, कहअस उचित न नाथ।
बधबोलाइ करि दण्डहित, पठइय निजजनसाथ॥

तासु तनयबध समुझि दुखारी ❀ पुनि यह दण्ड बिपतिबड़ि भारी
कह प्रभु उचित नीति कह ताता ❀ नृपकहँ दण्ड बिचार न ताता
निज सेनापति भूप बुलावा ❀ कहेउ यथा हरि आयसु पावा
आवहु दण्ड बांधि सब तेरे ❀ नहिं शिशुपाल सुतन के नेरे
गुप्त कहेउ यह हरि नहिं जाना ❀ चैद्य राखि रथ कीन्ह पयाना
माहिष्मती नगर पहुँचाई ❀ लीन्हे डांड़ि अपर भुवराई
कह शिशुपाल सुतन ते येहू ❀ हौ अदण्ड तुम दण्ड न देहू
अपर नरेश करै कोउ भीरा ❀ बेगि जनावब धर्मज तीरा
सब हम करब सहाय तुम्हारी ❀ धर्म दोहाय नगर तब झारी
असकहि बहुबिधिधीरज दीन्हा ❀ आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा

दो० इहां तुरत यदुबंशमणि, आयसु दीन्ह कराय।
बाजे बिबिध निशानघन, सबन दीन बैठाय॥

याम निशागत यह सब भयऊ ❀ पुनि यदुनाथ महामख ठयऊ
जस मखमारग वेदन बरणा ❀ कीन धर्मसुत सब आचरणा
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा ❀ छत्र धराय राज्यपद दीन्हा
बाजे बिपुल शंख घरियारा ❀ भेरि धेनुमुख पवँरि दुवारा
बिपुलदान द्विजबृन्दन पाये ❀ ऋषि मन अशन पान करवाये
भै चक्रीश याचकन भारी ❀ शतयोजन नहिं रह्यउ भिखारी

जहँ तहँ बारमुखी बहु नाची ❀ नगर नगारे की धुनि माची
कछु दिन सबहि राखि नरनाहा ❀ करि सतकार समेत उछाहा
नृपन बिदाहित आयसु मांगे ❀ चलती बार निपट अनुरागे
साजि बाजि गजबाहन नाना ❀ दुर्योधन दल कीन पयाना
फिरे पाण्डुनन्दन पहुँचाई ❀ उद्धव राम सहित यदुराई
बाहुलीक पद पुनि शिरनावा ❀ गङ्गासुवन ते आयसु पावा
बिदुरहि मिलत नाथ जगतीके ❀ भेंटत राम कृष्ण अतिनीके
कीन्ह बिदा अति पुलक शरीरा ❀ गे सुत धर्म द्रोण गुरुतीरा

दो० गुरुहि नायशिर भेंटि पुनि, अतिहितद्रोणकुमार।
मगमहँमिलिरबिनन्दनहि, जातभये आगार ॥

यदुबंशिन मिलि धर्म भुवारा ❀ कीन्हेउ अशन अनेकप्रकारा
सकल बहोरि सभामहँ आये ❀ कोउ बिश्राम करत सुख पाये
कोउ खेलत बहु पंसासारी ❀ खेलत कौतुक की बलभारी
देखत नृत्य गान सुन कोऊ ❀ कोउ मृगयाहित सजत सँजोऊ
हरि हलधर युत धर्म नरेशा ❀ लखि मन सकुचत कोटिसुरेशा
जेहि मारग निकसत कुरुचन्दा ❀ देखिपरत बहु याचकबृन्दा
आवत लखि कुरुनाथ सवारी ❀ कहहिं प्रशंसि प्रचारि प्रचारी
दुर्योधन आदिकन सुनाई ❀ करैं धर्मसुत केरि बड़ाई
काहे न होहिं धर्मसुत भारी ❀ जिनके तुम समान भण्डारी
दानकृपाण निपुण सब भांती ❀ भूप दशा कैसे कहि जाती
जासु किंकरन के मन ऐसे ❀ आपु नरेश होहिं धौं कैसे

दो० रहे न जगमहँ रङ्क कोउ, सब नर धनपद पाव।
तासु कोशकीरतिबिमल, कहहु मनुज किमिगाव ॥

कुरुपतिधर्मसुयश सुनि कानन ❀ बिदरतहृदय मनहुँ पबिबानन
अतिसकुचतजनु अवनिसमाई ❀ यहिबिधि कुरुपति मन्दिरजाई
करत बनै नहिं काज नशाना ❀ पुनिपुनिधिगनिजजीवनजाना
बिभव बिलोकि युधिष्ठिर केरा ❀ कुरुपतिउर संशय कृत डेरा

प्रातहि उठे धर्मसुत राजा ❀ हलधर कृष्णसमेत समाजा
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई ❀ दूतन कही खबरि असि आई
प्रभु अब नागनगर भल बसई ❀ अमरावती जानि लघु हँसई
अब कोउ रंक न असयहिग्रामा ❀ तुमते हीन जासु गृहसामा
सबके गृह मणि कञ्चन रासी ❀ दास अनेक अनेकन दासी
गजरथ चपल तुरंगम छाये ❀ गृह गृह जनु हरि धनद बसाये

दो० प्रथमजयतितवजयकरण, जय कुरुनाथ भुवाल।
कहहिं परस्पर रङ्क ते, जिनकीन्हेंधनपाल॥

धर्मराज तव दान पताका ❀ विदित रसातल भूतल नाका
दूतबचन सुनि अतिसुखमाना ❀ बहुरि नरेश करत अनुमाना
कहत दूत सब जो निधि मेरे ❀ भे तस रङ्क नागपुर केरे
यहि मन्दिर ते जिमि मैं एका ❀ प्रकट तथा धनवान अनेका
नेक कोश मम भयो न खाली ❀ दानदशा सुनि भूतल हाली
सो यह द्रव्य कहांते आई ❀ पूछहु भीमहिं भूप बोलाई
सुनि नृपबचन पवनसुत हाला ❀ कह्यो भयो यदुनाथ दयाला
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाहीं ❀ त्राता अपर दीख कोउ नाहीं
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्हीं ❀ राखिलाज करुणानिधिलीन्हीं
कुरुपति चहत भङ्गमख कीन्हा ❀ कृपासिन्धु सोइ करै न दीन्हा

सो० रही प्रीति उर छाइ, यदुपतिकी करणी समुझि।
दशा न सो कहिजाइ, जोरिपाणि बिनवत हरिहि॥

जय राधाबर हलधर सोदर ❀ जयति दयानिधि जयदामोदर
जय जय जय बृन्दाबन बासी ❀ लक्ष्मीपति बैकुण्ठ निवासी
निज जन हेत सदा तुम त्राता ❀ मम पति राखिलीन तुम जाता
हलधर सहितजयति जयजोरी ❀ राखेउ लाज दयानिधि मोरी
सुनत बचन कह दीनदयाला ❀ रही तुम्हारि लाज सबकाला
तुम सरीख जे भूतल राजा ❀ नहिं तिनकहँ नृपहोत अकाजा
कह नृपनाथ सुनो गिरिधारी ❀ एक हृदय मम संशय भारी

चैद्य जाहि निजधाम पठावा ❀ रोष मोहिं केहि कारण आवा
विदुर बुझाइ कह्यउ ममपाहीं ❀ तब संतोष भयो मन माहीं
दो० हँसिबोल्यउ यदुवंशमणि, तुमहिं उचित यह भाव।
नीतिधर्म उर बसत है, कस न रोष उर आव॥
जो नृप होत अज्ञ अविचारी ❀ करत न रोष सभय लखिरारी
आवत जहां निमन्त्रण दीन्हे ❀ शत्रु मित्र तहँ उचित न चीन्हे
अनुचित खोरि धरत सबलोगू ❀ समता तासु कहत बधयोगू
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ ❀ अयश विलोकि क्रोध उर भयऊ
तदपि नीच असज्यहि थलपैये ❀ करिय बिनाश बिचार न लैये
कीन क्षमा तुम अस जियजानी ❀ यह बध योग अमङ्गलखानी
सुनि नृपधर्म परम सुखपाये ❀ हलधर कृष्णसमेत नहाये
उद्धव सात्यकि राम सोहाये ❀ प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये
अशन पानकरि सहितसमूहा ❀ मांगी बिदा चले दल जूहा
दो० बहु प्रकार रानीन मिलि, कुन्तीपद शिर नाय।
प्रद्युम्नादि कुमार जे, मांगत सबहि रजाय॥
चढ़ेसकलनिजनिजरथन, चले निशान बजाय।
पुर बाहरलग धर्मसुत, फिरत भये पहुँचाय॥
गये द्वारकहि जब यदुराई ❀ बैठे सभा धर्मसुत आई
करहिं धर्मसुत राज्य सुखारी ❀ सुखरुखजोगवत बान्धवचारी
अभिमनुआदिविलोकिकुमारा ❀ लहत मोद मन धर्मभुवारा
यक दिन बाजि चढ़े नरनाथा ❀ सुभट समाज चले बहुसाथा
अश्वारूढ़ बन्धु बरचारी ❀ धाये बन्दी बिरद पुकारी
अभिमनु आदिक साथकुमारा ❀ माहिषमती नगरी पगुधारा
आगे मिल्यउ चैद्यसुत आई ❀ कीन अनेक भांति पहुनाई
अभयबाहँ करि ताहि बसाये ❀ कहिअदण्ड नृप निजपुरआये
धर्मनरेश जानि सब लायक ❀ दण्ड पठाइ देहि नरनायक
दो० यहिविधिविपुल प्रताप नृप, बसत नागपुरमाहिं।

सबलसिंह लखि जासुगति, धनदशक्र सकुचाहिं॥
इति श्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृतेशिशुपाल
बधनयुधिष्ठिरयज्ञकथनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० जनमेजय कह ऋषि कहहु, सकलकथा बिस्तारि।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन, नाथ भई किमि रारि॥

कह ऋषि सुनु नृप गजपुरबासी ❀ कुरु पाण्डव चरित्र सुखरासी
सुनत होइ नर बिनहिं प्रयासा ❀ सिद्धि कामना सुरपुर बासा
आयो देखि धर्म मख जबते ❀ निशि न नींद कुरुनाथहितबते
बन्धु बिभव लखि परम उदासा ❀ यतनबिचारतकेहिबिधिनासा
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई ❀ सुनि जरिजात गात कुरुराई
यकदिन कुरुपतिसचिवबोलाये ❀ शकुनी करण दुशासन आये
पूछत सबही कुरुकुलदीपा ❀ होइ नाश जेहि धर्ममहीपा
कीन्ह सबन मिलियहमतठीका ❀ जोरि समूह समर अब नीका
कीजै सकल बन्धु अब घेरी ❀ चहुँदिशि धर्मज भवन गरेरी

दो० पितहिपूछिअनुचितउचित, तस कीजै तब काज।
उचित मन्त्र शकुनी कह्यो, सबकेमन भलआज॥

करण दुशासन नृप मनमाना ❀ बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना
संजय दीख कि कुरुपति आये ❀ करि सतकार बिबिध बैठाये
मतिदृगचरण धरैं सब शीशा ❀ पावहिं मनभावती अशीशा
शकुनी कह्यो सुनौ महराजा ❀ तुम्हरे सुतहि रोष बड़लाजा
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी ❀ अतिबिस्मयबश रूपबिशेखी
तहँ कछु भूप भयो अपमाना ❀ ताते दुर्योधन दुख माना
होत अवज्ञा गजपुर माहीं ❀ भीम कानि मानत कछु नाहीं
एक राज्य महँ भे दुइ राजा ❀ कीन मन्त्र यह जानि अकाजा
दल बटोरि कीजै रण रीती ❀ लीजै धर्म नरेशहि जीती

दो० बन्धु मित्र अरु पुत्र सब, थल गरेरि करिनास।
देश कोश लीजै सकल, धर्महि यमपुरबास॥

सुनि मतिहग शकुनी मुख बानी ❀ बोले बचन देखि बड़ि हानी
मन्त्र तुम्हार हमहिं नाहिं भावत ❀ ईश बाम अस बचन कहावत
समर दक्ष जिन के मन ऐसे ❀ जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे
जिन के साथ सदा बनवारी ❀ करि न सकहिं रण शक्रप्रचारी
लरिकाईं खेलत नहिं हारे ❀ तासु न बिगरहि बात बिगारे
जीति सकहि को धर्मकुमारा ❀ जहँ जगदीश आपु रखवारा
उनते समर न पैहौ पारा ❀ अबसुतजनियहकरहु बिचारा
धर्मराज अपराध बिहीना ❀ करत तात तुम मन्त्र अलीना
दो० सुनि शकुनीबोलेबहुरि, भूप कही भलि बात ।
हारि जीति कीन्हे समर, कुरुपतिजानि न जात ॥

शकुनिरुवाच ॥

द्यूतकर्म हम निपुणहिं कुरुपति ❀ पंसासार ख्याल अद्भुतगति
कपट अक्ष भावै मन जोई ❀ सुनहु नरेश परइ तब सोई
कपट भेंट पाण्डवन बोलाई ❀ जीति लेब सब अक्ष खेलाई
ऐहैं धर्म महीपति आछे ❀ युद्ध जुवा पग धरै न पाछे
देश कोश नृप सकल लगाइहि ❀ जीतिलेब सब रहिनहिं जाइहि
युद्ध किये पाण्डव नहिं हारिहैं ❀ उनकर पक्ष कृष्ण तब धारिहैं
जीते ख्याल न बाढ़िहि बिरोधू ❀ कही न कोउ अनुचित करि क्रोधू
भूप हमारि मानि सिख लीजै ❀ अपरबात जानि चित धरीजै
दो० कपटभेदकरिपाण्डवन, जीतहु देहु निकारि ।
एकछत्र महिभोग बहु, रहइ न कण्टकधारि ॥

सुनि कुरुपति मन भयो अनन्दा ❀ जनु चकोर पायो निशि चन्दा
पुनि पुनि शकुनी केरि बड़ाई ❀ करै लाग कुरुपति हर्षाई
भलगुण तात गुप्त करिराख्यउ ❀ ममहितहेत तात सोइ भाख्यउ
नीक लाग गत अन्ध नरेशहि ❀ पुनिपुनि शकुनी कह उपदेशहि
पूछहु तात बिदुर पहँ जाई ❀ परमभक्त गुणनिधि मम भाई
यादवकुल जिमि उद्धव ज्ञानी ❀ तिमि कुरुबंश बिदुर सज्ञानी

तब कुरुनाथ विदुरगृह आये ❀ शकुनि दुशासन संग सोहाये
देखि विदुरमन अति अनुरागा ❀ आसन दीन रजायसु मांगा
शकुनी बरणि कहेउ सब साजा ❀ तुमहिं मन्त्र पूछत कुरुराजा
दो० उनकहँ दीन्हेउ बिभवबिधि, तुम जनि करहु खभार।
निज सेवाते कीन बश, केशव जो करतार ॥
बिदुरबचन कुरुपतिहि न भाये ❀ तुरत पितामह के गृह आये
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा ❀ देखि गङ्गसुत दीन अशीशा
सत्यव्रत के बैठ समीपा ❀ कही कथा कौरवकुलदीपा

भीष्म उवाच ॥

जो तुम सुत पूछहु मम हीका ❀ कहब रहा अस कहब न नीका
नृपमुखबचन चाहिय नय लीन्हे ❀ राज्य न रहत ताहि तजि दीन्हे
भल न रिझाउब इन बातनते ❀ जीत न उनके उतपातन ते
जस उनसुभट समर महिजीते ❀ मख कारज कीन्हे मन चीते
असमखयहि कुलकाहु न कीन्हा ❀ जगजठिगयो याचकन चीन्हा
मरेउ न हरि हलधरके मारे ❀ युग करि जरासंध ते फारे
को अस सुभट भयो यहि बंशा ❀ जासु करिय बहुबार प्रशंसा
दो० जे नर मानत जीति निज, हारि मानि तिमि लेत।
बिदितकरहिंजयअजयतजि, तेहियमभलिसिखदेत॥
तुम अब तात रहउ चुपसाधी ❀ जानि कीजै करि यतन उपाधी
यह मत नृप तुम अस ठहरायो ❀ करिसोवत जिमि सिंह जगायो
भीष्मबचनकुरुपतिसुनिलीन्हा ❀ नाहिंन कछु प्रतिउत्तर दीन्हा
उठि पुनि शकुनी सहित नरेशा ❀ बिषसम लाग अमीउपदेशा
कीन्ह द्रोणकहँ दण्डप्रणामा ❀ लहेउ अशीश होइ मनकामा
कहि शकुनी सबहेतु सुनावा ❀ द्रोणद्रोणसुत मनहिं न आवा

द्रोण उवाच ॥

भरद्वाज सुत कह सुनु राजा ❀ हम तुम्हार बाञ्छित शुभकाजा
आयसु जासु रमापति करई ❀ तासु पराजय समुझि न परई

करहु न सो दुर्योधन राजा ❋ जेहि पीछे बड़ होइ अकाजा
दो० गुरुमुख बचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात ।
शीश नाइ मांगी बिदा, गये जहां रविजात ॥
आदर बहुत तरणिसुत कीन्हा ❋ रत्न सिंहासन आसन दीन्हा

कर्ण उवाच ॥

कहेउ रजायसु होइ नरेशा ❋ प्रभु आगमन मोहिं अन्देशा
तेहि अवसर कुरुपति रुख पाई ❋ शकुनी विधिवत कथा सुनाई
कह रविसुत नृप सुनु मत मोरा ❋ बोलि लेहु सब भूप किशोरा
मम घट कालनिशा नियराई ❋ कार्त्तिकमास शरद ऋतु पाई
खेलत द्यूत सकल संसारा ❋ तबहिं बोलाइहि पाण्डुकुमारा
लखि नहिं परहि कपट चतुराई ❋ यह सलाह रविसुत मनभाई
दुर्योधन सुनि अतिसुख माना ❋ पुनि पुनि भेंटत करत बखाना
दो० आतुर उठि शकुनीकरण, मगकृत बाकबिलास ।
सबलसिंह कह तब गये, गान्धारी के पास ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दुर्योधनमन्त्रप्रश्नवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कीन्ह प्रणाम मातुपर भूपति ❋ दै अशीशआसनप्रमुदितअति
कहेउ मनोरथ निज नरनायक ❋ करिय न तात बात बेलायक
दीन्हीं ईश तुमहिं ठकुराई ❋ बैठि रहहु निज भवन सुपाई
सुत जग जन्म सुफल करिलीजै ❋ बन्धु बिरोध कदापि न कीजै
मातु वचन नृप मनहिं न आये ❋ भानुमती गृह आपु सिधाये
शकुनी आदि भवन निज गये ❋ भूप सेज पर शोभित भये
भानुमती ते सकल हेवाला ❋ कहि पूछेव कौरवकुलपाला
जोरि युगल कर कौरव रानी ❋ कहेउ नाथ सुनिये मम बानी
करिय न बन्धु बिरोध बलीते ❋ सजग भये पुनि जाहिं न जीते
दो० नहिं भाये रानी बचन, निजबल कहेउ भुवार ।
होतप्रात आये सभा, हने निशान अपार ॥

आये कुरुपति निजमखशाला ❀ बैठि चित्रसारी नरपाला
चरवर बहु कुरुनाथ पठाये ❀ बोलि बोलि सब भाइन लाये
आये शकुनी करण दुशासन ❀ करि जुहार बैठे निज आसन
सकल बन्धु आये तिहि तीरा ❀ लषण कुँवर आदिक भैभीरा
नाइ नाइ शिर नृपहि जोहारी ❀ जहँ तहँ सोहतहैं भट भारी
प्रतिपवँरिन दरबानि समाजा ❀ बिपुल बिभव राजत कुरुराजा
पूछेहु सबहिं भरत कुलकेतू ❀ कहि विस्तार कहेउ सबहेतू
निज निज मन्त्र न राखहु गोई ❀ सब मिलि करहु करब हम सोई
प्रथम मन्त्र जो शकुनि बखाना ❀ ठीक नीक सबके मनमाना
दो० एकछत्र कीजिय धरणि, दै पाण्डव बनबास ।
सबन कह्यो मत ठीक यह, कुरुपति हृदय हुलास ॥

विकर्ण उवाच ॥

बिकरण कह्यउ जोरि कर दोऊ ❀ नाथ अयशभाजन जनि होऊ
जिन कीन्हेउ बशत्रिभुवननाहा ❀ जगदुर्लभ प्रभु ताकहँ काहा
रक्षक जासु रमापति राजै ❀ तासुकहियक्यहि भांति पराजै
कौरवनाथ कही असि बानी ❀ सुनु ममवचन बन्धु सज्ञानी
पाण्डव जीति सकै किन कोई ❀ कहहु शेष कीजै बश सोई
जाके शीश धरी सब धरणी ❀ पाण्डव की केतिक है करणी
शेष दिनेश जाहिं किन जीते ❀ बिजय न एक धर्मसुतही ते
सकल कहहिं सो बचन प्रमाना ❀ एक कहहिं कीजै जनिकाना
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई ❀ दुश्शासन बोल्यो शिरनाई
दो० नाथ कीजिये बात यह, सत्य सत्य मत मोर ।
मैं अनुचर करिहौंसकल, कुरुपति आयसु तोर ॥
बन्धु बचन सुनि नृप सुखपाये ❀ शिल्पकार बहु तुरत बुलाये
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई ❀ देखत जाहि चकित सुरराई
तबलगि रचना रचहु सँवारी ❀ द्यूतदिवस जब आव दिवारी
सब थवई नरनाह पठाये ❀ अनुचरसाथ बिपुल तिनपाये

लोककाष्ठकरसुनिसुनि आवहिं ❀ रचहिं सभा नृप आयसु पावहिं
सात मास महँ करि निपुणाई ❀ दीन्ही मनहुं नवीन बनाई
दुर्योधन नृप सभा निहारी ❀ बैठहिं दिनप्रति होहिं सुखारी
सुन्दर मास दमोदर आवा ❀ कालनिशाथल अति नियरावा
शकुनी करणहिं पूछि नरेशा ❀ पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा
दो० कालनिशा जागरण हित, आवहु सब भुवराइ ।
धूतखेल खेलहु इहां, करहु सभा मम आइ ॥
खेलब हम अरु धर्मकुमारा ❀ देखहु आय सकल सरदारा
दुर्योधन कर आयसु पाई ❀ गजपुर सब आये भुवराई
सुखद शिबिर पाये सबकाहू ❀ बहु सतकार करत नरनाहू
कुरुनन्दन तब बिदुर बोलाये ❀ जाहु धर्म पहँ कहि पठवाये
धर्मराज गृह बिदुर सिधाये ❀ तुरग सवार साथ शत धाये
चपल तुरङ्गम बिदुर सँवारा ❀ जात चले पाण्डव दरबारा
बिदुर आगमन सुनि सुख पाये ❀ आगे मिलन धर्मसुत आये
बहुरि सभा लै गयो सुवारा ❀ सादर सिंहासन बैठारा
पुनि पुनि भूप रजायसु मांगत ❀ प्रीति बिलोकि बिदुर अनुरागत
बिदुर उवाच ॥
दो० हृदय बिचारत नख लिखत, कौरव की मतिपोच ।
हाथी हरहट मदगलित, नाहिंन शील सँकोच ॥
सुनहु तात मम आगम काजा ❀ तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा ❀ आये ममगृह बिपुल नरेशा
धूतहेतु हम साजि उछाहू ❀ सो तुमहूं आवहु नरनाहू
इहैं कालनिशि जागहु आई ❀ देखहु मम समाज समुदाई
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता ❀ कुरुपति के मन है छल ताता
शकुनी करणहि सहित दुशासन ❀ चाहत तुम कहँ देश निकासन
यहै मनोरथ जीतब भूपा ❀ कहूँ कहेउ यह भेद न भूपा
तुमहिं परमप्रिय जानि सुनावा ❀ करहु भूप जो बनहि बनावा

कहत भये अस धर्मजराई ❋ सुनहु सचिव भीमादिक भाई
कुरुपति के ईर्षा मै भारी ❋ हमकहँ जीतन कहत हँकारी
दो० युद्ध जुवाँवश होत नहिं, भ्राता करहु विचार ।
होत तासु जय तात सुनु, जेहि सहाय करतार ॥
यह कुरुपति भलि बात विचारी ❋ मानत जीति न जानत हारी
विदुर विचारि कहो मोहिं पाहीं ❋ का समुझत कुरुपति मनमाहीं
बोले विदुर कही भलि बाता ❋ हम यह भेद न जानत ताता
कहाउ भीम मतिभ्रम कुरुराऊ ❋ सो किमि जानहिं भाउ कुभाऊ
चलहु भूप अब करहु तयारी ❋ खेलिय नृप गृह पंसासारी
उन असकरि सब भूप बुलाये ❋ कौतुक देखन ते नृप आये
जो न नरेश चलौ तुम काली ❋ कुरुपति होइ मनोरथ खाली
भीम वचन सबके मन भाये ❋ भूप प्रात गजबाजि सजाये
गये वितान पटल लादि आगे ❋ पटह धेनुमुख बाजन लागे
सो० निकर नगारे बाज, बोले विरद पयान के ।
गरजि उठे गजराज, हय हींसत घहरात रथ ॥
विदुर समेत चढ़े नृप हाथी ❋ चलत भये भीमादिक साथी
उठे निशान चले नरनायक ❋ धाये विपुल चहूँदिशि पायक
तुरगारूढ़ नगिनि करबालहि ❋ गहिकर घेरिचले नरपालहि
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये ❋ आतुर लषण कुमार पठाये
उलका द्विरद दुशासन साथा ❋ नायो धर्मराज पद माथा
दै अशीश नृप धर्म समोदा ❋ बैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा
मुक्तामाल दीन्ह पहिराई ❋ दिये विविध पकवान मिठाई
कीन्ह विदा कुरुनाथकुमारा ❋ आप वितान बीच पगु धारा
दो० तेहि अवसर आवत भयो, धर्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालकी, भीतर गईं अवास ॥
लषण समेत विदुर इत आई ❋ सकलकथा कुरुपतिहि सुनाई
कुरुरनिवास सबन सुधिपाई ❋ मिलनद्रुपदतनया कहँआई

सुनि आवत दुर्योधन रानी ❀ चलीं मिलनहित सकल सयानी
तजि नरबाहन सब रनिवासा ❀ मिलीं द्रौपदी सहित हुलासा
करि सबबिधि सबकहँ सतकारा ❀ भांति अनेक भई जेवनारा
कुरुपति बन्धुन की सब नारी ❀ निजनिज भवन गमनकृत भारी
चलन चहेउ दुर्योधन रानी ❀ द्रुपदसुता राखेउ गहि पानी
करन धर्मसुत के पहुनाई ❀ भूरि बस्तु कुरुनाथ पठाई
अशन पान करि धर्मजराजा ❀ लीन बोलि द्विज साधु समाजा
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैके ❀ बिप्रन सहित सुआसन दैके
द्रुपदसुता अरु पाण्डव रानी ❀ सोहहिं पटल कपाट सयानी
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा ❀ हरिकी कथा रसाल अनूपा

सो० हरिकी कथा रसाल, कहन लगे द्विज बिदुषवर।
सुनत धर्म महिपाल, जहँ तहँ दरबानी खड़े॥

इहां राय दुर्योधन निरयस ❀ सञ्जय ते तब कहतभयो अस
अब तुम जाहु पाण्डुसुत ठांई ❀ भा शकुनीकर मन्त्र सहाई
कहेउ धर्मसुत ते समुझाई ❀ प्रात द्यूत खेलहिं इत आई
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये ❀ आतुर धर्मराय पहँ आये
भूप समीप लीन बैठाई ❀ तब सञ्जय बोलेउ रुख पाई
तुमहिं प्रात कुरुनाथ बोलावा ❀ द्यूतकर्म हित साज बनावा
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी ❀ मिलबप्रात सबकहँ हम आनी
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये ❀ धर्मबचन कुरुपतिहि सुनाये

दो० सुनहु भूप सञ्जय कह्यो, यह कह धर्मज राइ।
स्वजन सहित कुरुपतिहिंमैं, प्रात भेंटिहौं आइ॥
सबलसिंह संजय बचन, सुनि कौरव कुलनाथ।
जात भयो बिश्राम थल, युवती वृन्दन साथ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

तेहि रात्रीकर भयो बिहाना ❀ पाण्डव गये द्रोण अस्थाना
संग भूमिसुर साधु समाजा ❀ नमत द्रोणपद पाण्डवराजा

परत दण्डवत धर्मज कीन्हा ❀ द्रोण उठाइ लाइ उर लीन्हा
पाइ असीश भेंटि सब भाई ❀ मिले द्रोणनन्दन पुनि आई
पूछी कुशल प्रश्न नृप आछे ❀ तब कुरु कही कुशल सब पाछे
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा ❀ बोले बचन भूप श्रुतिसारा
नाथकुशलसबविधिअनुगामी ❀ तव अशीश मोरे शिर जामी
मांगी बिदा भूप शिरनायो ❀ तुरत पितामह के गृहआयो
परशि चरण नृप द्वौ करजोरा ❀ लखि हरषे मन गङ्गकिशोरा

भीष्म उवाच ॥

दो० पुत्र युधिष्ठिर भद्र तव, होइसोआशिष दीन्ह ।
करणीकुरुपतिकीसमुभि, सजलनयनकछुकीन्ह॥

बहेउ युगल तनु प्रेमप्रबाहा ❀ आयसु मांगि चले नरनाहा
बुद्धिचक्षु के मन्दिर आये ❀ पितु भ्रातापद शीश नवाये
धरम आगमन सुनि सुख पाये ❀ परमप्रीति मतिदृग उर लाये
परत चरण लखि पांचौ भाई ❀ बरबस भूप लिये उर लाई
रहे भूप तेहि थल धरि चारी ❀ करत प्रीति मतिदृग बैठारी
उठि धर्मज नाये पद शीशा ❀ बिदा कीन नृप दिये अशीशा
चले समाज समेत भुवारा ❀ कुरुपति के मन्दिर पगुधारा
आवत देखि धर्म नरनाथा ❀ उठे भूप भट यूथप साथा
मिलिअनेकबिधिकरिसतकारा ❀ कुशल पूछि आसन बैठारा

दो० भेंटि भलीबिधि युगलनृप, बहु आदर बहुभाइ ।
धर्मराय देखेउ बहुरि, रबिनन्दन गृह आइ ॥

रबिसुत सुनेउ धर्मसुत आये ❀ बिसासेन कहँ तुरत पठाये
आगे मिलत चरणगहि रहेऊ ❀ चिरंजीव अधरम अरि कहेऊ
सुत समेत रबिसुत पहँ आये ❀ मिलत परस्पर नयजल छाये
कुशल प्रश्न पूछत मृदुबानी ❀ गये अँगारमती जहँ रानी
धर्महिं देखि रानि सुख भरेऊ ❀ भीमादिक भ्रातन आदरेऊ
लखि सतकार बिपुल सुखपाये ❀ आतुर भूप बिदुरगृह आये

मिले कृपहिं नृप अतिहिततेरे ❀ आवत भये बहुरि नृपडेरे
खान पान करि पति जगतीके ❀ पुनि सोहैं सिंहासन नीके
रही तँबूरनकी ध्वनि माची ❀ बारबधू बहु बृन्दन नाची

दो० करतहास्य भीमादिसब, लखि अप्सरा ललाम ।
यहि प्रकार आनन्दते, बिगत भई निशियाम ॥

तेहि अवसर संजय तहँ आये ❀ लै सँदेश कुरुनाथ पठाये
खेलन अक्ष चलहु नृप आजू ❀ तुमहिं बोलावत कौरवराजू
संजय वचन भूप सुनि लीन्हा ❀ नहिं ताकर प्रति उत्तर दीन्हा
बिप्रबृन्द तेहि अवसर आये ❀ प्रथम भूप उठि शीश नवाये
दीन्हे सबन यथोचित आसन ❀ बहुरि आप बैठे सिंहासन
गायक नर्त्तक बदन दुराई ❀ रहे चुपाइ भूप रुख पाई
वेद ऋचा द्विजबृन्दन गाये ❀ सुनि बश प्रेम सभा मनभाये
गावहिं बिदुष सकल गुण पूरे ❀ बिबिध प्रकार बजाइ तँबूरे
होतहि प्रात धर्म के जाये ❀ गन्धारी गृह आतुर आये
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई ❀ दीन्ह अशीश मातु सुखदाई

सो० दासीबृन्दबिशाल, दीन्हे मञ्च अनेक धरि ।
बैठे धर्म नृपाल, सचिवसखा भाइनसहित ॥

कनक प्रयंक बिराजत रानी ❀ जनु सोहत कैलास भवानी
उठि नरनाह रजायसु मांगा ❀ बन्दि मातुपद अतिअनुरागा
अति बल कुरुनन्दन के भाई ❀ सबके भवन धर्मसुत जाई
भेंटत सबहि गये दिन चारी ❀ आई कालनिशा भयकारी
दीपक श्राद्ध धर्मसुत कीन्हा ❀ बिपुलद्रव्य महिदेवन दीन्हा
कीन्हेउ श्राद्ध बुद्धिहग एका ❀ धरिदीन्हे मणिदीप अनेका
गजपुर प्रकटि रही उजियारी ❀ भयो बिनाश निशातम भारी

दो० जात भयो ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ ।
बिकरण दुश्शासनकरण, सौबल शकुनीसाथ ॥

दियो किंकरन डारि गलीचा ❀ अद्भुत बसन पर बिचबीचा

बैठि गयो कुरुनायक जाई ❀ आवन लगे नृपति समुदाई
बाहुलीक गङ्गासुत आये ❀ भूरिश्रवा वृषसेन सोहाये
युद्धामन्यु अलम्बु उलूका ❀ मगहप बन्धु चतुर अहिमूका
सोमदत्त शशिबिन्दु सुवेशा ❀ सैन्धवपति अरु शल्य नरेशा
आइ गये नृप तीस हजारा ❀ रहत सदा जे कुरु दरबारा
करहिं वकीलति निजमहि हेतू ❀ अचल करहिं कौरवकुलकेतू
आये सभा वकील घनेरे ❀ जे हित करत नरेशन केरे
कौरवनायक के शत भाई ❀ आये साथ सुभट समुदाई

सो॰ तेहिअवसर गे आइ, बेतपाणिगण गुणनिपुण ।
दीन सबन बैठाइ, यथा उचितआसनसबन ॥

दो॰ द्रोण कृपा भीषम करण, आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ ॥

आये बहु मतङ्ग पुर बासी ❀ सचिव महाजन जे गुणरासी
सबहि नरेश कीन्ह सतकारा ❀ आवत देखे द्रोणकुमारा
करि आदर अनेक नरनाहू ❀ कहेउ धर्मसुतपहँ तुम जाहू
बेतपाणि तब खबरि जनावत ❀ सहितसमाज युधिष्ठिर आवत
तब लग धर्मराज पगु धारा ❀ जहँ तहँ नृप बहु करत जोहारा
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ❀ बैठारे करि बिबिध प्रबोधन
अति प्रताप कुन्तीके बालक ❀ सोहत सभा प्रजाप्रतिपालक
तेहि अवसर कुरुपतिरुख पाये ❀ पंसासारि दुशासन लाये
दीन्ही धरि अजीतरिपु आगे ❀ करगहि भीम बिलोकन लागे
सो कुरुपति निज हाथ डसाई ❀ लिये धर्मसुत अस उठाई
फरकेउ अशुभ नयन भुज बायें ❀ उर थरहरेउ छींक भइ दायें

सो॰ दिये धर्मसुत डारि, परेउ न पांसा जो कहेउ ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकेउ कहि नहिं पव परेउ ॥

धर्मराज पांसा महि मारे ❀ बोले बचन नयन रतनारे
खेल हमार अहै कुरुपति ते ❀ शकुनी ते खेलहिं केहिभाँति ते

कहहु कुमन्त्र लागि श्रुतिमाहीं ❀ युद्ध जुवां लायक तुम नाहीं
शकुनी लज्जित निपटसभामा ❀ कुरुपतिहृदय रोषतरु जामा
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा ❀ बिहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा
हम शकुनी कहँ नृप बैठारा ❀ यामें कछु न अकाज तुम्हारा
शकुनी हारहि सो हम देहीं ❀ अङ्गीकार जीति करि लेहीं
हम हारे शकुनी के हारे ❀ बड़िअनुचित नृपज्ञान बिचारे
जो निज हानि भूप तुम जानो ❀ निजकिंकर तुमहूं कोउ आनो
सो० हम खेलब तव साथ, होइ नीच राब भांति जो ।
कह्यो बचन कुरुनाथ, शकुनीतो शिरमौर मम ॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी ।
हमहिं न ओछिमहीश, मैं खेलब नृपसरसि महँ ॥
दो० धर्मराज सन भीम तब, कहन लगे कर जोरि ।
छल है जुवां न खेलिये, सुनिये बिनती मोरि ॥
चलि नरेश कीजै निज राजू ❀ शकुनी ते खेलिय केहि काजू
अतिहित भीमसेन कै बानी ❀ युगल बन्धु पारथ मनमानी
बरजत सकल धर्ममहराजहि ❀ भीष्मादिकसबसहितसमाजहि
जानि पांसा अब धर्मचलावहिं ❀ बामबिधाता कछु नहिं भावहिं
होनहार को सकत मिटाई ❀ बोले धर्मराज सुनु भाई
जो यह बोलत कुरुपति बाता ❀ छलबिहीन लागत मोहिंताता
क्षत्री धर्म कांछ हम कांछे ❀ युद्ध जुवां पग परइ न पाछे
यकदिशि कालप्रचारहि जबहूं ❀ क्षत्रिधर्म धरि मुरिय न तबहूं
त्यहिमा फिरि आपुसिकर बीचू ❀ पाछे पांव धरै सो नीचू
दो० अस कहि धर्म नरेश तब, पांसालीन उठाय ।
दशा संकटा कठिन है, निपट रही नियराय ॥
मन्द वर्षपति गतबल भयऊ ❀ रबि कुदृष्टि मूरतिथल गयऊ
सबग्रह अशुभपरे थलही थल ❀ बर्षप वर्ष त्रयोदश निर्बल
कहहिंबिदुषजन नृपहिं शरिष्टा ❀ महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा

जबअसबचनसुनहिंकुरुनायक ❋ लागहिंहृदय कठिनजनुशायक
भावीबश नृप मनहिं न भाये ❋ भाषि दावँ निज अक्ष चलाये
पुनि शकुनी कर लीन उठाई ❋ कहेउ करण कुरुपति सुखपाई
धर्मज बृथा न बड़ श्रम कीजै ❋ पाँसा में कछु होड़ बदीजै
काढ़ि कण्ठते गजमणिमाला ❋ सो धरिदीन धर्म महिपाला
हरितमालमणि कुरुपति राखी ❋ पाँसा चलन लगे बल भाखी
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ❋ कहतपरतसोइ बिनहिं बिचारे
होत जीत कुरुनायक केरी ❋ हारे धर्मज वस्तु घनेरी

दो० ताहीसमय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दिवान ।
आयो आयसु मानि सोइ, परम प्रपञ्चनिधान ॥

हारि जीति जो होइ हमारी ❋ सो तुम सकल लिख्यो सम्भारी
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई ❋ लागेउ करन शूद्रपति सोई
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा ❋ जीति लिये मुक्तामणि हीरा
मोती रतन जवाहिर जेता ❋ मूंगा कञ्चन कोश समेता
शकुनी कपट अक्षबल जीते ❋ चितभ्रम धर्मज भे सुखबीते
जीतिबस्तु धर्मज गृह राखी ❋ बोलहिं बिकलभूमिपतिसाखी
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये ❋ जीति देखि कुरुगण सुखपाये
परहिं न धर्मराज के पांसे ❋ चकित लोग सब देखि तमासे
आदि बरादिलोह अरु चांदी ❋ रहेउ न शेष ताम्र कोशादी
द्रव्य जो होति धातु षट दोई ❋ रहेउ न धर्मराज गृह कोई

दो० शकुनी अक्षसँभारिकै, फिरि लीन्हेउ निजहाथ ।
कपट भेदमहँ दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे ❋ क्षणमहँ सकल धर्मसुत हारे
तरकस कवच धनुष दस्ताना ❋ चर्म त्रिशूल कटार कृपाना
शक्ति कराल अस्त्र सबचीन्हे ❋ पृथक पृथक धरिधर्मज दीन्हे
तजे अश्व शकुनी बलकारी ❋ यहि बिधि गये धर्मसुत हारी
बाढ़ेउ रोष धर्मसुत अङ्गा ❋ धरेउ सकल दल नृप चतुरङ्गा

तब शकुनी छल अक्ष चलाये ❋ कोरे कागज जीति लिखाये
धरेउ धर्म महिषी गण गाई ❋ जीते शकुनी अक्ष चलाई
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी ❋ कानन नर बानर चित्तादी
पक्षी बहु बिचित्र बहु भांती ❋ रङ्ग रङ्गके अगणित जाती
कनक पींजरा सोहहिं पांती ❋ लखि शोभा भारती भुलाती

दो० नृपआयसु अनुचर सकल, सेवहिं खगमृगवृन्द ।
प्रथम नाम कहि धर्मसुत, धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारैं ❋ धर्म हारि सब लोग पुकारैं
बाहन रथ शिबिका सुखपाला ❋ ऊँट महिष अरु शकट बिशाला
यक यक भिन्न भिन्न धरिदीन्हे ❋ शकुनी जीति कपटबल लीन्हे
धरेउ नरेश तुरंगम सामा ❋ कहेउ पृथक शाला प्रतिनामा
यहि प्रकार धरि धर्मज बाजी ❋ हारे सकल तुरंगम ताजी
लखि आपन सबभांति बनाऊ ❋ रोम रोम हरषे कुरुराऊ
धर्मज नयन बामभुज फरके ❋ भयबश अङ्ग धकाधक धरके
रहेउ न चेत भयो मतिभङ्गा ❋ धरेउ धर्मसुत यूथ मतङ्गा
देश देश जहँ मत्त समाजा ❋ धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा

दो० पांसा शकुनी पाणिगहि, देत भूमि जब डारि ।
करत कुलाहल लोगसब, निज निज दावँपुकारि॥

हारे धर्मराज गज सर्बा ❋ शकुनी अक्ष लेइ सह गर्बा
रहत सदा जे भूपति सङ्गा ❋ शेष रहे ते सकल मतङ्गा
पृथक पृथक कहि भूपति नामा ❋ धरेउ नरेश जिनहिं बिधिबामा
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ❋ भइ शिरहारि धर्मसुत केरे
चकित लोग सब देखि तमासा ❋ कहैं न परत धर्मसुत पांसा
पुनि पुनि परत दावँ कुरुपतिको ❋ को जानै परमेश्वर गतिको
सुनिकर सरुष धर्मसुतपाहीं ❋ बाह्लीक आदिक पछिताहीं
शकुनी पाण्डवसुतहि प्रचारा ❋ लीन जीति भाजन भण्डारा
कञ्चनआदि जड़ितमणिभाजन ❋ हारे सकल धर्ममहराजन

सो० वसन कोश गे हारि, रङ्गरङ्गके अतिसुभग ।
दीन्हे पांसा डारि, शकुनी सांचे कपटके ॥
दो० देश देशके पाण्डवन, देत भूप अवनीश ।
सकलपत्रधारि दावँपर, दीन्हेउ धर्म महीश ॥
शकुनी पाँसा तमकि चलाये * कुरुपतिजयतिनिशान दिवाये
बोलि लिये तब धावन चारी * द्विरद दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी
कहेउ कि हम जीते नृपभारी * जे नहिं मानत आनि हमारी
एक विहीन धर्म महिपालहि * जे न डरत सपनेहुं रणकालहि
ते अब सहज जीति हम पाये * बिन प्रयास बिधि ताप बुझाये
पठवहु बोलि सकल नरनाहू * आवहिं नहिं सेना सजि जाहू
देहिं दण्ड नत आनहु बाँधी * देश देश प्रति करहु उपाधी
दण्ड चतुरगुण दशगुण लेहू * मिलहिं न तेहिं मम शासन देहू
दुर्योधन कर आयसु पाये * निजनिजकारजसकल सिधाये
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये * देश देश लिखि पत्र पठाये
दो० मिलहु आइ आतुर निपट, त्यागिसकलसन्देह ।
देहु दण्ड कुरु भूपतिहि, नत जैहौ यमगेह ॥
जहँ कहुँ बीर धीर नृपजाना * साजि विकटदल कीन पयाना
जिनतें बैर भाव अधिकाई * करि उपाय तहँ करैं लराई
सपनेहु पाण्डुसुवन बल पाई * कीन अवज्ञा जेहि सुधि आई
करहिं उपाधि तासु सँग नाना * जेहि बिधिहोय तासु अपमाना
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं * लखि बलहीन त्यागि तब देहीं
काहुहि बाँधि लेहिं करि सङ्गा * काहुहि करहिं समरमहँ भङ्गा
यह कुरुपतिअतिशयसुखपावा * दुर्दर्शनहिं बहोरि बुलावा
तात सजहु तुम दल चतुरङ्गा * लेहु धीर भट यूथप सङ्गा
महिषमती नगरी कहँ जाई * धरिआनहु निशिचर समुदाई
जहँ शिशुपालसुवन विख्याता * किये दण्ड बिनु शत्रु अजाता
दो० दण्ड बांधि लीजै उचित, कीजै अवशि पयान ।

सजि दल दुर्दर्शन चले, बाजन लगे निशान ॥
देखि युधिष्ठिर अति दुखपावा ❀ दुर्योधन ते बचन सुनावा
नीति नरेशन के असि होई ❀ जो जस दण्ड उचित सो देई
हम अदण्डकृतसुताशिशुपाला ❀ तुम पठये दल अतिबिकराला
जो है है महि दीन हमारी ❀ तुम ते ना पाई भिखियारी
मखमहँ गयो तासु पितु मारा ❀ किये दण्ड बिनु युगलकुमारा
तुमहिं उचितहै तब मतिवन्ता ❀ लेहु दण्ड जनि बर्ष प्रयन्ता
यह प्रतिपालहु बात हमारी ❀ मनभावहि तस करहु अगारी
तुमहिं नरेश उचित यह बाता ❀ बार बार कह शत्रु अजाता
सो० धर्म्मराज के बैन, सुनि बोले कुरुनाथ तब ।
हमैं उचित यह हैन, करिय दण्ड बिन चैद्यसुत ॥
अवनी प्रति अदण्ड करि देहीं ❀ हम तजि राज्य कमण्डलु लेहीं
तव मुख कहत बनत यह बाता ❀ अपर न काहुहि सुनत सोहाता
धर्मराज सुनि कुरुपति बानी ❀ गे जरिगात तेज बल हानी
भीमसेन फरके भुज दण्डा ❀ अधर फरहरत रोष प्रचण्डा
पारथ भयो बिलोचन लाला ❀ लखि आनर्थक धर्मभुवाला
नाहिं न समय रोष कर भ्राता ❀ किमि समुझै मूरख अज्ञाता
परम सुजान चतुर जे बीरा ❀ समय बिचारि धरैं मन धीरा
जाहि अभय हम दीन बसाई ❀ अब तापर दारुण भय आई
सकल हारि कर मोहिं न शोचू ❀ जस यह परेउ परम संकोचू
सो०निजनयननलखिमोहिं, होतदुसहदुखानिपटलखि।
तात न तेहिबिधि सोहिं, समयजानि धीरज धरहु॥
शपथ हमारि हजार, आयसुबिनजनिकरियह।
त्यागहु सकल बिचार, तात भये अपमान कर ॥
तब बोले सहदेव सभागे ❀ का देखौ देखिहौ अब आगे
अबते भूप ख्याल तजि दीजै ❀ रक्षत प्राण भवन मग लीजै
नत दुर्योधन नृप अति नीचू ❀ मारहि सबहि बुलाय कुमीचू

नहिं सहदेव बचन मन भाये ❀ धर्मराज कर अक्ष उठाये
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता ❀ चारि याम यामिनि रहि जाता
याम सपाद दिवस चढ़िजाई ❀ अब अवसर नृप चलिय नहाई
भीमबचन सुनि कह कुरुराजा ❀ शकुनी ते भागे बड़ि लाजा
प्रथम हीनकरि चहत न खेले ❀ तासु संग बड़ि हास पछेले
कुन्तीसुत सुनि अति दुखपाये ❀ राखि दावँ बड़ अक्ष चलाये

सो० परे न धर्मज अक्ष, शकुनी लीन उठाय कर ।
कपट भेद महँ दक्ष, पुनि पाँसा फेंको चहत ॥
दो० धर्मराज निजराज्य सब, धरि दीन्हे यकदाय ।
जीतिलीन्हशकुनीसकल, बिनश्रमकपटउपाय ॥
सो० धरन लगे नर देव, राज्यसकलचित भ्रमबसी ।
कहि दीन्हेउ सहदेव, चारि बरण ब्राह्मण बिना ॥

ब्राह्मण कहहु जाहिं किमि हारे ❀ सब प्रकार शिरमौर हमारे
लखि सहदेव केरि चतुराई ❀ बिहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई
राज्य जीति कुरुनायक लीन्ही ❀ गह गह जयति दुन्दुभी दीन्ही
कपट बितान शेष जे रहेऊ ❀ सो धरि बहुरि धर्मसुत कहेऊ
सहित समाज धरे सहदेऊ ❀ शकुनी जीति छल बल तेऊ
देश कोश समेत धरि दीन्हा ❀ नकुल जीति कुरुनायक लीन्हा
पारथ धरेउ सहित सब सामा ❀ हय गज बसन कोश धन ग्रामा
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ❀ परमानन्द निशान दिवाये
धरेउ दांव नहिं रहेउ सँभारा ❀ हारे भूप सकल परिवारा
बहुरि भूप युत सहन भँडारा ❀ हारे भीम सहित परिवारा
हारि गये कुरुनायक जीते ❀ गयो रङ्क पद भागि महीते
दीन्हे द्विजन याचकन दाना ❀ हय गज भूमि रतन मणि नाना
गजपुर रहेउ न रङ्क अभागी ❀ केवल धर्म धुरन्धर त्यागी

दो० चितभ्रमचकितअजातअरि, धरिशरीरनिजदीन्ह ।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नहिंबिचारकछुकीन्ह ॥

दीन्हे शकुनी अक्ष उलारी ❀ किंकर भये धर्मसुत हारी
छूटि राज्य पद दास कहाये ❀ भये अचेत रहे शिर नाये
पुनि पुनि शकुनी कहेउ नृपाहीं ❀ जो कछु शेष रहा गृह माहीं
उठत ख्याल अब सो धरि दीजै ❀ पाछे पग धरि अयश न लीजै
धर्मसुतहिं कुरुनाथ प्रचारा ❀ गूढ़ गिरा कहि बारहिं बारा
तुम नृप विदित सत्यव्रतधारी ❀ परहिं न पद थे कर्म पछारी
अटपटि कुरुनन्दन कै बानी ❀ समुझि न परी तर्कछलसानी
उर बरि उठी रोष दुखज्वाला ❀ धरेउ भूप तनया पञ्चाला
बान्धवप्रियजनअतिदुखभरेऊ ❀ मानहुँ अन्ध महानद परेऊ

सो० शकुनी सबन पुकारि, साखी करि नरनाह बहु ।
दीन्हेउ पाँसा डारि, हारिगये नृप धर्मसुत ॥
लखि अनरथकी बात, भीमादिक भाई सकल ।
भस्म भये सब गात, मानहुँ बिनु मारे मरे ॥

धर्मराज तन सुधि बिसराये ❀ करते उठत न अक्ष उठाये
भयो शोकबश धर्म भुवारा ❀ मनहुँ कमलबन परेउ तुषारा
भीषम बिदुर निपट दुखपावा ❀ द्रोण कृपा महिशीश नवावा
बाह्लीक उर दुख अधिकाई ❀ गये सभा तजि गृह अकुलाई
मन बिस्मय बसि द्रोणकुमारा ❀ काधौं कीन चहत करतारा
सचिव महाजन गजपुरबासी ❀ बिलपत बिकलपरी जनुफांसी
समुझिसमुझिकुरुनाथसुभाऊ ❀ होत हृदय नहिं धीरज काऊ
रबिसुत शकुनी उर आनन्दा ❀ मनहुँ उदधि लखि पूरणचन्दा

दो० दुश्शासन आदिक अनुज, सकल प्रफुल्लितगात ।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात ॥

हीर चीर गज बाजि लुटाये ❀ द्विजन दान नानाबिधि पाये
भे याचकगण सकल अयाची ❀ बिजय नगारे की धुनि माची
जीती कुरुपति पाण्डव रानी ❀ कहेउ धर्मसुत ते यह बानी
अनुचर भयो समेत समाजा ❀ करहु मानि मम आयसु काजा

कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई ❀ माथे मानि करब हम सोई
रूख बदन करि कह कुरुराई ❀ द्रुपदसुता अब देहु मँगाई
सदसिबीचसुनि निर्भय बानी ❀ रोषज्वाल सुनि उर सरसानी
धरि धीरज रिस सो उरमारी ❀ मूर्च्छिपरेउ नृप अवनि दुखारी
रह्यउ न चेत कह्यउ कछु नाहीं ❀ अटकिरहेउ मणि खम्भन माहीं

दो॰ सबलसिंह धर्मजदशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि, परम रोष सरसान ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेदुर्योधनधर्मपराजय
द्यूतवर्णननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो॰ सुनिये नृप निज बंश के, पुनि चरित्र सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामी प्रात बुलाय ॥

सूत प्रात कामी ज्यहि नामा ❀ करत सदा कौरवपति कामा
अतिगम्भीरबचन नृप कह्यऊ ❀ धर्मराज महराज न रह्यऊ
भये आजुते दास हमारे ❀ सब परिवार द्रौपदी हारे
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई ❀ द्रुपदसुता तुम आनहु जाई
ल्यावहु सभा द्रुपद की जाता ❀ तुम सब बिधि प्रपञ्चमगज्ञाता
कह्यउ संदेश गये पति हारी ❀ अब तुम सेवहु सेज हमारी
सुनत प्रात कामी उठि धावा ❀ आतुर धर्म शिबिर कहँ आवा
दुर्योधन कर सकल सँदेशा ❀ कह्यउ शीलतजि सकल भदेशा
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा ❀ नतु धरि लैजैहैं निजहाथा

सो॰ सुनत सूत मुखबात, भयबश कांपी द्रौपदी ।
बिकल भये सबगात, कौरवनाथसुभावलखि ॥

धरि धीरज कह द्रुपदकुमारी ❀ सुनहु सूतपति बात हमारी
कस यह बचन कहा कुरुराई ❀ राजसभा त्रिय केहिबिधि जाई
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं ❀ धरि लैजाहुँ सभा महँ तोहीं
सुनतनिठुरसारथिमुखबानी ❀ अति सरोष दुर्योधन रानी
कहउ सूत ते बचन रिसाई ❀ जानि परत तुम्हरे शिर आई

भूले कहे भूल कहि तेरे ❀ गये बिसरि भुज पाण्डव केरे
समुझि परत यह हेतु विशेखा ❀ चहत नयन तव यमपुर देखा
बोलेउ सूत सुनहु महरानी ❀ आयउँ मैं नृप आयसु मानी
बचन तुम्हार शीशधरि जैहौं ❀ दोष न मैं कुरुपति पहँ पैहौं
दो० सुनत सारथी के बचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी बदन, गयो भागि भयपाय॥
कहि सन्देश सकल तेहि दीन्हा ❀ सुनि कुरुनाथ क्रोध अतिकीन्हा
दुश्शासनहिं बुलाय नरेशा ❀ कहेउ सरोष सूत सन्देशा
पुनिपुनि कहत रोषदारुणअति ❀ केशपाणि धरि ल्याव घसीटति
यह शठ पाण्डुसुवन भय पाई ❀ सक्यउ न मूढ़ द्रौपदी ल्याई
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ❀ अजहूं गह्वर कहत न बाता
सबते प्रिय निज जीवन जानी ❀ सकल मूढ़ नहिं धीरज आनी
चलेउ दुशासन आयसु मानी ❀ आयउ द्रुपदसुता जहँ रानी
आवत सरुष दुशासन देखी ❀ पाञ्चाली भय ग्रसित बिशेखी
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई ❀ चलु बोलत दुर्योधन राई
दो० दुश्शासन के बचन सुनि, द्रुपदसुता अकुलानि।
हमरे तुम सहदेव सम, कहत जोरि युगपानि॥
तात नीति मग देखु बिचारी ❀ कैसे जाय सभा महँ नारी
जबलगि हमाशिरतेन अन्हाहीं ❀ पूरुषमुख देखन कहँ नाहीं
मैं रज स्रवत एक पट धारी ❀ सभा गये पति जाय तुम्हारी
तात चलै कर अवसर नाहीं ❀ नतु जातिउँ मैं कुरुपति पाहीं
भीष्मादिक क्षत्री बहु राजा ❀ जात सभामहँ त्रियकहँ लाजा
तात एकान्त बोलि कुरुराई ❀ मैं सब बिधि कहतिउँ समुझाई
मम दिशि ते समुझाइ नरेशा ❀ कहेउ तात अतिभल संदेशा
दुश्शासन तब नैन तरेरे ❀ सुनु री हारि गये पति तेरे
कस न बिचार कीन तिन गूढ़ा ❀ म्वाहिं समुझावति जिमि मैं मूढ़ा
दो० चलतिन तैं त्रिय सदासिकहँ, करति उतर प्रतिगात।

जोरि युगलकर द्रौपदी, कहति बिकल अतिवात ॥
सुनहु तात तुम नीतिनिधाना ❋ सो मग नहिं तुम जो नहिं जाना
तुमकहँ तात शपथ शत मोरी ❋ कहउ तात नहिं राखेउ चोरी
कहहु सत्य तजि जीवन पापू ❋ हारे नृप मोहिं प्रथम कि आपू
हारे होहिं प्रथम निज रूपा ❋ किंकर भये मिटचउ पद भूपा
दासन के गृह होइँ न रानी ❋ नीति बिचारि समुझु मम बानी
छूटि गये सब नात हमारे ❋ नृप हारे हम जाहिं न हारे
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा ❋ त्यागि लाज चलिहौं तव साथा
ह्वै किंकरी करौं सब काजू ❋ जो कहिहैं कौरवशिरताजू
बेगि समुझि प्रति उत्तर दीजे ❋ आयसु होय अवशि सोइ कीजे
दो० सुनिदुश्शासन बचन अस, धायो नैन तरेरि ।
हारि गयो अज्ञान पति, नीति बिचारति चेरि ॥
सो० कहत कटुक दुर्बाद, रोष भरा धावत भयो ।
देखि जाय मर्याद, भयबश भागी द्रौपदी ॥
जात पुकारत आरत बानी ❋ देखि दुशासन अति रिस मानी
झपटि केश लीन्हेउ गहि हाथा ❋ चलेउ घसीटत जहँ कुरुनाथा
देखि दशा दासिन के वृन्दा ❋ करहिं बिलाप बिपति परिफन्दा
दुर्योधन कर सब रनिवासू ❋ बिलपत गिरत नयनमग आंसू
परी धर्मसुत शिबिर तरापा ❋ गजपुर सकल शोकबश कांपा
गहे दुशासन द्रौपदि बारा ❋ निकसत नाग नगर गलियारा
देखि दशा बिलपहिं पुरबासी ❋ जड़ जंगम खग मृग नृप दासी
जेहिमगनिकसत अन्धकुमारा ❋ देखि बज्र उर जात दरारा
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं ❋ होत शोर जेहि मारग माहीं
दो० देखि झरोखन महल ते, दासी वृन्द हवाल ।
जाय जाय रनिवासप्रति, बिदित कीन्ह ततकाल ॥
सुनिआसिगतिकौरवगणरानी ❋ बिलपहिं सकल हृदय हति पानी
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी ❋ करुणाभवन भवन प्रति बेरी

नाघत पँवरि पँवरि प्रति जाता ❀ द्रुपदसुता परबश बिलखाता
मोहिं छुड़ाव मातु गन्धारी ❀ बार बार कह द्रुपदकुमारी
भीतर दासिन खबरि जनाई ❀ तजि पर्यंक जननि उठि धाई

गान्धारीउवाच ॥

हा पुत्री हा धर्मज प्यारी ❀ बलि बलि जाव मातु गन्धारी
छूटे केश उघरि गयो चीरा ❀ बिलपति दासीगण सँग भीरा
आवत जानि मातु गन्धारी ❀ गयो दुशासन वेगि अगारी
जब लगि रानि द्वार पग दयऊ ❀ राजसभा दुश्शासन गयऊ
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी ❀ करत मूढ़ कोउ तर्क बिशेखी

सो० करत दया कोउ धीर, कोउ धिक कह दुश्शासनहिं।
तजत नयन कोउ नीर, कोउ निन्दत भीमादिकन॥
द्रुपदसुता के केश, गहि खैंचत कुरुपति अनुज।
बैठे सकल नरेश, मध्य सभा तहँ लै गयउ ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई ❀ जाय समीप दीन ठढ़ियाई
चहुँदिशि चकित चितै पांचाली ❀ राजसभा लखि थरथर हाली
लज्जावश नहिं रहेउ सँभारा ❀ स्रवत नयनमग ते जलधारा
अतिसुन्दरि लखि द्रुपदकिशोरी ❀ कामिन केरि भई मति भोरी
कहहिं जासु गृह द्रुपद कि कन्या ❀ धन्यधन्य पाण्डवपति धन्या
पुनि पुनि दुश्शासनहिं सराहीं ❀ है बड़िभागि गही जेहि बाहीं
धन्य आजु दुर्योधन राई ❀ आयसु जासु मानि धरि आई
लोचनलाभ हमहिं जेहि दीन्हा ❀ सुफल जगतमहँ जीवन कीन्हा
धर्मदशा लखि कोउ दुखपावहिं ❀ कोउ पछिताइ शीशमहि नावहिं

दो० दुश्शासन कह द्रौपदी, का रोवत बेकाज।
होत न आये सदसि महँ, चेरिन को बड़ि लाज॥

भीषम बिदुर नाव महि शीशा ❀ द्रोण कृपा उर शोच सरीशा
सकल धर्मशीलन दुख पावा ❀ नीचन के उर आनँद छावा
शकुनी करण अनन्द समीछे ❀ दुर्योधन करि नयन तिरीछे

दुश्शासन ते कहेउ प्रचारी ❀ वसनहीन करु द्रुपदकुमारी
ले बैठारि देहि मम जानू ❀ बान्धव बेगि कहा मम मानू
उठे दुशासन आयसु मानी ❀ विकरण कहत जोरियुग पानी
तव मुख बचन न सोहत ऐसे ❀ कुरुकुलतिलक कहत तुम जैसे
बृद्ध द्रोण गुरु भीषम आगे ❀ तुम नृप कहत लाज भय त्यागे
देश देश के भूपति राजत ❀ तुम दुर्वचन कहत नहिं लाजत
ज्येष्ठ बन्धु कै जो त्रिय होई ❀ मातु समान कहत श्रुति सोई

दो० क्षण मा तासु उतारि पति, तुम डारी कुरुराज ।
अब अस कहत कि जो सुने, होत नीचउर लाज ॥

पूरण शशिमहँ कीरति तोरी ❀ जानि महीश डारहु करि थोरी
मानि विनय मम प्रभु अनुरागी ❀ देहु द्रुपदतनया अब त्यागी
धर्मराज सँग बिन अपराधू ❀ कीन नाथ तुम कर्म असाधू
विकरण बचन धर्म नय साने ❀ सुनि सरोष रविनन्द रिसाने

कर्णउवाच ॥

सुनु विकर्ण तव तन शिशुताई ❀ बृद्ध बचन नहिं शोभा पाई
छोटे बदन कहेउ बड़ि बाता ❀ सुनि किमि सकै महिप गुरुज्ञाता
है यह सभा सकल गुणखानी ❀ तुम निजजानि अधिक सज्ञानी
गाल फुलाय बचन कहि दीन्हा ❀ चाहत है सबका लघु कीन्हा
वयस न भूपन के मत योगू ❀ जानत तुम न हँसत सब लोगू

दो० खेलहु सब मिलि बालकन, जाय शरासन बान ।
सीख देउ जनि भूपतिहि, हौ तुम शिशु अज्ञान ॥

बालक इव गृह भोजन करहू ❀ निजमन अहमिति नेक न धरहू
दुर्योधन आयसु शिर धरहू ❀ गृहकारज सब सादर करहू
कह विकर्ण नृप सुनु मत जीको ❀ अब नहिं होनहार कछु नीको
जस नृप तस मन्त्री बुधवाना ❀ असकहि गृहनिज कीन्हपयाना
बहुरि सकोप कहत कुरुराजा ❀ द्रुपदसुता मम देख समाजा
नयन हीन सब सूझत नाहीं ❀ बोलेउ तोहिं सभा महँ ताहीं

है यह सभा अन्ध नृप केरी ❀ केहि प्रकार सूझै री चेरी
हैं हम सुवन अन्ध नृपती के ❀ भीमसहित तुम जानत नीके
अन्ध तुम्हैं किमि देखै कोऊ ❀ देखहु सबहि भीम तुम दोऊ
दो० देखन हित अन्धी सभा, तुमकहँलीन्हबुलाय।
कीन्हेउममअपमानजिमि, तुम अपने गृहपाय ॥
अब द्रौपदी बसन निज त्यागू ❀ बैठि जांघ मम करु अनुरागू
अन्धी सभा न देखै कोई ❀ जानब गति हमहीं तुम दोई
आये चतुर पाँच पति तेरे ❀ भे बिन नयन सभा मिलि मेरे
सूझत तुम समेत बहु भीमहिं ❀ करहिं न रोष वृकोदर जीमहिं
बहुरि बिलोकिदुशासनओरा ❀ मानत तैं नहिं आयसु मोरा
बेगि द्रुपदतनया नँगियाई ❀ लै मम जानु देहु बैठाई
भूपबचन सुनि भीम कराला ❀ निकसत रोमरोम प्रति ज्वाला
लपट नयनमगप्रकट बिलोकी ❀ लीन गदा रिस रहत न रोकी
बान्धव सकल भीम रुख पाई ❀ भये सरोष सुभट समुदाई
पारथ पाणिगही असि मूठी ❀ कह नृप होति सत्य मम झूठी
सो० धर्मजबदन निहारि, बिकलसकलरिस मारि उर ।
दीन गदामहिडारि, भीम बिकल पारथ असिहि ॥
रहे पाण्डुसुत सब शिरनाई ❀ बारिज नयन बारि सरसाई
चलेउ दुशासन रोष रिसाता ❀ कह कुरुपतिहिबिदुरअसिबाता
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ पीछे अम्बर हरण करीजै
प्रथम कथा शुभ सुनहु नरेशा ❀ अग्निशर्म ब्राह्मण यक देशा
राक्षस यक प्रहर्ष अति भारी ❀ कीन युगल मिलि मित्राचारी
यक यक पुत्र दुहुन के होई ❀ निर्भय सकल भांति भय सोई
गये काल भे युगल सयाने ❀ मित्राचार परस्पर माने
गये अहेर दोऊ यकदाई ❀ फिरत बिपिन कन्या यक पाई
दो० राक्षससुत तो यह कही, कन्या को हम लेह ।
बिप्र कहै दे मित्र मोहिं, परी दुहुन अनरेह ॥

युगल परस्पर शोर मचावा ❀ पुनि यह मन्त्र ठीक ठहरावा
जाकहँ चाहै अब यह कन्या ❀ पावै सो यह त्रिभुवन धन्या
झगरत गे कन्या के पासा ❀ करहु दया जापर बिस्वासा
जासु हृदय डारहु जयमाला ❀ पावै सोइ कहु बचन रसाला
कन्या कहेउ सुनौ मतिवन्ता ❀ जो सरिष्ट सोई मम कन्ता
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना ❀ कह द्विज मैं सब बिधि सज्ञाना
झगरत अग्निशर्म पहँ आये ❀ कहेउ बाद निजपद शिरनाये
दुहमा को सरिष्ट को नामी ❀ भाषहु सत्य बचन तुम स्वामी

दो० पुनि पुनि बिनती करतहौं, कहिये करुणाऐन ।
मित्र पुत्र निज पुत्र ते, तब बोले द्विज बैन ॥

हमते बाद बिनाश न होऊ ❀ जाउ महर्ष तीर तुम दोऊ
चले बिवाद करत स्वर ऊंचे ❀ तुरत जाय तेहि भवन पहूंचे
तब महर्ष पूछत मन लाई ❀ का झगरत हौ तुम दोउ भाई
तब वे कहनलगे निज स्वारथ ❀ ज्यहि प्रकार जस भयो यथारथ
तुम महर्ष करि कहौ बिचारा ❀ दुहमा कौन सरिष्ट कुमारा
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ ❀ तब बिचारि दूनौंसन कहेऊ
कश्यप ऋषिहि पूछि मैं आवों ❀ वेगि यथारथ तुम्हैं सुनावों
उठि महर्ष ऋषि के गृह जाई ❀ कीन प्रणाम चरण शिरनाई

दो० कीन्ह बिनय करजोरि कर, बैठेउ आयसु पाय ।
ऋषि पूछेउ आये कहां, कहिये राक्षसराय ॥

ऋषे बचन सुनि प्रीति समेता ❀ लाग्यो कहन महर्ष सचेता
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा ❀ कीन बिपिन महँ झगराझोरा
झगरत आये दौ मम भवनहिं ❀ कौन सरिष्ट कहौ हम गवनहिं
कह कश्यप सुनु राक्षस राऊ ❀ झूंठ बचन तुम कहेउ न काऊ
जो सुत होय तुम्हार सरिष्ठा ❀ तौ अब सत्य कहौ मति निष्ठा
होय श्रेष्ठ जो बिप्र कुमारा ❀ कहेउ असत्य न त्यागि बिचारा
कहे असत्य अधोगति जाई ❀ लक्षे वर्ष सो नरक रहाई

ऐसे थल यह उचित न ताता ❋ भूलि असत्य कहेउ जनि बाता
दो० कश्यपऋषिहि प्रणामकरि, राक्षस निजघर जाय।
इनहुन के आगे बचन, कहनलागसमुझाय॥
कह राक्षस सुनु ब्राह्मणपूता ❋ तव पितु हमते सरस बहूता
मातु तोरि है बड़ी सयानी ❋ हमरे सुतते तुम बड़ज्ञानी
सत्य कहा राक्षस जिउबधिका ❋ दुइसे बर्ष आयु में अधिका
अन्त न कण्ठ परी यम फांसी ❋ भा कमलापति नगरनिवासी
सत्य असत्य केर अस बीचू ❋ होत कृषी जस सींच असींचू
बीचु अनीति नीति कर भारी ❋ जनु रजनी अँधियारि उज्यारी
कहीबिदुर नृप नीकि न रचना ❋ जनि बोलहु अधर्म अस बचना
नागफांस कर नहिं अन्देशा ❋ जो तुम करत अधर्म नरेशा
सुनिअसबचनबिदुरदिशि ताकी ❋ भृकुटिकीन कुरुपति रिस बांकी
दो० भृकुटिभङ्गकुरुनाथलखि, बिदुररहे चुप साधि।
थरथर कम्पति द्रौपदी, दृष्टिबिलोकिउपाधि॥
सो० परी बिपति बारीश, लखि दरकत उर बज्र को।
धीर न धरत महीश, निज समुझावत द्रौपदी॥
कपट द्यूत शकुनी ते हारे ❋ बिधि यह गति लिखिदीन ललारे
अहह दैव दिवसन कर फेरू ❋ गिरि ते रज रज होत सुमेरू
सभामध्य पति पांच हमारे ❋ महाबीर रण टरत न टारे
मोहिं उघारि होन कब देहैं ❋ उठिकै भीम अवशि सुधि लेहैं
बहुरि सभा यहि भूप अनेका ❋ समरथ शूर एकते एका
जानन हार धर्मपथ केरा ❋ क्षत्री भीषम आदि बड़ेरा
यदपि न भूपहि कहिनि निहोरी ❋ तौ परन्तु लेहैं सुधि मोरी
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहि हैं ❋ आखिर उठि राजासन कहि हैं
दो० अनुचित होइ न पाइ है, लेहैं मोहिं छुड़ाइ।
आजु पितामहते सरिस, धीर बीर को आइ॥
हैं गुरु द्रोण सभामहँ सोई ❋ जिनते अस्त्र सिखे सब कोई

भारद्वाज तनय रण शूरा ❋ लेहैं मोहिं छुड़ाय जरूरा
इत उत बहुभरोस ठहरावत ❋ पुनि २ निजमन कहँ समुझावत
बहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई ❋ खैंचहु चीर दुशासन भाई
लेहु बसन सब आतुर छोरी ❋ गहि बैठारु जांघपर मोरी
होइ मोरि रुचि पूरण आता ❋ आलिङ्गन करि द्रुपदकिजाता
अतिशय बिकल द्रौपदी कांपी ❋ लेत राहु चन्द्रहि जिमि झांपी
इत उत दिशा दुखित मन हेरी ❋ केहरि मनो मृगी बन घेरी
भीषम द्रोण करण दिशि चितई ❋ निजपति देखि आश सब बितई

दो० सकल सभा दिशि देखि पुनि, चितई पाण्डव ओर ।
भीमहिं देखि सरोष पुनि, बरज्यो धर्म किशोर ॥

बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी ❋ उठ्यो दुशासनरिसकरि भारी
आतुर कहत वचनकटु धावा ❋ मनहु कृतान्तराज चलि आवा
एकपाणि लीन्हे गहि केशा ❋ यक कर बसन गहे यम भेशा
सकल सभाजन त्रियगहि हेरी ❋ ग्राम ग्राम गजनगर बसेरी
बहु अवनीपति जे जन साधू ❋ बूड़त बारिधि शोक अगाधू
धीरन के मुख जोवत अहईं ❋ चहत पितामह अब कछु कहई
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहिहैं ❋ अवशि वचन गङ्गासुत कहिहैं
कृपाचार्य गति मति लखिबामा ❋ रहिहैं किमि चुप अश्वत्थामा
यहिविधिनिजमनकरतभरोसा ❋ शील धीर जे मारग दोसा

सो० जे शठ कायर कूर, मानभङ्ग सब विधि चहत ।
सकल सभा भरिपूर, करत मनोरथ पृथक पुनि ॥

पकरिसि बसन दुशासन जाई ❋ सरुपप्रचारत पुनि कुरुराई
बीर धुरीण रहे चुप साधी ❋ औगत भये सकल अपराधी
लखि दुर्दशा द्रुपदतनयाकी ❋ शोकज्वाल पाण्डव उर बांकी
बारिज नयन बही जलधारा ❋ रहे नाइ शिर पाण्डुकुमारा
निपटबिकललखिपाण्डुकिशोरा ❋ नहिं बिदरत उर कठिन कठोरा
तदपि दुष्ट अस तेहि थल माहीं ❋ जे हरषत मन धरषत नाहीं

दुर्योधन कर प्रबल प्रतापा ❀ तपत मनहुँ रवि द्वादश तापा
अति करुणा सबके उर होई ❀ प्रतिउत्तर करि सकत न कोई
भीष्मद्रोणकुरुबिभव बिलोकी ❀ रहे चुपाइ सके नहिं रोंकी

दो० तीक्षण भृकुटि सरोष लखि, अतिकुरुनाथ भुवार ।
सकलसभा भयबश बिकल, कांपहिं बारहिं बार ॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा ❀ कहि न सकैं कछु द्रोणकुमारा
कोउ शिर नाय रहे सकुचाई ❀ अश्रुपात कोउ कृत दुखदाई
जे नृप धीर बीर बल भारी ❀ जानि सत्य लखि होहिं दुखारी
सकहिंन कछु कहि काहुहि काऊ ❀ दुर्योधनकर समुझि सुभाऊ
बारबार कह कौरव राजू ❀ बेगि दुशासन करु यह काजू
खैंचन लाग बसन गहि पानी ❀ द्रुपदसुता तब अतिअकुलानी
तनया बिकल द्रुपद नृप केरी ❀ छूटी आश सकलदिशि हेरी
कालरूप लखि कौरवनाथा ❀ जायरहेउ चित जहँ यदुनाथा
राधारमण बचन सुनु मेरे ❀ कीन बिलाप कलाप करेरे
बूड़त बिरह सिन्धु रघुनाथा ❀ जिमि गहिलीन भरत कर हाथा
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा ❀ राखि बिभीषण रावण मारा
ध्रुवहि निरादर किय पितु माता ❀ ताकहँ नाथ भयो तुम त्राता
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी ❀ करि बिलाप दै हांक करेरी

दो० भुज उठाय हरिनगर दिशि, पाहि पाहि पुनि टेरि ।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्ही हांक करेरि ॥

दैत्य दलन प्रहलाद उबारण ❀ लागहु मम गोहारि जगतारण
मम अनाथ के नाथ गोसांई ❀ सो न होइ लज्जा जेहि जाई
तुम बिन आरत पक्ष गही को ❀ राखु रमापति लाज गई को
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी ❀ तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी
बैठे सभा सकल अघधारी ❀ कोउ न चहत छुड़ावन नारी
परबश लाज जात हरि मेरी ❀ त्रिभुवन नाथ शरण मैं तेरी
बीते काल दयानिधि ऐहो ❀ मोहिं उघारि देखि पछितैहो

[illegible] पुकारा ❁ तब तुम नाथ न लायहु बारा

दो० गोकुल बोरत घेरि घन, जिमि रक्षा तुम कीन्ह ।
नाश्यो मातलि सूतमद, गिरिवर कर धरिलीन्ह ॥

ते तुम नाथ कहां गिरिधारी ❁ यह पापी खैंचत मम सारी
खैंचि बसन मम करिहि उघारी ❁ का करिहौ तब आय खरारी
गये लाज प्रभु बिरद न रहिहै ❁ तुमहिं कृपालु काह कोउ कहिहै
सरबस हरेउ बचेउ यक बसना ❁ सोऊ हरत बचावत कसना
दवा जरत जिमि गोपन राखा ❁ कौरव अग्नि दीन्ह गृह लाखा
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा ❁ दीनदयाल कहां यहि बारा
दारिद दहि द्विजके दुख काटे ❁ धनपति सरिस सदन धन पाटे
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई ❁ राखिलेहु मम लाज न जाई

दो० श्रीपति दीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पट लैहैं छोरि ॥

बीचसभा प्रभु म्वहिं नँगियावत ❁ करुणासिन्धु धाय किन आवत
द्रुपदसुता लखि बिकल पुकारा ❁ प्रणतपाल हरि बिरद सँभारा
द्वारावति तजि नांगे पांयन ❁ आतुर आइ गये नारायन
प्रथम पाहि सुख ते जब काढ़ा ❁ प्रकटे बसनरूप पट बाढ़ा
बसनरूप धरि बसन समाने ❁ धीरज द्रुपदसुता उर आने
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता ❁ निकस्यो बसन बसन मगतेता
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ❁ परमरोष करि खैंचन लागा
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती ❁ मथसागरसुर असुर कि पांती
कढ़नी मनहुँ शेष भय सारी ❁ दुश्शासन जनु देव सुरारी
खैंचत सरुप दुशासन सारी ❁ निजतन पुरवत बसन खरारी

सो० देखि बसन कै बाढ़ि, भक्ति प्रेम बश द्रौपदी ।
भइ रोमावलिठाढ़ि, बिनय करत गद्गदगिरा ॥

गयो शोच मन भयो अनन्दा ❁ जनु चकोर पायो निशि चन्दा
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी ❁ जय गोपाल गोवर्द्धन धारी

जय शारँगधर जय असुरारी ❀ जय मनमोहन कुञ्जबिहारी
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ❀ कमलनयन शोभा शतकामा
पीताम्बरधर धरणी पालक ❀ जय वसुदेव देवकी बालक
जय तव कर सरोज यदुराया ❀ कीन्ह्यो जेहि कर मोपर दाया
जे पद सरसिज मम हित धाये ❀ दुश्शासन कर दर्प नशाये
जय मधुसूदन यदुपति स्वामी ❀ जय त्रिलोकपति अन्तर्यामी
जयअघारि जय जय अविकारी ❀ जय जय जय केशी कंसारी
जय मम लज्जा राखनहारे ❀ जयति यशोदा नन्ददुलारे

दो० जय कृपालु करुणायतन, जयति कौशलानन्द।
मोरपक्षधर मुरलिधर, जय जय आनँदकन्द॥
जयति सच्चिदानन्द हरि, ईश्वर जगदाधार।
राखौ लज्जा जाति निज, जय मम नाथ उदार॥

निर्भय हर्ष बिबश पञ्चाली ❀ कहि त्रिग्धारति जय बनमाली
जय जयकार पूरि पुनि रहऊ ❀ दुष्टन बिना सबन जय कहेऊ
देवन देखि सुमन झरि कीन्ही ❀ गहगह गगन दुन्दुभी दीन्ही
बाढ़त देखि बसन चहुँफेरा ❀ मन थिरभयो पाण्डवन केरा॰
हरिप्रताप दिनकर सम भयऊ ❀ कौरवासिसुकि कुमुदसम गयऊ
हरिहि पुकारति द्रुपदकुमारी ❀ खैंचत सरुष दुशासन सारी
करत जोर बहुभाँति दरेरा ❀ बाढ़त बस सकल चहुँ फेरा
अरुण श्याम सित रंग हरेरे ❀ भाँति भाँति के बसन घनेरे
पीत रंग के बहुत निकारे ❀ पीताम्बर के ओढ़नहारे

दो० मिश्रित रँग के पट बढ़े, थके दुशासन हाथ।
देवन जे देखे नहीं, ते पुरये यदुनाथ॥

आपु अनन्ततनु धरि भगवाना ❀ बढ़ये विविध रंग परिधाना
द्रुपदी चषपुतरी प्रभु कीन्हा ❀ विरदावलि मूरति करि दीन्ही
खैंचत चीर दुशासन हारा ❀ अम्बर मनहुँ देवसरिधारा
द्रुपदसुता के अम्बर तेरे ❀ हारे भुजा दुशासन केरे

निकसे पट विचित्र बहुतेरे ❀ नहिं समात मन्दिर नृपकेरे
दश सहस्र गजबल थकिगयऊ ❀ दशगज अम्बर हरण न भयऊ
निपट होत लखि अनरथ वाता ❀ नाना भाँति होत उतपाता
शिवा यज्ञशाला में बोली ❀ ढहे भवन धरणी जब डोली
अशुभ शब्दकृत रासभ श्वाना ❀ मेघन बिना व्योम घहराना

सो० हींसे सकल तुरंग, हयशाला महँ बार यक।
चिघरे मत्तमतंग, निजनिज आश्रम बिकलसब॥

भयो दाह दिग कररत कागा ❀ तदपि न बसन दुशासन त्यागा
बढ़ति बिलोकि तजै पुनि धरई ❀ अनत गहै पुनि सो परिहरई
बिदुर दीख भा अनरथ भारी ❀ गे ज्यहि गृह बिलपति गन्धारी
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं ❀ होत अकाज न सूझत तोहीं
कृष्ण आजु द्रुपदी तन व्यापे ❀ बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे
नहिं होइहि सुत धर्म अकाजू ❀ जिनके यदुनन्दन महराजू
सदा दास कर करत सहाई ❀ प्रणतारति भञ्जन यदुराई
जे हरि हन्यो निशाचर राजू ❀ सहि दुख निजभक्तन के काजू
सो जानी सब बात तुम्हारी ❀ नहिं अज्ञान ग्रसित गन्धारी

दो० जानिबिकलप्रहलादजिमि, जोहरिभक्तअनन्य।
सहि श्रम निकस्योखम्भते, कश्यपहन्योहिरन्य॥

सो० अब अनेक उतपात, देखि परतअनरथ निपट।
होन चहत सोइ बात, तुव तपबल ते थपिरही॥

अबते रानि कहा सुनु मोरा ❀ भाग्य अभाग्य होत अब तोरा
बसन छुड़ाव दुशासन करसन ❀ चलन चहत नतु चक्रसुदरसन
गन्धारी सुनि अति दुख पाई ❀ बिलपत बिदुर संग उठि धाई
मतिहग सुत खैंचत इत चीरा ❀ थक्यो पराक्रम भयो अधीरा
भुज थकिगयो बढ़त नहिं जाना ❀ बसनत्यागिमन अतिखिसियाना
निज आसन बैठेउ शिरनाई ❀ मनहुँ रङ्क निधि पाइ गँवाई
दुर्योधन नृप बैठ उदासा ❀ मानहुँ भयो राजपद नासा

श्रीहत भयो सकल मदभङ्गा ❀ निपट बिकल अपमान तरङ्गा
सुनत शोर मारग श्रुति केरे ❀ पूछत मतिहग संजय तेरे
होत कहां यह हाहाकारा ❀ संजय कहै सहित बिस्तारा

सो० सुनत दशा दुखपाय, संजय करगहि पाणिनिज।
सभा बिलोक्योजाय, कुरुपतिकी अनरथ कथा॥

मध्य सभा कञ्चन सिंहासन ❀ सो धृतराष्ट्र नृपतिकर आसन
बैठि गये तहँ मतिहग जाई ❀ परम रोष नहिं क्रोध सिराई
दुश्शासन कहँ नृप दुरिआई ❀ शठ कुरुकुल तैं दीन लजाई
दुर्योधन पर क्रोध अपारा ❀ कहि कटु बार बार धिक्कारा
त्यहि अवसर आई गन्धारी ❀ कहि दुर्बचन कीन्ह रिस भारी
कीन्हो दुष्ट कर्म तुम नीचू ❀ परिहौ अधम नरक के बीचू
दीन्हेउ सरुष शाप गन्धारी ❀ कह मतिहग सुनु द्रुपदकुमारी
पुत्रबधू जे सकल हमारी ❀ मनक्रमबचन अधिक तुमप्यारी
तव सँग शठन कीन अपराधा ❀ भइ मम वृद्धापनमहँ बाधा

दो० पुत्रि तोहिं ममशपथशत, मनबाञ्छित बर मांगु।
दुष्टन कीन कुकर्म सो, मम दिशि तेसबत्यागु॥

अब तुम मम निहोर शिरमानी ❀ करहु क्षमा अपराध भवानी
बेगि मांगु पुत्री बरदाना ❀ तुमसममोहिंनप्रियकोउआना
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे ❀ नाहिंन सुता तदपि सम तोरे
बार बार नृप कह बर मांगू ❀ द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू
बोली बचन जोरि युग पाणी ❀ सुनहु नरेश सत्य मम बाणी
मोहिं समेत सकल परिवारा ❀ दास भाव भे पाण्डुकुमारा
सो नरेश मांगे स्वहिं दीजै ❀ दासभाव बिनु सकल करीजै
बाहन अस्त्र देहु सब काहू ❀ कीजै बेगि बिदा नरनाहू
मतिहग कहेउ तोहिं मैं दीन्हा ❀ मांगु अपर कछु आयसु कीन्हा

दो० सुनहु पिता कह द्रौपदी, मनबाञ्छित बरदान।
मैं पायों तुम्हारी कृपा, नाथ शपथ नृप आन॥

तव प्रसाद अब कुरुकुलकेतू ❀ फिरि होइहै सुखसम्पति सेतू
उचित विप्र मांगे बर चारी ❀ कहत वेद अस नीति बिचारी
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई ❀ मांगे एक शूद्र सुत होई
मैं तो पुत्रबधू क्षत्रानी ❀ लीन्हे मांगि तीनि बर जानी
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा ❀ नरनायक मम मानि निहोरा
बुद्धिचक्षु चर चतुर बोलाये ❀ सब के बाहन अस्त्र देवाये
चढ़ि बाहन गहि आयुध हाथा ❀ चले अवास धर्मनरनाथा
परसे चरण बुद्धि दृग केरे ❀ बोले भूप युधिष्ठिर तेरे
लज्जाविवश वचन सुनि तोरा ❀ हे सुत होत बिकल मन मोरा

सो० वचन तोर सुनि तात, लज्जित अवनि समात मैं।
मोहिं अछत यह बात, पुत्र परम अनुचित भई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याणा ❀ सुनु अशीष मम बचन प्रमाणा
जीति तुम्हारि राज्य सब लीन्ही ❀ दुर्योधन अनीति बड़ि कीन्ही
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ❀ लीजै सुत प्रसाद मम मानी
मति दृग आससुशिरधरिलीन्हा ❀ शीश नवाय गवन गृह कीन्हा
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा ❀ दीन्ह त्यागि त्यहि ओर न हेरा
पटल बितान सेन चतुरङ्गा ❀ चपल तुरंगम मत्त मतङ्गा
सकल धर्मनन्दन तजि दीन्हा ❀ सहितकुटुम्ब भवनमग लीन्हा
मिले बिदुर मारग महँ आई ❀ जात भये निजभवन लेवाई
रानिन सहित नृपति अन्हवाये ❀ खान पान बिश्राम कराये

दो० यहँ उठि कुरुपति सभा ते, गे सब निज निज धाम।
खान पान असनान करि, शेष दिवस रह याम ॥
द्रोणकरणभीषमशकुनि, निज निज गृह मग लीन
खान पान बिश्राम पुनि, सब भूपालन कीन ॥
प्रथम करो असनान पुनि, भोजन करि कुरुनाथ।
सबलसिंह आयो सभा, दुरद दुशासन साथ ॥

इति महाभारतेभाषाकृतेद्रौपदीचीरवर्द्धनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० सुन्दर कनक प्रयंकपर, शयन करी कुरुराय ।
बिदुर भवन हैं धर्मसुत, कही चरवरन आय ॥

सुनि नरेश मन अतिदुखपाये ❀ सौबल शकुनी करण बोलाये
सहित दुशासन करत सलाहा ❀ बोले दुर्योधन नरनाहा
जीत्यो राज धर्मसुत केरी ❀ दीन्हीं बहुरि पिता सोइ फेरी
जीती अवनि पिता तजि दीन्हा ❀ सो हमरे हित अतिभल कीन्हा
छूटे भूप दासि गति तेरे ❀ लेत भूमि असिधार गरेरे
त्यागब राज्य उचित मत ताते ❀ किंकरता बिनु धर्मज जाते
अब तुम यतन बतावहु सोई ❀ मृषा मनोरथ मोर न होई
परबश होत मनोरथ खाली ❀ संशयविवश उठत मन हाली
कीन्ह सकल कछु सरेउन काजू ❀ भयो जानि मम परम अकाजू

दो० अबते कीजै यतन कछु, बिदुर भवन सुतधर्म ।
हैं अबहीं सुनिये सचिव, कह कुरुनाथ कुकर्म ॥

गुप्त शत्रुगति प्रकट भई सो ❀ आपुस बीती प्रीति गई सो
यहै लाभ भा सचिव हमारा ❀ मारत शत्रु गयो बिनु मारा
बड़ अनरथ अब सजग भये ते ❀ बहु उतपात करैं हम ते ते
सुनि कुरुनाथ बचन अनुरागे ❀ सब मिलि मन्त्र विचारन लागे
परेउ ठीक मत नृप सुख पाये ❀ बहुविधि सौबल सिखै पठाये
धर्म नरेश बिदा उन मांगी ❀ बिदुर पठाइ फिरे अनुरागी
निज गृह जात युधिष्ठिर राई ❀ सौबल मिल्यो बीच मग आई
कीन जोहार माथ महि लाई ❀ कहन लगेउ पुनि बचन बनाई
युक्ति सहित करि छल चतुराई ❀ निज बश कीन युधिष्ठिरराई
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती ❀ लीजै बैर द्यूत करि नीती

दो० बड़िअनीतिशकुनीकरी, शठ समेत कुरुराज ।
होतदुसहदुखहृदयमम, गतितुम्हारिलखिलाज ॥

सोइ गति होई कुरुपति केरी ❀ हृदय बुताइ ज्वाल तब मेरी
करि बहुयतन नृपहिं पलटाई ❀ कुरुसमाज कहँ गये लेवाई

करि बहुप्रीति सभा बैठारी ❀ मँगवाई पुनि पंसासारी
भावी प्रबल मेटि को सकई ❀ बरजि बरजि सब प्रियजन थकई
धर्मराज कर अक्ष गहे जब ❀ विहँसि वचन यह कर्ण कहे तब
का अब धरत युधिष्ठिर राऊ ❀ कह नृप जो कहिये कुरुराऊ
हारहि सो अस कुरुपति कहई ❀ द्वादश वर्ष विपिन सो रहई
कन्दमूल फल करै अहारा ❀ उदासीन इव सब आचारा
हारे सो निज भवन न जावै ❀ आतुर कानन पन्थ सिधावै

दो० होइ बैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ ।
अन्नअशनअरुराज्यसब, सो तजि तृण इव देइ ॥

अनुचर अपर लेइ नहिं संगा ❀ एक त्यागि निजबंश प्रसंगा
तापस तनु धरि कानन जाई ❀ देइ महीपति चिह्न दुराई
यहि विधि द्वादश वर्ष बितावै ❀ नेम सहित त्यरहीं जब आवै
ग्राम निवास करै अज्ञाता ❀ वर्षदिवस कहिजाय न जाता
मिलै न खोज रहै यहि भाँती ❀ वर्ष त्रयोदशई जब जाती
पावै राज्य चौदही आये ❀ खोज त्रयोदशई बिनु पाये
जो कदापि त्यरहीं सुधि पाई ❀ द्वादश वर्ष बहुरि बन जाई
जब जब खबरि तेरहीं पाई ❀ तब तब सो काननमग जाई
मिलै न खबरि तेरहीं जासू ❀ सो पुनि करै राज्य निज बासू

दो० भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकी बात ।
कहिप्रमाणधरिदाउँसोइ, दीन्हों शत्रु अजात ॥

कह सौबल सुनु धर्मकिशोरा ❀ होइ खेल शकुनी सँग मोरा
मैं खेलौं तुम्हरी बदि राजा ❀ देखो शठ शकुनी कर काजा
बोले कुरुजन धर्मज ताता ❀ छल कहि भूलब शत्रु अजाता
कर गहि अक्ष युधिष्ठिर राऊ ❀ मानि प्रमाणधरौ सोइ दाऊ
बरजत रहे सकल हितकारी ❀ केहि विधि मिटै जो होनेहारी
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई ❀ परेउ दांव शकुनी कर आई
खल खेलार अजित शकुनी ते ❀ पुनि पुनि हारि गये नहिं जीते

दो॰ हारेउ दाउँ अधर्मअरि, चुपकिरहे शिर नाय।
बिजय नगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय॥

छूटत सभा देश गृह कोशा ❀ लखि उर शोक होत सहरोशा
चितै शल्यदिशि धर्मज ज्ञानी ❀ बोले स्रवत नयनजल पानी
सुनु शठ तैं सब लाज गँवाई ❀ भयसि वृथा माद्री कर भाई
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई ❀ धिकधिक त्वहिं जननी के भाई
हम हारे शठ तैं नहिं हारे ❀ लाजरोष कहँ गये तुम्हारे
जानत जगत तोहिं सबलायक ❀ बिक्रम थकेउ देखि कुरुनायक
धिक धिक पापबुद्धि शठ तोरी ❀ निजनयनन देखहु गति मोरी
धिकधिककितवकितवअभिमानी❀ दीन्हेउ मूढ़ त्यागि मम बानी
नहिं कछु कुरुपति केर कुकर्मा ❀ नहिं शकुनीकृत कर्ण अधर्मा
समरथ भीष्म द्रोण संपाती ❀ तिन्हैं दोष देइय क्यहि भाँती
तैं शठ भयसि पापकर मूला ❀ होत न मूढ़ हृदय तव शूला

दो॰ देखि दशा मम लाजतजि, रहे मूढ़ चुपसाधि।
कहिनसकहिकोउनीचकछु,कृतकुरुनाथउपाधि

सुनु अधर्म निजकाल बिताई ❀ जो न बिनाश करौं तव आई
तौ न गहौं शरचाप कृपाना ❀ करौं त्याग क्षत्रीकुल बाना
अस कहि भूप अग्र पगुधारा ❀ कहत रोषवश पवनकुमारा
गरजि जलदसम नयन तरेरे ❀ बोले चितै दुशासन टेरे
निपट नीच तव बुद्धि पिशाची ❀ निश्चय मीच शीशपर नाची
ज्यहि कर बसन द्रौपदी केरे ❀ गहि खैंचेउ करि जोर दरेरे
सो उखारि डारौं भुज तेरे ❀ दाह बुताय हृदय तब मेरे
ठोंकि जंघ बैठहु कहि चेरी ❀ भइ मतिभ्रम कुरुनायक केरी
चलत कुशल करि सिंह जगाई ❀ बैनतेय बलि बायस खाई
होत यथा यह बात अयोगू ❀ तेहिबिधिहमहिंहँसतसबलोगू

दो॰ सुनत सभा अस कहत मैं, सबप्रतिवचनपुकारि।
तबलगधिकमोहिंकुरुपतिहि,जबलगडारौंनमारि॥

संगर भूमि गदा लै हाथा ❀ जङ्घ भंग करिहौं कुरुनाथा
कहे बचन कर फल देखरावों ❀ तौ मैं क्षत्रियबंश कहावों
अवधि बिताइ कहा मम मानू ❀ जो न बिनाश करौं तव जानू
तौ हम होइँ निरयपथगामी ❀ पन्नग योनि जन्म परिनामी
बैठु जङ्घ मम द्रुपदसुता ते ❀ कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते
निज पद ते मरदउँ मुख सोऊ ❀ बन्धु हमार बोध तब होऊ
दिवस बिताइ गदाधरि लरिहौं ❀ अन्ध नरेशबंश संहरिहौं
त्रिय तजि पुरुष न राखौं एका ❀ मतिदृगबंश सत्य मम टेका
कृष्ण शपथ नृप चरण दोहाई ❀ बीते दिवस करब सब आई

दो० असकहि निजकर गहिगदा, भीम चले नृपसाथ।
बोले पारथ रोष बश, जो कुमार सुरनाथ ॥

सुनु रबिनन्द अधम मलरासी ❀ कीन्हेउ मम बिस्मय तजि हासी
धरणी सम करिहौं शर मारी ❀ करण प्रतिज्ञा सत्य हमारी
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे ❀ निज नैनन सुख देखनहारे
धन्य धन्य सब लायक केरे ❀ निज निजनैन परम सुख हेरे
जन्म प्रयन्त सत्यव्रत कीन्हा ❀ अन्तकि बयस लाभ भल लीन्हा
शर सागर कौरव कुल बोरौं ❀ भीष्मादिक क्षत्रिन शिर फोरौं
तो मैं कुन्तीसुत शुचि साँचा ❀ काटौं तव शिर कठिन नराचा
मोहिं अजातशत्रु कै आना ❀ बीते दिवस करौं मनमाना
अस कहि चले युधिष्ठिरसङ्गा ❀ बोले नकुल रोष भरिअङ्गा
सुनु रे करण पापकर अंशा ❀ करौं बिनाश सकल तव बंशा
विष्वक्सेन आदि सुत तोरे ❀ होइहैं नाश सकल कर मोरे

दो० सबलसिंहकहिनकुलअस, गये युधिष्ठिर पास।
जो न करौं यह सत्य सब, होइ नरक मम बास ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते सभापर्वसौबल युधिष्ठिरछद्मकरणंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा ❀ मष्टरहे कुरुनाथ समाजा
तब सहदेव शकुनितन हेरी ❀ भृकुटि भङ्ग करि नयन तरेरी
शकुनी तव मति ईश भ्रमाई ❀ नीच मीचु करि यत्न बोलाई
द्यूत हराय कियो छल भारी ❀ कीन सकल दुर्द्दशा हमारी
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं ❀ ईर्षा लाज न कछु मन माहीं
जनि भूलेउ यहि भूलि बिशेखी ❀ बीते दिवस परी सब देखी
कुरुपति नाशसहित परिवारा ❀ होइहै ममकर मरण तुम्हारा
बीते अवधि शरासन धरिहौं ❀ रिपुकृत कर्म प्रकट सब करिहौं
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा ❀ करौं समर तव खण्डित शीशा

दो० बीते दिवस प्रमाण निज, करौंसकलप्रणसांच।
मातिद्दगसुतकाटिकाटिगिरहिं, दाहनकरै नराच ॥

अस कहि चलन भूपपहँ चह्यऊ ❀ द्रुपदसुता तब रिसवश कह्यऊ
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा ❀ जब ममशिर होइ बहै पनारा
बाँधउँ कच तब करि असनाना ❀ कोटि भूप यदुपति कै आना
अस कहि केश दिये छिटकाई ❀ दुश्शासन के रुधिर नहाई
जेहि विधिनाथ लाज ममराखी ❀ करेहु सत्यप्रण जन अभिलाखी
जङ्घ भङ्ग कुरुपति सुनि काना ❀ मैं सुख बिपुल लहब भगवाना
बढ़त केश विगलित पञ्चाली ❀ अति भयकार मनो कङ्काली
तनु सुन्दरता भय गति दूरी ❀ रोष कराल रहा भरिपूरी

दो० असकहिद्रुपदकुमारिपुनि, चली युधिष्ठिर साथ।
वल्कल लाये दास गण, लखिरुख कौरवनाथ॥

ज्यहि मग जात युधिष्ठिरराई ❀ अग्र दिये धरि भाजन जाई
दुर्योधन कर आयसु जोई ❀ किंकर कहत जोरि कर दोई
नृप बल्कल अब धारण कीजै ❀ गृहमगतजि कानन मगलीजै
अस सुनि भीम भयो मन रोषा ❀ धिक कहि देत भुजन पर दोषा
रोष तरङ्ग बिलोचन लाला ❀ कह्यउ नाय धर्मजपद भाला
हम नृप दास भये अब नाहीं ❀ आयसु नीच करत केहि पाहीं

राज्य त्यागि कानन मग जैहैं ❀ तहँ कुरुपति का हमहिं सिखैहैं
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे ❀ का नृप बहुरि जन्म धरि हारे
जो न तजत मम नीच पछारी ❀ चहत बिलोकन शठ यमधारी
आयसु मोहिं नराधिप देहू ❀ विक्रम बन्धु देखि करि लेहू
दुर्योधनहिं प्रकट देखरावों ❀ जो तुम्हार अनुशासन पावों

दो० तौ सोभाई आजु सब, कुरुपति आदि बटोरि।
मारि पठावों यमपुरन, नृप तव शपथ करोरि॥

आजु सहायक हैं भगवाना ❀ जीतब एक न पैहै जाना
जिन करुणाकरि चीर बढ़ावा ❀ सो मम बाहु सहायक आवा
तदपि मरण जो यहि थल होई ❀ धिक मम बिस्मय कहै न कोई
भीष्मादिक बिनु मारे मरिहैं ❀ वृश्चिकराशि न एक उबरिहैं
सहिअसिविपति न जीवननीका ❀ समुझाइये महीपति जीका
पारथ कहेउ मोर मत येहू ❀ बेगि नरेश रजायसु देहू
तमकि तमकि निज अस्त्र उठाये ❀ सजगदेखि कुरुगण भयपाये
बल्कल वसन अनूप सुहाये ❀ जे प्रथमहिं कुरुकिंकर लाये

दो० भीम बचन सुनि कुरुपति, जाइ जनायो हाल।
बुद्धिचक्षु सुत रोषवश, भयो बिलोचन लाल॥
कहत भयो कुरुनाथ तब, यूथप सुभट बोलाइ।
घेरि पवँरि मारहु सकल, जियत न पावहिं जाइ॥

भूपति आयसु धनुष चढ़ाये ❀ सुभट समूह रोषवश धाये
करण दुशासनादि भटभारी ❀ घेरि पवँरि भति ठाढ़ अगारी
सातों द्वार वीर ठढ़िआई ❀ कीन्हेउ वज्र केवार देवाई
इत यह साज सजै कुरुराई ❀ उत आयसु मांगत सबभाई
बेगि महीपति देवे योगू ❀ करिये समर न कर्म अयोगू
रिस उर मारे बड़ दुख होई ❀ कीन्हे समर मिटै नृप सोई
होइ जीति तब नृप भलि बाता ❀ मरण नीक नहिं शत्रुअजाता
जो यहि विधि भइ जगतहँसाई ❀ करब काह जग जीवन भाई

कीन्हे समर भुजा सुख पावैं ❀ अतिकराल तनताप बुझावैं
सुरपुर तात लहब सुख नीके ❀ करिकरिखगडखगडकुरुपति के
नतु नरेश जारत उर शोपू ❀ मिलिहि न युगललोक संतोषू

दो॰ पुनिपुनिअनुजसरोषअति, मांगत सकल निदेश।
मनबिचारकर कोटिविधि, बोले बचन नरेश ॥

बन्धुबचन अस भूलि न कहऊ ❀ भयो अरोग्यअरुभिजानि रहऊ
जन्म प्रयन्त होम जिमि करई ❀ अन्तकि बेस ताहि परिहरई
तिमि सहि शीश सकल दुखसेतू ❀ चहत बेगारन अब बिनुहेतू
बर्ष त्रयोदश मे मम लेखे ❀ अब निजनयन उमापति देखे
पशुपतीश देखिय नैपाला ❀ डाकिनि देश भयंकर काला
रामनाथ सम ईश्वर देखी ❀ होइहै जीवन सुफल बिशेखी
महाकाल उज्जैन अशेखी ❀ अमरनाथ कश्मीर सो देखी

दो॰ बिश्वनाथ बाराणसी, बहुरि देखि शशिभाल ।
सुनहु बन्धु आनन्दयुत, काटिहि सहज सबकाल ॥

अस कहि भूपति चिह्न दुराये ❀ पहिरे बलकल बसन सुहाये
द्रुपदसुता युत बान्धव चारी ❀ पहिरे बसन बेष अतिभारी
रतन जटित पट चित्र उतारे ❀ ते नरेश त्यहि थल सब डारे
कुरु किंकरन परे पट पाये ❀ गत दरिद्र धनवान कहाये
बन्धु सुजन जनसंग महीपा ❀ आगे चले पाण्डुकुल दीपा
उदासीन इव बेष बनाये ❀ मनहुँ महातपतनु धरि आये
जाहिं पवँरि जहँ बल्कलधारी ❀ धावहिं सुभट समूह प्रचारी
सो मग त्यागहिं धर्मकुमारा ❀ आतुर आवहिं आन दुवारा
बज्र केवार जड़े तहँ पावहिं ❀ शायकवीर सरोष चलावहिं

दो॰ कहहुँ दुशासन शकुनिकहुँ, यूथनाथ भट बृन्द ।
देखि पवँरि प्रति धर्मसुत, गये जहां रबिनन्द ॥

देखा करण धर्मसुत आये ❀ बलकलधर शर चाप चढ़ाये
बिहँसि कहा सुनु शत्रु अजाता ❀ तुमका द्रुपदसुता भयत्राता

भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई ❀ गहि कर हाथ पार कोउ करई
भ्राता नारि भली तुम पाई ❀ करण तर्क करि हँसे ठठाई
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू ❀ बोले भीम भयो उर दाहू
सुनु रविनन्दन दूषण यामे ❀ भेद न दम्पति श्रुति परिणामे
द्रुपदसुता है जीति हमारी ❀ हँसी न देखहु हृदय विचारी
होउ न अक्ष विवश परतीती ❀ देखहु पूछि विदुरसन नीती
निज तन होत प्रकट यक देही ❀ वामअङ्ग त्रिय परम सनेही
तीसरि जाति पुत्र निज होई ❀ कहे विदुर यह प्रकट न गोई

दो० सुनि न कहेउ रविसुत कछू, चुपकरि रहे अरुगाइ ।
बोले धर्म नरेश तब, आरत बचन सुनाइ ॥

मोहिं करण अब मारग देहू ❀ करि दुर्गति जनि जीवन लेहू
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं ❀ दीजै पन्थ कवनविधि तोहीं
फिरे धर्मसुत सुनि असि बानी ❀ स्रवत नयनबारिजमग पानी
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता ❀ होत शोर तहँ जनु पवि पाता
सुभट सरोष अस्त्रगहि धावहिं ❀ लखि सुत धर्म अपरमग जावहिं
यहिविधिनृपचहुँदिशि फिरिआये ❀ मारु मारु तजि पन्थ न पाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा ❀ शिरधुनि कहत शोकयुत भीमा
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई ❀ करत शील उर बज्र कि नाईं
अब नहिं मिलिहैं कुरुपति भारी ❀ भे नृप कुपथ कुमीचु हमारी

दो० अहह दैवतुवगति अगम, मरे मीचु बिनु आइ ।
मनकी मनहींमें रही, कहि बिलपत सब भाइ ॥

होत सभा महँ भूप रजाई ❀ जियत न जात भवन कुरुराई
हमहिं न रहत मरे कर शोचू ❀ भा नृप दुखद तुम्हार सकोचू
इत नरहार भार तुव नाथा ❀ उत रण सुभट न कौरवनाथा
यह नरेश बड़ शोक समाजा ❀ बीर बधे नहिं होत अकाजा
जाहिं बन्धुजन प्रियजन मारे ❀ हृदय शोक दुख होत हमारे
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई ❀ सुनहु तात तुम तजि कदराई

सदा सहायक हैं करुणाकर ❀ कस न खबरि लेहैं राधावर
द्रुपदसुता की लाज बचाई ❀ तिनहिं न बात बड़ी यह भाई
अस कहि लोचन वारि बिमोचैं ❀ विदुर समेत बंधु सब शोचैं
दो० सकल कहैं आरत वचन, त्राहित्राहि यदुनाथ ।
सजलनयनपुनिपुनिकहत, राधावर धुनिमाथ ॥
जान विकल लखिद्रुपदकिशोरी ❀ कहत घटोत्कच दोउकरजोरी
सुनौ बिनय मम धर्मकुमारा ❀ बिश्वम्भर रखवार तुम्हारा
अब नरेश मोहिं आयसु देहू ❀ जिमि निजकिंकरइव कर नेहू
तब नरेश निज पृष्ठि चढ़ाई ❀ सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई
करि दुर्योधन भवन उलङ्घा ❀ जाउँ भूप तव आयसु सङ्घा
न तौ महीपति आयसु देहू ❀ करौं महारण करि संदेहू
नतु यहि अवसर जहँ कुरुराई ❀ जाइ समीप देहुँ पहुँचाई
आयसु बेगि देहु मोहिं राजा ❀ तव पद शपथ करौं सोइ काजा
कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा ❀ तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा
सो० करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो ।
जियकी जरनि बुताय, सम्मुख लखि दुर्योधनहिं ॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अबहीं जो कीन्हौं प्रथम ।
होत शरीर असत्य, को जानै जीवन मरण ॥
भीम बचन सबके मन भाये ❀ आयसु मांगि मांगि शिर नाये
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा ❀ मानहु आयसु सकल हमारा
मारग यही विपिन कहँ लीजे ❀ बिग्रह बन्धु कदापि न कीजै
यहिप्रकार कहि धर्मकिशोरा ❀ बोले चितै घटोत्कच ओरा
धन्य धन्य सुत भाग तुम्हारा ❀ लीन उबारि सकल परिवारा
सब समेत अब सुत बड़भागी ❀ काननपन्थ चलिय डर त्यागी
सपनेहुँ आन बिचार न करहू ❀ मम अनुशासन सुत उर धरहू
कहेउ सुभग शिष धर्मकुमारा ❀ कीन सबन मिलि अङ्गीकारा
कुम्भोत्कच तनु धरेउ बिशाला ❀ छायो रूप श्याम कच लाला

दो० होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास ।
अन्धकार माया प्रबल, दिवसनाथ उर त्रास॥

माया वश राक्षस की धारी ❀ सब परिवार पृष्ठि बैठारी
सहित द्रौपदी धर्मज राई ❀ दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई
बाम बाहु पर बान्धव चारी ❀ भीमादिक लीन्हेउ बैठारी
पुनि पुनि गर्जिचलत जब भयऊ ❀ नृप करजोरि बिदुरसन कहेऊ
तात पितासम आपु हमारे ❀ शिशुपन ते सबबिधि रखवारे
मम सुधि अब यादवपति लीन्ही ❀ रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही
हरिते अधिक हितू तुम मोरे ❀ पितुमातासम हित न निहोरे
अबते एक मोरि रखवारी ❀ करेउ तात मम बिनय बिचारी
जो गृह रहै देइ दुर्योधन ❀ तात निहोरे किहेउ प्रबोधन
तुम तहँ जात रहेउ कछुकाला ❀ गयेदिवस दुख कटहिं बिशाला
जब जब सुरति करै मम माता ❀ करेहु प्रबोध बिकल लखिगाता
भोजन पान अधीन तुम्हारे ❀ मातु प्राणधन के रखवारे

सो० बिपिन महादुखरूप, ताते उचित न मातुसँग ।
कही युधिष्ठिर भूप, गहबर उर व्याकुल निपट॥
कहेउ प्रणाम हमार, तात मातसन बिबिध बिधि ।
अस कहि धर्मकुमार, चकित चितै रोवनलगे ॥

कहेउ बिदुर नृप धीरज धरहू ❀ आतुरगमन बिपिन मग करहू
हम कुन्ती बहुबिधि समुझैहैं ❀ रञ्चक शोक न शीश बिसैहैं
हमहिं उचित बिनु कहे तुम्हारे ❀ सब प्रकार पद सेवन हारे
तदपिकहेउतबअतिभलकीन्हा ❀ महाबिपति तजि धीरज दीन्हा
अब नहिं काम यहां के ठाढ़े ❀ कुरु आयसु आवत भट गाढ़े
तुम कहँ करुणासिन्धु सहाई ❀ दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई
गमन कीजिये शत्रु अजाता ❀ भये मरण नृप नीकि न बाता
बिदुर बचन सुनि धर्मनरेशा ❀ कहेउ मातुकहँ पुनि संदेशा
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते ❀ मिलिहौं बर्ष त्रयोदश बीते

दो० मोहिंनहोयलवलेशदुख, तवप्रसाद वन जात ।
बीते दिन पद देखिहौं, शोचपरिहरिय मात ॥

भीम सँदेश विदुरसन कहेऊ ❋ ममदिशि तात मातुसन कहेऊ
कहेउ सहायक जो यदुराई ❋ बीते दिवस गहौं पद आई
भयो हमार कठिन अपमाना ❋ अमरशरीर तजत नहिं प्राना
होत न कछु अब कीन हमारा ❋ काधौं अग्र करिय करतारा
कुरुपति सहश एक बिनु रौरे ❋ सब शठ देखि परत रिपु मोरे
कोउ सज्जन परमारथबादी ❋ पापी सकल भीष्म द्रोणादी
तुम धर्मिष्ठ बिदुर सब भांती ❋ गदगदगिरा न पुनिकहिजाती
कह पारथ सुनु तात सुजाना ❋ तुम समर्थ बिज्ञाननिधाना
कहब न बिपति मातुसन भारी ❋ जेहिसुखलहहिं न होहिंदुखारी

सो० करेहु यत्न सोइ तात, मातु लहै सुख शोच तजि ।
करि कौरवकुलघात, दरशावौं जननी बदन ॥

दो० पृथकपृथकमातहिंकहेउ, निजनिजसबनसँदेश ।
तेहिअवसरकरुणानिपट, बरणि न जाइ नरेश ॥

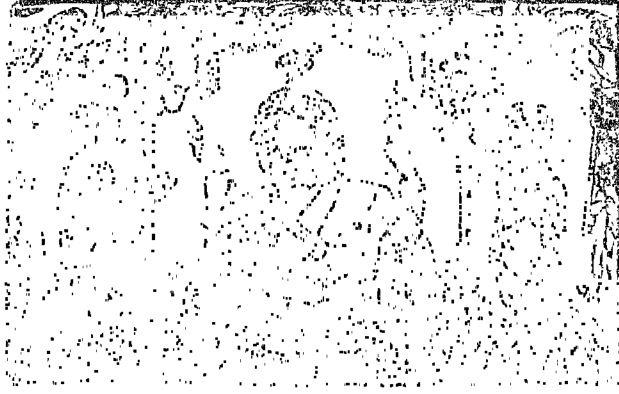
बार बार कह द्रुपदकिशोरी ❋ सुरति करायहु मातहि मोरी
पूजनीय तुम श्वशुर हमारे ❋ नहिं संदेश पठावन हारे
अनुचित क्षमब कुअवसर जानी ❋ कहेउ मातुते मम प्रिय बानी
पदसेवा कर अवसर आवा ❋ भाग्य कठिन तब मोहिं भ्रमावा
जो जीवत राखहिं जगदीशा ❋ धरिहौं आइ चरणतर शीशा
तुव प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे ❋ रहिहैं मोहिं समेत सुखारे
अस कहि बिदुरचरण गहि रानी ❋ बिलपत भाषत आरतबानी
पुनि पुनि मिलत धर्म नरनाहू ❋ बहेउ बिलोचन बारि प्रबाहू
तेहि अवसर कुरु आयसु मानी ❋ चहुँदिशि बीर धीर अररानी
गहे अनेक नागिनि करबाला ❋ रूप भयंकर धनुष बिशाला

दो० धर्मसुतहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होइ ।
चलत बार कौरव सुभट, कछुक दीजिये खोइ ॥

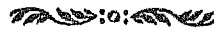
नहिं भायो पारथ बचन, नाय विदुरपद भाल ।
चलो घटोत्कच ते कहेउ, सत्य धर्म महिपाल ॥
लखिकुम्भोत्कचभूपरुख, आतुर बार न लागि ।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि, गयो नागपुर त्यागि ॥
सबलसिंहमुनि विदुरमुख, कौरवनाथ हवाल ।
ह्वै उदास शकुनी करण, बोलिलिये ततकाल ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते पाण्डववनगमनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति सभापर्व समाप्तम् ॥



महाभारत



वनपर्व

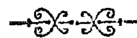
सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत-रामायण की
रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

जंगलों में पाँचों पाण्डवों व द्रौपदी का दुर्वासादि मुनियों
का समागम व अनेक असुरों द्वारा दुःख पहुँचना
पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञातवास रहने का
विचार अनेक कथाओं में वर्णित है।



लखनऊ
सुपरिंटेंडेंट बिपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित
सन् १९४६

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ वनपर्व ॥

दो० अब वनपर्व कथा यह, आगे सुनहु नरेश ।
छांड़ो देशहि धर्मसुत, कीन्हों बन परवेश ॥

काम्यक बिपिन रहे तहँ जाई ❁ धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई
जहां बिपिन हैं बहु बिस्तारा ❁ सिंह भालु बाराह अपारा
कामी नाम दैत्य यक रहई ❁ महा सो बीर पराक्रम अहई
ताके डर बहु तपी डेराई ❁ तेहि बन निशिबासर सो रहई
मानुष बास पाइकै धायो ❁ धर्मराज सन पूछन आयो
किंबर नाम अहै बन मोरा ❁ को तुम बीर अहो बरजोरा
धर्मराज बोले यह बानी ❁ पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी
भीम धनंजय नकुल कुमारा ❁ सहदेव है लघु बन्धु हमारा
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं ❁ सत्य बचन तोसों सब कहहीं
यह द्रौपदी अहै पटरानी ❁ हारे राज्य लियो बन आनी

दो० सुनत दैत्य हँसि बोलेऊ, विधि म्वहिं दीन्ह अहार ।
भीम नाम बलबीर सो, बैरी अहै हमार ॥

रहे बकासुर बन्धु हमारा ❁ ताको भीमसेन संहारा
दोस्त हमार हिडम्बक रहई ❁ मारो ताहि दैत्य अस कहई
बहिनिहि मोकहँ दीन्ह मिलाई ❁ आजु मारिहौं पांचो भाई
शोणित करौं भीमकर पाना ❁ तब संतुष्ट होयँ मम प्राना
यह कहि दैत्यरूप तब धारा ❁ वृक्ष एक हँसि भीम उपारा
मारो भीमसेन करि क्रोधा ❁ किंबर नाम दैत्य बड़ योधा
मारो वृक्ष तासु के माथा ❁ क्रोधित भयो दैत्यकर नाथा

एकै एक जीति नहिं पायो ❀ दूनों वीर जूझ मन लायो
तब पर्वत यक दैत्य उपारा ❀ भीमसेन के उर पर डारा
मारु मारु करिकै तब धावा ❀ चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा
दो० उठेउ भीम तब क्रोधकरि, मल्लयुद्ध दिय ठान ।
जिमि सुग्रीवहिं बालिसों, विविधभांति मैदान ॥
क्रोधित भीम गह्यो तब ताहीं ❀ दूनो हाथ दियो कटि माहीं
बहुरि भीम पकरेउ शिरबारा ❀ क्रोधवन्त होइ भूमि पछारा
आरत दूनों कीन्ह चिघारा ❀ मुख ते चली रुधिर की धारा
भीम दैत्य को जबहिं संहारा ❀ छांड़ेउ तब जब प्राण निकारा
बधेउ दैत्य कहँ भीम जुझारा ❀ हर्षित भे तब पवनकुमारा
मिलि सब बन्धु हर्ष उर छाये ❀ दुर्वासा तहँ देखन आये
साठि सहस्र शिष्य लै साथा ❀ बोलेउ बचन सुनहु नरनाथा
हम सब कहँ भोजन करवावो ❀ नातरु ब्रह्मशाप तुम पावो
त्रासवन्त पाण्डव सब भयऊ ❀ तब द्रौपदि हरि सुमिरन करेऊ
सुमिरत श्रीहरि आये जबहीं ❀ क्षुधावन्त भाषेउ तिन तबहीं
भोजन नेकु न कछु गृह अहई ❀ श्रीपतिसों यह द्रौपदि कहई
यदुपति कछू न भोजन अहई ❀ लावो पात्र सो यदुपति कहई
भोजन भाजन लैकर आई ❀ यकु रञ्चक भाजी तहँ पाई
पुनि कृष्णहि अस बचन सुनाये ❀ तीनों लोक तृपित होइजाये
मुनिगणकेर उदर भरि आये ❀ श्रीहरि द्वारावती सिधाये
दुर्वासा कहँ भीम बुलाये ❀ भोजन हेतु चलो मुनिराये
दुर्वासा तब बचन प्रकाशा ❀ कबहुँ न होइ भक्तकर हासा
दो० यह कहिगे दुर्वासऋषि, हर्षित धर्मकुमार ।
सूर्य बिनयकरि द्रौपदी, पूजा करि विस्तार ॥
ह्वै प्रसन्न तब रवि बर दीन्हो ❀ मांगु मांगु यह कहि सो लीन्हो
कहा द्रौपदी धर्म उपाई ❀ अन्नपूरणा देहु गुसाईं
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ अति दीन्हों ❀ धर्मराज कहँ हर्षित कीन्हों

प्रतिदिन तहँ ब्राह्मण विधिनाना ❁ भोजनकरैं बहुत सुख माना
साठि सहस तहँ मुनिवर आये ❁ नित प्रति तहँ भोजन करवाये
एमे धर्मराज तहँ रहई ❁ परमहर्ष बन भीतर अहई

दो० ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन, बनमें धर्म भुवार ।
पाण्डव विजय रहस्यहै, सुने पाप सब छार ॥

आगे सुनु जनमेजय राजा ❁ धर्मराज कीन्ह्यो जस काजा
सरवर एक सुभग बन रहेऊ ❁ जल हित तहँ सहदेवहि गयऊ
जलमें एक जन्तु तहँ रहई ❁ पायो शब्द बचन सो कहई
को तुम जीव कहौ अब भाई ❁ कहौ सो सब मम कथा बुझाई
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हो ❁ तुरतहि ग्राह लीलि तब लीन्हो
यहि प्रकार तहँ चारिउ भाई ❁ लीले ग्राह सरोवर जाई
धर्मराज तहँ करो बिलापू ❁ पाछे गये सरोवर आपू
जल भाजन देखेउ तब राई ❁ तट में चरण चिह्न हैं भाई
अरु बक चिह्न पाइ लखि राजा ❁ तब चलि गयो सरोवर काजा
लखि भाजन राजन तब गहई ❁ पावन शब्द ग्राह तब कहई

दो० को जीवत को जागतो, कहो भेद समुझाइ ।
बिन भाषे सरवरहिते, कोउ न जल लैजाइ ॥

धर्मराज तब मनमहँ जाना ❁ यही जन्तु कछु कस्यो बिधाना
धर्मराज तब कह समुझाई ❁ जीव जौन सो सुनु मनलाई
दया शील समता मन रहई ❁ सत्य छोड़ि मिथ्या नहिं कहई
बिष्णुभक्ति आनै करि ज्ञाना ❁ प्रेमभाव मनमहँ जो ठाना
जाके हृदय कपट है नाहीं ❁ परसेवक सो है जगमाहीं
जीवै सदा सो भक्त कृपाला ❁ तू किमि जीवै सुनु चण्डाला
कहे बचन अस धर्मभुआला ❁ तब छोड़ेउ सहदेवै काला
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी ❁ धर्मराज तब कहेउ बखानी
सेवा मात पिता की करई ❁ सदा धर्म हिरदय महँ धरई
पाप कपट जिय कबहुँ न जाना ❁ जीवै सदा भक्त भगवाना

तू किमि जीवै जो निज चोरा ❀ परो है अधम काल के फेरा
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं ❀ नकुलहि कहँ छांड़ेउ पुनि तबहीं
और सत्य अपने जिय माना ❀ हैं यह धर्मराज जिय आना
दो० को जीवत है जगत में, सुनिये धर्मकुमार ।
सुनु रे पापी पातकी, धर्मज बचन उचार ॥
देह आपनी हठ करि जाना ❀ करै योग बिधि बेद प्रमाना
ये षटचक्र बिदारै जोई ❀ जीवै सदा भक्तजन सोई
तू तो भक्ति धर्म नहिं जाना ❀ सदा मृत्युमुख सुनु अज्ञाना
इतना सुनि त्यहि अर्जुनबीरा ❀ उगिलि ग्राह है हर्ष शरीरा
पुनि तब ग्राह कही यह बानी ❀ धर्मराज सुनि कह्यो बखानी
जीवत योग देह महँ होई ❀ भावत कर्म धर्म नहिं सोई
कामी क्रोध लोभ अहँकारा ❀ कालरूप जानै संसारा
जीवे जो यह भक्त सुजाना ❀ जीवै सदा भक्त भगवाना
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी ❀ परो नरक चौरासी खानी
सुनत भीम उगिलेउ तिहिबारा ❀ बिनय कीन्ह तिहिं बारम्बारा
दो० सुनिये भूपति धर्मसुत, जानत सब संसार ।
छुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार ॥
परस्यो चरण भूप तेहिं जबहीं ❀ दिव्यरूप राजा भो तबहीं
धर्मराज पूछ्यो हरषाई ❀ कौन कहौ गति कैसे पाई
तबहि राउ सों कहेउ बिचारी ❀ सुनहु धर्मसुत बिपति हमारी
हम तो यही शाप हित पाई ❀ ताते तव लीलेउँ सब भाई
सो तब तुमहिं चीन्हि हम पायो ❀ तुमहीं ते उद्धार करायो
इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते वनपर्व
धर्मराजग्राहसंवादः प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
सुनु राजा यह कथा सुहाई ❀ जौन हेतु हम यह गति पाई
मैं यकबार अहेरे गयऊं ❀ कर्महीन तबहीं सों भयऊं
एक कहार मृतक है गयऊ ❀ मम सँग अश्व न एको रहेऊ

परेउँ भूलिकै सो बन माहीं ❋ बिपिन सघन तहँ सूझ्यो नाहीं
तीनि कहार रहे तेहि पाहीं ❋ एक मृतकभा तेहि बनमाहीं
कर्महीन ते दुख मैं लहेऊ ❋ करत तपस्या ऋषि बन रहेऊ
तीन महाऋषि जान न पाये ❋ तिन्हैं कहार तहां धरि लाये
आनि पालकी गाहिं लगाये ❋ निजपुरको फिरि तब हम आये
द्वारे धरी पालकी आई ❋ बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाईं
भोजनपान खबरि नहिं लयऊ ❋ बासर गयउ राति पुनि भयऊ

दो॰ बासर बीते रैनि भै, कीन्हेउँ मैं उच्चार ।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जागत संसार ॥

तब मुनि कही तहां यह बाता ❋ जन्म मृत्यु दुख सुख सँग ताता
क्षुधा तृषा ते नित दुख सहई ❋ करत बन्ध सो सुख नहिं लहई
जानै यह जग दुःख समाजा ❋ सो जागै सब सोवत राजा
दूजे यहै चलाई बाता ❋ जागै कौन कहो सति ताता
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना ❋ योगी योगकरो नित ध्याना
कामरु क्रोध लोभ अहँकारा ❋ बसैं देह में सब बटपारा
सदा ज्ञान ते रहे सचेता ❋ सोवत जागत रहै सो येता
तीजे पहर पूछ मैं आही ❋ सो सुनि बोले पुनि मुनि पाही
जो कोइ ध्यान करै जग माहीं ❋ ताको संकट परै न काहीं
दिव्यज्ञान करि हरिको जानै ❋ हिंसा कपट हृदय नहिं आनै
जो दुखी सो संशय भरई ❋ परबश है प्रचार सो करई
सो जागै सब सोवै राजा ❋ सोवै खोवै आपन काजा
चौथे पहर कहेउ को जागे ❋ क्रोधित मुनि बोले मो आगे
सुनु मूरुख जागै जो ज्ञानी ❋ तू किमि जागै गृह अभिमानी
ग्राह होय राजा तैं जाई ❋ भूप शाप ऋषि को यह पाई

दो॰ तब मैं बिनती कीन्हेऊं, भा बड़ दोष हमार ।
कृपा कीजिये महामुनि, हों ज्यहि बिधि उद्धार ॥

बोले मुनि तब परम उदारा ❋ द्वापर युग उद्धार तुम्हारा

पाण्डुपुत्र अइहैं वन माहीं ❀ धर्मपुत्र धर्मै मन चाहीं
परसे अंग होव उद्धारा ❀ पुनि दीन्ह्यो वर याहि प्रकारा
सो राजा तव दर्शन पाई ❀ मम उद्धार भयो अब आई
यहि प्रकार ते पायउँ शापू ❀ मेटेउ शाप कृपा करि आपू
अस्तुतिकरि राजा दिवि गयऊ ❀ धर्मराज मन हर्षित भयऊ
भाइन सहित हर्ष हिय भयऊ ❀ तेहि थल बसे धर्म सुख लयऊ
सुनो भूप जनमेजय बाता ❀ सो जड़भरत रह्यो मुनि त्राता

दो० रहे हर्षि बनमाहिं सो, परम मनोहर ठांय ।
सहित द्रौपदी राजतहँ, अरु सब चारिउ भाय॥

तब सो द्रुपदराज भगवाना ❀ धृष्टद्युम्न सँग करेउ पयाना
मिलन हेतु सो बनमहँ आये ❀ बहु बिधि उन्हैं कृष्ण समुझाये
दुखसुख यहबिधिकरतबराजा ❀ हस्तिनपुर कर राज समाजा
यहिबिधि मिलेतिनहिं सोजाई ❀ सहित द्रौपदी पांचौ भाई
धौम्यऋषिहिमिलिबहुसुखमाना ❀ तबहिं द्रुपदगृह कियो पयाना
पाण्डव बसहिं जौन बनमाहीं ❀ काम्यक वन उत्तम है जाहीं
बहु दिन भये तौन बनमहहीं ❀ चारिउ बन्धु धर्मसुत रहहीं

दो० बहुदिन काम्यकबनहिं में, रहे पाण्डु तहँ आइ ।
ह्वै उदास पुनि धर्मसुत, छांड़ो सो बन जाइ ॥

तबहिं द्वैत बन पाण्डव गयऊ ❀ मार्कण्डे मुनि दर्शन दयऊ
नारद आदि सुनी यह तबहीं ❀ पाण्डव गये द्वैत बन जबहीं
तहां बसहिं बहु ऋषय समाजा ❀ पाण्डव शोक मेटिबे काजा
सो सम्बाद बहुत बिस्तारा ❀ कछु संक्षेप सुनौ सुख सारा
बसे द्वैत बन पाण्डव आई ❀ तहां द्रौपदी बात चलाई
कहे बचन तब धर्मनरेशहि ❀ बिपिन बास बहु सहे कलेशहि
पापी दुर्योधन जग जाना ❀ शकुनी कर्ण दुशासन नाना
अन्ध नृपति कछु कह्यो न आई ❀ सुनो धर्मसुत पांचौ भाई
हमहिं सहित उन बनहिं पठाये ❀ दुर्योधन छल ख्याल न लाये

नेकु दया हिरदे नहिं लायो ❀ कपट अक्ष करि बनहिं पठायो

दो० आपु सहेउ बहुदुःख बन, हमैं सहो नहिं जाइ ।
दुर्योधन अपकारि सों, रानी कह्यो बुझाइ ॥

नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा ❀ ताकर यहफल बिधि बहु दीन्हा
भीम वीर अर्ज्जुन धनुधारी ❀ पलमा करैं सकल संहारी
ये तुम्हरे वाचा के कारन ❀ सकैं न कौरवदल संहारन
आज्ञा देउ सुनो हो राऊ ❀ मारें शत्रु देश तब पाऊ
क्षमा केर अवसर अब नाहीं ❀ छिपिकै रहब कहां धौं जाहीं
क्षमा के समय क्षमा है भारी ❀ युद्ध समय कीजै हठि रारी
राजधर्म क्षत्री के कर्मा ❀ मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा
द्रौपदि केर वचन ये सुनिकै ❀ बोले बचन धर्म मन गुनिकै
कहे बचन राजा त्यहि ठाईं ❀ धर्महिं सदा वेद मो अहईं
बारह संवत निजमुख हारा ❀ चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा

दो० किये क्रोध सम पाप नहिं, राजा कह्यो बुझाइ ।
क्रोधाकिये पुनि धर्म नहिं, भाषेउ पाण्डव राइ ॥

दान धर्म सब कालहि करई ❀ परै दुःख तेहि जनि परिहरई
है सब घटमें पुरुष प्रधाना ❀ दुखसुख सबसमान करिजाना
एक पुरुष है सुख दुख दाता ❀ दूसर अहै न सुनु मम बाता
सुनत भीम क्रोधित ह्वै गयऊ ❀ धर्मराज सन बोलत भयऊ
जापे धर्म महासुख पाये ❀ तौ बनको सहेतु केहि आये
कौन धर्म महँ बहुसुख पाये ❀ देखत देखत राज्य गँवाये
कौन धर्म्म दुर्योधन राऊ ❀ राज्यको सुखसो सकल बनाऊ
आज्ञा देउ बधौं सो भाई ❀ फिरि पीछे लैजावँ लवाई
तुम्हहिं राज्य बैठारहुँ राजा ❀ ऐसो जाय करौं सब काजा
अर्ज्जुन धनुष खैंचि शर धारैं ❀ यक क्षणमें कुरुराज संहारैं

दो० तुम्हैं हीनबल कौरवा, जानैं अपने जीम ।
आज्ञा देवहु धर्मनृप, कह्यो कोप करि भीम ॥

भीम बचन सुनि राजा कहई ❀ जुआ खेल हारे सब अहई
बाचा हारि करौ सत कर्मा ❀ पीछे युद्ध कीजिये धर्मा
धर्म न छांड़ब जबतक प्राना ❀ धर्म ते राज्यवृद्धि जग जाना
ताही समय ब्यास तहँ आये ❀ हर्ष हृदय पांडव समुझाये
तब यकमन्त्र ब्याससुनि कहेऊ ❀ सुनिकै धर्मराज सुख भयऊ
पुनि यह मन्त्र जपौ तुम जाई ❀ पारथते तब कहेउ बुझाई
देउँ मन्त्र जपतै बर पैहौ ❀ युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ
इन्द्र बरुण यम शंकर देवा ❀ होत सबै परसन्नहिं सेवा
यह कहिकै ऋषि ब्यास सिधाये ❀ काम्यकबन पुनि पाण्डव आये
काम्यकबन पुनि भयउ प्रकाशा ❀ पांचौ बन्धु द्रौपदी पासा

दो० यहि प्रकार ते बनहिं महँ, रहे पाण्डुसुत आनि ।
जनमेजय नृप आगेहू, बैशम्पानि बखानि ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वकाम्यकवनपाण्डववासवर्णननामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

सुनु राजा रहैं जौन प्रकारा ❀ चारिउ बान्धव धर्मकुमारा
केतिक दिवस रहे तिहि ठाहीं ❀ यकदिन पारथ नृपसों काहीं
आज्ञा होय जाउँ मैं तहँवां ❀ गौरीपति के दर्शन जहँवां
आज्ञा पाइ चरण छुइराई ❀ चढ़ो हिमाचल पर्वत जाई
ब्यास मन्त्र जो बिद्या देऊ ❀ तौन मन्त्र जपि ध्यान लगेऊ
फल औ मूल भषे त्रयमासा ❀ पुनि दुइमास भयो उपवासा
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये ❀ पारथ सों इमि बचन सुनाये
काहे तप कठोर तनु त्रासा ❀ मन इच्छा सो करौ प्रकासा
जो बाञ्छा उर अहै तुम्हारे ❀ होइ सिद्धि सुनु बचन हमारे
भये शम्भु कहि अन्तर्द्धाना ❀ तेहि बन पारथ पुनि तप ठाना

दो० अन्तर्द्धान महेश भे, अरु अर्जुन बर पाइ ।
ह्वै प्रसन्न तप करत भे, शंकरसों मन लाइ ॥

तप साधत बीते कछु काला ❀ और चरित्र सो सुनौ भुवाला

रूप किरात धरो हर तहँवां ❀ करत उग्र तप पारथ जहँवां
दोउकर धनुषबाण कर लीन्हो ❀ रूप सुन्दरी गौरी कीन्हो
भूत कटक मन संग लेवाई ❀ कोल भील कर वेष बनाई
अहे नाम मुक दैत्यकुमारा ❀ शूकर रूप घोर पुनि धारा
पारथ के आगे मे आई ❀ रूप किरात महेश्वर जाई
चला दैत्य तारक के काजा ❀ करो विचार भूत के राजा
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे ❀ ध्यान छांड़ि कै पारथ जागे
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ ❀ तव किरात अर्जुन सन कहेऊ
बहुत परिश्रम करि मैं आयों ❀ बड़ो पराक्रम करि मैं पायों

दो० तेहि चाहत हैं मारनो, अरे मूढ़ अज्ञान ।
अर्जुन कहो न मानि तव, हन्यो तासु शिर बान ॥

सुवररूप तजि दानव भयऊ ❀ तब किरात मन क्रोधित भयऊ
मारेसि सुवर आपने हाथा ❀ पठवों तोहिं सुवरके साथा
यमपुर अवहिं पठावों तोहीं ❀ तैं अब बीर बिरोधेसि मोहीं
जो शक्ती है तनु तुव हारी ❀ ताते अस्त्र देहु परहारी
सुनि कै क्रोध धनंजय ठाना ❀ पुनि किरातपर बर्ष्यो बाना
एको बाण न भेदेउ अङ्गा ❀ बिस्मय करि पारथ मन भङ्गा
तब हँसि शंकर बचन बखाना ❀ और बाण तोहिं करौं निदाना
अर्जुन धनुष हन्यो बर जोरा ❀ टूट्यो अस्त्र तौन पुनि घोरा
अर्जुन कह्यो किरात न होई ❀ होय बिष्णु की शंकर सोई
माया बपु करि बंचेउ मोहीं ❀ भयो चकित चिन्ता मन सोहीं

दो० सकल बाण जो मारेऊ, सो निष्फल ह्वै जाय ।
तबहिं वृक्ष यक लीन्हेऊ, पारथ क्रोधित धाय ॥

शंकर भूत बाण अस मारा ❀ काटि वृक्ष भूतल में डारा
तब पारथ मुष्टिक अस मारा ❀ पौरुष करि अर्जुनहिं प्रहारा
शंकर पुनि तहँ हाथ पसारा ❀ अल्प तेज को पारथ मारा
लागत भूमि परेउ मुरझाई ❀ क्षणक एक पुनि चेत सो आई

रहु रहु पुनि कहि उठ्यो प्रचारी ❀ तब सो हृदय निहारि निहारी
प्रथमहिं पूज्यो शंकर जोई ❀ पारथ ताहि बिलोक्यो सोई
सो माला हर गरे निहारा ❀ देखि चकित भे पाण्डुकुमारा
निश्चय जान्यो शंकर होई ❀ परेउ दौरि चरणनपर सोई
क्षमा करौ यह चूक हमारी ❀ बिनु जाने कीन्हीं मैं रारी
तब शंकर प्रसन्नचित भयऊ ❀ हित करि चितै परमसुख दयऊ
मैं प्रसन्न हरि हर कहिदीन्हा ❀ तब अर्जुन प्रणाम सो कीन्हा

दो० पशुपतास्त्रमन्त्रहिसहित, हर अर्जुन कहँ दीन्ह ।
हर्षित गात धनञ्जयहु, चरणकमलगहिलीन्ह ॥

तुमसँग युद्ध पार को पाई ❀ ऐसी शक्ति न काहू भाई
अस्त्र देइकै पशुपति नाथा ❀ अन्तर्द्धान भये गणनाथा
हर्षवन्त कह पारथ बैना ❀ मैं शंकर देख्यों भरि नैना
धनि जीवन जग आज हमारा ❀ जो शंकर निजनैन निहारा
पारथ बहुत हर्ष जिय पायो ❀ तौने समय देव सब आयो
इन्द्रआदि सँग सब दिकपाला ❀ पारथ ऊपर भयो दयाला
हर नारायण सुरपति कहई ❀ तुम नररूप जन्म सुत अहई
भूमि सहै नहिं क्षत्री भारा ❀ तेहि कारण अवतार तुम्हारा
जेहिबिधि अस्त्र जौन हैं जेते ❀ सिखै देव हम तुमकहँ तेते
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हे ❀ मन्त्रनसहित समर्पण कीन्हे

दो० कालदण्ड यम दीन्हेऊ, बरुण दियो जलबान ।
वज्रदण्ड इन्द्रादि दै, हर्षित भो बलवान ॥

जब उपकार अग्नि को कीन्हो ❀ पावक अस्त्र तहां बहु दीन्हो
सप्तपक्ष गाण्डिव धनु लीन्हो ❀ नन्दिघोषरथ हुतभुक दीन्हो
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हो ❀ तबहीं इन्द्र कछुक शिष कीन्हो
मातुलसाथ स्वर्ग कहँ ऐहो ❀ अस्त्र अनेक तहां तुम पैहो
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ ❀ रथ सह सूत उपस्थित भयऊ
देवसभा जब पारथ गयऊ ❀ नानाअस्त्र इन्द्र तब दयऊ

बहुविध अस्त्र सिखाये ताही ❀ इन्द्रलोक पारथ जहँ आही
देवअस्त्र पढ़ि सब विधि जानी ❀ सुरपति जिष्णु परमसुख मानी
दो० सिखै अस्त्र बहु पारथहि, देवपुरी महँ जाय।
चिन्ता करत युधिष्ठिरहु, पारथ को हित पाय॥
कौने देश धनञ्जय गयऊ ❀ चारिउ बान्धव शोचत भयऊ
कीन्ह्यो शोच द्रौपदीरानी ❀ तबहिं धर्मसुत कह्यो बखानी
विद्या महाब्यास ते पायउ ❀ तौने कारण बनहिं सिधायउ
गौरीपति अवराधन गयऊ ❀ कौनहेत जिय बिस्मय भयऊ
हर पूजाते संशय नाहीं ❀ है कल्याण लोक तिहुँ माहीं
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा ❀ इमि सबको समुझावत राजा
तप कारण पारथ तहँ जाई ❀ सुनत भीम तब कह्यो रिसाई
जो वियोग पारथ सँग होई ❀ प्राण त्याग करिबो सब कोई
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा ❀ सहतेउँ कत यह दुःख समाजा
क्षमा किये राजा कह लहिये ❀ दिनदिनदुखबहुविधिकिमिसहिये
दो० राज देश सब छूटेऊ, राव तुम्हारे हेत।
देहु रजायसु राज तुम, अबते होउ सचेत॥
मरिये शत्रु देश तब पाई ❀ बनको दुःख सहो नहिं जाई
बारह वर्ष सहो दुख भारा ❀ एक बर्ष अज्ञात भुवारा
अर्जुन वीर बड़ो धनुधारी ❀ और सहायक श्रीबनवारी
राव तुम्हारी आज्ञा पावों ❀ दुर्योधन शतबन्धु नशावों
भीमवचन श्रवणन सुनि लीन्हे ❀ धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हे
सुनो भीम जो वचन बखानौ ❀ दोष हमार सत्य करि जानौ
सुनि मम वचन रहौ अरुगाई ❀ पीछे बन्धु करौ मनुसाई
अब यहि समय रहो चुप भाई ❀ तबै दस्वऋषि तहँ चलिआई
धर्मराज उर आनँद छाये ❀ अर्घ देइ आसन बैठाये
कहेउ आप सब बरणि कलेशा ❀ महादुखित होइ बरणि नरेशा
दो० तजेउँ देश बहु दुख सहेउँ, दुर्योधन के काज।

आदि अन्त सुनि आगे, बरजो दुख सब राज॥
सुनिकै तब दुख कहो बखानी ❀ मिटै न कर्मलिखा सुनु बानी
तुम तो बड़ो दुःख नृप पाये ❀ राज्य छोड़ि बनबासहि आये
नल दुख सुनो मनहिं धरि राजा ❀ घटै पाप बहु सौख्य समाजा
पांसे खेलि हारि सब देशा ❀ रानी सँग बन कीन्ह प्रवेशा
एकवस्त्र दोनों ढिग रहेऊ ❀ सोऊ तजि राजा बन गहेऊ
पायउ सो दुख बहु बन जाई ❀ छुट्यो दुःख भे राजा आई
ताको कहउँ सहित बिस्तारा ❀ सावधान होइ सुनो भुवारा
तासु दुखहि सुनिहौ जो राऊ ❀ सुनतहि प्राण न धैर्य रहाऊ
पायउ पतिब्रता दुख जेता ❀ तोपर कहो जाइ नहिं तेता
दो० सुनतदुखहि बहुनृपतिके, पारथ बीर न होइ।
धर्मराज के सम्मुखहि, कहतदस्वऋषिसोइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
नलोपाख्याननामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध यक देशा ❀ तहँ पुनीत नल नाम नरेशा
बहु बिस्तार कहो नहिं जाई ❀ लघु करि ताहि कहौं समुझाई
यक दिन राव सरोवर जाई ❀ पंगति हंस देखि बहु पाई
तबहीं हंस पकरि नृप जाई ❀ रोइ हंस तब नृपहि सुनाई
राजा बेगि छांड़िदे मोहीं ❀ कन्या एक मिलावों तोहीं
देश बिदर्भ भीम नृप रहई ❀ कन्या एक तासु गृह अहई
दमयन्ती बिधि रूप सँवारी ❀ देखि गिरा रति रूप निहारी
सुनतहि राज हर्ष मन लीन्हा ❀ तुरतहि छांड़ि हंस कहँ दीन्हा
राजा गे अन्तःपुर माहीं ❀ देश बिदर्भ हंस उड़ि जाहीं
उतरो जाइ हंस सो तहँवां ❀ पारिजात फूले बहु जहँवां
दो० उत्तम सरवर देखिकै, उतरो हंस बिचारि।
बिधिरचनासबसखिनसँग, आई राजकुमारि॥
देखि हंस कहँ राजकुमारी ❀ गहन हेत तब बुद्धि बिचारी

तब वह हंसरूप अति धारेउ ❀ निजवश कन्या को मन कारेउ
सुनु दमयन्ती बात हमारी ❀ नैषध देश महीपति भारी
नल राजा उपमा को कहई ❀ देखत रूप मोहि जग रहई
तब यह सफल तोर है रूपा ❀ जो पति पावहु नलसों भूपा
सुनि दमयन्ती हृदय जुड़ाना ❀ हंसबचन सुनि हर्षित प्राना
कह दमयन्ती करहु उपाई ❀ जाते होइ मोर पति राई
भये स्वयम्वर उनकहँ वरिहौं ❀ अरु काहूको चित्त न धरिहौं
सुनत बचन यह कहेउ बुझाई ❀ जात अबहिं मैं कहौं उपाई
बढ़ो हंस तब पंख पसारी ❀ देखि रही तब राजकुमारी

दो॰ हंस देश नैषध गयो, राजहि कहा बुझाइ।
कन्यामनतुमसोंबस्यो, करहु हर्ष मन राइ॥

राजा सुनत हर्ष मन कीन्हो ❀ पूरवकथा कहन मन लीन्हो
देखि सुताकर चितहि उदासा ❀ रानी नृपसों बचन प्रकासा
राजा सन रानी कह बाता ❀ कन्या योग स्वयम्वर गाता
सुनत बचन राजा मन भायो ❀ देश देश तब विप्र पठायो
राजा भीम स्वयम्वर कीन्हो ❀ भूपन सबहिं निमन्त्रण दीन्हो
नल राजा कहँ नेवत पठावा ❀ करि निजसाज तुरंग सिधावा
नारद सुरपुर बात जनाये ❀ चारो दिगपति सुनतहि धाये
इन्द्र वरुण यम पावक अहई ❀ चारिहु देव चले सुनि कहई
मारग मांझ मिले नलराई ❀ सुरपति बचन कहो समुझाई
हम सब जात स्वयम्वर काजा ❀ हँसिकै बचन कही सुरराजा
हमरे हेत दूत है जाहू ❀ दमयन्ती हमसों कर ब्याहू
चारि जने हम यक मनमाना ❀ सुनि नल राजा बहुत लजाना

दो॰ बोले नल नृप मन्दिरै, रहैं बहुत रखवार।
राजसुता पहँ कैसही, जायँ वचन उच्चार॥

इन्द्र कहो मम आज्ञा होई ❀ तुमहिं जात देखै नहिं कोई
करि मन दुखित चले नृप तहँवां ❀ राजकुँवरि अन्तःपुर जहँवां

दूनों जन ते दरशन भयऊ ❀ दुवौ रूप मूर्च्छित है गयऊ
सखी धाइ तब शीतल नीरा ❀ सींचेउ तब जल दुवौ शरीरा
दूनों चेत भये मन माहा ❀ तब परचा दीन्हों नरनाहा
जौन प्रकार इहां को आये ❀ आवत काहु न देखन पाये
इन्द्र वरुण यम पावक आये ❀ तेइ दूत करि मोहिं पठाये
चारौ जन कहँ मनमहँ धरहू ❀ एक जने कहँ स्वामी करहू
लज्जित है दमयन्ती कहई ❀ देव नाग नर चित्त न अहई
केवल पति हम तुम कहँ जाना ❀ देव नाग नहिं कोउ मनमाना

दो० जादिन हंसहि रूपकह, ता दिन मैं पति जान ।
देव नाग नर गन्धरब, हृदय और नहिं आन ॥

राजा कहेउ दोष म्वहिं होई ❀ कहैं देव हमहीं सब कोई
है वर आपन काज सवाँरा ❀ देव अवज्ञा दुख है भारा
कह कन्या नृप देवन साथा ❀ पठयहु तुमहिं होन नरनाथा
जिय अपने मन तुमहीं आनों ❀ तुम तजि कैसे दूसर जानों
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये ❀ देवन पै नल राजा आये
देव सबै तब पूछन लीन्हो ❀ तबहीं नल यह उत्तर दीन्हो
मोहिं छांड़ि मन और न माना ❀ मैं गुण रूप तुम्हार बखाना
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना ❀ राजसभा नल करेउ पयाना
देश देश के राजा आये ❀ अद्भुत भूषण रूप बनाये
चारिउ देव भये नल रूपा ❀ लखि नहिं परे सो एकस्वरूपा

दो० बैठ जहां नल भूपवर, सब करि करि शृङ्गार ।
सँग प्रोहित कर माल लै, सभा मांझ पगुधार ॥

प्रोहित सब कर नाम बताये ❀ नल राजा कर नाम सुनाये
कन्या देखि तहां यह रूपा ❀ पांचो जन बैठे नलरूपा
विनय करत तब राजदुलारी ❀ अयि देवहु मैं शरण तुम्हारी
नैषध पति है स्वामी मोरा ❀ करौ प्रकट पद बन्दत तोरा
सुनिकै विनय दया सुर कीन्हे ❀ आपन रूप बहुरि धरि लीन्हे

चीन्हे नल तब राजदुलारी ❀ जयमाला ताके उर डारी
राजा सत्य वचन कह सोई ❀ देवन तजि जनि हम मन होई
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी ❀ क्षणयक तुमहिं करब नाहिंन्यारी
दीन्ह देवपति यह वरदाना ❀ इन्द्र कहे सम पवन पयाना
सुमिरत तुम ढिग तुरतहिं ऐहौं ❀ याते सदा तुम्हैं सुख दैहौं
दो० पावक अग्नी शक्ति दै, वरुण दियो जलबान ।
धर्म विषे रति यम दई, भे सब अन्तर्द्धान ॥
देव सबै वर देकर गयऊ ❀ आशाभङ्ग सकल नृप भयऊ
यहि प्रकार दमयंति सगाई ❀ वेदमन्त्र करि जो बिधि गाई
दायज भीम नृपति बहुदीन्हो ❀ ह्वै कै बिदा चलन चित कीन्हो
बाजन शब्द मनो घन गाजा ❀ नगर आपने आयउ राजा
ऐसे आइ बसे रजधानी ❀ नल राजा दमयन्ती रानी
केतिक दिवस बीतिइमि गयऊ ❀ नाना केलि रङ्ग रति भयऊ
नृपके पुत्र प्रकट यक भयऊ ❀ इन्द्रसेन अस नामहिं लयऊ
कन्या एक भई पुनि ताके ❀ बहुतक हर्ष भई मन वाके
ऐसे रँगरस राजा कीन्हो ❀ इन्द्रसरिस उपमा कहँ लीन्हो
धर्मवन्त नैषधपति राजा ❀ पालै प्रजा पुत्रके काजा
दो० राज्य करै नलराजही, करि बहुधर्म प्रकाश ।
दमयन्ती अरु भूपवर, पूजेउ दूनों आश ॥
आगे सुनो धर्मसुव राऊ ❀ देवलोक कर करेउ उपाऊ
बैठ सभा देवता जाई ❀ कलियुग बैठ तहां सुख पाई
इन्द्र तहां यक बात चलाई ❀ दमयन्ती राजा नल पाई
देवन केर करेउ अपमाना ❀ नलराजा कहँ पति करि जाना
सुनि यह कलियुग उठा रिसाई ❀ बोलेउ वचन क्रोध जिय लाई
नलके निकट जात सुरराई ❀ राज छोड़ावउँ निज बरिआई
कलियुग द्वापर दोनों भाई ❀ पहुँचे नगर नैषधहि आई
द्वापर ते कलि कह मुसुकाता ❀ होहु अक्ष यह सुनु मम बाता

हम अब विप्ररूप है जैये ❀ चलिये अब पुष्करसों कहिये
पुष्करसों यह तब करि बाता ❀ तुम अब जीतो नल कहँ ताता

दो० जीतिलेहु नलराजही, कह कलियुग समुझाइ ।
बैलरूप तब कलियुग, कहेउ तासु ते आइ ॥

धरि यह रूप उन्हें समुझाई ❀ नल पहँ जाउ स्वरूप बनाई
तहां पुनीत रहै नल राई ❀ तिन के बदन प्रवेशहु जाई
एक समय बनमें नल राजा ❀ तृषा लागि जल लीन्हेउ राजा
यहिप्रकार तब अवसर पाये ❀ नलशरीरमहँ कलियुग आये
पुष्कर गे तब नलके पासा ❀ जाइ करेउ यह बचन प्रकासा
जुआ हेत आयहुँ तुम पाई ❀ आजु दुवो जन खेलिय भाई
नल राजा के मन महँ आई ❀ खेलन हेत सो करेउ उपाई
दमयन्तीके बचन न भाये ❀ नलराजा सब द्रव्य गँवाये
सोन रूप जो लाव भुवारा ❀ धरत दाउँ पलमहँ सब हारा
गज तुरंग हारे सब राऊ ❀ एकौ बार न जीत उपाऊ

दो० बहुत दावँ जब लायऊ, हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मन्त्री संग लै, आये नल दरबार ॥

रानी अरु मन्त्री समुझाये ❀ राजाके कछु मनहिं न आये
रानी कह सब हारे राजू ❀ खेलु न अब उठि चलु नलराजू
रोइ कही लूटत सब देशा ❀ झूठ बचन नाहिं मानु नरेशा
एक सखी बोली तेहि पासा ❀ पठवो पुत्र सासुके पासा
वह सो आइ यहां लै जैहै ❀ सुत कन्या बिदर्भ पहुँचैहै
कहिये और बात कछु नाहीं ❀ पढ़न हेत पठये तुम पाहीं
सुत कन्या तब रथ बैठावा ❀ सारथि देश बिदर्भ पठावा
पहुँचे बेगि सारथी तहँवां ❀ देश बिदर्भ भीम नृप जहँवां
दमयन्ती पठये लै साथा ❀ सुत प्रतिपाल करो नरनाथा
खेले जुआ कहेउ सो गाथा ❀ चिन्तावन्त भये नरनाथा

दो० यह कहि सारथि तब चलो, राजहिकियोजोहार ।

बहुत देश तहँ देखिकै, अवधनगर पगु धार ॥
है ऋतुपर्ण भूप अस नाऊं ❀ है सारथी रहे तेहि ठाऊं
राज्य सकल तब पुष्कर जीता ❀ यह कलियुग कीन्हेउँ बिपरीता
पुष्कर कहो रहो कछु अहई ❀ दमयन्ती लावहु यह कहई
सुनत राउ भो क्रोध अपारा ❀ रानी के आभरण उतारा
हारे अस्त्र आभरण जेते ❀ राज स्थान आदि पुर तेते
सर्बस हारि उठे नल राजा ❀ पांसा खेले भयउ अकाजा
दमयन्ती जानो यह राजा ❀ कियो चलन बन केर समाजा
रोइ चली दमयन्ती रानी ❀ सो करुणा किमि करौं बखानी
राज्य तजा बनवास सिधाये ❀ ताकी करुणा जाति न गाये
दासी दास बहुत बिलखाहीं ❀ दमयन्ती नृप पाछे जाहीं
दो० चले जात नृपराज सो, पुरजन धीर धराय ।
दमयन्ती नृप ऊपमा, रामचन्द्र सों जाय ॥
पुष्कर दूत फिरे सब गाऊं ❀ नलराजा कर लेब न नाऊं
उनहिं कोउ जो भोजन देहीं ❀ पकरि ताहि कारागृह देहीं
नगर लोग नृप पाछे जाहीं ❀ भयबश होइ बहुत बिलखाहीं
बाहर नगर रहे दिन तीनी ❀ भोजन खबरि न केहू लीनी
क्षुधावन्त तब राजा भयऊ ❀ पक्षि एक तहँ देखत भयऊ
सुनु रानी यह वचन हमारा ❀ यह पक्षी है आजु अहारा
आपन बसन तासु पर डारो ❀ सो पक्षी लै गगन सिधारो
गा अकाश तब बोल्यो वयना ❀ हमैं न अब तुव देखौ नयना
खेलि अ.ा सब राज्य गँवावा ❀ बसन हीन तबहीं सुख पावा
राजा सुनि यह चकित भयऊ ❀ बसन लिये वह पक्षी गयऊ
दो० राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्रान ।
परमहंस यह देहते, चाहत कियो पयान ॥
अर्द्ध बसन पहिरयो नरनाहा ❀ रानी संग चले गहि बांहा
दमयन्ती धीरज धरि कहई ❀ दुख सुख नारि पुरुष सब सहई

चले राह राजा अरु रानी ❀ द्वै राहैं तब आइ तुलानी
दक्षिण दिशि यक मारग जाई ❀ रानीसन बोले नलराई
दूसर मारग सुनु मन लाई ❀ देश विदर्भ सूत यह जाई
पाय पितागृह सुख तुम रहऊ ❀ संग हमारे दुख किमि सहऊ
रानी सुनत भरे जल नयना ❀ रोदनकरति कहतिअस बयना
कन्त चित्त है तुव थिर नाहीं ❀ ऐसे बचन कहत मुख माहीं
पतिके दुखलौं त्रिय दुख होई ❀ पितुको राज्य कामकेहि सोई
जो तुम दुख बन सहौ अपारा ❀ तौ पतिसुख हमार सब छारा

दो० कुण्डिनपुर कहँ चलौ नृप, जो मनमानै कन्त ।
तुमकहँ देखत भीमनृप, करिहैं प्रेम अनन्त ॥

बोले राव भीम नृप पाहीं ❀ ऐसे रानि जाब हम नाहीं
हमको पन्थ देखावत कन्ता ❀ कौनकाज पितु राज्य अनन्ता
चले जात बन गहन गँभीरा ❀ रानी सहित धर्म नृप धीरा
एक बृक्षतर बनहिं मँझारी ❀ सोयउ राउ संग लै नारी
देखि राउ उर में बहु सोगा ❀ देखो विधि कीन्हों कस योगा
रविशशि जिनकहँ देखेउ नाहीं ❀ सो मम संग फिरत बन माहीं
मेरे संग बिपिन दुख पैहैं ❀ बहु संताप कहां लौं सैहैं
जाउँ याहि तजि जो बन माहीं ❀ आखिर पिताभवन सो जाहीं
यह बिचार नृप के मनआयो ❀ कलियुग हृदय धर्म उपजायो
बसन अर्द्ध लीन्हो पुनि राजा ❀ दयाहीन कलि के बश साजा

दो० क्षण आवै नल निकटही, क्षणक चलै तजि मोह ।
करै बिचार अनेक बिधि, कबहुँ करै मन क्षोह ॥

भीमसुता तजि चलिभे राजा ❀ बहुरोदन करि चले अकाजा
गये राव मन बहुदुख पागी ❀ भीमसुता तेहि अवसर जागी
चहुँदिशिचितैचकितचितभयऊ ❀ हाहाकरि बहुरोदन ठयऊ
हाहा स्वामी कन्त हमारे ❀ तजि मोकहँ बन कहां सिधारे
प्रथमहिं कहा न छांड़ब तोहीं ❀ जबलगिघट बिच जीवन मोहीं

यहि दुख जीवन जात हमारा ❀ वचन झूँठ नृप भयउ तुम्हारा
कीन्ह्यों सेवा सदा तुम्हारी ❀ कौनि चूक भै कन्त हमारी
आज्ञाभङ्ग कबहुँ नहिं कीन्हा ❀ केहिहिततयागिहमहिंदुखदीन्हा
धीरज आइ देउ जो नाहीं ❀ कैसे प्राण रहैं बन माहीं
कहौ नाथ कैसे तुम रहहू ❀ हमहिं छोड़ि किमि धीरज गहहू

दो० सघन विपिन महँ रोवती, दमयन्ती बिलखाइ ।
कौने अवगुण कीन्हेउ, दीन कन्त दुख आइ ॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा ❀ रानी पद मुख भीतर लावा
रानी विकल बहुत बिलखाई ❀ हाय कन्त मोहिं राखौ आई
नैषध देश स्वामि जब जैहौ ❀ कहो कन्त मोकहँ कहँ पैहौ
व्याध एक तहँ देखेउ आई ❀ बधिक सर्प कहँ टारेहु जाई
बधिक सर्प कहुँ डारेउ मारी ❀ पीड़ित काम कह्यो सुनु नारी
कामवश्य होइ बोलेउ बानी ❀ केहिहितबनमें फिरौ भुलानी
तब रानी कहँ चिंता आई ❀ नलको मनमें पुनि पुनि ध्याई
रानी शाप बधिक कहँ दीन्हा ❀ तुरतभस्म तेहि खलकहँ कीन्हा
करत बिलाप चली बनमाहीं ❀ गिरिकन्दर बन ढूंढ़त जाहीं
कोई नल की कहै न बाता ❀ रोवत रानी अति बिलखाता

दो० भृगु वशिष्ठ मुनि आङ्गिरा, नारदमुनिजहँ आहिं ।
करि बिलाप तब रानि सो, पहुँचीतेहि थल माहिं ॥

जाइ तिनहिं कीन्हेउ परणामा ❀ आपन दुःख कहो तब बामा
सबमुनिमिलियहआशिषदीन्हों ❀ मिलिहैंनलसुनिजियसुखकीन्हों
अन्तर्द्धान भये मुनि राई ❀ चिन्ता उर रानी के आई
सपनो सो मन में यह जानी ❀ मानुष जन्म कहा तब रानी
कर्मवश्य बन फिरौं भुलानी ❀ ऐसे शोचि रानि अकुलानी
नलको खोजत बहु दुख पाये ❀ आपनपति कहुँ देखि न पाये
नायक कहो नगर को जैये ❀ खोजो जाइ कर्म गति पैये
बनमहँ ढूंढ़ि बहुत दुखपाये ❀ ग्रामनगर खोजो चितलाये

दो० चली संग बन राजके, बसे एक बन आहिं ।
सिंधुरयूथक बहुत तहँ, निकसे त्यहि बन माहिं ॥

कचरिगये तहँ बहु बनिजारा ❀ हाइ हाइ सब करैं पुकारा
दमयन्ती देखो तब ताहीं ❀ बहुत लोग कचरे बन माहीं
दमयन्ती कह करत विलापा ❀ मैं बचि गई कौन वश पापा
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई ❀ दिना आठ दश पन्थ सिराई
नाम बाहुबल राजा आही ❀ उत्तम नगर चित्तवर जाही
तौन नगर महँ पहुँची आई ❀ लरिकन तहँ दुख दीन्ह बनाई
मनमें दुःख अहै तेहि भारी ❀ बावरिरूप फिरहि तहँ नारी
ऊपर महल भूप महतारी ❀ देखो तिन निज नयन निहारी
तब रानी यक सखी पठाई ❀ दमयन्ती कहँ सँग लै आई
तब पूंछेउ राजा महतारी ❀ आपनि व्यथा कहौ सुकुमारी

दो० दमयन्ती यहभाष्यऊ, हम मानुष अवतार ।
करौंकहांलगिबातबहु, बिधिदुखलिखालिलार ॥

कह्यउ रावकी तब महतारी ❀ रहौ गेह काहू सुकुमारी
दमयन्ती बोली यह बाता ❀ रहै धर्म रहिबे तहँ माता
होइ जौन शुचि सेवों चरणा ❀ ऐसी होइ रहिहौं तेहि शरणा
ब्राह्मण सों पूछति मैं बाता ❀ जाते सुख पावों मैं माता
सुनि राजा की मातु बखाना ❀ पुत्री कह्यउ सो बचन प्रमाना
मम कन्या जो अहै सुनन्दा ❀ रहौ तासु सँग कहि आनन्दा
तहां जाइ दमयन्ती रहई ❀ नलकी कथा सुनो जस अहई
यक बनमें दावानल लाग्यो ❀ तहँ यक सर्प जरे दुख पाग्यो
ऊंचेस्वर तब कीन्ह पुकारा ❀ हा बिधि मोकहँ कौन उबारा
मैं नारद को डसिकै लीन्ह्यो ❀ अचलशापमोकहँ ऋषि दीन्ह्यो

दो० चलिनहिसक्योंहततेहि, बनमें लागी आगि ।
कौन उबारै आनि अब, जरत सकौं जो भागि ॥

तबहिं भूपमन दया जो आई ❀ तुरत जाइ तेहि लियो उठाई

बोल्यो व्याल पैग गनि जाहू ❀ तब हमार होई निरबाहू
राजा चल्यो पैग गनि ताहू ❀ दशौ पैग बोले नरनाहू
दशौं पैग जब कह्यो भुवारा ❀ काट्यो नलके सांझ लिलारा
श्याम स्वरूप भूप है गयऊ ❀ दै यक वसन मन्त्र दुइ दयऊ
एक मन्त्र पैहौ निज रूपा ❀ एक मन्त्र ते ह्वैहौ भूपा
यहि विद्या भय तोहिं न होई ❀ यह गति तोरि कीन्ह मैं जोई
है ऋतुपर्ण अवधपुर राई ❀ ह्वै सारथी रहौ तहँ जाई
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ ❀ यह तबकहि करकोटक गयऊ
शापहु ते सो भयउ उबारा ❀ गयउ भूप ऋतुपर्ण के द्वारा

दो० बाहुकनामा सारथी, रहौ आपु के धाम।
होइ बिकट हय जौन तुम, करौं शुद्ध मम काम॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई ❀ भीम भूप मन चिन्ता आई
तबहीं विप्र समूह बोलाये ❀ नल दमयन्ती खोजि पठाये
बहुतक देश फिरे द्विज जाई ❀ वीरबाहुपुर देखेउ आई
विप्र सुदेव देखि गो ताहीं ❀ दमयन्ती मिलि जलके पाहीं
ब्राह्मण को दमयन्ती चीन्हा ❀ करि प्रणाम बहुरोदन कीन्हा
द्विजको लै पुनि निजगृह आई ❀ तबहिं सुनन्दा सब सुधि पाई
राज मातु तहँ दौरी आई ❀ दमयन्ती कहँ चीन्हेउ जाई
भूपमातु पूछी यह बाता ❀ आपन देश नाम कहु ताता
भीम भूप के प्रोहित अहई ❀ नाम सुदेव हमारो कहई
राय सुनन्दा नृप महतारी ❀ अहो प्रथम नहिं कीन्ह चिन्हारी

दो० सेवा कीन्हि हमारि बहु, नल राजा की बाम।
मैं अनचीन्हे तुमहिंसों, करवायों सब काम॥

भीमसों ब्राह्मण जाय सुनायउ ❀ राजा निजदल लोग पठायउ
कन्या को लै गयउ भुवारा ❀ राजा भीम बिदर्भ सिधारा
पाछे नल कर खोजन हेता ❀ ब्राह्मण बिदाकिये नृप जेता
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं ❀ तिनसों अब दमयन्ती कहहीं

बारह मास दुःख भो जाता ❀ जाइ कहेउ तब द्विज सब बाता
मोर स्वयम्बर कहियो जाई ❀ सुनत दुःख जो औरो पाई
आधोवसन तजो निशिनारी ❀ बनबिचदीखन असन विचारी
यहै बात सुनि रोवै जोई ❀ जानेउ नल राजा सो होई
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई ❀ ग्राम ग्राम देशन प्रति जाई
अवध नगर राजा गृहगयऊ ❀ तहां जाइके यह दुख कहेऊ

दो० सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ आस ।
यहै देखिकै ब्राह्मणहु, गे दमयन्ती पास ॥

दमयन्ती पूछत बिलखाई ❀ कहौ विप्र सब बात बुझाई
जननी पास गई तब नारी ❀ है उदास तब बचन उचारी
नलकी खबरि कही समुझाई ❀ मिलन केर सब करहु उपाई
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो ❀ बिप्र सुदेशहि तुरत पठावो
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा ❀ कहै जाइ सम्मत उपदेशा
जो आजुहिं नृप पहुँचहु जाई ❀ तो दमयन्ती पावहु राई
को नल बिन पहुँचै यहिवारा ❀ यही प्रतिज्ञा चित्त बिचारा
माता सब बिप्रन सन कहई ❀ तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई
सब यह हाल सुनावहु जाई ❀ है ऋतुपर्ण सभा जेहि ठाई
तब राजा बाहुक हँकराई ❀ एकदिवस महँ पहुँचउँ जाई

दो० आजुहि पहुँचउँ तहां सो, बरहुँ भीमजहि जाहि ।
आजु करौं पुरुषारथहि, देश बिदर्भहि आहि ॥

यह कहि बिप्र तुरन्त पठाये ❀ बाहुक रथहि साजि लैआये
राजा ते यह कहि समुझाई ❀ आजु बिदर्भ देउ पहुँचाई
सुनतहि राव भयो असवारा ❀ जोतेउ रथ सारथि तेहि वारा
छूटि बसन तब करते परेऊ ❀ लेन हेत राजा मन करेऊ
कहेउ सूत शत योजन राहा ❀ लौटत पर लीन्ह्यो नरनाहा
इन्द्र केर चेला नरनाहू ❀ बृक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहही ❀ फूल पत्र फल येते रहही

एकोतरसै फल अरु आता ❀ भूमी माहिं परे झरि पाता
यक संशय फल है तरु माहीं ❀ पांच कोटि दल हैं तरुवाहीं
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं ❀ फिरतबार जो ममभाते मनिहैं

दो० बाहुक हठ करिकै गनै, पत्र फूल फल ताहि ।
जो कछु भापत राज भो, सो सब तरु में आहि ॥

बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना ❀ अक्ष सुविद्या राव बखाना
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्ह्यउ ❀ गणितमन्त्र राजा सो लीन्ह्यउ
जब नल भूप मन्त्र यह पाये ❀ तबसों कलियुग चले पराये
पूरब विष ज्वाला तनुलागा ❀ तौन त्रासते कलियुग भागा
अस्थित भयउ बहेरे माहीं ❀ ताते पाप बहेरे आहीं
यह कौतुक तब मारग भयऊ ❀ पाछे देश विदर्भहि गयऊ
तब पूछो यक भीम भुवारा ❀ कहौ आप जू कहँ पगुधारा
है लज्जित नृप कहेउ बुझाई ❀ मिलन आपुकहँ आयन भाई
राजा बहुबिधि आदर कीन्हा ❀ उत्तम सदनवास तब दीन्हा
दमयन्ती तब रचो उपाई ❀ नल को चीन्हो मन में आई

दो० करन रसोई साज सब, बाहुक पास पठाय ।
पावक अरु जल ना दियो, कीन्हों ऐस उपाय ॥

पवन ते पावक आनेउ पानी ❀ पावकध्यानआगिनिपुनिआनी
दासी हरी देखि ब्योहारा ❀ दमयन्ती सों करत बिचारा
दमयन्ती दोउ बाल पठाये ❀ दासी सँग रथशालहि आये
देखि सुतन कहँ जलभरिनैना ❀ बाहुक ते दासी कह बैना
क्षुधावन्त बालक सुनि लेहू ❀ भोजन आनि कछुक इन देहू
तब बाहुक बालक कहँ दयऊ ❀ लै बालक अन्तःपुर गयऊ
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना ❀ निश्चय नल दमयन्ती जाना
तब दमयन्ती आई तहँई ❀ रथशाला बाहुक है जहँई
पछिले दुख की कथा चलाई ❀ सुनत रुदन कीन्हो नरराई
रानी कहो कृपा अब करहू ❀ माया तजौ रूप सो धरहू

दो० करकोटकको ध्यानधरि, जप्यो मन्त्र शत आनि ।
पूर्वरूप तब पायऊ, नलको तब पहिंचानि ॥

तब ऋतुपर्ण चकित लखिभयऊ ❋ बहुबिनती राजासन ठयऊ
क्षमा करौ सब दोष हमारा ❋ मैं माया तब जानि न पारा
तब नर भीम अनुग्रह कीन्हो ❋ नृप ऋतुपर्णहिं बहुसुख दीन्हो
नलहि पाइ तब हर्षित राजा ❋ आज्ञा भै तब बाजे बाजा
सो ऋतुपर्ण बिदा तहँ भयऊ ❋ अवधनगर तब राजा गयऊ
तब नरवर भूपति पगुधारा ❋ लै दल परिग्रह संग भुवारा
जा ऋतुपर्ण सों विद्या पाये ❋ तब पुष्करपर जुआ लगाये
मन्त्र यन्त्र नल जेते जाई ❋ हारो पुष्कर नृप को भाई
देश कोश साहस भण्डारा ❋ रथ गज द्रव्य जो हती अपारा
जीते नल पुष्कर जो हारा ❋ फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा

दो० दमयन्ती के दास तुम, कुटुँबसहितहौ आन ।
कलिदुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिं कहै को जान ॥

पुनि नल भे नैषध के राजा ❋ आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा
अर्द्ध वसन रानी लै दीन्हे ❋ अर्द्ध फारि जो नृप नल लीन्हे
राव देखि सो अतिदुख लयऊ ❋ बैठे नृप दुख बिसरि सुगयऊ
धार्मिकनल तब धर्महिं कीन्हो ❋ एक ग्राम पुष्कर को दीन्हो
ऐसे राजा दुख सो पाये ❋ पुण्यबीर राजा कहवाये
पुनि मुनि बृहदश्वहु अनुसारा ❋ सुनो युधिष्ठिर धर्मकुमारा
यहि के सुने पाप तनु भागै ❋ ब्याधि होय सो तन नहिं लागै
दुखी सुनै सबदुख मिटिजाई ❋ बन्दितहो त्यहि बन्दि छोड़ाई
राज्य ते हीन सो राज्यहि पावै ❋ जेहि दुख बहुत सुने क्षय पावै
होयहौ धर्मज तुमहुँ भुवारा ❋ जो यह कथा सुनेहु सुखसारा

दो० सुनि बृहदश्व बचन बर, धर्मराज सुख पाव ।
नशै पाप तनु सुख बढ़ै, नलचरित्र जो गाव ॥

इति श्रीवनपर्वणिनलोपाख्याननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

बहुदिन राजा तेहि बन रह्यऊ ❀ यकदिन नारद मुनि तहँ गयऊ
नारद कहि संवाद अपारा ❀ तीरथ बरत महातम सारा
तेहिअन्तर सुनिकै यह भयऊ ❀ लोमशऋषिपुनि तेहिथलगयऊ
राजा देखत पूजा कीन्ह्यउ ❀ अर्घपाद्य दै आसन दीन्ह्यउ
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई ❀ मोकहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई
यक दिन इन्द्रलोक पगुधारा ❀ देखा अर्जुन सभा मँझारा
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा ❀ परमअनन्दित आहि कुमारा
पारथ हित चिन्ता तुम पाये ❀ सुरपति ताते हमहिं पठाये
कहन कुशल पारथ की राजा ❀ हम इतको आये यहि काजा
सुनहु तहां हम जावैं राऊ ❀ राजा सुनत परम सुख पाऊ
सहित बन्धु नारी नर नाथा ❀ तीर्थराजको चलि मुनि साथा
धौम्यनाम प्रोहित सँग लागे ❀ चलेजात मन अति अनुरागे
तीर्थराज के दर्शन कीन्हे ❀ परम हर्ष भूपति मन लीन्हे
औरौ पुनि तीरथ हैं जेते ❀ परसे कहत न आवैं तेते
नैमिष बन काशी अस्थाना ❀ गया सुरसरी आदि बखाना
सब तीरथ परसे तब राजा ❀ चित उदवेग धनंजय काजा
गन्धमदन पर्वत भे पारा ❀ बद्रिक आश्रम गये भुवारा
तीरथ बिन्दुसरहिं तब देखा ❀ नाना बन पर्वत बहु लेखा

दो० तीरथ बिन्दुसरहि पुनि, पाँचौ जने अन्हाइ ।
पुष्प पत्र फल शोभितहि, देखत तरुवर जाइ ॥

पूर्व ओर से पवन उड़ाई ❀ पुष्प एक तेहि सरमहँ धाई
अहै सहसदल पुनि तेहिमाहीं ❀ सुन्दर बहुत सुगन्धित आहीं
जल ते फूल द्रौपदी लीन्हा ❀ भीमसेन के आगे कीन्हा
आह सो फूल देवके लायक ❀ सुनो बृकोदर हो मम नायक
वेगि अनुग्रह मोपर कीजै ❀ यकशतपुष्प आनि मोहिं दीजै
सुनिकै वचन बृकोदर कहई ❀ देहौं आनि शोच जनि लहई
धनुषबाण कर लैकर धाये ❀ जौने दिशि सों पवन ते आये

चलो सिन्धुसम भीम रिसाई ❀ गँधमादन गिरि देखेउ आई
सो पर्वत गह्वर बन भारी ❀ नाना सर्प रहत बिषधारी
नाना मोर नृत्य तहँ करई ❀ कोकिलकुहकिहरषिजिय भरई
दो० छैयोऋतु तहँ प्रकट शुभ, करत भँवर गुञ्जार ।
अमृतसम फल लागयऊ, हरष्यो पवनकुमार ॥
बहु बन भीतर हरषि अपारा ❀ कुन्तीसुत जो पवनकुमारा
तेहि बनविहरतभीम सो फिरहीं ❀ नाद सिंह सम पुनि पुनि करहीं
हने ग्राह मृग गेंड़ा भारी ❀ क्रीड़ाकर इमि बनहिं मँझारी
भगे जन्तु पुनि बन के नाना ❀ सिंह भालु मृग सबै पराना
गरजे भीम जन्तु सब भागे ❀ कदलीवन देख्यउ यक आगे
महागँभीर सो वह बन अहई ❀ क्रीड़ित भीम तहां अस रहई
तोरेउ बृक्ष ताहि बन नाना ❀ मिष्ट पाक फल करि सो पाना
गरजै भीम करै फल पाना ❀ जीव जन्तु सब शङ्का माना
तेहि बन माहँ रहैं हनुमाना ❀ शब्द सुनत सो करेहु पयाना
हनूमान तब देह बढ़ावा ❀ उज्ज्वलरूप अनूप सुहावा
दो० बोले कुबचन भीमसों, बन तैं कियो उजार ।
मोरे हाथहि मरण तुव, भाष्यो पवनकुमार ॥
यह कुबेर बन सब जगजाना ❀ करत भोग यह कह हनुमाना
हनू संग जो बन रखवारा ❀ दुओ बीर बलपुञ्ज जुझारा
तिन सब आइ कही असबाता ❀ भयो भीम सुनि क्रोध ते ताता
धनुषबाण पुनि करलै लीन्हेउ ❀ युद्ध बृकोदर बहुबिधि कीन्हेउ
हते भीम जे बन रखवारा ❀ तब कुबेर पहँ जाइ पुकारा
मानुष एक गहे धनुबाना ❀ कदलीबन कीन्हेउ खड़काना
हनूमान तेहि बरजन ठाना ❀ सुना कुबेर आपु जो काना
आइ कुबेर हनू समुझाई ❀ करो बिरोध न तुम कपिराई
देखौ तुम यह मानुष नाहीं ❀ मानुष बेष देव कोउ आहीं
लेहु फूल खावो फल नाना ❀ जेतिक मनमहँ होइ सुजाना

दो० हनूमान यह सुनतही, क्रोधै बहुत बढ़ाइ।
फूल काज विधि भीमसों, कीन्हों ऐस उपाइ॥

हनूमान बोले यह बानी ❀ सुनिये भीम बचन अस जानी
रामकाज लगि मैं यकबारा ❀ लङ्का बीर बहुत संहारा
सागर नांघि लङ्क में जारा ❀ महिरावण पाताल सँहारा
यहै नेम मेरे मनमाहीं ❀ मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं
इतना प्रेम आप करिलेई ❀ पाछे फूल जान लै देई
यह हमार लंगूर जो आहीं ❀ ताते बात कहत तोहिं पाहीं
भूमि ते मम लंगूर उठावो ❀ लैकै फूल जान तब पावो
सुनतहि भीम कोप जिय गयऊ ❀ टारनचित्त लँगूर सो चलऊ
बायें हाथ गह्यउ तब ताहीं ❀ नेकु न डोला सो महि नाहीं
फिरि बल कीन्हो भीम जुझारा ❀ बज्र लँगूर टरत नहिं टारा

दो० गहेउ गदा कर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहिं।
दोनों कर लंगूर सो, गहो आशु करमाहिं॥

हारेउ भीम करेउ बहु करणी ❀ कपि लंगूर न डोलत धरणी
भीमसेन यह मन में जाना ❀ महावीर ये हैं हनुमाना
हारो भीम ठाढ़ होइ रहेऊ ❀ हर्षि गात कपि बोलत भयऊ
ह्वै प्रसन्न भाष्यो हनुमाना ❀ मांगो बर जो तुम मनमाना
यह सुनि भीम कहन अस लागे ❀ अमृतबचन हनुमान के आगे
जब कौरव कहँ मारन जाई ❀ तब कपि करियो मोर सहाई
रामकाज कीन्ह्यउ जिमि भाई ❀ तैसेइ होउ हमार सहाई
हनूमान बोले यह बाता ❀ भीमसेन सुनिये यह ताता
पारथ के रथपर हम रहिहैं ❀ रक्षा करत अस्त्र सब सहिहैं
ऐसे बचन कहे हनुमाना ❀ भीमसेन सुनि बहु सुखमाना

दो० यह रहस्य राजा सुनो, हनू भीम व्यवहार।
दूनों पवनपुत्र बल, कह सुनि हृदय बिचार॥

भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना ❀ भीमसेन लखि बहु सुख माना

लेहु फूल जेते मन भावै ❀ यहै हनू तब बात सुनावै
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ ❀ अपने गृह कुवेर तब गयऊ
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं ❀ तोरत फूल जौन मन माहीं
बिहरत भीम हरषि बन माहीं ❀ सुमन सुगन्धित तोरेउ आहीं
भीमसेन बन में बहु गरजैं ❀ हांक सुनत पशुपक्षी लरजैं
व्याघ्र सिंह औ गज मतवारे ❀ गैंड़ा महिष अनेकन मारे
भीमसेन को शङ्का भयऊ ❀ भागि जन्तु तेहि बनते गयऊ
जनमेजय तब हर्षित भयऊ ❀ वैशम्पायन कथा सो कह्यऊ

दो० भीमसेन मन हर्ष अति, लीन्ह फूल करि हेत ।
वैशम्पायन कहत मे, सुनिये भूप सचेत ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
भीमहनुमत्संवादोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ ❀ कहँ मम बन्धु वृकोदर गयऊ
जिय अकुलाइ मनों उर दरकै ❀ कुशकुन देखि वाम अँगफरकै
निशिस्वपना लखि बिस्मयराऊ ❀ कुशलक्षेम विधि भीम मिलाऊ
कहा धौम्य यह वचन बिचारी ❀ घटउत्कच सुमिरन अनुसारी
घटउत्कच आये नृप पासा ❀ का आज्ञा यह वचन प्रकासा
जब राजा यह बोलत भयऊ ❀ गँधमादनगिरि भीम जो गयऊ
नाना कुशकुन देखियत भाई ❀ ताते चितचिन्ता अधिकाई
तीनिउ बन्धु पुरोहित रानी ❀ राजा कह यह बचन बखानी
सबको सुत लै चलिये तहँवां ❀ गँधमादनगिरि भीमहै जहँवां
सुनत हरषि उठिकस्यो प्रणामा ❀ जो आज्ञा कहिये सो कामा

दो० पांचो जने चढ़ाइ पुनि, पीठि आपने आन ।
गँधमादनपर भीम जहँ, कीन्हे तुरत पयान ॥

नाना बन तहँ देखत जाई ❀ घटउत्कच के ऊपर राई
बहु इतिहास पन्थकर अहई ❀ लिखे न जाइँ सूक्ष्म सो कहई
गँधमादन पर्वत जेहिठाई ❀ धर्मराज प्रविशे तहँ जाई

देखि धर्मसुत मन हरषाई ❀ करमें धनुष भीम के आई
अगणित रणमहँ मारे वीरा ❀ वीर वृकोदर अभय शरीरा
देखेउ राजहिं पवनकुमारा ❀ करि प्रणाम तब बचन उचारा
भीमहि देखेउ अद्भुत रचना ❀ लिये धनुषशर बोलेउ बचना
समर सहाय देव कोउ नाहीं ❀ असससाहस सुत तोहिं न चाहीं
सुनत भीम बहु लज्जा पाये ❀ घटउत्कच तब बचन सुनाये
आज्ञा कौन मोहिं यहि ठाऊं ❀ रहौं कि निज आश्रम में जाऊं
आज्ञा पाय चरण शिरनायउ ❀ अपने थल घटउत्कच आयउ

दो० रहे युधिष्ठिर तौन थल, चारि बन्धु यकसाथ ।
करत हर्ष बहुतै बनहिं, धर्मराज नरनाथ ॥

एक दिवस तहँ अचरज भयऊ ❀ मृगया हेतु वृकोदर गयऊ
धौम्यपुरोहित लोमश तहँवां ❀ गे मज्जन हित सरवर जहँवां
तीनों बन्धु द्रौपदी साथा ❀ आसन पर बैठे नरनाथा
जरा नाम यक दैत्य सो अहई ❀ मनहिंबिचारि त्यहीसन कहई
तहँ तीनों जन पीठि चढ़ाई ❀ पवन बेग लै चला उड़ाई
धर्मराज बोले यह बानी ❀ पापकर्म कह कर अज्ञानी
हमको लियेजात केहिकाजा ❀ बहुतहि ताहि बुझायउ राजा
धर्मकथा सुनि भूपति पाहीं ❀ हँसेउ दुःख सुनि मानत नाहीं
चोर धर्म कह लम्पट नाना ❀ निसरतकाम न सबकोउजाना

दो० छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ ।
पर्वत कन्दर घोर बन, दानव लीन्हे जाइ ॥

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा ❀ ऊंचे स्वर बहु करी पुकारा
येहो भीम गयो कहँ भाई ❀ परो दुःख हम ऊपर आई
आरत नाद जबै सुनि पायो ❀ लैकर गदा वृकोदर धायो
दूरिहि ते तब भीम निहारा ❀ लिये जात सो धर्मकुमारा
तब सहदेव भूमिपर आयो ❀ कूदि हांक तब ताहि सुनायो
तबहिं वृकोदर धावत आवा ❀ गदा हाथ करि गर्जि सुनावा

दैत्य अशङ्क मानि नहिं शङ्का ❀ हांकत बीर क्रोध करि बङ्का।
तबहिं द्रौपदी धर्मकुमारा ❀ पीछे नकुल बीर बरियारा
इनकहँ तुरत भूमि बैठावा ❀ दैकर हांक भीम पर धावा
भीम कही निज मरण के काजा ❀ पापी लै भाजे सुतराजा

दो० आजु मारितोहिं एकशर, पठवों यमके पाहिं ।
यहकहि गदाघाव तेहि, दीन्होमस्तकमाहिं ॥

गदाघाव तब भीम सँभारा ❀ तबहीं खल यक बृक्ष उपारा
मारो बृक्ष भीम पर जाई ❀ मारो गदा भीम पलटाई
दोनों बृक्ष युद्ध परिहारा ❀ मल्लयुद्ध तहँ पुनि बिस्तारा
दोनों बीर लरैं बरजोरा ❀ करैं युद्ध मानो घनघोरा
कम्पमान धरणी तहँ होई ❀ प्रलय काल आवै जनु सोई
मुष्टिक एक भीम तब मारा ❀ छांड़्यो दैत्य प्राण तेहिबारा
परम हर्ष भो धर्मकुमारा ❀ और अनन्दित भे परिवारा

दो० आशिर्बादहि देत मुनि, राजा सूंघत माथ ।
लोमशऋषिपूजतभुजहिं, हरषि आपने हाथ॥

परम हर्ष राजा तब पायो ❀ कहि संक्षेपहि भारत गायो
पुनि सब मिलिकै कीन्ह बिचारा ❀ बद्रिकआश्रम गे त्यहिबारा
नाना पुष्प रम्य अस्थाना ❀ रहे हर्षि बन राव लोभाना
संवत चारि बीति इमि गयऊ ❀ पञ्चम बर्ष उपस्थित भयऊ
यही प्रकार रहे बन राऊ ❀ धौम्यआदि मुनि भोजन पाऊ

दो० नाना ज्ञानकथा तहाँ; राजा करहिं प्रकास ।
चारि बन्धु हैं संग महँ, और द्रौपदी पास ॥

इति वनपर्वणिजरादैत्यवधबदरिकाश्रमप्रस्थानं
नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

कछुदिन राव बीति इमि गयऊ ❀ धौम्य पुरोहित ते नृप कहाऊ
पारथ बिनु देखे मुनिराई ❀ मम चित चञ्चल रहै सदाई
पञ्चम बर्ष खोज अब करई ❀ अर्जुन देखौं जलदृग ढरई

पूरव कह्यो पार्थ यह बानी ❀ पञ्चम वर्ष मिलौं त्वहिं आनी
धवलाचल पर दरश हमारा ❀ निश्चय पैहौ धर्मभुवारा
चलौ सो परवत देखौ जाई ❀ पारथ दरश हेत तहँ राई
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी ❀ तीनों बन्धुरु लोमश ज्ञानी
कीन्ह विचार चले सब तहँवां ❀ परवतधवल आइ पुनि जहँवां
लोमश धौम्य संग त्रयभाई ❀ ज्ञानकथा बहु बरणत जाई
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा ❀ पूरण बारि राव अवरेखा
सोहै मालपृष्ठ तेहि पासा ❀ धवला पर्बत परमप्रकासा
फटिकशिला तहँ देखत भयऊ ❀ दानवघोर जहां पुनि रह्यऊ

दो० रक्ष यक्ष दानव बहुत, सब कुबेरके दास ।
सो पर्व्वत देखौं तहां, पुरी कुबेर प्रकास ॥

देखि भीम तहँ राक्षस जेते ❀ बेगहि भीम सँहारेउ तेते
तबहिं कुबेर मरम सब पायो ❀ युद्ध हेतु तब आपु सिधायो
तब प्रणामकरि धर्मकुमारा ❀ शुद्ध बचन कहि युद्ध निवारा
हर्षित ह्वै कुबेर पहँ गयऊ ❀ धर्मराज तेहि पर्वत रह्यऊ
अर्जुन देवलोक महँ रह्यऊ ❀ अस्त्र अनेक सुरनते लह्यऊ
देवन केर शत्रु जे पाये ❀ मारि सकल यमलोक पठाये
जासों देव युद्ध मों हारा ❀ सो मारे सब पाण्डुकुमारा
होइ सन्तुष्ट देव वर दयऊ ❀ कीट अस्त्र तब बासव दयऊ
समय एक तहँ सो सुर आई ❀ बैठि सभा महँ सभा बनाई
यम कुबेर जलपति वैसन्दर ❀ बैठ और अनेक मुनिन्दर

दो० तब अर्जुन कहँ गोदलै, बैठे देव भुवार ।
नृत्यकरत तहँ नृत्यकी, हर्षित सभा मँझार ॥

नाम उर्वशी देव अप्सरा ❀ नृत्यकरत सो सभा मांझरा
बीणा ताल मृदङ्ग बजाये ❀ नाना रूप नृत्य लय लाये
इन्द्र गोद सोवत बलवाना ❀ मानो दूसर इन्द्र समाना
पारथ देखि उर्वशी नारी ❀ पीड़ित कामस्वरूप निहारी

काम भाव तेहि अवसर भयऊ ❋ नृत्यगीत बहुविधि तेहि ठयऊ
प्रीति सहित अर्जुन तेहि हेरा ❋ सो सुरपति देखेउ तेहि बेरा
जो उर्बशी तुमहिं बश करेऊ ❋ तौन त्रिया सुत तुमकहँ दयऊ
अर्जुन कहो जाय जो हारा ❋ इनते प्रकटो बंश हमारा
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना ❋ अपने गृह सुर कियो पयाना
सुरपति गे अपने अस्थाना ❋ निजथल गे पारथ बलवाना
अर्द्धनिशा बीती सो आई ❋ तेही समय उर्बशी आई
अर्जुन के मन्दिर पगु धारा ❋ देखे लगे कपाट दुआरा
बहुत यतनकरि खोलि केवारा ❋ अर्जुन कहँ त्रैबार पुकारा

दो० चेत पाइ अर्जुन तब, मन में करैं बिचार।
अर्द्धरात्रि किमि उर्बशी, आई निकट हमार॥

कहै धनञ्जय बचन बिचारी ❋ ममढिग केहिहित आई नारी
अर्द्धरात्रि बीती पुनि गयऊ ❋ निद्रा बश्य देव सब भयऊ
जो कछु दुख है चित्त तुम्हारा ❋ कहो प्रात सो करौं उधारा
राति जाउ अपने गृह नारी ❋ पुरुष पियार एक की नारी
पारथ बात सुनी सो नारी ❋ मोहिं मदन कर है अनुसारी
हृदय समानो रूप तुम्हारा ❋ कामब्यथा तन जरत हमारा
सुनत धनञ्जय बिस्मयमाना ❋ त्राहि त्राहि करि मूंदेउ काना
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी ❋ इन्द्र अप्सरा मातु हमारी
ऐसि बात अपने मुखमाहीं ❋ भूलिबात जनि कहु मोहिं पाहीं
सुनत उरबशी ब्याकुल भयऊ ❋ दुःखित ह्वै पारथ ते कहऊ

दो० हम आईं तुम आशकरि, सो तो भई निराश।
जानेउँ अहो नपुंसक, यह कहि बचन प्रकाश॥

तब यह शाप पार्थ कहँ दीन्हा ❋ ह्वै उदास निज गृह मग लीन्हा
पारथ चित्त भयउ परितापा ❋ पाप किये बिन पायउँ शापा
होतहि प्रात उदित भे भाना ❋ बैठी सभा इन्द्र सुर नाना
प्रात होत पारथ तहँ जाई ❋ हाथ जोरि तब कह्यउ बुझाई

कालिह नृत्य जो नारी कीन्हा ❀ निशिको शाप हमैं तेहिं दीन्हा
होउ नपुंसक दीन्हो शापा ❀ ताते मो मन भा संतापा
सुनिकै इन्द्र महादुख पावा ❀ तुरत सभामहँ ताहि बुलावा
इन्द्र कहैं नारी कह कीन्हा ❀ मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा
सुनत उर्वशी लज्जा पाई ❀ हाथ जोरि तब बिनय सुनाई
मेरो शाप होय उपकारा ❀ क्रोध न कीजै देव भुवारा

दो० होइ यक वर्ष नपुंसक, नृप बिराटके देश ।
संवत बीते शाप ते, होइहौ मुक्त सुवेश ॥

यह बर तब पारथकहँ दीन्हा ❀ अपने भवन गमन तब कीन्हा
तबहिं इन्द्र पुत्रहि समुझाई ❀ देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई
कुण्डल कवच इन्द्र तब दीन्हों ❀ भाषे मुनि अर्जुन शुभ कीन्हों
मिलि सब देव शंख यक दीना ❀ जाके नाद शत्रु बलहीना
पांच वर्ष सुरपुर महँ भयऊ ❀ पारथ तबहिं इन्द्रसों कहाऊ
आज्ञा दीजै इन्द्र भुवारा ❀ परशौं पद कह धर्मभुवारा
सुनिकै इन्द्र तुरत बर दयऊ ❀ तब रथ मातलि साजत भयऊ
भेंटि सकल सुर चढ़े बिमाना ❀ मृत्युलोक कहँ कियो पयाना
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवां ❀ धवल शिखरपर राजा जहँवां
धर्मराज पारथकहँ देखयउ ❀ पुनिनिजजन्मसुफलकरिलेखयउ
पारथ जाय चरण नृप गहाऊ ❀ पूछी कुशल हर्ष बहु भयऊ

दो० सर्वकथा बिस्तार से, पारथ कियो बखान ।
राजा आगे सहित बिधि, बरण्यो बन्धु सुजान ॥

जेहिबिधि शंकर दरशन पाये ❀ जिमि किरात है हर तहँ आये
जैसो युद्ध भयो तेहि ठांवा ❀ सुरपति जैसे दरशन पावा
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ ❀ जैसे अस्त्र लाभ तहँ भयऊ
शाप उर्वशी जिमि बर दीन्हा ❀ जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा
धर्मराज कहँ सर्व जनायो ❀ राजा धर्म हर्ष तब पायो
तेही समय इन्द्र तहँ आये ❀ धर्मराज ते कहि समुझाये

सर्वजीत बर जबहीं दीन्हा ❀ अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ ❀ धर्मराज आनन्दित भयऊ
पुनियहकथासो ऋषिहि सुनाये ❀ घटउत्कच तेहि अवसर आये
करि प्रणाम सब के पद बन्दे ❀ कहे बचन तब परम अनन्दे
दो० देश छोड़ि करि राजा, आये दूरि पयान।
चलौसबैकाम्यकबनहिं, हर्षित भये सुजान ॥
सुनत बात यह सब मन भाये ❀ तब सबकहँ फिरि पीठि चढ़ाये
सबको लै काम्यक बन आये ❀ रहे तहां आनँद बहु पाये
काम्यकबनहिं बहुतदिन गयऊ ❀ परमअनन्दित सब जन रह्यऊ
तहां बहुरि आये यदुनाथा ❀ मिले आइ पाण्डवसुत साथा
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा ❀ द्वारावती गमन पुनि कीन्हा
अभिअन्तर तब कथा सुनाये ❀ मार्कण्डेय महामुनि आये
बहु संबाद तहां मुनि कीन्हों ❀ सो संक्षेप कहन मैं लीन्हों
ऐसे पाण्डव बन महँ रह्यऊ ❀ कथाप्रसंग धर्म तब कह्यऊ
दो० पञ्च बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाण्डु बनमाह।
भारत पुण्य कथा यह, जनमेजय नरनाह ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणिअर्जुन
वरप्रोक्तकाम्यकवनआगमनन्नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ऐसे पाण्डव बन सुख पाये ❀ दूत जाय कुरुनाथ सुनाये
काम्यक बन महँ पांचो भाई ❀ तबहिं बिचार करैं शतभाई
करण दुशासन शकुनी राजा ❀ मन्त्र कुमन्त्र करैं सबकाजा
बनोबास पाण्डव दुख नाना ❀ बलकलबसन करैं परिधाना
माथे जटा तपी के भेशा ❀ देखिय शत्रु कियो उपदेशा
देखब जाइ द्रौपदी पासा ❀ सब मिलिकै करिबे उपहासा
दुखमें शत्रु देखिये राई ❀ याते आनँद और न भाई
दुर्योधन दल साज करायो ❀ भीषम द्रोण भेद नहिं पायो
और सबै रथ पैदर साजा ❀ चले हर्षि दुर्योधन राजा

काम्यक वनमें पहुँचे जाई ❀ देखत ताहि हरष बहुपाई
दो० काम्यकबन देखा तबै, एक सरोवर आहि ।
देवरु किन्नर गन्धरव, क्रीड़करैं तेहि माहि ॥
देव चरित्र सुनहु सज्ञाना ❀ कुरुपतिको होइहै अपमाना
नाम चित्ररथ गन्ध्रव राऊ ❀ स्त्री सहित सरोवर आऊ
पत्नी सहित सो क्रीड़त भयऊ ❀ वाही थल दुर्योधन गयऊ
दुर्योधन लखि लज्जा पायो ❀ क्रोधवन्त गन्धर्व सुनायो
अरे मूढ़ त्वहिं यह हंकारा ❀ ताकर फल तुम लहउ भुवारा
हाथ अस्त्र वह गन्ध्रव नाना ❀ दियो तिनहिं आज्ञा परमाना
मारु मारु यह आयसु दीन्हें ❀ अस्त्र गहे सो धरि सब लीन्हें
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई ❀ गन्ध्रव मानुष सम नहिं कोई
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा ❀ यहलखिकरणक्रोधअतिकीन्हा
हाथ अस्त्र लैके तब धाये ❀ गन्ध्रव दल में बाण चलाये
दो० गन्ध्रव दलमें बाण बहु, भयो भूमि अँधियार ।
ऐसे मारे करण बहु, क्रोधित बाण अपार ॥
गन्ध्रव सबै पराभव कीन्हे ❀ क्षत लागे तब जात न चीन्हे
मारेउ करण खैंचि कर तीरा ❀ चल्यउ रुधिर गन्धर्व शरीरा
अस्त्र अनेक करत परिहारा ❀ रुण्ड मुण्ड गन्धर्व सँहारा
काहू हाथ कटेउ अरु पाऊ ❀ काहू केर हृदय महँ घाऊ
रुधिर नदी गन्ध्रवरण भयऊ ❀ भागे सबै मार्ग तब लयऊ
भागे सब कहुँ खोज न पाये ❀ पाछे देखत करण सिधाये
देखि पराभव इन्द्र कुमारा ❀ हाथ धनुष शर तब परचारा
तब गन्धर्व दुशासन मारा ❀ परो दुशासन भुवि असभारा
रथते दुश्शासन भुइँ आये ❀ लज्जावन्त महा भय पाये
करणके संग तबै रणठाना ❀ महाबीर दोउ एक समाना
दो० क्रोधवन्त गन्धर्व पति, मारे बाण प्रचण्ड ।
करणसँभारिसक्यउनहीं, कटे छत्र अरु दण्ड॥

मारे रथ सारथि संहारा ❀ हाथ धनुषगहि करणभुवारा
मारे तब गन्ध्रब शर नाना ❀ शरनतेज रजभयो निदाना
कुरुदल सबै पराभव कीन्हा ❀ दुर्योधनहिं बांधि पुनि लीन्हा
पाण्डव कर बैरी मैं जाना ❀ रहौ तोहिं दुख देहौं नाना
कुरुपति कहँ बांधेलिय जाई ❀ देखेउ भीमसेन तब धाई
देखि हरषि मनआये तहँई ❀ रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहँई
जोरि हाथ राजासन कहई ❀ ऐस दुःख दुर्योधन सहई
दुर्योधनहिं बाँधि लै जाई ❀ चलिकै राज्य करौ सबभाई
महा अधर्मि शत्रु भो नाशा ❀ मिल्यउ राज तुव बिनहिंप्रयाशा
तबहिं राव यह कह्यो बखानी ❀ कैसे नाश भयउ अज्ञानी

दो० कौन प्रकारहि हेतु कहु, कैसे शत्रु विनाश ।
सो सब मम आगे कहौ, कीन्हौं भीम प्रकाश ॥

कही भीम राजहि समुझाई ❀ गा अखेट दुर्योधन राई
बिधि रचनाते गन्ध्रब आयउ ❀ युवतीसँग सरक्रीड़ा ठायउ
देखा तहँ दुर्योधन राऊ ❀ गन्ध्रब गण रण तहां उपाऊ
करण आदि सेना सब भागी ❀ छांड़ो राजहि परमअभागी
गन्ध्रब राज महाबल करेऊ ❀ दुर्योधनहि बांधि लै गयऊ
सुनत धर्मसुत विस्मय भयऊ ❀ भीमसेन ते यहि बिधि कह्यऊ
नीति शास्त्र नहिं जानत अहहू ❀ मूरुख रूप सदा तुम रहहू
तब पारथ ते यह कहि राजू ❀ लेउ छड़ाइ सुयोधन आजू
बन्धु बन्धुसों कलह प्रमाना ❀ बन्धु बन्धुको बल जगजाना
तुमहीं तुरत लयावहु भाई ❀ गन्ध्रब कहँ तुव दे बिचलाई

दो० जो गन्ध्रब छांड़ै नहीं, तौ तेहि करब सँहार ।
मारि निपातौ धरणि पर, कुरुपति लेहु उबार ॥

आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई ❀ हांक दई गन्धर्बहि आई
देखत पारथ गन्ध्रब नाना ❀ शीघ्रवन्त तब करेउ पयाना
तब बिचार गन्धर्बन कीन्हा ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हा

तब पारथ अस बाण चलाये ❀ भूमि स्वर्ग सोपान बनाये
बाणनपर ह्वै राजा आये ❀ धर्मराज के दरशन पाये
धर्मराज यह कहै सो लीन्हा ❀ यहगतितुमहिंकहौक्यहिकीन्हा
ऐसो गर्व करिय जनि भाई ❀ जाते अपनो मान गँवाई
दुर्योधन सुनि लज्जा पाई ❀ मरणहेत कछु करेउ उपाई
तबहीं राज बोध बहु कीन्हा ❀ मरम बचन कहि धीरज दीन्हा
हम तुम भाई एक समाना ❀ तोर मोर एकै अपमाना

दो० हम तुम एकै बन्धु हैं, ताते कहा बिचार ।
यह सुनि पायो सुखअमित, पापी कुरुभुवार ॥

राजा कह यह बचन सुनाई ❀ मांगो बर पावउ तुम भाई
धर्मराज बोले मुसुकाता ❀ दुर्योधन नृपसों यह बाता
अवसर पाइ सुनो नृप जबहीं ❀ तुमते बर मांगब हम तबहीं
कह्यउ सत्य राजा तब गयऊ ❀ कुरुदल तेजहीन सब भयऊ
राजा धर्म वहीं बनबासा ❀ पूछहिं तपसिन सहित हुलासा
केतक काल रहे सुख पाई ❀ एकदिना जयद्रथ तहँ आई
अर्जुन भीम रावके संगा ❀ माद्रीसुत दूनौ रण रंगा
मज्जन हेतु सरोवर जाई ❀ तेही समय दुष्ट सो आई
देखि अकेलि द्रौपदी रानी ❀ लै हरिकै भाग्यउ अज्ञानी
तौने समय पार्थ तहँ आये ❀ देख्यो चरित क्रोध जिय पाये

दो० भीम सहित पारथ बली, भेंट्यउ दुर्मति जाय ।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय ॥

दूनौ कर शिर केश उपारा ❀ बांधे बोझ समान भुवारा
श्वासा हीन रह्यउ तनुमाहीं ❀ ऐसे लाय धर्मसुत पाहीं
राजा देखि दया मन भयऊ ❀ छांड़िय यह आज्ञा नृप दयऊ
जो कोइ पाप करै जग माहीं ❀ बिनभुगते छूटत सो नाहीं
धर्मकथा कहि ताहि सुनायो ❀ दया धर्म भाषै मनलायो
पापकर्म को फल तब पावै ❀ नरक माहिं परलोक नशावै

ऐसे ज्ञान बोध समुझावा ❀ करि प्रबोध अस्नान करावा
तब आज्ञा दै धर्म नरेशा ❀ गयउ दुर्मति सो अपने देशा

दो० धौम्य नाम प्रोहित तहां, धर्मराज के साथ।
बारह संवत पूरभे, कहौ बात नरनाथ ॥

अब अज्ञात बरष परमाना ❀ कहां रहउँ सो करहु बखाना
कुरुके दूत फिरैं सब ठाऊ ❀ कहां दुरौं सो कहौ उपाऊ
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं ❀ बारहवर्ष फेरि बन जाहीं
तौ हमार दुख छूटत नाहीं ❀ रहिये गुप्त कौन बन माहीं
यह बिचारि मन रोदन कीन्हा ❀ हमैं बिधाता बहु दुख दीन्हा
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई ❀ धर्मराज ते कह समुझाई
तुम तौ धर्मरूप है राऊ ❀ बिपतिकाल कादर कस आऊ
सुख दुख व्यापक है संसारा ❀ चित्त धीर्य करु पाण्डुकुमारा
माया बिष्णु गुप्त है राजा ❀ गुप्तरूप देवन कर काजा
बामनरूप छल्यउ बलिराऊ ❀ देवकाज कीन्ह्यउ परभाऊ

दो० रामरूप माया धनी, रावण कीन्ह सँहार।
चित चिन्ताकेहि हेतकर, सुनिये धर्मभुवार ॥

यहि प्रकार प्रोहित समुझाये ❀ तबहिं धीर राजा मनआये
पांच बन्धु अरु प्रोहित संगा ❀ करत तहां बहुकथा प्रसंगा
जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा ❀ पार्थ भीम अपमान करावा
लाजवन्त हर सेवा ठाना ❀ गङ्गाधर को कीन्हों ध्याना
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ ❀ पाइब जीती मन महँ धरेऊ
होइ प्रसन्न तब शंकर आयो ❀ मांगु मांगु बर बचन सुनायो
करि परणाम जयद्रथ कहई ❀ जीता पांच पाण्डवन चहई
गङ्गाधर बोले यह बाणी ❀ पारथ तन मन शारँगपाणी
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ ❀ पारथ कहँ जीते नहिं पाऊ
यह बर तौ गङ्गाधर दीन्हों ❀ जयद्रथ हृदय हर्ष बहु कीन्हों
यह बनपर्व कही मैं गाई ❀ रहे बनै महँ धर्मजराई

जे फल तीरथ करि अरु दाना ❋ सिन्धु आदिसरिता अस्नाना
जो केदार बद्रिकाश्रम जाये ❋ जगन्नाथ के दरशन पाये
नाना दुख व्रतकरि जो सहई ❋ सो बनपर्व सुने फल लहई

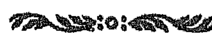
दो० कहि वनपर्व कथा यह, सुनु जनमेजय राय ।
पुण्य कथा श्रीभारत, सबलसिंह कहि गाय ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि गन्धर्वदुर्योधनयुद्धवर्णनन्नामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति वनपर्व समाप्तम् ॥



महाभारत



विराट-पर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जिसमें

द्रौपदी-सहित युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का व्यासोपदेश से नृप विराट के यहाँ सैरंध्री, कंक, जयन्त, बृहन्नला, सेनी और बाहुक नाम से दासवत् रहना, जयन्त द्वारा मल्ल-वध तथा हस्तीमदनाश पुनः सैरंध्री का रूप देख कीचक का आसक्त होकर जयन्त द्वारा मृत्यु, धेनु-हरण को जान कर बृहन्नला द्वारा समस्त कौरव आदि वीरों का परास्त होना, अभिमन्यु-विवाह, श्रीकृष्ण का पाण्डवों को पाँच ग्राम देने के लिये समझाना और उसको न मानकर महाभारत रचने आदि की कथा वर्णित है



लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बिपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विराटपर्व ॥

दो० कहे सकल वनपर्व के, ऋषि नरेश को ठाट ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषत पर्व बिराट ॥
धर्मराज तब विकल ह्वै, सुमिर्यो व्यास मुनीश ।
नाशनदासकलेशहित, आये जिमि जगदीश ॥

दण्ड प्रणाम नृपति उठि कीन्हा ❀ मुनिबरविहँसि लायउरलीन्हा
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी ❀ परसेउ चरण व्यासके आनी
आय दीन मृग चर्म बिछाई ❀ चरण धोय बैठायो आई
पातन को व्यजना कर लीन्हों ❀ पवनकुमार पवन तब कीन्हों
भोजन तब लै आई रानी ❀ नकुलदीन्ह जलभाजनआनी
करिभोजन ऋषि शयन अनन्दे ❀ सहदेव आय चरण तब वन्दे
कह्यो राउ नयनन भरि वारी ❀ भलेहि नाथ ममसुरति बिसारी
कह्यो कलेश बरणि नहिं आवा ❀ अन्धसुवन मोहिं बहुत सतावा
कपट रूप करि भूमि छड़ाई ❀ सबहिं बोलाय सुनायकराई

दो० द्वादश वर्ष जाइकै, बिपिन बसेरो लेइँ ।
खोज न पावहिं तेरहीं, इनहिं राज हम देइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं ❀ द्वादश वर्ष बहुरि बन जावैं
मोहित दुरन बतावहु ठाऊँ ❀ कहि बन कौन देश ऋषि जाऊँ
खोजत वर्ष मध्य जो पैहै ❀ बहुरि बनै कुरुनाथ पठैहै
आज्ञा देउ रहौं तहँ जाई ❀ जहँ सुखहोइ दुःख कटिजाई
जाउँ तहां जहँ मोहिं छपावै ❀ कहुँ कुरुनाथ खोज नहिं पावै
कहेउ व्यास नृप सुनहु विचारा ❀ है नहिं अन्त छपाव तुम्हारा

त्यागहु पकरि आड़ सेवकाई ❀ नृप विराट गृह रहौ छपाई
सत्य बचन सुनु भूप हमारा ❀ तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा
करौ विचार नृपति अब सोई ❀ भीतर बर्ष न जानै कोई
दो० जाइ रहौ बैराट में, जहां न जानै कोइ।
काल कटै बिपदा घटै, अधिकअधिकसुखहोइ॥
जैहै बीति विपति सुख पैहौ ❀ नृपति फेरि धरणीपति ह्वैहौ
जाइ रहौ तुम देश पराये ❀ रहिहौ सबसन शीश नवाये
ओछी पूरी कहै जो कोई ❀ सहियो बिलग न मानब कोई
मद साधे नृपताक दुराये ❀ रह्यो जाति औ नाम छपाये
हीन रूप ह्वै रह्यो भुवारा ❀ यामें होइ छपाव तुम्हारा
बोलेउ राउ जोरि युग पानी ❀ नाम सकल ऋषि कहौ बखानी
आपुस में कहिये हम सोई ❀ होइ दुराव न जानै कोई
नृप के बचन सुनत सुख पाये ❀ ब्यास सबन के नाम बताये
कङ्क नाम भूपति को भाखा ❀ नाम जयन्त भीम को राखा
दो० नाम धनञ्जय को कह्यो, बृहन्नला ऋषि ब्यास।
सेनी सहदेवहि कह्यो, सकल गुणनकी रास॥
बाहुक नाम नकुलको फेरा ❀ शैलन्धरी द्रौपदी केरा
काटहु कलह जाय नर देवा ❀ गर्ब छांड़ि कीजै सब सेवा
छांड़ि क्रोध रहियो तुम राजा ❀ आयसु मानि करेहु नित काजा
कबहुँ न करेहु गर्ब अपकारा ❀ सेयहु नृपति समेत बिचारा
रह्यो सदा सबको रुख राखे ❀ परम अधीन दीन बच भाखे
निशिदिनकरेहुनयनलखिकाजा ❀ जाते रहै प्रसन्नित राजा
भीम आदि बरजेउ सब भाई ❀ जनि काहूसन करहिं लड़ाई
भये प्रकट जनिहै कुरुराजा ❀ होइहै नृपति तुम्हार अकाजा
दो० यहिबिधितब बहु शिषदये, गयेब्यासऋषिराज।
सोई मन्त्रन में धर्यो, मनसा बाचा काज॥
पाई परम सौख भूपाला ❀ बसे कछुकदिन तेहिमणशाला

नितप्रतिसकलअहेर सिधावहिं ❀ खगमृगअमितमारिलै आवहिं
धौम्यसहितऋपि सहसअठासी ❀ भोजनकरहिं सहज सुखरासी
एक दिवस नृप निकट बुलाये ❀ कह्यो व्यास सोइ बचन सुनाये
हम अज्ञात बास अब करिहैं ❀ मिलै न सुधि तेहिदेशदौरिहैं
वंश पुरोहित मम हितकारी ❀ करौ कह्यो भलि चहौ हमारी
संवतवादि मिलेउ म्वहिं आई ❀ महि पर्यटन करौ तुम जाई
यह कहि नयननीर भरि आये ❀ बिदाकरत नृप अति दुख पाये
सकलऋपिन करि दण्डप्रणामा ❀ बिदाकिये कहिकहि सबनामा
चलेसकलमि लिआशिषदीन्हा ❀ नैमिष विपिनबास तिन कीन्हा
करि अतिकष्ट करहिं जप योगा ❀ करुणासहित करहिं प्रियोगा
कथा बिचित्र महामुनि कहेऊ ❀ जनमेजयमुनि सुनि सुख लहेऊ
मुनिसन प्रश्न बहुरि नृप कीन्हा ❀ किमि अज्ञातबास उन लीन्हा

दो० व्याससीखता ऋषिकह्यो, भामन भूप उचाट ।
पांच बन्धु सँग द्रौपदी, आये नगर बिराट ॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा ❀ कहेनि छिपाइ यतन के चीन्हा
पुरते कछुक दूरि बन रहेऊ ❀ अन्धकूप ता भीतर रहेऊ
शमी बृक्ष ता मध्य बिराजा ❀ ताके निकट गयउ चलि राजा
अस्त्र सनाह बसन वर त्यागी ❀ शमी बृक्ष राखेउ बड़भागी
भीमसेन यक मृतक लै आई ❀ बृक्ष मध्य दीन्हो लटकाई
अब तरु भयउ निकण्टक सोई ❀ याके निकट न अइहै कोई
यहकहि फिरि सरवर तटआये ❀ नृपति आपु द्विजरूप बनाये
सबहिं राखि तहँ चलेउ नराटा ❀ गयो प्रथम तब नगर बिराटा

दो० दरबानी द्विज देखिकै, अद्भुत रूप बिलोकि ।
कख्यो नगर पैसार नृप, द्वार सके नहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन नृप भयऊ ❀ भीमसेन सहदेव ते कहेऊ
कैसे शकुन होत ये भाई ❀ हमहिं गणित करि देहु बताई
ऐसे लक्षण मैं पहिंचाने ❀ होइहैं काज सकल मनमाने

मिली ग्वाल बालक मगलीन्हे ❀ धेनुग्वाल प्यावत सुखकीन्हे
सुख महँ दिवस बीति हैं नीके ❀ ह्वैहैं काज महीपति जीके
अशकुन एक होत है भीमा ❀ थहै शोच आवत है जीमा
लीलै मूष बाम मंजारी ❀ बीते कछु दिन कलह पछारी
सरवर बन्धव चारि ठयेऊ ❀ राजसभा चलि भूपति गयऊ
द्विजको रूप महीपति कीन्हे ❀ अक्षमाल शिर चन्दन दीन्हे
लकुटि पाणि पुस्तकी सोहाई ❀ सभा मध्य पहुँचे सो जाई

दो० दीन्ह अशीश ऋषीश तब, भेंट्यो सहित सनेह ।
उठि बिराट नृप विप्रलखि, शिरनायोयुतनेह ॥

कह नृप बिप्र कहांते आयो ❀ धर्मराज तुम पास पठायो
कहेउ बचन मो चलती बारा ❀ करिहैं नृप प्रतिपाल तुम्हारा
हम पर परम अवस्था आई ❀ काटहु दिन बिराट गृह जाई
मोसन बचन कहेउ यह सांचो ❀ गिरिबर गुहा पैठिगये पांचो
जाहु बिराट महीपति पासा ❀ उहां तुम्हैं सब भांति सुपासा
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा ❀ जानौ सब गुण ज्ञान निबेरा
धर्मसुवन तुम पास पठावा ❀ ताते निकट तुम्हारे आवा
सुनि महीप कीन्हो सनमाना ❀ बैठारे गुण ज्ञान निधाना
कहौ नाम निज भूपति पूंछा ❀ कहेउ नरेश सकल छलछूंछा
कङ्कनाम म्वहिं ब्यास बखाना ❀ सुनिक्षितिपतिकीन्होसनमाना
जान्यो ब्राह्मण परम अनूपा ❀ अर्द्धासन बैठारेउ भूपा

दो० प्रीति पुनीत सुवालकी, परमस्वच्छ द्विज देखि ।
रह्यो युधिष्ठिरकी सभा, है गुणवान बिशेखि ॥

पुनि आयो तहँ पवनकुमारा ❀ आनि भूपकहँ कीन्ह जुहारा
दीरघ तन दीरघ भुज दण्डा ❀ निरखत कौतुक भयो अखण्डा
नृपके निकट भीम जब गयऊ ❀ देखि सभा सब चकृत भयऊ
सकै न बूझि सबै भय पावा ❀ कौतुक कौन देश ते आवा
है यह कौन परत नहिं चीन्हें ❀ मल्लरूप दरबी कर लीन्हें

चकित सभासद करहिं विचारा ❋ यह धौं कौन आहि करतारा
आवत देखि विराट महीपा ❋ बूझै ताहि बुलाय समीपा
दो० कितते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम ।
कौन जाति केहि हेत कहि, आयो मेरे धाम ॥
सुनु नृप नाम जयन्त हमारा ❋ राज युधिष्ठिर केर सुवारा
करौं बिविध विधिते जेंवनारा ❋ व्यञ्जन अमित बनावनहारा
अति सुगन्धयुत मिष्ट सलोने ❋ करौं पाक औरे नहिं होने
जेइ कृतज्ञ भूप भूपाला ❋ बकसत नित पटमणिगणमाला
सरबर भीमसेन की राखत ❋ अमृतसरिस बचन नृप भाषत
भोजन करत भीम के सङ्गा ❋ पालि नृपति तनकीन्ह मतङ्गा
सुनिविराटनृपअतिहितकीन्हा ❋ रहउ बन्धुसम आदर दीन्हा
जिमि राखत तुव पाण्डुकुमारा ❋ तेहिते हेत हमार अपारा
दो० निरखे सरबरि भीमकी, भूपति ताकी देह ।
तैसो बली विचारिके, ढिगराखे करि नेह ॥
निशा पाय अस पार्थ विचारा ❋ केहि बिधि नगर करौं पैसारा
होय दुराव न जानै कोई ❋ सहदेव यतन बतावहु सोई
सुधि भूली तुमको किन भाई ❋ सुरपुर असुर बध्यो जब जाई
तब सुरनाथ कृपा अतिकीन्हा ❋ अस्त्रसिखाइ मुकुट निजदीन्हा
तब उन पुत्रभाव करि जाना ❋ दीन्ह बास भीतर अस्थाना
देखि मेनका देह बिसारी ❋ भई कामबश सुरपति नारी
रति मांगी तुमते करि ईड़ा ❋ पारथ करहु संग मम क्रीड़ा
पूरण करो मोरि अभिलाषा ❋ त्राहि त्राहि माता तुम भाषा
तब मेनका क्रोध अति कीन्हा ❋ होवहु हिजशाप यह दीन्हा
प्रात होत सुरपति पहँ जाई ❋ शापकथा तुम सकल सुनाई
कहेउ सुरेश मेनकहि बोली ❋ शाप अनुग्रह करौ अमोली
सुनि सुरेश के बचन रसाला ❋ कीन्हो शाप अनुग्रह बाला
जब चाहौ तब बर्ष प्रयन्ता ❋ बृहन्नला तन होयहु सन्ता

सुर त्रिय शाप आशिषा भयऊ ❀ हिजरूप अर्जुन है गयऊ
भूषण बसन द्रौपदी केरा ❀ तन शृंगार कीन्हो बहुतेरा
दो० बृहन्नला है पन्थ तब, कीन्हो तिय को रूप ।
कङ्कण किङ्किणि आदिदै, अभरण सजे अनूप ॥
शिरसिन्दूर तमोल मुख, मेंहदी युत युगपानि ।
जावक चरण मृदंगकी, धुनिकीन्हीतिनआनि॥
गयो द्वार नृप पाण्डुकुमारा ❀ कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा
गायन राज्य युधिष्ठिर केरा ❀ आयों करि पुहुमी को फेरा
सब नृप द्वार देश फिरि आयों ❀ भोजन कहुँ न पटभरि पायों
जब बन चले युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहिं तब निकट बुलाई
जायो भवन बिराट भुवारा ❀ तहँ ह्वैहै प्रतिपाल तुम्हारा
बेतपाणि राजा सन जाई ❀ समाचार सब कहेउ बुझाई
गायक द्वार एक प्रभु आवा ❀ कहत युधिष्ठिर मोहिं पठावा
दो० सुनि बोले भीतर नृपति, सब बूझ्यो व्यवहार ।
सकल गान सांगीत लखि, कला चौंसठी चार ॥
नृपति युधिष्ठिर कर अखारा ❀ करौं गान सांगीत प्रचारा
गावहुँ मोहन राग रसाला ❀ नाचि नाचि रिझवों महिपाला
अपनो गुण कहिबे निजबानी ❀ कहत भूप आवत गिल्यानी
रहत रहे जे धर्म समाजा ❀ मम गुण पूँछ कङ्कसन राजा
बिद्या पढ़ी सकल नृप जेती ❀ जानत सकल कङ्कआप तेती
जब बन चल्यो युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहिं निज निकट बुलाई
सेवहु तुम बिराट नृप जाई ❀ मिलेहु मोहिं निजकाल बिताई
है समरत्थ बिराट भुवाला ❀ सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला
दो० मैं पारथको सारथी, बृहन्नला म्बहिं नाम ।
जीवन आयों आपुघर, लियों आइ बिश्राम ॥
धर्मपुत्र करिकै बहु नेहू ❀ पठयो इहां जानिकै गेहू
इतनो भार हमारो लेहू ❀ बस्तर अन्न बर्षभरि देहू

लघु कन्या बालकन पढ़ाऊँ ❀ पूरणगति सांगीत सिखाऊँ
विद्या अमित वरणि नहिं जाई ❀ अल्प दिवसमहँ देउँ सिखाई
भूपसुता उत्तरा कुमारी ❀ सौंपी पढ़न योग सुकुमारी
फिर सहदेव पहूँचे आई ❀ नृपसों वचन कहत शिरनाई
मैं तो धर्मपुत्र को ग्वाला ❀ अतिशयकृपाकरहिं महिपाला
निकसि दूरिवन बीथिन गयऊ ❀ दे उपदेश पठै म्वहिं दयऊ
करि जानौं गायन कै सारू ❀ अरु जानौं नवविधि हथियारू
मो देखत गोधन को हरई ❀ को नर जुरि मम समता करई
वर्ष पञ्च इक धेनु बराई ❀ सेवन करौं पञ्चशत गाई
सत्य वचन यह सुनहु भुवारा ❀ सैनिखोप है नाम हमारा
मोहिंजयन्त कङ्क ऋषि जानहिं ❀ उनहिं बूझि भूपति तब मानहिं
सुनि तिन जानेहु बुद्धिबिशाला ❀ सौंपी सब सुरभी भूपाला

दो० फेरि नकुल आये तहां, लीन्हे ताजन हाथ ।
देखि रूपकी राशि तब, चकित भये नरनाथ ॥
कौन देशको जाति कहु, कहा तुम्हारो नाम ।
केहि कारण बैराट कहि, देखो मेरो धाम ॥

बाहुकराय युधिष्ठिर केरा ❀ राखत मान सबै विधि मेरा
मैं दुरिकै वन गयों भुवारा ❀ दै सबते हम कहँ दुखभारा
काटर कूबर अश्व चलावौं ❀ योजन शत प्रमाण लै धावौं
बूझहु कङ्क ऋषिहि गुण मेरो ❀ आयों नृपति नाम सुनि तेरो
मो कहँ सौंपौ साहन जेते ❀ करौं बनाय सूध सब तेते
सुनि भूपाल अमित सुख पावा ❀ पाण्डुसुवन ते हेत बढ़ावा
देखि मूक मुख तिन तेहिकाला ❀ कह बाहुक तन चतुर भुवाला

दो० सौंपेउ साहन नकुल कहँ, हो भूपाल उदार ।
बहुरि सो आई द्रौपदी, भूपतिभवन मँझार ॥

नगी किधौं पन्नग की जाई ❀ कमला किधौं देह धरि आई
रानिन सहित सखिनके बृन्दा ❀ निरखैं मुख चकोर जिमि चन्दा

कह रानी निज नाम बतावो ❀ केहि कुल की कुलवधू कहावो
कहौ जाति आपनि गुणग्रामा ❀ केहि कारज आइउ ममधामा
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी ❀ दासी तासु लेहु म्वहिं जानी
सुनेहुँ श्रवण तुव अमित बड़ाई ❀ देखेहुँ द्वार बिपतिवश आई
पतिसँग चली विपिन जब रानी ❀ मोसन कही बिहँसि यह बानी
तुम गृह जाहु बिराट भुवाला ❀ काटेहु काल कछुक दिन बाला

दो० आइउँ तुव सेवाकरन, सैलंधरि मम नाम ।
आज्ञा देहु कृपाल ह्वै, करौं यहां बिश्राम ॥

बोली बिहँसि बचन तब रानी ❀ केहि सेवा में बहुत सयानी
चन्द्रबदनि सोइ बेगि बताऊ ❀ सौंपौं तुमहिं सहित चित चाऊ
भोजन मैं करवावों रानी ❀ भूषण अङ्ग सजौं सुखदानी
चुनि चुनि नये बसन पहिराऊं ❀ लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं
लै कुंकुम घनसार लगावों ❀ कुसुमावलि शुचि सेज बनावों
अतर लाय तन पान खवावों ❀ तुम्हरी आज्ञा सदा बजावों
करिहौं दोय काज नहिं रानी ❀ छुवहुँ चरण नहिं जूठनि खानी
सैलंधरी बचन सुनि काना ❀ रानी बहुत कीन सनमाना
तनया सम मेरे गृह रहियो ❀ मोसन मन की बातैं कहियो
हलुकी भारी कोइ न भाषहिं ❀ सब कोई आदर तुव राखहिं
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा ❀ निशिदिन करौं तुम्हारो पोषा
सैलंधरी जोरि युग पानी ❀ करतबिनय सुनियो कछु रानी
रक्षक मोर पञ्च गन्धर्बा ❀ निशिदिन मोहिं रखावत सर्बा
अति बलवन्त भयानक सोई ❀ रहैं संग देखै नहिं कोई
सो वे अन्तरिक्ष के बासी ❀ करैं प्रीति जानैं निज दासी
पाप बुद्धि देखै म्वहिं कोई ❀ करैं निवर्त होय किन जोई
जाको अन्न खाइये रानी ❀ तापै रहिय सदा छल हानी
याते तुमकहँ प्रथम जनाई ❀ पाछे जनि ठहरै कनि जाई
सत्यबचन सुर मोर सहाई ❀ लखै कुदृष्टि जियत नहिं जाई

राखी निकट परमहित मानी ❋ निशिदिन प्रीति करत अति रानी
सजत शृँगार सिखावत जोई ❋ सैलंधरी बचन सोइ होई
काल पाइ कै पाण्डुकुमारा ❋ मिलहिं समेत द्रौपदी दारा
सकलअवस्था निजनिज कहहीं ❋ फिरि बिलगाय मौन है रहहीं
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं ❋ प्रथमकङ्कऋषि को शिर नावहिं

दो० यहिविधि पांचौ पाण्डुसुत, और द्रौपदी बाम ।
कालक्षेप पुनि करहिं जिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेविराटपर्व
पाण्डवअज्ञातवासवर्णननामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० कछु दिन बीते नगरमो, गृह गृह प्रति उत्साह ।
अपनी दुहिताको रच्यो, नृपति बिराट बिवाह ॥

देश देश कहँ दूत पठाये ❋ सकल क्षितीश पुहुमि के आये
सभा विचित्र रची तहँ राजा ❋ जनु अमरावति रच्यो समाजा
आपु लसैं जैसे सुर साईं ❋ सब नरेश जनु सुर समुदाई
सुरगुरुसम ऋषि कङ्क बिराजा ❋ अतिविचित्रतहँ बनी समाजा
कहूं नृत्यकारी नचि गावैं ❋ कहूं नाटकी स्वांग लै आवैं
नाचहिं कहुँ निरूपकरि जाला ❋ कूजहिं कांख बजावहिं ताला
गाल फुलावहिं करहिं तमासा ❋ नानाभांति करहिं परिहासा
बारमुखी बहु नाचहिं गावहिं ❋ बानी बेनु मृदङ्ग बजावहिं
बाजहिं आउझ झांझ तँबूरे ❋ मुनिमन हरत राग अतिपूरे
चन्द्रबदन उर्बशी लजाहीं ❋ जिनहिंदेखिरतिद्युतिकछुनाहीं
काहू मल्ल लरहिं अति भारे ❋ कहूं मेष अतिलरहिं सिंगारे
मत दम्पति कहुँ लरहिं दँतारे ❋ श्याम वर्ण पर्वत से भारे

दो० शोभा राजसमाज की, मोपै कही न जाय ।
देश देश के भूप सब, जुरे सुवेश बनाय ॥

मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा ❋ दीरघ तन दीरघ भुजदण्डा
औ द्वौ चरण कड़ा द्वौ पानी ❋ पीत बसन शोभा की खानी

बड़ी भीर भूपन कै देखी ❀ कही सभा महँ बात परेखी
अहंकार युत वचन बखाना ❀ सुनहु महीप बचन दै काना
जीति बिदर्भ देश जे भृङ्गी ❀ जीते मल्ल सरङ्ग तिलङ्गी
काशमीर लाहौर चँदेरी ❀ बन्दर सब करनाटक हेरी
अङ्ग बङ्ग कामरू मँझाई ❀ औरो देश बिलोकेउँ जाई

दो० मोसे मल्ल जुरे नहीं, कोउ न कौनेउँ देश ।
हे कोई मोसे जुरै, आज्ञा देहु नरेश ॥

सुनि सुनि सभा न बोलै कोई ❀ मन साहस काहू नहिं होई
नृप बिराट को सुधि है आई ❀ तब जयन्त कहँ लीन्ह बोलाई
सुनि जयन्त मम आज्ञा मानो ❀ मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो
मैं अपने मन कीन्ह बिचारा ❀ तुम सुआर यह मल्ल जुझारा
जो हारो तौ हारि न होई ❀ जीते द्रव्य देइ सब कोई
धरि मारो जो मल्ल जुझारा ❀ जगमहँ होइहि सुयश तुम्हारा
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं ❀ रहे चुपाय कङ्क मुख चाहीं
कहेउ कङ्क किमि हृदय डेराना ❀ करु जयन्त नृप बचनप्रमाना

दो० तब जयन्त यह मल्लसों, कही बात अरगाय ।
हम तुम रससों खेलिये, लीजै सभा रिझाय ॥
तू जो आनै रोष मन, डारै भुजा उपारि ।
हम परदेशी उदरहित, देहैं भूप निकारि ॥

कहेउ मल्ल सुनु कौन बिचारा ❀ तैं कस कादर बचन उचारा
दीरघ भुजा बचन कह दीना ❀ ऐसी कहै होय जो हीना
यह सुनि नयन अरुण है आये ❀ तब जयन्त यह बचन सुनाये
करु अब जौन होय बल तोरा ❀ जनिमानसि खग मोर निहोरा
मल्लयुद्ध लागे दोउ करना ❀ मुष्टिघात अरु घालहिं चरना
मल्लयुद्ध दोउ यहि बिधि करहीं ❀ लपटहिं धरहिं झूमि झुकि परहीं
फिरिफिरिकरिबलउठहिँसँभारी ❀ समबलयुगल न मानहिं हारी
तबजयंत भुजबल अतिकीन्हा ❀ मल्ल उठाय डारि महि दीन्हा

करि बड़ क्रोध सो भूपर डारा ❀ जनु सुरवज्र गिरिन को मारा
सँभारि उठ्यो यह वचन सुनाये ❀ अब मारौं खल तू कित जाये
लै तब गुरज उठो अकुलाई ❀ हनो जयन्त नासिका जाई
विषम चोट थर हरेउ शरीरा ❀ मूर्च्छि गिरेउ महि पाण्डववीरा
देखेउ कङ्क सेलंध्री जानी ❀ हाइ हाइ करि अति अकुलानी
चेति जयन्त उठो गल गाजी ❀ जान न पाइहि अब खल भाजी
भूमिहिं सातवार धरि मारहुँ ❀ गहिरे गर्व दुष्टको गारहुँ
फेरि जुरेउ जिमिकरि बलजोरी ❀ कीन्ह प्राण बिन मल्ल मरोरी

दो० मृतक तासु तन क्रोधकरि, दीन्हों दूरि पवाँरि ।
देश देशके भूप सब, करत बड़ाई भारि ॥

देखत सभा सबै नर हर्षे ❀ बसन कनक मणि मोलनवर्षे
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❀ कहौं सुनौ अब भा जस काजा
मत्त गयन्द नृपति को ऐसो ❀ कज्जल गिरि भूधर है जैसो
कानि महावत की नहिं आवे ❀ करै प्राण बिन जो ढिगपावे
सुन्दर महल दिये महिपारी ❀ गये निकट नर डारै फारी
शूंड़ि दाबि बहु वृक्ष उखारै ❀ नहिं कुन्तल ते रहै सँभारै

दो० बांधहु जाय गयन्द कहँ, पठये नर नरपाल ।
सकै निकट नहिं जाय कोउ, देखि देस बिकराल ॥

जाय भूप सन कथा जनाई ❀ कोऊ निकट सकै नहिं जाई
कैसेहु हाथ न कुञ्जर आवै ❀ अब सो करिय जो भूप बतावै
तब जयन्त ते कहेउ बोलाई ❀ गजहि पकरि लै आवहुजाई
कै बांधहु कै डारहु मारी ❀ पुरको कण्टक देहु निकारी
जब नरेशकी आज्ञा पाई ❀ चल्यो वृकोदर अति हरषाई
सिंहनाद गरज्यो बलवीरा ❀ तब गयन्द थरहरेउ शरीरा
पूछ पकरि झकझोरेउ ऐसे ❀ दाबत मृग करु चीता जैसे
दशन पकरि लै पहुँचो थाना ❀ ज्यों अजया लीजै गहि काना
बांधि ताहि भूपहि शिरनायो ❀ तब जयन्त बसनन पहिरायो

दो० यहिविधि बीते मास दश, नृप बिराट के तीर ।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पाण्डुपुत्र बलबीर ॥
इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वसबलसिंहचौहानभाषा
कृतेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० कीचक बली बिशालतन, नृप तरुणीको बन्धु ।
सहसद्विरदसम ताहि बल, यौवनमदअतिअन्धु ॥

शत बान्धव कीचक के बली ❀ बल अवगाहन नृप अस्थली
सोहत यक यक मातु के जाये ❀ ऐसे सुभट महीपति भाये
एक दिवस कीचक हरषाई ❀ निज भगिनी के मन्दिर जाई
रानी ढिग कीचक चलिजाई ❀ कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई
बन्धु बिलोकि हृदय हरषानी ❀ दीन्हअशीश मुदित मनरानी
भोजन करत कनक की थारी ❀ द्रुपदसुता तहँ करत बयारी
देखि चेरि कहँ कीचक बीरा ❀ काम बिबश थरहरेउ शरीरा
इत भगिनीसन बचन बखाना ❀ दासी बस ह्वै रह्यो पराना
तहँ कीचक तन दशा बिसारी ❀ सैलन्धरि दिशि रह्यो निहारी
भयो कामबश बुद्धि भुलानी ❀ छांड़िसि लोकलाज कुलकानी
सैलंध्री अपने मन जाना ❀ कामबिबश यह खल बौराना
ताहि सुनाय कह्यो सुनु रानी ❀ अकथकथा कछु कहौं बखानी
गन्ध्रब पञ्च महा बल भारे ❀ ते मम सँग निशिदिन रखवारे
अन्तरिक्ष देखै नहिं कोई ❀ तुम कहँ प्रथम सुनायों सोई
मोहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई ❀ सो नर कठिन कालबश होई

दो० अवशि हनैं गन्धर्ब तेहि, मोहिं बिलोकै जोइ ।
बली होइ की निर्बली, जीवत बचै न सोइ ॥

यदपि सैलंध्री बिभव बखाना ❀ कीचकमनहुँ सुन्यो नहिं काना
काम अन्ध नहिं सूझत तेही ❀ बिषअस छहरि गयो सब देही
भयो बिकल सब दशा बिसारी ❀ द्वौ करजोरि बिनय अनुसारी
भगिनी सन बोला बिसवासी ❀ मांगे देहु मोहिं निज दासी

मोकहँ मिलै मोहिं यह इच्छा ❀ मांगौं लाज छांड़ि यह भिक्षा
मोहिं दया करिकै यह दीजै ❀ याकी बदि सहस्र तुम लीजै
लाज छांड़िकै करौं ढिठाई ❀ करौ वचन फुर हृदय जुड़ाई
होइ मोरि तौ जाउ लवाई ❀ देउँ बन्धु किमि वस्तु पराई

दो० द्रुपदसुता की अनुचरी, देत मोहिं अति क्षोभ ।
यह मोरे जनु पूतरी, करौ बन्धु जनि लोभ ॥

जादिन प्रथम भवन मम आई ❀ कन्या कै राखेउँ मैं भाई
कह सुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा ❀ सुनइ न काम विवश मतवारा
रानी वचन कहे विधि नाना ❀ कीचक सुन्यो न एकौ काना
बोली बहुरि वचन यह रानी ❀ सुनहु बन्धु इक कथा पुरानी
द्रुपदसुतापति सँग बन गयऊ ❀ इसहि पठाइ भवन मम दयऊ
रहै जीविका हित गृह माहीं ❀ दासी मोरि बन्धु यह नाहीं
जाइय भवन दई नहिं जाई ❀ देउँ कौनि बिधि वस्तु पराई
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❀ क्रोधवन्त ह्वै बचन सुनाये

दो० कहु कैसे तू राखिये, दासी बल करिलेहुँ ।
राज्य पाट सब छीनिकै, कोटिकोटि दुख देहुँ ॥

चेरी लागि नशावहु राजू ❀ तोरे कहा सुधरिहै काजू
अति बलवन्त बन्धु शतमोरे ❀ राखिलेइ ऐसो को तोरे
सुन्यो कठोर बन्धु की बानी ❀ बोली परम क्रोध ह्वै रानी
पर तरुणीरत जे जग भयऊ ❀ ते निजकरणी सों मिटिगयऊ
जो चाहौ आपनि कुशलाता ❀ फेरि कहौ जनि याकी बाता
रावण कथा सुन्यो तुम भाई ❀ रामचन्द्र की नारि चोराई
सियाहरत नहिंलागि बिलम्बा ❀ नश्यो दशानन सहित कुटुम्बा
गौतमतियलखि शक्र लुभाने ❀ भयो सहसभग जग सबजाने
बांधेउ असुर पाप वश सोई ❀ भयो खगड जानत सब कोई
ह्वै सकाम गिरिजा तन हेरा ❀ एक नयन बिन भये कुबेरा
शुम्भनिशुम्भ असुरअभिमानी ❀ मोहा परम शक्ति जियजानी

कथा प्रसिद्ध सकल जग खानी ❀ अपने पाप मिटा अभिमानी
बन्धुवधूरत रघुपति जानी ❀ मारेउ बालि हिये शर तानी
परत्रियरतहितशठ मन दीन्हा ❀ पैहै फल खल आपन कीन्हा

दो० भगिनी मुखके बचनसुनि, कियपयाननिजधाम।
विकल महाजियकलनहीं, घरी मुहूरत याम ॥

कीचकको सुधि बुधि नहिं रहेऊ ❀ सूने महल सैलन्धरि लहेऊ
कामअन्ध अञ्चल तेहि गहेऊ ❀ आतुरह्वै यहि विधि तब कहेऊ
चित हमार तुव रूपहि पागो ❀ भयो असक्त सुधीरज भागो
भेरे तरुणी शशि अनुहारी ❀ सबपर होय सोहागिल नारी
उत्तम भूषण बसन बनावो ❀ अरु दासी को नाम मिटावो
बचन तुम्हार मेटि नहिं जाई ❀ रहो नारि मम हृदय समाई
सुनत बचन मन शङ्का आई ❀ कहेउ सैलन्ध्री बचन बनाई
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा ❀ कीन्हे प्रीति नाश है तोरा
गन्धर्व पञ्च मोहिं रखवारी ❀ दीरघ तन मन विक्रम भारी
मोहिं छुवत वे तुरतै आवैं ❀ सुनु कीचक तुव प्राण नशावैं
तव मारे मम अपयश होई ❀ मोकहँ दोष देइ सब कोई
या महँ उभय प्रकार बिगारा ❀ मरण तोर मम देशनिकारा
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी ❀ इहां जीविका उठी हमारी
यह सुनि कीचक अतिभयमानी ❀ गई पराइ पाण्डु की रानी
निशिदिन ताकहँ नींद न आवै ❀ धन सम्पति घरबार न भावै
बोलि दूतिका यहि विधि कहेऊ ❀ वह दासी मम चितबसिरहेऊ

दो० मनसा बाचा कर्मणा, तुम अबकरहु उपाउ।
मृगनयनीनिशिकरबदनि, मोपरभुरै लैआउ ॥

भुरै लै आउ सैलन्ध्री आवै ❀ निज इच्छा मांगो तुम पावै
गई दूतिका विविध प्रकारा ❀ लागी करन युक्ति उपचारा
बहुत भांति दूती समुझायो ❀ चित्त सैलन्ध्री एक न आयो
यहां बिचार न बोलै सोई ❀ आजु कालिह कछुकाज न होई

रहौ मास द्वै अवधि हमारी ❀ नहिं जानै कुरुपति अपकारी
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो ❀ जहां सैलन्ध्री तहँ चलि आयो
दो० सून घरमों पायकै, गहे केश कर धाय ।
अब कहु राखै तोहिं को, कौन छुड़ावै धाय ॥
गन्धर्व महँ गन्धर्वपति होई ❀ सकै छुड़ाय तोहिं नहिं सोई
गन्धर्व के बल तू अभिमानी ❀ बोलु छुड़ाय देइँ अब आनी
यदपि बली रक्षक तू होई ❀ मोरे तुल्य होइ नहिं सोई
व्याकुल भई नीचवश रानी ❀ गई लाज अब हृदय डेरानी
हरे कृष्ण नाम यह भाखी ❀ दुश्शासन ते तुम पति राखी
सैलन्ध्री विनवै मृदुवाणी ❀ विविधप्रकार जोरि युग पाणी
यदपि विनयकृतविविध प्रकारा ❀ सुनै न काम विवश मतवारा
बोला कामवश्य रिसिआई ❀ तजौं तोहिं करि निजमनभाई
दो० दासी कर्म कराइकै, त्रास देखावहुँ तोहिं ।
अपनो मनभाई करौं, यहीबानि अब मोहिं ॥
कैसेहु खल नहिं हठ तजै, अंचल डारो फारि ।
करते केश न तजै सो, अतिव्याकुलानीनारि ॥
सैलन्ध्री तब बुद्धि बिचारी ❀ विविधभांति कीन्हीं मनुहारी
रसते प्रीति बढ़ति है जोई ❀ तस नहिं कछु अनरस ते होई
दान मान गुन आदर धरई ❀ परतिय सो अपने वश करई
यथा बीजते द्रुम उठिजाई ❀ तिमि रस की प्रतीति सरसाई
निशिदिन लिये रहै मनु हाथा ❀ बढ़े हेत तब परतिय साथा
मिष्ट सुधा सम बचन सुनावै ❀ इष्ट समान हिये बिच लावै
कटुन बचन फुरवै सब सोई ❀ परपत्नी ताके वश होई
यह कीचकहु सुन्यो ना चीन्हा ❀ परतियबरवसकोहिबश कीन्हा
दो० जानत रसकी प्रीति नहिं, तैं खल एको बात ।
परतरुणीको मन दयो, तबसबसुखसरसात ॥
रहसि रहसि अबमनमिलै, तौलहिहँसिपरनारि ।

बौरायो यह बचन कहि, गूढ़ उपाय बिचारि ॥
तजे केश तब गृह अभिमानी ❀ सेलन्धरी गई जहँ रानी
कह ऋषि सुनु कुरुबंशभुवारा ❀ गये बीति पुनि इकपखवारा
दीपमालिका के दिन रानी ❀ बोली सेलन्ध्री सों बानी
भोजन मिष्ट कछुक हित भाई ❀ सुरा पात्र दै आवहु जाई
द्रुपदसुतासुनि अतिअकुलानी ❀ जाब मोर उहँ नीक न रानी
लज्जा मोरि जीव वहि केरा ❀ रानी जात न लागी बेरा
यदपि सेलन्ध्री कह्यो बखानी ❀ बरबस ताहि पठायो रानी
पिये मत्त मद कनक प्रयंका ❀ देखि सेलंध्री भयो सशंका
अशन पान महि राखि परानी ❀ धाय केश पकरे गहि पानी
सेलंध्री तब बचन उचारे ❀ गहत केश केहि हेत हमारे
तुव मन बसेउ मोर मन सोई ❀ दिनराति कीचक पशुगति होई
दो० रैनि गये तुम आयऊ, नाच अखारे जाय ।
शिथिलभयोयहबातसुनि, केशदिये मुकराय ॥
योग भोग सूने सदन, बनानिशिकीचकराय।
जाउ तहां हौं आइहौं, यामक रैनि गँवाय ॥
जहां उत्तरा की चटसारा ❀ होइ मिलाप हमार तुम्हारा
खलते लाज बचन नहिं जानी ❀ करि छल गई बहुरि जहँ रानी
कीचक यह सुनिअतिसुखपावा ❀ कह्यो सैलंध्री बचन सुहावा
जात भयो अपने गृह सोई ❀ हेरत बाट निशा कब होई
गई दुखित तहँ द्रौपदि रानी ❀ है पतिभूप जहां सुखदानी
कीचक कानि न याको राखी ❀ सो गति बाम भूपसन भाखी
आयसु अर्जुन को नृप दीजै ❀ कीचक मारैं सो नृप कीजै
यह कहिके उपजी तन तापा ❀ ऊँचे स्वर करि कीन्ह विलापा
रोवत बाम श्वास नहिं आवै ❀ भूपति बहुत भांति समुझावै
दो० मास दिवस बीते त्रिया, सो ब्रत पूरण होइ ।
तौलगि कालहि काटिये, लखै कछुनाहिं कोइ ॥

अवधि बीत कीचक संहारौं ❀ तब त्रिय और विचार बिचारौं
की तब लगे रहौ मन मारी ❀ की बनवास करावो नारी
सुनि नृपवचन विकलभै रानी ❀ करत विलाप हिये अकुलानी
उतर देत नाहिं बनहि बनावा ❀ नयनन नीरगरे भरि आवा
रोदन करत चली तब रानी ❀ गै पति अब पति बात न मानी
विलखि वदन तिय पहुँची तहां ❀ हते वीर बल अर्जुन जहां
नयन सनीर कढ़त नहिं बानी ❀ कथा समस्त बखानी रानी
बरणी कीचक की अधिकाई ❀ कह्यो भूपमन कछु नहिं आई
दीन्ह जवाब धराणि के धरणा ❀ आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा
मेरो कहो गोसाईं कीजै ❀ हति कीचक जगमें यशलीजै
तुमहिं अछत अस हाल हमारा ❀ बलपौरुष कहँ गयो तुम्हारा

दो० कह्यो पार्थ तब त्रियासों, करिअतिक्रोधकराल ।
आज्ञा पावों भूपकी, शठहि बधौं उत्ताल ॥

जो भूपति की आज्ञा पावों ❀ तौ कीचक यमलोक पठावों
नृप की कानि न तोरी जाई ❀ तोरे कछु नहिं करौं उपाई
सरवर तीर सबन के आगे ❀ चलती बार बचन नृप मांगे
मम आयसु बिन कृतकठिनाई ❀ कृष्णचरण तेहि कोटि दुहाई
नृपको वचन न मेटो जाई ❀ मास दिवस तुम रहौ चुपाई
सुनत सैलंध्री अति दुखमाना ❀ पारथको कछु वचन बखाना
छूटो तुमहिं क्षत्रिकुल बाना ❀ तजेउ सानधरि बेष जनाना
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा ❀ तुमहिं जियत अस हाल हमारा
सो सुनि पार्थ रहो शिरनाई ❀ माद्री सुतन तीर चलि आई

दो० गई नकुल सहदेव पहँ, बिलखि बदन बरनारि ।
अधिकारी ता दुष्टकी, सब बिधि कही पुकारि ॥

कीचक बांह हमारी गही ❀ तुम में कहौ कहां पति रही
मेरे कहेको नाहिं हँसि टारो ❀ क्यों न आपने अरिकहँ मारो
सहदेव नकुल कही सुनु रानी ❀ मेटि न जाइ भूपकी कानी

कह्यो नृपतिम्वाहिं बारहिबारा ❀ भ्राता यह न करेउ अपकारा
कटुक कहेउ सुनिलेउ चुपाई ❀ काहुहि उतरु न दीजै भाई
बिन आज्ञा कृत करम दुरन्ता ❀ जानौ पाप मोर बपुहन्ता
तुव दुख देखि मोहिं कठिनाई ❀ नृप आयसु मेटी नहिं जाई
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा ❀ जोरिपाणि रानिहिं समुझावा

दो० सुनि सुनि तेरे बचन अब, बाढ़त क्रोध अपार ।
मेटाजाय न नृपबचन, बिनयो बारहिंबार ॥
मारौं कीचक क्षणकमहँ, भूपतिआयसु पाय ।
करै अवज्ञा नारि अब, काकरिनरकहिजाय॥

मास एक तू और निवारी ❀ तब सकिहौं कीचककहँ मारी
इनहूँ ते तिय भई निरासा ❀ पहुँची भीमसेन के पासा
सजल नयन भरि आंशू ढारे ❀ मींजत नयन भये रतनारे
पवनपुत्र तब यहिबिधि जानी ❀ बिलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी
आयो द्वार लखे तिय नयना ❀ श्वासलेत कछु कहै न बयना
बोली बिलखि आजु गृहमाहीं ❀ कीचक दुष्ट गही ममबाहीं
पाण्डुसुवन पै फिरी पुकारी ❀ वे गुहारि लाग्यो नहिं चारी
अब तुम स्वामी रहौ चुपाई ❀ गहि सो दुष्ट मोहिं लैजाई
सुन्यो श्रवण जब सकल प्रसङ्गा ❀ रोष बढ़ा बिकसो सब अङ्गा
लखि प्रियके मुखकै मलिनाई ❀ दौरिगई दृग में अरुणाई
बूझत बचन उतरु नहिं देती ❀ गहवर बयन नयन जलसेती
कीचकको सुनि तब सुखनामा ❀ भयो सक्रोध भीम बलधामा
देखत जो न बधौं क्षण जाई ❀ कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई

दो० लीन्हौं मीचु बुलाइकै, नीच आपने हाथ ।
जीतो चाहत श्वाननर, सिंहबली के साथ ॥

दादुर जुरा चहत हरि सङ्गा ❀ चीतहि जीता चहै कुरङ्गा
चहत कपोत बाजसनरारी ❀ मूषक जीतन चहत मँजारी
गर्दभ चहत मतङ्गहि ठेलो ❀ चहत भुजङ्ग गरुड़सँग खेलो

तुम मन कही वचन कटुवागी ❋ अपने हाथ मीच वहि मांगी
कहेसिविलोम वचनतजि ज्ञाना ❋ याहिकर काल आय नियराना
सैलंध्री यहि विधि समुझाई ❋ चल्यो भीम त्रिय रूप बनाई
नाच महल महँ बैठो भीमा ❋ दीप बुझाय क्रोध करि जीमा
तहां कामवश कीचक आवा ❋ नारिजानि कुचपाणि चलावा
गहे भीम तब दो भुज दण्डा ❋ मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा
करिबल भीम ताहि महि डारा ❋ चला पराय अधम हियहारा
मोहिं युधिष्ठिर भूप दुहाई ❋ कीचकबधौं जियत नहिं जाई

दो० कालसर्पसों खेलेउ, कामलहरि अकुलाय ।
पूंछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत नहिं जाय ॥

पकरो भीम क्रोध करि धाई ❋ भिरो बहुरि शठ ताल बजाई
दो महँ हारि न कोई मानैं ❋ कोपि अमितगति युद्धहि ठानैं
अतिबल भीमसेन तब कीन्हा ❋ पटक्यो भूमि कण्ठ पग दीन्हा
मारि दुष्ट प्राणन बिन कीन्हा ❋ मूढ़ उठाय पुहुमि तब दीन्हा
महा खोहड़ राखो जाई ❋ जानै पुरजन नहिं ज्यहि भाई
डारेउ भीम तहां बलवाना ❋ परेउ अधमतन भृङ्गसमाना
लरत ढहेउ गृह शब्द अघाता ❋ सुनि नरेश जागो अधराता
चाहेउचलन खड्ग गहि पानी ❋ बरजेउ युगल जोरिकर रानी
नाम सैलन्ध्री तुव घर दासी ❋ कीचक करी तासु सँग हासी
गन्धर्व पंच तासु रखवारे ❋ जानि परी कीचक उनमारे
चुपकि रहेउ नृप तौ कुशलाई ❋ सुनि त्रिय वचन बैठ अरगाई
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❋ कहेउ सो भीमकीन्हजसकाजा

दो० मारि दुष्ट धरि खोहमें, मनकी व्यथा नशाय ।
अर्द्धनिशासुतपवनको, निजथल पहुँचो जाय ॥
जागे पुरजन सदनप्रति, प्रात भयो नर नारि ।
मृतकदेखिकीचकनहीं, कोउनहिंसक्योबिचारि ॥

इति श्रीमहाभारतेकीचकवधवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दो० अन्तःपुर चरबर बदन, सुधि पाई नरपाल ।
सचिवसभासद सुभटसँग, तहँआयो तिहिकाल ॥

नृप बिलोकि शङ्का उपजावा ❀ सजलनयनमुखबचन न आवा
शोक बिवश तन दशा बिसारी ❀ करत बिलाप ताप अतिभारी
क्यहियाहिबध्यो जानिनहिंजाई ❀ बार बार कहि नृप बिलखाई
करियउपायमिलैज्यहिशोधा ❀ बिनअरिनिधनमिटिहिनहिंक्रोधा
बन्धु बद्ध सुधि तात्क्षण पाई ❀ भूपति की तरुणी तहँ आई
रोदन करत बहुत अकुलानी ❀ देखत भूप व्यथा तन जानी
अपने मनही महँ दुख माना ❀ बार बार यह बचन बखाना
कीचक कौने शूर सँहारो ❀ जासों युद्ध जुरो सो हारो
अङ्ग नहीं क्षत और न आयो ❀ भूलिरहेउ कछु शोध न पायो
इमि महीप कह बचन बखानी ❀ बोली बिलखि बदन है रानी

दो० रहै तुम्हारे धाम में, जाहि सैलन्ध्री नाम ।
गन्धर्बरक्षक तासु के, रक्षत आठौं याम ॥
कीचक अतिआसक्त है, गही सैलन्ध्री बाल ।
ताही दिन ते मैं लख्यों, घेरो है यहि काल ॥

कीचक तिन गन्धर्बन मारे ❀ नहिं काहू पर गयउ उखारे
अब चलि क्रिया तासुकी कीजै ❀ लै लै कुश सब अञ्जलि दीजै
रानी बचन श्रवण सुनि राजा ❀ लागो करन क्रियाको साजा
तब कुतवालै बोल्यो राऊ ❀ भजालोग सब बेगि बोलाऊ
लै कीचक को घाटै जाऊ ❀ बिधिसों सर्व क्रिया करवाऊ
कह ऋषि कङ्क नीचको अङ्गा ❀ छुवतै सुकृत होइ सो भङ्गा
उत्तम जाति होइ नर कोई ❀ छुवै अङ्ग कीचक कर सोई
गयो नृपति सुधि आय तुरन्ता ❀ कहेउ लै आउ सुवार जयन्ता
बार बार तासन कह राऊ ❀ कीचक मृतक घाट लैजाऊ
सुन्यो न बचन रहेउ चुपकाई ❀ फेरि नृपति अस कहेउ रिसाई
तैं मेटो बल बचन हमारा ❀ मूढ़ कहां तव होइ गुजारा

मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी ❀ मानत पाण्डुसुवन कै ग्लानी
धर्मराज पठयो तकि मोहीं ❀ सरबरि गनौं बन्धुकी तोहीं
नृपके वचन श्रवण सुनि भीमा ❀ कहेउ वचन क्रोधित ह्वै जीमा

दो० मारो कीचक मैं कहां, कत कीजत है क्रोध ।
मो दुख मानत वादि नृप, अन्तहि लीजै शोध ॥
भोजन भाजन छांड़िकै, मैं नाहिं अन्तहि जाउँ ।
मनसा वाचा कर्मणा, तुमकहँ बहुत डेराउँ ॥

सो० करी कृपा नरनाहु, यहिविधि कही जयन्त सों ।
कीचक को लैजाहु, दूरि नगर ते कृति करहु ॥
बन्धु कुटुम्बी सोइ, मृत्यु कही सों काढ़ि कै ।
कहा परी है मोहिं, ऐसे कर्म न हौं करौं ॥

बारबार इमि कह्यो सुवारा ❀ कृति करवावहु जाय सुआरा
देखि कङ्क ऋषि कर इशारा ❀ तब जयन्त इमि वचन उचारा
जो अब भोजन को कछु पावों ❀ तौ कीचक लै घाटै जावों
भोजन अमित भूप मँगवावा ❀ बैठि जयन्त तहां सब पावा
रोवैं कीचक के सब भाई ❀ वर्णि विविध बल शील बड़ाई
मेवा बहु पकवान मिठाई ❀ खात जयन्त न होत अघाई
कह नरेश सुनु वचन जयन्ता ❀ मृतढिग भोजन कर्म दुरन्ता
लैजा लोथ करत कत देरा ❀ क्रियाकरन हित होत अबेरा

दो० करि भोजन [illegible], कीचक लियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाय ॥
इत कीचक के बन्धु सब, पकरि सैलन्ध्री बाल ।
जारनचल्यो कुबन्धुसँग, लियोचल्योतेहिकाल ॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो ❀ पकरि पांय वाके सँगजारो
बरजत पुरजन सो नाहिं मानै ❀ काहू वचन चित्त नाहिं आनै
करत विलाप द्रौपदी रानी ❀ को राखै बिन शारँगपानी
विविधभांतिसों करत बिलापा ❀ अतिशयकङ्कऋषिहिदुखब्यापा

देखत रह्यो बिराट भुवाला ❀ सोउ न रोकिसक्यो तेहिकाला
पकरि ताहि तहँवां लै आयो ❀ कीचकमृतक जहां पौढ़ायो
भरिभरि घृतघट केतिक आने ❀ चन्दन अगर न जायँ बखाने
तहँ द्रौपदी अधिक सन्तापा ❀ हा गन्ध्रब कहि करतविलापा
छुवत मोहिं तुव उर न दरेरा ❀ तुव बल थकितभयो यहि बेरा

दो० रुदनकरत लखि द्रौपदी, गृह तब चल्यो जयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अङ्गमें, देखत कर्म दुरन्त ॥
बसन उतारि धरेउ कहूं, भीम भीम ह्वै धाय ।
फूलिगात दूनो भयो, उपमा कही न जाय ॥

ह्वै गये अरुण नयन रतनारे ❀ उठो क्रोध नहिं रहत सँभारे
भृकुटिकुटिलअतिक्रोधप्रचण्डा ❀ कालदण्ड सम द्वौ भुजदण्डा
कुंचर समान कलेवर भयऊ ❀ सरवर निकट भीम चलि गयऊ
करै बिचार करौं अब सोई ❀ जेहित्रियबचै निधन खल होई
बेष छपाय बन्यो गन्धर्वा ❀ कीचक बन्धु बधौं जेहि सर्वा
मरैं सकल सो करौं उपाई ❀ जेहि खलएक जियत नहिं जाई
बसन उतारि खोह धरि दीन्हा ❀ भीमरूप तब भीम ने कीन्हा
नग्नरूप तन परम मतङ्गा ❀ कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अङ्गा

दो० कीच चढ़ाई सकलतन, केश दिये मुकराय ।
कर तरुवरलै बज्र सम, दै दिखराई आय ॥

कीचक बन्धु भजे अकुलाई ❀ कह गन्धर्व पहुँचिगा आई
भीम बटोरि बीर सब लयऊ ❀ सुर जनु बज्र गिरिन को हयऊ
भीम लपेटि पङ्कतन धायो ❀ बड़े केश बहुधा मुकरायो
बेष भयानक लखि बिकरारा ❀ चहुँदिशि भागिचले नरदारा
हने हांकि कीचक के भाई ❀ बृक्ष घातदै गर्द मिलाई
ह्वै निशङ्क सब लोथ उठायो ❀ चिता बनाइ सकेलि चढ़ायो
ताके हाथ कहा हथियारू ❀ सो सब बरणौं ताको सारू
कह जयन्त कछुबरणि न जाई ❀ जब गन्धर्व पहूँचो आई

प्रथम भजे नर देखत जोई ❀ करत पुकार भूपसन सोई

दो० गये शेष तहँ नर जिते, कही भूप सन जाय।
कर तरुवर गन्धर्व लै, तेहिथल पहुँचोआय ॥

मानुषरूप गहे द्रुम पानी ❀ कीचक कुलकी घालिसि घानी
महाराज पठवहु सब योधा ❀ लेयँजाय तिन्हकर सब शोधा
जब यह वचन सुन्यो नृप काना ❀ भयो सशङ्क अचम्भव माना
अङ्ग अङ्ग हालेउ सब गाता ❀ मुखसेनिकसिसकत नहिं बाता
वह शव कीचक भीम जरायो ❀ फिरि जहँ द्रुपदसुता तहँ आयो
खलबाधि भीमनिकट जब गयऊ ❀ रानी अङ्गन अतिसुख भयऊ
बोली वचन हास करि रानी ❀ राख्यो तुम पाण्डव को पानी
हता सो अर्जुन भयो जनाना ❀ तुमलगिरह्यो वंश को बाना
जब द्रौपदी कही यह बाता ❀ भयो प्रसन्न भीम सब गाता

दो० गृह तन पठई द्रौपदी, आपु गये सरपास।
न्हाय धोय पहिरे बसन, आयो आपु अवास ॥
सरवर तर द्रुम डारिकै, आयो भूप निकेत।
धाय धाय नर नारि सब, पूँछत करि करि हेत ॥

पहुँचो भीम भूप दरबारा ❀ समाचार कहु कहेउ भुवारा
कहु जयन्त कैसी भै भाई ❀ कैसे गन्धव पहुँचो आई
अरुण नयन देखो युत क्रोधा ❀ ताकी सरबरि और न योधा
हाथ तमाल मनहुँ यमदण्डा ❀ कालदण्ड सम बाहु प्रचण्डा
अति विशाल तन वेष कराला ❀ देखिय जनु कालहु के काला
कीचक बन्धु हते बलभारे ❀ सो तेहिं मम देखत संहारे
बड़े बीर मारे बलवाना ❀ कोऊ भागि न पायो जाना
तहँ नृप एक बुद्धि म्वहिं आई ❀ गिरिकन्दरमहँ रह्यों लुकाई
कृष्ण देव मम कीन्ह सहारा ❀ भूप कृपा करि मोहिं उबारा
निकरि न सक्यों तासुकी त्रासा ❀ गिरि कन्दर भै देखि तमासा

दो० नीचे ऊपर काठ करि, कीचक दीन्हों डारि।

आयो बीर कराल तहँ, जहँ सैलन्ध्री नारि ॥
ताके कान मांझ कछु कहेऊ ❀ हौं सशङ्क बैठो तहँ रहेऊ
देखत सो उड़ि गयो अकासा ❀ डारि दियो द्रुम सरवर पासा
सुनत नरेश चित्त भयमानी ❀ देवीरूप सैलंध्री जानी
अरु गन्धर्व भक्ति डरराख्यो ❀ निशिदिननृपसेवाअभिलाख्यो
पांचव बान्धव कालहि पाई ❀ भये एक थल सब जन आई
कहा द्रौपदी नृपहि सुनाई ❀ चारि बन्धु तुम लाज बिहाई
द्रुपदकुमारि बार बहु भाखी ❀ भीम लाज मेरी हठि राखी
सुनत प्रसन्न भये सब भाई ❀ कोउ सकै नहिं भेदहि पाई
रही राति कछु प्रात तुलाना ❀ गये सकल निजनिजअस्थाना
दो० यहिबिधि बीतेदिवसकछु, नृपतिबिराटनिकेत ।
दुरे रहे पाण्डव सकल, कालक्षेप के हेत ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
कीचकवधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० बैशम्पायन सों कही, जनमेजय यह बात ।
कहौ कथा मम बंशकी, सुनत न श्रवणअघात ॥
कह ऋषि चितदै सुनहु भुवारा ❀ कथाबिचित्र अमियरस सारा
दुर्योधन नृप यह सुधि पाई ❀ कीचक केहुँ मारेउ शतभाई
शकुनि कर्ण ते पूछि नरेशा ❀ कीचकबध बड़ मोहिं अँदेशा
सहसनागबल अति बरियारा ❀ कहौ कर्ण केहिं कीचकमारा
सुनत कर्ण इमि कह्यो बखाना ❀ कहौं सुनहु नृप मैं जस जाना
मो मन उपजत यह संदेहू ❀ भीम कस्यो है कारज येहू
पठवहु दूत तहां चलि जाई ❀ सुधिलै खबरि जनावहि आई
भूपति की आज्ञा जब पाई ❀ पठयहु शकुनि दूत समुदाई
चले दूत नहिं लागी बारा ❀ पहुँचे देश बिराट भुवारा
सकलभांति तिन कीन्ह दिठाई ❀ तहां न सुधि पाण्डव की पाई
भये थकित घूमे हलकारा ❀ आय नृपति कहँ कीन्ह जुहारा

जोरिपाणि तिन विनय सुनाई ❀ पाण्डवकी कहुँ सुधि नहिं पाई
सकल विराट पुरी हम देखी ❀ लेत सुद्धि तहँ रहे विशेखी
केहिं मारे कीचक सौ भाई ❀ सो कछु भेद जानि नहिं जाई
लखे न पाण्डुसुवन तेहि ठावां ❀ सुन्यो श्रवण नहिं एकौ नावां
कह्यो दूत नृप सों अत्र येहू ❀ सुनि नरेश मन भा संदेहू
दो० भूपति मन संदेह करि, बोले भीषम द्रौन ।
पुर विराट कीचक बधे, केहिधौं कारण कौन॥
कीचक को संहारि है,भीमबिना नहिं और ।
कह्योद्रोणगजसहससम, सुभटनकोशिरमौर ॥
कह्यो सुशर्मा नृप सुनि लीजै ❀ अब कछु और बिचार न कीजै
संग चमू कछु देहु सहाई ❀ घेरौं नृप विराट की गाई
और यतन ते वे नहिं ऐहैं ❀ धेनु हरण सुनि तुरते धैहैं
सुरभिहरणसुनि नहिं सहि रैहैं ❀ लागि गोहारि चले सब ऐहैं
होत युद्ध नहिं रहहि सँभारा ❀ तहँ खुलि जैहै शत्रु तुम्हारा
भूपति अमित सैन सँग दीन्हों ❀ बिदा वेगि तेहि अवसर कीन्हों
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❀ उठी धूरि छापिगयो पतङ्गा
शकुनि बोलाय कह्योइमिराजा ❀ अब सब करहु कटक को साजा
दो० चली चमू चतुराङ्गिणी, गज तुरंग के यूथ ।
रथी महारथि अतिरथी, सुभट पदातिबरूथ ॥
चली सैन को बरणै पारा ❀ बाजे गोमुख शङ्ख नगारा
झांझ ढोल अरु भेरि बजाई ❀ मारू राग सहित सहनाई
चलत नृपहि अतिहोत अतङ्का ❀ टेर नकीब भये बहु डङ्का
विरद बखानि बन्दिजन बोले ❀ हाली धरा धराधर डोले
दल कलिङ्ग भगदत्त महीपा ❀ आये साजि नरेश समीपा
द्विरद दुमत्त दुशासन अत्री ❀ शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री
विकरण करण शल्य बलधामा ❀ कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा
सिन्धुराज लक्षन बलवाना ❀ साजिसाजिनिजदलहनेनिशाना

बाहुलीक गङ्गाधर राजा ❀ नृप काम्बोज कीन रणसाजा
सौ बान्धव दुर्योधन केरे ❀ औरौ सजे बीर बहुतेरे
भीषम द्रोण हलम्बुस साजे ❀ सोमदत्त भूरिश्रव गाजे
दक्षिण दिशा सुशर्मा घेरा ❀ उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा
दो० बन बीथिन छाये सुभट, लियो देश सब घेरि ।
बांध्यो ग्वालसमूह तहँ, लीन्हों धेनु खदेरि ॥
कितक ग्वाल लिय बांधि सुशर्मा ❀ केतिक भाजि गये वशभर्मा
ते नरेश पहँ जाय पुकारे ❀ धेनु बृन्द हरिगये तुम्हारे
सेनापति पठवहु बलदाई ❀ शत्रु जीति गो लेइ छोड़ाई
गोधन हरो सुशर्मा आई ❀ उठि नरेश चलि लेहु छुड़ाई
जो न नरेश होहु असवारा ❀ तौ नहिं गोधन मिलिहि तुम्हारा
और न सकहि सुशर्महिं जीती ❀ सुनु नरेश मन मान प्रतीती
देखि सचिव दिशि नृपति सुजाना ❀ करि सुधि कीचक की पछिताना
दो० कीचक कहँ सुमिरै नृपति, यह कहि बारहिं बार ।
वा बिन सुरभी बोढ़ियो, को कहि लखै ..कार ॥
हरुये बोल्यो भूप तब, सेनापाल बुलाय ।
धाइ सुशर्मा बीर जे, सुरभी लेहु छुड़ाय ॥
उत्तर शङ्क नृपति सुत बीरा ❀ औरौ सजे अमित रणधीरा
चले नरेश साजिकै साजा ❀ बाजे बिपुल जुझाऊ बाजा
गज रथ, अरु पदादि बहुसङ्गा ❀ बहु कुरङ्गगति चलै तुरङ्गा
करि बहुयतन सुशर्मा हांकी ❀ चलि नहिं सकत धेनु सब थाकी
सहदेव खुरा व्याधि उपजावा ❀ ताते धेनु सकत नहिं जावा
तब लगि सुभट गये सब आई ❀ बाजे पटह शङ्ख सहनाई
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❀ बाजे कटक भयो अति हूहा
उभय कटक महँ बाजन बाजे ❀ करिकरि नाद बीर सब साजे
दुउ दिशि दल उमड़े घनघोरा ❀ जहँ तहँ सुभट भिरे बरजोरा
अन्धधुन्ध रण भयो असूझा ❀ अपन बिरान परत नहिं सूझा

बिविधभांति तन अस्त्र प्रहारे ❀ टरै न एक एक के टारे
उत्तर कुँवर आनि रण मण्डो ❀ बाणन ते रिपु सैन बिहण्डो
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा ❀ करि संधान सारथी मारा
करि अति नाद सुशर्मा गाजे ❀ चढ़ि तुरङ्ग उत्तर रणभाजे
गयो नगर तन अति भयमानी ❀ लै धनु शङ्ख कीन्ह रणआनी

दो० शङ्ख सुशर्मा बीरते, परो आनि जब जोर ।
महाभयंकर युद्ध भो, बिशिख चले चहुँओर ॥
विजयबृहन्नल घररहो, पाण्डुपुत्र तहँ चारि ।
देखत कौतुक युद्धको, सकैं न कोऊ हारि ॥

पञ्चबाण तब शङ्ख प्रहारे ❀ ते शर काटि सुशर्मा डारे
शर बहु त्यागि कीन्ह अतिजूझा ❀ मूर्च्छित कुँवर नयन नहिं सूझा
देखि सारथी रथी अचेता ❀ दल पीछेगा यतन समेता
तब बिराट नृप करि संधाना ❀ एकबार मारे सौ बाना
ते शर विशिख सुशर्मा काटे ❀ बाण पचीस क्रोध करि छांटे
मूर्च्छित भयो बिराट भुवारा ❀ करि निबन्ध निजरथपर डारा
वर्षन बाण सुशर्मा लागा ❀ भयो अधीर कटक सब भागा
नृपहि बांधि सब जीति सहाई ❀ चल्यो धेनु लै शंख बजाई

दो० सहदेव वपुष गुवालके, कङ्कऋषिहिशिरनाय ।
टेरि सुशर्मा हांक दै, भिरे ततक्षण जाय ॥
मत्त करीदल तासुको, अंकुश टेर सुनाय ।
फेरो बलकरि सिंह ज्यों, गहो कोपि धरधाय ॥

भयो युद्ध कछु कहत बनैना ❀ देखत थकित भई सब सैना
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा ❀ लात घात मुष्टिका प्रहारा
भिरहिं गिरहिंउठिलरहिंसँभारी ❀ अतिबल युगल न मानै हारी
तबहिं सुशर्मा बलकरि हारो ❀ पाण्डुपुत्र गहि धरणि पछारो
मल्लयुद्ध करि दल बिचलायो ❀ छोरि बिराटहि दलमहँ लायो
भीमसेन गज यूथ सँहारे ❀ पकरि तुरङ्ग तुरङ्गन मारे

गहि पदादि के शीश उपारे ❀ और सबै मल्लन को मारे
बारहिं बार भीम रण गाजे ❀ सुनि सुनि नाद शत्रु सब भाजे
नकुल कीन्ह तब खड्ग प्रहारा ❀ कटीसेन बहि शोणित धारा
दो० वही सरित तहँ रक्तकी, गयो सुशर्मा भाजि ।
छोरि बिराटहि लै चले, पाण्डुपुत्र रण गाजि ॥
आय कङ्क कहँ नायो माथा ❀ देखि सकलदल भयो सनाथा
फिरी धेनु सुख भयो अपारा ❀ गृहकहँ चल्यो बिराट भुवारा
उत्तर दिशि दुर्योधन राई ❀ बेढ़ि लई सुरभी समुदाई
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता ❀ किते जूह लै चले तुरन्ता
धेनु बृन्द यक करण बिलोकी ❀ रथ दौराय लीन्ह तहँ रोकी
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा ❀ तेहि तहँ खुरा ब्याधि उपराजा
बहु बिधि मारि ग्वालगण थाके ❀ अचलभयो धनुचलत न हांके
मिथुना शाप करण कहँ दीन्हा ❀ फल पैहौ तुम आपन कीन्हा
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा ❀ भारत में अटकै रथ तोरा
दो० अपर ग्वाल गण आइकै, बहुबिधि करी पुकार ।
उत्तर उत्तर की दिशा, बेढ़ो धेनु तुम्हार ॥
सुरभी शत हरिगईं तुम्हारी ❀ बैठ सुचित्त सदनमहँ झारी
हरी एक दुर्योधन गाई ❀ एक दुशासन लै हँकवाई
करिवर एक करण हरिलीन्हा ❀ कृतबर्मा आगे धरि दीन्हा
नृप भगदत्त गाय बहुतेरी ❀ हरे यूथ चहुँ ओर गेरेरी
पीत श्याम सुरभी बहु चोरी ❀ हरिलीन्हीं कपिला अरु धौरी
लक्षन कुँवर हरे यक जूहा ❀ लै कलिङ्ग यक धेनु समूहा
कुँवर पुकार श्रवण सुनु मेरी ❀ हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी
लिये जात धन अश्वत्थामा ❀ उत्तर दिशि उत्तर बलधामा
दो० ग्वालबिलापकलापकरि, उत्तर ते बहुभांति ।
कही तुम्हारी धेनु हरि, लीन्हे कुरुपति जाति ॥
बाह्लीक गङ्गाधर गाई ❀ हरिकाम्बोज लीन्ह अगुवाई

सोमदत्त भीषम रण गाढ़े ❀ शकुनी शल्य रोंकि मग ठाढ़े
करतकुलाहलगिरिगिरिजाता ❀ दीरघ दीरघ स्वर करिबाता
कहतगोपकरि विविधविलापा ❀ धेनुहरण सुनि तोहिं न ब्यापा
ऐसो धिक जीवन जग तोरा ❀ शालत उर न बचन सुनि मोरा
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला ❀ सेना सहित न भवन भुवाला
मेरे रथ नाहिं सारथि भाई ❀ होत लेत मैं धेनु छड़ाई
जो मेरो रथ हांकत होई ❀ कौरव जियत न छांड़ौं कोई

दो० द्रुपदसुता यह बचन सुनि, अर्जुन ते अकुलाय ।
कह्यो बृहन्नल कुँवरका, तुम रथ हांको जाय ॥

कह्यउ पार्थ तुव त्रिय बौरानी ❀ रथहांकब गति हम नहिं जानी
कहै कुँवर मोसन नहिं होई ❀ देव निकारि देश ते सोई
दासी भुरै कुँवर उरझावा ❀ चहत जीविका मोरि छड़ावा
जानौं गाय सकल मैं गीता ❀ बिबिधभांति नाचौं संगीता
और बजावहुँ मैं सब बाजा ❀ करौं प्रसन्न उदर हित राजा
चहत मोरि सबविधि उपहासी ❀ मृषा कुँवर बोलत यह दासी
यह कहि पार्थ रहे अरगाई ❀ द्रुपदसुता रानी पहँ आई
तहां बैठि उत्तराकुमारी ❀ कहेउ सैलन्ध्री बचन उचारी
बचन हमार सुनहु महरानी ❀ धेनुबोढ़ि कुरुपति अभिमानी
पठवहु कुँवर भवन नहिं राजा ❀ धेनु गये लागी कुल लाजा

दो० यह पारथ को सारथी, बृहन्नला यहि नाम ।
जो यह हांकै कुँवर रथ, जीतै सब संग्राम ॥

अब पठवहु उत्तराकुमारी ❀ प्राणनते वह अधिक पियारी
जो यह कहहि हिजते बानी ❀ सो फुर करहि सत्य सुनु रानी
कन्या सरस जानि मन ताको ❀ विद्या सकल पढ़ाई याको
हांकब रथ न कहा किन कोई ❀ याको हठ टारैं नहिं सोई
सुनिकै श्रवण सैलन्ध्री बानी ❀ कह्यउ उत्तरी ते यह रानी
संग सैलन्ध्री के तुम जाऊ ❀ बिजयबृहन्नल को समुझाऊ

हठकरि कह्यउ काज ज्यहि होई ❀ उत्तर को रथ हांकै सोई
सुनत बचन आतुर सो आई ❀ संग सैलन्ध्री लीन्ह लेवाई

दो० जाय पार्थ पहँ रुदन करि, गई कण्ठ लपटाय ।
मलिनबसन गुड़िया भई, खेल न मोहिं सोहाय ॥
सुन्योश्रवणयहिपुरनिकट, आयो है कुरुराय ।
तिनको भूषण बसन गुरु, मोकहँ देउ छिनाय ॥

जबलगिकरौ न बचन फुर मोरा ❀ तब लगि कण्ठ न छांड़ों तोरा
भूषण बसन कौरवन केरा ❀ बिन आने नहिं होय निवेरा
अर्जुन ते उत्तराकुमारी ❀ बोली बहुरि नयनभरि बारी
भीषम द्रोण करण उरमाला ❀ दुर्योधन को मुकुट विशाला
देहु गुरू म्वहिं आनि छिनाई ❀ यहि बिधि बारबार रटलाई
कहत द्रौपदी श्रवणन बानी ❀ सभासुद्धि सब तोहिं भुलानी
बीती अवधि डरहु केहिकाजा ❀ लरहु निकट आयो कुरुराजा
क्षत्री युद्ध डरहिं जो पारथ ❀ कर्म धर्म बहुताहि अकारथ
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा ❀ उठि न लरै कुल आवै लाजा
तुम शरमात प्रबल त्रिय नाहीं ❀ जियडेरातजिमिपियपहँजाहीं

दो० चित्तचाउ रत साहसी, महाबाहु बलधाम ।
बृहन्नला को रूपधरि, तुम छांड़ेउ वह नाम ॥

क्योंहठिरह्यउ चुपकि तुम पारथ ❀ करौ युद्ध है उत्तर स्वारथ
कह द्रौपदी श्रवणलगि बाता ❀ भय दृग अरुण फूलि सबगाता
कह्यो उत्तरी बचन रसाला ❀ देहुमँगाय बसन मणिमाला
बारबार यह कहि बिलखाई ❀ तजै न कण्ठ रही लपटाई
समुझायो बिधि पार्थ अनेका ❀ सुनि उत्तरी तजत नहिं टेका
अर्जुन देखि दया उपजाई ❀ दृगजलपोंछि कुँवरि समुझाई
कौरव जीति बसन मणि लेऊं ❀ पुत्री तोहिं क्षणक महँ देऊं
जो नहिं भूषण बसनहि लावों ❀ आननाफिरि न तोहिं दिखरावों
करि प्रबोध उत्तरी पठाई ❀ उत्तर ते बोल्यो हरषाई

दो० उत्तरसों तबहीं कही, विजय बृहन्नल बात ।
साजौ कौरव युद्धको, ह्वै प्रसन्न सब गात ॥
पारथ सारथि मैं कियो, जानत हौं रथ हांकि ।
जहां होत है सारथी, जीति सकै को ताकि ॥
इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

सुन्यो बचन यह राजकुमारा ❋ हृदय मांझ सुखभयो अपारा
टोप सनाह पार्थ के आगे ❋ राखे बचन कहन इमि लागे
कवच पहिरि पारथ परमाना ❋ जाते अङ्ग न भेदै बाना
जिमि कीचक पहिरै बरनारी ❋ तिमि सनाहकृत सुवननगारी
देखि लोग सब हँसे ठठाई ❋ कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई
सिन्धु समान कटक कुरुराई ❋ रथ लै भाग्यो युद्ध डराई
सबके बचन हासरस पागे ❋ सुनत द्रौपदी शरसम लागे

दो० कहत पार्थते द्रौपदी, बौरावत क्यहि काज ।
रथसाजौ अब कुँवर को, रण जीतौ कुरुराज ॥
बर्षदिवस की अवधिबदि, गये और दिन बीति ।
कीजै युद्ध निशङ्क ह्वै, रही कौन की भीति ॥
भयो बृहन्नल सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ।
साजिकटकलीन्हौंधनुष, कोपि गह्यो तलवार ॥

गन्धर्बन जे मन्त्र सिखाये ❋ सो पढ़ि पार्थ तुरङ्ग उठाये
ह्वै सारथी वेगि रथ हांको ❋ औघट बाट न कानन ताको
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना ❋ उत्तरके घट रह्यो न प्राना
गाजत गजहिं हिंसत हैं घोरा ❋ दुन्दुभि भेरि नाद अतिशोरा
शङ्खनाद पूरे सब कोई ❋ मारु मारु सब दलमहँ होई
द्वन्द्व घराटध्वनि अति ठहनाई ❋ मारू राग सहित सहनाई
रङ्ग रङ्ग बैरख फहराई ❋ हरित पीत सित श्याम सोहाई
बाजत सेन सेन पर डङ्का ❋ बरणि बन्दिजन कहत अतङ्का
सारथि सन उत्तर करजोरा ❋ लै चलु भागि भवन रथमोरा

बारबार तेहि बिनय बखानी ❀ एकौ बात न सारथि मानी
दो॰ करतबिनय सोनहिंसुनत, रथत्याग्यो अकुलाइ ।
भाजत लखि उत्तर कुँवर, गहो पार्थ तब धाइ ॥
बांधि धरो रथ ऊपर आई ❀ सम्मुख चल्यो सेनपर धाई
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिंचान्यो ❀ सबही ते यहि भांति बखान्यो
बांधिरथी रथ ऊपर धारो ❀ है निशङ्क रणको पगुधारो
अवगाहन सागर संग्रामा ❀ भुजबल पैज करी बलधामा
शूर सजग है सब धनुबाणा ❀ लेहु शूल अरु शक्ति कृपाणा
पवन गवन सम अर्जुन आवत ❀ वा बिन को जगमें अस धावत
दुर्योधन ते द्रोण बखाना ❀ अब सब सजग होहु बलवाना
भूप भली कछु परत न दीसी ❀ है आवनि यह अर्जुन कीसी
कह भीषम सुनु बचन हमारा ❀ मृग सँग धावत दीख सियारा
छुवत नितम्ब तासु पद धावत ❀ सुनु नरेश यह पारथ आवत
धरो बांधि रथ राजदुलारा ❀ त्रियस्वरूप यह पाण्डकुमारा
दो॰ मन्द दृष्टि भइ द्रोणकी, भीषम गये बुढ़ाय ।
कह्यो शकुनि यह करणसों, हँस्यो करण हहराय ॥
सुनि भीषम भा क्रोध अपारा ❀ कह नरेश सुनु बचन हमारा
बन बन फिरत बहुत दुख पावा ❀ परम क्रोध करि पारथ आवा
चलहिंक्रोधकरितुमहिंबिलोकी ❀ ये शठ एकौ सकहिं न रोंकी
भीषम कह्यो करणसन बोली ❀ दल की तीनि बनावहु टोली
एक सेन लै चलहु भुवाला ❀ एक करै गोधन प्रतिपाला
पारथ रोंकि करौ संग्रामा ❀ एक सेन ते सब बलधामा
यहि बिधि भीषम मन्त्र दृढ़ाई ❀ तीनि अनी करि सेन बनाई
दो॰ द्रोणी कृतबर्मा शकुनि, शत बन्धव बीरेश ।
कृपाचार्य अरु करण सँग, सो लै चल्यो नरेश ॥
नृप भगदत्त शल्य बलदाई ❀ चले संग लै धेनु लवाई
भीषम द्रोण आदि रणधीरा ❀ मग रोंके ठाढ़े सब बीरा

करे शङ्खध्वनि औ गल गाजैं ❀ मारू पटह भेरि बहु बाजैं
गोमुख ढाक ढोल पणवानक ❀ बाजतसब अतिहोत भयानक
द्विरद यूथ देखत अति भारी ❀ भादों जलद घटा जनु कारी
रथके ठाट भूमि सब छाये ❀ परै न भूपर तिल छिटकाये
तुरँग पदादि विलोकि अपारा ❀ भयो सशंक बिराटकुमारा

दो० उत्तर सों सारथि कही, भय न करहु कछुयङ्क ।
सकल निपातौं अरिचमू, रहियो आप निशङ्क ॥
असकहि फेरो तुरँग रथ, सुनि पाण्डव कुलदीप ।
पलकन बीती बिपिनमहँ, लैगे नगर समीप ॥
अन्ध कूप तरुवर शमी, ता पर धनु अरु बाण ।
बेगि लै आवहु मो निकट, गञ्जौं अरिदलप्राण ॥

सुनत वचन उत्तर हरषाई ❀ त्यहिद्रुमनिकट तुरतचलिजाई
चढ़ेउ पार्थकी आज्ञा मानी ❀ अस्त्रसनाह विलोक्यो आनी
पार्थ सुनौ मणि श्वेत सनाहा ❀ श्वेत धनुष श्वेतै गुणआहा
आनौ बेगि छुवै मति सोई ❀ अस्त्रसनाह नृपति कर होई
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा ❀ अर्जुन ते यह बचन उचारा
कनकरचितमणिखचितसोहाये ❀ धनुष सनाह देखि युगपाये
आयसु होइ डारि महि दीजै ❀ कह पारथ यह कत मत कीजै
यह सहदेव नकुल धनु गेरा ❀ रहि न सकै मम खैंचि दरेरा
सो उत्तर छांड़्यउ अरगाई ❀ और सनाह बिलोक्यो जाई
कोटि भांति उत्तर बल करेऊ ❀ जब न उठ्यो तब सो परिहरेऊ
उठो न धनुष कवच हिय हारो ❀ अर्जुन ते इमि बचन उचारो

दो० उठ्यो न धनुष सनाहकर, कोटि भांति बलकीन्ह ।
लोहमयी जनु बज्रसम, केहि निमित्त कैं दीन्ह ॥

परी गदा गिरिवर समताई ❀ है केहिको म्वहिं देव बताई
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा ❀ याको सुनहु सकलब्यवहारा
लोहमयी धनु कवच कराला ❀ भीमसेन को गदा बिशाला

लावहु और करिय रण जाई ❋ मग हमार देखत कुरुराई
लाव बेगि धनु कवच हमारा ❋ पल लागत जनु कल्प अपारा
जो गृह जाइ भाजि कुरुराई ❋ फिरि का करब युद्धमहँ जाई
अक्षय तूण जाइ तहँ देख्यो ❋ संभ्रमभयो कुँवर यह लेख्यो
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा ❋ अहि ह्वै बिशिख करत फुंकारा
स्वै किरीटि स्वै कवच बिलोका ❋ रविसमतेज धनुष अवलोका
पारथते तब कह्यउ कुमारा ❋ धनु जनु दिनकर तेजपसारा
तब आयुध हम छुवन न पावैं ❋ ब्यालरूप शर काटन धावैं
सुनु सारथि मम बचन सुनाये ❋ मोपर अस्त्र न जायँ उठाये
यह सुनि कै पारथ हरपाई ❋ कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई

दो० निर्गुणधनुगुणकरिसोई, सूधे कीन्हे बाण ।
काढ़ी गङ्गा भूमि ते, धोये सकल कृपाण ॥
पहिरि कवचशिरटोपदै, निज धनु करि टंकोर ।
हांक्योरथ बहुकोपकरि, पहुँचो कटक बहोर ॥
बीर धनुर्द्धर धीरकै, मनमहँ कहूं न हारि ।
भा दुर्घट सब घटनमहँ, कौरवदल अतिकारि ॥

बैठो आनि ध्वजा हनुमन्ता ❋ जाके बलको नहिं कछु अन्ता
करि अतिक्रोध धनुषशरलीन्हो ❋ देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हो
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई ❋ जीतन हित दुर्योधन राई
सारथिते उत्तर कर जोरी ❋ कहै सुनहु बिनती कछु मोरी
तुमते कहौं बृहन्नल सांची ❋ मोते कहौ बात सब सांची
कौन आप म्वहिं देव बताई ❋ मो मनको संशय मिटिजाई
कह अर्जुन भाषत सति भाऊ ❋ है ऋषि कङ्क युधिष्ठिर राऊ
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा ❋ भीम जयन्त तुम्हार सुवारा
सेनी सहदेव नामहिं जानौ ❋ बाहुक नकुल मैनहै मानौ

दो० वह है रानी द्रौपदी, जाहि सैलन्ध्री नाम ।
कछुनभय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम ॥

तुम्हरी सुरभी सो हरी, लेत हमारो शोध ।
अब सुन बीते सो अवधि, तब मैं कीन्हों क्रोध ॥
इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वकथनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दो० उत्तर फिरि लागो चरण, सुनु स्वामी सतिभाय ।
दशौ नाम अपने कहौ, तौ मो मन पतियाय ॥

कौरव वंश जन्म हम लीन्हा ❀ अर्जुन नाम ब्यासमुनि कीन्हा
बानपन्थ सुर द्विरद उतारा ❀ पार्थ नाम भा जगत हमारा
जीत्यो बात कवच संग्रामा ❀ कीन्ह्यो सुनासीर को कामा
भये प्रसन्न समेत समाजा ❀ बिजयी नाम धरो सुरराजा
पुनि नरेश शिर मुकुट बँधावा ❀ तहां किरीटि नाम कहवावा
द्रुपद नरेश सेन जब काटी ❀ एक मिलाय मांस अरु माटी
पुनि बिभत्सरसकरि रण राखा ❀ नाम बिभत्सद्रोण यह भाखा
धनपति जीति दण्ड लै आना ❀ नाम धनञ्जय कृष्ण बखाना
द्वौ कर जोरि करौं संग्रामा ❀ परो सब्यसाची तब नामा
श्वेत तुरँग मैं रथ मचिआऊं ❀ भयो श्वेतबाजी तब नाऊं

दो० रथ साजत मैं युद्धहित, ध्वज बैठत हनुमान ।
नामकपिध्वजजगविदित, याहीते तू जान ॥

शब्द होत रहै हमरो बाना ❀ शब्दभेद जग नाम बखाना
औरहु सुनौ बिराटकुमारा ❀ हम तुम्हार कीन्हों अपकारा
बारबार बिनवों कर जोरी ❀ सो सब चूक बकसिये मोरी
भीमसेन शत कीचक मारे ❀ ते अपराधी हते हमारे
बरबस गह्यो द्रौपदी रानी ❀ मारेउ भीम मानि गिल्यानी
मारेउ मल्ल द्विरद गहिलायो ❀ तेरे गृह हम अतिसुख पायो
तुम्हरे आनि बिपति सब डारी ❀ वर्षदिवस की अवधि हमारी
द्वादश वर्ष बिपिन है आये ❀ तव छायामहँ अति सुखपाये
सुनि यह श्रवण बिराटकुमारा ❀ जोरियुगलकर बचन उचारा
हलकी भारी जो हम कहेऊ ❀ आप समर्थ श्रवणसुख लहेऊ

जो कछु हम ते भा अपराधू ❀ सो सब क्षमा करहु तुम साधू
दो॰ बीर धनञ्जय क्रोध करि, चल्यो सबल रथ हांकि ।
अतिबल चले तुरङ्ग तब, रहे शिथिल ह्वै थाकि ॥
पाय तेज गन्धर्व को, अतिबल भये तुरङ्ग ।
कही द्रोण गुरु पार्थ सों, कौन करै रण रङ्ग ॥
आय धनुर्द्धर भा रण काजू ❀ सन्मुख करै युद्ध को आजू
बीरबली नहिं धीरज धरिहैं ❀ कौन बीर अर्जुन सन लरिहैं
दल जैहै चहुँ ओर पराई ❀ युद्ध जुरे नहिं कोउ समुहाई
सुनहु सकल मम बचन सुहावा ❀ याते अधिक शोच उर आवा
प्रलय काल जेहि करै मशाना ❀ कोधौं सहै पार्थ कर बाना
कोटि उपाय करो सब सोई ❀ अर्जुन जीति सकै नहिं कोई
यहि बिधि कहि गुरु द्रोण बुझावा ❀ भयो अपर नृपचरित सुहावा
प्रथम पार्थ युग बाण चलाये ❀ ते गुरु द्रोण निकट चलि आये
दो॰ एक गिरो गुरुचरणतर, एक श्रवण ढिग आइ ।
करि प्रणाम पारथ कही, परो भूमि पर जाइ ॥
तजे पार्थ पुनि बाण युग, गयो पितामह पास ।
परो चरण यक श्रवणमहँ, कीन्हों आय प्रकास ॥
प्रथम पितामह पार्थ प्रणामा ❀ तुमते कहौं सुनहु बलधामा
पुनि अर्जुन यह कह्यो सँदेशा ❀ तुम सम्मुख रण मोहिं अँदेशा
क्षमब नाथ अपराध हमारी ❀ कुरुपति हमैं बैर है भारी
कपट द्यूत करि भूमि छड़ाये ❀ तेरह बर्ष महादुख पाये
करिहौं आजु भयङ्कर रारी ❀ अब न पितामह लागि हमारी
यह कहि बचन बाणमाहिजाई ❀ कह्यउ पितामह सबन सुनाई
कह भीषम अब अर्जुन आवा ❀ करहु सकल मिलि रणको दावा
सकल सजग ह्वै गहि हथियारा ❀ करहु युद्ध जनि करहु अबारा
दो॰ कहेउ द्रोण गाङ्गेय ते, सुनिये बचन प्रमाण ।
श्रवण लागि मोसे कह्यो, यह अर्जुन को बाण ॥

तुम सम्मुखरण उचित न मोको ❋ ताते बिनय सुनायो तोको
कपटद्यूत करि बिपिन निकारा ❋ तेरह वर्ष सह्यो दुख भारा
अब न गुरू अपराध हमारा ❋ करिहौं कटक सकल संहारा
असकहि बाण परो महिजाई ❋ है सचेत सब करहु लराई
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई ❋ देखै सकल बीर समुदाई
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये ❋ तहँ कुरुनाथ देखि नहिं पाये
उत्तर ते यह पार्थ बखाना ❋ सुनु बिराटसुत बचन प्रमाना
अपरनिधननिसरहिंनहिंकाजा ❋ चलु रथहांकि जहां कुरुराजा
सुनि बिराटसुत तुरँग उठाये ❋ जेहिदलनृपतितहांचलिआये
लीन्हों पार्थ भूप कहँ ताकी ❋ लैगा बेगि कुँवर रथ हांकी
भीषम द्रोण सेन सब धाई ❋ पहुँची निकट भूप के आई
हाहा हूत सेन महँ भयऊ ❋ दल तीनों यकमिल ह्वै गयऊ
कह नरेश सब बीर बोलाई ❋ को रोंकै अर्जुन कहँ जाई

दो० जीतन पारथ बीर हित, घोटक लियो कलिङ्ग ।
अचल मेरुसों रणरचो, कियो कोटि रण रङ्ग ॥

नृप कलिङ्ग अर्जुन बल पाई ❋ द्वौदिशि बाणबुन्द झरिलाई
दश शर तब कलिङ्गनृप छांटे ❋ आवत पार्थ बीचही काटे
पुनि अर्जुन यकबाण प्रहारा ❋ कुन्तल नृपकलिंग को मारा
पुनि शर हन्यों काल के धाके ❋ काट्यो गजके ध्वजा पताके
गजतजि चढ़यो अपररथ आई ❋ कीन्ह कलिङ्ग युद्ध अधिकाई
तब कलिङ्ग कीन्हों अतिकोपा ❋ शरनमारि पारथ रथ तोपा
अग्निबाण तब पार्थ पँवारा ❋ सब शर भये निमिषमहँ छारा
पुनिशतबिशिखकलिङ्गचलाये ❋ ते सब अर्जुन मारि गिराये

दो० पार्थ सहसदश बाण ते, हतो कोप करि बीर ।
मूर्च्छितागिरोकलिङ्गरण, धरि न सकतदलधीर ॥

इति श्रीमहाभारतेकलिङ्गयुद्धवर्णननामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० जबकलिङ्गमूर्च्छितभयो, तबबिकरणरणसाजि ।

कोपि शरासन बाणलै, आयो सन्मुख गाजि ।
तब बिकरण करि कोप चलाये ❀ भूमि अकाश बाण ते छाये
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती ❀ हैगै मनहुँ दिवस महँ राती
अतिशय अन्धकार तहँ भयऊ ❀ परै न लखि दिनकर छपि गयऊ
बिकरणहनो क्रोधकरि जियमों ❀ तीस बाण पारथ के हियमों
पारथ बाण क्रोध करि छण्ड्यो ❀ पलमहँ शर बिकरणके खण्ड्यो
औरौ बाण पाण्डुसुत छांटे ❀ हय गय मरे अमित रथ काटे
कोटिन अर्ब खर्ब शर मारा ❀ काटिसेन बहि शोणितधारा
परी लोथ धरणी पर पाटी ❀ बूझि न परै शीश अरु माटी
कहां जङ्घ कर शिर पद डारे ❀ कहूँ कवन्ध परे महि भारे
दो० तब बिकरणचालीस शर, हन्यो कीश बलवन्त ।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त ॥
तब बिकरण साहससहित, भूमि परो मुरछाय ।
देखि करण बलबीर तब, आयो धनुष चढ़ाय ॥
धनुष चढ़ाय करण ललकारे ❀ कठिन बाण अर्जुन पर मारे
ते शर सर्बजिष्णु रण खण्ड्यो ❀ करिअतिक्रोधसहसशरछण्ड्यो
ते सब बिशिख करण पुनि काटे ❀ लाघव शर पारथ पर छांटे
आवत देखे बाण अपारा ❀ अर्जुन अग्निबाण तब मारा
करण बाण जारे सब आगी ❀ लागी जरन सेन सब भागी
बरुण बाण तब करण चलायो ❀ क्षणभीतर सब अनल बुतायो
अर्जुन शर बूड़त जब जाना ❀ मारो तुरत पवन को बाना
तासु चलत गा नीर सुखाई ❀ ध्वजा पताका छत्र उड़ाई
अहिशर करण त्याग तबकीन्हा ❀ नागन सकलपवन भखिलीन्हा
तब अर्जुन शिखिबाण चलाये ❀ मोरन सकल सर्पसम खाये
रविसुत अन्धकार शर पाग्यो ❀ देखत सब पक्षीगण भाग्यो
परै देखि नहिं नयन पसारा ❀ व्याकुल भयो बिराटकुमारा
अर्जुन ते तब बचन उचारा ❀ प्राण जात अब करहु उबारा

तब पारथ रविबाण प्रहारा ❀ तम भा दूरि भयो उजियारा

दो० तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्वत बान ।
पारथ रथपर शैलगण, चहुँदिशिते फहरान ॥

बज्र बाण तब पार्थ प्रहारा ❀ सब गिरिभयो निमिषमहँछारा
तब रविसुवन क्रोध उपजावा ❀ पढ़ि सुमन्त्र यमबाण चलावा
पार्थ कठिन शर आवत जाना ❀ मृत्युबाण कीन्हो संधाना
अस्त्रशस्त्र लड़ि शीतलभयऊ ❀ रविसुत कोपि कठिनशरलयऊ
सो लै अर्जुन के उरमारा ❀ बही प्रवाह रुधिर कै धारा
रविनन्दन बिराटसुत ताका ❀ मारो कठिन बाण दै हांका
अब अर्जुन रण करहु सँभारा ❀ करौं निधन सारथी तुम्हारा
अर्जुन लये बाण कर चोखे ❀ कहो करण भूल्यो जनि धोखे
यम अरु इन्द्र वरुणचलिआवैं ❀ सारथि छांह छुवन नहिं पावैं
सुनु रविसुत केतिक बल तोरे ❀ सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे
यहकहिकै अर्जुनशर छण्डित ❀ कीन्होंबिशिखकर्णकोखण्डित
पुनि पारथकृत विशिखप्रहारा ❀ भञ्ज्यो तुरँग सारथी मारा
शतसहस्र शर भालक लीन्हे ❀ रविनन्दन उर भेदन कीन्हे
अगणित बाण हृदयमहँ लागे ❀ सहि न सके रविनन्दन भागे

दो० रण अर्जुन को नेकहू, सहि न सकोस्वइबान।
रणमण्डित तजिको भयो, रवि सों तेजनिधान ॥

गयो पराय कुरूपति आगे ❀ बिह्वल बचन कर्ण तहँ पागे
सुनु नरेश भा कठिन मशाना ❀ सहि न सक्यो अर्जुन के बाना
जब यह सुन्यो कर्ण मुखबाता ❀ क्रोध कृशानु जरे सबगाता
बोल्यो नृपति कुटिलकरि भौंहैं ❀ अरुणबरण भे नयनारिसौंहैं
क्षत्रीकुल बालक रिसगारी ❀ करत युद्ध पग परै पछारी
आयो करण युद्ध ते भागी ❀ तुमहिंविलोकिमोहिं रिसलागी
तुम अर्जुन कहँ पीठि दिखाई ❀ भै बड़िलाज बरणि नहिं जाई
भूरिश्रवा मगहपति आगे ❀ द्रोणहिं बोलि कहन नृप लागे

तुम सब मैं पाले यहि कामहिं ❀ पारथ जीति सके संग्रामहिं
दो॰ यह कहिकै कुरुनाथ तब, नेकु न मानी शङ्क ।
चल्यो निशान बजाइ रण, भयो महाआतङ्क ॥
भयो चलत अशकुन अतिभारी ❀ रविके अछत फेकरि सिआरी
बिनु घन नभमण्डल घहराई ❀ रहे गिद्ध दल ऊपर छाई
बोल उलूक भयंकर बानी ❀ बिनु बारिद नभ बरसत पानी
कररै काक कङ्क नभ ठाटी ❀ चलहिं जम्बुगण मारग काटी
रासभ श्वान भयंकर बोली ❀ बोलत धरा बार बहु डोली
गिरि गिरिपरत शरासन पाणी ❀ परत म्यानतजिनिकरकृपाणी
खास दास कर छत्र बिशाला ❀ परो टूटि अरु नृप मणिमाला
दिशा धूँधि धरणी पर छाई ❀ गये नृपति के चमर उड़ाई
अशकुन और भयो यकबांका ❀ भूपति रथको टूट पताका
दो॰ भै शंका भूपाल तब, कह्योद्रोणसनबोलि।
अशकुनकारणसकलगुरु, हमहिंबतावहुखोलि॥
कह्यो द्रोण गुरु सुनु कुरुराई ❀ कहत शकुन अतिबिकटलराई
हैहै इहां कठिन संग्रामा ❀ होहिं निराश सकल बलधामा
कह्यो बचन गुरु रह्यो चुपाई ❀ बोल्यो करण नृपति सन आई
रण भाजे मो कहँ भै लाजा ❀ अब मैं लरब पार्थसन राजा
यह कहि करण हांकि रथदीन्हा ❀ बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हा
देखि पार्थ लीन्हो शारङ्गा ❀ पुनि रणरच्यो करण के सङ्गा
उभय बीर लागे शर मारन ❀ सौते सहस हजार हजारन
तब रविसुवन क्रोधअति कीन्हों ❀ बाण पचीस फोंकपर दीन्हों
हांक मारि रथ ऊपर छण्ड्यो ❀ अर्जुन ते शर बीचहि खण्ड्यो
और पांच शर पार्थ चलाये ❀ करण बली ते काटि गिराये
दो॰ करण धनुर्द्धर क्रोध करि, हन्यो नराच अचूक।
ते पारथ निज शरन ते, काटि कियो दुइ टूक॥
और सहस शर त्यागेउ पायल ❀ ताते भयो तरणि-न घायल

लक्ष बाण सेना पर मारे ❋ हय गज रथ पदाति संहारे
पारथ करेउ युद्ध सरसाई ❋ रणमहँ रक्त नदी बहिआई
मत्त मतङ्ग मरे जे भारे ❋ भये सरिस दोउ ओर करारे
चमकत खड्ग मीन सम जाने ❋ चर्म सेवार सरिस अरुझाने
अहिसम रुधिर नदी महँ सांगी ❋ जहँ तहँ परी धूप जनु नांगी
शिरबिन कवच सहित उतराहीं ❋ जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु आहीं
बिन शिर सेन जात पहिंचाने ❋ मनहुँ सूस जल में उतराने
रथ के चक्र अमित उतराहीं ❋ जनु आवर्त्त भ्रमत जलमाहीं
परी पत्र पुरइनि सम मानो ❋ बहत ढाल कच्छप सम जानो

दो० भैरव भूत पिशाच सम, गावत करि करि हेत।
नाचत चौंसठि योगिनी, रुधिर पियत युत प्रेत॥

अन्ध धुन्ध रण भयो भयंकर ❋ नाचत हँसत लेत शिरशंकर
कटकटाहिं जम्बुक रण धावहिं ❋ पियहिंरुधिरमलखाहिंअघावहिं
गिद्ध आदि पक्षिगण धाये ❋ रणमहँ भये तृपित मनभाये
उठहिं कवन्ध मुण्ड बिन धावहिं ❋ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं
देखेउ करण भिहावन खेता ❋ लीन्हो धनुष कीन्ह चितचेता
करि रिस शतसहस शर मारे ❋ पाण्डुसुवन ते काटि निवारे
अर्जुन कोपि बाण दश त्यागे ❋ काटे तुरँग स्वामि उर लागे
भयो विरथ तब तरणिकुमारा ❋ भयो आन रथपर असवारा
करि रिस कीन धनुष टंकोरा ❋ अशनिसमानशिलीमुखजोरा
हांक मारिकै करण चलावा ❋ बीचहिं अर्जुन काटि गिरावा
समबल युगल करण अरु पारथ ❋ कीन्हों महाभयानक भारथ
सत सहस्र शर पार्थ निवारे ❋ हय गज कटे सुभट बहु मारे
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा ❋ कोटिन सुभट गिरे बहुनामा

दो० करण धनुर्द्धर के हिये, एक बार सौ बान।
मारो अर्जुन कोप करि, कीन्हों कठिनमशान॥

तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई ❋ रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई

दुश्शासन तब युद्ध सँभारो ❀ देख्यो करण महाबल हारो
लै कर धनुष कोपि बलवाना ❀ पारथ पर छांड़े बहु बाना
ते शर जिष्णु काटि सब डारे ❀ दश शर दुश्शासन उर मारे
पांच बाण सारथि के अङ्गा ❀ बीस बाण ते हने तुरङ्गा
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ सात बाण ते ध्वजा पताका
पारथ कीन्ह कठिन शरजाला ❀ करि फुंकार चले जनु व्याला
भये बिरथ दुश्शासन भाजे ❀ शङ्खध्वनि करि पारथ गाजे
अर्जुन बाण बुन्द झरिलाई ❀ कुरुसेन सब चली पराई

दो० भारत अति पारथ कियो, मारी सेन अनन्त ।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त ॥

आपन दल जब डोलत ताको ❀ मत्त द्विरद आगे नृप हांको
दश सहस्र शर एकहि बारा ❀ कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा
ते शर पार्थ काटि महिडारे ❀ लक्षबाण करि क्रोध पँवारे
पारथ बाण काटि भगदत्ता ❀ आगे पेलि चल्यो मयमत्ता
निकट देखि अर्जुन धनुताना ❀ मारो मगधराज उर बाना
चेत न रह्यो शिथिल सब अङ्गा ❀ तब कुन्तल लै फिरेउ मतङ्गा
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांटे ❀ भारत भूमि बाणते पाटे
रण सन्मुख जेतो दल पायो ❀ मारि पार्थ यमलोक पठायो

दो० अति संकटभा कटक महँ, सेना चली पराइ ।
तब पारथ रणभूमि में, गर्जे शङ्ख बजाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दो० पार्थबाण नहिं सहिसक्यो, कुरुदलचल्योपराइ ।
देखि द्रोणगुरु क्रोध करि, आये रथ दौराइ ॥

हांक मारि यह बचन सुनायो ❀ पार्थ सँभारु द्रोण अब आयो
सुनि यह बचन पार्थ चलिआगे ❀ करन प्रणाम गुरुसन लागे
देख्यो द्रोण नमित पद सोई ❀ आशिष दयो मनोरथ होई
अस कहि गुरुकोदण्ड चढ़ायो ❀ होहु सजग कहिबाण चलायो

सुनिअर्जुनकहिलीन्हपिनाका ❀ शर संधानि दीन पुनि हांका
सजग अहो कहि बाणचलावा ❀ गुरुप्रेरित शर काटि गिरावा
लघु संधानि द्रोण शर मारे ❀ ते सब पार्थ काटि महिडारे
दो॰ सहस बाण संधानकरि, पार्थ कियो रण रङ्ग ।
रथ सारथि चूरण कियो, जूभे चारि तुरङ्ग ॥
तब गुरु चढ़यो अपररथ जाई ❀ ले धनु बाण बुन्द भरिलाई
द्रोणबिशिखयहिभांतिचलायो ❀ भूमि अकाश बाण ते छायो
ते शर पार्थ निमिष महँ काटे ❀ दिशि अरु बिदिशि बाणते पाटे
कोपि द्रोण शर अनल प्रहारा ❀ किये बाण अर्जुन के छारा
सहस शिखा पारथ चहुँओरा ❀ जारनचल्यो अनल करि शोरा
वरुण बाण तब पार्थ चलायो ❀ क्षणभीतर सब अनल बुतायो
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❀ नारायण शर पारथ मारा
अस्त्रअस्त्रतेभयोनिवारण ❀ तबलगिनिशितबिशिखअतिमारण
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ वज्रबाण पुनि कीन्ह प्रहारा
तब धनु तानि द्रोण रणलायक ❀ तड़प्यो सेनानी को शायक
ताते इन्द्र बाण क्षय कीन्हों ❀ तब पारथ मृत अस्त्रहि लीन्हों
दो॰ मृत्यु अस्त्रते द्रोणगुरु, कीन्हों तुरत प्रहार ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो करत फुंकार ॥
संघटकरि अकाश उड़ि गयऊ ❀ लड़त लड़त सो शीतल भयऊ
परे भूमि दोनों शर आई ❀ कह्यो द्रोण अर्जुनहिं सुनाई
सुनहु पार्थ रण करहु सँभारा ❀ अब नहिं होय तुम्हार उबारा
असकहि महाकाल शर लीन्हा ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा ❀ सुमिरे कृष्णदेव के चरणा
छूटो जबहिं द्रोण को बाना ❀ मुख पसारि लीन्हों हनुमाना
तब अर्जुन यक बाण प्रहारा ❀ रथ सारथी द्रोणकर मारा
सहस बाण मारे गुरु अङ्गा ❀ चारि बाण ते बध्यो तुरङ्गा
बिरथहिभयोद्रोण जब जान्यो ❀ भूरिश्रवा आनि अरुभान्यो

मारे अर्जुन के दश बाना ❀ बीस बाण मारे हनुमाना
द्वै द्वै शर तुरँगन के मारे ❀ शिथिल भयो पग टरत न टारे
दो० तबपारथ अतिक्रोधकरि, मारो बाण कराल ।
मूर्छित गिरे भूरिश्रवा, सुधि न रही तेहि काल ॥
तब सारथि स्यन्दन पलटावा ❀ लै नरेश के आगे आवा
द्रोण अपर रथ कै असवारी ❀ सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी
कै सरोष गुरु बहुशर छांड़ेउ ❀ आवत अर्जुन बीचहि खांड़ेउ
तबहीं पारथ क्रोध अपारा ❀ गुरु उरकठिन बाण यक मारा
जबहिं द्रोण कहँ मूर्च्छा आई ❀ फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई
अर्जुन कोपि धनुष धरि हाथहिं ❀ बधी सेन काटे बहु माथहिं
परी लोथ धरणी पर छाई ❀ रणमहँ रुधिर नदी बहिआई
सब योगिनि तहँ करत बिहारा ❀ ताल बजाइ करत किलकारा
भक्षहिं मांस रुधिर पुनि पीवहिं ❀ आशिष देहिं पार्थ चिरजीवहिं
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा ❀ सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा
दो० पवन गमन सम द्रोणसुत, गयो तुरत रथ हांकि ।
बिशिखचलायोक्रोधकरि, पारथकी दिशिताकि ॥
सो शर काटे निमिषमहँ, कीन्होंपुनिशरजाल ।
द्रोणतनय के उर हन्यो, अर्जुन बाण कराल ॥
लागत बाण भयो तनुपीरा ❀ रुधिर धार गा भीजि शरीरा
धनुष चढ़ाय द्रोणसुत छांड़े ❀ दिशिऔबिदिशि बाणसब मांड़े
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❀ द्रोणी हृदय बाण दश मारे
भा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें ❀ मारौं शर अर्जुन के हियमें
फूटि कवच निसरेउ शर पारा ❀ बहत प्रबाह रुधिर कै धारा
अर्जुन अंधकार शर मारा ❀ कुरुदलमध्य भयो अँधियारा
व्याकुल कटक भागि सब गयऊ ❀ प्रभाअस्त्र द्रोणी गुणदयऊ
ताते फैलि रह्यो उजियारा ❀ अर्जुननिशितबिशिखतबमारा
दो० तब रण कोप्यो द्रोणसुत, खण्ड्यो अर्जुन बान ।

भाषापर्व विराट यह, सबल सिंह चौहान ॥
इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वणिनवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दो० वैशम्पायन से कही, जनमेजय शिरनाय ।
कीन्हकृतारथ मोहितुम, अद्भुतचरित सुनाय ॥

कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❋ कथा बिचित्र श्रवण मन लाई
गुरुसुत दर्पण बाण चलायो ❋ भूमि अकाश आरसी छायो
देखि अनेक द्रोणसुत पायो ❋ पारथ के उर में भ्रम छायो
परत देखि बहु अश्वत्थामा ❋ काके संग करौं संग्रामा
यह कहि पार्थ चलायो बाना ❋ कीन्ह द्रोणसुत कठिन मशाना
लड़तलड़त दौदल मिलिगयऊ ❋ द्रोणी कोपि खड्ग कर लयऊ
कीन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा ❋ धनुगुण पारथ को तब काटा
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❋ निजअसि काटि सारथी मारा
पुनि मारे द्रोणी के बाजी ❋ भयबश गयो युद्ध तजि भाजी

दो० अर्जुन धनुगुण साजिकै, कीन्ह बिशिख संधान ।
रोंक्यो तब जयदर्थ चलि, साजि शरासन बान ॥

सिन्धुराज दश बिशिख चलाये ❋ ते सब अर्जुन काटि गिराये
पुनि मारेउ पारथ यक तीरा ❋ कवच भेदिगा छेदि शरीरा
सिन्धु नृपति तब मूर्च्छा आयो ❋ स्यन्दन डारि सूत लै जायो
तबकरिक्रोधशकुनिचलिआयो ❋ अर्जुन को बहु बाण चलायो
ते शर काट्यो पाण्डुकुमारा ❋ पुनि यक बाणशकुनिउरमारा
बाण लगत तन मोह जनावा ❋ तबहिं सूत रथ फेरि चलावा

दो० कोप कियो संग्राम तब, पार्थ हन्यो बहु तीर ।
पारथ के एकहु बिशिख, सहि न सकत कोउबीर॥

शकुनी गिरत शल्य चलि आये ❋ पारथपर बहु बिशिख चलाये
सो शर अर्जुन काटि निवारे ❋ बाण पचीस शल्य उर मारे
भयो बिकल व्यापी बहुपीरा ❋ गयो भागि उर रह्यो न धीरा
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा ❋ जीति युद्ध तब शङ्ख बजावा

बाहुलीक गङ्गाधर आये ❀ नृप काम्बोज युद्ध हित धाये
सोमदत्त करि क्रोध अपारा ❀ लैकर धनुष सेन ललकारा
कीन्ह सकल मिलि युद्धप्रचारा ❀ चहुँदिशि ग्रसि अर्जुन कहँ मारा
शूल सांगि कोऊ शर बरसा ❀ कोउ असिघात हने कोउ फरसा
देख्यो पार्थ ग्रसे चहुँ ओरा ❀ करि अतिक्रोध पार्थ शर जोरा
भये एक ते बिशिख हजारन ❀ कौरवदल लाग्यो संहारन
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारो ❀ सोमदत्त को दल सब मारो
कोटिन अर्ब खर्ब शर सारत ❀ सन्मुख आनि जुरे सब भारत
लै कृपाण कर पार्थ उठो तब ❀ मारि भगायदयो बल करि सब
भजे शूर ते नाहिं फिर हेरत ❀ रण में पार्थ दौरिकै घेरत

दो० पार्थबाण नहिं सक्योसहि, कुरुदल चल्यो पराइ ।
धनु टंकोर्यो क्रोध करि, सोमदत्त तब आइ ॥

लै सो बिशिख पार्थ पर छांड़े ❀ शक्रसुवन तेहि बीचहिं खांड़े
कह अर्जुन कुरुपति बन काढ़ा ❀ शकुनी करण मन्त्र सुनि गाढ़ा
तुमहुँ कीन्ह नहिं न्याय हमारा ❀ मारन हेतु धनुष कर धारा
अब नहिं बचहिं बचन सुनु सांचा ❀ असकहि पारथ हन्यो नराचा
लाग्यो बिषम बाण उर जाई ❀ सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई
बाहुलीक हांक्यो रथ आगे ❀ करन युद्ध पारथ मन लागे
लैकर धनुष कीन्ह संधाना ❀ अर्जुन को मार्यो सौ बाना
ते शर पार्थ काटि सब दीन्हा ❀ पार्थ सहसशर त्यागन कीन्हा
बाहुलीक ते शर सब काटे ❀ लक्ष बाण अर्जुन रथ पाटे

दो० आवत देखे बाण जब, पारथ गहि कोदण्ड ।
पलमहँखण्ड्यो सकलशर, कीन्ह्योयुद्ध [illegible] ॥

शत सहस्र शर एकहि बारा ❀ बाहुलीक उर पारथ मारा
रथ अचेत ह्वै गिरत बिलोका ❀ गङ्गाधर पारथ कहँ रोका
बाण शरासन कृत संधाना ❀ अर्जुन पर छांड़े बहु बाना
ते शर खण्डि पार्थ शर त्याग्यो ❀ सोमदत्त सुत उर [illegible] लाग्यो

परेउ मूर्च्छि गङ्गाधर जबहीं ❀ रणकाम्बोज कीन्ह पुनितबहीं
आवतहीं अर्जुन बलवाना ❀ हृदय मांझ मारेउ यकबाना
लागत चेत न रह्यो शरीरा ❀ रथ मुरझाइ गिरेउ रणधीरा
द्विरद द्विमत्त क्रोध करि धाये ❀ लक्षन कुँवर हलम्बुष आये
संग चमू चतुरङ्ग घनेरी ❀ लीन्हों पाण्डुसुवन कहँ घेरी

दो० शङ्क न मानत पार्थ भट, यद्यपि ग्रसत अनेक।
डरत न गजसेना निरखि, सिंहबली जिमि एक॥

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई ❀ सेन किधौं वर्षा ऋतु आई
घोर घने गज दीरघ धाये ❀ पावस जलदघटा जनु छाये
श्वेत बरण गजदन्त बिभांती ❀ सो जनु उड़त गगन बकपांती
होत चमर जहँ तहँ दल माहीं ❀ राजहंस जनु गगन उड़ाहीं
घन गर्जत बाजत जे डंका ❀ असिप्रहार जनु बिज्जुदमंका
धनुजनु सुरपतिधनुष बिशाला ❀ बुंद मनहुँ बरषत शरजाला
अर्जुन मनहुँ बीररस पागे ❀ शर समूह पुनि मारन लागे

दो० प्रलयकाल के पवन सम, पार्थ बाण हहराइ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरद से भहराइ॥

द्विरद द्विमत्त कीन्ह अतिकोपा ❀ शरन मारि पारथ रथ तोपा
पारथ कीन्ह तुरत संधाना ❀ अरि शरखंडि हने बहुबाना
पंच बिशिख ते द्विरद प्रहारो ❀ दुइशर लै द्विमत्त उर मारो
परे मूर्च्छि रण दूनौं भाई ❀ लक्षन कुँवर जुरे तब आई
अर्जुन उर मारे दश बाना ❀ सत्तरि बाण हने हनुमाना
रुधिर धार भीज्यो सब अंगा ❀ पारथ कोपि लीन्ह शारंगा
यहिबिधिकीन्होंबिशिखप्रहारा ❀ रथ सारथी कुँवरको मारा
भेरेउ बहुरि बाण बहु साजी ❀ कीन्ह निधनकुरुपतिसुतबाजी
भये अरूढ़ कुँवर रथ आना ❀ कीन्हों बहुरि बिशिख संधाना
तब पारथ करि क्रोध अपारा ❀ अशनिसमान बाण उरमारा

दो० मूर्च्छिपरा रणभूमि महँ, जब कुरुनाथ कुमार।

साजि हलम्बुष धनुष शर, कीन्हों युद्ध अपार ॥
गहि कर धनुष हलम्बुष धाये ❀ पारथ रथ सन्मुख चलिआये
सात कोटि दानवगण साथहि ❀ धाये सकल धनुष धरि हाथहि
धरि बांधहु दानवपति टेरो ❀ धरु धरु मारु मारु कहि घेरो
कहुँ कीन्हों शर शक्ति प्रहारा ❀ मुद्गर गदा शूल केहुँ मारा
फरस कृपाण चले गहि मारन ❀ कोउ खंजर कोउ परिघ कटारन
कोउ कर सुभट भुशुण्डी लीन्हे ❀ महा मारु पारथ पर कीन्हे
भिन्दिपाल कोउ बृक्ष उपारी ❀ केहुँ गिरिशिला पार्थपर डारी
दो० सात कोटि दल दैत्य को, करि करि क्रोधअपार ।
सबमिलिकीन्हों पार्थपर, निजनिजअस्त्रप्रहार ॥
कियोहस्तलाघवअतिहि, सबको बाणकृपाण ।
रोंक्यो पारथ असुर बहु, मारिकियो बिनप्राण ॥
मारि पार्थ घाल्यो दल घानी ❀ असुर सेन भहराइ परानी
दनुजराज तब करि संधाना ❀ पारथ पर प्रेरेउ शत बाना
ते शर काटि पार्थ रण कोपा ❀ बाणन मारि दैत्य रथ तोपा
ते शर दैत्यराज सब काटे ❀ बाणन मारि पार्थ रथ पाटे
अर्जुन अग्निबाण फटकारा ❀ सब शर कटे निमिष महँ छारा
स्यन्दन सूत तुरग जरिगयऊ ❀ अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ
प्रकट गयो स्यन्दन असवारा ❀ सन्मुख चला करत ललकारा
बधौं पार्थ तोहिं एकै बाना ❀ काल तुम्हार आय नियराना
दो० यह सुनि पारथ तब कह्यो, दनुजराज सों बात ।
किये बड़ाई निजबदन, नहिंकछुबलसरसात ॥
हम तुम करिय आजु संग्रामा ❀ जीतै युद्ध होय बलधामा
असकहि पार्थ लीन्ह शारङ्गा ❀ दनुजराज के बधे तुरङ्गा
अमितबाण करि क्रोध पँवारो ❀ स्यन्दन भञ्जि सारथी मारो
बहुरि असुर स्यन्दनचढ़िआयो ❀ पारथ कहँ बहु बाण चलायो
पाण्डुपुत्र सब शायक खण्ड्यो ❀ लक्ष बाण दानवपति मण्ड्यो

तेऊ बिशिख काटि महि डारे ❀ बहुरि धनञ्जय बाण पँवारे
आवत देखि पार्थ को बाना ❀ दनुजराज कीन्हों संधाना
आवत शर अर्जुन के काटे ❀ खण्ड खण्ड करि बीचहि पाटे
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा ❀ तुरग सूत दानव को मारा
यहि बिधि पार्थ बीसरथभञ्जेउ ❀ अरु अनेक दलबादल गञ्जेउ
सके न जीति हारि हिय मानी ❀ तबहिं हलम्बुष माया ठानी

दो० मारु मारु कहि दनुजपति, गयो अकाश उड़ाय ।
बरषनलाग्यो गिरिशिखर, अन्धकार उपजाय ॥
सिंहनाद करि गगन महँ, गरजत बारहिंबार ।
बिटप चलायो क्रोध करि, बि. बिधभांतिहथियार ॥

इति महाभारतेविराटपर्वणिहलम्बुषयुद्धवर्णनंदशमोऽध्यायः॥१०॥

दो० दैत्य युद्धते बिकलभे, तब उत्तराकुमार ।
पारथ राखहु प्राण अब, यहिबिधि करत पुकार ॥

दीन वचन सुनि पाण्डुकुमारा ❀ पढ़ि रविमन्त्र बाण तब मारा
सहसकिरणिशरकीन्हप्रकाशा ❀ भयो तुरत माया निशि नाशा
पुनि अर्जुन कीन्हों संधाना ❀ मारे दैत्यराज उर बाना
परो धरणिखसि मूर्च्छित भयऊ ❀ स्यन्दन घालि सूत लै गयऊ
देखि युद्ध कृतवर्मा धाये ❀ शङ्खध्वनि करि हांक सुनाये
मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो ❀ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो
असकहि कृतवर्मा रण कोपी ❀ करिशरजाल दीन्ह रथ तोपी
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाये ❀ शर पञ्जर करि पार्थ दबाये
अर्जुन अनलबाण तब मारे ❀ बिशिख असंख्य जारि सब डारे
कृतवर्मा करि क्रोध अपारा ❀ कठिन बाण अर्जुन उर मारा

दो० लग्यो कठिन शर पार्थउर, क्षतयुत भयो शरीर ।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि, पाण्डुपुत्र रणधीर ॥

करिअतिक्रोधशिलीमुखछांट्यो ❀ नृपको धनुष शक्रसुत काट्यो
कटे धनुष कृत शूल प्रहारा ❀ बीचहि पार्थ काटि महिडारा

करि रिसछांड़्यो शक्तिप्रचण्डा ❀ शरन मारि अर्जुन द्वै खण्डा
पुनि पारथ करि क्रोध कराला ❀ कृतउरहन्योविशिखतेहिकाला
बाण लगत तन मोह जनायो ❀ तब कुन्तल गज फेरि चलायो
कृपाचार्य कीन्हों संधाना ❀ अर्जुन पर छांड़े बहु बाना
आवत पार्थ काटि महि डारे ❀ सहस बाण करि क्रोध पँवारे
ते नराच कृत बीचहि खांड़े ❀ लक्ष बाण पारथ पर छांड़े
कठिनबिशिखअर्जुनगुणदीन्हो ❀ आवत बाण सकल क्षयकीन्हो
दो० पुनि किरीटि फिरि क्रोधकरि, मारे बाण अनन्त ।
रथ तुरंग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त ॥
अर्जुन बहु कुरुकटक निपातो ❀ कृप तब भयो क्रोध ते तातो
अर्जुन उरमारे दश बानहिं ❀ साठि बाण मारे हनुमानहिं
लैकर धनुष पार्थ रिसिआना ❀ कृप के उर मारे दशबाना
दश शर हन्यो सारथी अङ्गा ❀ बीस बाण ते हन्यो तुरङ्गा
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ पांच बाण ते ध्वजा पताका
भयो बिरथ कृप चढ़ि रथआना ❀ पुनि अर्जुन तेहिं कीन्ह मशाना
कृपाचार्य बहु बिशिख पँवारे ❀ अर्जुन सकल काटि महिडारे
लक्ष बाण तब पार्थ चलाये ❀ आवतही कृप काटि गिराये
कृपाचार्य तब धनु कर लीन्हों ❀ महामारु पारथ पर कीन्हों
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ वज्र बाण कृप के उरमारा
दो० जब कृप रण मूर्च्छित भयो, गयो कटक भहराइ ।
तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुँचो रथ दौराइ ॥
पार्थहि देखि नृपति ढिगआयो ❀ तब भीषम कोदण्ड चढ़ायो
तब अर्जुन भीषम ढिग हेरा ❀ कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा
उत्तर सुनहु पितामह आये ❀ परशुराम जिन युद्ध हराये
अस कहि कीन्हों दण्डप्रणामा ❀ आशिष दयो होइ मनकामा
पुनिअर्जुनकुरुपतिदिशि ताका ❀ उतर कुमार बेगि रथ हांका
नृपदिशिजात पार्थ अवलोका ❀ शर संधानि गङ्गसुत रोका

जात कहां कहि बाण चलावा ❀ सो शर अर्जुन काटि गिरावा
पारथ दीन बाण गुण चोखा ❀ भीषमपर छांड़्यो करि रोखा

दो० आवत देख्यो युद्ध महँ, जब अर्जुन को बान ।
परमक्रोधकरि गङ्गसुत, कीन्होंविशिखसँधान॥

हांक मारि शर कीन्ह प्रहारा ❀ आवत बाण काटि महि डारा
पुनि भीषम निज तेज सँभारो ❀ पारथ कहँ बहु बाण सिधारो
ते शर कीन्ह पार्थ शतखण्डा ❀ हन्योक्रोधकरिविशिखप्रचण्डा
लख्यो गङ्गसुत आवत बाना ❀ शर संधानि शरासन ताना
शंतनुसुत काट्यो करि रोखा ❀ तज्यो बाण पारथ पर चोखा
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❀ भीषम ते यह बचन उचारे
धनुष सँभारि पितामह लीजै ❀ सावधान मोसन रण कीजै
यह कहि अर्जुन बाण चलायो ❀ कौरवदल बहु मारि गिरायो
द्विरद लक्ष मारे मतवारे ❀ अश्वपदादि असंख्य सँहारे
दश सहस्र स्यन्दन बधकीन्हो ❀ रुण्डमुण्ड कछु जात न चीन्हो
शोणित सरित बही विकरारा ❀ काक कङ्क कृत मांस अहारा
पियहिं रुधिर जम्बुक पल खाहीं ❀ कटकटाहिं फेकरैं हुआहीं
गिद्ध खाहिं पल उड़हिंअकाशा ❀ शंकर देखहिं युद्ध तमाशा
जहँ तहँ बहु कवन्ध उठि धाये ❀ मारु मारु कहि शब्द सुनाये

दो० भयो भयंकर खेत अति, अर्जुन कीन्ह मशान ।
नाचत चौंसठि योगिनी, करिकरिशोणितपान ॥

भीषम देखि क्रोध जियआना ❀ कीन्हों कठिन बाण संधाना
होय सक्रोध नराच प्रहारो ❀ रथकहँ तीनि पैग पै टारो
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना ❀ पारथ के मारे सौ बाना
लक्ष बाण हनुमानहिं मारे ❀ अष्ट विशिख ते तुरँग प्रहारे
तब भीषम यह मन्त्र विचारा ❀ करौं निपात विराटकुमारा
मृत्यु बाण कीन्हों संधाना ❀ छूट्यो विशिख पार्थ तब जाना
है सरोष शिवशायक लीन्हों ❀ ताते मृत्यु अस्त्र क्षय कीन्हों

दो० हन्यो शिलीमुख तानि धनु, ह्वै सरोष पारत्थ ।
सहस पैग पीछे टरो, शन्तनुसुत को रत्थ ॥
पुनि रथ हांकि गङ्गसुत आयो ❀ पारथपर बहु बिशिख चलायो
तब पारथ कीन्हों रिस भारी ❀ ध्वजा खण्ड भीषम की डारी
कोटि बाण सेना पर मारे ❀ हय गज रथ पदाति संहारे
मारि बिछाय दियो दल ऐसो ❀ प्रलय पवन कदलीबन जैसो
क्रोध सहित पारथ शर छूटे ❀ शीश सेन केतिक के टूटे
कटे जानु जङ्घा यक बाहों ❀ चले भाजि रणते नहिं चाहों
करि अतिक्रोध धनुषशर सांध्यो ❀ नागफांस केतिक भट बांध्यो
पारथ बाण बृष्टि जब ठानी ❀ भयो बिकल कुरुसेन परानी
दो० तब भीषम अतिक्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
शत लागे पारथ हिये, शत सहस्र हनुमान ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ तुरग सूत भीषम को मारा
भयो बिरथ गङ्गासुत जबहीं ❀ पूरो शङ्ख पार्थ रण तबहीं
भीषम आय चढ़ो रथ आना ❀ अर्जुन पर पुनि शर संधाना
दुर्योधन सब बांधव आये ❀ चहुँ दिशि ओर पार्थ के धाये
मूर्च्छा बिगत द्रोण गुरु जागे ❀ तानि शरासन शायक त्यागे
करण आदि जागे सब बीरा ❀ लै लै पाणि शरासन तीरा
चहुँदिशिगांसि पार्थकहँ लीन्हा ❀ बाणबृष्टि क्रोधित ह्वै कीन्हा
मुद्गर गदा शूल कोउ मारेउ ❀ सांग सेलि कोउ खड्ग प्रहारेउ
लग्यो चक्र फरसा कोउ मारा ❀ केहुँ मारेउ कोतह हथियारा
कोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हें ❀ महामारु पारथ पहँ कीन्हें
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई ❀ शर सन्धानि प्रबल रण करई
दो० जबजान्योरथग्रासितभो, कीन्हबिशिखसन्धान ।
पारथछांड्यो क्रोधकरि, रण महँ मोहनबान ॥
पारथ मोहन बाण चलावा ❀ जो शर कृष्णदेव सिखरावा
मोहे सब कौरव बल बीरा ❀ परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा

भयो गङ्ग को आशिष सांचा ❀ नहिं मोहेउ भीषम रणबांचा
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी ❀ पट भूषण सब लेहु उतारी
चल्यो पार्थ की आज्ञा मानी ❀ पहुँचो निकट भूप के आनी
कुरुपति और वीर बहुतेरे ❀ भूषण बसन मुकुट सबकेरे
लेत कुँवर एकहु नहिं जागे ❀ रथ लै धरे पार्थ के आगे
दुर्योधन की मूर्च्छा जागी ❀ निजदिशिदेखिलाजअतिलागी
पार्थविजयलखि रिस उपजायो ❀ लैकर धनुष युद्ध हित आयो
जाग्यो सकल सुभट समुदाई ❀ चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई
भीषम आइ बरजि दल राख्यो ❀ अरु यह बचन भूप ते भाख्यो
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो ❀ अर्जुनते रण जय नहिं पायो

दो० चुप ह्वैरहौ कि गृह चलौ, पारथ अति बलधाम ।
लज्जा कै हे भूप सुनु, तजि भागे संग्राम ॥

बिकल भयो नृप अतिदुखपावा ❀ क्रोधबिबशमुखबचन न आवा
दीरघ श्वास ब्याल जिमि लेई ❀ लगे बज्रवत उत्तर न देई
भीषम ते बोल्यो बिलखाई ❀ गई पितामह बिगरि लराई
कहभीषमअबलगि नहिं लाजा ❀ भाज्यो कटक भूप नहिं भाजा
ताते नृप बरजत मैं तोहीं ❀ कारण समुझिपरो सब मोहीं
अर्जुन पर दयालु भगवाना ❀ तुमते सहि न जाइ नृप बाना
रण भागे तुव जक्त हँसाई ❀ ताते भवन चलो कुरुराई
जीते पारथ सकल समाजा ❀ तबलगि बिजय न भागे राजा
भाजे सकल सेन किमि भारी ❀ बिनु नरेश भागे नहिं हारी
भीषम बचन सुनत कुरुराई ❀ फिरे भवन सँग भट समुदाई

दो० भीषम आयसु मानिकै, दल लै चल्यो अवास ।
धावन धायगयो तबहिं, नृप बिराट के पास ॥
जीति उत्तरै अरिचमू, कौरव गयो पराइ ।
सुतसपूत कीन्ही बिजय, भाग तिहारे राइ ॥

भूपति खेलत पंसासारी ❀ संग कङ्कऋषि लै सुखकारी

सब जन सुतकी कीरति गावैं ❀ हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं
बारबार नृप निज मुख बरणी ❀ उत्तर कीन्हि अमानुषकरणी
रथ चढ़ि एक न सङ्ग समाजा ❀ सेन सहित जीत्यो कुरुराजा
भीषम द्रोण करण कृप हारे ❀ और कहां जग जीव बिचारे
उत्तर सम जग कोउ न जुझारा ❀ भयो कबहुँ नहिं होनेहारा
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई ❀ कह्यो कङ्कऋषि तब मुसुक्याई

दो० बिजय बृहन्नल जेहिकटक, सो कत जीतो जाइ ।
जुरे युद्ध संग्राम थल, कालहु देइ भगाइ ॥

इतनी सुनत भूप उर जरेऊ ❀ राते दृगकरि बहुरिस भरेऊ
ततक्षणही नरनाह बिराटा ❀ हन्यो कङ्कऋषि पंस ललाटा
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई ❀ अञ्जलि में लैलीन्हों आई
निरखि भूप मन चिन्तामानी ❀ कह्यो सैलंध्री भेद बखानी
बिन जाने चित होत अँदेशा ❀ कह्यो सैलंध्री सुनहु नरेशा
भूतल रुधिर परै जो येहू ❀ द्वादश बर्ष न बरसै मेहू
यह कहिकै भूपति समुझायो ❀ भीमसेन के उर दुख आयो
फरकत अधर नयन भे राता ❀ चाहत भीम कियो उतपाता

दो० महाक्रोधलखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन ।
बरजो केहरि क्षुधित कै, युक्ति कहूं यह हैन ॥

उत्तर कुँवर भवन चलिआयो ❀ भूपति सों यह बचन सुनायो
आजु बृहन्नल सब दल जीतो ❀ कौरव गयो युद्ध ते रीतो
मारि शूर सब दीन्ह भगाई ❀ प्रबल पवन जिमि मेघ उड़ाई
भयो मौन नृप धाम सिधावा ❀ भीतर उत्तर बोलि पठावा
युद्ध कथा सिगरी कहि दीनी ❀ सारथि की शरजाल प्रवीनी
है अर्जुन जिन कौरव मारे ❀ दिवस इते यहि ठौर निवारे
यहि प्रकार सुत कहि समुझाये ❀ सुनि बिराटतब अतिसुखपाये
कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवणसुखदाई

दो० धर्मपुत्र नरनाह सों, अर्जुन बोल्यो बैन ।

जाने हम सब कौरवन, अब कछु चिन्ता हैन ॥
तेरह बरष दिवस दश, बीतिगये यहि भाव ।
अब बैठो शिरछत्रधरि, धुम्र करत कत नाव ॥

दीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा ❀ बसि बनवास सहे दुखभारा
छूटे अशन वसन घर नासा ❀ अन्नहीन कीन्हो उपवासा
भूख प्यास ते भयो वियोगी ❀ उदासीन जैसे रह योगी
बल विहीन तुमको नृप जानी ❀ अन्धसुवन कछु कानि न मानी
आयसु होइ जीति अपराधी ❀ भुजबल जीतिलेउँ महि आधी
करि सन्धान बाण शर धारा ❀ बोरौं कुरुअसहित परिवारा
देहु निदेश धनुष संधानौं ❀ भूप मरे कौरव सब जानौं
यहि विधि कहत परस्पर बाता ❀ बीति रैनि गै भयो प्रभाता

दो० प्रात होत शिर छत्र धरि, धर्मपुत्र सुख पाय ।
दान दियो बहुयाचकन, बिप्र समूह बोलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान ।
करनहार सब राज के, करत भूप सन्मान ॥
नहिं वाहन पदत्राण नाहिं, उत्तरसहित बिराट ।
नृपति युधिष्ठिरचरणउठि, रा[illegible] ॥
भई ढिठाई होइ जो, सो क्षमियो अपराध ।
चूक न मानत दास की, भूप बड़े जे साध ॥

बिन जाने करवाई सेवा ❀ क्षमहु चूक बड़ि भइ नरदेवा
ओछी पूरी चित मत धरियो ❀ भूप अनुग्रह हम पर करियो
मम गृह रही द्रौपदी रानी ❀ दासी भाव आजुलग जानी
बहु प्रकार ते टहल कराई ❀ सो सब क्षमा करहु तुम राई
अस कहि परो चरण करजोरी ❀ कीन्ह बिनय बहुभाँति निहोरी
मन बच कर्म दास तुव स्वामी ❀ कीजै कृपा जानि अनुगामी
कह्यो भूप सन बारहि बारा ❀ सबिनय बचन बिराट भुआरा
सुनत युधिष्ठिर आनँद पाये ❀ करि सनमान बिराट बुझाये

दो० बिपति हमारी सब हरी, राख्यो पुत्र समान ।
तोसों तोहिं न दूसरो, महि मण्डल नृपआन ॥

तुव पटतरि को दीजै आना ❀ उऋण होउँ नहिं अपनेजाना
तुम सबको दीनी सब भांतिहै ❀ तुव कीरति जगमें नृप चलिहै
नित नित नेति बढ़ै अतिभारी ❀ भयो भूप तुव भुजा हमारी
जीति समर सुरभी जे आनी ❀ ज्यतनी त्यतनी जोकी जानी
ते सब सबको ताको दीन्हीं ❀ सबकी बिदा महीपति कीन्हीं
पहुँच्यो जाइ नगर कुरुराजा ❀ सन्ध्या समय समेत समाजा
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी ❀ भये स्वप्न अत अन्न न पानी
कुश बिछाय कृत शयन भुआला ❀ हरि दानव लै गयो पताला
दानवराज बहुत समुझावा ❀ तुम लगि भूप हमारो दावा
जो तुम प्राणत्याग करि दीन्हा ❀ जग मिटिगयो दानवी चीन्हा
तुव भटतन करि सकल प्रवेशा ❀ करब युद्ध जनि करब अँदेशा

दो० करहु युद्ध कदराइ तजि, छांड़हु सब सन्देह ।
प्रविशहिं सबकी देह में, दैत्य आइ करि नेह ॥

यहि प्रकार कुरुपति समुझाये ❀ दैत्य सङ्ग मृत लोक पठाये
जेहि थल शयन कियो तो राई ❀ कुश साथरी गयो पौढ़ाई
गयो दनुज पुनि असुर समाजा ❀ प्रात होत जाग्यो कुरुराजा
द्रोणी करण तहां चलि आये ❀ कहि निजभेद भूप समुझाये
नरकासुर द्रोणी के अङ्गा ❀ भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसङ्गा
लोह करण तन करण समानो ❀ यहिप्रकार सब दानव जानो
तेहि अवसर आये सब योधा ❀ दनुजनाम कहि नृपति प्रबोधा
यहिबिधिनृपतिकह्यो बलधामा ❀ मारि पार्थ जीतब संग्रामा
कृतदानव तन सकल प्रवेशा ❀ करहु युद्ध नृप तजहु अँदेशा
सुनि नरेश अतिशय सुख पाये ❀ शकुनी बोलि मन्त्र ठहराये
जाय दूत जहँ धर्म नरेशा ❀ उनते यहि बिधि कह्यो सँदेशा
अवधिसाधि तुमकीन्ह प्रकासा ❀ द्वादश बर्ष करहु बनबासा

यहि विधि भूपति दूत पठावा ❀ नृपति युधिष्ठिर पै चलिआवा
सहित द्रौपदी पांचो भाई ❀ बैठ देखि यह बात सुनाई
दो० प्रकटे भीतर अवधिमें, फेरि करहु बनवास ।
मिति सो पूरण कीजिये, तबतुमकरहुअवास॥
कहि सबविधि मलमासकी, समुझायो सो दूत ।
समुझि ताप बैठो तहां, जिमिसुरपुरसुरदूत ॥
इति श्रीमहाभारतेविराटपर्ववर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥
दो० उत्तर सों कीन्हों मतो, नृप बिराट तेहि बार ।
दुहिता दीजै अर्जुनहिं, करि बिवाह शुभचार ॥
अर्जुन ताहि नृत्य सिखरायो ❀ निशिबासर गुणगान बतायो
सो दुहिता ताको अब दीजै ❀ अब कछु और बिचार न कीजै
यह कहि भूपति दूत पठायो ❀ अर्जुन ते यह बात सुनायो
तोहिं सुता नृप अपनी दीन्हीं ❀ हेतुबिवाह करण चित लीन्हीं
सुनत पार्थ यह बचन सुनावा ❀ मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा
बात कहत तोहिं लाज न आई ❀ मिथ्या बचन कह्यो इत आई
मो सुतको दुहिता यह दीजै ❀ आनँद सों यह कारज कीजै
यह कहि पार्थ दूत पलटाई ❀ तेहिं बिराटसों कह्यो बुझाई
सो सुनिकै भूपति सुखपायो ❀ बूझि मुहूरत मङ्गल गायो
गावत आनँद सों नर नारी ❀ भूप युधिष्ठिर को दै गारी
नैमिषवासिन अवधि बिताये ❀ ताही समय धौम्यऋषि आये
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई ❀ पकरे चरण द्रौपदी आई
समाचार कहि भूप सुनाये ❀ सुनतधौम्यऋषिअतिसुखपाये
दो० दूत द्वारकानगर को, पठवहु अतिसुख पाय ।
बार न लागी बाटमें, कही कृष्णसों जाय ॥
दीनानाथ दयाल गुसांई ❀ कह्यो प्रणाम भूप सब भाई
कृपासिन्धु कृत दास सहाई ❀ द्रुपदसुता की लाज बचाई
करी आश प्रहलाद पुकारे ❀ हरी त्रास हरणाकुश मारे

कही भूप यह त्रिभुवन राई ❀ सदा रहत तुम मोर सहाई
तुम्हरी कृपा बिपति भै दूरी ❀ है दयाल कीन्हों सुख भूरी
अभिमनु व्याह रचो है राजा ❀ आइय यहां समेत समाजा
अभिमनु मातुसहित यदुराया ❀ बोलेउ भूप चलिय करि दाया
है दयाल कीन्हों सुख भारी ❀ करी दूरि प्रभु बिपति हमारी

दो० करि आयेहौ करतहौ, करिहौ सदा सहाइ ।
सहितमातुअभिमन्युलै, आपुहि पहुँचोआइ ॥
गयेकृष्णभगिनीसहित, लैअभिमनुकहँसाथ ।
उठे देखि सुख पायकै, धर्मसुवन नरनाथ ॥
मिलिकै शारँगपाणिको, लैआये निज गेह ।
अस्तुतिबन्धुनयुतकरत, मनवचक्रमकरि नेह ॥

द्वौ कर जोरि कृष्ण के आगे ❀ करन बिनय कुन्तीसुत लागे
श्री यदुनन्दन मुनिजनबन्दन ❀ कल्मषहर सब दुष्टनिकन्दन
जगतारण खलबदन बिदारण ❀ दुखनारण गजराज उधारण
जगपावन सन्तन मनभावन ❀ ब्रजछावन गिरिवरनखलावन
जनमन रञ्जन भवभय भञ्जन ❀ दनुजानिमर्दन भवधनुगञ्जन
कंसबिनाशन प्रभु गरुड़ासन ❀ यदुवंशी अवतंस प्रकाशन
असुरनिवारण मुनिजनपारण ❀ कुञ्जबिहारण गणिका तारण
जगधर नगधर पीताम्बरधर ❀ हरि दामोदर हलधरसोदर
सिन्धु सुतावर श्री राधावर ❀ सर्व निवारण सर्व देवपर
जनकसुता भूषण भवभूषण ❀ सुररिपुदूषण तलतलपूषण
भक्तन हितकर हरनिशिचारी ❀ शुभगतिकारी भवभयहारी

दो० करि अस्तुति श्रीकृष्णकी, भूपति अतिसुखपाय।
नगर कम्पिला द्रुपद गण, दीन्हों दूत पठाय ॥

सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ ❀ द्रुपद नरेश पयानहिं कियऊ
गजरथ साहन तुरी तुषारा ❀ सब दल युत बाहन भण्डारा
पञ्चाली सुत पांचौ साथा ❀ पहुँचो पुर बिराट नरनाथा

विदुर गेह ते कुन्ती आई ❀ मिली सुतन अतिआनँद पाई
द्रुपद सुता ताके पद वन्दे ❀ सब मिलिके सब जन आनन्दे
वनतें बली घुरुका आये ❀ निज माता कहँ संग लगाये
नगरराज गिरितें चलिआयो ❀ काशिराज भूपति मनभायो
जरासन्ध पटना को राजा ❀ आयो सुतन समेत समाजा
शूरसेन कहँ दूत पठाये ❀ सुनत सँदेश बेगि तहँ आये
धर्मपुत्र सब राज समाना ❀ विविधअनुजसब बुद्धिनिधाना

दो० शुभघटिकाशुभलगनगनि, शुभवारहिं सो पाइ ।
रच्यो व्याह अभिमन्युको, मङ्गलचार कराइ ॥
भाँवरि पारथ देखि कृत, पांचौ भाय हुलास ।
कस्योव्याहविधिवतसकल, धौम्यसहितऋषिव्यास
दोऊ कुलकी रीति सों, करिबिवाहसुखदानि ।
वाजी गज रथ हेम मणि, दीन्हौं नृपसुखखानि ॥

भाट भले विरदावलि गावत ❀ सिन्धुर बाजि घने नगपावत
नृत्यत गुणी राग बहु साजत ❀ ताल पखाउझ आउझ बाजत
को वरणै सब आनँद संयुत ❀ वासरहूनिशि कौतुक अद्भुत
भाँवरि परतीं बेदन उच्चरि ❀ दोऊ कुलकी रीति सबै करि
तेहि औसर बिराट नरनाथा ❀ दयो राखि कुश कन्याहाथा
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हौं ❀ स्वस्तिबोलि अर्जुनसुतलीन्हौं
विविधभांति वाजध्वनि माची ❀ जहँ तहँ वारमुखी बहु नाची

दो० अभिमन्युकहँदीन्हीसुता, हरषे भूप बिराट ।
धर्मपुत्र सुख पायकै, लसत अनन्दितपाट ॥
बोलि मयासुर को रच्यो, सुन्दर सदन बनाय ।
नृपति युधिष्ठिर यों कही, अर्जुन निकट बुलाय ॥
सो० सुनिअर्जुनगुणनाम, मयदानव बोलो तुरत ।
धवलसँवारोधाम, खचिखचिरचिरचिजन्मानिज ॥

मयदानव कहँ पार्थ बुलायो ❀ रचहु धाम यह कहि समुझायो

रचहु भवन यहि भांति बनाई ❋ चित्रविचित्र बरणि नहिं जाई
रङ्ग रङ्ग रचि सदन बनाये ❋ हरित पीत मणि श्वेत सुहाये
दीसत उज्ज्वल श्वेत अटारी ❋ नीलत कमल घटा जनु कारी
भूमित कतहुँ प्रसाद सतुङ्गा ❋ खचितअरुणमणिरचितउतङ्गा
को कवि उपमा तासु बखाने ❋ देखत कौतुक देव भुलाने
पद्ममणिन रचि जाल बनाये ❋ भूप रहन हित भवन सुहाये
मयदानव यह रचना ठानी ❋ जहँ जहँ थलह तहां तहँ पानी
लखिय द्वार मनमानि प्रतीती ❋ करत प्रवेश मिलत तहँ भीती
देखिय तहां उतङ्ग देवाला ❋ रच्यो तहां शुभद्वार बिशाला
बैठत नित्य सभा जहँ राजा ❋ तेहि देखत ऐरावत लाजा
पुर अन्तर बिरच्यो शुचिधामा ❋ तहँ रनिवास केर बिश्रामा
बहुत भीर युत नृप दरबारा ❋ को कहि तासु बखानै पारा
हय हिंसत सिन्धुर बहु गाजत ❋ निशिबासरदुन्दुभितहँ बाजत
बैठे नृप तहँ साज बनाई ❋ कहत बन्दिजन बिरद सुनाई

दो० भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान ।
पण्डितगण मण्डितरहत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेऽभिमन्युविवाहवर्णनोद्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

दो० सोम बंश नृप धर्म सुत, शोभितशक्रसमान ।
चारिबन्धु सरि देवकी, दुष्टदलन बलवान ॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी ❋ कृष्णदेव ते बिनय बखानी
जहँ तहँ परी बिपति जब भारी ❋ करि सुधि हरी तुरत बनवारी
दयासिन्धु सोइ करिय बिचारा ❋ मिलै बेगि जेहि देश हमारा
अह हरि हरहु अशेष कलेशा ❋ करहु दूरि प्रभु मोर अँदेशा
अन्धपुत्र कीन्हों अपकारा ❋ कपट द्यूतकरि मोहिं निकारा
धाम ग्राम गज बाजि छिनाई ❋ लहि सम्पदा सबै कुरुराई
खैंचो चीर दुशासन आनी ❋ कीन्हि न कानि बिकल भै रानी
दीनबन्धु कहि द्रुपद कुमारी ❋ राखु राखु बहु बार पुकारी

हम सब बैठि रहे शिरनाई ❀ करि सहाय तुम लाज बचाई

दो० करि आयेहौ करत हौ, सेवक सदा सहाय ।
करी बन्दना कृष्ण की, धर्मपुत्र भुवराय ॥

द्वौ कर जोरि भूप अनुरागे ❀ करत विनय कमलापति आगे
कच्छप वपु धरि सागर थाहन ❀ मत्स्यरूप शंखासुर दाहन
वन्दन मुनिजन सनक सनन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
शूकररूप रदन धरणी धर ❀ खलहिरण्याक्षहिपतितप्राणहर
भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
नरहित तनु प्रहलाद उबारण ❀ हिरण्यकशिपुनखउदरबिदारण
सेवक कष्ट हरण जग बन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
छलिबलिबांधि पताल पठावन ❀ बामन वपुधरि भूतल आवन
काटत सब माया दुखद्वन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन ❀ रघुकुल कमल दिनेश प्रकाशन
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
कंस कुटिल असुरन भयकारी ❀ केशीमर्दन अजिर बिहारी
पीतवसन तन चर्चित चन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
बोध रूप धरणी पर धरिहौ ❀ कलकी ह्वै दुष्टन संहरिहौ
यहकहि नृपति कीन्ह पदवन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन

दो० विनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधन पहँ जाव ।
समुझायो बहुबिधि उन्हैं, बचैगोतन को घाव ॥

बिहँसि कृष्ण तबहूं उठि धाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
सुनि करुनन्दन अनुज पठाये ❀ सभामध्य लै कृष्णहिं आये
कह नरेश कित चरणचलायो ❀ बिहँसि कृष्ण तब बचन सुनायो
धर्मराज तुम पास पठाये ❀ गोत बिरोधन मेटन आये
भूपति जग में यह यश लीजै ❀ आधो देश बांटिकै दीजै
आपन कुलहि कलङ्क लगावहु ❀ कलह गोत को भूप बचावहु
दुर्योधन बोल्यो अकुलाई ❀ कैसे सकहुँ कलेश बचाई

देश बांटि जो उनको देहैं ❀ योगी है कपाल हम लेहैं
भूप बांटि कत मोपै पावैं ❀ जो वे नभभूतल फिरि आवैं
कृष्ण कह्यो सुनि मोर निहोरा ❀ मानहु वचन होहि यश तोरा
और भूमि जनि भूपति देहू ❀ पांच ग्राम दीजै करि नेहू

दो० अरकस्थल बरकस्थली, एक चक्र पुनि देहु ।
नगरबरुण अरु हस्तिपुर, और देश तुम लेहु ॥
सुई अग्र जितनी उठै, सोकहि कबहुँ न देहुँ ।
पुनि पीछे सुवभावकरि, प्रथम युद्ध करि लेहुँ ॥

तुमहिं कहत यह कैसो आवत ❀ जियत मोहिं धरणी को पावत
सुनि हरिबचन जरत सबगाता ❀ जियत सुनी यह अद्भुतबाता
दुर्योधन मुख वचन बिलोका ❀ सुनि बोल्यो यादवकुलटीका
ऐसी बात कहौ जनि सपने ❀ कुरुपतिब्याधिलेत शिरअपने
पाण्डव से तुम नाहिं बरिऐहौ ❀ फिरि नरेश पाछे पछितैहौ
भूपति देखु हिये महँ बूझी ❀ तुम कहँ अबहिं परत नहिं सूझी
मिटि जैहै तुम्हार यह तेहौ ❀ भूप भूमि देहौ तुम देहौ
लेइहि कोपि गदा जब पानी ❀ गाजिहि भीमसेन रण आनी
हांक सुनत कुरुदल भहराई ❀ जिमि बिग देखि भेड़ समुदाई
अर्जुन कोपि धनुष जब धरिहैं ❀ कौरव मारि प्रलय करिडरिहैं
पार्थ बाण सहि सकै न कोई ❀ नर किन्नर देव दैत्य जिन होई
लैकर खड्ग नकुल बलधामा ❀ अवगाहहिं सागर संग्रामा
सहदेव युद्ध जुरे करि क्रोधा ❀ तुव दल रोकि सकै को योधा
कुलको कलह न त्यागिहि कोही ❀ ऐसो भाव तजै अब तोही
छांड़त मान न बात अनैसी ❀ है तुम्हरे मनमहँ नृप कैसी

दो० पार्थ ध्वजापर बैठिकै, गरजै पवनकुमार ।
धर्मराज के धर्म ते, होइहि नाश तुम्हार ॥
कृष्णउठेयहबचनकहि, तिनको यह समुझाय ।
भावी सो कैसे मिटै, को करि सकै बचाय ॥

नगर हास्तिनापुर तबै, कुन्ती पहुँची जाय।
समाचार श्रीकृष्णजू, सकल कह्यो समुझाय॥
दुर्योधन मति परिहरी, देत न पांचों ग्राम।
देवेकी कहु का चली, श्रवण सुनत नहिं नाम॥
दुर्योधन उर बाढ़ो गर्बा ❀ कहत जीतिहौं भारत सर्बा
सो सुनि कुन्ती अति दुखपावा ❀ हरिदिशिदेखिनयनजलछावा
मो सम जगत दुखी नहिं कोई ❀ भयो न है आगे नहिं होई
कुन्ती दुखित देखि यदुराई ❀ कहि हरिचन्द्र कथा समुझाई
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी ❀ धर्मरूप मदनावति रानी
रोहिताश्व सुत भयो कुमारा ❀ जनु ऋतुराज लीन्ह अवतारा
एक छत्र बसुधा नृप केरी ❀ ऋधिसिधि रहैं भवनजिमिचेरी
निन्नानबे यज्ञ नृप कीन्हा ❀ सवईं करण हेत चित दीन्हा
यह नरेश मन मनसा आई ❀ करि शत यज्ञ होहुँ सुरराई
सो सुधि सुनासीर कहुँ पाई ❀ भै शङ्का मुखगा कुम्हिलाई
उर न चैन अति भयो अँदेशा ❀ गाधिसुवन पहँ गयो सुरेशा
दो० बिश्वामित्रहिसों कही, सुरपति बिपति सुनाय।
राखो चहो जो इन्द्रपद, तौ कछु करौ उपाय॥
करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा ❀ लेइ इन्द्रपद सुनहु मुनिन्दा
करिय उपाय महामुनि सोई ❀ जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई
ऋतु अवधेश उपद्रव दावा ❀ जो मुनीश तुम चहौ बचावा
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा ❀ करहु मोर तब मिटै अँदेशा
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो ❀ हँसि सुरेशाते बचन सुनायो
यदपिन हमहिंउचित सुनु राजा ❀ करिय अकारण परअपकाजा
तुम आगमन परो म्वहिं भारा ❀ करब शक्र हम काज तुम्हारा
सो उपाय हम करब सुरेशा ❀ जाते नशै तुम्हार कलेशा
दो० सत्यहीन हरिचन्द्र करि, करौं तुम्हारो काज।
इन्द्रपुरी का अवध को, तुरत छड़ावौं राज॥

यहि प्रकार शक्रहि मुनि बोधा ❋ बिदाकीन्ह बहुभांति प्रबोधा
पुनि बराह बपु आपु बनाये ❋ कौशिक अवधपुरी चलिआये
गयो बराह नृपति फुलवारी ❋ दल फल मूल अशनकृतभारी
दशन घात सब बृक्ष ढहाये ❋ सरवर पैठि जलज सब खाये
पुरइनि तोरि मिलायो कीचा ❋ अतिरव करि गर्जा सरबीचा
मालाकार भूप सन जाई ❋ समाचार सब कहेउ बुझाई
महाराज यक आव बराहू ❋ मूरतिवन्त सोह जनु राहू
त्यहिं सब उपबन कीन्ह उजारी ❋ खनितड़ाग कांदव करिडारी
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई ❋ चल्यो तुरगचढ़ि दलअधिकाई
लै नरेश सँग सुभट अनेका ❋ चहुँदिशि जाय बाटिका छेका
तब नरेश कह भुजा उठाई ❋ सुनहु श्रवण दै भट समुदाई
ज्यहिदिशिजाइनिकरिबाराहा ❋ त्यहि जारों तनु तेज कराहा
पुनि बराह मन बिस्मय आई ❋ निकस्यो निकट भूप के जाई

दो० जाकी दिशि ह्वै मैं कढ़ौं, करै भूप तेहि दाह ।
यह विचारिकै नृपनिकट, निकरो आइ बराह ॥

मारन चल्यो भूप शर साजी ❋ चल्यो बराह मरुतगति भाजी
तब नरेश करि चपल तुरङ्गा ❋ गयो अकेल न दूसर सङ्गा
परम गहन द्विज रूप बनाई ❋ दीन्ह अशीष मुनीश्वर आई
नृपति बिलोकि अचम्भव माना ❋ करि प्रणाम यह बचन बखाना
पूरण मोरि भाग्य मुनिराया ❋ दीन्हों दरश कीन बड़िदाया
यहसुनिमुनिबोल्योमुसक्याता ❋ आयों तुमहिं श्रवण सुनि दाता
पूरण करहु मनोरथ मोरा ❋ बाढ़ै सुयश जगत नृप तोरा
कह नृप अस भाषो जनि भोरे ❋ तुमकहँ कछु अदेय नहिं मोरे
बारबार मुनि बचन दृढ़ाई ❋ नृपसन विष्णु शपथ करवाई
मांगौं राज पाट भण्डारा ❋ तापर और कनक सौभारा
देन कह्यो नृप पुर जब आये ❋ गाधिराज सुत संग लगाये

दो० दीन्ह नरेश मुनीश कहँ, राज्य पाट भण्डार ।

विहँसि गाधिसुत तब कही, स्वर्णदेहु सौ भार ॥
जो नहिं राय देहु तुम मोरा ❀ नाशै सकल सत्य नृप तोरा
कह नरेश मैं सर्वसु दयऊ ❀ रानी तनय मोर तन रह्यऊ
कह हरिचन्द्र बचन छलहानी ❀ लीजै बेंचि मुनीश्वर ज्ञानी
गाधिसुवन सुनि अतिसुखपाये ❀ लै निज संग बनारस आये
तासु दिवस मग अन्न न पानी ❀ कीन्हों नृप न नेक अरु रानी
अठयें दिवस गङ्ग के तीरा ❀ चहत पानजल बिकल शरीरा
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई ❀ बिना कनक जो तू जल खाई
होइहि सत्य धर्म तुव क्षारा ❀ फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा
सुनि नरेश मन अति दुखपाये ❀ बैठि गङ्ग तट शीश नवाये
दो० रोहिताश्व अति तृषित ह्वै, तब थरहरो शरीर ।
मूर्छिपरे तनु बिकल अति, जह्नुसुता के तीर ॥
करत बिलाप बिकलअति रानी ❀ अञ्चल बोरि लैआई पानी
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो ❀ जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो
स्वर्णदिये बिन जल मुख डारा ❀ कुँवर बदन गा धर्म तुम्हारा
सुनि रानी मन अतिदुखब्यापा ❀ बैठि गङ्ग तट करत बिलापा
रवि आकर्ष जप्यो सुनि राई ❀ बारह कला तपै रवि आई
भयो तेज कछु बरणि न जाई ❀ रानी नृपति गिरेउ मुरछाई
विनय कीन्ह नृप बारहिंबारा ❀ तुम ते प्रकट्यो बंश हमारा
सो तुम दया छांड़ि प्रभु दयऊ ❀ सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी ❀ सहित कुँवर तनुताप बुझानी
रविप्रसाद तनु अतिबल भयऊ ❀ क्षुधा पियास त्रास मिटि गयऊ
तब मुनि संग नरेश लवाई ❀ बैठि राज मारग महँ आई
बोलि सबन ते बचन सुनाये ❀ बिक्रय हेतु मनुज हम लाये
दो० सर्व सुनाय मुनीश पुनि, कहि इमि बारहिंबार ।
तीनि मनुज को मोल हम, स्वर्ण लेहिं सौभार ॥
रानिहि निरखि रूप अधिकाई ❀ सुनि माता बेश्या तहँ आई

मोल करन को कीन्ह प्रचारा ❀ कह ऋषि कनक अर्द्ध सौ भारा
भार पचास स्वर्ण म्बहिं दीजे ❀ बालक सहित बाम यह लीजै
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सौ भारा ❀ रानि सहित लै चली कुमारा
बेश्या ते कर जोरि सयानी ❀ बोली बचन दीन है रानी
लीन्ह मोल तुम जीव हमारा ❀ कौन काज हम करब तुम्हारा
गणिकै कह्यो रानि ते बानी ❀ कारज सुनहु हमार सयानी
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई ❀ दान पाइ जीविका चलाई

दो० परपुरुषन ते प्रीति करि, द्रब्य लाइये धाम ।
हावभावकरि मन हरिय, कौन दोय बश काम ॥

सुनि रानी मन भयो अँदेशा ❀ मनमा सुमिरेउ देव दिनेशा
तुव कुलकी कुलवधू कहाई ❀ गई लाज मैं जगत हँसाई
रहै धर्म स्वइ करिय उपाई ❀ है दयाल प्रभु करिय सहाई
रवि मण्डल ते बहु कपि आये ❀ बारमुखिन कहँ त्रास देखाये
गणिकन बिकल बिप्रसन जाई ❀ कथा अलौकिक सकल सुनाई
त्यागो जो लिय द्रब्य हमारा ❀ तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा
बारमुखी इमि बचन सुनाये ❀ सत्यकेतु द्विज तहँ चलिआये
तिन तब बूझेउ सकल प्रसङ्गा ❀ सुनि दुखलह्यो महामुनिअङ्गा
कनक मँगाय दीन्ह मुनिज्ञानी ❀ बेश्यन ते लीन्हों सुत रानी

दो० कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय ।
द्विजपत्नी कहँ प्रीतिकरि, अधिकअधिकसरसाय॥

नृप कहँ लीन्हों मोल चँडारा ❀ दीन्हों कनक अर्द्ध सौ भारा
कालसेन रह त्यहिका नाऊं ❀ लै हरिचन्द्रहि गा निज ठाऊं
कही दानवी सकल कहानी ❀ सौंप्यो नृपकहँ घाट मशानी
तहां मृतक जो नर लै आवै ❀ बिना दण्ड कृति करन न पावै
मुद्रा पञ्च बसन युग देई ❀ करन देइ कृति जब लैलेई
मिलै दण्ड सो लै नृप धीरा ❀ घटभरि लेइ गङ्ग को नीरा
नित प्रति कालसेन के आगे ❀ धरैं जाय नृप अति अनुरागे

कह्यो नाम नृपसन त्यहि बागा ❋ सुनि सुमहीपति पांयनलागा
सुनु स्वामी हरि धाम मनाऊं ❋ मोरे कतहुँ गांव नहिं ठाऊं
यहि विधि ताहि भूप समुझाई ❋ पहुँचो प्रात घाट सो आई
दो० यहि विधि बीते कछु दिवस, मुनि कै सर्प कराल ।
डस्योआनि मुनिनृपतनय, प्राण तजे ततकाल ॥
सत्यकेतु कुश समिधहित, बनकहँ कीन्हपयान ।
द्विज तरुणी ताक्षण गई, करन गङ्ग असनान ॥
रानी निरखि शोच उपजावा ❋ करत बिलाप दुसह दुखपावा
अर्द्धबसन ते कुँवर ओढ़ाये ❋ अर्द्धबसन निज देह छिपाये
लैगइ तुरत गङ्ग के तीरा ❋ रुदन करत अतिबिकलशरीरा
चाहत जल डारौं त्यहिकाला ❋ आयो भूप रूप चण्डाला
लखि मृतकुँवर नयनजल मोचे ❋ भयो दुसह दुख नृप अतिशोचे
स्वामि भक्ति सुधि भूपहि आई ❋ तब रानी कहँ रह्यो रिसाई
दो० निठुर वचन बोल्यो तबहिं, रानी सों नरनाह ।
दण्डदियेबिनुजनिमृतक, कीजै सरित प्रबाह ॥
कह रानी गे भूलि भुवारा ❋ रोहिताश्व यह तनय तुम्हारा
असकहि कीन बिलाप कलापा ❋ बोल्यो नृपति सहित परितापा
मैं हौं कालसेन को दासा ❋ छांड़ि देहु मन ते यह आसा
मुद्रा पञ्च बसन बिनु लीन्हे ❋ मानौं मैं न कोटि बिधि कीन्हे
बिप्र पाणि तुम बेंचि बहाई ❋ अब नृप द्रव्य कहां हम पाई
बसन कुँवर को लेहु उतारी ❋ लेहु बेंचि मम आमिष मारी
सुनि नरेशकहँ क्रोध न थम्भा ❋ पकरि केश बांध्यो लै खम्भा
मारन चल्यो खड्ग गहि पाणी ❋ तब यह भई गगनमहँ बाणी
दो० सुत राख्यो तन कष्टसहि, बीति गये दिन मन्द ।
केश तजौ धीरज धरौ, धन्य धन्य हरिचन्द ॥
असकहि प्रकट भयो भगवाना ❋ मांगु भूप अस वचन बखाना
परे चरण नृप कण्ठ लगाये ❋ रानी के बन्धन छुटवाये

है प्रसन्न तब श्रीभगवाना ❀ भूपति कहँ दीन्हों बरदाना
अब नृप करहु अवधपुर बासा ❀ अन्तकाल आयहु मम पासा
करी कृपा हरि कुँवर जियाई ❀ अन्तर आप भये सुरराई
प्रभुकी कृपा नगर निज आये ❀ अचलराज्य माता उन पाये
नाहिं उनके दुखको कछु छोरा ❀ तिन देखत केतिक दुख तोरा
शिव प्रसाद मिटि जैहै सोई ❀ धीरज धरहु नीक अब होई
यहि प्रकार कुन्ती समुझाई ❀ बिदुर भवन गे संग लवाई
करि भोजन तहँ शारँगपानी ❀ कीन्ह शयन सब राति सेरानी

दो० प्रात होत श्रीकृष्णजू, दुर्योधन के पास ।
गये फेरि हितसों सुबुधि, कीन्हें बचन प्रकास ॥
कहो हमारो कीजिये, पांच ग्राम दै देहु ।
बन्धु एकसो पांचसों, निशिदिन बढ़ै सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के, बचन सुने तेहिकाल ।
प्रतिउत्तर हरिसों कह्यो, भये बिलोचन लाल ॥
नितहरिशालैशालहरि, कितहिशलावतआनि ।
करौंअपाण्डवभूमिसब, धरौं न कुलकी कानि ॥

सो सुनि बचन कृष्ण नहिं भाये ❀ है सक्रोध यहि भांति सुनाये
कोपि भीम रणमें दल गाजहिं ❀ सुनत नाद कौरवदल भाजहिं
देखि गदायुत पवनकुमारा ❀ को तजर डारै हथियारा
सहदेव नकुलरु पाण्डुकुमारा ❀ तासम सकल कौन संसारा
जब कोपहिं लै पाणि पिनाका ❀ धीर न रहै सुनत रण हांका
समुझत नहीं बचन सुनि मूढ़ा ❀ परत सूझि नहिं गर्व अरूढ़ा
अबहिं न आवत चेत अभागे ❀ समुझहिं नीच मूड़महँ लागे

दो० बोले शकुनि सरोष है, कही नृपति सों जाय ।
कौनि कानि य.की करौं, बांधि लेहु सुखपाय ॥
दुखपायो भीषम बिदुर, बिकल भये सब गात ।
चहतकियोअपमानसब, बने नहीं कछु बात ॥

भीषम बिदुर बिकल प्रभु जानी ❋ बदन पसारेउ शारँगपानी
मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्डा ❋ सम्भ्रम छायो चित्त अखण्डा
देख्यो गगन सूर्य शशि तारा ❋ देख्यो भूमि अकाश पतारा
भूधर सरित सिन्धु अरु कानन ❋ देख्यो सुर सुरेश सहसानन
देख्यो शम्भु विरञ्चि मुनीशा ❋ दानव दनुज सृष्टि सब दीशा
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा ❋ जहँ तहँ मरे परे बलधामा
कृप कृतवर्मा अश्वत्थामा ❋ कुरुदल मध्य बची यह सामा
सात्यकि पञ्चबन्धु सुरत्राता ❋ पाण्डव मध्य बचे ये साता
यहिविधि चरित कृष्ण दरशाये ❋ भीषम बिदुर चरण शिरनाये

दो० यहि विधि दरशायो चरित, भीषमको जगदीश ।
बचन प्रकाश्यो बिदुरसों, हरिपद नायो शीश ॥

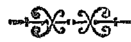
खल दुर्योधन मर्म न जानत ❋ शिषत्रिभुवनपतिकोनाहिंमानत
भल्यो मूरख नृपता गर्बा ❋ कुल के धर्म तजे यहि सर्बा
ह्वैहै सोइ जो लिख करतारा ❋ कह भीषम यह बारहिंबारा
कह मुनि सुनहु मुकुटबरधारी ❋ शोच हरण सन्तन हितकारी
चले कृष्ण नृपको समुझाई ❋ पहुँच्यो धर्मपुत्र पहँ आई
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये ❋ बैठि कृष्ण यह बचन सुनाये
सूक्ष्ममहि तुमको नहिं देता ❋ उद्यम कीन्हों भारत हेता
बिना युद्ध महि कबहुँ न देहै ❋ जो जीतै सोई सब लेहै
बार बार कह बात कन्हाई ❋ बिना युद्ध कौने महि पाई

दो० बीर भोग कै जीति रण, कूर तजैं कदराय ।
अस्त्र गहौ भारत रचौ, लीजै सबै बचाय ॥
कृष्ण कही सबके मते, मन मानी यह बात ।
धर्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसन्नित गात ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति विराटपर्व समाप्तम् ॥

महाभारत



उद्योग-पर्व

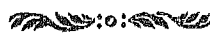
सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

कौरव-पाण्डवों का महाभारत करने के लिये अपने-अपने इष्ट-मित्रों को न्योता भेज कर बुलाने तथा युद्ध करने के विचार आदि की कथाएँ वर्णित हैं।



लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बिपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ उद्योगपर्व ॥

दो० विधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुख पाय नियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भणित पर्व उद्योग ॥

कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू ❋ कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू
जब हरि धर्मराज पहँ आये ❋ मिलत हृदय अतिआनँदछाये
गहे चरण भीमादिक भाई ❋ बैठे अति प्रसन्न यदुराई
तब सुधि पाइ बिराट भुवारा ❋ आये सभा सहित परिवारा
उत्तर शंख कुँवर दोउ साथा ❋ आइ चरण परशे यदुनाथा
उठे भूप मिलि भये सुखारे ❋ गहि भुज निज समीप बैठारे
सुतन समेत द्रुपद महराजा ❋ धृष्टकेतु त्यहि सभा बिराजा

दो० काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह ।
जरासन्धसुत सात्यकी, नृपसब सहित उछाह ॥

पांचाली सुत पांचो बीरा ❋ घटोत्कच अभिमन्यु रणधीरा
हरि समीप बैठे नर नाथा ❋ अर्जुन भीम जमलयुग साथा
प्रद्युम्न अरु अनिरुद्ध कुमारा ❋ जाम्बवतीसुत साम्ब जुझारा
बैठे यादव द्वादश जाती ❋ सब परिवार पुत्र अरु नाती
बैठे सब नृप सखा सुखारी ❋ भोज वृष्णि अन्धकगणभारी
हरि समीप हल मूसरवारे ❋ आसव पिये नयन रतनारे

नील निचोल अभूषण साजे ❀ प्रभु के दक्षिण ओर बिराजे
जा कहँ शेष कहें संसारा ❀ सो बलभद्र सहैं जगभारा
औरो देश देश के राजा ❀ जुरे आनि तहँ सकलसमाजा
दो० भूपबामदिशि द्रौपदी, भूषण बसन उदोत।
मनहुँ प्रभाकरकी सभा, जगरमगर द्युति होत॥
केहरि कटि मृगशावकनयनी ❀ बोलीबिहँसि बचन पिकबयनी
दुर्योधन गृह भूप पठाये ❀ कारज सकल नाथ करि आये
कह हरि वह एको नहिं मानहि ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि जानहि
कहे बचन हँसि शारँगपानी ❀ बिना युद्ध महिमिलिहि न रानी
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ ❀ बासुदेव ते बिनय सुनायउ
मानत सो न कुमारगगामी ❀ अब उपाय कीजे का स्वामी
कही बिहँसि तब शारँगपानी ❀ सुनहु नरेश प्रेम सज्ञानी
बैठे द्रुपद बिराट भुवारा ❀ पूछि मन्त्र तस करहु प्रचारा
जस कछु मतो कहैं सबलोगा ❀ कहेउकृष्ण तस करियनियोगा
दो० बुद्धि बहिक्रम बद्ध शुचि, ज्ञानवान पञ्चाल।
धर्मशीलबल नृप कहे, करिय यतन ततकाल॥
श्रेष्ठ बरिष्ठ भूप सबलायक ❀ पितु समान तुम्हरे हितदायक
इनहिं पूछि करिहो जो काजा ❀ होइहि सकल मनोरथ राजा
पूछो बैठि बिराट भुवारा ❀ इनते को हित चहत तुम्हारा
द्रुपद बिराट कही यह बाता ❀ सब जानत प्रभु अन्तर्याता
अब प्रभु और न करहु बिचारा ❀ आयुध बांधि होहु असवारा
कोटिन बिधि प्रभु यतन बिचारे ❀ मिलै न महि कौरव बिन मारे
सुनि यह बचन सात्यकी बोला ❀ कहे नाथ इन बचन अमोला
मत हमार सुनि पावन वारी ❀ जले जियत कुरुपति अपकारी
दो० तबलग कुशल न पाण्डुसुत, सुनिये दीनदयाल।
जब लग दुर्योधन जियत, ग्रसत न ताकहँ काल॥
आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजे ❀ मरे सकल कौरव सुनिलीजे

पारथ ते धनु बिद्या पाई ❀ कीन्ह निपुण सब अस्त्र पढ़ाई
यहिबिधि रणजीतौ यदुनायक ❀ कौरवनिधन करनके लायक
सुनत बचन हलधरहि न भाये ❀ क्रोधितनयन अरुण होइ आये
मोहिं न भावत मन्त्र तुम्हारो ❀ चहतसकलमिलिखेल बिगारो
धृष्टराज के छोटे भ्राता ❀ जानहु पाण्डु जगत बिख्याता
बेद पुराण बिदित सब काहू ❀ होइ परन्तु जेठ नरनाहू
है जेठे को राजकुमारा ❀ दुर्योधनहि राज्य अधिकारा
पहुँचत नहिं पाण्डव को दावा ❀ नाहक सब मिलि बैरु करावा

दो० सुने श्रवण बलदेव के, मन्त्र जबै यदुनाथ।
लागेकरन बिवाद तब, निज भ्राता के साथ ॥

दूरौ प्रकट भये का बासा ❀ मेटि को सकै पाण्डुसुत आसा
यहिप्रकार हरि कहि समुझावा ❀ सुनत बचन हलधरहि न भावा
बाहुलीक कछु कीन न दावा ❀ प्रथम पितामह अंश न पावा
राज्ययोग नहिं होत कनिष्ठा ❀ करवावत तुम कान्ह अरिष्ठा
हँसि बोले तब शारँगपानी ❀ सुनहु तात यक कथा पुरानी
भे शंतनु ते प्रथम देवापी ❀ बाहुलीक भे मध्य प्रतापी
देखेउ ज्येष्ठ कुष्ठ तन चीन्हा ❀ ताते राज्य पिताहि नहिं दीन्हा
बाहुलीक मातुल पहँ गयऊ ❀ शांतनुनाम नृपति सो भयऊ
प्रथम ब्याह गङ्गा ते कीन्हा ❀ ताके जन्म पितामह लीन्हा
राज्य बिचित्रबीर्य कहँ दयऊ ❀ भीष्म ज्येष्ठ राजा नहिं भयऊ
पूछेउ द्रुपद सुनहु जगतारण ❀ अंशहीन भीषम केहि कारण
महारथी सन और न पूजा ❀ जेहिं समान जग भयउ न दूजा
बलते कवन छड़ावत दावा ❀ केहि कारण उन राज्य न पावा

दो० प्रकटे शांतनु गङ्गते, महाबाहु बल खानि।
अंश न पायो बंशको, कारण कहौ बखानि ॥

सुनि श्रीहरि आये इन बातन ❀ सुनहु द्रुपदसुत कथा पुरातन
भागीरथी ब्याहि सुख पाये ❀ करि करार भवनहिं नृप लाये

बालक सप्त प्रथम उपजाये ❋ तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये
भीषम जन्म जगत जय लीन्हा ❋ बाल बिलोकि मोह नृप कीन्हा
कहेउ भूप गङ्गा सुनि लीजै ❋ अबकी सुत मांगे मोहिं दीजै
कह सुरसरि नृप कीन्ह करारा ❋ पहुँचावों बालक तुव धारा
तुमहिं भूप अब सुत प्रिय लागे ❋ यह करार कीन्हों मैं आगे
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना ❋ निज प्रवाह हम करब पयाना
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै ❋ जाहुँ भूप मोहिं आज्ञा दीजै
करहु नृपति अब तजि संदेहा ❋ राखहु हमहिं कि बालक येहा
कहनरेशमोहिं शिशु प्रियलागत ❋ जोरिपाणि तुमते यह मांगत
सुरसरि सुनि महीप मुखबानी ❋ निज प्रवाह ततकाल समानी
नारि बिरह दुख भूपहि व्यापा ❋ बिकलरैनिदिनकीन्हबिलापा
राज्ययोग बीते कछु काला ❋ भयो कुँवर दुख तजे भुवाला
परशुराम धनु बिद्या दीन्हों ❋ आपु समान महारथ कीन्हों
करहि गङ्गसुत राज्य प्रचारा ❋ भूप द्योसप्रति रमत शिकारा

दो० घूमत भूप अखण्ड बन, गयउ नदी के तीर ।
देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर ॥
कीधौं रति सम मैनका, रम्भारूप समान ।
बिज्जुलतासी देखि छबि, संभ्रम भूप भुलान ॥

ठाढ़ नरेश नदी के तीरा ❋ कामबिवशअतिबिकलशरीरा
हांकि अश्व चलिगे नृप आगे ❋ पूछन बचन प्रेम सों लागे
केहि सुकृती की सुता सोहाई ❋ कारण कवन नदी तट आई
तुम्हहिं देखि लोभेउ मन मोरा ❋ को तुव पिता नाम का तोरा
सुता निषादराज की राजा ❋ निशिदिन मोर नदीतट काजा
मीन राज व्योहार हमारा ❋ मत्स्योदरी नाम द्विज सारा
आवत मम तन कठिन कुबासा ❋ देखि लोग दाबैं निज नासा
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये ❋ यहि मग ऋषय पराशर आये

दो० सरित तीर ठाढ़े भये, तपोमूर्त्ति अभिराम ।

मोहिंविलोक्योतरणिपर, विकलभयोबशकाम॥

म्वहिंविलोकि ऋषिप्रेमअधीरा ❀ भयो कामबश बिकलशरीरा
मांगी रति मुनि करि बहु ईड़ा ❀ बोली मैन भूपबश ब्रीड़ा
कह मुनि हमहिं देव ऋतुदाना ❀ लेहु शाप की वज्र समाना
क्रोधवन्त ऋषि को जब देखा ❀ प्रति उत्तर मैं दीन्ह बिशेखा
मैं तुम्हारि पुत्री ऋषिराई ❀ मलिनरूप अरु देह गँवाई
नीचजाति कृत अशन कुभोगा ❀ नाहिंन नाथ तुम्हारे योगा
बरै पुरुष पितु शिष बिन जोई ❀ कुलटा नाम कहावै सोई
मैं मुनीश तुव हाथ बिकानी ❀ छोड़यों लोकलाज कुलकानी
तुमहिं बिलोकि राजअनुकूला ❀ देखहु नाथ लोग दोउकूला
अतिकलङ्क लागी मुनि हमको ❀ दिनरतिनाथउचितनहिंतुमको

दो० ह्वैप्रसन्न तब ऋषिकहेउ, त्यागहु तरुणिबिषाद ।
तुव तन गन्ध कपूर की, होइहि मोर प्रसाद ॥

ऋषिआशिष प्रसन्नचित भयऊ ❀ छूटि बिषाद शोक सब गयऊ
शशिसमान तन भयो प्रकासा ❀ योजनभरि पूरेउ पुनि बासा
योजनभरि तन बहेउ सुगन्धा ❀ कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा
सत्यचरित भाषेउ निज श्यामा ❀ ताते सत्यवती तुव नामा
यहकरि कीन्हे ऋषय चरित्रा ❀ भयउ दिवसमहँ रात्रि विचित्रा
परेउ कुहिर दिनकर द्युतिनासा ❀ रमितभयो मुनिसहितहुलासा
योजन भरि पूर्यो पुनि बासा ❀ तन सुगन्ध दुर्गन्ध बिनासा
निशिते सरिस भयो अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा
होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ❀ कन्यारूप सदा तेहि कीन्हों
यहि प्रकार मोहिं दै बरदाना ❀ ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना
जब ऋषीश निज मारग गयऊ ❀ भये प्रकाश कुहिर मिटिगयऊ
तिनते भये व्यास भगवाना ❀ प्रगटत बनको कीन्ह पयाना

दो० सत्यवती भूपाल ते, कह निजकथा प्रमान ।

भणित पर्व उद्योग यह, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

काम बिवश नृप बचन उचारे ❋ सत्यवती चलु भवन हमारे
सब प्रकार तुव मम सुखदानी ❋ तुम कहँ लै करिहौं पटरानी
करहु कवल नृप चलहुँ तुम्हारे ❋ होइ महीपति पुत्र हमारे
तुव करार आवै केहि काजा ❋ करहि कवल भीषम सुनु राजा
सुनि नरेश बहु दूत पठाये ❋ गङ्गासुतहि बोलि लै आये
सत्यवती सुनि सकल प्रसङ्गा ❋ कीन प्रणाम प्रसन्नित अङ्गा
चलहु पिता सँग मातु व दारा ❋ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ ❋ धनि पितुभक्त जगत तुम भयऊ
करहु कवल हमते युवराजा ❋ तनय हमार करै तव राजा
चलौं भवन तब तुव पितु सङ्गा ❋ देहु बीच जग पावनि गङ्गा

दो० धर्म धुरन्धर धीर धर, देवअंश अवतार ।
तुमसम सत्यप्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार ॥

बचन पालि तुम राज्य न लेहौ ❋ निश्चय मम पुत्रन को देहौ
तुम्हरे बंश प्रबल सुत होई ❋ लेइ छिनाइ राज्य पुनि सोई
तब शंतनु भीषम प्रति बोले ❋ हे सुत लेन नारि यह बोले
कीन्हे बिन उपकार तुम्हारे ❋ नाहिं चलिहै पुनि भवन हमारे
यहि बिन मैं न जियउँ सुनु शावक ❋ जारत मोहिं मदन बिन पावक
शंतनु बचन शोक मम खोले ❋ सुनतहि तब गङ्गासुत बोले
सुनहु पिता तुम मोर करारा ❋ निरखहुं मैं न नयन भरि दारा
किमि ह्वैहै सन्तन की साजा ❋ करिहौं सत्यवती सुत राजा
मात पिता श्रीहरि गुरु आना ❋ सत्यवती सुनु बचन प्रमाना
जैसे हम गङ्गा कहँ जानब ❋ त्यहिते सरिस मातु तुहिं मानब
करि करार शुभ यान चढ़ाये ❋ नगर हस्तिनापुर लै आये

सब प्रकार निज लायक जानी ❀ शंतनु नृप कीन्हेउ पटरानी
चित्राङ्गद विचित्र सुत जाके ❀ भये देव सरिवर नहिं ताके
तन तजि नृप सुरपुर जब गयऊ ❀ चित्राङ्गदहि राज्य पुनि भयऊ
गिरिकन्दरमहँ फिरत शिकारा ❀ प्रबल सिंह ताको बन मारा
भये दुखित भीषम सुनि बाता ❀ अतिशयबिकल भई पुनि माता
सहित धरा धन सेन समाजू ❀ दीन्ह बिचित्रबीर्य कहँ राजू

दो० आज्ञा लीन्हीं मातुकी, भीषम अति हरषाय ।
काशिराजकी लै सुता, भ्राता ब्याहिनि आय ॥

याते राज्य न भीषम लीन्हा ❀ राज्य बिचित्रबीर्य कहँ दीन्हा
रानिन बिवश भयउ नरनाहा ❀ रमित रैनि दिन सहित उछाहा
राजकाज नृप को सब भूला ❀ प्रतिदिन रहै नारि अनुकूला
द्वादश बर्ष भवन ते राजा ❀ कढ़ेउ न जान्यो दूसर काजा
गङ्गासुत कृत राज्य प्रचारा ❀ भूप दिवस निशि रमित बिहारा
बल न रहेउ तन नारि प्रसङ्गा ❀ भयउ राजयक्ष्मा नृप अङ्गा
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा ❀ भये बिकल जन त्यहिके शोगा
सत्यवती अति कीन्ह बिलापा ❀ भीषम उर उपज्यो परितापा

दो० धरि धीरज बैठे भवन, दुखित नयन जलरोकि ।
माता सों कीन्हों मतो, बंश बिहीन बिलोकि ॥

माता सुनहु ब्यास जो आवें ❀ कह भीषम वे बंश चलावें
सुमिरत तुरत ब्याससुनि आये ❀ अक्षमाल तन भस्म चढ़ाये
जटाकलाप बार अति भूरे ❀ शोभित नयन अरुण पुनि रूरे
उठि भीषम चरणन शिरनाये ❀ सत्यवती पुनि कण्ठ लगाये
सादर सिंहासन बैठारे ❀ बिनय कीन्ह दुख हरो हमारे
बंश बिहीन बन्धु तुम भयऊ ❀ भयो राजयक्ष्मा मरिगयऊ
अबकरिकृपा ऋषियअवतंशा ❀ करिय प्रकट रानिन ते बंशा
ब्यास मातु की आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे सुख मानी

कालिहहिकहेउ अम्बिका बोली ❀ मुनिशय्या तुम जाहु अमोली
इनते सुत प्रकटो तुम जाई ❀ बाढ़ै वंश राज्य अधिकाई
दो० कही अम्बिका मातु यह, बात न मोते होय।
कुलटा कहिहैं लोग जग, जाय धर्म सब खोय॥
पैहै व्यास विष्णु अवतारा ❀ व्यापि रहो सगरे संसारा
तासु परस कीन्हे नहिं पापा ❀ असमन समुझितजौ परितापा
सत्यवती की आज्ञा मानी ❀ ऋषि ढिग गई अम्बिका रानी
व्यास तेज ते तन थहराई ❀ बैठि सकुचवश शीश नवाई
जिमिहिमगतकमलीकुम्हिलानी ❀ थके बचन मुख आव न बानी
भयवश अङ्ग अङ्ग सब कांपी ❀ तुरत करत लीन्हें मुख झांपी
गये व्यास माता के पासा ❀ निकटबैठि यह बचन प्रकासा
दो० सहि न सकीममतेजत्रिय, लिये ढांकि दृगबार।
ह्वैहै याके मातु सुनु, अक्षबिहीन कुमार॥
सत्यवती सुनि अतिदुख लहेऊ ❀ पुनि पुनि बचन पुत्रसों कहेऊ
नयन बिना राजा अधिकारी ❀ होत नहीं सुत देख बिचारी
करहु प्रकट अम्बा ते बालक ❀ सो कुरुवंश होय प्रतिपालक
व्यास मातु की आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे पुनि आनी
कह अम्बा ते योजनगन्धा ❀ होइ अम्बिका के सुत अन्धा
मुनिशय्या कहँ अब तुम जाहू ❀ उपजै पुत्र होइ नरनाहू
आयसु मांगि गई मुनि तीरा ❀ देखि तेज भयो पीत शरीरा
तब मुनीश आलिङ्गन कीन्हा ❀ होय भूपसुत आशिष दीन्हा
यह कहि सत्यवती पहँ आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये
दो० सकल सुलक्षण होय सुत, महाराज के योग।
पीतभई त्रिय देखि मोहिं, होय पीत तनरोग॥
यह कहि बचन मातु के आगे ❀ सुमिरण करन ब्रह्म को लागे
कह्यो मातु अब सुत सुनिलीजे ❀ अपने मन बिचार यह कीजे
याहिते अधिक न दूसर शोगा ❀ अन्ध एक सुत यक सुत रोगा

देहु एक सुत अबकी बारा ❀ विष्णु भक्त जानै संसारा
कहेउ व्यास माता सुनि लीजै ❀ शय्या पठै अम्बिका दीजै
सत्यवती सुनि ताहि बोलाई ❀ सुनत अम्बिका शीश डोलाई

दो० एक बार माता करौं, बचन तुम्हार प्रमान ।
बारमुखी सम सो त्रिया, बार बार ऋतुदान ॥

सत्यवती कहि बालक काजा ❀ तुम ऋतु करौ छोड़िकै लाजा
सासुहि निकट भली कहि आई ❀ मुनि समीप परिचरी पठाई
भये रमित जानेउ मुनि रानी ❀ निलज देखि दासी पहिंचानी
आये मुनि माता के आगे ❀ कथा समस्त कहन पुनि लागे
याते होइहि प्रकट कुमारा ❀ परम भक्त जानहिं संसारा
माता सत्य कहौं मैं तोहीं ❀ पुनि छलकीन्ह अम्बिका मोहीं
मोहिं बिलोकि परम भय पाई ❀ पठई और आप नहिं आई
निपट निलज्ज देख मैं सोई ❀ काशिराज की सुता न होई

दो० माता सों यह कहि चले, मुनि बनको सुखपाइ ।
भये अम्बिका के तनय, धृतराष्ट्रक तन आइ ॥

भे अम्बा के पाण्डुकुमारा ❀ बंश बिभूषण जग प्रतिपारा
दासी योनि बिदुर अवतारा ❀ बिष्णुभक्त अरु परम उदारा
प्रथम अम्बिका के सुत भयऊ ❀ अन्ध जानिकै राज्य न दयऊ
भीषम बाहुलीक मत कीन्हा ❀ अम्बासुतहि राज्य नहिं दीन्हा
पाण्डुहि सिंहासन बैठायो ❀ तिलक कियो शिर छत्र धरायो
राज्ययोग पुनि राजकुमारा ❀ नाहिंन भ्रात जात अधिकारा
यहिप्रकार हरि कहि समुझावा ❀ द्रुपद नरेश सुनत सुख पावा
सुनि बलदेव कही यह बानी ❀ सुनहु बात यह शारँगपानी
भीषम द्रोण करण धनुधारी ❀ दुर्योधन के आज्ञाकारी
बिना युद्ध देइहि महि नाहीं ❀ जीति को सकै कृष्ण उन पाहीं
करण समान बली संसारा ❀ नाहिंन प्रकट कौन करतारा
हम अपने मन में करि बूझा ❀ को हरि करिहि करणते जूझा

सुनतहि बचन नयन रतनारे ❀ भये क्रोध नहिं रहत सँभारे
दो० बोले हरि बलदेव ते, भ्राता करहि बिचार ।
धर्मराज के अंशको, कौन छुड़ावनहार ॥
करौं नाश कौरव सकल, जो न देइ नृप अंश ।
हतौं द्रोण भीषम करण, बाहुलीक युत बंश ॥
तदपि बली कुरु युध संसारा ❀ मोते रण नहिं तासु उबारा
चक्रपाणि गहि मस्तक फारौं ❀ राज युधिष्ठिर को बैठारौं
यह करतूति न करि दिखरावौं ❀ नहिं बसुदेव को तनय कहावौं
मिटै न अंश धर्म नृप केरा ❀ गावै अयश जगत सब मेरा
का बल देखि सुनौ बलभाई ❀ करत करण की आपु बड़ाई
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ नहिं त्रिभुवन इनकी समताई
अतिहठ हनूमान ते कीन्हा ❀ सकै न जीति सखा करिलीन्हा
ह्वै किरात गिरि पर रणकीता ❀ बनोबास जिन शंकर जीता
असुर सेवन्त कवच बलवाना ❀ जाके रण सुरपति भय माना
सो अर्जुन पलमहँ संहाख्यो ❀ इन्द्रहि इन्द्रासन बैठाख्यो
जिन बांधे शर सों सोपाना ❀ ऐरावत धरणी जिन आना
दो० बाणन कीन्ही बाट नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्ती सो पूजन कियो, सजल भई गन्धारि ॥
धनपति छांड़ो दण्ड लै, जीते सब भूपाल ।
पारथ सो बलवान जग, भयहु न कवने काल ॥
जब बिराटपुर कौरव घेरा ❀ बेढ़ी गाय अहीरन टेरा
भीषम द्रोण करण सब आये ❀ अर्जुन एक सबन बिचलाये
एक एक सब मिलिमिलि लरेऊ ❀ तब उन पारथ को का करेऊ
बाणन मारि सकल बिचलाये ❀ फेरी धेनु नगर फिरि लाये
देव दैत्य दानव बलभारी ❀ जहँ लगि रचे सृष्टि बिधि झारी
तीनों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ पारथ सों रण जय नहिं पावै
सहदेव दक्षिण की जय कीन्हा ❀ लङ्का दण्ड बिभीषण लीन्हा

नकुल पारथी दिशि जलभागी ❀ जीत्यो सिन्धु तटी लघुभारी
भीमसेन नव पूरब भागा ❀ निजभुजबल जीत्यो बरजोरा
बकबक नाग बकासुर मारा ❀ जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा
मारि हिडम्ब हिडम्बी ब्याही ❀ बन्धु को जीति सकै रणमाही
जिन मारो कीचक सो भाई ❀ सकै बन्धु को अंश छुड़ाई
धर्मराज सरि को संसारा ❀ तजेउ न धर्म सहेउ दुखभारा

दो० भीम पार्थ कीन्हों सकल, कौरवकुल संहार ।
धर्मराज के शत्रुको, मरत न लागी बार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० प्रश्न बहुरि कुरुवंशमणि, [illegible] ।
कहहु ऋषि जनमेजय सुनो, [illegible] ॥

बलदेउ देखि बहुरि हरि बोले ❀ भ्राता सुनो कहत मैं खोले
अनहित महत धर्मसुत केरा ❀ जानहु परम शत्रु सो मेरा
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता ❀ रचिराख्यो यह कलह बिधाता
तुम कहँ धर्मराज प्रिय जैसे ❀ मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे
जो सात्यकी बीर बर होई ❀ मम संग्राम करै शठ सोई
है यह बात मतेकी भाई ❀ कुरु पाण्डव की प्रीति निकाई
कहि यह बचन बिदा पुनि भयऊ ❀ बल चलि नगर द्वारके गयऊ
तब नृप कहेउ सुनहु बनवारी ❀ कहेउ राम मत नीक बिचारी
करत युद्ध कटिहै परिवारा ❀ मोकहँ जग कहिहै धिरकारा
जैहें बन्धु बन्धु सन मारे ❀ कलह नीक नहिं मन्त्र हमारे
मिलै भूमि अरु मिटै लड़ाई ❀ सोई अब कीजे यदुराई
कहेउ बिहँसि तब बालकन्हाई ❀ अरि पर दया परम कदराई
बैठि सबै सबको मत लीजै ❀ मिलै भूप महि सो अब कीजै
कहेउ नकुल यह मन्त्र हमारा ❀ सुनहु सकल मिलिकरहु बिचारा
सत्य बचन नृप सुनु हम पाहीं ❀ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं

भीमसेन अर्जुन मन भायउ ❀ कहेउ बन्धु भल मन्त्र दिखायउ
द्रुपद बिराट कहे मत नीका ❀ तब बोलेउ यादव कुल टीका

दो॰ कही कृष्ण भूपाल ते, सुनिये मन्त्र हमार।
बिनदलसों कछुबल नहीं, बिदित सकल संसार॥
जहँलग तुम्हरे अंशके, भूमिभूप भुवराइ।
साजिनिजदलआवैंसकल, दीजै पत्र पठाइ॥

कह मुनि सुनहु बचन कुरुराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण मनलाई
सुनि हरिबचन नृपति मनभायो ❀ देश देश कहँ पत्र पठायो
पुनि हरि द्वारावती सिधायो ❀ द्रुपदसेन हित निजपुर आयो
साजि दल देश देशके राजा ❀ नृप बिराटपुर जुरो समाजा
नगर चँदेरी के भूपाला ❀ धृष्टकेतु आये तेहि काला
अक्षौहिणी चमू यक सङ्गा ❀ हय गज रथ पदचर बहुरङ्गा
सब कवची खड्गी धनुधारी ❀ सबैं शूर महाबल भारी
उत्तर पुर बिराट नृप केरा ❀ कीन्हे धर्मराय कढ़ि डेरा
अक्षौहिणी धर्म नृप केरी ❀ भई नृपन की भीर घनेरी
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ अक्षौहिणी सङ्ग निज लाये
धृष्टद्युम्न पुत्र रण रंगी ❀ चौंसाठि नृपति द्रुपद के संगी
दूसर नृपति शिखण्डी आये ❀ भीषमबधहित बिधि उपजाये
चारि बन्धु षट सुत दश नाती ❀ आयो अयुत द्रुपद के जाती
सबैं महारथी बल भारी ❀ सन्नाही खड्गी धनुधारी

दो॰ शूरसेन आये तबै, लै निजसेन गँभीर।
कवची खड्गी कुण्डली, धनुधारी सब बीर॥

जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ सेन सहित आये नृप तेऊ
अक्षौहिणी एक सँग लीन्हे ❀ धर्मराज हित रण मन दीन्हे
काशिराज की सेना आई ❀ अरु आये नृपगण समुदाई
बाहर निकसि बिराट भुवारा ❀ उतरे शंख सहित परिवारा
अक्षौहिणी संग निज लीन्हे ❀ डेरा धर्मराज ढिग कीन्हे

गजरथ औ असवार पदाता ❀ अक्षौहिणी जुरेउ दल साता
घटोत्कच्च निज साथ सिधायो ❀ पांच कोटि राक्षस सँग लायो
भूप पञ्चनद के जे बासी ❀ आये सेन सहित बलरासी
भृङ्गी सिन्धु कक्ष के राई ❀ आये सकल समेत सहाई
चालिस सहस जुरे तहँ राजा ❀ को बरणै नृप सेन समाजा

दो० बन्धुन युत बैठे सभा, धर्मराज के रूप ।
जुरे आइ त्यहि थल सबै, देश देश के भूप ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दो० जनमेजय मुनिते कह्यो, कहौ कथा मनलाइ ।
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तब कस कीन्ह उपाइ ॥

चरवरमुख कुरुपति सुधि पाई ❀ जोरयो कटक युधिष्ठिर राई
तब नरेश मन शङ्का आई ❀ शकुनि करणकहँ लीन्ह बोलाई
द्रोणी और दुरासन आये ❀ बैठि सकल मिलि मन्त्र दृढ़ाये
दुर्योधन कहि श्रवण सुनाई ❀ दूत वचन मुखपहँ सुधि पाई
सुनत अजातशत्रु दल जोरा ❀ अक्षौहिणी सत्त घनघोरा
सुनहु सचिव कीजे केहि भांती ❀ भयबश परी नींद नहिं राती
सुनि यह उतर करण तब दीन्हा ❀ नृप तुम शोच अकारथ कीन्हा
पञ्च बन्धु सात्यकि यदुराई ❀ अरु नरेश सब शत्रु सहाई
द्रुपद बिराट सेन सजि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै

दो० यम कुबेर वरुणेन्द्र मैं, जीति सकौं दिगपाल ।
मानुष मोते को जुरे, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह बचन भूप सुख पायो ❀ साधु साधु करि हृदय लगायो
कर्ण समान धर्म व्रतधारी ❀ नहिं त्रिभुवन हमार हितकारी
तन मन बचन न जानै आना ❀ मम कारज नहिं दुर्लभ माना
मिलै न हितदायक जग तोसे ❀ रहत सदा मैं करण भरोसे
जा दिन युद्ध परै कठिनाई ❀ मित्र मित्रसुत करहिं सहाई

पाण्डव निधनकरण के लायक ❀ बन्धु सरिस मेरे हितदायक
जब यहि भांति प्रशंस्यो ताही ❀ बोल्यो करि बिचार मनमाहीं
दो॰ कियो रङ्क ते राउ तुम, राखत मान हमार।
तिलतिल तन कटि कटि गिरहि, ताके प्रति उपकार॥
स्वामिकाज लगि शीश समर्प्यो ❀ जुरे कालरण ताहि न डर्प्यो
जुरे युद्ध करणी नृप मेरी ❀ देख्यो कहौं कहा बहुतेरी
करिअतिक्रोध शिलीमुखजोरों ❀ शरसागर पाण्डवदल बोरों
भूप न करिय शोक कछु जीमा ❀ सकैं जीति नहिं अर्जुन भीमा
रणमहँ बांधि युधिष्ठिर राई ❀ जयति पत्र देहौं लिखवाई
मेरे बल समान नहिं पारथ ❀ सकै न जीति थकै पुरुषारथ
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो ❀ तीक्षण बचन बदनते काढ़ो
पारथ की सरि भट संसारा ❀ भयो जगत नहिं होनेउहारा
दो॰ कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार।
पारथ शर अतिकठिन है, सहै युद्ध को भार॥
सुनहु भूप अब कथा पुरानी ❀ पार्थ चरित मैं कहब बखानी
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई ❀ सो प्रसंग नृप सुनु चितलाई
जब बिराट गणनाथ छिनावा ❀ हारि समर नृप कानन आवा
मिले पिता नृप यमुना तीरा ❀ देखि युगल दृग भयो सनीरा
गहिपद नृप प्रणाम तब कीन्हेउ ❀ होहुअभय मुनिआशिषदीन्हेउ
भरद्वाज अरु प्रषद मिताई ❀ अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई
द्रोण द्रुपद खेलैं यक सङ्गा ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति अभङ्गा
कथा समस्त द्रुपद जब कह्यऊ ❀ भये क्रोध सुनि द्रोण न सह्यऊ
दो॰ कहेउ द्रोण सुनु पै द्रुपद, बांधि बिराटगण आजु।
सकल देश पञ्चाल को, तुमहिं करावों राजु॥
बांधि बिराट तोहिं राज करावों ❀ द्रोण नाम तब बिप्र कहावों
हतौं शत्रु मैं एकै बाना ❀ तौ म्वहिं परशुराम की आना
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ ते अघमूल परहिं गे भारी

अस कहि लीन्ह शरासनबाना ❀ द्रुपद संग लै कीन्ह पयाना
कहेउ भूप यह चलती बारा ❀ करौ निधन जो शत्रु हमारा
आयो राज विप्र सुनु तोरा ❀ पुनि मानब भरि जन्म निहोरा
असकहिनगरनिकटचलिआये ❀ पाणि शिलीमुख धनुष चढ़ाये
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये ❀ ब्रह्म अस्त्र ते द्रोण जराये
द्रुपदहि सिंहासन बैठारा ❀ काढ़ेउ तिलक छत्र शिरधारा
द्वादश वर्ष द्रोण सुनु राई ❀ बसे कम्पिला सुख अधिकाई
हमरे हेतु धेनु मुनि यांची ❀ दयो नृपति करि बुद्धि पिशाची
मित्र जानिकर शाप न दीन्हा ❀ करेउ न निधन नगर तजि दीन्हा

दो० गजपुरको तब द्रोणमुनि, कीन्हो तुरत पयान ।
पहुँचे वासर सात महँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० गेंद खेल खेलत सबै, जुरे बालकन साथ ।
तुम फेंकेउ तब रोकेऊ, भीम श्रोड़िकै हाथ ॥

छांड़ेउ गेंद कूप में गयऊ ❀ तुमसबमिलि बिस्मयवशभयऊ
ताही समय द्रोण तहँ आयेउ ❀ बालक रुदत देखि डुपकायेउ
सींकधनुष शर द्रोण सँधानी ❀ गेंद काढ़ि दीन्हे तू आनी
लिये तुरत भीषम पहँ आये ❀ सकल चरित बालकन सुनाये
देखि पितामह मन अनुमानेउ ❀ आये द्रोण सत्य जिय जानेउ
चलिकै मिले गङ्गसुत आई ❀ सभा मध्य लै गयो लेवाई
अर्घपाद्य सिंहासन दीन्हा ❀ चरण धोय चरणोदक लीन्हा
लक्ष धेनु पुनि दीन्ह बिआऊ ❀ दीन्हेउ बहुरि पञ्चशत गांऊ

दो० जोरिपाणि कीन्ही विनय, भीषमपद शिरनाय ।
बालक सौंपे बोलि सब, कीजै निपुण पढ़ाय ॥

अस्त्रसिखाय निपुणजब कीन्हा ❀ तुमसबमिलि गुरुदक्षिण दीन्हा

अर्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ ❀ सहस एक दश संयुत गाऊ
पद गहि वचन कह्यो यह सांचो ❀ आयसु करा चहौ जो यांचो
कह अर्जुन आयसु जो दीजे ❀ आज्ञा होइ नाथ सो कीजै
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा ❀ कीजै सफल मनोरथ मोरा
द्रुपद मित्र कीन्हो अपमाना ❀ ताते मांगत हौं यह दाना
बांधि चरण तर दावो आई ❀ चुकेउ तात अभिमत मैं पाई
कुरु पाण्डव की मिली सहाई ❀ घेरयो नगर कम्पिला गाई
सुनेउ द्रुपद अरि सेना आई ❀ निकरेउ तुरत निशान बजाई

दो० चारिचमू द्वै मिलिगई, भयो घोर संग्राम।
हयगजरथ लाखन परे, सुभट कटे बहु नाम॥

द्रुपद कर्ण ते सरस लड़ाई ❀ महा युद्ध कीन्हेउ प्रभुताई
शोणित बाण द्रुपद उरलागा ❀ क्रोध अनल उर अन्तरजागा
हन्यो कर्ण के चारिउ घोरा ❀ असि निकारि सारथि शिरफोरा
बिरथ देखि तब गे कुरुनायक ❀ धनुष तानि छांड़े बहुशायक
देखत युद्ध द्रुपद शर छांड़त ❀ करते धनुष भूप तब डारत
करिअतिक्रोधबिशिखबहुत्याग्यो ❀ भई बिकल सेना सब भाग्यो
भीमसेन लज्जा जिय आयो ❀ अर्जुन ते यह बचन सुनायो
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना ❀ अब कर गुरुहित पन्थ मशाना
भा पारथ उर क्रोध कराला ❀ रिसबश भये बिलोचनलाला
अर्जुन कहन सूतते लागे ❀ लै चलु हांकि बेगि रथ आगे
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हा
गांडिव धनुष बहुरि टंकोरा ❀ चौदह भुवन भयो रवघोरा
पुनि पारथ दीन्हा शर जाला ❀ लीन्हबांधि रण द्रुपद बिहाला
पकरि द्रोण चरणन पर डारा ❀ मित्र जानि मुनि नाहिंन मारा
दीन्ह छुड़ाय द्रोण पांचाला ❀ सुनु अर्जुन करणी भूपाला

दो० शरसों बारिधि बांधि जिन, जीतेउ पवनकुमार।
भयो न होनेहार कोउ, अर्जुन सरि संसार॥

पारथ कीन्ह अमानुष करणी ॥ चितदै सुनहु कहब हम बरणी
इन्द्रकील गिरि पर तपहेतू ॥ गयो मन्त्र साधन वृषकेतू
तेहिथल धनुष्बाण धरिदीन्हा ॥ करि आचमन देहशुचि कीन्हा
धरि उर ध्यान पार्थ तपसाधत ॥ करि व्रतमौन शम्भु आराधत
एक चरण दै भुजा उठाये ॥ शिवशिव रटत परम हितलाये
तप साधत बीते बहुकाला ॥ भयउ चरित यक सुनहु भुवाला
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा ॥ तासु बन्धु अतिशय बरिआरा
पूर्व के बैर रोष बढ़ि आवा ॥ धरि बराह तन मारनधावा
जब पारथ समीप नियराना ॥ सो चरित्र शंकर सब जाना
गङ्गाधर पिनाकधर आये ॥ गणगणपति सब संग लगाये

दो० धरि किरात तन हर चले, लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरिमित्र की, करन असुर संहार ॥

अर्जुन ढिग शूकर नियराना ॥ शिव शर जोरि शरासन ताना
करि अतिक्रोध अधमतम मारा ॥ आधो निकसि रहो शरपारा
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा ॥ चला असुर मारन करि शोरा
परेउ श्रवण शूकर बर बोला ॥ सुनि खहग किरीटशिरखोला
धावत यक बराह अतितीछे ॥ आयुध धृत किरातगण पीछे
होइ सरोष लीन्हों तब चापा ॥ शरसंधान कीन्ह करि दापा
यहि विधि अर्जुन बाण प्रहारेउ ॥ निज प्रवेश हरशरहि निकारेउ
कह शङ्कर यह मोर शिकारा ॥ मारेउ अधम न कीन्ह विचारा

दो० अरुणनयन भृकुटी कुटिल, बोले पार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुव बात नाहिं, रे रे अधम किरात ॥

नीचजाति अति अधम किराता ॥ मूरख समुझि न बोलत बाता
मोते वचन कहत कटुबानी ॥ अब तुव मृत्यु आइ नियरानी
अतिबलहीन न बल तनमाहीं ॥ मानत अधम निहोरा नाहीं
पशुपति गण क्रोधित होइ धाये ॥ बाणन मारि पार्थ बिचलाये
षण्मुख फिरद बदन नहिं जीते ॥ चले पराइ सकल भयभीते

बिकलसकलतनसुरिडहलावत ❀ भागतशिवदिशिवचनसुनावत
भागे सब किरातगण झारी ❀ बिन किरातपति भगे न हारी
सुनि यह बचन शम्भुहँसिदीन्हा ❀ गहि पिनाकशायक करलीन्हा
धूरजटी बहु बाण पँवारे ❀ अर्जुन काटि काटि महिडारे
पारथ शर काटैं शूलीधर ❀ भयो युद्ध अति बिकल परस्पर
विजय बृहन्नल के संग्रामा ❀ लरत न करत शम्भु बिश्रामा
तब चरित्र गौरीपति कीन्हों ❀ अक्षयतूण के शर हरि लीन्हों
गांडिवधनुष बिजय तब लीन्हा ❀ करि अतिरोष प्रहारण कीन्हा
गङ्गाधर कीन्हेउ हुंकारा ❀ फाटो धनुष भयो दुइ फारा

दो॰ तबै किरीटी क्रोध करि, कीन्हेउ खड्ग प्रहार।
तिलभरिकिट्योनशम्भुतन, बिफलभयोअसिधार॥

अर्जुन मही डारि तरवारी ❀ मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी
लरिबिलगाहिंबहुरिपुनिलरहीं ❀ नानाभांति दावँ दोउ करहीं
अर्जुन पद कहँ हाथ चलावा ❀ चहत उमापति भूमि गिरावा
चरण परस कीन्हें जब हाथा ❀ बरं ब्रूहि बोल्यो गिरिनाथा
अबमोहिं अतिप्रसन्नजियजानू ❀ मांगु तात अभिमत बरदानू
असकहि शिव निजरूप देखावा ❀ पञ्चवदन शशिअर्द्ध सोहावा
जटा कलाप शीश पुनि गङ्गा ❀ चढ़ी सकल तन भस्म अभङ्गा
हृदय कपाल माल बिकराला ❀ उठत त्रिपञ्च नयनमहँ ज्वाला
भुजंग हैं भूषण दिग्पट धारी ❀ अर्द्ध अङ्ग गिरिराजकुमारी
अभय एक कर यक बरदाना ❀ एक पाणिमहँ शूल महाना

दो॰ एक पाणि डमरू लिये, नीलकण्ठ भगवान।
बार बार कह पार्थ ते, मांगु मांगु बरदान॥

जीते बिना युद्ध गिरिजापति ❀ मैं बरदान न तुमते मांगति
बिन जीते रण मौलि भयङ्का ❀ बर मांगो बड़ कुलहि कलङ्का
प्रथमहिं बिजयपत्र लिखिदीजै ❀ पुनि बर देहु कृपा प्रभु कीजै

तुव पद सप्तकोटि हरि आना ❀ ऐसे नहिं मांगौं बरदाना
हम हारे सुत संग तुम्हारे ❀ होइहौ बिजय प्रसाद हमारे
सुनि यह वचन पार्थ अनुरागे ❀ अस्तुति करन जोरि कर लागे
जय गिरिजापति जय कामारी ❀ चतुर बदन सेवित भुजचारी
शारद शेष चरित तुव गावत ❀ निगम नेति कहि पार न पावत
बारहिंबार शक्रसुत भाखा ❀ निजप्रण टारि मोर प्रण राखा
अस कहि परे चरण अकुलाई ❀ पाहि पाहि प्रभु जनसुखदाई
गङ्गाधर त्रिशूलधर शंकर ❀ दुष्टदलन पालन निज किंकर
नीलकण्ठ सितकण्ठ शम्भु हर ❀ महाकाल कंकाल कृपाकर

दो० शृंगी शूली धूरजटि, कुण्डलीश त्रिपुरारि ।
वृषाकपर्दी मानहर, मृत्युञ्जय कामारि ॥

जयति सदाशिव सबगुणरासी ❀ काशीपति कैलास निवासी
सुनि यह गिरा मगन हर भयऊ ❀ पारथ को याबिधि वर दयऊ
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ नाश होयँ सब शत्रु तुम्हारे
होइहैं सुफल सकल जे काजू ❀ मिलिहै तुमहिं अकण्टक राजू
यह कहि हर सव अस्त्र सिखायो ❀ पुनि पशुपतिको भेद बतायो
परै पार्थ जब कठिन मशाना ❀ तादिन शर कीजै संधाना
छूटत प्रलय शत्रु दल होई ❀ त्रिभुवन रोंकिसकै नहिं कोई
यहि विधि अर्जुन को बरदयऊ ❀ अन्तर्द्धान उमापति भयऊ
यक बलिष्ठ पुनि शिव बरदाना ❀ कहहु भूप को पार्थ समाना
कहेउ वचन इमि द्रोण कुमारा ❀ समुझाये बहुभांति भुवारा

दो० गुरुबांधवमुख वचन सुनि, मौनभयो महिपाल ।
पुनि शकुनी बोलेउ बहुरि, सबलसिंह उत्ताल ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० मन्त्र हमार विचारकरि, सुनुमणिसमुभिभुवार ।
सबलशत्रु तुव धर्मसुत, जोरेउ सेन अपार ॥

जोरेउ धर्मराज निज पच्छी ❀ तुम दलहीन बात नहिं अच्छी
अबलग भूप चेत नहिं कीन्हा ❀ देश काल कछु परत न चीन्हा
पठवो पत्र करहु चित चेता ❀ आवहिं नृप सब सेन समेता
तुम जानत हौ भीम सुभाऊ ❀ अवसर परे न चूकत दांऊ
अरि दलयुक्त आपु दल हीना ❀ करि बैठे कछु कर्म अलीना
सुनहु सकल में कहत पुकारे ❀ फिरि सँभरिहि नहिं नाथ सँभारे
बोलहु सकल भूप अब राई ❀ अब बिलम्ब महँ कौन उपाई
बरपर चढ़े खेल महँ भीमा ❀ डारउ अवनि क्रोधकरि जीमा
राखत सदा बैर जिय माने ❀ लखि प्रताप तुव रहत डराने
जो बलहीन भीम करि पावै ❀ भूप तुमहिं यमलोक पठावै

दो० निजकरणी नरपाल तुम, देखहु चितहि बिचारि ।
कसेहु जँजीरनसकलतन, दियो गङ्गमहँ डारि ॥

सो सुधि भूप हिये महँ भूली ❀ अजहूं उठत हिये महँ शूली
पठवहु पत्र न करहु बिलम्बा ❀ क्षितिपति आवैं सहित कुटुम्बा
है जेहिके जितनी नृप सामा ❀ आवै साजि करन संग्रामा
खोलि पत्र सबको लिखिदीजै ❀ अब कछु भूप बिलम्ब न कीजै
सुनत नरेश परम सुख पाये ❀ देश देश कहँ पत्र पठाये
श्रीपत्रिका दीन्ह सहिदानी ❀ चलेउ राज कर आयसु मानी
सुनिकै निदेश पुहुमिपति राजा ❀ आये सकल समेत समाजा
आये मगहराज भगदत्ता ❀ असी लक्ष जाके मदमत्ता
रथनपती अरु बाजि अनेका ❀ अक्षौहिणी संग दल एका
गदा चर्म असि तूण सोहाये ❀ महापिनाक रूप दरशाये
रङ्ग रङ्ग के सङ्ग पताका ❀ अतिउतङ्ग जनु चुम्बतिनाका
बाजत बाजन बिबिध प्रकारा ❀ पणव धेनुमुख शंख नगारा

दो० ऐरावत गज को सुत, दीन्हो तेहि सुरपाल ।
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह बिशाल कराल ॥

चारिउ चरण स्रवत मद धारा ❀ जनु झरना जल बहत पहारा

दन्त बिशाल श्वेत सुर भङ्गा ❀ मानहुँ रजत शैलके शृङ्गा
कञ्चन मणिमय रुचिर अँबारी ❀ गजमुक्ता झालरि शुभकारी
तापर मगहराज असवारी ❀ देखि स्वरूप शत्रु भयकारी
निन्नानवे संग लै राजा ❀ चलेउ साजि निज सेन समाजा
युद्धहेत सब साज बनाये ❀ यहि प्रकार गजपुरकहँ आये
पुनि आयो कलिङ्ग दल साजी ❀ अगणितरथ पदाति अरुबाजी
सौ बान्धव अतिशय बलभारे ❀ द्विरद लक्ष बहु सँग मतवारे
द्वादश नृपति संग बलदाई ❀ सेन बिचित्र वरणि नहिं जाई
टोप सनाह पाणि दस्ताना ❀ असी लक्ष लीन्हे धनुबाना

दो० पटह भेरि करि शंखधुनि, घुर्मत लाल निशान ।
आयोसाजिगजपुरकटक, नृपकलिङ्गबलवान ॥

नगर हस्तिनापुरी समीपा ❀ निजनिजरचिकृतशिविरमहीपा
आयो यमनराज त्यहि काला ❀ एकविंश लीन्हे महिपाला
महाबली सब तेज तुरंगा ❀ अक्षौहिणी अनी यक संगा
बड़े धनुष अरु कवच बिशाला ❀ नील वसन तन वेष कराला
हैं सब एक जाति के काछी ❀ अस्त्र शस्त्र धृत सेना आछी
नील रङ्ग के श्याम पताके ❀ पवन लगे निर्तत नभ बांके
बाजत बिपुल अरबी बाजा ❀ चढ़ि आयो लै सेन समाजा

दो० अक्षौहिणी कलिङ्ग की, परी गङ्ग के तीर ।
तासुनिकटकीन्हेशिबिर, यमनाधिपरणधीर ॥

सुनि आयो तहँ सुरथकुमारा ❀ सिन्धु नरेश बीर बरिआरा
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी ❀ नाम जयद्रथ शिव बरदानी
त्रिभुवनबिदित जान सब कोई ❀ नृप दुर्योधन कर बहनोई
गजरथ बाजि पदाति अपारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा
जाके दलहि ध्वजा पँचरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा
कुण्ड वर्म तूणी धनु बाणा ❀ धरे बीर सब चर्म कृपाणा
हस्ती रथ कोउ तुरँग सवारी ❀ सप्त सहस्र भूप बल भारी

नगर हस्तिनापुर चलि आये ❀ कियेशिविर निजनिजमनभाये
दो० निजनिजरुचि डेराकरत, प्रमुदित हिये भुवार ।
दुर्योधन आदर किये, किये विविधसतकार ॥
सजि सजि सेन नरेश अनेका ❀ आये शूर एक ते एका
यहि प्रकार आये सब भूपा ❀ कीन्हशिविरसबनिजअनुरूपा
प्रथम दूत कुरुखेत पठाये ❀ सुनिसुधि दनुजराजचलिआये
नाम अलम्बुष बीर अभङ्गा ❀ सात कोटि दानवदल सङ्गा
नाना वाहन आयुध धारी ❀ मेचक बरण घटा जनु कारी
नाना विधि माया सब जाने ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि माने
दानवराज द्विरद असवारी ❀ गर्जत पुनिपुनि अतिबल भारी
पितुकरमभुज विदित जग जासू ❀ बलिसुत बानि पितामह तासू
निजभुजबल सुरगण सबजीते ❀ रहत सुरेश जासु भयभीते
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई ❀ दल न होइ जनु पावस आई
श्यामघटा सम निशिचर धारी ❀ बिज्जुछटा असिपाणि उधारी
सघन घटा बिच पांति बलाकी ❀ गर्जत रव सोहात अतिबांकी
दो० गजघण्टा भेरी पटह, गरजत अति मनुजाद ।
नगरहस्तिनापुरनिकट, भयो भयंकर नाद ॥
कौतुक हेत बिबुध गण आये ❀ देखनको बिमान नभ छाये
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई ❀ बाहर मिलेउ नगर के आई
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा ❀ कुशल पूछि मन संशय मेटा
करि सन्मान अलम्बुष केरा ❀ पुनि महीप करवायो डेरा
सभामध्य फिरि गयउ कुमारा ❀ भइ बड़ि भीर राज्य दरबारा
ताही समय शल्य नृप आये ❀ अक्षौहिणी संग यक लाये
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई ❀ कीन्ह मन्त्र सब सचिव बोलाई
बोलेउ शकुनि भरतकुल टीका ❀ मोते सुनिय मन्त्र यह नीका
दो० मिलिय सपदि आगे निसरि, करिबहु आदर भाय ।
देइ निमन्त्रण युद्ध को, शल्यलेब अपनाय ॥

सब मिलि पहँ मन्त्र दृढ़ कीन्हा ❀ आगे चलि कौरवपति लीन्हा
मिलतउभयअभिवादनकीन्हो ❀ तब कुरुनाथ निमन्त्रण दीन्हो
मातुल चलहु हमारे धामा ❀ आये लेन हेत संग्रामा
उन के कृष्ण सहायक ऐहैं ❀ ताकी सरि हम काह लगैहैं
मातुल मुञ्ज प्रसाद बिन तोरे ❀ होइँ न सकल मनोरथ मोरे
सुनिके शल्य कही मृदुबानी ❀ सुनहु नरेश परम सज्ञानी
धर्मराज नहिं मोहिं बोलाये ❀ हम सुधि पाइ आपुते आये
तुमचलिप्रथम निमन्त्रणदीन्हा ❀ मोहिं महीप अपन करिलीन्हा
हम छांड़ो भैनेनकर संगा ❀ सबते लरब भूप तुव संगा

दो० भीम पार्थ सहदेव पुनि, नकुल सबनकर मोह ।
त्यागे तुम्हरे हेत नृप, धर्मराज ते छोह ॥

तजि नाते को नेह बिचारा ❀ अब दीन्हे हम संग तुम्हारा
अब नृप धर्मराज पहँ जाइब ❀ आतुरभेंटि सपदि पुनि आइब
यहां राखि सब सेन समाजा ❀ आवहु देखि युधिष्ठिर राजा
गजपुर राखि सेन सब बांकी ❀ चला भूप चढ़ि यान यकाकी
घुरघुरात रथ चक्र कराला ❀ मृदुरव करत किंकिणी जाला
श्वेत संग फहरात पताके ❀ पवन लगे निर्तत नभ बांके
मिले न बर्ष त्रयोदश बीती ❀ दरश लालसा की अतिप्रीती
पुलकितगात नयन जलछाये ❀ यहि प्रकार विराटपुर आये

दो० दरश लालसा उरअधिक, को करिसकै बखान।
यहिविधिआयोशल्यनृप, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्मनरेश सभा सुधि पाई ❀ द्वारपाल इमि जाइ जनाई
शल्य आगमन सुनि सुख पाये ❀ लेन हेत नृप भीम पठाये
द्वार जाय अभिवादन कीन्हों ❀ मातुलनिरखिआशिषहिदीन्हों
रथ तजि चले प्रथम अनुरागे ❀ भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे

पुलकित गात नयनजल छाये ॐ कुशल पूछि तन ताप बुझाये
युगल प्रसन्न भये मिल जीमा ॐ आये सभा शल्य अरु भीमा
आवत निकट धर्मसुत देखी ॐ मिले प्रेमयुत हर्ष विशेखी
कुशल पूछि तन आनँद छाये ॐ पुलकित नयन सजल है आये
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ ॐ मिलेउ बहोरि सजलदृग तेऊ
तेहि अवसर पारथ तहँ आये ॐ मातुल देखि नयन जल छाये
कीन्ह प्रणाम निकटभये ठाढ़े ॐ मिले बहुरि अतिआनँद बाढ़े
अभिवादन तब करत नराटा ॐ मिले पार्थसुत द्रुपद बिराटा
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा ॐ भेंटत पुनि पुनि करत जुहारा

दो० सभामध्य नृप शल्य कहँ, तब लैगयो सुवार ।
बहुप्रकार आदर कियो, खान पान अधिकार ॥

शल्य नरेश कुशल बहु भांती ॐ पूछत नृपहिं जुड़ावत छाती
अहहतात बिधिगति बलवाना ॐ बनबसि सहेउ दुसहदुखआना
तेरह बर्ष बिपिन महँ बीती ॐ कुरुनन्दन यह कीन्ह अनीती
तात कीन्ह छल सभा बुलाई ॐ कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाई
वहअतिकीन्ह शकुनछलकारी ॐ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी
जबते तुम कहँ देश छुड़ावा ॐ तबते हम दारुण दुखपावा
तुम्हरे बिरह दिवस अरु राती ॐ तलफतरह्यो जरत नित छाती
गत तेरह संबत सुधि पाई ॐ तुम्हैं देखि गये नयन जुड़ाई

दो० आयौं तुम्हरे मिलनको, छल कीन्हे कुरुनाथ ।
दयो निमन्त्रण युद्धको, करिलीन्हो निजहाथ ॥

या महँ धर्म अधर्म बिचारी ॐ कहौ करौं सिखमानि तुम्हारी
वहां गये बिन धर्म नशाई ॐ छांड़त तुमहिं परम कठिनाई
तुमते नहिं दूसर संसारा ॐ जाननहार धर्म ब्यवहारा
तज्यो न धर्मसकल तजिदीन्हा ॐ त्यागेउ ना बचनै मग लीन्हा
तुम भगिनी सुत पांचो भाई ॐ मोरे प्राणन ते अधिकाई
कहो बिचारि करौं अब सोई ॐ जाते धर्म लोप नहिं होई

सुनतहि धर्मराज हँसि बोले ❀ मातुल सुनहु कहत मैं खोले
क्षत्रीधर्म कठिन नृप एहा ❀ तातें त्यागहु तुम सन्देहा

दो० दियो निमन्त्रणयुद्धको, उन लीन्हौं अपनाय ।
कीन्हैं और विचार अब, क्षत्रीधर्म नशाय ॥

तुम अब दुर्योधन के ओका ❀ मातुल जाउ तज्यो सब शोका
तुम कौरव की कीन्ह गोहारी ❀ अर्जुन कर्ण बैर है भारी
समरभूमि दोनों बलधामा ❀ जब जुरि करहिं कठिन संग्रामा
आशु कर्ण की निन्दा कीजै ❀ मांगत हौं मांगे यह दीजै
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई ❀ कारण सकल कहौ समुझाई
निन्दा किये कर्ण की राजा ❀ थामैं सुफल बनत तुव काजा
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा ❀ ते उत्तर मातुल कहँ दीन्हा
निज निन्दा सुनि शत्रुप्रशंसा ❀ घटिहै शल्य कर्ण को अंशा

दो० निजहीनी अरु शत्रुकी, सुनत बड़ाई कान ।
रिसबशह्वैके कर्ण तब, सूधे लगिहैं बान ॥

यह कहि धर्मराज समुझाये ❀ एवमस्तु कहि शल्य सिधाये
बाहर नगर भीम पहुँचाये ❀ बिदाभये पुनि शीश नवाये
दै अशीश नृप शल्य सुजाना ❀ पुनि मतङ्गपुर गत बलवाना
दुर्योधन आदर करिलीन्हा ❀ प्रीतिसहित अभिवादन कीन्हा
उत्तम सदन शिबिर करवाये ❀ सुनहु भूप अब चरित सुहाये
नगर कौशिली को महिपाला ❀ बृहदबली आयो तिहिकाला
अति दलबलत परा पुनि झाली ❀ सूर्यवंश की धरे प्रणाली
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठायो ❀ आदर ते सब शिबिर करायो

दो० बहु प्रकार सतकार करि, खानपान सन्मान ।
मिलतशिबिरनितप्रीतिअधिक, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० हरिपद पङ्कज ध्यान धरि, अपय नयन जलपूरि ।
कहमुनिजनमेजयसुनहु, कथाअमियरसमूरि ॥

नगर अवन्ती ते चलिआयो ❀ भूप बिन्द अनुबिन्द सुहायो
लीन्हें संग चमू चतुरङ्गा ❀ रथ पदाति गज बाजि अभङ्गा
युधामन्यु अरु बीर तमोजा ❀ आये सेन सहित काम्बोजा
राजा राजपुत्र बलवाना ❀ आये अमितकटक विधिनाना
सेनासहित उलूक नरेशा ❀ पुनि गजपुरमहँ कीन्ह प्रवेशा
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा ❀ साठि सहस्र छत्रधर राजा
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये ❀ भ्राता सुनहु कृष्ण नहिं आये
ताते तुम लै आवहु जाई ❀ दरश पाइ गत बिपति बुझाई
अर्जुन नृप की आज्ञा पाई ❀ चले तुरन्त चरण शिरनाई
बेगवन्त जोते रथ बाजी ❀ लायहु तुरत सारथी साजी
चले किरीटी अति हरषाई ❀ चले जोवत मग बार न लाई
सतयें दिवस गोमती तीरा ❀ उतरि अन्हाये निर्मल नीरा

दो० जल निर्मल गम्भीर अति, बनज बिपुल बहुरङ्ग ।
मधुप मत्त गुञ्जत भ्रमत, कलरव करत बिहङ्ग ॥

आगे चलि द्वारावति देखी ❀ मनमें भवन बिचित्र बिशेखी
कनकरचितमणिखचितदेवाला ❀ अष्टद्वार पुर त्राण बिशाला
अतिगँभीर जलयुत पदवाना ❀ उठत तरङ्ग पयोधि समाना
श्वेत रक्त माणि हरित बँधावा ❀ परम अनूप रुचि रूप सुहावा
दक्षिण ओर समुद्र बिराजा ❀ पश्चिमदिशि रैवत गिरिराजा
कोटिन पुर महँ उड़त पतङ्गा ❀ हंस मयूर कपोत बिहङ्गा
निर्तत कोटिन केतु पताका ❀ अति उतङ्ग जनु चुम्बत नाका
कोटिन गज कुन्तल लै आवैं ❀ सरित घाट महँ नीर पियावैं
करत बिहार द्विरद मतवारे ❀ गिरिसम बपुष जूल ते कारे
कोटिन बाज साहनी आवैं ❀ नीर पियाइ नदी अन्हवावैं

दो० अतिउतङ्ग पुरद्वार शुभ, मणिमय मञ्जु केवार ।

कोटिन दरबानी खड़े, लिये हाथ हथियार ॥
कोटिन मणिमय रुचिर कँगूरा ❀ अतिउतङ्ग नभ परसत जूरा
जम्बूनद मणिगणयुत आना ❀ शोभित सुभग सुरेश समाना
रङ्ग रङ्ग रतन की भाशा ❀ रविकर परसत करत प्रकाशा
पुर शोभा कुन्तीसुत देखत ❀ जीवनजन्म सुफलकरि लेखत
यहिविधि पवँरिद्वार चलिआये ❀ दरबानिन लखि शीश नवाये
कहे वचन सुधि करत तुम्हारी ❀ संध्या समय रहे बनवारी
रुक्मिणि मन्दिर ते कढ़िआई ❀ सात्यकिसों इमि वचन सुनाई
बीते युगल मास सुनु भाई ❀ अर्जुन की कछु सुधि नहिं पाई
ताते वेगि विलम्ब न कीजै ❀ लोचन लाहु निरखिचलिलीजै
असकहि शयनभवनमनदीन्हा ❀ अर्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा
तेहि अवसर दुर्योधन आये ❀ शयन किये यदुनन्दन पाये
ताके हृदय गर्व नहिं थोरा ❀ बैठेउ जाइ शिरहने ओरा
गये पार्थ सोवत यदुनाथा ❀ ठाढ़भये सन्मुख करि माथा
दो० परसि चरण ठाढ़े भये, हरि पांयन की ओर ।
हियेप्रीति अतिमन बिमल, श्रीसुरराजकिशोर ॥
ताही समय जक्रपति जागे ❀ देखेउ पारथ पांयन आगे
उठे सप्रेम देखि बनवारी ❀ मिलन हेतु दौ भुजा पसारी
अर्जुन गहे चरण लपटाई ❀ भुज गहि हरि लीन्हे उरलाई
कुशल प्रश्न पूछेउ बहुभांती ❀ पुनिपुनि मिलत जुड़ावत छाती
तेहि अवसर कुरुनन्दन आये ❀ अभिवादन कहि आप जनाये
यदुपति कुरुनाथहि पहिंचाना ❀ मिले बहुतबिधि करि सन्माना
गहि भुज लै समीप बैठाये ❀ पूछेहु नृप केहि कारण आये
हँसि बोले दुर्योधन राजा ❀ सुनहु कृष्ण आयहुँ जेहि काजा
दो० करौ सहाय हमार तुम, जो कीन्हो बहु बोध ।
बहुत कहा तुमते कहैं, जानत वंश विरोध ॥
ताते तजि अब पाण्डव सङ्गा ❀ तुम हरि होहु हमारे अङ्गा

क्षत्री धर्म सुनहु यदुराई ❋ जाके भवन प्रथम जो जाई
सो ताही को होइ सहायक ❋ करहु बिचार होइ जो लायक
आयउँ भवन प्रथम मैं तुम्हरे ❋ हे हरि होहु सहायक हमरे
सुनि यदुपति बोले मुसुक्याई ❋ दल बल हीन युधिष्ठिरराई
निजआगम कह आपु बिशेखा ❋ हम प्रथमहिं पारथ को देखा
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❋ करहु बिचार बेगि सो कीजै
यह कहिकै हरि माया प्रेरी ❋ बरबस जाय तासु मति फेरी

दो० चारि लक्ष गोपालगण, बाहन अश्व समेत ।
एकबार हम शस्त्र बिन, कहो भूप को लेत ॥

होत प्रथम छोटे को ऊरा ❋ पाछे लेइ जेठ को पूरा
यह कहि बिहँसे शारँगपानी ❋ मुख देखत माया लपटानी
ज्ञानभङ्ग दुर्योधन भयऊ ❋ हरिमुखनिरखिबचनयहकह्यऊ
हे हरि नटवर बेष तुम्हारा ❋ नाचत गावत लै परदारा
गजपुर सजि आये सब राजा ❋ तिनमहँ कौन तुम्हारो काजा
तातें हरि सेना हम लीन्हेउ ❋ तुमकहँ हम अर्जुनको दीन्हेउ

दो० कह्यो किरीटी बिहँसि तब, सुनिये यादवराइ ।
आपु हमारे पग धरिय, दल कोऊ लैजाइ ॥

सुनि हरिगण गोपाल बोलाये ❋ मणिमयकुण्डल मुकुट सोहाये
मणिमय भूषण हार बिराजत ❋ जटितबसन तन शोभाछाजत
मणिमय कवच बड़े धनुधारी ❋ शोभित मनहुँ बरात सुधारी
कञ्चन मणिमय स्यन्दन भारी ❋ गजमुक्ता झालरि छबिभारी
सो दल दुर्योधन कहँ दीन्हा ❋ करिसनमान बिदा प्रभु कीन्हा
भयो प्रसन्न हिये महिपाला ❋ चलेउ संग लै गणगोपाला
गयो बहोरि जहां बलदेवा ❋ चरण परसि बिनयी बहुसेवा
अर्जुन साथ जात यदुनाथा ❋ चलहु संग म्वहिं करहु सनाथा
उन पाण्डवको कीन्ह सहारा ❋ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा

दो० भये युधिष्ठिर ओर हरि, सो जानत सब भेव ।

मनसा वाचा कर्मणा, मैं तुम्हार बलदेव ॥

असकहि परेउ चरण कुरुनायक ❀ नाथ कृपाकरि होहु सहायक
राखत सदा भरोस तुम्हारा ❀ तुम बिन कौन मोर रखवारा
हलधर सुनेउ भूपकी बानी ❀ बोले बचन दीनअति जानी
हम इत हरि उत बात न नीकी ❀ सुनहु कहौं तुम्हरे हित हीकी
लेहु सेन सँग मन्त्र हमारा ❀ होइ सोइ जो लिख करतारा
असकहि लक्ष दीन सँग योधा ❀ विदा कीन्ह बहुभांति प्रबोधा
दुर्योधन लै संग सिधाये ❀ कृतबर्मा के मन्दिर आये
देखत कृत नृप आसन दीन्हा ❀ बहुप्रकार ते आदर कीन्हा

दो० बैठारे आसन बिमल, करि बहुबिधि सतकार ।
कुशलप्रश्न पूछत नृपहि, अतिहित बारहिंबार ॥

अहो भूप कछु आज्ञा दीजै ❀ करि अनुकम्प काज सोइ कीजै
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा ❀ तुव आगम मैं भयों सनाथा
सुनि दुर्योधन बचन सुनाये ❀ सुनहु भूप जेहि कारण आये
सो जानी सब बात तुम्हारी ❀ पाण्डव हमैं बैर है भारी
उनके साथ आपु बनवारी ❀ तुम नृप करहु सहाय हमारी
सो सुनि कृतबर्मा तब बोले ❀ धीर बीर अरु समर अडोले
भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा ❀ यह प्रण मैं निश्चयकरि कीन्हा
यह सुनिकै सेना हँकराई ❀ भयउ अरूढ़ निशान बजाई
लीन्हे साथ चमू चतुरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक नृप सङ्गा
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा ❀ करवायो तेहि शिबिर नरेशा
सेन बिचित्र देखि सुख माना ❀ जीते युद्ध शकुनि मन जाना
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे ❀ पुनि पुनि कुरुनन्दनपद बन्दे
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई ❀ बहु अनन्द नाहिं हृदय समाई
यहां कृष्ण अर्जुन सँग लीन्हें ❀ अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हें
रुक्मिणि सतभामादिक नारी ❀ आईं सुनि अर्जुन कहँ भारी
बैठे पार्थ सहित बनवारी ❀ सतभामा तब चरण पखारी

जाम्बवती जल भाजन लाई ❀ पानदान लक्ष्मणा लै आई
रुक्मिणि अतरदान कर लीन्हें ❀ सतभामा भोजनहित कीन्हें
यहि प्रकार आठौ पटरानी ❀ अतिहितकरतकृष्णप्रियजानी

दो० हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मिणी पान ।
सतभामादिक नारि सब, करत बिबिध सन्मान ॥
कुशल प्रश्न पूछी सबन, अति हित बारम्बार ।
हैं अभिमनु नीके तहां, सबके प्राण अधार ॥

सो सुधि पाइ देवकी आई ❀ देखि युगलतन आनँद छाई
हरि अर्जुन उठि कीन्ह प्रणामा ❀ दीन्ह अशीश होइ मनकामा
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई ❀ बोली बचन नयन जल छाई
तुम बिन रहेउ हिये अति शोका ❀ तेरह बर्ष बादि अवलोका
सुनहु कृष्ण जो मन्त्र हमारा ❀ प्राणहु ते मोहिं अधिकपियारा
तुमहिं त्यागि कहिं और न जाना ❀ रक्षा तुम कीजै भगवाना
कहि अस बचन देवकी रानी ❀ अर्जुन कहँ सौंप्यो गहिपानी
हरि उठि अर्जुन बार न लाये ❀ बसुदेवहिके मँदिर चलि आये

दो० करि प्रणाम अर्जुन सहित, कहेउ कृष्ण सबभेव ।
दै अशीश आनन्द सों, बिदा किये बसुदेव ॥

निकरि पवँरि ते बाहर आयो ❀ तब श्रीहरि सात्यकी बुलायो
होहु तयार सेन सजि भाई ❀ हेरत बाट युधिष्ठिर राई
सुनि सात्यकि निजसेन हँकारी ❀ आयुध बांधि लीन्ह असवारी
दारुक नाम सारथी साजी ❀ स्यन्दनभानुजानु लखि लाजी
सुग्रीवादिक हय मणिआई ❀ भे आरूढ़ हरि शंख बजाई
भुज गहि अर्जुन संग चढ़ाये ❀ पवन बेग रथ हांकि चलाये
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❀ उठी धूरि छपि गयउ पतङ्गा
पारथ पूछत बिबिध कहानी ❀ कहत जात मग शारँगपानी

दो० पारथ पूछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान ।

शत्रुविजयअरुमोरहित, सबलसिंह चौहान ॥

इति उद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृतेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कहेउ कृष्ण अब सुनु मत मोरा ❀ यामों है अर्जुन हित तोरा
होइहै सकलशत्रु की नासा ❀ मिलिहिराज्यतोहिंविनहिंप्रयासा
जाके अंश मोर अवतारा ❀ पालत सृजत हरत संसारा
सुमिरण करत शक्ति तुम सोई ❀ पूरण सकल मनोरथ होई
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा ❀ जेहि प्रसाद सुरनाथ कहावा
विधि कर्ता अरु हर संहर्ता ❀ जासु प्रसाद विष्णु जगभर्ता
पारथ करत तासु को ध्याना ❀ सब प्रकार होइहि कल्याना
सो जानहु सब मोर स्वरूपा ❀ प्रकृति पुरुष है एकस्वरूपा
करहिं भेद जे नर अज्ञाना ❀ परहिं नरक पावहिं दुख नाना

दो० भयउ बोध अर्जुन कहेउ, कहिये श्रीभगवान ।
जेहि प्रकार ते कीजिये,परमशक्तिको ध्यान ॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना ❀ लागे कहन शक्ति को ध्याना
दिशा बसन अरु शक्तिकराला ❀ पहिरे उर मुण्डन के माला
अङ्ग अङ्ग अहिभूषण नाना ❀ शिवारूढ़ अरु बसत मशाना
मुक्तकेश अरु बदन पसारे ❀ जिह्वाललन दशन भयकारे
निकसत अरुणनयन त्रैज्वाला ❀ अष्टबाहु तन श्याम तमाला
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा ❀ शिवानाद पूरित चहुँ ओरा
मुण्ड एक कर एक कृपाना ❀ यक कर अभय एक कर दाना
एक पाणि मदिरा कर भाजन ❀ एक पाणि शृंगीहितु बाजन

दो० एक हाथ में खड्ग धर, यक शूली कर धा
उठत प्रभा नभ तेजकी, रवि शत कोटि अपार

यहि प्रकार हरि भेद बतायो ❀ अर्जुन नयन मूँदि तब ध्यायो
कीन्ह ध्यान क्षण एक बहोरी ❀ अस्तुति करत दोउ कर जोरी
जयगिरिजा जयप्रणतपालिका ❀ असुरराज मृगयुद्धजालिका
महिषमर्दिनी मातु कालिका ❀ नितभक्तनकी विपतिघालिका

जय जय जय महिपासुरमर्दिनि ❀ अजा कुजा जय मातु कपर्दिनि
शिवा शम्भुघरणी शिवदूती ❀ जेहि सुमिरे जग सकल बिभूती
चण्डमुण्डदलनी अरु चण्डी ❀ ललितालालित रूपखलखण्डी
धूमावती सती तुव सीता ❀ होहिं काम सब अरिगण जीता
रिपुखण्डन तुव नाम पुनीता ❀ शीशहि जटा कण्ठ शुभगीता
तारा तरणि तारनी गङ्गा ❀ त्रैपुर की त्रैताप बिभङ्गा
कुला कुरू कुरु कुल महरानी ❀ गिरा हरा जय जय श्रीवानी

दो० छिन्ना तू बगलामुखी, बाराही जगमाय ।
चरणशरण जगदम्बिका, कीजै बेगि सहाय ॥
करौ राज्य राज्येश्वरी, मातङ्गी दुखहानि ।
दण्ड दै दुष्ट निपातिकै, राखिलेहु जन जानि ॥

सांची दुखदलनी जय बाला ❀ करहु कृपा अब होहु दयाला
प्रकट्यो एक गगनथल ज्वाला ❀ अस्तुति करैं देव दिगपाला
व्योम गिरा यह भयो महाना ❀ मांगु मांगु अर्जुन बरदाना
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई ❀ बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई
शत्रु बिजय अरु नृप कल्याना ❀ मांगत मान देहु बरदाना
ह्वै प्रसन्न सुनि अर्जुन बानी ❀ एवमस्तु कहि गई भवानी
तब दारुक हय हांकि चलायो ❀ चले मरुत गति बार न लायो
सात्यकि चले कृष्ण रथ सङ्गा ❀ लीन्हे साथ चमू चतुरङ्गा
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा ❀ किये शिबिर तब सकल महीपा
जहँजहँ कोटिन ताननिबिताना ❀ जहँ तहँ बाजैं नौबतिखाना
गर्जत गज हिंसत बहु घोरा ❀ हाहाकार शब्द चहुँ ओरा
पुर बिराट दल जुरेउ अपारा ❀ नहिं कोउ काहू जाननहारा
होत नाद घरियार घनेरा ❀ धुवां देखि परखिय नृप डेरा

दो० अन्ध धुन्ध दल नृपनके, परत न कतहूं जानि ।
रङ्ग रङ्ग झण्डा गड़े, भूपन की पहिंचानि ॥

तब दारुक हरि रथहि चलावा ❀ पँवरि अजातशत्रु की लावा

द्वारपाल तब जाइ जनाये ॐ महाराज हरि अर्जुन आये
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों ॐ बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ॐ रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा
अर्जुन मिलेउ चरण गहि धाई ॐ दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई
कृष्णसमेत सभा पुनि आई ॐ बैठे अति प्रसन्न सुख पाई
प्रभु कहँ सिंहासन बैठारा ॐ बहुविधि नृप कीन्हे सतकारा
चरण धोइ चरणोदक लीन्हा ॐ पावन भवन सींचि जल कीन्हा
तेहि अवसर भीमादिक आई ॐ परसे चरण कृष्ण के आई

दो० प्रीति सहित यदुवंशमणि, भेंटे हृदय लगाय ।
बैठारे सनमान करि, हर्षसहित सुख पाय ॥

दुइ कर जोरि कृष्ण के आगे ॐ विनती करन धर्मसुत लागे
हे प्रभु तुव करतूति महाना ॐ थके चारि श्रुति अन्त न जाना
महिमा अमित वेद जो गावत ॐ नेतिनेति कहि नेति सुनावत
सहस वदन सो शेष बखानत ॐ पुनि सोउ कहतपार नहिं जानत
शारद सनकादिक सुर नाना ॐ विधि नारद केहुँ पार न जाना
शिव सामर्थ्य जानि सब पावा ॐ बहुप्रकार कहि नेति सुनावा
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना ॐ जनहित सगुण होत भगवाना
मत्स्यरूप धरि वेद उधार्यो ॐ हे प्रभु तुम शङ्खासुर मार्यो

दो० हाटकदृग धरणी हरी, सो लै गयो पताल ।
कीन्ह विनय सुर द्योसनिशि, भयो प्रकट ततकाल ॥

धरि बराह बपु श्रीभगवाना ॐ पैठि सिन्धुमहँ धरे बिषाना
अधम कनकलोचन तुम मारा ॐ कीन्हेउ बहुरि धरणिबिस्तारा
व्याकुलजन प्रहलादहि जानी ॐ होइ नरहरि मार्यो अभिमानी
हरणाकुश निज लोक पठावा ॐ हरी बिपति हरिदास बचावा
कमठरूप धरि मन्दर लीन्हों ॐ मथ्यो पयोधि सुरन सुखदीन्हों
मधु दै नाथ असुर बौरायो ॐ किये असुर सुर सुधा पिआयो
है वामन अमरेश बचायो ॐ बलिछलि बाँधि पताल पठायो

पुनि प्रभु परशुराम वपु धारेउ ❀ अधम नरेश नाश करि डारेउ
सकल भूमिको भार उतारा ❀ कीन्हो बहुरि धर्म विस्तारा

दो० देखि देखि महिदेव दुख, धरणि बिलोकि अनाथ।
कीन्ह दया प्रभु अवधपुर, प्रगट भये रघुनाथ ॥

रावण कुम्भकरण खल मारा ❀ करि सनाथ महिभार उतारा
कृष्णरूप अब मम हित कारण ❀ कीन्हेउ नाथ धरणिपर धारण
जय मधुमुरअघनरकविनाशन ❀ चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन
केशी कंस हने चाणूरा ❀ मुष्टिक असुर शकट अघकूरा
जय बृन्दावन विपिन विहारी ❀ महिमा अगम अपार तुम्हारी
होतहि प्रकट पूतना मारी ❀ हरी ताप यशुदा की भारी
तृणावर्त बौंडर है आवा ❀ कण्ठ चापि प्रभु मारि गिरावा
मारेउ अधम भूप शिशुपाला ❀ काटेउ सकल भूमि को शाला
बिप्र सुदामा दारिद नाशा ❀ पूजी सबप्रकार प्रभु आशा
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े ❀ करि सहाय संकट ते काढ़े
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा ❀ आवत नाथ न लागी बारा
ग्राह मारि निज धाम पठावा ❀ मिटीबिपतिगजविनयसुनावा
परी बिपति प्रहलाद पुकारा ❀ पवि ते प्रकट न लागी बारा
असुर मारि पठयो निज लोका ❀ निजसेवककहँ कीन बिशोका
दशमुख हति बैकुण्ठ पठायो ❀ भयबिशोक सुरमुनिसुखपायो
तैसेहि कृपादृष्टि अवलोकी ❀ हरहुबिपतिम्वहिंकरहुबिशोकी

दो० अस कहि भूपति पद गहे, पाहि पाहि यादौन।
काटहु संकट बिकट अब, ह्वै दयाल दुखदौन ॥
ह्वै प्रसन्न यदुबंशमणि, तब बोले हरषाय।
गई बिपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय ॥
शरणागतपालक बिरद, बिदितभार संसार।
ताते अब तन मन बचन, करब सहाय तुम्हार ॥

इति उद्योगपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचितेनवमोऽध्यायः ॥९॥

अस नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ हरि सुधि पाइ द्रौपदी आई
परशे चरण प्रेमयुत आनी ❀ नयननीर मुख कढ़त न बानी
हरिहि देखिकै रोवन लागी ❀ बिह्वल बचन शोक ते पागी
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई ❀ द्वारावती गये यदुराई
तब जो भई अवस्था मेरी ❀ सो अब सुनहु जानि निज चेरी
बिभव देखि कुरुपतिहि न भावा ❀ होइ उदास निज मन्दिर आवा
शकुनी करण दुशासन आये ❀ बैठि सबन मिलि मन्त्र दृढ़ाये
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा ❀ लीजै राज्य पाण्डवन केरा
करि मत बुद्धिचक्षु यह आई ❀ सकल कथा तिन कहि समुझाई

दो० बिन समझे अज्ञानते, तुम मानत मन रोष ।
अवसुत करहु बिरोध जनि, उनकर कछु नहिं दोष ॥

उनते युद्ध न तुम बरिऐहौ ❀ बिना काज कत बैर बढ़ैहौ
कह्यो भूप तुम कहत बिलोकी ❀ हमरे मते मन्त्र नहिं नीकी
उनकहँ दीन बिभव करतारा ❀ तुमहिं उचित नहिं करब बिगारा
बोले शकुनि तेज छलकारी ❀ सुनहु भूप यह बात हमारी
युद्ध करहु जनि नृप अज्ञानी ❀ हारि जीति कछु परत न जानी
मोहिं अक्ष विद्या निपुणाई ❀ लेइय जीति खेलि प्रभुताई
जीते ख्याल बिरोध न होई ❀ काढ़िय द्रव्य हीन करि सोई
सुनि मत धृतराष्ट्रक मनभायो ❀ द्यूत हेत उन नृपति बोलायो
गये नरेश सहित परिवारा ❀ सभय द्यूत को बर्णै पारा
धरत दांव शकुनी यह भाखै ❀ जीतौ जीति लेउ नृप राखै
जीतौं राज्य पाट भंडारा ❀ हय गज रथ समेत परिवारा
नहिं कछु भूपति धर्म बिचारौ ❀ चारिउ बन्धु अपनपौ हारौ
कह्यो शकुनि अब जो कछु होई ❀ धरहु भूप हम जीतैं सोई
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी ❀ जीतब तेह कही यह बानी
यह कहि शकुनी पांसा डारे ❀ जीतेउ कुरू धर्मसुत हारे

दो० भये दुखित भीषम बिदुर, द्रोण रहे शिरनाय ।

गये सभाते उठि तुरत, बाह्लीक अकुलाय ॥

शकुनी कर्ण बहुत हरषाना ❀ अतिशय सुख दुर्योधन माना
कहेउ भ्रात कामी ते बोली ❀ मैं जीती नृपनारि अमोली
द्रुपदसुता पाण्डव की रानी ❀ ताकहँ मोहिं मिलावहु आनी
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी ❀ अब तुम दासी भइउ हमारी
मैं अभिमतरूपहि पर तोरे ❀ बैठहु आनि जङ्घ पर मोरे
सकल नरेश आनि त्यहि कहेऊ ❀ पाण्डवनाथ क्रोध उर दहेऊ
रिस करि कहेउ धीर धरि गाढ़ा ❀ ये रे अधम दूरि रहु ठाढ़ा
हम कौरवपति के रिपु तोहू ❀ नीच सँभारि न बोलत तोहूं
तू शठ मोर प्रभाव न जाना ❀ बोलत बचन सहित अभिमाना
यह सुनि भानमती रिसवाई ❀ जानत नीच मृत्यु तव आई
सुनि अस बचन बहुत भय पावा ❀ सूत बहुरि कुरुपतिपहँ आवा
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी ❀ नहिं आवत कौरवपतिरानी

दो० दुश्शासन ते बोलिकै, कहेउ भूप रिसवाय ।
गहिकै केश घसीटिकै, तुम लै आवहु जाय ॥

यहिकी बात सकल मैं जानी ❀ लावा सो न भीम भय मानी
सुनत बचन दुश्शासन आवा ❀ चलहु बेगि तोहिं भूप बोलावा
यहिबिधि बचन दुशासनकीन्हा ❀ सुनु यदुनाथ उतरु हम दीन्हा
पूछति सत्य दुशासन चोंको ❀ हारे प्रथम भूप की मोंको
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा ❀ भये दास नहिं नात हमारा
हारो होय प्रथम मोहिं राजा ❀ दासी होत न मोको लाजा
सुनत दुशासन अतिरिसमानी ❀ गहिकै केश सभामहँ आनी
तब यदुनाथ मोहिं रिस लागी ❀ कहेउ छोड़ मम केश अभागी
रजस्वला मैं यक पट धारी ❀ मुञ्च मुञ्च रे शठ अपकारी

दो० सभामध्य बैठे सबै, कौरव कुल सरदार ।
लिये जात मोकहँ निलज, करत अधम अपकार ॥

कस रिस करत पतिन तोरिहारी ❀ अब तुम दासी भई हमारी

बैरिन केरि कवन बड़ि लाजा ❀ चलु बोलत दुर्योधन राजा
मम गति देखि सकल रनिवासू ❀ करत बिलाप ढरत दृग आंसू
सो सुधि गन्धारी सुनि पाई ❀ करि बिलाप पाछे उठि धाई
छूटे बार न चीर सँभारा ❀ हा पुत्री कहि करत पुकारा
जबलग काढ़ि भवनते रानी ❀ तबलग नीच सभामहँ आनी
भीषम बिदुर नाइ शिर लीन्हा ❀ कृपअरुद्रोण शोच जियकीन्हा
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा ❀ दुर्योधन यहि भांति सुनावा

दो० दुश्शासन ते तब कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय ।
बस्त्रहीन करि जङ्घ पर, बैठारो त्रिय आय ॥

सुनियहबचनशकुनिहँसिदीन्हा ❀ बिकरणदेखिक्रोधजियकीन्हा
उचित न तोहिं कौरवकुलराजा ❀कहत बिलोकिबचनतजिलाजा
जेठ बन्धु त्रिय मातु समाना ❀ बरणत आगम निगम पुराना
नाथ मानि अब बिनय हमारी ❀ छांड़ि देहु अब द्रुपदकुमारी
तुव कीरति जग पूर्ण मयङ्का ❀ जनि लावहु नृपकुलहि कलङ्का
जब बिकर्ण यहि भांति बखाना ❀ सुनत बचन तब कर्ण रिसाना
अबहिं न बैस तोरि मतलायक ❀ जाहुभवन खेलहु धनुशायक
सुनि यह बचन मवन ह्वै रहेऊ ❀ दुश्शासन ते तब नृप कहेऊ

दो० नग्निनिकरौतुमद्रौपदी, निजकर बसन उतारि ।
बैठारौ लै जंघ पर, यह रुचि बन्धुहमारि ॥

भीषम द्रोण रहे चुप साधी ❀ पकरेसि बसन अधम अपराधी
लागेउ खेंचन चीर अभागी ❀ भई बिकल मैं रोवन लागी
मम गति देखि पतिन दुख पावा ❀ अश्रुपात करि महि शिरनावा
टूटी आशा भयउ दुखभारी ❀ दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी
हा यादवपति हा दामोदर ❀ हे माधव हे हलधर सोदर
हे गोविन्द गिरिधर बनवारी ❀ कृष्ण कृष्ण कहि शरण पुकारी
हे मुरलीधर राधानायक ❀ बासुदेव अब होहु सहायक
खैंचत बसन कुमारगगामी ❀ राखहु लाज दया करि स्वामी

नाथ वमन महँ आपु समाने ॥ रही लाज कौरव खिसियाने
खैंचत वस्त्र दुशासन हारा ॥ अम्बर के लागे अम्बारा
यह चरित्र देखा सबकाहू ॥ हाली धरा भयो दिग्दाहू
बिन घन आसमान घहराना ॥ कौरवसभा सबहि भयमाना
भूप यज्ञशाला महँ आई ॥ शिवा शब्द कीन्हो अधिकाई
बोलत रासभ स्वान कुमारा ॥ गगन दुष्ट पक्षी गण सारा
खैंचत थकेउ दुशासन बासन ॥ बसनछोड़िबैठ्यो निज आसन
शीश नाय नृप बैठ उदासा ॥ छकितभये सब देखि तमासा

दो० अम्बरहीन बिलोकि नृप, बोलिसकेउ नहिं बयन ।
रक्षा कीन्ही करि कृपा, तुव प्रभु पङ्कजनयन ॥
तजी लाज अर्जुन नकुल, धर्मराज भय मानि ।
सहादेव बोले कछुक, भीमसेन बल खानि ॥

कहत द्रौपदी करि करि रोसा ॥ मोहिं न कुन्तिहि सुतन भरोसा
इन पतितन कछु पति न हमारी ॥ तुम रक्षा कीन्ही बनवारी
पूछेउ धृतराष्ट्रक संजय सों ॥ होत कहा कहिये सो मोसों
आक्षिहीन कछु परत न जानी ॥ सुनि संजय कछु कथा बखानी
दुश्शासनहिं दीन्ह दुरिआई ॥ करिप्रबोध म्वहिं निकट बोलाई
कीन्ह कुचि मैं नाहिं कछु जाना ॥ मांगु मांगु पुत्री बरदाना
बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा ॥ बार बार पुत्रन धिकारा
तेहि अवसर गन्धारी आई ॥ देखि अनीति सुतन रिसवाई
कहेउ बिलोक कर्म भ्रम त्यागी ॥ परिहौ नरक असाधु अभागी

दो० धृतराष्ट्रक अति प्रीति ते, कहेउ मांगु बरदान ।
दासभाव निज पाण्डुसुत, मैं मांगौं भगवान ॥

बाहन अस्त्र पतिन के देहू ॥ बिदाकरिय अब करि नृप नेहू
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं ॥ प्राणसमान सुता तुव मोहीं
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्मा ॥ छांड़िनि लोकलाज कुलधर्मा
धर्मराइ दुर्योधन पोचन ॥ कहत सत्य मोरे द्वै लोचन

यह सकोच जानौ जिय मोरे ❀ प्राणन अतिशय हैं प्रिय मोरे
द्रुपदसुता मम बचन प्रमाना ❀ अब तुम मांगि लेहु वरदाना
अब न मनोरथ पूजा आशा ❀ यहि अन्तर पुनि बचन प्रकाशा
अभिमत मिलौ कृपा भय तोरे ❀ तव प्रसाद होइहि सब मोरे
क्षत्री लेइ तीन वरदाना ❀ विप्र चारि मांगै नहिं आना
दुइ वैश्यस्य शूद्र कहिं एका ❀ मांगै और होइ अविवेका

दो० वाहन अस्त्र देवाइकै, विदाकीन्ह महिपाल।
परसिचरणनिजचढ़िरथन, चलेभवनतेहिकाल॥

सौबल नाम शकुनि को भाई ❀ मिल्यो पन्थ महँ गयउलेवाई
प्रीति समेत सभा बैठायहु ❀ बहुरि सार पांसा मँगवायहु
वरजत रहेउ सकल परिवारा ❀ मिटै न जो प्रभु होनेहारा
लीन्हो अक्ष वदी यह बाजू ❀ द्वादश वर्ष तजै सो राजू
विपिन वास करि वर्ष बिताई ❀ करै न अन्न अशन फलखाई
वर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता ❀ करै निवास जानि नहिं जाता
लीन्हे खोज बहुरि बन जावै ❀ काल बिताइ राज पुनि पावै
रहेउ न कछुक भूप हरि ज्ञाना ❀ धरो दांव कहि बचन प्रमाना
लीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी ❀ दीन्हों डारि गये नृप हारी

दो० होइ उदास भूपाल तब, बन कहँ कीन्ह पयान ।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोधकरि, भीमसेन बलवान ॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी ❀ आई मीचु दुशासन तोरी
जेहि कर केश गहे अभिमानी ❀ गहे वसन नँगिआवन रानी
सभा मांझ खल कानि न मानी ❀ सो उखारि डारों तुव पानी
बहुरि जङ्घ ठोंकी कुरुनाथा ❀ तोरों जङ्घ गदा गहि हाथा
सुनहु सकल निजकाल बिताई ❀ कृष्ण शपथ करिहौं सब आई
सत्य बचन हरि सत्य हमारा ❀ करिहौं सब कौरव संहारा
अर्जुन कही कर्ण के आगे ❀ हँस्यो मोहिं सबते भ्रम त्यागे
शरन मारि जरजर तन तोरा ❀ करिहौं कृष्ण सत्य प्रण मोरा

सहदेवहु शकुनी तब बोले ❀ विषधर मनहुँ विषै रस खोले
दो० द्यूत हराये नीच तोहिं, करि छलको अधिकार ।
होइहि मोरे करनते, शकुनी मरण तुम्हार ॥
बधौं तोहिं नहिं अवधि बिताई ❀ मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई
येही भांति नकुल बनवारी ❀ सभा मध्य कीन्हों प्रणभारी
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे ❀ कह्यो शल्य ते राजा तैसे
हँसेउ मोहिं कछु कानि न मानी ❀ करि बहुबार कितवअभिमानी
बीते काल न तोकहँ मारौं ❀ तौ नहिं धनुष बाण कर धारौं
मोरे उर उपजा अति रोसा ❀ प्रण कीन्हों कहि नाथ भरोसा
करि अस्नान रुधिर तुव धारा ❀ बांधौं तब दुश्शासन बारा
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई ❀ उचित होइ तस करिय उपाई
पुनि हम पञ्च पाण्डुसुत रानी ❀ श्रीमुख भगिनी कहत बखानी
तेइ तुम साक्षात भगवाना ❀ पाण्डव हैं अतिशय बलवाना
तिनहिं अछत यह हाल हमारा ❀ यथा अनाथ नाथ बिन दारा
तेरह वर्ष न बांधे केशा ❀ फिरत अजहुँ बिधवाके भेशा
दो० सुन्यो द्रौपदी के बचन, लोचन मोचत बारि ।
कह्यो प्रतिज्ञा कीन्ह सो, होइहि सत्य तुम्हारि ॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिबश्य भगवान ।
बैठारो पुनि द्रौपदी, करिबहुबिधिसनमान॥
इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥
पूछेउ सुनि जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र कहौ मुनि गाई
सुनत श्रवण नहिं तृप्त हमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी ❀ लागे कहन कथा मुनि ज्ञानी
तेहि अवसर आये सब राजा ❀ कृष्ण सहित जहँ भूपतिराजा
नाइ नाइ शिर हरिहि जोहारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ सुतन सहित हरिपद शिरनाये

देखि नृपहि वसुदेव कुमारा ॐ मिले बहुरि आसन बैठारा
परसे चरण विराट भुवाला ॐ सनमाने तब दीनदयाला
कह्यो भूप सुनिये यदुराई ॐ अब करिये प्रभु कौन उपाई
हे हरि यतन बतावहु सोई ॐ जामहँ मोहिं परम हित होई
मोसम को जग और अभागी ॐ अति दुखसह्यो बन्धु जेहिलागी
मोसम दुखी सुनहु भगवाना ॐ भयो न भूपर भूपति आना
जान्यो कृष्ण भूप दुख पावा ॐ कहि सुरराज कथा समुझावा

दो० वृत्रासुर को बधन करि, भये मुदित सुरराज ।
घेर्यो हत्या आनि तन, छूट्यो [illegible] ॥

विप्र वंश ताको अवतारा ॐ सुनत कथा दुख मिटा अपारा
भाग्यो अमरनाथ दुख पाई ॐ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला ॐ लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला
सेवहिं सब सुर सहित समाजा ॐ सिंहासन बैठे नहुराजा
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा ॐ सेवहिं मनुज देव मुनि सर्वा
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं ॐ करैं गान अरु नृत्य दिखावैं
आवैं सुरतिय करि शृङ्गारा ॐ रमित रहैं नृप करत बिहारा

दो० यहिविधि राजसमाजते, बीति गये कछुकाल ।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल ॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी ॐ गुरु गृह गई भागि इन्द्रानी
मार्ग जीव यह बिपति सुनाई ॐ मैं प्रभु चरणशरण अब आई
बहुप्रकार मुनि धीरज दीन्हा ॐ कीन्ही कृपा अभय पुनि कीन्हा
तब सुरगण सब सकल बोलाये ॐ बांटिलेहु अघ कहि समुझाये
मनपर छिटिकि जाइ सब पापू ॐ मिटै सुरेश केर परितापू
कीन्ही सब मिलि अङ्गीकारा ॐ सब पर गयो पाप को भारा
ऊसर भयो धरा जो लयऊ ॐ प्रथम ज्वाल हुतभुक महँ भयऊ
लीन्ह्यो वरुण भई जल काई ॐ यहिप्रकार सब सुरसमुदाई

दो० भयो पाप बिन पाकरी, पूरि रह्यो सुख भूरि ।

पठये ढूँढ़न पायकहि, गयो बिलोकत दूरि ॥

पायक ढूँढ़ि फिरे सब देशा ❀ मिले इन्द्र नहिं भयो अँदेशा
सर्वकथा सुरगुरुहि सुनाई ❀ मिलैं कतहुँ तब शची पठाई
ढूँढ़त फिरत बिकल इन्द्रानी ❀ मगमहँ मिले देवऋषि ज्ञानी
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई ❀ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई
इन्द्र भाग गिरिपर भय माने ❀ मानसरोवर इन्द्र छिपाने
सुनि नारद के बचन प्रमाना ❀ गई शची तहँ रोदन ठाना
कीन्ह बिलाप ताप तन भारी ❀ बार बार कहि नाम पुकारी
सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई ❀ निकरि कमलते दीन देखाई
तुमपर गुरु कीन्हो अनुरागा ❀ दीन्ह शाप करि सुरन बिभागा
रह्यो न तव शिर अघलवलेशा ❀ बोले सुरगुरु चलिय सुरेशा

दो० मोकहँ पठयो देवगुरु, लावहु बेगि बोलाइ ।
बचनमानिसुरगुरुबचन, गये इन्द्र हरषाइ ॥

गुरुहि प्रणाम कीन्ह सुरराई ❀ भे प्रसन्न मन आशिष पाई
बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा ❀ मिलै राज तब मिटै अँदेशा
मिलि राजा कहि गुरु सनमाने ❀ दिवस पञ्चदश रहे छिपाने
धर्महीन करि नहुषहि राजा ❀ तब पावहु तुम राज समाजा
यहि प्रकार सुरपति समुझाये ❀ करि प्रबोध निजभवन छिपाये
कह्यो कृष्ण अब सुनहु भुवाला ❀ भयो कामबश नहुमहिपाला
पठये दूत बोलावहु जाई ❀ बड़ अभिमान शची नहिं आई
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी ❀ सुनत उतर दीन्हो इन्द्रानी

दो० जब चाहत सुरराज मोहिं, बाहन चढ़तनवीन ।
जाइ लवाइ सो मान्ते, होइ मोर आधीन ॥

तेहि गद्दी नहु आइ बिराजा ❀ जाइ लवाइ जहां सुरराजा
दूत जाय यह बचन उचारा ❀ नहु नरेश मन करत बिचारा
कहि नवीनचढ़ियान सिधावहु ❀ शची बोलाइ भवनकहँ लावहु
तब देवन शारदा बोलाई ❀ बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई

शिविका पकरि विप्रगण लाये ❀ ह्वै आरूढ़ तब भूप सिधाये
द्विजन शाप दीन्हो करि शोका ❀ परइधरणिखलतजि सुरलोका
पुण्यक्षीण होइ नहुमहिपाला ❀ पस्यो धरापर सो ततकाला
अमरनाथ निज पायउ राजा ❀ भय उबरिस सब साजसमाजा
तैसे तुम पैहौ महिपाला ❀ धरहु धीर बीते कछु काला
दो० सबलसिंह धीरजदियो, करि प्रबोध महिपाल ।
लीन्हे बोलि नरेश तब, मन्त्र हेतु त्यहिकाल ॥
इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥
कहेउ भूप अब सकल नरेशा ❀ निजनिजमत कीजिय उपदेशा
नृपबिराट कह यह मत मोरा ❀ जबलग जिये शत्रु जग तोरा
मिलिहि राज्य नहिं कोटि उपाई ❀ करिय भूप जस तुमहिं सोहाई
सुनत वचन कह द्रुपद कुमारा ❀ सुनहु सकल मिलि मन्त्र हमारा
पहुँचत दूत तुरत अब कोई ❀ समुझावै कुरुपति नृप सोई
सुनत वचन हरि के मन भावा ❀ द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई ❀ नानाभांति कहेउ समुझाई
करि उपाय कीजै बुधि सोई ❀ जामहँ विप्र भूप हित होई
पृथक् पृथक् कहि सबन सँदेशा ❀ बिदाकीन्ह करि हरि उपदेशा
दो० अतिप्रसन्नद्विजराजमन, ह्वै शिविका असवार ।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी बार ॥
पहुँचे विप्र भूप के द्वारे ❀ बोले वचन बोलि प्रतिहारे
धर्मराज हरि मोहिं पठायो ❀ कहन सँदेश भूप ते आयो
वेतपाणि सुनि जाइ जनावा ❀ बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा
गयो सभा महँ द्रुपद पुरोधा ❀ त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ❀ बैठारो निज बोलि समीपा
आशिर्वाद विप्र तब दीन्हा ❀ नृपसनमानबिविधबिधिकीन्हा
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा ❀ भीषम बाहुलीक महराजा

कृपरु शल्य जयदर्थ महीपा ❀ बैठे जहँ कौरवकुलदीपा
धृतराष्ट्रक नन्दन सौ भाई ❀ बैठे सभा सुवेष बनाई
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना ❀ द्रोणपुत्र गुण ज्ञान निधाना
दो० भूरिश्रवा कलिङ्ग अरु, मकरध्वजौ महान ।
बैठिसो बालकुमार तहँ, अरु उलूक बलवान ॥
विप्र सुनाइ कहा सब आगे ❀ कहन सँदेश भूपते लागे
मोहिं पठायो धर्मनरेशा ❀ चितदै सुनहु महीप सँदेशा
निकट बोलाइ धर्मसुत हमको ❀ प्रथम कहेउ अभिवादन तुमको
कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै ❀ बीती अवधि राज्य अब दीजै
किङ्कर जानि करिय अब दाया ❀ हम तुम्हरे छांड़ी मति माया
तेरह बर्ष सहे दुख नाना ❀ सो हरि किहेउ बिपतिअवसाना
दुर्योधन कीन्ही अनरीती ❀ तुम्हरी कृपा बिपति अब बीती
मिटै कलह सो करिय उपाई ❀ तेहि विधि कही युधिष्ठिरराई
चलतीबार पार्थ मोहिं जाना ❀ कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना
दो० मोते कहेउ सँदेश जो, सो सुनिये दै कान ।
मेटो कुलको कलह अब, तुम्हरे सब बुधिमान ॥
कह्यो भीम मोहिं चलतीबारा ❀ कहौं जो आयसु होइ तुम्हारा
कही बात जो राखौं गोई ❀ ताते पाप अधिकई होई
कहे न होइ दूत शिर दोषा ❀ ताते सुनिय भूप तजि रोषा
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा ❀ करि छल तुम दारुणदुख दीन्हा
बीते कछु दिन तुम फल पैहौ ❀ समुझत अब नाहिं मन पछितैहौ
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं ❀ सौ बान्धव दुर्योधन मारिहौं
कटैं बन्धु जब विधवा भेशा ❀ तब करिहौ चित चेत नरेशा
करहुँ निपात सेन तुव काटी ❀ देहुँ मिलाइ मांस अरु माटी
रक्त नदी तब बहहिं महाना ❀ करणआदि कटिहैं भटनाना
उठै कबन्ध गिद्ध पल खैहैं ❀ तब नरेश आधो हम पैहैं
दो० अबते चेतहु भूप तुम, सुनिकै बचन हमार ।

समुझावै दुर्योधनहि, वचन सबै परिवार ॥
नकुल सँदेश सुनहु दै काना ❋ बुद्धिचक्षु तुम अतिअज्ञाना
अंश हमार समुझि नृप दीजे ❋ अपने जियत कलङ्क न लीजे
जो न देउ नृप अंश हमारा ❋ होइहि युद्ध न लागी वारा
चलतीवार भूप सहदेवा ❋ करि प्रणाम विनयी बहुसेवा
छांड़ो पिता हमारो मोहा ❋ करि बहु दुर्योधनपर छोहा
अब यह समुझि परी मनमाहीं ❋ उनके दुर्योधन हम नाहीं
मरे बालपन पाण्डु न देखे ❋ तुम पितु हते हमारे लेखे
तुम्हरे ईक्षत हम दुख पावा ❋ करि छल शकुनी देश छुड़ावा
दो० परी बिपति वन वन फिरे, सहे अशेष कलेश ।
समुझावहु दुर्योधनहि, मेटहु सकल नरेश ॥
मोहिं बोलि वसुदेवकुमारा ❋ तुमते कहेउ नरेश जोहारा
जो कछु दीनबन्धु भगवाना ❋ कहेउ सँदेश सुनिय दै काना
तुमते काह कहिय बहुतेरा ❋ दीजे अंश युधिष्ठिर केरा
प्रथमहिं बहुप्रकार समुझावा ❋ दुर्योधन के मनहिं न आवा
मानत सो न बहुत अभिमाना ❋ कालविवश सब ज्ञान भुलाना
तज्यो विवेक पाप प्रिय लागा ❋ उपज्यो हंसवंस जिमि कागा
लीन्हे अयश सकल यश खोई ❋ बांस बंश महँ भयो घमोई
कौरव कुल यश पूर्ण मयङ्का ❋ भा दुर्योधन तिनहिं कलङ्का
दो० समुझावत तुम अनहिं नहिं, सब जानत सज्ञान ।
बहुरि कह्यो संदेश सब, सुनहु भूप दै कान ॥
चलत वार कह द्रुपद सँदेशा ❋ सुनत कृपा करि कहत नरेशा
अपने जियत कलङ्क न लावहु ❋ कलह गोत्र को भूप बचावहु
धृष्टद्युम्न मम सुत अरिखण्डी ❋ अवलगु राखो बाजि शिखण्डी
कीजै संधि मिटै उतपाता ❋ बढ़ै भूप की कीरति दाता
मैं सिख देत जानि समबन्धी ❋ चक्षुहीन कछु बुद्धि न अन्धी
बेगि उपाय करहु नृप सोई ❋ संधि होइ जेहि कलह न होई

दुर्योधन अरु पाण्डुकुमारा ❀ जानहु हेतु समान हमारा
हम चाहत हैं तुम्हरे हित की ❀ करहु बिचार होइ जो नीकी

दो० चलतिबिलोकिबोलाइमोहिं, कह्यो बिराटसँदेश।
सावधान होइ लाइ मन, सोअबसुनहुनरेश॥

दुर्योधन कीन्हो अपकारा ❀ धर्मराज कहँ देश निकारा
तुम्हरे योग न बात अलीका ❀ देखहु समुझि भरतकुलटीका
करहु होइ जो नीक बिचारा ❀ यह नृप कहेउ बिराट भुवारा
बिप्र बचन सुनि भा उरदाहू ❀ बिहँसि बचन बोला नरनाहू
बहुत बिप्र कत बाद बढ़ावहु ❀ पाण्डुसुतनकी कुशल सुनावहु
प्राण समान परमप्रिय जीके ❀ हैं सब भ्रात जान मम नीके
दुर्योधन उनते छल कीन्हा ❀ द्यूत खेलाइ राज्य हरिलीन्हा
करि कुबुद्धि यहि दीन निकारी ❀ बनबासिसहेउबिपतिअतिभारी
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी ❀ देखे रूप न इन्दु तमारी
बन बासि फिरी लाज सब त्यागी ❀ कीन कुमति मम पुत्र अभागी

दो० अबहूं तजत कुचाल नहिं, कालबिबश कुरुनाथ।
आँखिहीन अरु ज्येष्ठतन, मैं तन भयों अनाथ॥

सुनत बिप्र नहिं मोर सिखावन ❀ भयो पुलस्त्यबंश जिमि रावन
जैसे उग्रसेन सुत कंसू ❀ प्रकट्यो कालनेमि कर अंसू
पितहि पकरि कारागृह डारे ❀ तैसे यहु कछु बश न हमारे
जब ते धर्मराज बन गयऊ ❀ तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ
उनके बिरह दिवस अरु राती ❀ तलफत रहत जरत नित छाती
दुर्योधनहि बहुत समुझावत ❀ पै वाके कछु मनहिं न आवत
अब हौं बहुत भांति समुझैहौं ❀ अपने चलत मिलाप करैहौं
अस कहि बुद्धिचक्षु समुझाये ❀ द्विज प्रबोधि अन्तःपुर आये
संजय संग पाणि पकराई ❀ भूप भवन कहँ गयउ लवाई

दो० बैठारे पुनि सेज पर, गन्धारी दै पान।

सबलसिंहचौहानकहि, करत विविध सनमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

भीषम और हरि द्विज रह्यऊ ॥ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कह्यऊ
अब तुमते कछु कह्यउ सँदेशा ॥ सुनहु पितामह तजहु अँदेशा
कुरुनन्दन कीनो अपकारा ॥ सुनि शकुनी सिख देशनिकारा
रहे बिपिन बसि जाय उदासी ॥ तुम्हरी कृपा बिपति सब नासी
मुये पाण्डु हम सबते बालक ॥ तव तुमहीं कीन्हों प्रतिपालक
रहत सदा तुव चख अनुकूले ॥ भलेहि नाथ हमरी सुधिभूले
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी ॥ अनुचर जानि न फेरिय आंखी
सुनत वचन छाये जल कोये ॥ करि सुधि बिकल पितामह रोये

दो० पुलकि गात गदगदगिरा, भरिआये जल नैन ।
हैं नीके सब पाण्डुसुत, तबबोलेउ द्विज बैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा ॥ कुशल अबहिंलग पाण्डुकुमारा
सुनि भीषम यह बचन उचारा ॥ उनहीं कुल राखै करतारा
धर्मराज निज राज्यहि पैहैं ॥ निश्चय सब कौरव मिटिजैहैं
दुर्योधनहि गर्ब अति भारी ॥ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी
सदा विश्वम्भर गर्वप्रहारी ॥ धर्म क्षेमकर श्रीबनवारी
पाण्डव क्षेम मानु विश्वाशू ॥ द्विज जानहु कौरवकुलनाशू
यहि बिधि बचन बिप्रते खोले ॥ गङ्गासुत कुरुपति से बोले
मानि वचन मम कलह बहावहु ॥ करहु संधि सब मिलि सुखपावहु
सुने बचन लागे जिमि शायक ॥ है सक्रोध बोले कुरुनायक
तुमहिं न उचित पितामह ऐसी ॥ कही सभा सत बात अनैसी

दो० तुमहिं त्यागि मनवचनकहि, हम नहिं जानैं और ।
उचित न कटुबाणी कहत, कौरवकुलशिरमौर ॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना ॥ उठि अपने गृह कीन पयाना
अपने भवन पितामह आयो ॥ बिप्र द्रोण ते बचन सुनायो

कहे प्रणाम तुमहिं गुरुभूपा ❀ कीन बिनय कछु मति अनुरूपा
चतुर बेद धनु बेद निधाना ❀ आचारज नहिं तुमहिं समाना
हौ समर्थ प्रभु सबहिप्रकारा ❀ शापदेन अरु बाण प्रहारा
देव अदेव जगत भय मानत ❀ तव तप तेज सकल उर आनत
शशिसमकोटिनादिशनप्रकाशा ❀ कुरुपाण्डव तुम्हरे सब दाशा
सब प्रकार जानत बुधिबोधन ❀ तुम नहिं समुझावत दुर्योधन

दो० तपबल बुधिबल अस्त्रबल, बिद्याबल बलबाह ।
कर्म धर्म अरु ब्रह्मबल, बिदितजगतसबकाह ॥

तुव बलको भरोस उर मोरे ❀ की हरि और न जानत भोरे
यह सँदेश अरु पुनि पदबन्दन ❀ तुमते कहेउ पाण्डु के नन्दन
सुनत बचन भे द्रोण सशोके ❀ कमलनयनजल रहत न रोके
पुलकितगात कृपा अधिकाई ❀ बिबिध भाँति पूछी कुशलाई
शिष्य बर्ग हैं सकल हमारे ❀ द्विजद्रोणिहुँते अधिक पियारे
धर्मशील निधि पांचौ भाई ❀ मोरे प्राणन ते अधिकाई
ताते उनकी कुशल बतावहु ❀ मोरे जिय की ताप बुतावहु
कह द्विज हैं पाण्डव सब नीके ❀ नाथ तुम्हार दास जगतीके

दो० दुर्योधन काढ़ेउ बिपिन, देखरायो अति त्रास ।
रहत पाण्डुसुत कुशल हैं, तव चरणनकी आस ॥
मनसा बाचा कर्मणा, नाथ तुम्हारो दास ।
मानत ज्यों हरिको तुमहिं, धर्म सहित बिश्वास ॥

कहियह बचन मौन द्विज भयऊ ❀ उठि गुरुद्रोण भवनते गयऊ
बिप्र संग लै अश्वत्थामा ❀ करवायो गृह निज बिश्रामा
बहु बिधि खान पान करवाई ❀ शयन हेत शय्या बिछवाई
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी ❀ पूछी कुशल पाण्डवन केरी
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके ❀ प्राण अधार बन्धु मम हीके
अभिमन्युसहित सकलपरिवारा ❀ अरु आयो द्रौपदी कुमारा
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु ❀ भिन्नभिन्नकरि बरणि सुनावहु

उन हम को कछु कहेउ सँदेशा ❋ सो द्विज कह नृप सहित कलेशा
दो॰ बड़ी बिपति तेरह बरष, सही भूप कुन्तेव ।
सो बीती हरि की कृपा, हैं नीके सहदेव ॥
यह कहि भूप नयन जल छाये ❋ गदगद कण्ठ बचन नहिं आये
देखी बहुत प्रीति अधिकाई ❋ कुशल प्रश्न कहि बिप्र सुनाई
पाण्डव सकल सहित सुतदारा ❋ कुशल आजुलग सब परिवारा
करहु यत्न कछु कहत पुकारे ❋ यथाकुशल अब हाथ तुम्हारे
अबते तुम भूपहि समुझावहु ❋ कलह मेटिकै संधि करावहु
कहेउ प्रणाम तुमहिं कुन्तेवा ❋ सुनत सँदेश कहौ महिदेवा
हम जानत जिमि अर्जुन भीमा ❋ तैसे तुमहिं आजुलग जीमा
इन भ्रातन बर बिपति बँटाई ❋ गुरु बान्धव तुम सुधि बिसराई
जानत सो कौरव जो कीन्हा ❋ तुमहिं न उचितकृपातजिदीन्हा
कहेउ द्रोणसुत द्विज सुनिलीजै ❋ अपने मन बिचार तुम कीजै
दो॰ खान पान सनमान दै, सब प्रकार कुरुनाथ ।
दास भाव मोते रहत, करिलीन्हो निजहाथ ॥
चित महँ उनसन प्रीति घनेरी ❋ परबश भयो लाग नहिं मेरी
अनभल चहत पाण्डवन केरा ❋ कौरव बश मम फिरत न फेरा
अस कहि शयनकरन द्वउलागे ❋ अब नृप सुनहु चरित जस आगे
यहां भूप मन शोच अपारा ❋ कह संजय ते बारहिं बारा
देखिपरत मोहिं बात न नीका ❋ दुर्योधन की चली अलीका
सुनतश्रवण नहिं कछु उतपाती ❋ परी न नींद शोकबश राती
भीमस्वभाव बिदित सबकाहू ❋ अस कहि बिकल भयो नरनाहू
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी ❋ समुझावहु निजसुत अपकारी
सुनि संजय पुनि तुरत पठाये ❋ दुर्योधनहिं बोलि लै आये
रावण कुम्भकरण जिन मारा ❋ सुरबिजयी जानत संसारा
हैहयराज प्रचारि प्रचारी ❋ काटेउ सहसबाहु बलभारी
दो॰ केशी कंस अघा बका, मुष्टिक औ चाणूर ।

धेनुक हति वृष पूतना, तृणावर्त्त खल क्रूर ॥
माखो बालि वत्सासुर नीचा ❀ सुभट ताड़का अरु मारीचा
खरदूषण त्रिशिरादि कबन्धा ❀ बिपिन बिराध असुर कृतबन्धा
शंखचूड़ भस्मासुर मारा ❀ राख्यो शम्भु विदित संसारा
ते पाण्डव के भयो सहायक ❀ जीति को सकै तात रघुनायक
तिनते बैर किये भल नाहीं ❀ संधि नीकि समुझौ मनमाहीं
पुनि तुम्हरे हैं बन्धु नजीकी ❀ दीजै अंश बात यह नीकी
तुव पितु के लघुबन्धु भुवारा ❀ भये पाण्डु जानत संसारा
धर्मराज कछु पाप न कीन्हा ❀ छलकरि राज तात तुम लीन्हा
दो० उन नहिं कीन्ह बिरोध सुत, ना कछु लियो तुम्हार।
छल करि अक्ष खेलाइकै, तैं कीन्हों अपकार ॥
अजहूं कहा हमारो कीजै ❀ मिटै बिरोध अंश देदीजै
अतिहित गन्धारी की बानी ❀ सुनी न श्रवण नेकु अभिमानी
धृतराष्ट्रहु बहुबिधि समुझावा ❀ कालबिबश कछुमनहिं न आवा
मातु पिता कर बचन न माना ❀ जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना
भावीबश जानहु सब लोगा ❀ भावीबश न होइ सब योगा
भावी सुमति कुमति उपराजै ❀ हानि लाभ अरु विजय पराजै
कह बैशम्पायन सुनु राजा ❀ सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा
हरि कहि परशुराम जग जाये ❀ जीति पितामह बनहिं पठाये
दानव देव मनुज बल भारी ❀ भीषम पद कोऊ नहिं टारी
जीति सकल रण बन्धु बिवाही ❀ बानर ऋक्ष बिदित सबकाही
गुरू द्रोण दशहू दिशि जीते ❀ सुर अरु असुर जासु भयभीते
जो हठि कर्ण करै संग्रामा ❀ करिनहिंसकै बिजयघनश्यामा
दो० कह्यो मातु ते जोरिकर, चुपकरिरहु अरगाइ।
तिलभरिदेउँ न जियतमहि, सकै को टेक छुड़ाइ ॥
अस कहि अपने भवन भुवाला ❀ जात भयो राजा ततकाला
होतहि प्रात सभामहँ आयो ❀ बुद्धिचक्षु द्विज बोलि पठायो

स्वर्ण पञ्चशत दीन्ह्यो दाना ❀ कीन्ह दान नृप करि सनमाना
आजु कालिह महँ संजय ऐहैं ❀ सत्य सँदेश यहां को लैहैं
करि बहुयतन सुतन समुझाई ❀ देहौं तात मिलाप कराई
कहि द्विजते यहिभांति सँदेशा ❀ कीन्ह बिदा याहिभांति नरेशा
कहत प्रात संजय को आवन ❀ तिनके हाथ सँदेश पठावन

दो० धृतराष्ट्र आशिष कह्यो, लै पाण्डव को नाम ।
नृपमण्डली जोहारकरि, हरिको कह्यो प्रणाम ॥

यहि प्रकार कहि द्विजबरबाणी ❀ भूपसहित सुनि शारँगपाणी
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं ❀ और विचार कही कछु नाहीं
उन सगरी संजय पर राखी ❀ हरिते कहत धर्मसुत भाखी
तब हरि कहत चुपौ दिनचारी ❀ आवैं जो न करिय पुनि रारी
बुद्धिमान पञ्चाल पुरोहित ❀ इनते को चाहत तुम्हरो हित
येऊ गये न कछु करि आये ❀ कारज रह्यो सँदेश न लाये
इनते को जाई अब ज्ञानी ❀ बिहँसि बिहँसिकह शारँगपानी
सुनत बचन नृप द्रुपद लजाने ❀ करी कृपा श्रीहरि सनमाने

दो० हरिपदपंकज नाइ शिर, निजनिजशिबिर भुवाल।
गयेसकलप्रमुदितअधिक, हिये राखि गोपाल ॥

इहां प्रात मतिहग जब जागे ❀ संजय बोलि कहन अस लागे
धर्मराज हरि पहँ तुम जाई ❀ कह्यो बचन निजमति निपुणाई
कलह घटै ज्यहि सम्मति होई ❀ बुद्धि बिचारि कह्यो तुम सोई
मम दिशिते पूछेउ कुशलाता ❀ प्रीति समेत मनोहर बाता
बुद्धिमान कह तुमहिं सिखैये ❀ करहु गहरु जनि तुम अब जैये
सुनि संजय नायो पद शीशा ❀ बिदाकीन्ह नृप दीन्ह अशीशा
रथ आरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये ❀ प्रमुदित धर्मराज पहँ आये
देखि पाण्डुसुत सैन महाना ❀ सुरपति सरिस अचंभो माना
घण्टानाद मनुज रव नाना ❀ होत कुलाहल सिन्धु समाना
पँवरि द्वार संजय चलि आये ❀ नमन किये हरि अर्जुन पाये

दो० द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नैन ।
कनकपलँगअर्जुनसहित, करतकृपानिधि शैन ॥
दोऊ कर पुनि दोऊ पानी ❀ चापत चरण द्रौपदी रानी
संजय को आगमन सुनावा ❀ द्रुपदसुता हँसि बोलि पठावा
सुनि सँदेश अन्तःपुर आये ❀ प्रीतिसहित पुनि पद शिरनाये
हरुये चरण धरहु कह रानी ❀ परैं जागि जनि शारँगपानी
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे ❀ अर्जुन सहित उठे रविनींदे
जीवबन्धु को रङ्ग लजाये ❀ दृग बिलोकि संजय भय पाये
उग्ररूप देखत घनश्यामा ❀ कम्पिततन पुनि करत प्रणामा
संजय दिशि देखा यदुबीरा ❀ बोले घनइव गिरा गँभीरा
दो० कह संजय दुर्योधनहि, समुझावततुमनाहिं ।
मरो चहत सबमिलिशठहि, समुझिपरीमनमाहिं ॥
धर्मराज को देत न हींसा ❀ अपने बिभव करत बल खीसा
मस्तक काटि सहित परिवारा ❀ लेहों अंश बाँटि दुइ फारा
भूलो अधम करण बल पाई ❀ वहि पापी सब कुमति सिखाई
सकै न जीति पार्थ के आगे ❀ मरिहै नीच एक शर लागे
जो कदापि अर्जुन कदराई ❀ हनहुँ चक्र गहि शम्भु दोहाई
सुनत बचन संजय भयमाना ❀ करि प्रबोध अर्जुन सनमाना
हे यदुनाथ कृपा अब कीजै ❀ अभयदान संजय कहँ दीजै
पारथ बचन मानि भगवाना ❀ निज सेवक संजय कहँ जाना
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी ❀ बोले मधुर गिरा बनवारी
दो० हरि अर्जुन संजय सहित, चले युधिष्ठिर पास ।
सबलसिंह हित सों करत, मगमें बागबिलास ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

कह मुनि जनमेजय सुनि लीजै ❀ कथा अमिय सम पानहि कीजै
धर्मसभा हरि पारथ आये ❀ संजय सहित मोद मन छाये

धर्मराज आगे चलि लीन्हा ❋ हरिहि समेत दण्डवत कीन्हा
अर्जुन धर्मराज पद बन्दे ❋ बैठि सभा हरिसहित अनन्दे
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❋ करि बिनती बहु पद शिर नाये
धर्मराज निज निकट बोलाई ❋ बूझत कुशल सनेह बढ़ाई
कुशलप्रश्न कहि कहत सँदेशा ❋ ज्यहिप्रकार कहिदीन नरेशा
मानत अबहिं नाहिं दुर्योधन ❋ समुझैहौं करिकै बुधि बोधन
तुम सुत तुपकि रहौ दिनचारी ❋ होई मनभावती तुम्हारी
होइ न कलह मिलाप कराई ❋ देब तात तुव अंश देवाई
आशिष कहौ कुशल पुनि बूझी ❋ है नृपकी हति तुमहिं अबूझी
जबते तुम कीन्हों बनबासा ❋ उर न चैन नृप रहत उदासा
नितप्रति दुर्योधन की निन्दा ❋ करत कहत यहु है मतिमन्दा
तुमते कृपा रहत अधिकाई ❋ चलत कहेउ निज निकट बोलाई
आवहु तात देखि निज आंखिन ❋ मानत मैं न औरहीं साखिन

दो० भ्रातजान मम प्राण सम, जानत सब संसार ।
सुनिशकुनी सिख नीच यहि, काढ़ेबिन अपकार ॥
दुर्योधन मति परिहरी, बैठिअलीकनबीच ।
दृगविहीन मैं जरठ तन, मानतबात न नीच ॥

यदपि न मानत बश कुटिलाई ❋ करवैहौं मिलाप बरिआई
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा ❋ कहिहौ सुतन कृपा पुनि कीन्हा
बिन कलङ्क नहिं दोष तुम्हारा ❋ करिकुबुद्धिवहिबिपिन निकारा
तुम पर कृपा करत बनवारी ❋ सकै तात को बात बिगारी
सब बिधि सुत तुम्हार कल्याना ❋ करिहैं कृपासिन्धु भगवाना
गन्धारी आशिष सुनि काना ❋ कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना
पतिब्रता पुनि मातु हमारी ❋ गन्धारी जानत श्रुति चारी
आशिष दीन्ह कृपा करि भारी ❋ सब प्रकार बिधि बात सुधारी

दो० गन्धारी आशिष दियो, बिबिध भांति सनमान ।
सुनु संजय कह धर्मसुत, होइ हमार कल्यान ॥

पूछो भीमसेन संजयसे ❀ कोउ सँदेश पिता कछु हमसे
पाप बुद्धि देखत को सीधे ❀ सुतन नेह ममता महँ बीधे
बिधिवत नृप जानत सब साधू ❀ लीजै मौन न कछु अपराधू
तैसे मौन रहत दिन राती ❀ है पुनि अन्ध सकल कुलघाती
सिखै कुचालि बचन मृदुभाखी ❀ पापमूल बिधि दीन्ह न आँखी
है अति क्रूर सुभाव प्रपञ्ची ❀ भुलवत तुमहिं भूप अब बञ्ची
आँधर आपु अक्ष बिन जाना ❀ बहु पापी अब सकल जहाना
क्रूर बचन सुनि भूपति लरजे ❀ रहउ चुपाइ भीम कहँ बरजे
हीन न कहिय बड़ेन कहँ भीमा ❀ पातक बढ़त बिचारहु जीमा
पिता समान पिता को भाई ❀ कहउ न कछु तुम रहउ चुपाई
उन कहँ पुत्र लोभ अति जीते ❀ मोह हमार तज्यो कबहीते
भूप बचन सुनि भीम चुपाने ❀ बोले नकुल बीररस साने

दो० सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार ।
दुर्योधन होइ काल बश, करत क्रूर अपकार ॥

नहिं कछु कोउ वाकहँ समुझावत ❀ नाहक सब मिलि बैर बढ़ावत
फिरि पाछे सब तुम पछितैहौ ❀ मेरे युद्ध ते फेरि न लहिहौ
भीषम बिदित सत्य ब्रत धारी ❀ त्यागेउ राज्य लोभ अरु नारी
बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना ❀ गतिबिलोकिकहै सकल जहाना
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ ❀ सब लायक जानत सब कोऊ
भूरिश्रवा बीरता माते ❀ सकैं न युद्ध जीति सुर ताते
बाहलीक की बड़ि प्रभुताई ❀ जीति धरा जिन बाँह पुजाई
सभा माँझ शठ द्रुपदकुमारी ❀ केश पकरि वह कीन्ह उघारी
दुर्योधन की बिभव बिलोकी ❀ कुरुपाण्डव कोउ सक्यो न रोकी
कृप अरु द्रोण बड़े बलधामा ❀ रहे चुपके तहँ अश्वत्थामा
समुझिपरी सम्मति सबहीकी ❀ करणहु कही बात नहिं नीकी
एक एक जीतहिं संसारा ❀ उनहिं निदरि पावत को पारा
एकौ कोऊ भये न सङ्गी ❀ समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी

जस उनके तस सकल हमारे ❀ पापबुद्धि करि केहु न निवारे
सुनि सहदेव कहत सुन भ्राता ❀ हैं हमरे रक्षक सुरत्राता
दो० नग्न करन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय ।
रही लाज पट ना घट्यो, कृतसहाय यदुराय ॥
हैं यदुनाथ हमार सहायक ❀ कहौ कवन उत इनके लायक
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी ❀ कह संजय ते नयन तरेरी
नीचन के बल खल बौराना ❀ धर्मराज कहँ तृणसम जाना
याही भूल मीचु शठ केरी ❀ संजय सत्य प्रतिज्ञा मेरी
पाण्डुसुतन को काज सुधरिहौं ❀ वंश नाश कौरव को करिहौं
जो नहिं देइ युधिष्ठिर अंशू ❀ रहै न धृतराष्ट्रक को वंशू
ताते तुम संजय समुझावहु ❀ धर्मराज को अंश देवावहु
सुनि संजय बिनवै करजोरी ❀ सुनहु नाथ यक बिनती मोरी
दो० अरुणनयनभृकुटीकुटिल, लखिहरिरूपकराल ।
संजय शोच सँकोच वश, बिनवत श्रीगोपाल ॥
दूत कर्म ते बचन बखाना ❀ मैं तुम्हार अनुचर भगवाना
लै संदेश नरेश पठायो ❀ सत्यबचन बलि तुमहिं सुनायो
अब जस कहब करौं तस जाई ❀ दोष हमार कवन यदुराई
करब न करब भूप के हाथा ❀ अस कहि प्रभुपद नायो माथा
परम चतुर संजय कहँ जाना ❀ बिहँसे कृपासिन्धु भगवाना
बुद्धि सराहि करी अतिदाया ❀ प्रीतिसहितनिजनिकटबोलाया
मोर सँदेश तात कहि दीजो ❀ निज नरेशते भय भति लीजो
राज्य युधिष्ठिर को तुम देहू ❀ तजि अभिमानकलह किनलेहू
जो न सुनहु यह बचन हमारा ❀ करहुँ निपात सकल परिवारा
दो० अंश युधिष्ठिर को तजहु, मानहु बचन हमार ।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार ॥
अस कहिपुनि राजीवबिलोचन ❀ रहे चुपाइ दास दुखमोचन
भीमसेन संजय के आगे ❀ कहन सँदेश क्रोध करि लागे

बैठि सभामहँ मारि चपेटा ❀ फारौं गाल बिदारौं पेटा
दुर्योधन क्षणमहँ संहारौं ❀ दुश्शासन के भुजा उखारौं
कौरव जियत जान नहिं देहौं ❀ एको युद्ध भूमि जब ऐहौं
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें ❀ तबलग कुशल गदाकरलीन्हें
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा ❀ भीमसेन जो बचन उचारा
दीन्हे अंश मिटै सब रारी ❀ समुझौ दिशिते कहेउ हमारी

दो० समुझावहु निजतनयअब, देइ अंश नरनाह ।
तात तुमहिं हित होइगो, अनहिततजुमनमाह ॥

यह संदेश कह्यो तुम मोरा ❀ यामें भूप होत हित तोरा
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे ❀ जैहैं भूप उभय दिशि मारे
ताते तात सो करिय उपाई ❀ होइ संधि जेहि मिटै लड़ाई
धर्मराज कहि दीन्ह सँदेशा ❀ भल जानेहु तस करेहु नरेशा
देउ भूमि तब मिटै लड़ाई ❀ बाढ़ै भूप कीर्त्ति सुखदाई
अस कहि संजय फेरि पठाई ❀ रह्यौ कृष्ण पद शीश नवाई
धर्मराज ते बिदा कराये ❀ तब अरूढ़ होइ गजपुर आये
अन्तःपुर जहँ बैठ नरेशा ❀ गालवगण तहँ कीन्ह प्रवेशा
करि प्रणाम पुनि आप जनाये ❀ सुनि महीप निजनिकटबुलाये
कुशलप्रश्नम्वाहिंसकलबतावहु ❀ जो उन कह्यो सँदेश सुनावहु

दो० गात कम्प गद्दर भये, कहिनसकत कछु बैन ।
जो कछु कह्यो सँदेश नृप, पीतम पङ्कजनैन ॥

धरि धीरज सञ्जय अस भाखत ❀ सुनहु भूप कछु गोइ न राखत
अब उनके नृप सेन अपारा ❀ गजरथ अरु पदाति असवारा
चालिस सहस भूप जिन जोरा ❀ अक्षौहिणी सप्त घनघोरा
नृपति बिराट द्रव्य समुदाई ❀ दीन्हो द्रुपद राज्य यदुराई
बिभव बिलोकि धनेश लजाहीं ❀ केहि पटतर दीजै कोउ नाहीं
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई ❀ देखे बनै न बरणि सिराई
दीन्हो एक द्विरद भगवन्ता ❀ शङ्ख बरण सुन्दर चौदन्ता

तापर भूप करत असवारी ❀ मन्दर से उन्नत है भारी
गन्धर्वन जे दीन्ह तुरङ्गा ❀ चित्र बिचित्र मनोहर अङ्गा
ते तुरंग नाकुल के घोरे ❀ धावल चपल चलत शिरमोरे
अरुण बाजि सहदेव सोहाये ❀ जीवबन्धु को रङ्ग लजाये

दो० भीमसेन के हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरङ्ग ।
बायुबेग मग अतिचपल, हरित सुआ के रङ्ग ॥

श्वेतबरण अर्जुन हय राजत ❀ उच्चश्रवहु देखि मन लाजत
मुकुट समेत अमोलिक माला ❀ करि अतिकृपा दीन सुरपाला
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❀ पहिराये जेहि मृत्यु न होई
अक्षै तूण दीन्ह्यो जलनायक ❀ घटइ न शर साधे जेहि शायक
तस पंचकर्म धनुष गण्डीवा ❀ दीन्हो अनल जगत की सीवा
देवदत्त दीन्हे भगवाना ❀ शङ्ख अनूपम सब जग जाना
जासु महारव घोर प्रचण्डा ❀ पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा
वृषपर्वा की गदा बिशाला ❀ दीन्ह्यो भीम कही नँदलाला
नकुलहि की बरणत तरवारी ❀ दीन्ही अतिप्रचण्ड बनवारी
शङ्कर नन्दिघोष रथ दीन्हा ❀ अर्जुनकहँ निर्भय पुनि कीन्हा

दो० धर्मराज अब इन्द्रसम, बिभव को सकै बखानि ।
सुनहु भूप सन्देह नहिं, जहँ श्रीपति सुखदानि ॥

अर्जुन कीन सखा हनुमाना ❀ लङ्का बिजय सकल जगजाना
सावधान होइ सुनहु नरेशा ❀ अब पाण्डवको सुनौ सँदेशा
छलकरिदीन्ह्यो बिपिन निकारी ❀ दीजै अंश न कीजै रारी
दुइमा भूप भली जो जानौ ❀ अब न बिलम्ब बेगि सो ठानौ
याही भांति कह्यो यदुराई ❀ तजहु अंश नहिं रचहु लराई
रणमहँ पकरि सुदर्शन पानी ❀ कौरवकुल की घालौं हानी
करत अनीति करण बलसेती ❀ तेहिकी बात नीच कहु केती
क्षणमहँ सब कौरवदल मरिहौं ❀ राज्य युधिष्ठिर को बैठरिहौं
उनको अंश छांड़ि तुम देहू ❀ तजि अभिमान अभयपद लेहू

दो० सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश ।
सुनि उपदेश जो चितचहै, सो अब करहु नरेश ॥

सञ्जय बचन सुनत उर दहेऊ ❀ विकल विशेषि भूप अस कहेऊ
मात पिता को करि अपमाना ❀ कालविबशसिखसुनतनकाना
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखी ❀ समुझावहुँ सबबिधि तुम साखी
बल बिहीन ते जरठ न आंखी ❀ सुनत न बचन पाप अभिलाखी
तृणसमान मोको शठ जानत ❀ सुनत श्रवण एकौ नहिं मानत
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई ❀ सत्य नाथ कहि पद शिरनाई
सब जानत तुम ज्ञान अरूढ़ा ❀ पुनि कहिगयो गिरा यह गूढ़ा
हमहूँ नाथ तुम्हार सिखाये ❀ सब प्रकार कहि भेद बताये
भयो द्यूत तब तुमहिं न जाना ❀ लक्षभवन बिनमत निर्माना

दो० तजि मनकी अवरेव अब, समुझावहु कुरुनाथ ।
रहत रैनि दिन मैं सदा, नाथ तुम्हारे साथ ॥

मेटहु कलह भूप सज्ञाना ❀ जग भल कहै लहै कल्याना
होइ सुयश कीरति उजियारी ❀ मिटै कलङ्क होइ सुख भारी
होइ प्रसन्न त्यागि नृप रञ्जय ❀ असकहि भवनगये पुनि सञ्जय
धृतराष्ट्र सबही के आगे ❀ सुतकी करन धर्षणा लागे
कपट द्यूत रचि नीच निकारा ❀ करण सीखते करि अपकारा
सौबल शकुनि कुमन्त्र सिखावा ❀ उन यह बन्धु बिरोध करावा
सञ्जय बचन कहत हैं सांचो ❀ सम प्रिय पुत्र एकसौ पांचो
जो सब सम कत बैर करावत ❀ संधि कराइ न कलह बहावत
यह सम्भव तन बात अरूठी ❀ तात न समुझिपरत कछु झूठी
दीन्ह धरा धन साज समाजा ❀ तुम कीन्हे दुर्योधन राजा
भीषम बिदुर तुम्हारइ अज्ञा ❀ कृप अरु बाहुलीक तुव सज्ञा
द्रोणी द्रोण तुम्हार सहायक ❀ त्रिभुवन बिजयकरन के लायक
धरि कारागृह देहु बँधाई ❀ दुर्योधनहि निगड़ पहिराई
निन्नानबे पुत्र बल भारी ❀ तेइ नरेश तुव आज्ञाकारी

और सुतहि राज्य नृप दीजै ❀ फिरि मन चहै बात सो कीजै
सुनि निठुर संजयमुख भासा ❀ गयो जानि नृप भयो उदासा
दो० सबलसिंह चौहान कह, वाक्य बिलास बनाइ।
बोलेउ बिहँसि नरेश तब, संजय को बहलाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

जनमेजय सुनि मन अनुरागे ❀ पूछै बहुरि ऋषै सों लागे
कथा अमृत रस मोहिं सुनाई ❀ होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई
अब प्रभु कहौ सहित बिस्तारा ❀ मिटै नाथ संदेह हमारा
कह मुनि समुझिपरै भ्रम त्यागे ❀ चित्र बिचित्र चरित जस आगे
धृतराष्ट्र मन अति संदेहा ❀ कहत बचन संजय से एहा
उरअतिदाह नींद नहिं आवत ❀ कलहदेखि मन शोच जनावत
पाण्डुतनय मम सुत अपकारी ❀ कुलमहँ होत मिटत नहिं रारी
चुपकै दैन मिलै नहिं शीशा ❀ यह नहिं देन कहत अवनीशा
अस बिचारि असमंजस मोही ❀ दुर्योधन खल अतिकुलद्रोही
दो० संजय ते बोले बिलखि, करि चितचेत सुवार।
भ्रात जनावत तनै इत, बाढ़्यो कलह अपार ॥
यामें उभय प्रकार बिगारा ❀ ताते मन कछु थिर न हमारा
तुम सुत जाहु बिलम्ब न लावहु ❀ बिदुर बोलाइ इहां लै आवहु
सुनि संजय उठि तुरत सिधाये ❀ पलमहँ बिदुर भवन कहँ आये
कुशआसन पर ज्ञान अरूढ़ा ❀ साधत योग बैठि गतिगूढ़ा
कुण्डलनी तजि मूल उठाये ❀ निरखत परम ज्योति सुखपाये
सहस पत्र को कमल जो फूला ❀ तापर पुनि हरिध्यान अमूला
इड़ा पिङ्गला दूनों श्वासा ❀ साधत करत सुषुमना वासा
नासा ऊपर करि अनुरूपा ❀ निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा
रसना उलटि कण्ठ अवरोधी ❀ सूधो कीन्ह कमल तन शोधी
मेरु दण्ड सम आसन लीन्हे ❀ पुनि षटचक्र बिदारण कीन्हे

दो० पापिनिसाँपिनिदुःखगति, करि रसना पुनि रोक ।
पिअतसुधारस यतनयुत, जेहितनरहत बिशोक ॥

अञ्जन सहित योगगति साधी ❀ करत ध्यान पुनि लाइ समाधी
तब संजय करि यतन जगावा ❀ चलहु बेगि अब भूप बोलावा
अर्द्धनिशा सुनि आयसु पाये ❀ विदुर बेगि पुनि मन्दिर आये
गान्धारी अरु भूप अकन्ता ❀ अभिवादन पुनि कीन्ह तुरन्ता
कहेउ नरेश बिदुर इत आवहु ❀ मम समीप चिततपनि बुतावहु
संजय कह्यो सँदेशो जबते ❀ मोकहँ नींद न आवत तबते
अब उपाय कहिये कछु भाई ❀ बुधि बिचारि ज्यहि बचै लराई
संजय सो सँदेश नृप पायउ ❀ सो नरेश सब बरणि सुनायउ

दो० कहेउ बिदुर तब भूपते, तुवसुतबशअभिमान।
जोसिखवतमनमानिहित, करत न सो कछुकान॥
देइअमियकोउप्रीतिकरि, त्यागि करत बिषपान।
दुर्योधन मति परिहरी, बिधिगतिअतिबलवान॥

कृत नरेश को सब परिवारा ❀ करहि नाश यह तोर कुमारा
देखहु शठ हठशील अभागी ❀ प्रकटो यथा दारु ते आगी
हस्तीकुलहि न लागी बारा ❀ एकहि साथ करहि सब छारा
शत कुमार गान्धारी जाये ❀ बैश्या पुनि युयुत्सु उपजाये
जब भये तनय एकशतएका ❀ गर्दभ शब्द भयो अरु एका
श्वान शृगाल भयंकर बोला ❀ कररत काग धरा गइ डोला
भूप यज्ञ थल आनि शृगाली ❀ करत फेकार क्रूर भयवाली
सुरज्ञानिन इमि बचन उचारा ❀ कुलनाशक नृपतनय तुम्हारा
उपजेउ कहो हमारो कीजै ❀ गढ़ा खोदाय गाड़ि अब दीजै

दो० पुत्रलोभते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ ।
होनी होइ सो होइ नृप, को करिसकै मिटाइ ॥

कुलघालक नृप तनय तुम्हारा ❀ जगमहँ प्रकट कीन्ह करतारा
बरजत बात करत चतुराई ❀ अन्तर भूप अनीति सिखाई

कपट निपुण अरु परसन्तापी ❀ हौ तुम नाथ जन्म के पापी
तुम्हरे मन की जाननहारा ❀ है नरेश सब दास तुम्हारा
तुव भल चहत कहत अस बानी ❀ म्हहिं नरेश कछु लाभ न हानी
बिन पूछे मैं यहहू कहहूं ❀ सहिदुखदुसह चुप्प पुनि रहहूं
दो० जो पूछा तो करो अब, तजि मन की अवरेव।
अंश युधिष्ठिर को तजहु, करि करुणा नरदेव॥
जानेउ राव मर्म सब जाना ❀ बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना
सो नहराइ कहत अस राजा ❀ भ्राता सुनहु हिये जस भ्राजा
अब उपाय कछु बन्धु बतावत ❀ शोच बिबश कछु नींद न आवत
पाण्डुतनय ममतनय कुचाली ❀ करत बिरोध सुनहु गुणशाली
सो मेटहु कछु यतन बिचारी ❀ सुनत बिदुर मृदुगिरा उचारी
पाण्डुसुतन की कछु न अनीती ❀ उन अपने बल जो महि जीती
सोऊ देत न तनय तुम्हारा ❀ मिटै कलह क्यहि भांति भुवारा
पितृ पितामह अंश न देहू ❀ जीति देहु करिये नृप नेहू
दो० लेहु सुयश मेटहु कलह, करि करुणा तुम राइ।
ऐसे हीने पाण्डुसुत, जो वै रहैं चुपाइ॥
वै नहिं कालहु को भय मानत ❀ तृणसमान तुव पुत्रन जानत
हैं सहाय यदुनायक जाके ❀ कस न होइँ निर्भय मन ताके
कृष्ण भरोस मानि मन माहीं ❀ जीतत समर डरत कछु नाहीं
अबलग मोहनिशा तुम शोचते ❀ मन जानत उनकहँ हम प्रभुते
बरजत प्रभू युधिष्ठिर भाई ❀ त्यहि कारण नृप रची लराई
जब जब भीमसेन मन माखत ❀ तब तब बरजि बरजि नृप राखत
दुर्योधन कहँ नृप समुझाई ❀ मिटै कलह सो करहु उपाई
हे महिपाल बात यह नीकी ❀ तुम्हरे कहत परम हितहीकी
दो० मनसा बाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहिं, अनहित बचै तुम्हार॥
जबलगि भीमसेन बलदाई ❀ रचत युद्ध नहिं तलहिं भलाई

क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ ❀ है साहसी बिदित सबकाऊ
कालहु की भय नेक न मानत ❀ सो नरेश नीके तुम जानत
यक्षराज अर्जुन ते हारे ❀ सो जाने सब भेद तुम्हारे
लङ्कापुर दांड़ेउ सहदेऊ ❀ सो तुम्हार जाना है भेऊ
शंकर शत्रु धनंजय जीते ❀ देव अदेव जासु भयभीते
सके जीति नहिं पवनकुमारा ❀ कीन्हे सखा बिदित संसारा
त्रिभुवनपति बैकुण्ठ बिहारी ❀ हैं तिनके सहाय गिरिधारी
है अनन्य हरिभक्त अतीवा ❀ जीते को पाण्डव बलसीवा
पश्चिम देश नकुल सब झारी ❀ जीते यमन जाल बल भारी
ते सब धर्मराज अनुगामी ❀ दीजै अंश बात सुनु स्वामी
कह भूपाल सत्य सुनु भाई ❀ देत मीच नहिं मोरि देवाई
यह सुनि बिदुर उतर पुनि दीन्हा ❀ बरजत रह्यो भूप जब कीन्हा
तब रुख लखि मैं रह्यउँ चुपाई ❀ कह्यउँ नाथ तुम सबै सुनाई
दुर्योधन कह तुम दुखदाई ❀ सुनहु नाथ नहिं मोरि सिखाई
राज्ययोग नहिं लक्षण चीन्हो ❀ मन्त्री कर्म त्यागि हम दीन्हो

दो० राजछोड़ि नरनाह सुन, कबहुँ न होइ उछाहु ।
करहिं अवज्ञा पुत्र जब, तब नितनित पछिताहु ॥
राज दियो दुर्योधनहिं, पुत्र प्रीति ह्वै लीन ।
तुम्हरो भोजन पान अब, नृप उनके आधीन ॥

दुर्योधन कहँ कीन्ह्यउ नाथा ❀ सर्बस भूप तज्यउ निज हाथा
अब शोचत नहिं प्रथम सँभारे ❀ असकहि बिदुर नयनजलढारे
सुनो भूप बिधि रेख लिलारा ❀ लिखी ताहि को मेटनहारा
दासीयोनि जन्म जहँ पावा ❀ ताते तात न बनै बनावा
हमहुँ बिचित्रबीर्य के बेटा ❀ मगमहँ चलत भई नहिं भेटा
धनुबिद्या भीषम जो दयऊ ❀ सो मोहिं नाथ बिसरि नहिं गयऊ
तुम अरु पाण्डव सखा हमारे ❀ पातक होइ दोउ के मारे
पाण्डुपुत्र तुव पुत्र अभागे ❀ कलह बिलोकि अस्त्र हम त्यागे

करि नहिं सकै और कोऊकी ❀ समगति हम न भूप दोऊकी

दो॰ दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहिं बात ।
परमचतुरगुणनिधिविदुर, [illegible] ॥

अहोदेव तुम मति हरिलीन्ही ❀ अति कुबुद्धि कुरुनाथहि दीन्ही
हानि लाभ तुव वश मैं जाने ❀ अस कहि विदुर बहुत पछिताने
धृतराष्ट्र मन शोच अपारा ❀ कहत विदुर ते बारहिं बारा
दुर्योधन अति कीन अनीती ❀ सो मैं भलीभांति सब चीती
संजय गिरा मानि बिश्वासू ❀ जानेउ बन्धु भरत कुलनासू
धन मदमत्त अधम अपकारी ❀ कीन नगिनि शठ द्रुपदकुमारी
सोसुधि उनहिं बिसरिकिमिजैहै ❀ दुर्योधन के आगे ऐहै
अबहुँ न शठ समुझत समुझावा ❀ बिन कारण को बैर बढ़ावा
अबम्वहिं समुझिपरतमनमाहीं ❀ बाढ़्यो कलह बार कछु नाहीं

दो॰ दुर्योधन के मन बढ़ेउ, सुनहुबिदुरअभिमान ।
सिखवत मैं बिधि कोटिते, सो कछु करत न कान ॥

बीतिगई यामिनि युग यामा ❀ आवत नींद न मन बिश्रामा
करहु बिचार यतन अब सोई ❀ जाते बन्धु बोध मन होई
भये बिकल लखि मन दुख पावा ❀ कीन बोध पुनि पद शिरनावा
आवाहन करि विदुर बोलाये ❀ सनकादिकबिधिसुतचलिआये
नृप प्रबोधि मन मोद बढ़ाये ❀ पुनि मुनि सत्यलोक कहँ आये
संजय पठवो बोलि सुयोधन ❀ लागे भूप करन सब बोधन
गन्धारी अरु बिदुर बुझावा ❀ कालबिबशकछुमनहिं न आवा
सबकहँ प्रीति उतरु पुनि दीन्हा ❀ गयोभवन सिखकान न कीन्हा

दो॰ भानुमती तब हँसि कह्यो, कहिये नाथ हेवाल ।
गये बेगि पितु भवनते, आये बहुरि भुवाल ॥

अन्ध बधिर हठशील अनामी ❀ क्रूर कुबुद्धि कृपण अरु कामी
मत्त प्रमत्त जरठ बश औरे ❀ नीचप्रसङ्गी अरु मति भोरे
ऐसे पितुको कहा न कीजै ❀ पकरि ताहि कारागृह दीजै

नीचप्रसङ्गी पिता हमारा ❀ दासीसुतहि दीन्ह अधिकारा
कहत भूप जो विदुर सिखावत ❀ ताते कछु सो मन नहिं आवत
द्वै करजोरि कहत तब रानी ❀ करि करुणा करिये मम बानी
देखहु समुझि भरत कुलटीका ❀ पितु निदेश परिहरब न नीका
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई ❀ कहि कटु वचनन दीन्ह दुराई
भइ मन त्रासग्रसित तब रानी ❀ गई पराइ भवन भय मानी
प्रातहिं यहां धर्मसुत जागे ❀ हरिहि समोद जगावन लागे

दो० अस्ताचल हरनी रुचिर, शृङ्ग शृङ्ग उमङ्ग ।
खजुआवत सुखते सुखी, चूं चूं करत विहङ्ग ॥
करत प्रकट पुनि प्रातरबि, बालक सहित उछाहु ।
कूक कपोतन की मनहुं, प्राचीदिशि को राहु ॥

अरुणचूड़ बर बोलन लागे ❀ फूले कमल भ्रमर अनुरागे
चहत पक्षिगण तजन बसेरा ❀ करत मधुरस्वर नाद घनेरा
चरन मानसर हंस सिधाये ❀ उड़त हलावत परन सोहाये
सकुचे कुमुद उलूक निवासा ❀ अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा
यथा अनीति सुराज नशाने ❀ बञ्चक चोर सभीत छिपाने
शशिद्युतिरह्योचरणगिरिआधी ❀ जिमि निर्बलनृप बिगत उपाधी
रबिभयमानि शरणतकिआवा ❀ मनहुँ प्रतीची शशिहि छिपावा
तरुबर बास शिखण्डिन त्यागे ❀ करि मृदुरव निर्त्तत सुख पागे

दो० भयो प्रात अब करि कृपा, जागे राजिवनैन ।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्मराज के बैन ॥

तेहि अवसर बन्दीगण बागे ❀ पुनि यदुबंश प्रशंसन लागे
धर्मराय हरिपद शिरनाये ❀ पुलकितगात नयन जल छाये
परमानन्द प्रेम उर आवा ❀ प्रभुछबि देखि निमेष न लावा
श्यामसजल घन सरिस शरीरा ❀ दृग राजीव हरण जन पीरा
आनन इन्दु सहित मृदु हासा ❀ लोल कपोल मनोहर नासा
खुलत दशन अतिद्युति दरशाई ❀ तड़ितप्रभा जेहि देखि लजाई

उन्नत भाल भृकुटि श्रुति कुण्डल ❋ जनु युग रवि अहि गहि शशि मण्डल
करत विचार सुयश यह लीजै ❋ अमि अँचवाइ अमरपद दीजै
रवि रथ बन्धन कहि करगाये ❋ प्रतिउपकार करण जनु लाये
वृषभ कन्ध अरु कम्बुक ग्रीवा ❋ अति विचित्र शोभा की सीवा
क्रीट मुकुट शिर सोह विशाला ❋ नवतुलसीदल गजमणिमाला

दो० भुजप्रलम्ब पुनि करकमल, मुखउदार केयूर ।
उरविशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जनशूर ॥

कटि केहरी उदर त्रयरेखा ❋ कहि न सकैं कबिकाविशतशेखा
नाभि गँभीर देखि मति धुमरी ❋ मानहुँ तरणितनयजलकुमरी
पीतवसन शोभित शुचि फेटा ❋ सजल जलद जनु जटित लपेटा
जङ्घ पीडुली नयन निहारे ❋ उपमा कहि न सकत कबि हारे
हरिपद ते प्रकटी पुनि गङ्गा ❋ धरी शीश पर बैरि अनङ्गा
तापद की उपमा का दीजै ❋ जो कछु कहिय सो अल्प गनीजै
शापशिला गौतम की नारी ❋ जे पद परशि पलक में तारी
जे पदपद्म पखारि निषादू ❋ भयो बिदित जग बिदित बिषादू
जे पदपद्म धारि श्रुति गाये ❋ चापत सिन्धुसुता उर लाये
ते पद निरखि युधिष्ठिरराई ❋ अति आनन्द न हृदय समाई
अस्तुति करत भरत जललोचन ❋ जय रुक्मिणीरमण अघमोचन

दो० जय जय श्रीवृन्दाविपिन, बासी नाशी पाय ।
अविनाशी गति देत तुम, दास न देत दुराय ॥

चरणशरण कहि नाम पुकारत ❋ ताके नहिं गुण दोष विचारत
चरण शरण कहि बिरद सुनायो ❋ त्याग्यो गरुड़ गगनपथ धायो
कहुँ पट पीत गिरी कहुँ माला ❋ हरी बिपति पुनि दीनदयाला
ग्राहनिधनकरि शुभगति दीन्ही ❋ तहँ गजराज बिनय बहु कीन्ही
शापकथा कहि दोष मिटावा ❋ पुनि गजेन्द्र निजलोक पठावा
शबरी नाम अपावन नारी ❋ परी चरण कहि शरण पुकारी
कृपा दृष्टि देखी बनवारी ❋ चढ़ि बिमान बैकुण्ठ सिधारी

कृपा निषादराज पर कीन्हा ❀ भालुकीशनिजसमकरिलीन्हा
रावणबन्धु बिभीषण नामा ❀ कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा
करि करुणा हरिलीन्ह बिषादा ❀ भक्तशिरोमणि भे प्रहलादा
अगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा ❀ अविचलपदवी ध्रुव कहँ दीन्हा

दो० केशी हर कल्याण कर, कृपासिन्धु भगवान ।
कूर कपूतन को सुगति, कवन देय बिन कान ॥
बालमीकि उलटा जपे, कह्यो आधही नाम ।
सबलसिंह चौहान कहि, दीन्हो अविचल ठाम ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गणिका गीध अजामिलतारण ❀ गोपीपति गोत्रास निवारण
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन ❀ जनकसुता दुखदुसहविखण्डन
हरिजनहृदय पयोधि मराला ❀ रहत बिहार करत सब काला
गिरिवरधारी नाथ छबीला ❀ नारायण श्रीकन्त रँगीला
माखनचोर चतुर्भुज स्वामी ❀ पद्म गदाधर अन्तरयामी
तातें विनय मानि प्रभु मोरी ❀ दुर्योधन गृह जाहु बहोरी
मानहि सो न विवशअभिमाना ❀ पुनरागमन करिय भगवाना
करि बहुयतन ताहि समुझावहु ❀ अपनी दिशितें चूक न लावहु

दो० समुझावहुप्रभुबिबिधबिधि, जाइय अबतीबार ।
होइहि होनेहार पुनि, जोबिधिलिखालिलार ॥

सुनि यह बचन कृष्णहँसिदीन्हा ❀ नीक बिचार भूप तुम कीन्हा
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ ❀ बोलिय सकल भूप अब तेऊ
सब मिलि करहिं मन्त्र उपदेशा ❀ कहेउ कृष्ण तस करिय नरेशा
सुनि नरेश सोइ बेगि बोलाये ❀ भीमादिक भ्राता चलिआये
द्रुपद बिराट और सब राजा ❀ धर्मराज पहँ जुरेउ समाजा
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी ❀ चलि आईं जहँ शारँगपानी
कह हरि सुनहु सकल मनलाई ❀ पठवत हमहिं युधिष्ठिरराई

सन्धि हेतु दुर्योधन भवनहिं ❀ कहिये मन्त्र रहौ जनि मौनहिं
निजनिजमति जनि राखौ गोई ❀ सबमिलिकहौ करिय अब सोई

दो० धर्मराज सुनि हरिवचन, कही सबनते बात ।
कहिये मन्त्र विचारिकै, कृष्णदेव उत जात ॥

बुद्धिविचारि सकलमिलिभाखौ ❀ अबनिजमन्त्र गोइ नहिं राखौ
करियमिलाप कि कीजिय रारी ❀ तौन बात अब कहौ विचारी
कहेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्मा ❀ त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा
केशपाणि धरि द्रुपदकुमारी ❀ सभामध्य वह कीन्ह उघारी
सुमिरण तुमहिं दीन है कीन्हो ❀ दीनदयाल राखि तव लीन्हो
लक्षसदन चालि हमहिं पठायो ❀ अर्द्धराति महँ अनल लगायो
लीन्हेउ राखि तहां ते बाचे ❀ हरिकी कृपा अल्प नहिं आंचे
विषमोदक वहि नीच खवायो ❀ रह्यउ न चेत जँजीर मँगायो

दो० कसेउ लोहगुण सकलतन, डारि दियो ततकाल ।
परेउँ गङ्ग की धार महँ, ततक्षण गयों पताल ॥

गयों भूमितल कछु सुधि नाहीं ❀ छहरिगयो विष सब तनमाहीं
सर्पलोक पहुँचे यदुराई ❀ सुनि सुधि नागसुता तहँ आई
आसिनिआइकरि मोहिं तमासा ❀ नाना भांति करैं परिहासा
विषतन भरे खुलत नहिं नयना ❀ कछु कछु सुनौं श्रवणपुटबयना
अस्तुति करै मोहिं लखि मोही ❀ नागकुमारि कामवश भोही
आप सहित मम सुन्दरताई ❀ वर्णत प्रीति करत अधिकाई
करै कष्ट तन हरि हर ध्यावै ❀ बड़े भाग ऐसे पति पावै
देवसुता जाको ललचाहीं ❀ नर नारी क्यहि लेखे माहीं
कर्कोटक तनया सुनि बाता ❀ आई मम समीप हरषाता
अमियसींचिमुखमोहिंजियायउ ❀ जानि विषयतन ताप बुझायउ

दो० सहरावत पद पाणि गहि, करतप्रीतिअधिकारि ।
अमितदेखि मोतन करत, बारहिंबार बयारि ॥
मृगनयनी हिमकरबदनि, पहिरे भूषण चीर ।

तननवीन कटिखीनअति, व्याप्यो काम शरीर॥
म्वहिं बिलोकि तनदशा बिसारी ❀ चित्रपुत्रिका की अनुहारी
मम गति लीन्ह वढ़ो अनुरागा ❀ त्यागे लाज मनोभव जागा
देख्यो नागसुता गति लोगन ❀ जाइ जनायो तिन पुनि भोगन
नागसुता मानुष तन राची ❀ भये सक्रोध बात सुनि सांची
गुणमञ्जरी मनुज पति लीन्हो ❀ केहुँ कर्कोटक से कहिदीन्हो
समुझि हिये यह बात अयोगी ❀ चला सकोपि अरुणदृग भोगी
यहां कामबश छांड़ि बिचारा ❀ बरहु मोहिं कह बारहिंबारा
मैं समुझाय कही वहि पाहीं ❀ गुणमञ्जरी उचित अस नाहीं
सुनि यह तोहिं निन्द सबलोगा ❀ नागसुता नहिं मानुष योगा

दो० योगमनुजबर तुमहिं नहिं, देवयोनिमहँ व्याल ।
काम बिबश बरबस हिये, पहिरायो जयमाल ॥

क्रोधित व्यथा सर्प समुदाई ❀ ग्रसन मोहिं तेहि थलमहँ आई
कोउ फण एक उभय त्रयचारी ❀ चपलजिह्व चष अतिरतनारी
पञ्च सप्त षट फण को सर्पा ❀ कोउ फण अष्ट करत अतिदर्पा
दश फण नाग पञ्चदश सोऊ ❀ कोउ फण बीस तीस है कोऊ
चालिसकोउ पचास फणयोगी ❀ सत्तरि साठि असी फणभोगी
शतफण एक पञ्चशत एका ❀ नानाबिधि फण सर्प अनेका
उगिलत बिष अरु दृगरतनारे ❀ आशीबिष भारे तन कारे
धूमर लाल श्वेत रँग नागा ❀ हरितपीतअरुबिबिधबिभागा
ग्रसिनिआइमोहिंरिसकरिभारी ❀ देखि बिकल भै नागकुमारी
त्यहि अवसर कर्कोटक आये ❀ चञ्चलजिह्व बदन फैलाये

दो० श्यामबर्ण जनु जलद सम, रसना चलत निहारि ।
खुलेदशन अवलोकिपुनि, उपमा कहत बिचारि॥

चपलाजिह्वमुखबिचअभिरामिनि ❀ चमकत थिरतरहतजिमिदामिनि
श्यामबर्ण सित दशन बिभांती ❀ सघनघटा महँ जनु बगपांती
डरी मनहिं मन नागकुमारी ❀ बिनय कहै बिधि बिष्णु पुरारी

उमा रमा हे शारद माता ❀ विनयकरत राख्यो अहिवाता
तब सुमिरेउ भयहरण कृपाला ❀ आयो गरुड़ सर्पकुलकाला
ताहि देखि सब उरग पराने ❀ जहँ तहँ गये जात नहिं जाने
कर्कोटक खगनाथ निहारी ❀ वलभा थकित करत मनुहारी
प्राण दान दै प्रथम बचाये ❀ अवसक्रोध क्यहि कारण आये

दो० पक्षिराज बोले विहँसि, सुनहु सर्प शिरताज ।
पाण्डव के सन्देह नहिं, रक्षक श्री ब्रजराज ॥

सो यदुनाथ चराचर स्वामी ❀ जगतबिदित मैं त्यहिअनुगामी
जो कुलकुशल चहौ अहिराई ❀ मिलि पाण्डव कहँ बैर बिहाई
बचन हमार मानि तुम लेहू ❀ दुहिता भीमसेन कहँ देहू
गरुड़ बचन सुनि तजि सन्देहू ❀ सुता बिवाहिदीन्ह करि नेहू
गुणमञ्जरी सहित भगवन्ता ❀ रह्यो शेष पुनि बर्ष प्रयन्ता
सर्प दया करि तहँ पहुँचाये ❀ गजपुर धर्मराजपहँ आये
समाचार सुनि परम अनन्दा ❀ रक्षा तुम कीन्ही ब्रजचन्दा
मन्त्र हमार सुनिय यदुनायक ❀ कुरुपति निधनकरनके लायक

दो० बिनकारण काढ़े विपिन, कीन्हेसि शठ अपकार ।
ताते कीजिय अवशिरण, यह मत नाथ हमार ॥

भीम बचन सुनि पुनि सहदेवा ❀ कही नाथ सुनिये जगदेवा
उन हमार कीन्हो अपमाना ❀ नाथ तुम्हार भेद सब जाना
केशाकर्षण शठ अपकारी ❀ सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी
भीषम द्रोण कर्ण के आगे ❀ रक्षक कानि न कीन्ह अभागे
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत ❀ सुमिरि सुमिरि अजहूं उर शूलत
भूप बचन गजपुर कहँ जैये ❀ हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये
सोवत जागत शरण तुम्हारी ❀ बनै सो करिय उचित बनवारी
श्रुतिकीरति सो धाम सतायो ❀ सन्तानिकमिलि बचनसुनायो
युत प्रतिबिम्ब कृष्ण के आगे ❀ क्रोधित बचन कहन सब लागे
द्रुपदसुता कह खल अभिमानी ❀ नाथ तुम्हारि बात सब जानी

तातें और बिचार न करहू ❀ अब प्रभु दुर्योधन ते लरहू
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो ❀ सहितबिराटशिखण्डीभाख्यो
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना ❀ अभिमन्यु काशिराजमनमाना
दो॰ धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबनकरो मत ठीक ।
शूरसेन यहि विधि कह्यो, और विचार न नीक॥
मैं हरि कहत आपने जीकी ❀ है बिनु युद्ध बात नहिं नीकी
धर्मराज वहि शठ अपमाने ❀ तुम समेत निर्बल करि जाने
और बात सब तजि घनश्यामा ❀ तातें करिय अवशि संग्रामा
कहत नाइ शिर बचन घटूका ❀ सुनिये नाथ क्षमाकरि चूका
पाण्डव सहित अछत गोपाला ❀ द्रुपदसुता पुनि फिरत बिहाला
दो॰ छलकरि दुर्योधन अधम, काढ़ेसि हमहिंबिदेश।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी, गहे दुशासन केश ॥
तेरह वर्ष गई हरि बीती ❀ सुधि न लई केहु निपट अनीती
पाण्डव सबल जान संसारा ❀ तुम ईश्वर बसुदेव कुमारा
तिनते कछु निसरेउ नहिं काजा ❀ भै बड़िलाज सुनहु ब्रजराजा
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ ❀ द्रुपदसुता को शोक निवारौ
कोटिहु यतन रहौ जनि बरजे ❀ गरजत देखि चराचर लरजे
धर्मराज तब क्रोध निवारो ❀ कहि प्रिय बचन निकट बैठारो
सबलायक तुमको हम जानत ❀ है बड़ पाप गोतके मारत
हे हरि सम्मत कहत पुकारे ❀ होइ नाथ भल मन्त्र हमारे
दो॰ सुने बचन नरपाल के, द्रुपदसुता अकुलाइ ।
बोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिरनाइ॥
क्रूर शूर नहिं भूप हमारा ❀ जानत तुम यदुबंश कुमारा
गहिकै केश सभा शठ आनी ❀ मानत सो न कछुक गिलानी
इन ते होत भली सो नारी ❀ रोदन करत पुकारि पुकारी
तौ कछु बोध हिये हरि होई ❀ सभामध्य वहि खल निदरोई
पुरुषाकार पाण्डुसुत नारी ❀ इनके बल रोंपत महिरारी

अभिमन्युआदि सप्त सुत मोरे ❀ करिहैं विजय दास प्रभु तोरे
ममगति देखि लाज पञ्चालहिं ❀ डरैं न कछु निडरैं रणकालहिं
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे ❀ भये कुण्ड ते संग हमारे
रण महँ लरैं टरैं नहिं टारे ❀ करिहैं विजय प्रसाद तुम्हारे
युधामन्यु मम बन्धु तमोजा ❀ नाम शिखण्डी नयन सरोजा

दो० ममगति देखि सलज्ज सब, करिहैं कठिनमशान।
अस कहिकै पुनि द्रौपदी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
युधिष्ठिरश्रीकृष्णसंवादोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

कहेउ धनञ्जय सुनिये श्रीहरि ❀ काढ़ेसि धर्मराज हीने करि
सब प्रकार जानत जगवन्दन ❀ छली व छली अधमकुरुनन्दन
कपट अस शकुनी निर्मायो ❀ करि छल कीन्हें जूप हरायो
औरो छल कीन्ह्यसि भगवाना ❀ सो चरित्र सुनिये दै काना
कुरु पाण्डव बालक सब भीरा ❀ खेलत रहे गङ्ग के तीरा
विषमोदक भीमहिं तहँ दीन्हो ❀ तबते हम प्रतीति तजि दीन्हो
धर्मराज बन गयउ शिकारा ❀ श्वानसंग सुत तुरँग सवारा
परम अकिंचन विप्र बोलायो ❀ विषमोदक तेहि हाथ पठायो
स्वर्ण सप्तदश दीन अकोरा ❀ पठयहु करहु परमहित तोरा
मोदक धर्मराज कहँ दीजै ❀ पठये हैं कुन्ती कहि दीजै

दो० अशन करायो यतनकरि, कह्यो न नाम हमार।
करि विनती पठये द्विजहिं, जहँनृपफिरताशिकार॥

जान्यो भेद न द्विज तहँ आयो ❀ धर्मराजते आनि सुनायो
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी ❀ मोदक तुमहिं दियो निजपानी
क्षुधित जानिकै मोहिं पठायो ❀ करहुअशनअसकहिसमुझायो
परम गहन बांधेउ नृप घोरा ❀ बैठे बिटप छाहँ घन घोरा
क्षुधित तृषाते विकल शरीरा ❀ जानि निवास जलाश्रय तीरा
भोजन तुरत करन नृप लागा ❀ विषगा छहरि देखि द्विजभागा

त्राहि त्राहि करि हृदय डराना ❀ छलकीन्हेसि शठमैं नहिं जाना
तृषावन्त नृप त्रिप की पीरा ❀ परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा
विकल विलोकि कृपाप्रभुकीन्हो ❀ उदक पिआइ त्रास हरिलीन्हो

दो० निकसिततक्षण भूमिते, जल भाजनयुत हाथ।
पान करायो हरि तृपा, करी कृपा यदुनाथ॥

जल पिआइ फेरे तन पानी ❀ मिटी तृषा तन ताप बुझानी
छलकरणी मैं तुमहिं सुनाई ❀ वनकी सुनहु बात यदुराई
वन काढ़ेसि शठ करि अपकारा ❀ निधनहेत नित करै विचारा
दूत आय यह बात जनाई ❀ बनमहँ निकट युधिष्ठिरराई
परम दीन द्विज वेष बनाई ❀ बसहिं विपिन पर्णशालाछाई
भोजन कबहुँ मिलै कहुँ नाहीं ❀ बसन मलिन जीरण तनमाहीं
तेजहीन तन बिकल बिशेखी ❀ आयों नाथ आजु मैं देखी
दूतवचन सुनि अति सुखपाये ❀ बिहँसि सचिवसबनिकटबोलाये

दो० चरबर आयो सुनु सचिव, धर्मराज कहँ देखि।
कह्यो सेन लैकै चलौ, भोजनहीनबिशेखि॥
कबहुँ खातहैं मूल फल, कबहुँक अँचवतनीर।
निर्बल भयो शरीर सब, टूटी पर्णकुटीर॥

सबमिलिचलौ सेनसजिजाइय ❀ मानभङ्ग उनको करि आइय
असकहि चलेउ तुरत कुरुनायक ❀ सेन साजि कर्णादि सहायक
पर्णकुटी ढिग खल चलि आयो ❀ सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो
देखि अनीति सुरेश रिसाना ❀ चलेउ चित्र तव साजि बिमाना
शरनमारि दलव्याकुलकीन्ह्यासि ❀ दुर्योधनहिंबाँधिपुनिलीन्ह्यासि
करि निबन्ध लैगयो अकासा ❀ आरत शब्द करत मन त्रासा
नृपति धनञ्जय आनि छड़ायो ❀ शरन मारि गन्धर्व भजायो
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी ❀ बलकी बात नाथ सब जानी

दो० सहि न सकत प्रभु एकक्षण, रोवत द्रुपदकुमारि।

हनौं नाथ कुरुनाथ कहँ, बाणशरासन धारि ॥
अस कहि भयो विलोचन राते ❀ मोचत खुलत मनहुँ मदमाते
जीभनिकारि अधर पुनि चाटत ❀ फरकत जात दशनते काटत
मुखद्युति अरुण कुटिल भइ भौहैं ❀ श्वासलेत जिमि व्याल रिसौहैं
क्रोध विवश अर्जुन कहँ जानी ❀ बरजत भूप कहत मृदुबानी
अपनी दिशिते चूक न करहू ❀ मानै जब न बन्धु तब लरहू
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई ❀ जाय उनहिं देवैं समुझाई
जो वह देइँ गाउँ दुइ चारी ❀ रहउ चुपाइ नीकि नहिं रारी
सुनत बचन द्रौपदी रिसानी ❀ हे नृप फेरि कही यह बानी
ममगति देखि न आवत लाजा ❀ निपट अनीति सुनहु ब्रजराजा
दो० विकल विलोक्यो द्रौपदी, करि प्रबोध यदुराय ।
जो तुम्हरे मन भावना, सो हम करब उपाय ॥
यहि बिधि कहि यदुनाथ बुझाई ❀ करि प्रबोध पुनि भवन पठाई
नृपसन बिदा मांगि भगवाना ❀ सात्यकि सहित चले चढ़ियाना
पठवन चले नकुल हरि साथा ❀ स्यन्दनकी पटिका गहि हाथा
विनयकरतनिजबिपतिसुनावत ❀ पुनिपुनिचरणकमलशिरनावत
फिरेउ तात हरिसुख सुनि बानी ❀ बोले नकुल ढरत दृगपानी
गदगद कण्ठ गरे भरि आवा ❀ ऊर्ध्वश्वास लै बचन सुनावा
कौरवपति अतिकीन्ह अनीती ❀ वर्ष त्रयोदश बनमहँ बीती
केश पकरिकै शठ अभिमानी ❀ द्रुपदसुता मन्दिर ते आनी
मारन कह्यो भीम मन रूठी ❀ हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी
दो० क्षत्री है प्रण भाषई, फिरि न करै ब्रजराज ।
विदित सकलसंसारमहँ, यातेअधिक न लाज ॥
सभामध्य सुनिये भगवाना ❀ करि रिस द्रुपदसुता प्रण ठाना
दुश्शासन के रक्त नहाई ❀ बांधब कच तब कृष्ण दोहाई
मृषा न प्रण करिहैं निज रानी ❀ सो दुख समुझि सुदर्शनपानी
रहत नाथ मन मोर मलीना ❀ धर्मराज पुनि राज बिहीना

तेहि दुखते दुख अति भगवाना ❀ सो अब कहौं सुनिय दै काना
वृद्ध मातु परघर प्रतिपालक ❀ यथा अनाथ होत बिन बालक
पञ्च पुत्र जेहि सब परिवारा ❀ भ्रातजात तुम हरि अवतारा
सो कुन्ती ऐसो दुख पावत ❀ हे हरि नेकु लाज नहिं आवत
अर्जुन कहेउ कर्ण कहँ मारण ❀ तेहि प्रण के रक्षक जगतारण
मन्त्र हमार सुनिय यदुराई ❀ मिटै कलङ्क सो करिय उपाई
दो० हम देखत शठ द्रौपदी, आनीसभानिशङ्क।
खण्डियअरिरणमण्डिकरि, तबयहमिटैकलङ्क॥
असकहिनकुलचरणशिरनावा ❀ करि प्रबोध हरि कण्ठ लगावा
बिहँसि बचन भाष्यो बनवारी ❀ पूजी मन कामना तुम्हारी
मिटिहैं सब सामर्थ कलेशा ❀ धरहु धीर तजि सकल अँदेशा
धर्मशील को कबहुँ अकाजा ❀ होय न नकुल कहत ब्रजराजा
पापिन को सुख स्वप्न समाना ❀ जानहु तात न ठीक ठिकाना
वो अनीतिरत नीति न जानत ❀ तृणसमान त्रैलोकहि मानत
धर्मशील है भूप तुम्हारा ❀ गति अलीक जानत संसारा
नीतिनिपुण मम भक्त प्रवीना ❀ सुर महिसुर गुरुपद मतिलीना
ऐसेन को नहिं होत अकाजा ❀ यहिविधि करि प्रबोध ब्रजराजा
अब बिलम्ब नहिं दिनदशबीते ❀ करिहौं काज तात मन चीते
भये मुदित सुनि श्रीपति बानी ❀ प्रीति प्रतीति न जाय बखानी
दो० भयो बिदा मन हर्ष अति, पद गहि गोकुलचन्द।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नँदनन्द॥
इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥
फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई ❀ सात्यकि सहित चले यदुराई
नगर बारणावर्त्त बसेरा ❀ कीन्हजाइ हरि जाइ अबेरा
हरि सुधि पाइ सकल पुरबासी ❀ आये मिलन ज्ञानगुणरासी
बिबिधप्रकार कीन्ह सतकारा ❀ जोरिजोरि कर हरिहि जोहारा

बहुत भाँति कीन्हे पहुनाई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई
तेहि निशितहां शीलगुणधामा ❀ सात्यकि सहित कीन्ह बिश्रामा
अरुणचूड़ अरुणोदय बोले ❀ कमलविलोचन लोचन खोले
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो ❀ दारुक बाजि साजि रथ लायो
पुरजनसकल बिदा हरि कीन्हो ❀ भोर भये पुनि मारग लीन्हो
नाना भांति कहत इतिहासा ❀ चलेजात मग सहित हुलासा

दो० पूछेउ सात्यकि जोरिकर, सुनहु रुक्मिणीरौन ।
भारत पद कुरुवंश को, कहौ सो कारण कौन ॥

बोले बिहँसि बचन यदुराई ❀ पूरब कथा सुनहु तुम भाई
यहि कुल भयो भूप दुष्यंतू ❀ शील सनेह सत्यनिधि सेतू
सो शकुन्तला बिदित न काही ❀ भूप बिपिन महँ ताहि बिवाही
भरत नाम तिन सुत उपजायो ❀ भारत सब शशिवंश कहायो
हँसि बोले सैनेश कुमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा
स्वल्प कहे मन बोध न होई ❀ गुप्त कथा जानि राखौ गोई
तब हरि चित्रविचित्रकहानी ❀ लगे कहन सुनि सात्यकिबानी
सावधान मन थिर करि भाई ❀ अब तुम सुनहु कथा सुखदाई

दो० चन्द्रवंश महँ आइ नृप, प्रकट भयो दुष्यन्त ।
तिनके गुण बर्णन करत, कबिपण्डितशुचिसन्त ॥

जनु रचना निज बिश्व सँवारी ❀ रचि बिरञ्चि तेहि दै करतारी
कामकला अबला मन जानहिं ❀ काल समान शत्रुको मानहिं
प्रजा जानि मन पूरण लाहू ❀ सदा उछाह करत सबकाहू
द्विजगण धर्म केर अवतारा ❀ जानहिं हृदय अनन्द अपारा
कुल के बृद्ध स्वल्प सूजाने ❀ सेवक सेवहिं नृपहिं डराने
जाके राज्य अनीति न होई ❀ प्रजा प्रसन्न जान सब कोई
साम दाम पुनि दण्ड बिभेदा ❀ करैं भूप जिमि बरणै बेदा
अतिथि क्षुधारत की सुधिलेई ❀ यथायोग याचक कहँ देई
सुनिसमबुधि बिवेक जिमिहंसा ❀ सुर सिहात करि भूप प्रशंसा

दो० कल्पवृक्षसम दानकहँ, कीरति शशि अवदात ।
भानुसमानप्रतापजग, अधिकअधिकसरसात ॥

राजसूय आदिक विधि नाना ❀ कीन्हे भूप दये बहु दाना
करे अमित जिन यज्ञ अरम्भन ❀ पूरि रहे पुहुमी महँ खम्भन
तासु तेज रवि उदय बिलोके ❀ नृपकिरीट सब कुमुद सशोके
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं ❀ तनसमीप जिमि तनपरछाहीं
वञ्चक चोर उलूक समाना ❀ हेरत मिले न ठीक ठिकाना
सुजन कमल फूले बहुभांती ❀ खलमलीन जिमिउडुगणपांती
भये कोकनद बनिक बिशोका ❀ सुरपूरण बिलसहिं निजलोका
जीवबन्धु सम मित्र सुखारे ❀ फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे

दो० नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्काहार ।
हिमगिरिकी कैलासकी, किधौं देवसरि धार ॥
शरद चन्द्र की चन्द्रिका, मानहुँ करत प्रकास ।
धवलध्वजासी देवपुरि, ऊपर करत बिलास ॥

कुन्द कलीसी कुमुद कलीसी ❀ हाटकसी बगपांति भलीसी
क्षीर फेनु सी गङ्ग रेनुसी ❀ बासुकिसी सुरपति कि धेनुसी
कामधेनुसी फटिक शिलासी ❀ बेलासी करपूर बिलासी
गणपतिसी हरसी गिरिजासी ❀ कीरति बिशद नदी बिरजासी
शांति सत्यसी संतबसनसी ❀ उदधि उदधसी द्विरददसनसी
की तुषार की तरणि तरङ्गा ❀ किधौं बिष्णुतन बिशद कुरङ्गा
नृपतिकीर्ति जनु श्वेतबिताना ❀ भरतखण्डमण्डल महँ ताना
दान ज्ञान दौखंभ बिभागे ❀ नाना सुत सिरसाकसि लागे
बुधि कनात हरिभक्त चँदोवा ❀ हिंसायुत परदा तहँ जोवा
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा ❀ गुण अनेक को बरणै पारा
अपर कथा अब कहौं बुझाई ❀ चितदै सुनहु श्रवणसुखदाई

दो० कथा भूप दुष्यन्त की, भाषी चित्र बिचित्र ।
ज्यहिबिधिभई शकुंतला, सो अबसुनहु चरित्र ॥

विश्वामित्र महामुनि आये ❀ करत विपिन तप ध्यान लगाये
तहँ मेनका रूप गुण रासी ❀ जात गगनपथ देवविलासी
भूषण वसन विभूषित अङ्गन ❀ गावत राग बसन्त तरङ्गन
वीण बजावत ताल अभङ्गन ❀ निर्त्तगति संगीत उमङ्गन
फूलनको गजरा जु तरङ्गन ❀ उठत सुगन्ध समीर प्रसङ्गन
मुखते मोल कपूर लवङ्गन ❀ अलि गुञ्जतसँग अरगप्रसङ्गन
मुनि समीप उतरी सो आई ❀ करी कलान समाधि जगाई
देखि मेनकाहि विकल शरीरा ❀ मुनिमन भयो मनोभव पीरा
बहुतवार लगि रह्यो निहारी ❀ सुधि न रही तनसुरति बिसारी
वीण बजाइ मधुरस्वर गावत ❀ खेलत फाग गुलाल उड़ावत

दो० मुनितिय ऋषिपतियगाधिसुत, निरखत बारहिंबार।
विकल युगल तन काम बश, भूलो सब आचार॥

विश्वामित्र मनोभव जीता ❀ वर्ष एक सम बासर बीता
भई निशा सो मुनि ढिगआनी ❀ करि ढिठाइ तनमहँ लपटानी
जङ्घ जङ्घ सों कटि कटि जोरी ❀ उरसे उर मुनिमति भइ थोरी
अधराधर ऊपर रद दीन्हा ❀ करि चुम्बन आलिङ्गन कीन्हा
करि विपरीत सुरति बहुभांती ❀ द्वादश मास गये जनु राती
भये विकल तब मन सुधि आई ❀ खोयो तप बहु कीन भोगाई
रतिकरिकै मुनिवर पछिताने ❀ त्यहि वनते कहुँ अनतपराने
भई सुता बीते नौ मासा ❀ गई डारि सो सुरपति पासा
एक बार नहिं क्षीर पियाये ❀ रोदन करत क्षुधा तन छाये
दीन शब्द सुनि मुनिवर आई ❀ तृणशाला लै जाइ जिआई
सुनि उतंग कीन्ही प्रतिपाला ❀ भई तरुणि बीते कछु काला

दो० सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द।
दिनदिनद्युतिबाढ़ीअधिक, जिमिद्वितियाकोचन्द॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

तनसे निकसिज्योतिद्युति भारी ❀ फैलिरही चहुँ दिशि उजियारी
लाजसहित चपअरुण नुकीली ❀ करुणामय सब भांति छबीली
अञ्जन दै दृग रञ्जित कीन्हे ❀ खञ्जन की उपमा हरिलीन्हे
मृग निजदृगपटतर नहिं जाने ❀ लाजमानिमन बिपिन छिपाने
त्रियदृगकरत कमल करि कोऊ ❀ मम मनमें भासित नहिं सोऊ
कमलज फूल तज्यो तन ताहू ❀ ऐसि ज्योति मोहत सबकाहू
नासा सुभग अनूप सज्योती ❀ जगमगात नथबेसरि मोती
नाक समीप मोद अधिकाई ❀ गुरु कबि मन्त्र करत मनलाई
आनन सुभग चन्द्र मदहारी ❀ अधरप्रबाल लाल सुखकारी
भृकुटी बाम श्याम अहिछौना ❀ शशिसमीप जनु रचे खिलौना
कच मेचक तल श्रुति ताटङ्का ❀ घनघमगड दामिनी दमङ्का
अधरबीचद्युतिदशन बिभांती ❀ जनु बिद्रुम मुक्ताहल पांती
करि न सकतकविकण्ठलुनाई ❀ फिरिनरच्योबिधिकरिनिपुणाई
भुज मृणाल भूषण सब अङ्गा ❀ देखि अनङ्ग नारि मन भङ्गा
अति उन्नत कठोर बक्षोजा ❀ गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा
कटिसूक्षम कचअँगुली परना ❀ नखअतिअरुणलालद्युतिहरना

दो० अतिसूक्षम मृदुउदरपुनि, पुनिअमोलअभिराम।
उपमा कहत बिचारि जनु, रच्यो दुलीची काम ॥
जङ्घथम्भ सम कदलिके, उन्नत सुभग नितम्ब ।
अतिसुन्दर पिंडुरी लखे, करत मदन आलम्ब ॥

अम्बुज सम कर पद अरुणारे ❀ थिर न बुद्धि मोरवान निहारे
तन मन काम सरिस उजियारा ❀ मनहुँ दीप ते दीपक बारा
एक समय दुष्यन्त नरेशा ❀ देखि चकित भे अदभुतभेशा
मृगया फिरत बिलोकत राजा ❀ बिहरत बिपिन करततनसाजा
भयो कामबश ताहि बिलोकी ❀ चितवतचकितनयनजलरोकी
देखि स्वरूप नराधिप फूले ❀ जनु मनमथहि डोल कढ़ि भूले
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे ❀ कबहुँ उरध मन कबहूँ नीचे

करत विचार नरेश सुजाना ❀ भियवश भयो हरे विधि ज्ञाना
रम्य अरम्य जानि नहिं जाई ❀ समुझिसमुझिनृपमनपछिताई
द्विजकुमारि की भूपकिशोरी ❀ मनमथविवश करी मति भोरी
विप्रसुता तब बात अयोगा ❀ सुनि परन्तु हँसिहैं सबलोगा
दो० भूप सुता जो होइ तब, बनिआई सब बात ।
होइअगम्यतबनीकनहिं, समुझिसमुझिपछितात ॥
विस्मय हर्ष विवश नरनाहू ❀ धरि धीरज मन करत उछाहू
मैं अपने मन की गति जानत ❀ कबहुँअसतपथपदनहिंआनत
इत विधि रच्यउ मोर संयोगा ❀ योग त्यागि नहिं होइ अयोगा
मन्मथ विवश भूप कहँ जानी ❀ तब यह भई गगनपथ बानी
विश्वामित्र मेनका नारी ❀ भा विहार भइ प्रकट कुमारी
सो शकुन्तला सब गुण खानी ❀ तुम नरेश होई यह रानी
गाधिसुवन क्षत्रीकुल माहीं ❀ जानत सब अयोग कछु नाहीं
मुनि उतङ्क कीन्हा प्रतिपाला ❀ गगनगिरासुनि मगन भुवाला
निकट गये नृप बिवशअनङ्गा ❀ प्रेम सहित करि चपल तुरङ्गा
दो० पूछेउ नृप कित बनफिरत, का पुनि नाम तुम्हार ।
सुता अलौकिक कौनकी, मन वश करे हमार ॥
बोली बिहँसि शकुन्तला, सुनिये भूप प्रसंग ।
तुम क्षत्री हम विप्र की, सुता मनोहर अंग ॥
मुनि उत्तंग विदित सुखरासी ❀ तासु सुता मैं विपिनविलासी
अगम सदा क्षत्रीकुल माहीं ❀ बात अयोग उचित नृप नाहीं
तासु गिरा सुनि कहउ नरेशा ❀ जनि बोलहु अस बचन अदेशा
विधिसुत अत्रि विदित संसारा ❀ भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा
शशिसुतबुध बुधसुत जगजाना ❀ इला पुरूरव नाम बखाना
त्यहि कुल भयो मोर अवतारा ❀ सम संयोग हमार तुम्हारा
जिमिरतिकामशचीसुरनायक ❀ जलदयथादामिनि सुखदायक
तिमि संयोग हमार तुम्हारा ❀ बुद्धि विचार रचेउ करतारा

तव स्वरूप सुन्दर जलरासी ❀ मगन होत कुरुपार बिलासी
दो० तुमहिं बिलोकत कुसुमधनु, लिये कुसुमशर हाथ।
तिलतिल तन जर्जर करेउ, ह्वै सकोप रतिनाथ॥
तव त्रिय रूप ठगोरी डारी ❀ मन्दहास जनु फांस पँवारी
असिपुत्रिका कटाक्ष अमोला ❀ करषत प्राण मन्त्र मिठबोला
विषमोदक कपोल युग तोरे ❀ निरखत छहरिगयो तन मोरे
अधर सुधारस मोहिं पियावउ ❀ करि करुणा अबवेगिजियावउ
तुम बिन मैं न जियउँ घटिकाहू ❀ समुझत अब न बहुरिपछिताहू
मूरि बिशल्य करन कुच तोरे ❀ परसत मिटै बिथा तब मोरे
संजीवनी तोर सम्भोगा ❀ रहै न काम जो नितमहँ भोगा
है यह योग अवर कोउ नाहीं ❀ ताते बिनय करत तुम पाहीं
दो० नयन बयन तन मिलि रहौ, रही मिलन कहँ देह।
सो मिलाइ असनेह ते, त्यागहु सब सन्देह॥
कहेउ उतङ्क सुता सुनु राजा ❀ धीरज धरे सरै सब काजा
पितुआयसु बिन यह बड़ि हांसी ❀ रहौ चुपाइ जानि निजदासी
कह नृप और बिचार न कीजै ❀ अङ्गदान हितकरि मोहिं दीजै
नैनबैन मिलि मिलेउ सनेहा ❀ यह अभिलाष मिलै सब देहा
सुनि सालज्ज उतङ्क किशोरी ❀ बोली मधुर गिरा करजोरी
तन इत मन तुम्हरे मन साथा ❀ करि सङ्कल्प रहत नरनाथा
कछु दिन में करिहैं जयमाला ❀ बोलि पिता मुनिदेव भुवाला
डारब सुमनमाल तव ग्रीवा ❀ होइ बिवाह रहै श्रुति सीवा
तुमकहँ देह देइ हम राखी ❀ तजो शोच नृप सबसुरसाखी
दो० रचेउ बिरञ्चि बिचारिकै, मोर तुम्हार बिवाह।
तुम तजि करहुँ न आनपति, धरहु धीर नरनाह॥
श्रीहरि हरगिरिजापति आना ❀ बरहुँ तुमहिं की त्यागहुँ प्राना
भजौं न आन पुरुष तन छूटै ❀ पितु निदेश तजि पी कलकूटै
बूड़ौं बारि अनल तन जारी ❀ बरौं तुमहिं की रहौं कुमारी

सुनि प्रियबचन तुरँगतजिदीन्हा ❀ तहँ गन्धर्वब्याह करिलीन्हा
काम बिवश नृप ज्ञान भुलाना ❀ आलिङ्गन कीन्हो बिधिनाना
शकुन्तला निज नाम बतावा ❀ पुनिनृपगमनि भवनकहँआवा
तब शकुन्तला मन्दिर आई ❀ दोहद भयो शोच अधिकाई
सो चरित्र मुनिनायक जाना ❀ जोकछुभयो सकलधरिध्याना
पूँछेउ ऋषै सर्व कहि दीन्हा ❀ जिमिगन्धर्वब्याहनृपकीन्हा

दो० धीरजदियो शकुन्तलै, उत्तम कुल नरनाह ।
यामें सुता कलङ्क नहिं, करिलीन्हो तुम ब्याह ॥

ताके भयो भरत महिपाला ❀ धर्मशील बलबुद्धि बिशाला
षोड़श बर्ष भयो नरपालक ❀ खेलहिंबिपिनब्यालसँगबालक
महिष शृङ्ग धरि कबहुँ उखारैं ❀ कबहूँ अँगुलि ब्यालमुखडारैं
सिंह लूम धरि कबहुँ भ्रमावैं ❀ द्विरदमतङ्ग गहि दशननलावैं
अदिति कुमार पुरन्दर जैसे ❀ सुत शकुन्तला जायो तैसे
अनसूया के यथा निशाकर ❀ कश्यपके जिमि भये प्रभाकर
रवि के मनु मनुतनय प्रियब्रत ❀ तिमि शकुन्तलातनय धर्मब्रत
तरणि समान तेज तन माहीं ❀ बल पटतरिय बली कोउ नाहीं
धनुर्बेद मुनि ज्ञान पढ़ाई ❀ अस्त्रशस्त्रसिखि करि निपुणाई
राज्यनीति बहुभांति पढ़ायो ❀ हयगयरथहि सो युद्धसिखायो

दो० पढ़ौ किधौं मुनि चटसारमहँ, खेलन जाइ शिकार ।
सबलसिंह चौहान कहि, सुनि मनमोदअपार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

राज्य योग सब लक्षण जानी ❀ निकटबोलाय कहतमुनिज्ञानी
पितु तुम्हार शशिबंश नरेशा ❀ नृप दुष्यन्त सब जानत देशा
अतिबलिष्ठ दुहिता सुत मोरा ❀ सकल धरा मण्डल है तोरा
भूपति रहै कृपा अभिलाखे ❀ रहै सुरेश जासु रुख राखे
तुम पितुसभा अलौकिकलीला ❀ बसै दिगीशनकेर उकीला

सोमवंश महँ जन्म तुम्हारा ❁ अत्रि गोत्र जानै संसारा
इला पुरूरव पितामह नामा ❁ तेज निधान शूर बलधामा
पितु गृह चलहु करहु निजराजू ❁ सहित धरा धन सेन समाजू
पुनि बहिक्रम भूप बुढ़ाना ❁ औरनसुत तुमकहँ नहिं जाना
चिन्ता बिबश भयो नृप अङ्गा ❁ प्रातहि तात चलहु मम सङ्गा
तुमहिं बिलोकि भूप सुख पाइहि ❁ राज्य देइ पुनि कानन जाइहि
तपचर्या की करत बिचारा ❁ सुतहित बिपिन न जाइँ भुवारा
तुमहिंबिलोकित्यागि सबशूला ❁ नृप तपकरहिं सहित अनुकूला

दो॰ प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ ।
सुखी करहु दुष्यन्तकहँ, होहु पुत्र नरनाथ ॥

अस कहि पुनि मुनि सेवनलागे ❁ उदित होत उदयकर जागे
सुत शकुन्तला सहित पयाना ❁ कीन्ह कहा मुनि ज्ञाननिधाना
आये चन्द्रबंश रजधानी ❁ दरशन दीन्ह सभामहँ आनी
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा ❁ दीन्हअशीश मुनीश अकामा
अर्घ देत आसन बैठारे ❁ है प्रसन्न तब बचन उचारे
सुनहु भूप यहु भरत कुमारा ❁ तनय तुम्हार बिदित संसारा
असकहि पुनि प्रणाम करवावा ❁ प्रीतिसहित निजढिग बैठावा
देखत भूप भरत की ओरा ❁ अतिसुन्दरतन बयसकिशोरा

दो॰ बृषभकन्ध दीरघभुजा, दीरघ बक्ष बिशाल ।
चन्द्रबदन कटि केहरी, कमलबिलोचनलाल ॥

कछु शिशुता कछु तन तरुणाई ❁ सहित बीरता कढ़त लोनाई
तब शकुन्तला सभा मँझारी ❁ आई तुरत दिशा तम हारी
नृपहि देखि मनहीं मन माहीं ❁ कीन्ह प्रणाम प्रकट कछु नाहीं
देखत चकित सभा सब कोई ❁ शची किधौं रम्भा रति होई
मञ्जुघोष मेनका घृतासी ❁ बिश्वमोहनी कुलकी रासी
प्रभा सरस शोभा तन जाके ❁ नहिं तिलोक पटतरमहँ ताके
जातनकी सुन्दरता ताकी ❁ सलज होत उरबशी बराकी

की रोहिणी किधौं अनुसैया ❀ अरुन्धती की उदित जोन्हैया
दो० रहेमौन नहिंकहतकछु, शोभा बिपुल निहारि ।
देखी भूप शकुन्तला, पहिंचानी निज नारि ॥
कह नृप कौन कहां ते आई ❀ बोली मधुर गिरा शिरनाई
करत हँसी की बिन पहिंचाने ❀ पूछत नाथ कि हमहिं भुलाने
भूली सुरति भई मति भोरी ❀ मैं शकुन्तला अनुचरि तोरी
दृग नीचे करि कहत सलाजा ❀ बनमहँ मिली समुझ मन राजा
जहां उतङ्क केर पर्णशाला ❀ परमगहन सुधि करहु भुवाला
नदी पुनीत तरणितनया तट ❀ सुन्दर सुखद छांह शीतलबट
नाम बताय भवन तुम आयो ❀ करिप्रबोध मोहिं भवन पठायो
भरत जन्म की कथा सुनाई ❀ तुम्हरे दर्शहेत इत आई
यह लालसा न दूसर काजा ❀ छांड़ी बिपिन भूल सुधि राजा
दो० देखी सुनी न मैं कछु, बिहँसिकहीमहिपाल ।
सुनहुसभासदमिलिसकल, मृषा कहत यह बाल ॥
यह त्रिय रत्न पुरुष के लोभा ❀ सानत मोहिं चहत निज शोभा
बारवधू की गति पहिंचानी ❀ है कुलटा मन में मैं जानी
सुनि शकुन्तला कह मनमाखी ❀ तब नरेश दीन्हों सुरसाखी
पतिव्रत जो छांड़ौं मैं नाथा ❀ तौ तुम करौ खण्ड शतमाथा
अस कहि पतिव्रता रिसवाई ❀ कहत सुरनते भुजा उठाई
सुनत श्रवण तुम देत न साखी ❀ ह्वैहै तेज हीन बिन आंखी
सुनि यह पतिव्रता भय माना ❀ भई गगन सुर गिरा प्रमाना
सम संयोग कलङ्क बिहीना ❀ अतिपुनीत नृप नारि प्रवीना
भरत नाम यह तनय तुम्हारा ❀ करहु भूप तुम अङ्गीकारा
दो० सुनहु नरेश शकुन्तला, सब बिधि सम संयोग ।
भइ सुरगिरा प्रमाण नभ, सुनि हर्षे सब लोग ॥
सकल सभासद निकट बोलाई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई
कहत सुनाइ सबन ते राजा ❀ गगनागिरा सब सुनहु समाजा

है शकुन्तला मम पटरानी ❀ निश्चय भरत पुत्र सुखदानी
लोक बेद ते नारि कुमारा ❀ कीन्ह प्रथम नहिं अङ्गीकारा
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने ❀ तरुणत्रिया अरुसुत बिन जाने
राख्यो गृह बड़ि कीन्ह ढिठाई ❀ अस बिचारि सुरगिरा सुनाई
प्रथमहिं भई बिपिन नभबानी ❀ करि बिवाह तब कीन्ही रानी

दो० असकहिभूपशकुन्तला, दीन्ही भवन पठाइ ।
बैठारे पुनि मोदते, भरत समीप बोलाइ ॥

कह नरेश तब सुनहु उतङ्का ❀ कहिये नाथ मिटै आशङ्का
देवन सम संयोग बखाना ❀ क्यहि प्रकार ते मैं नहिं जाना
सुनि उतङ्क मोदक अधिकाई ❀ कथा प्रथम मुनि बरणि सुनाई
तुम शकुन्तलहि मुनिबर भाखी ❀ सुनहु भूप बिधि ते षटसाखी
एकै भांति प्रकट भय दोऊ ❀ कथा बिचित्र सुनहु नृप सोऊ
बिधि युत कुश जानत संसारा ❀ प्रकट करे कुश नाम कुमारा
तिनके गाधिराज बलखानी ❀ अङ्गदेश कीन्हीं रजधानी
कौशिकतनय कौशिकी नामा ❀ तनया बिदित शीलगुणधामा
काम बिपिन तप कीन्ह महाना ❀ भई पुनीत नदी जग जाना
कौशिकमुनितनजनित अनङ्गा ❀ भई सुता मेनका प्रसङ्गा

दो० सोजगबिदितशकुन्तला, सबबिधिसमसंयोग ।
भये तुम्हारे भूप अब, अरधसिंहासनयोग ॥

सुनहु कथा चित लाइ नरेशा ❀ निजकुलकी सबत्यागि अँदेशा
कीन्ह बिरञ्चि अत्रिसुतनामा ❀ तपमूरति मुनिबर गुणधामा
भे जग बिदित चन्द्रसुत ताके ❀ निशितम रहत कण्ठतरजाके
अमियमयी अरु सुरपति भीता ❀ धरो शीश शिवजानि पुनीता
सप्तबिंश त्रिय जग उजियारी ❀ अतिप्रिय तिनहिं रोहिणीनारी
तिनके सुत बुध बुद्धिनिधाना ❀ भये सौम्यग्रह सब जग जाना
इला पुरुरवा भय बुध बालक ❀ अतिबालिष्ठश्रुतिपथप्रतिपालक
भयो कामबश चेत न आवा ❀ बिपिन फिरत उरबशी भ्रमावा

देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ ❀ बिसरी देह कामबश भयऊ
हँसि दरशाइ बिलोचन तीछे ❀ चली पराइ चला नृप पीछे
नगिन शरीर नगिन तरवारी ❀ हा उरबशी पुकारि पुकारी

दो० प्रकटहोइ कहुँ निकट होइ, कबहुँ जाइँ द्रुमओट ।
कबहुँ दिखावत हास मृदु, कबहुँ करत दृगचोट ॥

कबहुँक प्रकट होत त्रिय आगे ❀ चले जात नृप पाछे लागे
निकटबिलोकि गगन उड़िजाई ❀ दूरि देखि पुनि देइ दिखाई
कबहुँ बाम दक्षिणदिशि पूरा ❀ राग अलाप बजाइ तँबूरा
यहि बिधि गगन बीच लै जाई ❀ अमितनिहारि प्रीतिअधिकाई
निजवशजानि दया अति बाढ़ी ❀ नृप समीप जाइ भइ ठाढ़ी
करि बिनती नृप भवन लवाये ❀ करि प्रसंग तुमको उपजाये
यथा पुरुष तुम तिमि वह दारा ❀ सबबिधि सम संयोग तुम्हारा
कहि यहि बिधि मुनिवरउत्तङ्का ❀ गये मण्डली मेटि असङ्का

दो० बानप्रस्थ बिचारि अब, बिपिन गये ततकाल ।
लै निजहाथ शकुन्तला, भरत भये महिपाल ॥

जिनको सुयश पयोनिधि पारा ❀ गये उलाङ्घि पहाड़ अपारा
तिन पुरु नाम तनय उपराजा ❀ भयो सकल पुहुमीपति राजा
नहुष नृपति तिनके बलदाई ❀ लीन्ह इन्द्रपद इन्द्र भगाई
तिनके सुत पुनि भयो ययाती ❀ तेज प्रताप बिदित सब भांती
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा ❀ नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा
शुक्रसुता ज्येष्ठी देवयन्या ❀ लघुत्रिय बृषपर्वा की कन्या
युग पत्नी दश सुत उपजाये ❀ तिनके भारत सकल कहाये
कथा बिचित्र सुनत सुख पावा ❀ पुनिसात्यकि हरिपदशिरनावा
आगे चलि हास्तिनपुर देखी ❀ चित्रित चित्रबिचित्र बिशेखी
अति उतङ्ग सोहत पुर फाटक ❀ रचित केवार द्वारमणि हाटक
बसत लसतपुर द्युतिअधिकाई ❀ जनु सुरनगर बास तहँ आई
बसत तहां दुर्योधन पोचा ❀ कहत इन्द्रसन मन संकोचा

दो० पुरजन देखी देव से, पाण्डव गये विदेश ।
करतनहुष जनुइन्द्रपथ, भोगि निकारि सुरेश ॥
नन्दन बन निन्दित बन बागा ❀ रुचिर बापिका कूप तड़ागा
मन्दाकिनि सम सोहत गङ्गा ❀ उपमा उठत अनूप तरङ्गा
बरण बरण पक्षी रव शोरा ❀ बेद पढ़त जनु सुर दुहुँ ओरा
शङ्करगिरि जनु रुचिर अटारी ❀ चातुर चारु सहित गच ढारी
रङ्ग रङ्ग ध्वजपांति बिभाती ❀ मनहुँ सपक्ष शैल उतपाती
सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा ❀ त्रिय नगरी शिर सुन्दर जूरा
खुले द्वार सोहत सुखरासी ❀ सुरपुरसरिस करत जनु हासी
कोटिन गुड़ि उड़िउड़ि रँगराची ❀ नगर नगारन की धुनि माची
दो० पुरशोभा हरषत निरखि, गये निकट भगवान ।
सबलसिंह चौहान कहि, को करिसकै बखान ॥
इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥
दो० दारुक हांक्यो अश्व रथ, सुमिरि महेश गणेश ।
नगर हास्तिनापुर तबै, कीन्हो तुरत प्रवेश ॥
बनित मनोहर रूप बिलोके ❀ यकटक लखैं नयनपल रोके
हरि शोभा सागर सुखसारा ❀ त्रियलोचन झख करत बिहारा
गली बजार छतीसौ कोमा ❀ निरखतमुखचकोर जिमि सोमा
सात्यकिसहित अलौकिकबेखा ❀ चले जात पुरबासिन देखा
तरणितमीशकितरणिकिशोरा ❀ की मधुमदन मनोहर जोरा
हरि हर कहि बरणत हैं कोऊ ❀ नर नारायण हैं की दोऊ
सात्यकि सहित सोह भगवन्ता ❀ इन्द्र सहित जनु जात्त जयन्ता
मारग महँ शोभा अधिकाई ❀ मनहुँ राम लक्ष्मण दोउ भाई
दो० पीतबसन सुन्दर ललित, कलित बिभूषण गात ।
फलित मनोरथ सबनके, निरखत सुखसरसात ॥
प्रभु शोभा बरणत नर नारी ❀ निरखिनिरखितनदशाबिसारी

छवि अभिराम कामशतकोटी ❀ हरि पटतरिय बात यह छोटी
प्रभु शोभा सागर अवगाहा ❀ सुर नर मुनि कोउ पाव न थाहा
इकटक चितै परस्पर कहईं ❀ इनकी सरि येई जग अहईं
उपमा काहि देइ को योगा ❀ कहत परस्पर सब पुरलोगा
हरिसात्यकिकरिउभयविभागा ❀ कोऊ कहत ज्ञान बैरागा
तहँ प्रभु मोहनतन देखरायउ ❀ मोहे सब तन सुधि बिसरायउ
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढ़े ❀ वर्णत कोउ नयन जल बाढ़े

दो० मनहरिबश सरबस सहित, बिसरिगई सुधिदेह ।
प्रभु तनद्युति वर्णन करत, पुरजन सहित सनेह ॥

कमलनयन कुण्डल द्वै कानन ❀ अतिकमनीयकलानिधिआनन
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा ❀ उर बनमाल मनोहर हीरा
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारे ❀ दाड़िमदशन अधर अरुणारे
उन्नतभाल सुजन मनभावन ❀ सुन्दर लोल कपोल सुहावन
वृषभकन्ध अरु दीरघ बाहू ❀ बक्षबिशाल सुखद सबकाहू
पानपीठि उर भृगुपद रेखा ❀ कटिकेहरि ऊदर त्रय रेखा
पीताम्बर तापर कसि बांधे ❀ श्यामजलद तन यज्ञपकांधे
पद्मपाणि पद पदम अनूपा ❀ अतिबिशाल दोउयदुकुलभूपा
हरिहिं बिलोकि नागपुर नारी ❀ कामबिबश तनदशा बिसारी
भूषण हीन न चीर सँभारा ❀ निरखैं आइ लाज तजि दारा

दो० दधि दूर्बा अक्षत अमल, एलादिकभरिथाय ।
करैंसुमङ्गल बिबिधबिधि, मोहनराग सुनाय ॥

जात राज मारग प्रभु सोहे ❀ पुरनरनारि देखि छबि मोहे
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा ❀ कहि न सकैं कबि शारद शेखा
शारद शम्भु गणेश षड़ानन ❀ वर्णत बृद्ध भये चतुरानन
नारदादि केहुँ पार न पाये ❀ बिबिधभांतिकहि नेति सुनाये
सुर सुरेश कहि पार न पावा ❀ अबनृपसुनहु ब्यास जस गावा
प्रभु छबिबारिधि कोटिमहाना ❀ सीकरसम त्रिभुवनछबि नाना

तदपि तासु उपमा सम नाहीं ❀ तुमते कहत सुनी गुरुपाहीं
सुनिये गिरा अमियरस बोरी ❀ कीन प्रश्न पुनि नृप करजोरी
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई ❀ कहिय कृपाकरि अब ऋषिराई
सुनि नृप बचन प्रीतिरस पागे ❀ कथा बिचित्र कहन मुनि लागे

दो० दोषहरणिसबसुखकरणि, भारत कथा रसाल ।
जनमेजय चित दै सुनहु, मिटैमोह जगजाल ॥

भीषम बिदुर सुनी यह बाता ❀ नगर प्रवेश कीन्ह जनत्राता
कृप अरु द्रोण सहित अनुरागे ❀ करत प्रणाम लीन्ह चलिआगे
भीषम द्रोण देखि हरि आये ❀ पुरजन सहित प्रेम उर छाये
उतरे कृपासिन्धु भगवाना ❀ मिले बहुत कीन्हे सनमाना
भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई ❀ कुशल प्रश्न पूछत यदुराई
नाथ कुशल देखत अब तुमको ❀ हृदयलाय भेंटेव प्रभु हमको
पतितउधारण बिरद सँभारा ❀ भयो सकल अघ दूरि हमारा
ताही समय बिदुर चलिआये ❀ परे चरण नहिं उठत उठाये
गहि भुज कृपासिन्धु भगवाना ❀ लीन्ह लाय उर करि सनमाना
सुनहु बिदुर तुम अतिबिज्ञानी ❀ जिनका मुख देखत अघहानी
ज्ञान बिराग योगगति आनत ❀ धर्मस्वरूप भक्तिरस जानत
जीतेउ काम क्रोध मद लोभा ❀ करि न सकै माया मन क्षोभा
हरिसेवक प्रहलाद समाना ❀ विधिसमबुद्धि बिवेकनिधाना
रबिनन्दन सम नीतिबिचारा ❀ योगिनमहँ जिमि सनतकुमारा
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता ❀ अम्बरीष नृप सम शुचिसन्ता
करि सन्मान कृष्ण बहुभांती ❀ पुनिपुनि मिलतलगावतछाती
बोलेउ बिदुर अकिञ्चन मीता ❀ नाम तुम्हार बिदित जनहीता
बिरद तुम्हार निगम कहि गाई ❀ निज दासनकहँ देत बड़ाई

दो० मोते को संसार महँ, महाअधम यदुबीर ।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होत उरधीर ॥
भक्तबछल तुव नामसुनि, तब मन बड़ो डराय ।

सुने पतितपावन विरद, हर्ष न हृदय समाय ॥
पूरब नाथ पाप हम कीन्हा ❋ दासीयोनिजन्म विधि दीन्हा
अघभाजन नहिं भजन तुम्हारा ❋ केहिविधि नाथ मोर निस्तारा
परम अधीन विरद मुखबानी ❋ सुनि श्रीकृष्ण भक्तिरससानी
कीन्ह प्रबोध नाथ विधि नाना ❋ हृदयलाय कीन्हों सनमाना
तुमहो विदुर धर्म अवतारा ❋ परमभक्त अरु ज्ञानउदारा
पुरवासिन अभिवन्दन कीन्हा ❋ सौम्यरूप प्रभु दर्शन दीन्हा
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला ❋ पहिरे श्वेत द्विरदमणिमाला
अङ्ग अङ्ग महँ भूषणभूरी ❋ मृदुमुसक्यानिबिलोकनिरूरी
पीत बसन कलकुण्डल कानन ❋ अतिकमनीय सुधाधरआनन
सात्विकरूप लखे बनवारी ❋ निरखिनिरखिअबिहोतसुखारी
भीषम द्रोण सहित यदुराई ❋ भूप भवन कहँ चलेउलवाई

दो० सुनी श्रवण आयो निकट, पँवरि द्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दीन्हें अनुज पठाय ॥

विकरण दुश्शासन बलधामा ❋ दुर्मुख दुमुत द्विरद पुनि नामा
निपट निकटजबआनिनिहारा ❋ मदसमेत तिन कीन्ह जोहारा
दुर्योधन के बान्धव आये ❋ तहँ प्रभु उग्ररूप दरशाये
चक्र एक कर शारँग पाणी ❋ एकपाणि महँ निशितकृपाणी
जैसे प्रलय कालमहँ शंकर ❋ अरुण नयन अरु वेष भयंकर
रूप त्रिविक्रम समर महाना ❋ कुरुगण देखि अचम्भव माना
डरपे दुर्योधन के भाई ❋ हरिहि देखि मुख गे कुम्हिलाई
तमगुण उनहिं कृष्ण देखरावा ❋ भूपभेद केहुँ जानि न पावा
मोहन रूप देखि नर नारी ❋ लोकलाज तजि चलीं पछारी
सात्विकरूप विदुर तहँ देखा ❋ कहत नाइ मन हर्ष विशेखा
राजा देखि प्रजा सुख पाये ❋ भये मुदित निज निजगृहआये
यह चरित्र कीन्हों भगवाना ❋ औरको भेद और नहिं जाना

दो० जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।

पत्र महँ दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥

पँवरि दुआर गये यदुनाथा ❀ भीषम द्रोण विदुर कृपसाथा
द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा ❀ दुर्मुख बिकरण बीर अभङ्गा
दुर्योधन को बिभव निहारा ❀ इन्द्र सरिस को बरणै पारा
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी ❀ रक्षक तरुणपुरुष बलभारी
दूसर दुर्योधन कर बेला ❀ उमड़ेउ मनहुँ सिन्धुतजिबेला
ते सब शक्ति भुशुण्डी लीन्हें ❀ रक्षहिं द्वार सजग चित दीन्हें
तिसरे द्वार कराहिं बहु हूहा ❀ कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा ❀ रक्षक महामल्ल बहु दक्षा
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ सांगी ❀ गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी
पञ्चम पँवरि द्वार हरि आये ❀ बिबिध भांति तहँ यन्त्र लगाये
तीनि लक्ष भट मत्त शराबी ❀ लीन्हे पाणि ज्वलित मस्तावी

दो० द्रोण करण सम तूल के, अयुत बीर बरियार ।
गर्जि गदा गहि गर्बते, ठाढ़े छठयें द्वार ॥

सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा ❀ केहरि से किरात काम्बोजा
नाना भांति अस्त्र करमाहीं ❀ जिनहिं देखिसुर असुरसकाहीं
बरणत बिरद बन्दिजन जूहा ❀ बेतपाणि दरवानि समूहा
बेतपाणि तहँ जाय जनाये ❀ मिलन हेत यदुनन्दन आये
लावहु कहि नृप आयसु दीन्हा ❀ तेहि अवसर हरि दर्शन दीन्हा
प्रभुहिबिलोकिउठ्यो कुरुनाथा ❀ सौबल शकुनि कर्ण लै साथा
ताके हृदय गर्ब अति भारी ❀ गयोनिकटचलिहरिहिजोहारी
धनमद अन्ध अधमअभिमानी ❀ ज्ञानहीन कछु कानि न मानी

दो० उत्पतिथितिनाशनकरण, बिश्वभरणभगवान ।
नर करि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

कृष्ण समेत चला कुरुराजा ❀ धृत्तराष्ट्र यह सकल समाजा
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हे ❀ बान्धव सब परिवारित कीन्हे

गयउ भूप पहँ बिदुर अगारी ❀ कह्यो जाय आवत बनवारी
कहत भूप कोउ मोहिं उठावहु ❀ चलहु वेगि लै हरिहि मिलावहु
सञ्जय गहि कर नृपहि उठायो ❀ कृष्ण समीप तुरत पहुँचायो
भेंटे कृपासिन्धु उरलाई ❀ नृप आनँद अति उर न समाई
कुशल प्रश्न पूँछत ब्रजराजहिं ❀ गयो भूप लै सहित समाजहिं
निज समीप हरि कहँ बैठारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा

दो० बाह्लीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, बैठे सभा निकेत॥

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ ❀ भूरिश्रवा हलम्बुष दोऊ
पुत्र पौत्र भूपति के जेते ❀ बैठे दुर्योधन ढिग तेते
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❀ मगहराज तेहि सभा बिराजा
भूप कलिङ्ग और कृतबर्मा ❀ नृपति बृहद्बल सहित सुशर्मा
जवनराज शशिबेद नरेशा ❀ नृपति सुलूक बनाइ सुबेशा
औरौ देश देश के नायक ❀ दुर्योधन के सकल सहायक
हरिआगमन सुनत सजि साजा ❀ धृतराष्ट्रक गृह जुरो समाजा
यथायोग्य बैठे नृप भारी ❀ बिदुरसभा बिधिवत बैठारी
बैठे भूप सहित बनवारी ❀ सञ्जय नृप के बैठ पछारी

दो० आस्थित अति आनन्द ते, नृपसमीप घनश्याम।
हरिदक्षिणदिशिसात्यकी, लखैबिलोकनिबाम॥

यदुनन्दन दिशि बारहिंबारा ❀ निरखतबिदुर अनन्द अपारा
परत निमेष न यकटक ठाढ़े ❀ मानहुँ चित्रमांझ लिखि काढ़े
हरि छबि देखत चष अनुकूली ❀ जनित सनेह देह सुधि भूली
क्षणक्षण प्रभुपद मञ्जुकपोला ❀ भ्रमत बिदुरचित प्रेमहिं डोला
देखत होत न मन संतोखा ❀ यथा अडोल खेल को धोखा
बिदुर दशा जब कृष्ण निहारी ❀ करणहिं निकट लीन्ह बैठारी
कृपअरु द्रोण बिदुर दिशि दोऊ ❀ देखि सप्रेम सराहत सोऊ
धन्य बिदुर बिज्ञाननिधाना ❀ नरतन पाइ भक्तिरस जाना

काम क्रोध तजि सब संसारी ॐ भजत सदा अघहरण मुरारी
दो॰ बिषरसइव त्यागी विषय, चरणकमललौलाय ।
रहत शरण यदुनाथकी, नाते नेह बिहाय ॥
कृपादृष्टि प्रभु बिदुर बिलोकी ॐ भरे मोद मन कहेउ विशोकी
हरि की देखि प्रीति अधिकाई ॐ अति अनन्द नहिं हिये समाई
गालवगण मन मोद अपारा ॐ पुलकावली नयन जलधारा
देखत रूप चक्षु पल रोके ॐ सुरसिहात तेहिभाग बिलोके
कह मुनीश यह कथा सुहाई ॐ तुव हित हेत भूप मैं गाई
अब मैं कहब बिचित्र कहानी ॐ सावधान सुनु नृप सज्ञानी
सुनत रहत नहिं अघलवलेशा ॐ शोक मोह भ्रम मिटै नरेशा
धृत्तराष्ट्र अति आदर कीन्हा ॐ भोजन हेत उतर हरि दीन्हा
दो॰ प्रीति न रंचक तुम बिषय, नहिं हमरे आपांति ।
कौन हेत कीजै अशन, सुनहु भूप तापांति ॥
कहेउ भूप सुनिये जगतारण ॐ तुम तापांति कहौ केहि कारण
सुनि नृप बचन कहत हँसि केशो ॐ सुनहु भूप तव मिटै अँदेशो
हस्ती नाम भरत कुल जायो ॐ नगर हस्तिनापुरी बसायो
तरणि सुता ते भयउ बिवाहू ॐ तापत नाम बिदित सबकाहू
तिन यह कौरव बंश चलायो ॐ ताते तुम तापती कहायो
सुनि हरि बचन भेद सब जाना ॐ धृत्तराष्ट्र मनमहँ सुख माना
कथा अपर तब श्री मुख गाई ॐ सुनि सुख लहौ सभासमुदाई
अमृत सरस कृष्ण मुख बानी ॐ भीषम बिदुर सुनत सुखमानी
कह बैशम्पायन सुनु राई ॐ कथा बिचित्र श्रवणसुखदाई
दो॰ बुद्धिचक्षु बोले बिहँसि, कहिये दीनदयाल ।
केहि बिधिते तपतीबरी, सुनिहस्तीमहिपाल ॥
केहि बिधिते भा भूप मिलापू ॐ किमि उतपाति कहिये अब आपू
सुनि नृप बचन कृष्ण अनुरागे ॐ कथा बिचित्र कहन अस लागे
रविमण्डल होइ जात बराकी ॐ भये दिनेश कामबश ताकी

काम बाण ताहू के लागा ॐ रविदिशि देखि भयो अनुरागा
सो चरित्र सुरनायक जाना ॐ दीन्हो शाप क्रोध उर आना
धरिमानुषतन ह्वै व्याभिचारिणि ॐ वर्ष भयंत रहो अपकारिणि
ह्वै मानुषी रूप सोइ दारा ॐ रविमण्डल महँ करत बिहारा
मोच्यो शाप काल जब बीता ॐ तहाँ गर्भ पुनि सुरपति भीता
भई सुता कर्दम ऋषि जानी ॐ सो उठाय निजआश्रम आनी
गई सुरेश भवन पुनि बाला ॐ कीन्हो मुनिकन्या प्रतिपाला
शशिसमबढ़तकढ़तद्युतितनकी ॐ जगरमगरजिमिदामिनिघनकी
थिरनरहतलखिमतिसुनिजनकी ॐ होतलाजबशनारि अतनकी

दो० तरणिप्रभातन शशिवदनि, मृगनयनीकटिखीन ।
पीन पयोधर मधु अधर, षोड़श वर्ष नवीन ॥

तेहि पटतर रम्भादिक नाहीं ॐ सुरी किन्नरी देखि लजाहीं
तस स्वर्ण आभा तन जानी ॐ तपती नाम धरो मुनि ज्ञानी
हस्तीभूपति फिरत शिकारा ॐ रविनन्दनिगइ बिपिन बिहारा
औचक मिले पंथ महँ सोऊ ॐ देखि परस्पर बरबस दोऊ
राजकुँवर रविजा अवलोकी ॐ देखत रूप दृगञ्चल रोकी
तरुणवहिक्रम तरणिकिशोरी ॐ दामिनि वर्ण देह अतिगोरी
पहिरे तन शुचि बसन सुरङ्गा ॐ मणिगणखचित बिभूषणअङ्गा
इन्दु बदनि मृगशावक नयनी ॐ भृकुटीकुटिल बिलोकिप्रवीनी
लोल कपोल हँसनि मृदु बङ्का ॐ दमकत श्रवण तड़ित ताटङ्का
अधर प्रवाल लाल अरुणारे ॐ अहि उपमा लम्बित कच कारे
दाड़िम दशन नासिका नीकी ॐ देखत कीर तुण्ड मति फीकी
कम्बु कण्ठ अरु बाहु मृणाला ॐ कोमलकलित कमलकरलाला
श्रीफल से कठोर बक्षोजा ॐ गेंदखेल जनु रच्यउ मनोजा
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा ॐ लचकत पुनिपुनिकचघुँघुवारा
शुभनितम्ब पुनि नाभि गँभीरा ॐ देखि भूपमन मनसिजपीरा
मनो मनोज कुसुम शर लीन्हा ॐ बाणनमारि लक्षि लखिकीन्हा

दो० सुघर पँडुरि पद कमल, सूक्षम अँगुली बीश ।
कदलिपत्रसमपीठि पुनि, जनु बिरची जगदीश ॥
बीस अंगुली कमलकर, लसत बीस नखलाल ।
बीसकला जनु सोमधरि, करतप्रकाश बिशाल ॥

राजकुँवर तन शोभा भारी ❁ देखि कामबश तरणिकुमारी
बय किशोर तन सुन्दरताई ❁ बरणि न जाइ देखि मनभाई
कीट मुकुट शिर ऊपर धारा ❁ जगमगातमणिगण उजियारा
आनन मनहुँ शरदशशिमण्डल ❁ झलझलातकानन दोउकुण्डल
भृकुटी कुटिल लसत यहिताका ❁ बिनगुणमनहुँ मनोज पिनाका
नासा की उपमा कवि गावत ❁ अतिबिचित्रशुकतुण्डलजावत
दृग कछुश्याम कछुक अरुणारे ❁ सोहत जनु बन्धुक अतिकारे
सोहत कच मेचक मुख नेरे ❁ अतिहितहेतु जनु शशि अहिघेरे
बृषभ कन्ध युगबाहु विशाला ❁ कम्बुक कण्ठ द्विरदमणिमाला
बक्ष बिशाल नाभि गम्भीरा ❁ कटि केहरि जङ्घा बिस्तीरा
अरुण चरण कर अरुण सोहाये ❁ अमल कमल शोभा दर्शाये

दो० मनसिज सरिस महीपसुत, रूप शील गुणगेह ।
नखशिख देखि अशेष छबि, तपती भई बिदेह ॥

देखि भूपसुत तरणिकिशोरी ❁ जनित सनेह देह भै भोरी
शीशफूल कानन ताटङ्का ❁ अतिप्रकाश जनु बिज्जु दमङ्का
मुक्तमाल उर मणिगण हारा ❁ जनु कर निकर निशेष पसारा
अङ्गनजटित ललितकरभूषण ❁ करत प्रकाशकमलपर पूषण
दशौ अंगुलिन महँ दश मुद्रा ❁ चलत हलत बाजत कटिक्षुद्रा
आस पास बिछिया टोरवारे ❁ पायँ पैंजनी नेवर न्यारे
बसन बिभूषण बैस नवेली ❁ पूछत भूप बिलोकि अकेली
की तुम राजसुता सुरकन्या ❁ कवनहेतु केहि फिरत अरन्या
तुव बश भयो प्राण अब मेरा ❁ कवनिउँ यतनाफिरत नहिं फेरा
ताते कहो हमारो कीजै ❁ अब गन्धर्व ब्याह करि लीजै

तुमहिं विलोकि मदन धनु लीन्हो ❀ शरन मारि जर्जर तनु कीन्हो
मूरि विशल्य करन तुम देही ❀ परसत मिटै व्यथा तन येही
दो० सुन्दर सरल शरीर तव, जिमि मनसिज की पास ।
फँसो जाइ ताबीच मन, देखि मनोहर हास ॥
तरणिसुता नृप सुत बश कीन्हा ❀ नृपकिशोर तेहि चित हरि लीन्हा
निजबश रहा न कछु ताहू को ❀ फेरे फिरत न मन वाहू को
दूनौं तन मनोज बश भयऊ ❀ तहँ गन्धर्व ब्याह करि लयऊ
यह करतब कर्दमऋषि जानी ❀ दीन्ही सौंपि नृपहि गहि पानी
हर्षि भूप तेहि निजगृह आनी ❀ ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी
दो० हस्ती नृपके तनय कुरु, पतिनी ते उपतीय ।
तिनके सुत शन्तनु नृपति, तेहिते तुम तपनीय ॥
शन्तनु सागर को अवतारा ❀ भयो बड़ो तेजसी भुवारा
गङ्गासागर को भा सङ्गम ❀ तेहिते भीषम अविचल जङ्गम
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी ❀ जब सुरसरि निजधार समानी
ताको सत्यवती अस नामा ❀ चित्राङ्गद सुत बल के धामा
चित्रवीर्य पुनि दूसर बेटा ❀ भयो भूप संग्राम अपेटा
दो० चित्रवीर्य के पाण्डु नृप, चित्राङ्गद के आप ।
हौ एकै कछु भेद नहिं, ताते करहु मिलाप ॥
विग्रह आपुस की नहिं नीका ❀ छांड़हु अब सब बात अलीका
कलह तुम्हार न काहुहि भावत ❀ ताते बार बार हम आवत
हरिमुख हेरि कहत दुर्योधन ❀ तुम आये इत कवन प्रयोजन
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा ❀ पठयनि तुम्हरे ढिग यहि काजा
काहिनि कि हमकहँ जुआ हरायो ❀ छलबल करिकै बनहिं पठायो
ते गे वर्ष त्रयोदश बीती ❀ अबहूं तौ तजि देहिं अनीती
सो अब कहा हमारो कीजै ❀ आधी भूमि बांटि नृप दीजै
उन बन बसि बहु सहे कलेशू ❀ तेहिते तुमकहँ उचित नरेशू
यह जो नाहिं तुमहिं समिआई ❀ तौ हम कहैं करौ तुम राई

पञ्च ग्राम पाण्डव कहँ देहू ❋ कलह निवारण होइ सनेहू
इन्द्रप्रस्थ तिलप्रस्थ वरुणागर ❋ वाराणसि हस्तीपुर आगर
इनके दिये मिटत है रारी ❋ नातरु होइहि अनरथ भारी
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना ❋ नारायण मैं कौरव जाना
तेरे कहे देइ सब देशू ❋ हम जो कहैं करिय सो भेशू
सुई अग्र महि उठो जो जेती ❋ बिना युद्ध हौं देउँ न तेती
ग्वाल वंश हौ जाति के नीचा ❋ परत आय राजन के बीचा
यह कहि कह्यो दुशासन भाई ❋ कर गहि याहि देहु दुरिआई
कितो पकरि कारागृह दीजे ❋ मिटै प्रपञ्च बात यह कीजे
वे हमते सरवरि कब करते ❋ जो पै उनकर पक्ष न धरते
इनहीं के बल वे बरिआरा ❋ यहु अहीर है बड़ा गँवारा
नृप रुख लखि हरि अन्तर्यामी ❋ भे अतिउग्र उरगअरिगामी
उठे तुरत तब शारँगपानी ❋ कहि तुव मृत्यु आइ नियरानी

दो० हरिसँग भारद्वाज सुत, गङ्गासुत गाङ्गेय ।
बाह्लीक विकरणकरण, चले संग उठितेय ॥
करत बतकही सबन ते, चलेजात घनश्याम ।
राखिलोग सब द्वार पर, गयो विदुर के धाम ॥
श्वेत केश शिर शोभिये, ओढ़े श्वेत दुकूल ।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादर के समतूल ॥

पितास्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा ❋ आशिष दियो होय मनकामा
हरिहि बिलोकि नयनजलछाये ❋ माथ सूंघि हरि कण्ठ लगाये
कुशल रहे बसुदेव कुमारा ❋ मैं अनाथ के प्राण अधारा
बोले कमलनयन यह बाता ❋ तुम्हरी कृपा परम कुशलाता
धर्म नरेश समेत कुटुम्बा ❋ कह्यहु प्रणाम सुनहु अब अम्बा
सुनि यह बचन भयो परितापा ❋ लागी कुन्ती करन विलापा
उर दुख दुसह बरत ज्वरहोली ❋ पुनि कुन्ती श्रीपतिसों बोली
सबकोउ कहत पञ्चसुत शूरा ❋ हमरे जान भये अब क्रूरा

लाज तजी सुत काम न आये ❀ विदुर अन्न दै हमहिं जिआये
अब तुमते कहियत बनवारी ❀ तुमहूं छांड़ी सुरति हमारी
पालन योग्य तिहूंपुर दारा ❀ बाल पिता तरुणी भरतारा

दो० वृद्ध वैस सुत चाहिये, करहि मातु प्रतिपाल ।
अपनो काटो कृष्ण हम, विदुर अन्नते काल ॥

धर्मराज छांड़ी सब शर्महि ❀ त्याग कीन्ह क्षत्रिन के धर्महि
नृप बिराट की करि सेवकाई ❀ राज तजी अरु लाज बिहाई
उदरपालिसुत दिवस बितावहिं ❀ दुर्योधन भय मानि न आवहिं
सुनहु कथा यक कहत बखाना ❀ यद्यपि सब जानत भगवाना
बिन्दुल नाम एक क्षत्रानी ❀ राजा शक्तिकेतु की रानी
सोहति नगर अवन्ती बासी ❀ सब चरित्र हम कहत प्रकासी
माहिषमती भूप बलधामा ❀ ताको चन्द्रसेन अस नामा
निज दलसाजि निशान बजाई ❀ घेरो नगर अवन्ती आई
सत्यकेतु निसरे भूपाला ❀ भयो युद्ध जूझे तेहिकाला
लूट्यो नगर लगायो आगी ❀ गर्भवती बिन्दुल उठिभागी
चली पराइ दुखिय अधिकाई ❀ दारानाम नगर चलिआई
ब्रह्मदत्त तहँ रह्यो भुवाला ❀ सबप्रकार कीन्हो प्रतिपाला

दो० यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल ।
नृपतरुणीकहँ त्यहि नगर, बीतिगये कछुकाल ॥

उपजे ताके सुत अभिरामा ❀ ताको कृष्ण युद्धजित नामा
प्रौढ़ बिलोकि मातु सुख पावा ❀ शशिसम बढ़त बार नहिं लावा
दिनप्रति नगरबालकन सङ्गा ❀ खेलत रहत बिहंग पतङ्गा
मातु पढ़ायो पुनि धनुवेदा ❀ समरथ देखि तज्यो मनखेदा
सुतहि बोलाइ मातु उपदेशा ❀ तुम पितु रह्यो उजैन नरेशा
माहिषमती भूप बध कीन्हा ❀ राज तुम्हार छीनि तेहिलीन्हा
अब सुत और न बाद बिचारहु ❀ लेहु भूमि निजअरिका मारहु
जबलगि मरत न तुवपितुघाती ❀ तबलगि पुत्र जुड़ात न छाती

शत्रु तुम्हार जियत संसारा ❁ नाहक क्षत्रि वंश अवतारा

दो० कह्यउ भूपसुत मातुते, सुनिये वचन प्रमान ।
मैं दलबल अरुद्रव्यबिन, अरिसँग सेन महान ॥

तासु मातु हरि कहत रिसानी ❁ बालक ते बोली मृदु बानी
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा ❁ ताते मन मानत तुम भर्मा
लड़े अकेल न मन भ्रम आनै ❁ कीट समान कोटिदल मानै
ताते तात तजो सब शोका ❁ जीते सुयश मरे सुरलोका
मातुबचन ते उठि रण कीन्हा ❁ करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा
करि साहस सोइ भयउ भुवाला ❁ और कथा सुनु दीनदयाला
जैसे धर्मराज अवतारा ❁ सो हरि सुनहु सकलब्यवहारा
भयो हमार भूप नरनाहू ❁ दीन्हो दण्ड धरा सबकाहू

दो० शशिसमकीरतिलिखिरही, भानुसमान प्रताप ।
देव बिटप सम दान कहँ, बलसुरेशजनुआप ॥

राज करहिं नृपसुख अधिकाई ❁ बुद्धिचक्षु की फिरी दोहाई
सचिव बिदुर अतिभयउसुजाना ❁ धर्मशील बिज्ञान निधाना
बाहलीक गङ्गासुत दोऊ ❁ अरिघालक जानै सब कोऊ
आज्ञाभङ्ग जवनि दिशि होई ❁ आनै बांधि होइ किन कोई
एकदिवस निज सहित समाजा ❁ सभामध्य नृप पाण्डु बिराजा
भीषम ते तब बचन उचारा ❁ सुनहु मनोरथ सुभग हमारा
महिपर्यटन होत मन मोरा ❁ होइ पिता जो आयसु तोरा

दो० हँसि बोले गाङ्गेय तब, जो इच्छा मनमाह ।
सेन लेहु चतुराङ्गिनी, शुभ कीजै नरनाह ॥

भीषम की आज्ञा जब पाई ❁ चल्यो भूपसँग दलसमुदाई
माद्री संग सहित म्वहिं लीन्हा ❁ पटह बजाइ गमन पुनि कीन्हा
पूरब दक्षिण पश्चिम देशा ❁ जीति जीति लियदण्ड नरेशा
जो कछु बस्तु जीति नृप पायो ❁ बुद्धिचक्षु कहँ सकल पठायो
सेन समेत बजाइ निशाना ❁ उत्तरदिशि नृप कीन्ह पयाना

लैलै दण्ड भूप सब आये ❀ द्वैपायन के शीश नवाये
यथायोग्य सब ते नृप लीन्हा ❀ तिनकहँ अभयदान पुनि दीन्हा
लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा ❀ चढ़्यो भूमि गिरिशृङ्ग उतङ्गा
करि दर्शन नारायण केरा ❀ शैल हिमालय कीन्हे डेरा
तहँ सब नृप परवतिया आये ❀ दोऊ पायन शीश नवाये

दो० [illegible] फल सुभग, फूले कुसुमसुवास ।
गिरिपर देखि सुपास अति, कीन्ह नरेश निवास ॥

एक दिवस मृगया कहँ राजा ❀ गयो भूपसँग सुभट समाजा
तहँ ऋषि परम गहन यक रहई ❀ कामबिवश निज तियसन कहई
ज्ञान ध्यान तन सकल भुलाना ❀ बासर महँ मांग्यो रतिदाना
सुनि द्विज वचन कहत तिय सोई ❀ रति दिन नाथ पशुन की होई
कह द्विज नारि मृगातन लीजै ❀ हम मृग होइ तुमते रति कीजै
काम बाण तुम्हरे उर लागा ❀ ज्ञान बिवेक सकल तुम त्यागा
अस कहि तुरत मृगीतन धारा ❀ ह्वै मृग तब द्विज करत बिहारा
पतिको बचन तजै जो नारी ❀ परइ नरक पावइ दुखभारी

दो० यह बिचार द्विजत्रिय कियो, पियको बचनप्रमान ।
गयो पाण्डु ततक्षण तहां, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

दो० कह कुन्ती गोपाल ते, सुनिये दीनदयाल ।
मृग बिलोकि भूपाल तब, तज्यो बाण ततकाल ॥

लागत बाण बिकल ह्वै घूमी ❀ मानुषरूप पस्यो द्विज भूमी
गिरतहि तुरत प्राण तजि दीन्हा ❀ ऋषि तरुणी अतिरोदन कीन्हा
कह्यो बचन करि क्रोध अपारा ❀ लै मम शाप भूप चण्डारा
मो रति करत मस्यो पति जैसे ❀ तजौ नरेश प्राण तुम तैसे
आयो शिबिर मानि गिलानी ❀ करै न सुरति भूप भयमानी
ज्यहिबिधिशापबिप्रतियदीन्हा ❀ सो नरेश मोते कहि दीन्हा

भयो भूपउर नाथ बियोगा ❀ बिदाकिये घरकहँ सबलोगा
दोउ तिय सङ्ग भये बनबासी ❀ उदासीन जिमि फिरै उदासी
परम गहन गिरि देखत फिरहीं ❀ जप तप योग नेम ब्रत करहीं
दो० चन्द्रभाग पर्वत गये, लै युवती युग साथ ।
बिरची पर्णकुटी तहां, कीन्ह बास नरनाथ ॥
पावन मानसरोवर तीरा ❀ करहिं महातप सुनु यदुबीरा
मास नन्दिनी करि असनाना ❀ ऋषिसमाज नित सुनहिं पुराना
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं ❀ होत अस्त रवि अशन न करहीं
एक दिवस पर्णशालहि आये ❀ मोहिं बिलोकि नयनजल छाये
मैं पूछा क्यहि हेतु उदासा ❀ तव नरेश इमि बचन प्रकासा
संतति हीन हवों मैं रानी ❀ करहुँ न रतिहि शाप भयमानी
तब श्रीपति मैं धीरज कीन्ह्यों ❀ सिखये मन्त्र ऋषय कहिदीन्ह्यों
सुर आकर्षणबिद्या जानी ❀ सुनत नरेश धीर तब आनी
आज्ञा दीन्ह करो सुर जापू ❀ तव मैं कह्यो भूप यह पापू
पतिब्रता परपति मन देई ❀ सुकृत जाइ जग अपयश लेई
बेद पुराण बिदित कह राजा ❀ होइ दोष नहिं सन्तति काजा
तनसुख हेतु नारि जो करही ❀ सुकृत नशाइ नरक सो परही
दो० सुरआकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि ।
करहु बंश उद्धार अब, तजि मनकी गिल्लानि ॥
पति निदेश मेटो नहिं जाता ❀ धर्माऽऽकर्ष जप्यो सुरत्राता
आवत धर्म न लागी बारा ❀ दोहद भयो बिदित संसारा
जादिन जन्म युधिष्ठिर लीन्हो ❀ अतिउतसाह पाण्डुनृप कीन्हो
छाये नभ पथ गगन बिमाना ❀ सुरसुन्दरी करहिं कलगाना
शङ्ख बजाइ दुन्दुभी दीन्हो ❀ पुहुपमयी बसुधा सब कीन्हो
तब यह भई गगनमहँ बानी ❀ तुव सुत भयो भागवत रानी
धर्म स्वरूप भूप अति भारी ❀ एक छत्र बसुधा अधिकारी
होई बालक बलिसम दानी ❀ नारद सम होई बिज्ञानी

हरि सेवक प्रह्लाद समाना ❀ सुरपति सम होई बलवाना

दो० रविसुत सम जगनाथ कहु, तेज तरणि को रूप ।
जाके सम तिहुँलोक महँ, होइ न औरौ भूप ॥

धर्मशील अति कुल उजियारा ❀ होइ अजातशत्रु संसारा
याके राज अकाज न होइहि ❀ होइनिश्चिन्तप्रजासुखभोगिहि
कहि मृदुगिरा बोधकरि मोका ❀ गये बिबुधसब निजनिजलोका
जूप व्यसन करि कर्म अलीना ❀ भये धर्मसुत राज बिहीना
यह हरि अद्भुत बात अनूठी ❀ होइ गइ गिरा सुरन की झूठी
यहिप्रकार बहुकाल बितायो ❀ नृप समोद प्रणशालहि आयो
मोते बिहँसि कही नरपालक ❀ अबतुमप्रकटकरहु यक बालक
बिना सहायक राज न होई ❀ ताते चहिय भूप सुत दोई
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जग भाषा ❀ पूरण करहु मोरि अभिलाषा
यहिविधि नृपसंभाषण कीन्हा ❀ सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा

दो० मैं नहिं आज्ञा करिसकौं, मानत हौं मन भीति ।
उचित सिखावन नाथ तुम, यहकुलटनकीरीति ॥

सुनि नरेश बोल्यो तब आपू ❀ देवपरस कीन्हे नहिं पापू
देवाकर्षण सब तुम जानहु ❀ करि जप तप देवनको आनहु
पवनमन्त्र मैं सुमिरण कीन्हा ❀ आइ प्रभञ्जन दर्शन दीन्हा
भये रमित आनँद अति जीमा ❀ दोहद भयउ प्रकट भय भीमा
भयो गगन सुरगिरा प्रमाना ❀ होइहि बालक अतिबलवाना
महावीर जानिहि संसारा ❀ याते सब अरिकुल संहारा
कौरवसहित कुशल ना उनके ❀ हरि भे वचन झूठ देवनके
यहि बिधि बर्षबीति यक गयऊ ❀ तादिन नाथ चरित यह भयऊ
परणकुटी ते उठेउ समोदा ❀ लीन्हों भीमसेन कहँ गोदा

दो० जाइबिलोक्यउँरुचिरयक, चन्द्रभाग को शृङ्ग ।
तापर भई अरूढ़ मैं, बालकलियोउछङ्ग ॥

तहँ शालधी सिंह फटकारे ❀ गर्जत सम्मुख चला हमारे

में सभीत तन सुधि बिसराई ❀ परा भीम गिरि गोद बिहाई
होइ सरोष केहरि की ओरा ❀ चला निशङ्क करत रवघोरा
हाली धरा शिला गे फूटी ❀ जहँ तहँ परे वृक्ष बहु टूटी
गर्जत भीम भयउ अति शोरा ❀ गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा
देखि समीप बार नहिं लाग्यो ❀ अतिसभीतपुनिसोउठिभाग्यो
लक्ष भवन महँ खंभ उपारा ❀ जरत बचाइलीन परिवारा
एक चक्र बकबदन बिदारा ❀ दैत्यहि एक बिपिनमहँ मारा
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा ❀ अस बल बिदित भीम संसारा
सो सुधि भीमसेन कहँ भूली ❀ की हरि भई बांह युग लूली
अब सुनि अतिकीचकसौभाई ❀ मारेउ भीम बार नहिं लाई
जरासन्ध कीन्हो दुइ फारा ❀ अतिबलवान न लागी बारा

दो० अति निलज्ज भे पाण्डुसुत, भई टेक की हानि ।
अब आवत नहिं युद्ध कहँ, दुर्योधन भय मानि ॥

पकरेउ केश दुशासन आनी ❀ भई बिकल पाण्डव की रानी
सकेउ न देखि भयो मन माषा ❀ तादिन भीमसेन प्रण भाषा
तुव शोणित अस्नान करावों ❀ तादिन सुनु त्रिय केश बँधावों
क्षत्री करे न प्रण प्रतिपाला ❀ कही निलज त्यहि दीनदयाला
जियत दुशासन अरु कुरुराजा ❀ बहुअतिअधम न आवतलाजा
अबलगि सुनत रही सुत शूरा ❀ बसुधा मध्य शब्द बहु पूरा
अब सुनियत अक्रूर अमानी ❀ पूरि रही जगमहँ यह बानी
त्याग्यो प्रण मन लाज न आई ❀ भई कान्ह अब जगत हँसाई

दो० यद्यपि जानत नाथ तुम, तीनि काल व्यवहार ।
तदपिकहतजेहिबिधिभयो, पारथ को अवतार ॥

मोते कही भूप यह बानी ❀ बचन हमार सुनहु सुखदानी
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई ❀ अब सो करिय मध्यसुत होई
सुनि नृपगिरा शीशधरिलीन्हा ❀ सुनासीर आ.र्षण कीन्हा
आवत शक्र न लागी बारा ❀ दोहद भयो बिदित संसारा

शुभदिनशुभघटिका जब भयऊ ❀ तादिन जन्म पार्थ जग लयऊ
सुरन सहित सुरनायक आयो ❀ देखनको बिमान नभ छायो
बिश्वावसु षटसुत गन्धर्वा ❀ गावत विविध राग सुर सर्वा
मञ्जुघोष मेनका घृताची ❀ तोरहिं ताल तानगति नाची
बाजहिं पटह शङ्ख करनाला ❀ वर्षहिं विबुध कल्पतरुमाला

दो० विबुध नटी आईं सकल, करत सुमङ्गल गान ।
रिरहो आनन्द जग, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

यहिबिधि बीति याम यक गयऊ ❀ मधुर गिरा नभमण्डल भयऊ
होइहि बालक अति धनुधारी ❀ परम धर्म श्रीहरि हितकारी
ब्रजमहँ होइ कृष्ण अवतारा ❀ सो याको होइहै रखवारा
हम सब देवन के तारायण ❀ ते दोऊ हैं नर नारायण
नर अर्जुन नारायण यदुपति ❀ ये दोऊ जानौं एकै गति
कह्यो करण शूली यह नामा ❀ गये अमर सब निजनिज धामा
तुव बलहीन जगत महँ पारथ ❀ यह मेरोतन और अकारथ
भयो न अमर बचन कछु सांचा ❀ मरेउ न कर्ण आजु लग बांचा
दियो काढ़ि दुर्योधन राई ❀ बन बन फिरत लाज नहिं आई
ऐसी सहै होइ जो हीना ❀ है बलिष्ठ अरु अस्त्र प्रबीना

दो० गर्व कियो हनुमान से, बांध्यो सागर बारि ।
बाणन कीन्हो बाट नभ, हाथी लियो उतारि ॥

असुर निवातकवचबध कीन्हा ❀ धनपति जीति दण्ड लै लीन्हा
फूंके बन खाण्डीव गरेरा ❀ नाश्यो गर्ब पुरन्दर केरा
द्रुपद नरेश स्वयम्बर मांही ❀ भेदि मत्स्य द्रौपदी बिवाही
इन्द्रकील रण शम्भु रिझायो ❀ ह्वै प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो
सकलधरा निजबलबशकीन्हा ❀ द्रुपद जीति गुरुदक्षिण दीन्हा
देव दैत्य मानव बल भारी ❀ तुव प्रसाद जीते बनवारी

गये साजि कौरव दल भारी ❀ भीषम द्रोण करण बलभारी
ते अर्जुन बिराटपुर जीते ❀ अब क्यहि काज होत भयभीते
क्यहि कारण अब बार लगाई ❀ मिलि रणभूमि करे कदराई
कह कुन्ती सुनिये यदुराई ❀ पारथ ते कहिये समुझाई
दुर्योधन भय मनहिं न आवत ❀ अपने कुलहि कलङ्क लगावत
सिंहवंश महँ भयो सियारा ❀ देखत तुमहिं नग्न भै दारा
क्षत्रिधर्म दीन्हो सब खोई ❀ बांस बंशमहँ भयो घमोई
तुम अतिनिलजलाजसबत्यागा ❀ उपजे हंसबंस जिमि कागा
शत्रु तुम्हार शीशपर गाजत ❀ देखत नयन नेक नहिं लाजत
की तुम मरहु सकल बिष खाई ❀ की आयुध धरि लेहु लराई
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ❀ तुमअतिनिलजनआवतलाजा

दो० की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय ।
करैं युद्ध नत नाथ मैं, मरौं हलाहल खाय ॥
याहिप्रकार कहि कृष्णते, हृदय बहुत संताप ।
सुधिकरिकुन्तीसुतनकी, लागी करन बिलाप ॥

कह्यो कृष्ण माता सुनि लीजै ❀ दिन दश पांच धीर मन कीजै
बन्धुन सहित धर्म नरपालक ❀ आवत हैं कौरवकुलघालक
करिहैं युद्ध बिजय सबहीते ❀ होइहैं काज सकल मन चीते
सुनि हरिबचन धीर मनआनी ❀ लगीकहन निज प्रथम कहानी
मम सुत देखि हृदय अकुलाई ❀ माद्री निकट भूप के आई
सुत न भये दारुण दुख ब्यापा ❀ नृपसमीप अतिकीन्हबिलापा
कारण पूछि भूप दुख पावा ❀ निकटबोलिम्वाहिंबचनसुनावा
बिप्र बधू की शाप सयानी ❀ तुम कह कह्यो बात सब जानी
मोते कछु निसरी नहिं काजा ❀ असकहि भये सकल दिगराजा
करहु उपाय तोरि यह दासी ❀ उपजे सुत पावै सुखरासी
तब हरि दुखित भये मैं जाना ❀ धीरज दीन कीन सनमाना
आवाहनकरि अश्विनिकुमारा ❀ आये धरणि न लागी बारा

बिबुधवचयदमिलिब्योमसिधायो ❀ भयो गर्भ माद्री सुख पायो
दो० भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देवके देव ।
अतिबिचित्र तव माद्रिसुत, भये नकुल सहदेव ॥
यकदिन भयो चरित भगवाना ❀ मुनिसमाज नृप सुने पुराना
भोजन को मैं साज बनावा ❀ रह्यो शेष दिन भूप न आवा
गह्वर भई नाथ मोहींते ❀ करत न अशन भूप दिन बीते
माद्री करि शृँगार शिरि ठाढ़ी ❀ तनतेनिकसिज्योतिअतिबाढ़ी
लखि स्वरूप दिननायक मोहे ❀ भये न अस्त यान पर सोहे
भोजन कीन्ह भूप सुख पाई ❀ मद्रसुता भवशालहि आई
होतहि अस्त ओट रवि भयऊ ❀ दीख नरेश शयननिशि गयऊ
कारण हमहिं महीपति पूछा ❀ मैं कहिदीन्ह सकल छलछूछा
दो० भावी कौनिउ यतनते, मिटि न सकै यदुबीर ।
कामबिबश नरनाह है, सके न मन धरि धीर ॥
मोते कहेउ भूप बहु बेरा ❀ माद्री बिवश भयो मन मेरा
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई ❀ सुनी श्रवण कछु मन नहिं आई
मद्रसुता ते करि अनुरागा ❀ परसत देह भूप तन त्यागा
माद्री सहित मोहिं दुख व्यापा ❀ उच्चस्वर करि कीन्ह बिलापा
रोदन सुनत महामुनि आये ❀ कोल किरात भील सब धाये
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी ❀ आरत शब्द रहा तहँ पूरी
जे मुनि नृप के परम सनेहीं ❀ ज्ञानकथा कहि धीरज देहीं
त्वहिं प्रबोध करि चेत बहोरी ❀ चिता बनायसि काठ बटोरी
दो० जरनचली मैं भूपसँग, पाछिलि प्रीति दृढ़ाय ।
मद्रसुता तब बिकलह्वै, गहे चरण लपटाय ॥
हमरे हेत भूप तन त्यागा ❀ भा कलङ्क अरु पातक लागा
तुम्हरे पञ्चसुतन सम प्रीती ❀ तासि हमरे नहिं निपट अनीती
जो तुम रहौ करौ प्रतिपालक ❀ जौ लगि पुष्ट होयँ सब बालक
त्वहिं प्रबोधि लैकरि नृपअङ्गा ❀ चढ़ी चिता लै शीश उछङ्गा

त्याहिक्षण धन्य भूप की भामिनि ❀ प्रियके संग भई सहगामिनि
चढ़ि बिमान पतिसँग सुरलोका ❀ गई भई सो परमाविशोका
जीवत रहिउ छांड़ि निजनेता ❀ हम तजि लाज दुसहदुखहेता
सुतन लागि कृत जन्म खुवारी ❀ तिन हरि तजी बृद्ध महतारी
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा ❀ करत युद्ध नहिं मानि अँदेशा
क्षत्रीधर्म दूरि है याते ❀ बिरद सँभारि लरौ सुत ताते
नाहिंन हीन बंश अवतारा ❀ भे कादर सुत मनहिं बिचारा
कुरुबंशिन कर अनुचर होई ❀ अबलग युद्ध सकात न सोई
तुम शन्तनु नृप के कुलमाहीं ❀ जासु युद्ध सुर असुर सकाहीं
मातुपक्ष नहिं हीन तुम्हारा ❀ है यदुबंश बिदित संसारा
शूरसेन के हौ तुम नाती ❀ तिनकोसुयशाबिदितसबभांती
पुहुमी के राजा बहु जीते ❀ बचे रहत अजहूं भय भीते

दो० मातुपक्ष पितुपक्ष अब, बिदित सकल संसार ।
शूरबीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार ॥
कहाकृष्ण समुझायतुम, यह सिख मानि हमारि ।
करहु राज्य तुम आपनो, अब निज वैरिन मारि ॥

जो चुपरहौ साधिनिजमौनहि ❀ मिलहिनराज्यकरहुबनगमनहि
अस्त्र सनाह त्याग करि देहू ❀ भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू
कितौ करहु तुम मोरि सिखाई ❀ मारहु शत्रु सरौ मनुसाई
जो न लरहु कौरवसन आई ❀ तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई
भीमहि कहेउ सँदेश हमारा ❀ कस कादर भा जीव तुम्हारा
शूरबीर तुम्हरी जगलीका ❀ लरत न सुत तुमकरत ननीका
सबते मोहिं भरोस तुम्हारा ❀ बलपौरुष कित गयउ तुम्हारा
तुम बिराटपुर बैठि लुकाने ❀ मिलिहि भूमि नाहिं पुत्र डेराने

दो० करत तपस्या चारियुग, सब नरेश जेहिलागि ।
दूरिबैठि सुतनारि इव, राज्य दियो तुमत्यागि ॥

रहे बैठि चुप लाज अकाजन ❀ सिखीधनुषबिद्या केहि काजन

गदायुद्ध केहि काजन सीखा ❋ सो प्रभाव कछु नयन न दीखा
कहेउ सँदेश भूप के आगे ❋ करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे
जो नहिं लरहु मानि डर हारेहु ❋ नारिबचनकरिबनाहिंसिधारेहु
हम नहिं जियब पुत्र यहि लाजा ❋ हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा
पुरबिराट हारेउ कुरुनायक ❋ अवसुत निफलभये तुवशायक
कीन्ह प्रथम प्रण सो बिसरावा ❋ भूली बृद्ध मातु रण दावा
सबते बहुत तुम्हारी आसा ❋ आवत सो न मानि अरित्रासा
देव दैत्य गंध्रब बलभारी ❋ तुव शर सहि न सकैं धनुधारी
यक्षराज निज युद्ध हरायो ❋ करि मद भङ्ग दण्ड लैआयो
दुर्योधनहि तुम्हारी सरिके ❋ करहु युद्ध निजप्रणसुधिकरिके

दो० सो पौरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहिं आय ।
क्षत्रिधर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय ॥

जो नहिं लरत देखि दुख मोरा ❋ अर्जुन धनुष बाण धिक तोरा
जीवन आश पुत्र कदराने ❋ कर्णबाण भय मानि छपाने
अरित्रियहँसहिंश्रवणसुनिबाता ❋ मरै लाजबश कायर माता
क्षत्री धर्म नहीं तन माहीं ❋ तुमअतिनिलजलाजमननाहीं
कह्यो सँदेश नकुल सन जाई ❋ जीरण मातु तात बिष खाई
तुम ते सुत न और बरजोरा ❋ जीत्यउ नृप सब पश्चिम ओरा
बलपौरुष तव नाहिंन जानत ❋ तुमहूँ दुर्योधन भय मानत
धनु पकरे धरती थहराई ❋ लाज तजी अरु भूमि गँवाई
धर्मशील अतिशय बलदाई ❋ सो तुम बृद्ध मातु बिसराई
मोकहँ हरि अतिप्रिय सहदेऊ ❋ भूले हमहिं बिपति महँ तेऊ
तुम हरि कह्यो हमार सँदेशा ❋ करहु युद्ध तजि सकल अँदेशा
मिलिहै राज्य सत्य मत येहा ❋ ह्वै है बिजय न कछु संदेहा

दो० वहु अधर्म तुम धर्मरत, गत बिलोक मदमान ।
ह्वै है जय संशय नहीं, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

यह तुम कह्यो द्रौपदीते हरि ❁ कछु दिनरहौ हिये धीरज धरि
पैहौ राज्य साज तुम येहू ❁ प्रभु की कृपा न कछु संदेहू
तुम प्रभु धर्मराज समुझाई ❁ करहु यतन ज्यहि होइ लड़ाई
सब जग कहत सुनतकहँखोटी ❁ है बिन युद्ध बात अब छोटी
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा ❁ कृपासिन्धु तब धीरज दीन्हा
दिन दश धीर धरौ मन अम्बा ❁ मरिहैं कुरुपति सहित कुटुम्बा
असकहिकृष्णबिदापुनिकीन्हा ❁ करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
दै अशीश कुन्ती सुख पाये ❁ बाहर भवन दयानिधि आये

दो० पँवरि द्वार भे आयकै, रथ अरूढ़ यदुनाथ ।
पुर बाहर लग लोगसब, गये पठावन साथ ॥

भीषम द्रोण बिदा हरि कीन्हे ❁ करि प्रणाम निजगृहमगलीन्हे
बाहुलीक बिकरन पुरलोगा ❁ फिरे सकल हरि दीन्ह नियोगा
करत प्रणाम करण कहँ जानी ❁ रथ बैठारि लीन गहि पानी
हँसिकै कृष्ण कही यह भासा ❁ सुनहु करण पूरब इतिहासा
शूरसेन नृप अतिबल भारे ❁ भये पितामह बिदित हमारे
कुन्ती नाम सुता उपजाई ❁ सो तप हेत नदी तट आई
तहँवां दुर्बासा ऋषि आये ❁ देव अकर्षण मन्त्र सिखाये
एक दिवस सुखता अधिकाई ❁ मन्त्र परीक्षा की मति आई

दो० बालभाव के ब्याजते, नहिं कामना बिचारि ।
जपेउअकर्षणमन्त्रतब, दीन्हाउ दरश तमारि ॥

सहस किरणि तनतेज अपारा ❁ भईबिकल नहिं रह्यो सँभारा
मूंद्यो नैन बैन नहिं आवा ❁ कीन्ह प्रभाकर निजमनभावा
मूर्च्छा बिगत नैन जब खोली ❁ तब कुन्ती लज्जित होइ बोली
यह सुर कीन्ह नीकि नहिं बाता ❁ भा कलङ्क यहि अब पितु माता
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई ❁ याते तुमहिं कलङ्क न होई
अङ्ग भङ्ग नहिं होइ तुम्हारा ❁ ले तिय आशिर्बाद हमारा
भये दिवाकर अन्तरधाना ❁ यह चरित्र काहू नहिं जाना

चढ़ि विमान रवि गगन सिधाये ❀ दोहद भयउ गर्भ तुम आये
लज्जित मातु पिता भय मानी ❀ भवन कोन महँ रही लुकानी
चोरवत तुम कहँ कुन्ती जायो ❀ डारि मँजूषा सहित बहायो
दो० प्रकट भये तुम गर्भ ते, तन द्युति पुञ्ज अपार ।
धनुषबाण कुण्डलकवच, सहितलीन्हअवतार ॥
देखि तरणि सम तेज अपारा ❀ दीन्ह बहाइ सरित की धारा
बहत नदी तनतेज बिराजा ❀ जलते प्रकट मनहुँ दिनराजा
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा ❀ बहत प्रबाह देखि तेहिं पावा
ताकी तरुणि रही बिनु बालक ❀ लैगा भवन कीन्ह प्रतिपालक
तुम हौ धर्मराज के भाई ❀ तजहु शत्रु सँग करहु सहाई
वचन हमार समुझि मन अपने ❀ और विचार करहु जनि सपने
सुनेउ श्रवण श्रीपतिमुख बाता ❀ बोले बचन करण मुसक्याता
सुनी श्रवण तुमते जब बानी ❀ निश्चय मातु प्रथम हम जानी
जानेउ धर्मराज हम भाई ❀ भयो बहुत सुख कहा न जाई
क्षत्रीधर्म नाथ यह नाईं ❀ कौरव तजि पाण्डवपहँ जाईं
सहित बिबेक कहौ हरि जोई ❀ तुव शिष मानि करब हम सोई
चहौ नाथ जो सत्य छड़ाई ❀ सो हम करब न कोटि उपाई
यह कहि करण मौन गहि रहेऊ ❀ तब यदुनाथ बिहँसि इमि कहेऊ
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा ❀ षष्ठम अंश द्रौपदी केरा
दो० पांच बन्धु सेवा करहिं, तुम्हरी सहित समाज ।
चलहु करणजहँ धर्मसुत, अब हूजिय महराज ॥
सुनि हरिबचन करण हँसि दीन्हा ❀ नीक बिचार नाथ तुम कीन्हा
जानहिं मोहिं युधिष्ठिर भाई ❀ करैं राज्य नहिं धर्म बिहाई
वे हमको देहैं सब जबहीं ❀ हम देइब कुरुपतिकहँ तबहीं
यामें होइहि परम अकाजू ❀ रहेउ न नाथ पाण्डुकुलराजू
और बिचार करौ जनि स्वामी ❀ रहे चुपाइ जानि अनुगामी
कह हरि कहेउ परमहित तोरा ❀ चलहु करण सुनि मोर निहोरा

तुम कुन्ती के जेठे बालक ❀ करहुराज्यअरु कुलप्रतिपालक
तुम हरि कही सांचु सब सोई ❀ ऐसे समय उचित नहिं होई
कुरु पाण्डवन बैर है भारी ❀ मोरे बल रोपी उन रारी
मोहिं कुरुनाथ बन्धुकरि राखा ❀ अशन बसन कछु बीच न राखा
सहित धरा धन सेन समाजा ❀ कीन्हेउ अङ्ग कोष को राजा

दो० पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुहदेह ।
शीश समर्पण स्वामि सँग, पूरुब मानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनौ मत मोरा ❀ सो अब करिय दास मैं तोरा
लक्ष भूप दोउ ओर प्रतापी ❀ तिन महँ पुण्यवान को पापी
समर कराय करिय प्रभु सोई ❀ सुख गर्वा पावै सब कोई
अब तुम जाहु बिलम्ब न लावहु ❀ पाण्डवकटक साजि लै आवहु
श्रीहरि और न करहु बिचारा ❀ अब रण होय हमार तुम्हारा
अस कहि कर्ण बिदा पुनि मांगी ❀ प्रभुपद परसि चलेउ अनुरागी
तन उत चल मन हरिके साथा ❀ पहुँचे करण जहां कुरुनाथा
साम दाम भय भेद दिखाई ❀ कही कर्ण के मनहिं न आई

दो० दारुक हाँके अश्व पुनिं, चले बेगि भगवान ।
जाय युधिष्ठिर कटकमहँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वाणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
श्रीकृष्णगमनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

कथा सकल मुनि बरणि सुनायो ❀ जनमेजय नृप सुनि सुख पायो
पाछे बहुरि सहित अनुरागा ❀ लगेकहन इमि सकल बिभागा
कटक समीप कृष्ण जब आये ❀ धर्मराज सुनि आतुर धाये
सब बन्धुन मिलि कीन्ह प्रणामा ❀ लइगे जहां भूप बिश्रामा
अरघ देत आसन बैठारे ❀ शीतलजल लै चरण पखारे
पूछेउ भूप कहा करि आये ❀ बासुदेव हँसि बचन सुनाये
कह हरि तेहि एको नहिं मानी ❀ देन न कहत भूप अभिमानी
मिलिहि न और यतनते राजा ❀ करहु युद्ध कीजे दल साजा

दो० सुनत श्रवण नहिं बातकछु, देवेकी नहिं चाह ।
बिना युद्ध नहिं महि मिली, कोटियतन नरनाह ॥
मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ साजौ सेन बिलम्ब न कीजै
होइ निशङ्क अब करहु तयारी ❀ ह्वैहै विजय कहत गिरिधारी
समुझत कृष्ण बचन कछु हीमा ❀ लरहु नरेश कही यह भीमा
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै ❀ सजि निजकटक दुन्दुभी दीजै
करहु युद्ध यह मन्त्र हमारा ❀ होई सो जो लिखी करतारा
बोले बचन नकुल मुसकाता ❀ अब नृप लरौ न दूसरि बाता
जानत हमहिं दीन मतिपच्छी ❀ रहा चुपाय बात नहिं अच्छी
अब जनि लरिय डरिय नरदेवा ❀ बोले बचन नकुल सहदेवा
दो० नहिं मानत हरिके कहे, भूले देखि समाज ।
लरहु न करहु बिलम्ब अब, कही द्रुपद महराज ॥
कही सात्यकी सुन्दरि बानी ❀ बिन संग्राम क्षत्रियन हानी
ताते अवशि युद्ध अब कीजै ❀ रिपु रण जीति देश सब लीजै
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो ❀ सहितबिराटशिखण्डीभाख्यो
धर्मराज हरि मिलि ठहरावा ❀ करब युद्ध यह मन्त्र दृढ़ावा
तेहि अवसर निज साज बनाये ❀ भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये
कुण्डिनपुर नरेश बरिआरा ❀ सो नृप बासुदेव को सारा
है लघु बंधु रुक्मिणी केरा ❀ लीन्हे साथ कटक बहुतेरा
गजरथ पदचर बिपुल तुरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा
दो० तेहि अवसर प्रापत भयो, भूपति सभा मँझार ।
बैठारे पारथ निकट, सबहि जोहारि जोहार ॥
देखेउ धर्मराज की ओरा ❀ बोले बचन गुमान न थोरा
जो आरत ह्वै राखो मोहीं ❀ भूप अशत्रु करौं मैं तोहीं
बुद्धिचक्षु को नाम मिटावौं ❀ एक छत्र महिराज करावौं
हमते होउ भूप आधीना ❀ करौं भूमि सब शत्रु बिहीना
सुनत बचन मन भीम न भायो ❀ ह्वै सरोष यहि भांति सुनायो

रहत सदा हम कान्ह भरोसे ❀ कीट समान गनैं नर तोसे
फिरि ऐसी जो बात बिचारी ❀ तौ डारौं पुनि जीभ निकारी
मारौं तोहिं न अधम अभिमानी ❀ मानत कृष्णदेव की कानी
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी ❀ ताते बची मृत्यु सुनु तोरी
जस तैं बचन भूप ते भागे ❀ अस जो कहत हमारे आगे
रुक्मिणि बन्धु जो न तुम होते ❀ मारि तुरत यमलोक पठोते
छाँड़त कृष्णदेव के नाते ❀ मुँह मसिलाय जाउ उठि ताते
अस कहि भीमसेन रिसवाई ❀ भुजा पकरिकै दीन्ह उठाई
चला तुरत जिय लज्जा पायो ❀ दुर्योधन के भवन सिधायो

दो० गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना लै साथ ।
अतिआदरते उठिमिले, बैठारे कुरुनाथ ॥

बैठतही इमि बचन बखाने ❀ जो कुरुपति तुम होउ डराने
तौ हम होईं तुम्हरे सङ्गा ❀ पाण्डव रण जीतौं रणरङ्गा
जो तुम होउ अधीन हमारे ❀ करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई ❀ कहि कटुबचन दीन्ह दुरिआई
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे ❀ जीतिसकै जगमहँ अस कोरे
गुरू द्रोण जो अस्त्र सँभारै ❀ देव अदेव सकल रण हारै
बृद्ध पितामह बिदित हमारे ❀ जिनसे परशुराम रण हारे
ते भृगुनाथ बिष्णु अवतारा ❀ और को जीति सकै संसारा
मोरा बल कोउ थाह न पावत ❀ ताहि मूढ़ तैं भरम देखावत
बल तुम्हार हमरो सब जाना ❀ जादिन कृष्ण बांधिकै आना
शीश मुण्डि कीन्हे अपमाना ❀ बलि छुड़ाइ दीन्हे जियदाना
हरि पाण्डव के भयउ सहायक ❀ तेऊ नाहिं मोरे रण लायक

दो० होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ ।
अतिलज्जितहोइ नाइ शिर, गयो भवनसकुचाइ ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई ❀ अब नृप सुनहु कथा मनलाई
गये कृष्ण पाण्डव घर जबते ❀ भाअतिबिकल कुरुपति तबते

तेजहीन मन अति दुचिताई ❀ शोचविवशनिशि नींद न आई
प्रातहि होत द्रोण गृह आये ❀ करि प्रणाम इमि बचन सुनाये
पाण्डव हमहिं बैरु सरसाना ❀ शरण तुम्हार भरोस न आना
होइय आसु सहायक मोरे ❀ अब मैं चरण शरण गुरु तोरे
अस कहि नयननीर भरिलीन्हा ❀ सुनिकै द्रोण उतरु तेहि दीन्हा
भरत वंश में जन्म तुम्हारा ❀ सुयश तुम्हार विदित संसारा
राज्यनीति महँ बहुत प्रवीना ❀ करत भूप तुम कर्म मलीना
कपट चूप कछु सत्य न हारे ❀ तुम पाण्डव केहि हेत निकारे
शकुनी मन्त्र मानि छल कीन्हा ❀ आप कृष्ण कहे अंश न दीन्हा

दो० आपु बली हैं पाण्डुसुत, अरु सहाय भगवान ।
करहु भूप विधिकोटितुम, जीति न सकहु मशान ॥
उनको कछुअ न दोषनृप, तुमअतिकीन्हअनीति ।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

बासुदेव हैं हरि अवतारा ❀ उनहिं को जीतिसकै संसारा
ते दयालु पाण्डव के जानौ ❀ ह्वैहै बिजय सत्य करि मानौ
भीषम आदि सकल रणधीरा ❀ रण तीरथ महँ तजैं शरीरा
जानौ सब कौरव संहारे ❀ हमहूं करण जाव रण मारे
होइहि सुनि सबको मदभङ्गा ❀ हम नृप करब तुम्हारो सङ्गा
हम आनत मनमें नाहिं त्रासा ❀ भये बृद्ध नाहिं जीवन आसा
होइ निश्चिन्त बैठु अब राजा ❀ हम तन तजब तुम्हारे काजा
छोड़त तुम्हैं बहुत कठिनाई ❀ जुरै काल तौ करौं लराई

दो० युद्ध जुरे पाण्डव सहित, मैं रोकौंघनश्याम ।
कोटि शपथ भृगुराम की, करौं घोर संग्राम ॥

धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा ❀ अब तुम अभय होहु नरनाहा
द्रौणी कही बन्धु सुनिलीजै ❀ भय त्यागहु मन धीरज कीजै
तीन्यों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै
हम मन बच क्रम तोर सहाई ❀ अब तुम अभय होहु कुरुराई

भीषम भवन गयउ तब राजा ❋ द्रोण कर्ण ले सकल समाजा
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा ❋ गङ्गासुत आदर करि लीन्हा
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा ❋ सतिव्रत के बैठ सामीपा
कह भीषम केहि कारण आये ❋ सुनि महीप तब वचन सुनाये
बन्धु बैर शालत उर मोरे ❋ आयों शरण पितामह तोरे

दो० एक सबल तौ पाण्डुसुत, औ सहाय भगवान ।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान ॥

अब उनके दल जुरे अपारा ❋ शूर एक ते एक जुझारा
नृपको बचन श्रवण सुनि लीन्हा ❋ हँसि गाङ्गेय उतरु तब दीन्हा
उन न करेव अपराध हमारा ❋ तुम छलकरि परदेश निसारा
शकुनी करण कुबुद्धि सिखाई ❋ खोयहु तुमहिं सुनहु कुरुराई
पुनि यदुनाथ बसीठी आये ❋ मांगे पांच ग्राम नहिं पाये
हम सब तुमहिं रहे समुझाई ❋ सुनत नहीं धौं कुमति सिखाई
करण भरोस मानि मन राजा ❋ करत अनीति नशावत काजा
कहा हमार श्रवण सुनि कीजे ❋ नीच जाति को मन्त्र न लीजे
यह है करण जाति को हीना ❋ तुमहिं सिखावत मन्त्र अलीना
जाति अहीर अधम अभिमानी ❋ सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी
उचित न कछु उत्तर पुनि जानी ❋ उठिगा भवन मानि गिल्यानी

दो० होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ ।
जियत पितामह जबलगे, तौ न छुवौं धनुहाथ ॥

यह कहि बचन करण उठि गयऊ ❋ दुर्योधन मन विस्मय भयऊ
मुख मलीन कुरुनायक चीन्हा ❋ देखि पितामह धीरज दीन्हा
पाण्डवसहित आपु घनश्यामा ❋ जीति न सकहिं भूप संग्रामा
करि मन कोप धनुष कर धारौं ❋ सकल क्षितीश धरणि के मारौं
को नरेश मोरे रण लायक ❋ करौं निपात साधि धनुशायक
चौबिसदिन भृगुपतिरणकीन्हा ❋ तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना ❋ आये भूप भूमि के नाना

दो० कर्ण भूप संदेश तुम, सुनहु भूप दै कान ।
कौरव पाण्डव भूमि सब, आइ दशो दिशिबान॥
पाहि पुकारि शरण जब ऐहो ❀ तौ तुम जीव दान नृप पैहो
जो भूलत हो कृष्ण भरोसे ❀ तुम न बचहु दुर्योधनरोसे
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई ❀ त्यहित्यागहु जो चहहु भलाई
जो उठि लड़हु बात नहिं मानहु ❀ कृष्ण समेत मरे सब जानहु
सो सुनि भीमहिं पै रिस व्यापी ❀ कहत सँभारि बचन नहिं पापी
भे दृग अरुण खड्ग कर लीन्हा ❀ बरजेउ कृष्ण पाणिगहिलीन्हा
अब जय विजय सुनो सब बाता ❀ करइ न भूप दूत कर घाता
यदपि कहै कटु बचन उकीला ❀ करै न क्रोध नरेश सुशीला
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी ❀ गयो उलूक भागि भय मानी
दो० बोलिनिकट नृप धर्मसुत, कह्यो बचन समुझाइ ।
दुर्योधन ते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ ॥
अब तुम वृथा न जानहु बाता ❀ कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु प्राता
निजपौरुष तुम करहु सँभारा ❀ कोटि यतन नहिं होइ उबारा
अस कहि पठयो फेरि उलूका ❀ चला हृदय उपजी अतिहूका
रथ अरूढ़ होइ तुरत सिधाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
पँवरि दुवार तज्यो असवारी ❀ गा दुर्योधन सभा मँझारी
भीषम द्रोण कर्ण सब राजा ❀ सभामध्य कुरुनाथ बिराजा
देखी राज मण्डली भारी ❀ बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी
कह नृप कहन सँदेश पठाये ❀ समाचार उनके कछु लाये
हँसि बोले तब बचन उलूका ❀ कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका
हम आवत तुम होहु तयारा ❀ करहु युद्ध नहिं और बिचारा
सकलसभामहँ तुमहिं सुनावत ❀ होहु सचेत धर्मसुत आवत
दो० शपथकीन्ह भगवानकी, यह उन कह्यो सँदेश ।
प्रात होत अब आइहैं, अब न बिलम्ब नरेश ॥
सुनहु सँदेश न राखो गोई ❀ करो भूप अब जो रुचि होई

बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई ❋ कहे वचन पुनि सबहिं सुनाई
अब नृप धर्मराज मम नेरे ❋ आवत कठिन काल के प्रेरे
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावों ❋ मारि सकल यमलोक पठावों
शरपिंजर करि भीम दबावों ❋ मारि सकल पाण्डव बिनशावों
बांधि युधिष्ठिर करि मनुसाई ❋ जयतिपत्र देहों लिखवाई
सहि न सके पाण्डव मम शायक ❋ अबतुम अभय होहु नरनायक
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई ❋ अब सुनु अपर कथा कुरुराई

दो० होत प्रात उठि धर्मसुत, गये जहां यदुराय ।
करहिं बन्दना जोरिकर, चरण कमल शिरनाय ॥

कही युधिष्ठिर अब बनवारी ❋ साजि कटक अब करहु तयारी
चलत उलूक सुनहु भगवाना ❋ प्रात होत कहिदीन पयाना
कृष्ण तुम्हारि शपथ हम खाई ❋ अबबिलम्बमहँ अतिकठिनाई
पठै दिये चरचर बनवारी ❋ कहेउ नृपनसन करहु तयारी
निज निज सेन नरेशन साजी ❋ उठे निशान दुन्दुभी बाजी
पलटनितान लदायो चारू ❋ और लदायो सकल बजारू
अगणित ऊंट बृषभ शकटादी ❋ खच्चर महिष चले लै लादी
सकल वस्तु कारीगर नाना ❋ लै लै लादि चले निज बाना
गजरथबाजिसाजिशिबिकाली ❋ भये अरूढ़ मेदिनी हाली

दो० सहनाई अरु पणव घन, ढोल ठोंकि झनकार ।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे बिबिध प्रकार ॥
बन्दीगण बोले बिरद, रही शंख ध्वनि पूरि ।
द्विरद घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना ❋ भयो अरूढ़ बजाय निशाना
धृष्टद्युम्न शिखण्डी आवत ❋ रथ अरूढ़ है शंख बजावत
युद्धमान सेना सब साजे ❋ पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे

द्विरद अरूढ़ बीर बरियारा ❋ चल्यो तमौजा द्रुपदकुमारा
पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे ❋ भे असवार नृपति दल गाजे
पुनि रथ साजि सात्यकी आयो ❋ सेन संग निज शंख बजायो
सुतन समेत विराट भुवारा ❋ लै निज कटक चले सरदारा
काशिराज सेना सँग लीन्ही ❋ रथअरूढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्ही
शूरसेन अपनो दल साजे ❋ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे
जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❋ लै निज कटक चलो पुनि तेऊ
चालिस सहस छत्रधर राजा ❋ भे अरूढ़ बाजे पुनि बाजा

दो॰ साजे सकल नरेश पुनि, गजरथ तुरँग पदात ।
रथी महारथ गजरथी, कटक क्षौहिणी सात ॥

मिलिजुरि पँवरिद्वार जबआवा ❋ धर्मराज निज द्विरद मँगावा
कुन्तल सजि लायो मयमत्ता ❋ शंख वर्ण सुन्दर चौदन्ता
देखत रूप परम विकरारा ❋ चारिउ चरण बहत मदधारा
कनकरचितमणिखचितअँबारी ❋ गजमुक्ता झालरि छबिकारी
धर्मराज हरिपद शिर नाई ❋ भे अरूढ़ प्रभु आयसु पाई
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे ❋ करि अतिनाद नकीबन टेरे
भयो शोर बहुदिग्गज डोले ❋ करिउदबाद बन्दिजन बोले
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे ❋ जहँ तहँ विपुल नकीब पुकारे
होत महारव भयो अतङ्का ❋ बाजि उठे दल में बहु डङ्का
भीमसेन अपनो रथ साजे ❋ भये अरूढ़ बार बहु गाजे
पुनि पांचो द्रौपदी कुमारा ❋ शंख बजाय भये असवारा

दो॰ मणिमय चित्रविचित्र रथ, भये नकुल असवार ।
पांचकोटि यकसठ लिये, साज्यो भीम कुमार ॥

तब सहदेव कीन असवारी ❋ अर्जुन लै साजे बनवारी
लै शंकर सनाह पहिरायो ❋ इन्द्रदत्त शिर मुकुट बँधायो
आदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❋ पहिरायो जेहि मृत्यु न होई
अक्षय तूण वरुण जो दीन्हा ❋ सोई लै हरि पढ़ि ढिग कीन्हा

हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना ❀ गाण्डिवनाम सकलजगजाना
सत पञ्च लागी हैं जामें ❀ विद्युत्कोटि प्रभा है तामें
सो लै हरि अर्जुन कहँ दीन्हो ❀ धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हो
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ रण महँ शत्रु जाय तुम मारे
पुनि दीन्हो प्रभु आशिष येहा ❀ निश्चय विजय न कछु संदेहा
अस कहि नन्दिघोष रथ आना ❀ सारथिरूप धरेउ भगवाना
श्वेत बरण लै चारो घोरे ❀ ते हरि आनि यानमहँ जोरे
करि अतिकृपा बार नहिं लायउ ❀ पाणि पकरि हरि पार्थ चढ़ायउ
करि सारथी बेष बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
शीशमुकुट जनु तरणि अभङ्गा ❀ चन्दन ते चर्चित सब अङ्गा
पीतबसन तनु श्याम सोहावन ❀ मणियुत पीत बिराजत पावन
कौस्तुभ कण्ठ रुचिर बनमाला ❀ अङ्गद युत द्वौ बाहु बिशाला

दो० कमलनयनकुण्डलकलित, ललितमधुरमुसकान
कच कारे कटि केहरी, कोटि काम हरमान ॥
पाणिकल्पतरु पदकमल, कमलबदन कमनीय ।
केशी कंस कलेश हर, कीन्ह कृपाकरि जीय ॥
कर्‌यो सारथी बेष जब, रथ हांक्यो भगवान ।
पार्थ ध्वजापर बैठिकै, तब गर्ज्यो हनुमान ॥

है प्रसन्न बोले भगवाना ❀ सुनहु युधिष्ठिर बचन प्रमाना
मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ ब्यूह बनाय गमन पुनि कीजै
बिरचि पिपीलब्यूह भगवाना ❀ कीन्ह बजाय निशान पयाना
अर्जुन रथ हांकेउ बनवारी ❀ सकल सेनके भयो अगारी
युद्धमान पुनि दक्षिण ओरा ❀ चले संग लै दल घन घोरा
सेनसहित दिशि बाम तमोजा ❀ रथ अरूढ़ मनो अपर मनोजा
धृष्टद्युम्न अति बल धनुधारी ❀ अर्जुन रथके चलेउ पछारी
नाना बस्तु लादि लै चारू ❀ ता पीछे सब लोग बजारू
ताके दक्षिण भाग शिखण्डी ❀ लिये साथ निजसेन अखण्डी

दल चतुरङ्ग सङ्ग पुनि साजे ❀ धृष्टकेतु दिशि बाम बिराजे
लिये धनुष कर शायक तीछे ❀ सेन समेत सात्यकी पीछे

दो० चलत कटकहाली धरा, लागी रेणु अकास ।
चले नकुल सहदेव सँग, लिये सङ्ग रनिवास ॥

दक्षिण दिशि द्रौपदी कुमारा ❀ चले सङ्ग लै कटक अपारा
घटउत्कच दल लै दिशि बामा ❀ पांच कोटि राक्षस बलधामा
अभिमन्यु रथ पाछे पुनि आवत ❀ लिये धनुष कर बाण फिरावत
अभिमन्यु सङ्ग बीर बरियारा ❀ उत्तर शंख बिराट कुमारा
लीन्हे साथ सेन समुदाई ❀ कीन्ह पयान निशान बजाई
धर्मराज पुनि कीन्ह पयाना ❀ बाजे दल गहगहे निशाना
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❀ बाजे शंख चले दल जूहा
चालिस सहस छत्रधर राजा ❀ चले सङ्ग लै सेन समाजा
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी ❀ भयउ अरूढ़ दुन्दुभी बाजी
उठी धूरि गो छाय अकाशा ❀ रवि अलोप पूरी सब आशा
लैकर धनुष चले पुनि गाजत ❀ नृप के दक्षिणभाग बिराजत
बायें ओर बिराट भुवारा ❀ कीन्ह पयान बजाय नगारा
काशिराज नृप गज के पाछे ❀ सेन समेत बिराजत आछे

दो० रथ अरूढ़ कर धनुषधारि, शूरसेन महराज ।
नृपगज के आगे चले, लै निजसाजसमाज ॥

पीछे अनी बृकोदर आवत ❀ करत घोररव गदा फिरावत
बाम पाणि लीन्हे करवाली ❀ भीमहिं चलत धरा सब हाली
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले ❀ कमलनाल अहिदिग्गज बोले
कौतुक देखि चकित सुर डीठी ❀ परेउ भार कच्छप की पीठी
कद रव भीम बार बहु गाजे ❀ रवि तुरंग तजि मारग भाजे
सुरपुर भेदि भीम की हांका ❀ परी जाय ध्रुवलोकप हांका
चलीजात मग सेन अपारा ❀ बाजत शंख मृदङ्ग नगारा
भाट भरत कुल बिरद बखानत ❀ सुनिसुनि शब्द शत्रुभयमानत

दल बिलोकि मग होत अतङ्का ❀ रघुबर प्रथम गये जिमि लङ्का
दो० गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल।
गजघण्टा गाजत सुभट, सुरपुर शब्द कराल ॥
कम्पत शेष विकल भुजगेशा ❀ उठी धूलि छपिगयो दिनेशा
सुर बिमान नभ ऊपर छायउ ❀ सुमन वर्षि शुभ सगुन जनायउ
कह नृप तुम हरि अन्तरयामी ❀ विजयउपाय कहौ अब स्वामी
बोले बिहँसि बचन भगवाना ❀ करहु नरेश शक्तिको ध्याना
तासु प्रसाद विजय नृप होई ❀ यह तजि और उपाय न कोई
सुनि हरिवचन भूप अनुरागे ❀ करन ध्यान अम्बा को लागे
करि आचमन मूंदि दृग लीन्हें ❀ प्राणायाम बेदविधि कीन्हें
करि अष्टाङ्ग सकल सुर साधी ❀ करत ध्यान नृप लागि समाधी
दो० मुक्तकेश कर खड्गधर, मुण्ड माल दृग लाल।
को सहाय मेरी करै, बिन काली यहि काल॥
उरग किंकिणी कटिलसै, शवारूढ़ भुज चारि।
हरन हमारे दुसह दुख, हे त्रिपुरारि पियारि ॥
यहिबिधिबिनयभूपजबकीन्हा ❀ है प्रसन्न तब दर्शन दीन्हा
सानुकूल तब भई भवानी ❀ बरंब्रूहि बोली हँसि बानी
हे नरेश तुव हरिहि पियारे ❀ मांगहु जो अभिलाष तुम्हारे
सुनि प्रियगिराअमियरससानी ❀ बोलेउ राउ जोरि युग पानी
मिटे कलेश सुनी तव भाषा ❀ दरश देखि पूजी अभिलाषा
जानहु मातु मनोरथ मोरा ❀ मैं का कहौं दास मैं तोरा
तब यह कही अनुग्रह मोरे ❀ ह्वैहैं सफल मनोरथ तोरे
धर्मराज कहँ दै बरदाना ❀ भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना
हरि नरेश मन सुख अधिकाई ❀ कीन्ह पयान निशान बजाई
मग सर सरित सूखिगा पानी ❀ पङ्क रेणु है गगन उड़ानी
दो० चलेजात मग धर्मसुत, लीन्हे दल निज साथ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजनाथ ॥

करत शिबिर पुनि करतपयाना ❀ तब कुरुदेश आय नियराना
बीच बीच मग करत बसेरा ❀ कबहुँ पतान होय कहुँ डेरा
नगर वारुणावर्त्त समीपा ❀ कीन्ह्यो शिबिर पाण्डुकुलदीपा
जागे सकल निशा अवसाना ❀ प्रातहोत पुनि कीन्ह पयाना
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा ❀ गज आरूढ़ है चले नरेशा
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा ❀ कीन्हे धर्मराज तहँ डेरा
अमल अमोल बितान तनाये ❀ पटल कनात सहित छबि छाये
बाजत दल घरियार घनेरे ❀ जहँ तहँ परे नृपन के डेरे
परो धर्मसुत सेन अखण्डा ❀ परखाहिंशिबिरदेखिनिजझण्डा

दो० धर्मराज की पाइ सुधि, कुन्ती पहुँची आय।
देखि पुत्र अरुपुत्रतिय, आनँद उर न समाय॥

धर्मराज पदबन्दन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा
बन्दत चरण नकुल सहदेऊ ❀ पाइ असीष मुदितमन भयऊ
अर्जुन भीम आइ पद बन्दे ❀ अभिमन्यु आशिषपाइअनन्दे
परसे चरण द्रौपदी रानी ❀ उर लपटाइ लीन्ह गहि पानी
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी ❀ भीतर पलटि गई दुख मेटी
सुनि सब पुत्रवधू उठि धाई ❀ परी चरण अति आनँदछाई
कुशल पूछिकै कण्ठ लगाई ❀ दीन्ह असीष निकट बैठाई
अभिमन्यु आदि परे पग नाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावत छाती

दो० कुन्ती गोद समोद तब, बैठारे सुत नन्द।
सबलसिंह चौहान कह, पूरिरह्यो आनन्द॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टाविंशोऽध्यायः॥ २८॥

कह ऋषि सुनु जनमेजयराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण सुखदाई
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई ❀ भयउ अरूढ़ निशान बजाई
भीषम करण द्रोण धनुधारी ❀ साजी सेन भयंकर भारी
कृपाचार्य द्रोणी रण रङ्गा ❀ लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा

बाहुलीक लै कटक अपारा * भये अरूढ़ बजाइ नगारा
सोमदत्त सँग दल समुदाई * बाजत पटह शंख सहनाई
भूरिश्रवा सेन सब साजे * गङ्गाधर कम्बोज बिराजे
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना * दुर्योधन सँग कीन्ह पयाना
शल्य नरेश हलम्बुष साजे * पवन निशान शंख बहु बाजे
साज्यो पुनि कलिङ्ग नरनाथा * लै नवलाख द्विरद पुनि साथा

दो० रथ तुरङ्ग बहु रङ्ग के, सेना साथ अनन्त ।
असी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदन्त ॥

सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा * अति रणधीर वीर बलधामा
लैकर धनुष बजाइ नगारा * कौरव संग भयो असवारा
शकुनी औ विकरण रणरङ्गा * द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा
सौ बन्धव दुर्योधन केरे * भ्रातजात अरु तनय घनेरे
निजनिज रथन भये असवारा * बाजत गोमुख शंख नगारा
सेन समेत त्यागि सब धर्मा * द्विरद अरूढ़ चल्यउ कृतवर्मा
नृप उलूक वृषसेन भुवाला * चले सङ्ग लै कटक विशाला
नृप शशिबिन्दु चले दलसाजे * तुरँग अरूढ़ दमामे बाजे
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा * चले साथ लै सेन समाजा
अस्त्रनिपुण अरु अति बलदाई * ज्येष्ठ मित्रबिन्दा के भाई
कह हरि कथा भूप तुव जानी * अति प्रिय कृष्ण देवकी रानी
तासु बन्धु द्वौ अति बलदाई * दुर्योधन के भये सहाई

दो० साठि सहस नृप छत्रधर, दै गहगहे निशान ।
निजनिज दल सँग लैचले, गर्द लोपिगे भान ॥

एकादश क्षौहिणि दल साथा * करत अकूत चल्यो कुरुनाथा
बाजे बाजन भांति अनेका * उठी धूरि रविमण्डल छेका
भा अँधियार जानि निशि घोरा * बिछुरे चक्रवाक के जोरा
बाजत बिपुल नृपन के डङ्का * हाली धरा परम आतङ्का
दलके भार धराधर डोले * बिरदावली भाट बहु बोले

सुनि सुनि नाद नकीबन केरा ❀ खग मृग त्यागो भागि बसेरा
गर्जत बिपुल सुभट सग जाहीं ❀ अति आतङ्क होत दलमाहीं
पीत ध्वजा रथ पीत बिराजे ❀ पीत धनुष पीतै गुण साजे
पीत बरण चारो हैं घोरे ❀ बसन बिचित्र पीत रँग बोरे
धनुष चिह्न ध्वज ऊपर राजत ❀ पीतवर्ण दल कर्ण विराजत

दो० श्वेतबर्ण तन बसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान ।
श्वेतकेश रथ बाजि हैं, श्वेतध्वजा फहरान ॥

ताल चिह्न ध्वज शोभा पावत ❀ लै दल श्वेत पितामह आवत
श्यामबर्ण रथ अधिक सोहावत ❀ श्यामबर्ण घोड़े छबि पावत
नील कञ्जरित धनु कर लीन्हे ❀ नीलबर्ण तामें गुण दीन्हे
नीलरङ्ग फहरात पताका ❀ खड्ग चिह्न तामें अतिबांका
नील निचोल बिभूषण साजे ❀ नीलबर्ण दल द्रोण बिराजे
अरुणबर्ण दल साजि सुशर्मा ❀ अरुणवर्ण शोभित धनु कर्मा
अरुण चमर शोभित रथकेतू ❀ चलेउ साजि कुरुपति जयहेतू
सिन्धुराज के तुरै हरेवा ❀ अति लाघव गति मनहुँ परेवा
हरित केतु सोहत रथ ऊपर ❀ हरित बसन छायो दल भूपर
कौरव सब कुरुनायक सङ्गा ❀ तिनके रथन ध्वजा पचरङ्गा
द्विरद चिह्न नृप स्यन्दन सोहत ❀ अतिविचित्र रणको मनमोहत

दो० निज निज रथन अरूढ़ नृप, सोह ध्वजा बहुरङ्ग ।
हरितपीत कोउ श्यामसित, राजत सुघर सुरङ्ग ॥

यहि प्रकार कौरवपति सैना ❀ चलीजात उपमा कछु हैना
अतिअगाधकछुअन्त न जाना ❀ प्रलयसिन्धुकहि व्यासबखाना
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा ❀ कौरव कटक टिका घनघोरा
तनवायो तहँ बिपुल बिताना ❀ बजत घोर रव नौबतखाना
गड़े केतु दल नानाकारा ❀ बाजत पँवरि पँवरि घरियारा
शिविरशिखिरअतिसमयलधामा ❀ कीन्हेउ खानपान बिश्रामा
दोउ नरेश बहु खनक पठायउ ❀ ऊंच नीच महि सुढर बनायउ

कारि सब भूमि गये यहि ताका ❀ अटके जहां न स्यन्दन चाका

दो० ऊंचनीच खनि खनकगन, कीन्हीं भूमि समान ।
सबलसिंह चौहान कहि, योजन सप्त प्रमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

जनमेजय पूछत अनुरागे ❀ पुनि मुनि कथा कहन सो लागे
करन हेतु कुलको सम्बोधन ❀ आये ब्यास जहां दुर्योधन
उठि प्रणाम कीन्हो तब राजा ❀ आशिष दीन्ह रहै नृपलाजा
क्षत्री धर्म बढ़ै तन भारी ❀ जीवत छुटै न बानि तुम्हारी
असकहि ब्यास बहुत समुझावा ❀ वंशबैर क्यहि काज बढ़ावा
सो अब भूप त्यागि करि दीजै ❀ कलह नीक नहिं सम्मत कीजै
देहु अंश सुनि शीष हमारी ❀ पाण्डव सबल होइ बड़ि रारी
बिनकारण कीन्हो अपकारा ❀ लै कलङ्क तुम बिपिन निकारा
समुझि परस्पर करहु मिताई ❀ देहु अंश नृप मिटै लड़ाई
ब्यास कही कछु चित्त न आनी ❀ सुनतबिहँसि बोला अभिमानी

दो० द्रोण कर्ण भीषम प्रबल, मो हित ये धनुधारि ।
देहुँ न भूमि मुनीश मैं, करौं भयंकर रारि ॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❀ सब गुरुद्रोण मारि बिचलावैं
लरै पितामह जो करि क्रोधा ❀ सकै रोकि रण को जग योधा
चलहिं सरोष करण धनुतानी ❀ को रण बचहि महामुनि ज्ञानी
सुनिनृपबचनजानि अभिमानी ❀ कही ब्यासमुनि प्रथम कहानी
पुर कम्पिला देश पञ्चाला ❀ प्रषद नाम तहँ भयो भुवाला
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा ❀ द्रुपदनाम त्यहि सुत उपजावा
बिद्या कारण भूप पठाये ❀ अग्निबेष के आश्रम आये
ऋषि के भवन बड़ी चटशारा ❀ द्विजकुमार अरु राजकुमारा
प्राकृत देव बचन को भाखा ❀ ताते दूरिकिये नहिं राखा
भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा ❀ पढ़हिं द्रोण तहँ बुद्धि उदारा

प्रषद् पुत्र ते परी मिताई ❀ एकहि संग पढ़े मन लाई
रह्यउ न बीच प्रीति अतिवाढ़ी ❀ नृप सुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी
जब पाइब हम साज समाजू ❀ आधा बांटि देहुँ तोहिं राजू
यहि प्रकार बीते कछु काला ❀ मरे प्रषद भे द्रुपद भुवाला
विद्या सकल द्रोण पढ़िलीन्हा ❀ जाइ महावन पुनि तप कीन्हा
गौतम सुता द्रोण पुनि ब्याही ❀ कृपभगिनी जानत जग ताही
ताके सुत भे अश्वत्थामा ❀ जगतविदितगुणसबअभिरामा

दो० द्रोण द्रुपद भूपालते, सुत हित मांगी गाइ ।
नहिं दीन्हों अपमानकरि, दियो तुरत दुरिआइ ॥
जानत जग समरथ हते, मुनिवर उभय प्रकार ।
दियोशाप नहिं क्रोधकरि, कियो न अस्त्रप्रहार ॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
गेंद काढ़ि बालकन देखावा ❀ सुनिभीषमनिजनिकटबोलावा
चरण परस कीन्हों सनमाना ❀ दीन्हों धेनु धरा मणि नाना
सौंपो पुनि कौरव कुल केतू ❀ बालक सब धनु विद्या हेतू
अर्जुन ते मानत अति प्रीती ❀ अस्त्र सिखायो अदभुत रीती
अस्त्रसिखाय निपुण पुनि कीन्हो ❀ भीषम जाय परीक्षा लीन्हो
तुङ्ग विशाल एक बट भूपर ❀ कृतमा भार धरा ता ऊपर
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो ❀ भेद हेत सब शिष्य बोलायो

दो० गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सबै यक साथ ।
कटि निषंग करवाल कसि, चले धनुष धरि हाथ ॥

भीषम द्रोण विदुर तहँ ठाढ़े ❀ द्रोण समीप मोद मन बाढ़े
जायप्रणाम सबनमिलि कीन्हा ❀ चिरञ्जीव कहि आशिष दीन्हा
पंगति बांधि ठाढ़ गुरु कीन्हा ❀ हनहु लक्ष यह आशिष दीन्हा
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपाहि ❀ देखत पुत्र पक्षि के रूपाहि
देखत वृक्ष माहँ की नाहीं ❀ सुनि यह बचन कह्यो गुरु पाहीं
सब देखत बोले कुरुराजा ❀ काहिअपितुमतेसराहि न काजा

पुनि मुनि धर्मराज ते पूछा ❀ उन कहिदीन सकल छल छूछा
सब देखतहौं सुनि यह बानी ❀ सरिहि न काम महामुनिज्ञानी
सकल शिष्य पूछे यहि भांती ❀ कहो बात नहिं गुरुहि सोहाती
पुनि पूछी मुनि अर्जुन पाहीं ❀ देखत हमहिं कहेउ उनपाहीं
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत ❀ दृष्टि लगाय तुण्ड कहँ देखत
दो० पार्थवचन सुनि द्रोणगुरु, बोले गिरा प्रमान ।
तुम ते निसरी काज सुत, करहु विशिखसन्धान ॥
सुनि अर्जुन छांड़े तब बाना ❀ कटी तुण्ड सबही सुखमाना
अति अनन्द भीषम उरछायो ❀ साधु साधु कहि कण्ठलगायो
तुमसबमिलिगुरुदक्षिणादीन्हेउ ❀ अर्जुनद्रव्य द्रोण नहिं लीन्हेउ
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना ❀ लावहु बांधि देहु यह दाना
गुरुशासन अपने शिर धारा ❀ नृपहि जीति चरणनतर डारा
देखि द्रोण तब दीन छुड़ाई ❀ गयो नरेश भवन खिसिआई
श्रीहत भयो तेज तन नाहीं ❀ नृप प्रण कीन्हो यह मनमाहीं
मोते बैर द्रोण उपजावा ❀ शिष्य हाथ अपमान करावा
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना ❀ करवावों ताको अपमाना
बोलि लीन बहु बिप्र समाजा ❀ कीन अरम्भ यज्ञकर राजा
वेद ऋचा पढ़ि बिप्र अनन्ता ❀ कीन यज्ञ पुनि वर्ष पर्यन्ता
है प्रसन्न सुरनायक आये ❀ सिद्धकाज करि [illegible]
दो० प्रथम प्रकट भइ द्रौपदी, [illegible]
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते, [illegible]
शीशमुकुटकुण्डलकवच, लि[illegible] धनुष शर हाथ ।
द्रोणनिधन हित निर्मयो, कमलयो[illegible]कुरुनाथ ॥
भीषम निधन हेत संसारा ❀ भयो शिखण्डी को अवतारा
काशिराज त्रैसुता सया[illegible]ी ❀ भीषम जीति स्वयम्बर आनी
नाम अम्बिका सब गुणरासी ❀ अम्बा नाम रूप [illegible]
युगल विचित्रवीर्य कहँ ब्याही ❀ अम्बालिका न ब्याही [illegible]

मन्द समीर गरे भरि आवा ❀ बोली वचन शोच उपजावा
गङ्गासुत तुमहीं हरि आनी ❀ तोको अब लीजे गहि पानी
सुनि भीषम बोले यह बानी ❀ राजसुता तुव बात न जानी
मात पिता सन कीन करारा ❀ देखौं मैं न नयन भरि दारा
परशुराम जहँ पुरुष अनादी ❀ भा मन शोक गई फिरियादी
कही कथा पुनि रोदन कीन्हा ❀ है दयाल तिन धीरज दीन्हा

दो० आज्ञा भङ्ग न करिसकै, भीषम शिष्य हमार ।
तोका सौंपौं पानि गहि, यह मुनि कीन करार ॥

प्रात होत मन परम अनन्दन ❀ लै नृप सुता चले भृगुनन्दन
पुरी हस्तिना को चलि आये ❀ भीषम देखि चरण शिर नाये
आदर कै पुनि भवन लवाये ❀ अतिपुनीत आसन बैठाये
भृगुपती इमि वचन सुनायो ❀ सुनहु पुत्र जा कारण आयो
की या को लीजै गहि पानी ❀ की रण रचिय कही यह बानी
मो सम कौन भयो जग क्षत्री ❀ इकइस बार हने सब क्षत्री
कोउ कोउ बचे नारिके ओले ❀ सुनि सक्रोध गङ्गासुत बोले
क्षत्री बंश वैर भरि लेहौं ❀ समर हराय जान तब देहौं
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई ❀ कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई

दो० द्वन्द्व युद्ध तहँ अति भयो, शर छूटे पुनि बाम ।
गुरू शिष्य सम्मित करो, तेइस दिन संग्राम ॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा ❀ कठिनबाण धनु तानि प्रहारा
बाम पार्श्व लागेउ जब शायक ❀ रथते बिकल गिरेउ भृगुनायक
उठे सँभारि कीन संधाना ❀ भीषम के मारे बहु बाना
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनि मारी ❀ परेउ गङ्गसुत भूमि दुखारी
शक्ति घात लागी अति पीरा ❀ सुधि न रही कछुबिकलशरीरा
ताही समय सकल बसु आये ❀ पाणि पकरि गाङ्गेय उठाये
हो अष्टम बसु को अवतारा ❀ तुम पीड़ित नाहिं करहु सँभारा

अस कहि गयो ससबनु जबहीं ❋ रथ आरूढ़ गङ्गासुत तबहीं

दो॰ ब्रह्म अस्त्र संधानि करि, कीन्हो तुरत प्रहार ।
छिटकी ज्योति अकाश महँ, चलै करत हुङ्कार ॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❋ चलेउ अकाश भयो उजियारा
भये शिथिल आयो ब्रौ धरणी ❋ युद्ध कियो करि अद्भुत करणी
जामदग्नि निज शक्ति प्रहारी ❋ भयो अघातशब्द अतिभारी
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे ❋ ग्रीषम के प्रचण्ड रवि जैसे
लागी हृदय परत नहिं सूझी ❋ महि गिरिपरो सारथी जूझी
जोती छूटि स्ववश होइ बाजी ❋ चले पलटि स्यन्दन लै भाजी
रथ आरूढ़ है रूप करि गङ्गा ❋ गही बांह लै फिरे तुरङ्गा
होइहि विजय पुत्र सुनि लीजै ❋ होइ निश्चिन्त युद्ध अब कीजै
यह कहिकै स्यन्दन पलटाई ❋ भृगुनन्दन के सम्मुख लाई
चतुर्विंश दिन युद्ध महाना ❋ अब नृप कहौं सुनो दै काना
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा ❋ करहिंनिवारण विविधप्रकारा
नारायण शर भीषम लीन्हा ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा

दो॰ तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हो पशुपति बान ।
अतिलाघवदृगअरुणकरि, कीन्हो धनुषसँधान ॥

छिटकी ज्योति भयो उजियारा ❋ नभपथ चले करत सुसकारा
अस्त्र शस्त्रते भयो निवारण ❋ तब लागेउ तीक्षण शर मारण
नील बाण भीषम फटकारा ❋ भृगुपति के मस्तक महँ मारा
रहेउ न धीर भई अतिपीरा ❋ गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा
भीषम देखि बहुत पछिताने ❋ धाये उतरि छत्र शिरताने
कहत न बनै नयन जल बाढ़े ❋ मुखपर छत्र छांह किय ठाढ़े
उठहु न नाथ गङ्गसुत बोले ❋ सुनि भृगुराम युगल दृग खोले
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा ❋ भीषम कहँ बहु बार प्रशंसा
तुमसम कोउ गुरुभक्त न आना ❋ अब सुत मांगि लेहु बरदाना

मांगत हौं मांगे यह दीजे ❋ रथचढ़ि लड़हु कृपा पुनि कीजे

दो॰ परशुराम अरु गङ्गसुत, चढ़े रथन पर जाइ ।
धनुषबाण पुनि कर गहे, निज निज शंख बजाइ॥

त्यहि अवसर मरीचिऋषि आये ❋ गहि कर परशुराम समुझाये
अब तुम तात तजो यह काजे ❋ शिष्य पुत्र ते नीक पराजे
भीषम ते बोले ऋषिराजा ❋ गुरु ते रण जीते बड़िलाजा
ताते युद्ध त्याग करिदीजे ❋ है मत नीक भवनमग लीजे
सुनि शुभ गिरा गङ्गसुत बोले ❋ कहे नाथ तुम बचन अमोले
क्षत्री समर बिमुख होजाई ❋ लोक अयश परलोक नशाई
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहौं ❋ अपने कुलहि कलङ्क न लैहौं
परशुराम हैं हरि अवतारा ❋ जीते भूमि भूप बहु बारा
अर्जुन भुज गहि पानि कुठारा ❋ काटे सुयश बिदित संसारा
यकइस बार भूप बिन कीन्ही ❋ धरा सकल बिप्रन कहँ दीन्ही

दो॰ ताते प्रथमहिं नाथ तुम, उनहिं देउ पलटाय ।
तबलगि मैं नहिं रण तजौं, कीन्हे कोटि उपाय॥

अस कहि भवन गङ्गसुत भयऊ ❋ पुनि मुनि परशुरामपहँ गयऊ
गहि जोती कर बाजि फिरायो ❋ बहु बुझाय स्यन्दन पलटायो
चले निरखि भृगुनन्दन जाना ❋ हर्षि गङ्गसुत कीन्ह पयाना
बिनय बचन बहुभांति सुनाये ❋ करि प्रणाम अपने थल आये
ह्वै निराश तब राजकिशोरी ❋ चिता बनायो काठ बटोरी
सुरसरि निकट मांगि बर लीन्हा ❋ भीषम निधन हेतु प्रण कीन्हा
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी ❋ द्रुपदपुत्र तेहि भयो शिखण्डी
करण निधनहित सुनहु भुवारा ❋ है जग पारथ को अवतारा
तुम्हरी मीचु भीम के हाथा ❋ है निश्चय जानहु कुरुनाथा

दो॰ मृषा होय नहिं तुव बचन, जानिपरी अब सोय ।
भावी कौन्यउ यतनते, मेटि सकै नहिं कोय ॥

तुम जानत भावितव्यता, कह नृप बारहिंबार ।
करब युद्ध होइहि सोई, जोविधिलिखालिलार ॥
सुनत व्यास उठि कीन्ह पयाना ❋ भावी चित्त प्रबल हम जाना
सुमिरत मन हरि ध्यान लगाये ❋ नगर हस्तिनापुर चलि आये
धृत्तराष्ट्र आदर करि लीन्हा ❋ दण्डप्रणाम बार बहु कीन्हा
गहि पद भूप व्यासते बूझा ❋ होइहि सम्मति की अब जूझा
कह मुनि होइहि बिकट लराई ❋ बोल्यो राउ बहुरि शिर नाई
मैं जानों जेहि सब संग्रामा ❋ करि उपाय सोइ सेव्य अकामा
दिव्यदृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा ❋ ये कहिहैं तुम ते रण चीन्हा
जो होई संग्राम तमासा ❋ असकहिगयेविपिनऋषिव्यासा
दो० बैशम्पायनकर चरित, समझायो सब भूप ।
सबलसिंह चौहान कह, निजबल के अनुरूप ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दो० कह मुनि जनमेजय सुनहु, निज कुलके गुणगाथ ।
बोलि सकलमन्त्री निकट, करत मन्त्र कुरुनाथ ॥
कहहु सचिव का करिय बिचारा ❋ बैरी धर्मराज बरिआरा
लागत हमैं सकल मत फीका ❋ शकुनी कह्यो मन्त्र अब नीका
ईहै मन्त्र करण पुनि दीन्हा ❋ चहिये शत्रु संग रण कीन्हा
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ ❋ सबन बैठि दृढ़ मन्त्र ठहायउ
इहां कृष्ण लै सकल समाजा ❋ अर्जुन भीम धर्मसुत राजा
द्रुपद बिराट आदि भटभारी ❋ पूछत सबहिं मन्त्र बनवारी
बुद्धिमान हो तुम सब भूपा ❋ कहो मन्त्र निज निज अनुरूपा
तब हसि कहेउ बिराट भुवारा ❋ सुनहु मन्त्र वसुदेव कुमारा
और बिचार कौन यहि माहीं ❋ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं
दो० कही द्रुपद नरनाह तब, सुनिये श्रीब्रजराज ।

और विचार न कीजिये, करहु युद्ध कर साज ॥

कही सात्यकी सुनिये मोमति ❁ मिलिहिनभूमियुद्धबिनुयदुपति
ताते कीजै अवशि लराई ❁ शत्रु जीति महि लेब छुड़ाई
नीक मन्त्र सात्यकी बिचारा ❁ कह्यो नकुल यह बारहिंबारा
कुन्ती कह्यो मन्त्र सुनि लीजै ❁ करिअरिनिधन राजनिजकीजै
हैं यदुनाथ सहायक तोरे ❁ ह्वैहै बिजय पुत्र मत मोरे
सहदेवहु दीन्हों मत येहा ❁ कीजै रण त्यागो संदेहा
धर्मराज कीन्हे रण करणी ❁ जीतो शत्रु मिलै निज धरणी
दुर्योधन कीन्हो अभिमाना ❁ समुझायो हरि बात न माना
बिना युद्ध कैसे महि देहै ❁ अब नृप त्याग करौ संदेहै

दो० भीमसेन यहि बिधि कहेउ, बिहँसि कृष्णते बैन ।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन ॥

अब देख्यो पुरुषारथ मोरा ❁ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा
सम्मुख दुर्योधन सन लरऊं ❁ रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊं
सुनहु भूप कौरव बिन मारे ❁ नहिं आइहि सन्तोष हमारे
दुर्योधन जीतौं रण माहीं ❁ कृष्णकृपा कछु निजबल नाहीं
ताते और बिचार न करहू ❁ अब भय त्यागि भूप तुम लरहू
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा ❁ करहु युद्ध सब छांड़ि अँदेशा
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे ❁ करिहौंनिधन बिजयहिततुम्हरे
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला ❁ करहु युद्ध जनि डरहु भुवाला
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई ❁ मारौं करौं महा प्रभुताई
काशिराज दीन्हे मत येहा ❁ लड़हु नरेश तजहु संदेहा
भये सहायक श्रीबनवारी ❁ निश्चयबिजय न हारि तुम्हारी

दो० धर्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल ।
जाके शिर तुव करकमल, ताहि न जीतै काल ॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा ❁ छांड़े लोकलाज अरु धर्मा

तृण समान तिहुँ लोकहि जानी ❋ कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी
बढ़हि पाप मारे रण आई ❋ मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजै ❋ कीजै संधि युद्ध जनि कीजै
करहु न निधन यदपि अपराधी ❋ जो वहु बांटि देय महिआधी
फरकत अधर द्रौपदी बोली ❋ हे हरि धर्मराज मति डोली
क्षत्रिधर्म सब दीन्ह गँवाई ❋ है नृप निलज लाज नहिं आई
कहिये को हमरे पति पांचा ❋ पति न रही सुनिये प्रभु सांचा
बिधवा भली बिना पति नारी ❋ पतिन जिअत गइलाजहमारी
येइ पति पतित रहे शिर नाई ❋ पकरेउ केश दुशासन धाई
बार बार तुव नाम पुकारी ❋ बसन बैठि प्रभु लाज उवारी
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी ❋ बहेउ नीर दृग अति अकुलानी

दो० बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौ न छुवौं धनुहाथ ॥

प्रभुपदशपथ धनुष जब धरिहौं ❋ कीर समान कर्ण कहँ मरिहौं
सुनिकै बचन धीरता आनी ❋ रही चुपाय द्रौपदी रानी
तब हरि धर्मराज सन बोले ❋ मधुर हास श्रुतिकुण्डल डोले
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत ❋ अजहूं दुर्योधन भय मानत
तजहु नृपति सब संशय शोका ❋ हौ रण अजय को जीतै तोका
है नरेश कादर मन तोरा ❋ होत न धीर बचन सुनु मोरा
कुरुदल देखत चित्त डराने ❋ तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने ❋ मिलहि न भूमि भूप कदराने
मांगे भीख धरा जो पावहि ❋ तौ दीनहु भूपाल कहावहि
अब होइ निडर अस्त्र करलीजै ❋ करि अरिनाश राज नृप कीजै

दो० क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ ।
ह्वै निशङ्क अरिते लड़ै, शूर कहावै सोइ ॥

क्षत्री समर पराभव पावै ❋ लोक अयश परलोक नशावै

सम्मुख लड़हु छांड़ि सबलोभा ❀ तन परिहरे होत कुलशोभा
तुम नृप क्षत्री धर्म न जानत ❀ ताते युद्ध करत भय मानत
भोगी वीर धरा को नामा ❀ करहिं भोग जे नृप बलधामा
जे नृप क्रूर तजहिं कदराई ❀ मिलहि न महि तेहि आनउपाई
ताते नृपति त्यागि संदेहू ❀ होइ निशङ्क कर आयुध लेहू
सम्मुख दुर्योधन सन लरहू ❀ क्षत्री धर्म प्रकट अब करहू
पुनि हँसि कह्यो द्रौपदी रानी ❀ हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी
भय छांड़हु अब रचहु लड़ाई ❀ सुनि मम बचन तजहु कदराई
भरत बंश भये भूप अनेका ❀ शूर समर्थ एक ते एका

दो० होइ जो मेरु समान अरि, तृण अवलोकित दीठि ।
महाबीर अरु धीर धर, कालहु देत न पीठि ॥

की अब बुद्धिभ्रष्ट तुव भयऊ ❀ की वह बिजय पलट होइगयऊ
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा ❀ आयुध छोड़ि धरहु त्रियभेशा
धर्मराज पुनि लज्जा पायो ❀ अरुणनयन करि बचनसुनायो
बोलत नारि न बचन सँभारे ❀ लड़हुँ शत्रुसन टरहुँ न टारे
मेरे श्रीब्रजराज सहायक ❀ सकै न जीति युद्ध कुरुनायक
धीरज धरहु आजु निशिबीते ❀ करिहौं युद्ध नारि सबहीते
अपनो करो नीच फल पैहै ❀ है पापी कौरव मरि जैहै
कृष्ण देव की सीख न मानी ❀ उनकी मृत्यु आइ नियरानी

दो० दुर्योधन के उर बढ़ेउ, द्रुपदसुता अभिमान ।
गर्वप्रहारी हरि बिदित, मरे सकल अरिजान ॥

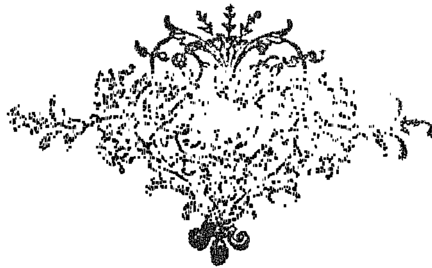
प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे ❀ होइहि निधन सकल रिपु मोरे
कहत असत्य बचन नहिं तोसे ❀ सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे
हरि की कृपा सुफल सब काजा ❀ अस कहि भयो मवन मुखराजा
हँसत बचन बोल्यउ बनवारी ❀ सुनहु बात भूपाल हमारी
अब नरेश छांड़हु संदेहा ❀ कीजै युद्ध सत्य मत येहा

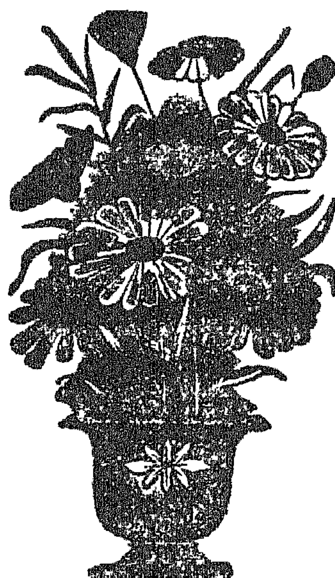
वचन हमार मृषा जानि मानहु ❀ होइहै विजय सत्य नृप जानहु
करिहौं मैं होई यश तोरा ❀ शरणागतपालक प्रण मोरा
हौ नरेश अब शरण हमारे ❀ करहुँ सुफल सब काज तुम्हारे

दो० मनसा बाचा कर्मणा, करहुँ तुम्हारो काज ।
अभय होहु नरनाह अब, तुमहिं देहुँ सबराज ॥
उचित सकलसामर्थकह, शरणागत प्रतिपाल ।
तदपि मोरिबाणी बिदित, धर्मराज तिहुँकाल ॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौं तव शीश ।
बचै न खल जीवितजगत, शपथ शिवाअजईश ॥
भयो मुदित मन धर्मसुत, सुनि हरिगिराप्रमान ।
भणित पर्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

इति उद्योगपर्व समाप्तम् ॥





श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भीष्मपर्व ॥

गुरु गोबिंद के चरण मनैये ❀ ज्यहि प्रसाद उत्तम गति पैये
कै प्रणाम रघुपति के पांयन ❀ चारि बेद जाके गुण गायन
अवधनाथ सीतापति सुन्दर ❀ दीनबन्धु रघुबंश पुरन्दर
शिव सनकादिक अन्त न पावैं ❀ नरमुखते केहिबिधि यश गावैं
शुक शारद नारद से पाठक ❀ हनूमान गावैं गुण नाटक
बालमीकि रामायण करता ❀ राम चरित्र पाप को हरता
अष्टादश पुराण श्री भारथ ❀ भाष्यो ब्यास ज्ञान पुरुषारथ

दो० पाराशरते जन्म है, ब्यासदेव ऋषिराज।
यामुखभारतप्रकटभो, करिकुलको सिरताज ॥

गुरु गणेश शारद के पांयन ❀ करौं प्रणाम होहु सुखदायन
महिमा निगम कहत नहिं आवै ❀ शेष सहस मुखते गुण गावै
संबत सत्रह सै अट्ठारहि ❀ पुनिवातिथि मंगल के बारहि
माघ मास में कथा बिचारी ❀ औरँगशाह दिलीपति भारी
सब पुराण पारायण भारथ ❀ यामहँ कुरुपाण्डव पुरुषारथ
ब्यासदेव भुवभार निवारण ❀ भारत रचो जगत के तारण

दो० योग युद्ध रस मंत्रणा, भारत मों है सर्व।
सबलसिंहचौहान कह, भाषा भीषमपर्व ॥

नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये ❀ पञ्च ग्राम मांगन प्रभु आये
दुर्योधन सुनिकै हठ गहेऊ ❀ सूजी अग्र देन नहिं कहेऊ
कहि हरि चले छीनि सब लेहैं ❀ अर्जुन भीम शाक तब देहैं

गयो आशु जहँ धर्म नरेशव ❋ इतकी कथा कही सब केशव
मांगे पांच ग्राम नहिं पाये ❋ गर्व वचन कुरुनाथ सुनाये
हित की बात छांड़ि सब दीजे ❋ पहिरि सनाह युद्ध अब कीजे
सुनेउ युधिष्ठिर विग्रह मान्यो ❋ विग्रह भयो उचित मैं जान्यो
अहो कृष्ण सन्तन सुखदायक ❋ हम नहिं युद्ध करनके लायक

दो० भीषम द्रोण करणकृप, लक्ष छत्रधर साथ ।
तासों युद्ध खेत चढ़ि, किमि जीतहिं यदुनाथ ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे ❋ अपनो राज देत को मांगे
साहस के रण को मन लैये ❋ मारिहि रिपुहि देश तब पैये
द्रुपद बिराट आदि क्षत्रीगन ❋ हम सारथि पारथ के स्यन्दन
अर्जुन भीम देहु रण को मन ❋ जीतहु युद्ध कही जगवन्दन
अर्जुन कही युधिष्ठिर राजहि ❋ अब विलम्बकीजे केहिकाजहि
भीमसेन यहि भांति बखानेउ ❋ कृष्ण कही मेरे मन मानेउ
कीजे युद्ध भयानक भारथ ❋ अब देखौ मेरो पुरुषारथ
दुर्योधन सौ बंधु सँहारौं ❋ भीषम करण खेत चढ़ि मारौं
आपु सहाय जगत के तारण ❋ शोच नरेश करौ केहि कारण

दो० सभा मध्य रक्षा कर्‌यो, द्रुपदसुता की लाज ।
कौरव दल तृण सम गनौं, जो सहाय ब्रजराज ॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन ❋ साजहु सैन कहेउ माधवसन
नृप की आज्ञा श्रीहरि पायो ❋ साजत सैन विलम्ब न लायो
द्रुपद बिराट शंख रथ साजे ❋ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे
धृष्टद्युम्न रथ पर चढ़ि आयो ❋ जाके शिर हरि मुकुट बँधायो
कञ्चन रथ सहदेव सुहाये ❋ तेज तुरङ्ग नकुल चढ़ि आये
लोह चक्र जो हरि निर्मायो ❋ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे ❋ गदा लिये कर शारँग कांधे
कालरूप सम भीम भयंकर ❋ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर
चढ़े सात्यकी उत्तम स्यन्दन ❋ अभिमनु चढ़े सहोद्रानन्दन

शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर ❀ जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर
धृष्टकेतु कीन्ही असवारी ❀ काशीराज महा बलभारी
पञ्चकुमार द्रौपदी जाये ❀ हर्षित चले सुवेष बनाये
चले शिखण्डी रण के शूरा ❀ साजे सैन महाबल पूरा

दो० हीरा मणि चामर लगे, श्वेत बरण गजराज ।
दण्डछत्रधरि शीशपर, कियो युधिष्ठिरसाज ॥

कञ्चन मणिमय बनी अमारी ❀ तेहिपरनृपति कीन्ह असवारी
पारथ कहँ यदुनाथ बनायो ❀ निज कर लै सनाह पहिरायो
मणिमयकुण्डल मुकुटविराजत ❀ बांधे अस्त्र मनोहर छाजत
कर गहि धनुष बाण बहु साजें ❀ अक्षय त्रोण देखि रिपु भाजें
नन्दिघोषरथ कीन्हेउ मण्डित ❀ शोभानिरखिहोतरिपुखण्डित
औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❀ दन्त विशाल क्रोध ते ताते
तिनके नयन परीं अँधियारी ❀ ठाढ़े जो हालत बलभारी
लीला चारि तुरङ्ग लगायो ❀ जाको बेग पवन नहिं पायो
हनूमान ध्वज ऊपर आयो ❀ ज्यहिबल से सब लङ्क छुड़ायो
कृष्णचरण कीन्हेउ तब बन्दन ❀ पारथ जाइ चढ़े निज स्यन्दन
श्रीहरि निरखि बहुतसुख पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो

दो० आपु कृष्ण जोती गहेउ, अर्ज्जुन पुलकित गात ।
हांकत हय हिय हर्ष ते, पीताम्बर फहरात ॥

पांचो बन्धु करी असवारी ❀ कुन्ती तब आरती उतारी
भांति अनेक शकुन शुभ कीन्हेउ ❀ सुतनसौंपि हरिके कर दीन्हेउ
मम अनाथ के पांचो बालक ❀ प्रभु रणमें कीन्हेउ प्रतिपालक
कही कृष्ण तुम भवन सिधारहु ❀ जय होइहि जिय शोच निवारहु
यहकहि गमन आपुहरिकीन्हा ❀ आनन्दित शंखध्वनि कीन्हो
गजपर सरस दमामें बोलत ❀ शब्दअघात शेष शिर डोलत
ढाक ढोल औ भेरी बाजत ❀ सहनाई में मारू राजत
करिकै बम्ब चले तब राजन ❀ अरु अघात बाजे बहु बाजन

सप्त अक्षौहिणी फौज सँवारी ❀ चालिस सहस छत्र के धारी
तीनि कोटि कुञ्जर मतवारे ❀ पञ्चकोटि रथ सरस सँवारे
बीस कोटि असवार महाबल ❀ तीस कोटि सब लेखो पैदल

दो० कुरुक्षेत्र आये सकल, जहां युद्ध को ठाट।
बिप्रवेदध्वनि पढ़त हैं, बोलत मागध भाट॥

अब यह कथा चली शुभ आगे ❀ कुरुपति साज करन दल लागे
भीषम द्रोण करण कृप आये ❀ भूरिश्रवा बृषसेन सुहाये
सोमदत्त कृतबर्मा अत्री ❀ बाहुलीक अशुथामा क्षत्री
है भगदत्त नृपति को साथी ❀ योजन पांच तासु को हाथी
चले अलम्बुष दानव राजन ❀ शकुनी शल्य कियो रणको मन
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल ❀ चले कलिङ्ग लिये कुञ्जरदल
हैं नवलाख महाबल हाथी ❀ सौ बान्धव कलिङ्ग के साथी
आये मगन महाबल भारी ❀ तेज तुरंग करी असवारी
तब सारथि नृप रथ लै आये ❀ कञ्चन के चाके निर्माये
गजमुक्ता की झालरि सोहै ❀ मानुष कह शंकर मन मोहै
लाल प्रवाल जड़ित बहुमणी ❀ जगमगात हीरन की कणी
आनि तुरंग तेज रथ जोरे ❀ पवन बेग दुइ चारिउ घोरे
चढ़े साजि दुर्योधन नीके ❀ संपति देखि इन्द्र मन फीके

दो० दुश्शासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ।
साठि सहस नृप छत्रधर, चढ़े साजि कुरुनाथ॥

औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❀ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते
तिनके नयन परीं अँधियारी ❀ ठाढ़े जो हालत बल भारी
कञ्चनरथ अति दिव्य अनूपा ❀ जाहि देखि मोहत सुरभूपा
दिव्य अनूपम झालरि सोहै ❀ गजमुक्ता देखत मन मोहै
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर ❀ देखत शोचन लाग पुरन्दर
रथको ठाट भूमि सब मण्डित ❀ हयपदाति धाये रणपण्डित
कुरुसागर कै ब्यास बखानेउ ❀ अतिअघात कोउअन्तनजानेउ

भानुमती आरति लै आयो ❀ कियो शकुन शुभमङ्गल गायो
भयो वम्ब बैरख फहराने ❀ प्रलयकाल जनु घन घहराने
धूरि धुंधि महँ रवि नहिं सूझै ❀ ध्वजघनसघन पवन आरूझै
डोली अनी शेष शिर थाकेउ ❀ भूमि चली पर्वत सब कांपेउ

दो० दशन बराहन हदरहे, दबी कमठ की पीठि।
दिग्गजकरहिंचिकारसब, दिगपतिचाकितदीठि ॥

कुरुक्षेत्र कौरवपति आये ❀ तब भीषम कछु बचन सुनाये
द्रोण आपु शारँग कर गहिये ❀ सावधान होइ रण में रहिये
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ ❀ सब आगे अचरज करि लेखेउ
नृप मन महँ तब मन्त्र विचारी ❀ तुरत तजी गज की असवारी
आपु पयादे चले नरेशू ❀ अर्जुन कह देखिय हृषिकेशू
शत्रुसेन मों कीन्हेउ गमनहिं ❀ आनन्दित जैसे चल भवनहिं
जो कुरुनाथ बांधिकै राखै ❀ कीजै कहा भीम यह भाखै
जौन बुद्धि कै पांसा खेले ❀ वहै बुद्धि कै चले अकेले
बिनु आज्ञा कैसे सँग जैये ❀ विना गये पाछे पछितैये
कही कृष्ण अब चुपकरि रहिये ❀ नृपकी कठिनकथा नहिं कहिये
धर्मराज धर्मै हित जानत ❀ शत्रु मित्र समता करि मानत
यामों यहै मन्त्र को कारण ❀ कही आपु यह त्रासनिवारण
सब सेना मिलि थिर ह्वै रहिये ❀ देखहु खड़े कछू नहिं कहिये

दो० कुरुदल सब चकित भये, कहैं परस्पर बैन।
मिलो बिचारो दीन ह्वै, देखि भयानक सैन ॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरशो ❀ छांड़ो रथ गङ्गासुत हरषो
आतुर चरण बन्द तब कीन्हो ❀ हँसि भीषम अंकमभरि लीन्हो
सदा होहि कल्याण तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो
धर्मराज यहि भांति बखानत ❀ हम तो तुमहिं पाण्डु कै मानत
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक ❀ तब तुमहीं कीन्हो प्रतिपालक
कपटपांस करि बनहिं पठाये ❀ तेरह बर्ष महादुख पाये

राज लियो दुर्योधन भाई ❋ पञ्चग्राम मांगे नहिं पाई
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हो ❋ तौ सब ठाट वृथा हम कीन्हो
तुमते परशुराम रण हारे ❋ तेहि समान हम कहा बिचारे
एक भरोसो मन में आयो ❋ जय होइहै तुव आशिष पायो
हँसि गाङ्गेय कहन अस लागे ❋ बड़े साधु तुम परम सभागे
जहां धर्म तहँ कृष्ण बिराजे ❋ जहां कृष्ण तहँई जय छाजे

दो० धर्म भरोसो धर्म बल, धर्म भोगियो राज ।
सबलसिंहचौहान कहि, धर्मै हित शुभकाज ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

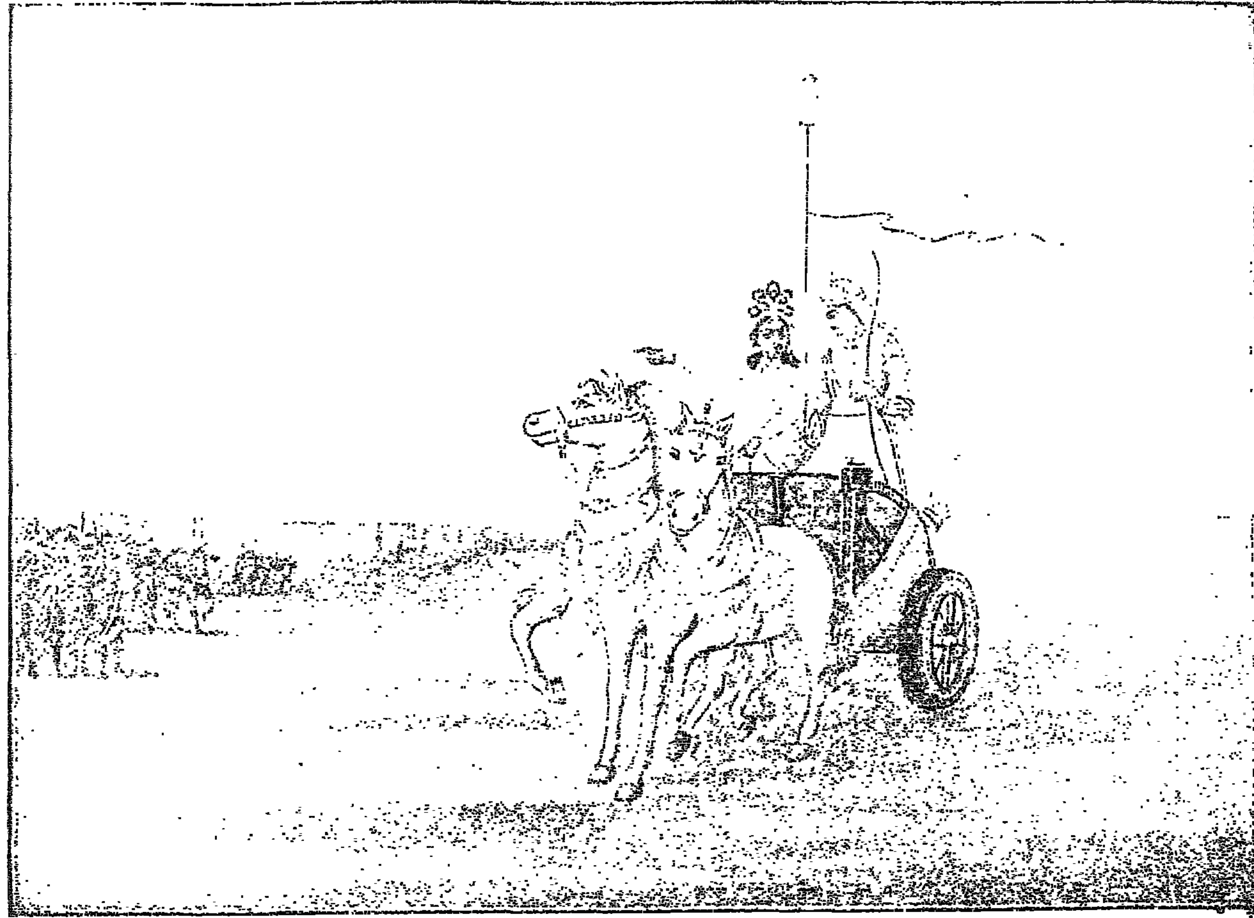
आइ द्रोण पद परशन कीन्हो ❋ आनन्दित होइ आशिषदीन्हो
नृपति होइ कल्याण तुम्हारो ❋ अपनो शत्रु खेत मों मारो
नृपति युधिष्ठिर आपु बखानो ❋ तुम गुरुद्रोण जगत सब जानो
जो आपन शारँग कर धरिये ❋ तीन लोक क्षण में वश करिये
जो तुम युद्ध बिषे मन लाउब ❋ तब कैसे के हम जय पाउब
हँसि कह द्रोण युधिष्ठिर आगे ❋ मधुर बचन कहिबे कछु लागे
अहो नृपति सन्तन हितकारी ❋ तेरे सदा सहाय मुरारी
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवै ❋ चक्रपाणि सों जय नहिं पावै
जाके सदा सहायक केशव ❋ ताके जयको कौन अँदेशव

दो० जय होइहै तव सर्वदा, सुनहु पाण्डु के नन्द ।
जाके पारथ से रथी, औ सारथि जगबन्द ॥

कृपाचार्य पद बन्दन कीन्हो ❋ जयतिपत्र को आशिष दीन्हो
भीषम द्रोण कही यह बानी ❋ जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी
कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे ❋ धर्म पुकार पुकारन लागे
यहि दल में जेहि जीवन भावै ❋ तुरत कृष्ण शरणागत आवै
सुनि युयुत्सु चलि आयो आगे ❋ नृपसों बचन कहन अस लागे
अहो धर्मसुत शरण तुम्हारी ❋ चलो जाइ दरशो बनवारी
नृप युयुत्सु रथ चढ़िके लीन्हो ❋ तुरत आपनो दल शुभ कीन्हो

गयो युयुत्सु पाण्डुसुत सङ्गहि ❋ सुनि कुरुनाथ भयो मनभङ्गहि
रथते उतरि तुरत चलि आयो ❋ भीषम ते यहि भांति सुनायो
हौ सेनापति सब के रक्षक ❋ गयो युयुत्सु तुम्हैं परतक्षक
दो० धर्मपुत्र इत आइकै, कीन्हो कहा बिचार ।
लक्ष सैन सँग लैगयो, तुम दल के सरदार ॥
भीषम कहो सुनहु हो राजन ❋ आये हमहिं बन्दिबे काजन
कादर है युयुत्सु शरणागत ❋ हम मारेउ नहिं देखत भागत
अब यह शोच चित्त नहिं कीजे ❋ सावधान रण को मन दीजे
भृगुपति सप्तदिवस रण कीन्हो ❋ तिनते जयतिपत्र हम लीन्हो
सुर अरु असुरनृपति रणमार्यो ❋ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाह्यो
पाण्डवसुत के कृष्ण सहायक ❋ तेऊ नहिं मेरे रण लायक
प्रण राखों हरिको प्रण टारों ❋ नितक्रम दशसहस्र रथ मारों
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन ❋ हरषि बचन भाष्यो भीष्मसन
अष्टादश क्षौहिणि दल दोऊ ❋ एकै रथ चढ़ि जीतै कोऊ
कह भीषम जो तेज सँभारों ❋ एक दिवस दोऊ दल मारों
द्रोण कोपि जो शर संधानै ❋ तीनि दिवस में करै निदानै
कर्ण पांच दिन जो रण रचै ❋ दोऊ दल में कोउ न बचै
दो० द्रोणी तीनै दण्ड में, दोउ दल करै निदान ।
पल लागत अर्जुन बधै, छुवै न दूजो बान ॥
दुर्योधन सुनि मौनहि गहेऊ ❋ बिस्मय भयो मान नहिं रहेऊ
जो तुम अर्जुन जानत ऐसे ❋ रण में जय तुम करिहौ कैसे
भीषम कह कौरव दल नाथहि ❋ दश दिनकेर भार मम माथहि
अपनो कटक करों सब रक्षक ❋ पाण्डव दल मारों परतक्षक
सुनि दुर्योधन आनँद पायो ❋ अपने दलहि युधिष्ठिर आयो
लै युयुत्सु हरि पांयन डारे ❋ अहोकृष्ण यह शरण तुम्हारे
जैसे हम हैं पांचो भाई ❋ तेहि समान जानो यदुराई
कहो कृष्ण शुभ होहि तुम्हारो ❋ सावधान है युद्ध बिचारो

धर्मराज कीन्हो असवारी ❀ श्वेत गयन्द महाबल धारी
दो० सिंहनाद वीरन कर्यो, भयो भयानक शोर ।
दिशा दशौं पूरित भई, ज्यों घुमरें घन घोर ॥
पारथ कही सुनहु जगवन्दन ❀ द्वै दल मध्य राखिये स्यन्दन
सुनिकै कृष्ण हांकि रथ दीन्हो ❀ मध्य भूमि लै ठाढ़ो कीन्हो
पारथआनिसबाहिदिशि देखेउ ❀ सब के अग्र पितामह लेखेउ
श्वेतबरण रथ सरस सुहायो ❀ श्वेतबरण तन शोभा पायो
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे ❀ श्वेत बरण हैं चारिउ घोरे
गुरू द्रोण रथ श्याम सुहायो ❀ श्याम बरण घोड़े छविपायो
कृपाचार्य को अर्जुन देख्यो ❀ मनमहँअतिविस्मयकरिलेख्यो
देख्यो दुर्योधन सौ भाई ❀ धवल छत्र शिर शोभा पाई
सिन्धुराज देख्यो बहनोई ❀ मामा शल्य जान सब कोई
दो० गुरू पितामह बन्धु सुत, देख्यो सब परिवार ।
इन्हैं मारि जय का करै, दीन्हो धनु शर डार ॥
कही कृष्ण पारथ सुनि लीजे ❀ क्षत्री धर्म त्याग नहिं कीजे
रण देखे क्षत्री जो डरहीं ❀ अन्तकाल सो नरकहि परहीं
प्रथम क्रोध करि रण में आयहु ❀ अब यह ज्ञान कहांते पायहु
गहहु अस्त्र कर युद्ध सँवारहु ❀ छांड़हु शोच शत्रु संहारहु
बालक युवा बृद्धता आवै ❀ अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि ❀ जो सिरजै सोई संहारहि
काल बश्य है सब संसारा ❀ यामें कछु नहिं दोष तुम्हारा
क्षत्री के साहस ते कामहिं ❀ कीजे युद्ध होइ यश जामहिं
दो० दान मरण रण शूरता, क्षत्री धर्म प्रमान ।
पारथ अस्त्रहि गहौ कहि, सबलसिंह चौहान ॥
इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
अर्जुन कहेउ सुनहु जगतारण ❀ गोत्र वद्ध कीजे केहि कारण
बाढ़े पाप पुण्य सब नाशहि ❀ पावों अन्तअधोगति बासहि



कुरु-क्षेत्र

गुरुपरिवार बधौं केहि काजहि ❀ जैहौं बनहिं छोड़िके राजहि
अर्जुन को माधव समुझायो ❀ चारि बेद को सार सुनायो
मात पिता सुत बन्धु कहावैं ❀ अन्तकाल नाहिं साथ सिधावैं
अपनो धर्म कर्म पै साथी ❀ सुखसम्पति झूठो सब साथी
जो बन जाय तपस्या करिहौ ❀ अन्त भये जग में अवतरिहौ
दान अनेक यज्ञ जो करहीं ❀ स्वर्ग भोग करि महि अवतरहीं
ताते जन्म मरण नहिं छूटै ❀ अचल न होहिं कोटिशत कूटै
पुण्य पाप दोऊ जब नाशहिं ❀ तब पावहिं मेरे पुर बासहिं

दो० पुण्य पाप बांधो जगत, को काटन समरत्थ ।
निर्मल ज्ञान बिबेकता, कै मन अपने हत्थ ॥

मन भो भुक्ति मुक्ति नर पावै ❀ मन के चले कर्म गति आवै
सब इन्द्रिन मों है मन नायक ❀ बन्धन मुक्ति देन के लायक
जाके हृदय दया के बासहिं ❀ ताके धर्म सदा परकासहिं
जहँ लगि जीव जगत में अहई ❀ सबके हृदय बास मम रहई
नदिन मध्य गङ्गा कहँ जानहु ❀ तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु
ब्रह्मऋषिन में नारद जानहु ❀ कपिलदेव सिद्धन मों मानहु
गजन माहिं ऐरावत देखौ ❀ उच्चैःश्रव हय मध्य विशेखौ
सामबेद बेदन महँ गनई ❀ साधुन में शंकर सब भनई
नरन माहिं राजा के राखित ❀ देवन माहिं इन्द्र मम भाखित
सर्पन मध्य बासुकी कहिये ❀ नागन महँ अनन्त मों रहिये

दो० ग्रहन माहिं रबि हम अहैं, तेज अग्नि मो जान ।
नारिन महँ रम्भा अहैं, गुण सात्त्विकी प्रमान॥

चारिबरण महँ जो अवतरिहौ ❀ जो कुलधर्म सोई सब करिहौ
ताते कर्म लागि सब करिये ❀ केवल नाम हमारे धरिये
कहो कहां लगि ज्ञान बुझावैं ❀ मृतकसैन सब नैन दिखावैं
पारथ कही सुनहु हो केशव ❀ नयन लखौं तो मिटै अँदेशव
दिव्य दृष्टि अर्जुन तब पायउ ❀ मुख में सब ब्रह्माण्ड दिखायउ

मेघाबरण शीश आकाशहि ❀ रविशशिनयनकियेपरकाशहि
मुख भो अग्नि शारदा रसना ❀ कन्ध रुद्र तारागण दसना
इन्द्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ ❀ नाभी सिन्धु देखि मन मोहेउ
पृष्ठ अष्ट बसु शोभा पायउ ❀ जङ्घ दशो दिशिपाल सुहायउ
चरणविष्णु रोमावलि तरुगन ❀ अस्थि पहार बेदश्रुति है मन
धरणी मांस नदी नख लेखेउ ❀ महाबिराटरूप यह देखेउ

दो० मुख बिस्तारेउ कृष्ण तब, पारथ देखेउ नैन ।
जूझे सब सैना मृतक, रण में कीन्हें शैन ॥

सर्व मृतक पारथ जब देखेउ ❀ अपने जिय अचरज करि लेखेउ
त्रसित भयो तन कम्प जनायो ❀ मूंदेउ नैन बचन नहिं आयो
अर्जुनकाहिं त्रसित करिजाना ❀ कठिनरूप छांड़ेउ भगवाना
अर्जुन अब युग नैन उघारो ❀ सखारूप मम त्रास निवारो
तब पारथ देखेउ बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
अर्जुन तब कमलापति आगे ❀ अस्तुति करन जोरि कर लागे
तुम प्रभु तीनि लोक के करता ❀ दाता जन्म प्राण के हरता
अब संशय प्रभु मिटी हमारी ❀ करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी
यहकहि धनुषहाथकरि लीन्हेउ ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हेउ
दोउ दल सिंहनाद करि आयो ❀ युद्धभूमि में शोभा पायो

दो० दोऊ दल बाजन बजे, गर्जे सिंह समान ।
क्षत्री गण रण हांक दै, साधे शारँग बान ॥

भयो कुलाहल दल में भारी ❀ आगे भये महाधनुधारी
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये ❀ शंखध्वनि करि नाद सुनाये
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❀ मानहुँ काल देह धरि आयउ
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये ❀ भीषम के सन्मुख ह्वै लरिये
तबहिं धनंजय धनु कर गहेऊ ❀ आगे ह्वै भीषम सन कहेऊ
करि प्रणाम शायक दश छण्डेउ ❀ गङ्गासुत बीचहि शर खण्डेउ
भीषम कहेउ सुनहु जगतारण ❀ सारथि भयो भक्त के कारण

पाण्डव धन्य धन्य ये पारथ ❋ जाके रथपर श्रीपति सारथ
यह कहिके रणको मन लायो ❋ महारथी सब युद्ध मचायो
भीमसेन दुश्शासन क्षत्री ❋ दोऊ जुरे महाबल अत्री
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे ❋ क्रोधित बाण चलावन लागे
नकुल और जयदर्थ सुहावैं ❋ क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं
दो॰ शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि ।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयंकर मारि ॥
भूरिश्रवा सात्यकी सङ्गहि ❋ कृतबर्मा विराट रण रङ्गहि
भगदत्तहि क्रोधित जब जान्यो ❋ द्रुपद नरेश आपु रण ठान्यो
सोमदत्त उतरा रण मण्ड्यो ❋ बाणनते रिपुसैन विहण्ड्यो
कृपाचार्य सन्मुख ह्वै धाये ❋ तिनसों काशिराज रण पाये
घटउत्कच कीन्ह्यो संधानहिं ❋ जुरे अलम्बु तेज रणधामहिं
नृप शशिबिन्दु शंख संग्रामहिं ❋ क्रोधित लगे चलावन बाणहिं
तब द्रोणी निजकर धनुशरगहि ❋ जुरे शिखण्डी ते रण रङ्गहि
कुरुदल में बृषसेन सुहाये ❋ तिनते चेतिकरण रण लाये
जुरे बीर सब लै शारँग शर ❋ ह्वानलगी अतिमारु परस्पर
दोऊ दल कीन्हेउ संधानहिं ❋ क्रोधित लगे चलावन बानहिं
शतते सहस सहस ते लाखन ❋ बरषैं बाण सकै को भाखन
दो॰ दोउ दल बीरन रण रचे, जलद बुन्दसम बान ।
महाभयानक युद्ध कह, सबलसिंह चौहान ॥
इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
अर्जुन सों भीषम पुरुषारथ ❋ कीन्ह्यो प्रलयभयानक भारथ
क्रुद्धित चले चलावत बानहिं ❋ विंशतिशर मार्‍यो हनुमानहिं
महाबीर रण दोउ समानहिं ❋ कृष्णशरीर हन्यो दश बानहिं
सहस बाण भीषम कर लीन्ह्यो ❋ ताते मारु पारथहि दीन्ह्यो
अष्ट विशिख क्रुद्धित ह्वै जोरे ❋ घायल किय रथ त्यारिउ घोरे
और लक्ष शर क्रोधित मारा ❋ बहे प्रबाह रुधिरके धारा

सप्त बाण ते ध्वजा निशानहिं ❀ बाणन ते सैना घमसानहिं
कृष्णअङ्ग दश बिशिखसुमाखो ❀ तब अर्जुन शर धनुष सुधाखो
षष्टि बाण भीषम उर मारा ❀ मानहुँ बज्रपात फटकारा
सप्तबाण हनि ध्वजानिशानहिं ❀ सारथिउर माखो दश बानहिं
चञ्चल अश्व रहे रथ जोरे ❀ घायल भे रथ चारिउ घोरे
अर्जुन बाण चमू पर माखो ❀ हय गज रथ पदाति संहाखो

दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो, कीन्ह्यो लघुसंधान ।
जलथल भारतभूमिसब, शरछायो असमान ॥

एकै शर पारथ संधानहिं ❀ गुणमें धरत होहिं दश बानहिं
चलत होहिं शत लगे सहस्रन ❀ यहिप्रकारकियो सैननिकन्दन
जब पारथ बहुकटक सँहाखो ❀ भीषम अपनो तेज सँभाखो
लघु संधान लगे शरबर्षन ❀ जूझै सैन सहस्र सहस्रन
दोउ सुभट अतिसमर जुझारा ❀ बरषहिं बाण मनो जलधारा
भीषम अग्निबाण संधान्यो ❀ लखि पाण्डवदल शङ्का मान्यो
प्रकटो अग्निबाण ते ऐसो ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसो
प्रकटी शिखा सहस्र सहस्रन ❀ पाण्डवदल लागे जारनतन
जब पाण्डव सैना अकुलान्यो ❀ बरुण बाण अर्जुन संधान्यो
बरुण बिशिखते बरष्यो पानी ❀ निमिष एकमहँ अग्नि बुतानी
रणमें मेघ घुमरिकै आयो ❀ महावृष्टि बरषा झरिलायो
बसन सनाह भीजि तन लागे ❀ पर भीजे शर चलत न आगे

दो० पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्योनीर तुरन्त ।
हय पदाति रथ उड़त हैं, मतवारे मैमन्त ॥

ऐसी तेज समीर चलाई ❀ मानहुँ घरी प्रलय की आई
नाग बिशिख तब फल्गु प्रहारा ❀ सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा
फन काढ़े अजगर सब धावहिं ❀ लीलहिं सैन बिलम्ब न लावहिं
विषके तेज कटकब्याकुलअति ❀ भीषम शर संधान्यो खगपति
गरुड़ देखि सब सर्प पराने ❀ भये अलोप जात नहिं जाने

तीक्षण पञ्चबाण कर लीन्ह्यो ❋ ते शरचोट शीशपर दीन्ह्यो
अर्जुनइमिअतिविशिखचलायो ❋ शरसों भीषम को रथ छायो
गङ्गतनय हँसि विशिख पँवारे ❋ पारथ शर बीचहि कर डारे
कृष्ण देव रथ हांकि चलायो ❋ भीषम के सम्मुख पहुँचायो

दो० अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखेउ नैन ।
क्रोधवन्त शर साधिकै, कह्यो कृष्णसों बैन ॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❋ पारथ नहिं मेरे रण लायक
पाण्डु बंश के रक्षा कारण ❋ सारथि आप जगत के तारण
आपु सो दृढ़ जोती कर गहिये ❋ मारतहों तीक्षण शर सहिये
ऐसो शर भीषम संधान्यो ❋ देवलोक सब शङ्का मान्यो
कम्पत है पाण्डव दल ऐसो ❋ कदलीपात मरुतलागि जैसो
दिगपालन देखत भय मानी ❋ वसुधा शायकनिरखि सकानी
जो शर परशुराम ते पायो ❋ क्रुद्धित है सोइ बाण चलायो
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❋ दशदिशिअतिकीन्हीउजियारी
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ सावधान रण को मन दीजै
जब पारथ सुरपुर पगुधार्‍यो ❋ देवकाज सब दैत्य सँहार्‍यो
तब सुरपति शिरमुकुट बँधायो ❋ तहां किरीटी नव शर पायो

दो० हँसि दीन्हो सुरनाथ तब, पारथ लीजै बान ।
महाकष्ट रणमहँ परै, तब कीन्ह्यो संधान ॥

स्वइ शरपाणि बिजयनरलीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो
जिष्णुक्रुद्धहोइ विशिखचलायो ❋ आवत बाण सो काटि खसायो
काट्योशर श्रीपति सुखमान्यो ❋ तब अर्जुन बहु भांति बखान्यो
अहो पितामह धनु दृढ़ धरिये ❋ सावधान मोते रण करिये
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ ❋ कीन्ह्यो महाभयानक भारथ
पाण्डवदल भीषम बहु मार्‍यो ❋ भीमसेन तब आप सँभार्‍यो
रथते उतरि गदा गहि धायो ❋ कौरव दल में युद्ध मचायो
गदा घाव गजको शिर फोर्‍यो ❋ सहितभुशुण्डिदशनसबतोर्‍यो

कोपि गदा रथ ऊपर मारे ❀ सहित रथी सारथी सँहारे
हय पदाति आगे जो पावै ❀ भीमसेन तेहि मारि गिरावै
रथहि पकरि रथ ऊपर मारै ❀ गहि गयन्द गज ऊपर डारै
आरत लगे जात लोटत गज ❀ लागे धुका उताइल गत सज

दो० कौरव दल त्रासित भयो, धरै न कोऊ धीर ।
सहसा कै रण में जुरे, एक बार शतबीर ॥

दै करि हांक कियो दृढ़ ठानहिं ❀ सबै रथिन मिलि मारे बानहिं
काल समान तेज रण छूटे ❀ बज्र शरीर लागि सब टूटे
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये ❀ मारि सबै यमलोक पठाये
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारे ❀ जे अभिरे ते सकल पछारे
कौरव दलहि प्राणभय कीन्ह्यो ❀ क्रोधित द्रोण हांक तब दीन्ह्यो
रहु रहु अरे बृकोदर ठाढ़ो ❀ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो
यह कहि धनुनराच दृढ़धार्‌यो ❀ भीमअङ्ग दश विशिख प्रहार्‌यो
गुरूद्रोण अगणित शर मार्‌यो ❀ तब निजरथहिभीमपगुधार्‌यो
भीषम ते अर्जुन संग्रामहिं ❀ दोऊ जुरे खेत जयकामहिं
पारथ जब लगि भीम निहार्‌यो ❀ दशसहस्र रथ भीष्महि मार्‌यो
तब भीषम जय शंख बजायो ❀ संध्यालखि निजरथहि घुमायो
फिरिकैसुभटकियो जबगवनहिं ❀ पाण्डव गये आपने भवनहिं
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो ❀ रणमों भीषम को प्रण रह्यो
दश सहस्र मार्‌यो रथ नीके ❀ पाण्डव गये युद्ध में फीके
सेन सकल कीन्हेउ विश्रामहिं ❀ धर्मराज आये निज धामहिं

दो० अस्त्र खोलि धरणी धर्‌यो, टोप सनाह उतारि ।
श्रमनाश्यो असनान करि, जेवैं सहित मुरारि ॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई ❀ आजु युद्ध केहि की प्रभुताई
कही कृष्ण भीषम रण मण्ड्यो ❀ दशसहस्र रथ रणमें खण्ड्यो
प्रात शंख कीजै सेनापति ❀ कुरुदल अर्जुन संहारहु अति
कही द्रौपदी सुनिये केशव ❀ मेरे मन यह बड़ो अँदेशव

जो पै शंख भीष्मते लरिहैं ❀ अर्जुन भीमसेन का करिहैं
कही कृष्ण यामों है कारण ❀ शत्रु सेन कीजै संहारण
प्रात होत दोऊ दल साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं
श्रीहरि कह बिराट सुनु भूपति ❀ शंखहि कीजै आजु चमूपति
सुनि बिराटकह आनन्दितमन ❀ जो आज्ञा कीजै जगवन्दन
मैं कुल में सपुत्र सुत जायो ❀ भारत सेनापती कहायो
धर्मराज श्रीपति के आगे ❀ बांधन मुकुट शंख शिर लागे

दो॰ कह्यो शंख करजोरिकै, सुनि लीजै सुखधाम ।
तुम समान सारथिभये, भीषम ते संग्राम ॥

पारथ रथी आपु प्रभु सारथ ❀ भीषम कियो सरस पुरुषारथ
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो ❀ समता युद्ध होइ रण कैसो
जो श्रीपति सम सारथि पावों ❀ मारि सबै कौरव बिचलावों
कही कृष्ण सात्यकि सुनिलीजै ❀ आज आप सारथि प्रण कीजै
बैठि शंख रथ जोती धरिये ❀ भीषम के सन्मुख रण करिये
प्रभु आज्ञा सात्यकि जब पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो
चारि तुरंग आनि रथ जोरे ❀ घूंघुटसहित चलत मुख मोरे
बांध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि ❀ राजयुधिष्ठिर के पुनि पद गहि
तब बिराट के पद सोइ लाग्यो ❀ कृष्णचरण परस्यो अनुराग्यो
कियो सात्यकी को पग बन्दन ❀ चढ़्यो जाइ रथ परमानन्दन
नन्दिघोष अर्जुन असवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
भीम सहित सेना सब साज्यो ❀ सिंहनाद करि रण में गाज्यो

दो॰ सबके आगे शंख रथ, साधे कर धनु बान ।
सबलसिंह चौहानकह, भारत के रणथान ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

कुरुदल साज करन सब लागे ❀ राजा कहेउ पितामह आगे
आजु अस्त्र यहिबिधि ते धरिये ❀ कृष्णसहित अर्जुन बध करिये
भीषम कही युद्ध को चलिये ❀ शोच कहा ह्वैहै सब भलिये

महागँभीर कियो दलसाजन ❀ बाजन लगे युद्ध के बाजन
कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल ❀ देखत हांक दियो दोऊ दल
भीषम अतिअचरजकरिलख्यो ❀ बांध्यो मुकुट शंख शिर देख्यो
तब सात्यकि रथहांकि चलायो ❀ भीषम के सन्मुख पहुँचायो
शंख प्रथम दश बाण चलायो ❀ ते शर भीषम काटि गिरायो
हँसि भीषम दश शायक जोरे ❀ ते शर शंख बीचही तोरे
कोपि कुँवर शतबाण प्रहास्यो ❀ भीषम के उरमध्य सो मास्यो
शर लागत भीषम रिस बाढ़्यो ❀ शोणितशर तूणीरते काढ़्यो
काल समान बाण सब छूटैं ❀ भेदि सनाह अंगमें फूटैं

दो० क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हो लघु संधान ।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अङ्ग बहुबान ॥

नृप बिराटसुत तेज सँभास्यो ❀ षष्ठिबाण भीषम उर मास्यो
भीषम शंख लरे रण अर्जुन ❀ दोऊदल बहु कियो निकन्दन
गजसों गज चौदन्त लराई ❀ रथी रथी सों मारु मचाई
जुरे आइ असवार महाबल ❀ लगे पदाति पदातिन करिबल
महारथी रथ हांकि चलायो ❀ कौरवकटक मध्य तब आयो
तब अर्जुन कोदण्ड सुधास्यो ❀ क्रुद्धितह्वै बहुबिशिख प्रहास्यो
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो ❀ क्षण में अर्जुन मारि गिरायो
रुण्ड मुण्ड बसुधा में तोप्यो ❀ सूझि न पस्यो मांसमहि रोप्यो

दो० घोर युद्ध कपिध्वज कियो, सेना बध्यो अनन्त ।
गज रथ हय पदचर गिरे, कहूं शीश कहुँ दन्त ॥

अर्जुन बध्यो सेन यहि रूपाहि ❀ देखि क्रोध उपज्यो तब भूपहि
दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो ❀ छत्र छांह रबि दृष्टि छपायो
नान्दिघोष रथ राजन घेस्यो ❀ मारु मारु दुर्योधन टेस्यो
दुश्शासन सब राजन लीन्हे ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे
चहुं ओर बर्षत शर कैसे ❀ भादौं बुन्द सघन घन जैसे
नान्दिघोष रथ शरते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो

पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे ❋ अन्तरिक्ष ही सब शर तोरे
अरु सहस्र राजा बध कीन्हो ❋ शंखध्वनि अर्जुन तब दीन्हो
मणिमय मुकुट जरायन जरे ❋ शीश सहित वसुधा में परे
जहां जहां अर्जुन रण ताक्यो ❋ तहां तहां माधव रथ हांक्यो
और अनेक निशित शर मास्यो ❋ युत चौरासि तुरग महि पास्यो
कीन्ह धनंजय सेन सुखण्डित ❋ नर के शीश मेदिनी मण्डित

दो० यहि विधि पारथ रणरच्यो, कहि न सके कविबैन ।
रथ हांकत हैं हांक दै, प्रीतम पंकज नैन ॥

सिंहनाद दुश्शासन कीन्हो ❋ क्रुद्धित धनुषफोंक शर दीन्हो
सप्त बाण पारथ उर मास्यो ❋ एक बाण यहि भांति प्रहास्यो
सारथि शीशकाटि महि डास्यो ❋ कृष्णअंग दशबाण प्रहास्यो
रथ ते दुश्शासन महि आयो ❋ देखि विरथ दुर्योधन धायो
तब कुरुनाथ धनुष शर लीन्हो ❋ महामारु कपिध्वजपर दीन्हो
सुनिकै शोर वृकोदर धायो ❋ द्रोणजाय बीचहि अटकायो
भीषम कही द्रोण रणरङ्गहि ❋ जुरे धनंजय कुरुपति सङ्गहि
आप शंखसन समर जो कीजै ❋ हम पारथ पर शायक दीजै
जाह्नविसुत यह कहि लघु धायो ❋ शर वर्षा पारथ पर लायो
दुर्योधन को पाछे घाल्यो ❋ आगे रथ गङ्गासुत चाल्यो
सिंहनाद करि हांक जनायो ❋ रहु अर्जुन भीषम अब आयो

दो० अबलों जो सेना बध्यो, हौं न रह्यो यहि ठौर ।
तौ पारथ बल जानिबो, जो दल बधिहौ और ॥

कोटिन अर्जुन करहुँ सँहारण ❋ कृष्णसहाय बचौ त्यहिकारण
अर्जुन सुनि क्रुद्धित परिजरयऊ ❋ दृढ़होइ धनुषबाण कर धरयऊ
पारथ क्रोधवन्त है टेर्यो ❋ जब तुम सब बिराटपुर घेर्यो
तादिन में सबको बल जान्यो ❋ गोधन सबै फेरि गृह आन्यो
बड़े अहहु बड़ बचन न कहहू ❋ दृढ़ है धनुष बाण कर गहहू
यह कहिकै लागे शर बर्षन ❋ शतते सहस सहस्र सहस्रन

अपर चरित्र सुनहु मनलाई ❋ शंख द्रोण जहँ करत लड़ाई
एकहि एक क्रोध ते मारत ❋ आवत बाण बाण ते टारत
अमित युद्ध दुर्योधन देख्यो ❋ अपने जियअचरजकरिलेख्यो
शंखकुँवर अतिबिशिख पँवारयो ❋ रथके चारिउ अश्व सँहारयो
कियो सारथी को शिर खण्डित ❋ पुत्र बिराट महारण मण्डित
दो० द्रोण अपर रथपर चढ़्यो, कछु लज्जा कछु क्रोध ।
महारथी देखत सकल, बालक पर अनरोध ॥
जबलग द्रोण आपु संभारयो ❋ तनयबिराट सैन्य बहु मारयो
कौरव दल बहु शंख निपातो ❋ गुरु तब भयो क्रोधते तातो
रहु रे शंख ठाढ़ रण रङ्गहि ❋ एकै शर कृत जीवन भङ्गहि
दूजो बाण करौं संधानहिं ❋ तौम्बहिं परशुरामकी आनहिं
यह कहि ब्रह्मअस्त्र कर लीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंकशर दीन्ह्यो
शरको तेज अकाशहि व्याप्यो ❋ सुर नर नाग देखिकै कांप्यो
छिटक्यो किरणि बाण ते कैसे ❋ ग्रीषमऋतु प्रचण्ड रबि जैसे
देखि त्रास सात्यकि जिय बाढ़ो ❋ द्रोण त्रोण ते जब शर काढ़ो
कहहु कुँवर तब रथहि फिरावौं ❋ अर्जुन के पीछे पहुँचावौं
शंख कह्यो अस्थिर ह्वै रहिये ❋ क्षत्रियधर्मकिमि जियनहिंगहिये
दो० बांध्यो मुकुट ज़ु कृष्णकर, भारत के रणखेत ।
द्विजसों पृष्ठि दिखायकै, तनु राखौं केहिहेत ॥
कार्मुक द्रोण श्रवणलगि तान्यो ❋ छूटत बाण शब्द घहरान्यो
बाण प्रताप अग्नि बहु बाढ़्यो ❋ बड़वानल मनोदधिते काढ़्यो
सप्तताल भयो अग्नि उँचाई ❋ चौदह ताल रह्यो चकलाई
देखेउ ब्रह्मअस्त्र ढिग आवत ❋ सात्यकि बहुरिकुँवरसमुझावत
फेरौं रथ सुनु बचन बावरो ❋ काह मरत बिन काज रावरो
रथ समेत यहिविधि जरिजैहो ❋ खोजतकतहुँ अस्थि नहिं पैहो
जो मेरो रथ फेरहु भाई ❋ कृष्णचरण युग कोटि दुहाई
गुरुहति द्विजहति पाप सुपावहु ❋ जो सात्यकि रथफेरि चलावहु

जन्म भये ते मृत्यु न छूटै ❀ सो सपूत जग में यश लूटै
रणते भागि भवन जब जैबो ❀ क्षत्रिनमों किमि बदन दिखैबो
कुँवर लग्यो जब बाण चलावन ❀ ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन
रण में द्रोण अधर्म विचास्यो ❀ त्राहि त्राहि सब देव पुकास्यो

दो० सुरगण सब यहिविधि कहैं, द्रोण अधर्म बिचार ।
बालक ते रण ठानिकै, ब्रह्म सो अस्त्र प्रहार ॥

अस्त्र तेज सब अङ्गहि व्याप्यो ❀ सहित तुरङ्ग सात्यकी कांप्यो
तब सात्यकि रथ फेरि चलायो ❀ कुँवर कूदि धरणी पर आयो
सन्मुख रह्यो नेकु नहिं मुरो ❀ ब्रह्म अस्त्र मों ठाढ़े जरो
दोऊ दल पेखत हैं नयनहिं ❀ साधु शंख भाष्यो सब बयनहिं
भस्म भयो मन नेकु न मोरो ❀ भाजो सात्यकि लै सब घोरो
देखत द्वै दल शंख जरायो ❀ फिरिकै द्रोण त्रोण शर आयो
द्रोण आपु जय शंख बजायो ❀ सुनिकै धृष्टद्युम्न मन लायो
रे गुरु द्रोण ज्ञान कर हीनो ❀ करि अधर्म खोयो पन तीनो
ह्वैकै बिप्र अस्त्र जे बांध्यो ❀ बालक पर ब्रह्मास्त्रे साध्यो
अब मोते संग्राम बिचारहु ❀ अहो बिप्र पहिले शर मारहु
सुनि गुरु द्रोण क्रोध ते जाग्यो ❀ तीक्षण बाण चलावन लाग्यो
कुँवर सबै वे बाण सँभास्यो ❀ द्रोण ललाट तीनि शर मास्यो

दो० ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन ।
तौलगि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथ सैन ॥

भीषम शंख दयो जय हेतू ❀ सुनिकै शब्द फिस्यो कुरुकेतू
सब मिलि गये आपने धामहिं ❀ दोऊदल कीन्ह्यो बिश्रामहिं
अब यह कथा चली जो आगे ❀ भोजन पान करन सब लागे
बोलि बाढ़ि घर बाढ़ि धरायो ❀ कोउ शायकमहँ सान करायो
कोउ निषङ्गमहँ शायक पोखत ❀ चाराचारु तबल कोउ देखत
कोउ स्यन्दन महँ साज लगावत ❀ कोऊ शक्ति सनाह बनावत
धर्मराज माधव सँग लीन्हे ❀ गमन बिराट भवन शुभ कीन्हे

अहोनृपति मन शोच निवारहु ❀ क्षत्रिधर्म निज हृदय बिचारहु
कह्यो बिराट सुनहु नृपनायक ❀ जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक
धर्मराज के काजहि आयो ❀ शोच कहा बहुतै सुख पायो

दो॰ धर्मराज बन्धुन सहित, साथ लिये घनश्याम ।
भोजन को बैठे सकल, द्रुपदसुता के धाम ॥

षटरस भोजन आनि बनाये ❀ जेंवत भीम महासुख पाये
द्रुपदसुता कछु बचन उचाखो ❀ आजु युद्ध केहिभांति सँवाखो
कहेउ कृष्ण अर्जुन बल भारी ❀ मारे सहस छत्र के धारी
द्रोण अधर्म युद्ध मन लायो ❀ ब्रह्म अस्त्र ते शंख जरायो
धर्मराज कह सुनहु मुरारी ❀ ममउर यह संशय अतिभारी
दशसहस्र रथ नित क्रम जूझै ❀ भीषम ते जय मोहिं न सूझै
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये ❀ बनकी कथा आपु सुधिकरिये
दुर्बासा कुरुनाथ पठायो ❀ अर्द्धरात्रि पर्णशाला आयो
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे ❀ भोजन आय द्वार है मांगे
क्षुधावन्त हम भोजन दीजे ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप अब लीजे

दो॰ भोजन दीजै कवन बिधि, एक अन्न नहिं भौन ।
ब्रह्म शाप के त्रास ते, सबै रहे ह्वै मौन ॥

तब मैं कह्यो ऋषिय सुनि लीजे ❀ आप जाय अस्नानहिं कीजे
मैं भोजन कर साज बनावों ❀ आवहु तुरत सबन बैठावों
छलकरि मैं ऋषिको छिन टारो ❀ बहुत त्रास जियमध्य बिचारो
प्रभु यहि समय दया अबकरिये ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप मों जरिये
सब मिलि कृष्णचरणयुगध्याये ❀ सुमिरतही तुरन्त प्रभु आये
करि प्रणाम बहुतै सुख पायो ❀ क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो
तब मैं कह्यों अन्न नहिं लेशव ❀ भोजन काह दीजिये केशव
रन्धन को भाजन प्रभु देख्यो ❀ तामें शाक कना यक पेख्यो
तब घनश्याम शाक वह खायो ❀ मुनिगण केर उदरभरि आयो
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहिं ❀ कोऊ पत्रन्ह सेज बनावहिं

काहुको दूध घीव तब आवहिं ❀ मन्त्र अगस्त्य कोऊ मन लावहिं
भीमसेन तब जाय बुलायहु ❀ द्विजगणन्हहुगहकैमिलायहु
दो० दुर्वासा यहिविधि कह्यो, नाहिंन भक्त बिनाश ।
सबलसिंहचौहान कह, चरण कमलकी आश ॥
इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
आये कृष्ण साधुसुखदायक ❀ पाण्डुवंश के सदा सहायक
दुर्वासा कह सुनहु वृकोदर ❀ व्याप्यो कृष्ण सबनके ओदर
जैसो हम याचन्ना लायो ❀ अपनो कियो आपुते पायो
यह कहिकै सब द्विजगण भागे ❀ आये भीम कृष्ण के आगे
हँसि प्रभु द्वारावति पगु धारयो ❀ वे चरित्र नृप चित्त बिसारयो
यहसुधि सबबिसरी केहिकारण ❀ कहां शोच जहँ त्रासनिवारण
द्रुपदसुता यहिभांति बखान्यो ❀ सुनियदुपतिअतिशयसुखमान्यो
कौरव कटक समर महँ आये ❀ धनु कर शर निषङ्ग कटि लाये
होत प्रभात सजे कुरुकेतू ❀ बजे निशान युद्ध के हेतू
सिंहनाद करि शब्द सुनायो ❀ पाण्डवसकलअजिररणआयो
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ ❀ बीरन धनुष फोंक शर दयऊ
दो० रथगज पदचर नृपति सब, करनलगे रणघोर ।
महारथी सेनापती, भिरे जोरसों जोर ॥
आंदू खोलि दये अँधियारी ❀ धाये गज पर्वत से भारी
भादों घटा बरै जनु आयो ❀ गजन युद्ध चौदन्त मचायो
बाणबुन्दझरि रथिकर बलकै ❀ शायक खड्ग दामिनी दमकै
करिकै नाद भीम तब धायो ❀ भयो शब्द जनु घन घहरायो
शक्ती शेल्ह उपर सब टूटहिं ❀ बज्रपात अर्जुन शर छूटहिं
बिषमखड्ग बाज्यो शरखण्डित ❀ भीषम रथ हांक्यो परचण्डित
नन्दिघोष के सन्मुख आयो ❀ बाणवृष्टि अर्जुन पर लायो
पारथ ते शर काटि निवारयो ❀ पञ्चविशिख भीषम उर मारयो
लागत बिशिख क्रोधउरबाढ़्यो ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़्यो

हन्योताकिकपिध्वज के हियमों ❀ गङ्गासुत क्रुद्धित है जियमों

दो० भीषम अर्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अतिघोर ।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, पर्‌यो आनि अति जोर ॥

क्रुद्धित है बहु बिशिख चलायो ❀ धारी व्योम महाशर छायो
गुरु द्रोण बहु शायक छांड्यो ❀ धृष्टद्युम्न क्रुद्धित है खांड्यो
भरद्वाज सुत बाण चलायो ❀ कुँवर उत्तरा खड्ग लै धायो
झपटै बाज चर्मपर जैसे ❀ पहुँचो आय द्रोण ढिग तैसे
निकट जानिकै गुरु सँभार्‌यो ❀ लघुसंधान बाण तब मार्‌यो
बरषहिं बाण घात नहिं पायो ❀ कुँवर पेलि अपने दल आयो
लै कोदण्ड लग्यो शर मारन ❀ छांड्यो बाण सहस्र अपारन
कृपाचार्य किय शर संधानहिं ❀ भिरे नकुल तिनते जयकामहिं
मन्त्री शकुनी रण सहदेवहि ❀ पण्डित दोऊ युद्ध के भेवहि
हांक्यो जबहिं अलम्बू स्यन्दन ❀ तिनते भिर्‌यो हिडम्बीनन्दन
शल्य नरेश सात्यकी लरई ❀ कृतवर्मा बिराट रण करई
युद्ध देखि भगदत्त रिसानो ❀ चढ़ि गयन्दपर कियो पयानो

दो० ऐरावत को सुत अहै, ताहि दियो सुरराज ।
तापर चढ़ि भगदत्त नृप, कियो युद्ध को साज ॥

मन्दर सों देखत नर डरई ❀ योजन ऊपर पांव सो धरई
दन्तबिशाल कहत नहिं आवै ❀ मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै
कालरूप सम कुञ्जर धायो ❀ पाण्डव के दल ऊपर आयो
कटक अमित पांयनसों मार्‌यो ❀ शुण्ड लपेटि रथी फटकार्‌यो
अपनो दल डोलत अनुमान्यो ❀ भीम अग्र है हांक सुठान्यो
क्रुद्धित शर कोदण्ड सुधार्‌यो ❀ कुञ्जरशीश बिशिखशतमार्‌यो
शायकअमित हते गजमत्तहि ❀ षष्टिबाण मार्‌यो भगदत्तहि
तब भगदत्त क्रोध उर कीन्ह्यो ❀ पंचबिंश शरफोंक सो दीन्ह्यो
भीमसेन उर मध्य प्रहारा ❀ बहै प्रबाह रुधिर की धारा

दो० तब गयन्द अतिक्रोध करि, गह्यो भीमरथ आय ।

फेंकि दियो रथ भूमि में, परो कोस पर जाय ॥

कहूं तुरंग कहूं रथ टूट्यो ❋ कहूं सारथी कर शिर फूट्यो
भीमसेन तब लज्जा पायो ❋ रहु भगदत्त वृकोदर आयो
हांक मारि यहि भांति जनायो ❋ लैकर गदा क्रोध करि धायो
एकहि गदा शीश पर दयऊ ❋ चारि पैग पाछे गज गयऊ
गदा घाव गजराज सँभार्यो ❋ झारि शीश आगे पग धार्यो
तब भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यो ❋ हांकि शेल उरमध्य सो दीन्ह्यो
शेल घाव ते मोह जनायो ❋ धका मारि गजराज गिरायो
गिर्यो भीम धरणी महँ कैसे ❋ भूधर परत भूमितल जैसे
द्रुपद नरेश देखि करि धायो ❋ उतरा काशिराज सँग आयो
जुर्यो शिखण्डी अति रणधीरा ❋ चारिउ बीर महाबल बीरा
सहस सहस शर सबन चलायो ❋ शीश गयन्द बाण ते छायो
गज पर शर बर्षंत तब कैसे ❋ गिरि पर बृष्टि नीर घन जैसे

दो० नृपभगदत्त क्रोध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड ।
चारिउभट मोहितकिये, भारत रण बरबण्ड ॥

चारिउ बीर बिमोहित कीन्ह्यो ❋ पेलि गयन्द कटक पर दीन्ह्यो
संमुख आइ शूर शर जोरहिं ❋ झपटि गयन्द सबनशिरतोरहिं
ठोकर अपर पछोरते मारहिं ❋ काहुहि छेदि दण्ड ते डारहिं
बिडरी अनी व्यूह सब फूटे ❋ बिपुल सङ्ग निज सङ्गते छूटे
भयो शोर दल बैरख डोल्यो ❋ क्रुद्धित धर्मराज तब बोल्यो
अहो मूढ़ भागत केहि कामहिं ❋ संमुख युद्ध करहु रणधामहिं
प्राण गये उत्तम गति पैहहु ❋ चढ़ि बिमान सुरलोक सिधैहहु
क्षत्री बंश जन्म जो पावै ❋ सो सुपुत्र रण प्राण गँवावै
धर्मराज यहि बिधि ते कह्यऊ ❋ फिरकै अस्त्र सबन कर गह्यऊ
शर अरु शक्ति शेल ते मारहिं ❋ तोमर फरसा कोऊ प्रहारहिं
शायक क्रोधवन्त ह्वै धाये ❋ तूणिन माहँ खांड़ अजमाये

दो० साहस करि क्षत्री सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार ।

महा भयंकर देवगज, होत घाव नहिं बार ॥

तब भगदत्त निकर शर डास्यो ❀ क्षत्री बिपुल समरमहि मास्यो
रथ अनेक गज गहि फटकारै ❀ ऊपर शर भगदत्त जो मारै
व्याकुलसैन्य त्रासित होइ भागे ❀ दबे ते सकल परे यम आगे
शत नरेश तेहि ठाहर जूझे ❀ चले न लाज पंक आरूझे
गजरथ अरु असवार सहस्रन ❀ धर्मराज हित मृत्यु भये रन
कायर सकल जीव लै भाजे ❀ तब भगदत्त समरमहि गाजे
सिंहनाद करि हांक सुनायो ❀ है कोउ सुभट जो संमुख आयो
पाण्डु बंश सब मारि गिरावों ❀ एक छत्र कुरुनाथ करावों
तब अपनो पुरुषारथ लेखौं ❀ अर्जुन कृष्ण नयन जब देखौं
धर्मराज के संमुख आयो ❀ अर्जुन को माधव समुझायो

दो० अर्जुन अब देखत कहा, धर्मराज पर भीर ।
चलहु जाइ उत रण करिय, रथ हांको यदुबीर ॥

सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ ❀ जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ
करि टङ्कोर धनुष कर लीन्ह्यो ❀ अर्जुन आइ हांक रण दीन्ह्यो
गज के जोर सैन्य सब मारे ❀ परेहु आय अब घात हमारे
अब छांड़हु जीवनकी आशाहि ❀ गज समेत जैहो यमपासहि
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो ❀ अर्जुन मैं खोजत त्वहिं रह्यो
भली भई बिधि कीन्ही भेटहि ❀ जैहो आजु काल के पेटहि
सुनि अर्जुन धनु शायक लायो ❀ क्रोधित ह्वै अतिबाण चलायो
कुण्डकेश असि बिशिखचलाये ❀ गज समेत भगदत्तहि छाये
तब भगदत्त बाण सब काटे ❀ क्रुद्धित ह्वै सब शायक पाटे
षष्ठि बाण मारेउ अर्जुन तन ❀ असी नराचहन्यो श्यामहिघन
सहस बाण मास्यो हनुमानहिं ❀ पंचबाण ते ध्वजा निशानहिं
अष्ट बिशिख अश्वन उरलागे ❀ थकितभयो रथ चलत न आगे
तबशर बिंशति बिजयनमास्यो ❀ नृप को चाप खण्डिकै डास्यो
पुनि पारथ कीन्ह्यो संधानहिं ❀ शक्ति बीच मास्यो दश बानहिं

निष्फलभयो शक्ति जब जान्यो * लैकर चाप विशिख संधान्यो
क्रुद्धित नृप मार्यो तीक्षणशर * घायल भये आपु धरणीधर
गजहि पेलि अर्जुन पर आयो * ऊपर ते बहु शर झरि लायो
गज समेटि कै फेंक्यो स्यन्दन * अर्जुन कहीं कहीं जगवन्दन
तीक्षण बाण घाव उर दीन्ह्यो * अर्जुनकृष्ण विमोहित कीन्ह्यो
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी * हनूमान रथ रक्षाकारी

दो० हम पारथ अरु रथ सहित, तुम रक्षक हनुमान ।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान ॥

अर्जुन कृष्ण मोह जब पायो * तब भगदत्त क्रोधकरि धायो
गज के पांयन ते रथ तोरौं * ठोकर ते अर्जुन शिर फोरौं
हनूमान हँसि बचन सुनायो * नृप यह मन्त्र अकारथलायो
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक * ऐरावत नहिं तूरन लायक
यम अरु इन्द्र बरुण जो आवहिं * तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं
वेष्टि लँगूर सबै रथ दीन्ह्यो * धायो मत्तहस्ति रिस कीन्ह्यो
क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभार्यो * लक्षबाण हनुमानहिं मार्यो
प्रबल तेज सानित शर छूट्यो * बज्र शरीर लागि सब टूट्यो
दोउ दंत गहि पेलेउ बलकै * कछुकढील दीन्ह्यो कपि छलकै
द्वौ सघनीच दंत जब धर्यो * तब हनुमान लँगूरहि कर्यो
पेंच लँगूर दशन दोउ टूटे * तब गज महाकष्ट ते छूटे
उखरे दशन चकित सब कोऊ * शोणित बहै रदनकर दोऊ

दो० हरि जागे अर्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान ।
पेंच लँगूर समेटिकै, रथ छाँड्यो हनुमान ॥

सुनु भगदत्त कह्यो यह पारथ * तुम कीन्ह्यो अतिशय पुरुषारथ
अब मेरो प्रण नृप सुनि लीजै * एक बाण कुञ्जर बध कीजै
दूजो शर संधान जो करऊं * नहिं कोदण्ड बहुरि कर धरऊं
जो यह बाण गजहि सम्भार्यो * क्षत्री धर्म आजु ते हार्यो
तब भगदत्त कह्यो यह कारन * मैं यह प्रण कीन्ह्यो अपने मन

जो यह शर गजराज गिरावै ❀ मेरो अयश सकल जग गावै
कृष्ण कही अर्जुन सुनि लीजे ❀ अब अपनो प्रण रक्षा कीजे
पारथ ब्रह्मबाण संधान्यो ❀ श्रवण प्रयंत शरासन तान्यो
कुंभस्थल ताकि मारत भयऊ ❀ भेदिशीश शरनिकसिसो गयऊ
छूट्यउ प्राण गिरन गज चह्यो ❀ तब भगदत्त जङ्घ सों गह्यो
राख्यो साधि झुकन नहिं पायो ❀ बाण बृष्टि अर्जुन पर लायो
गजहिंदेखिजियशोचबिचास्यो ❀ पारथ धनुष हाथ ते डास्यो

दो० कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज।
राख्यो है भगदत्त गहि, अस्त्रतजौ केहिकाज॥

सुनत बिजयनरधनुशर लीन्ह्यो ❀ क्रुद्धित है संधान सो कीन्ह्यो
अर्द्धचन्द्र शर अर्जुन छण्ड्यो ❀ नृपको शीश कंध ते खण्ड्यो
मृतक गयंद सहित नृप परेऊ ❀ झलकत मुकुट जरायनजरेऊ
अर्जुन रण कीन्ह्यो यह करणी ❀ योजन तीनिपस्यो गज धरणी
हर्षित भये देखि जगतारण ❀ धरि यह देह भक्त के कारण
पाण्डव सेन देखि सुख पायो ❀ फिरिकै सकलसमरमहि आयो
हर्षित बचन युधिष्ठिर भाख्यो ❀ अर्जुन रण अपनो प्रण राख्यो
रुण्डमुण्ड बसुधा अब छायो ❀ रण में रुधिरनदी बहिआयो
भूत पिशाच योगिनी गावहिं ❀ बिकटरूप भैरवगण धावहिं
श्रीहरि कही चलो अब पारथ ❀ भीषमसों कीजे पुरुषारथ
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो ❀ तब भीषम जय शंख बजायो

दो० दशसहस्र रथ मारिकै, चले आपने धाम।
सबलसिंह चौहानकहि, भारत के संग्राम॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्ह्यो ❀ सेन समेत गमन गृह कीन्ह्यो
तब कुरुराज भवन निज आयो ❀ सकल सेन बिश्राम करायो
आप गमन अन्तःपुर कीन्ह्यो ❀ भानुमती आदर करि लीन्ह्यो
चमर छत्र सब लिये सहेली ❀ मणिमय भूषण रूप गहेली

नृपहिं सिंहासन लै बैठारयो ❀ रानी तब आरती उतारयो
उत्तम नीर सुगन्ध सँवारयो ❀ सखिनआयतबचरणपखारयो
तेल सुगन्ध राज तन लायो ❀ कनककलश अस्नान करायो
भूषण बसन अङ्ग पहिरायो ❀ अमृत भोजन सरिस ज्यँवायो
कञ्चन मणिमय भवन सँवारी ❀ हीरा रत्न करत उजियारी
ताबिच गजमणि झालरि जोरे ❀ देखत धनद कहहिं हम थोरे
बहुत भांतिकै सेज सँवारी ❀ पय फेना सम आनँदकारी
शयन करन भूपति पगुधारयो ❀ नृत्यनि मङ्गल गान उचारयो
आगिलि कथा कहन मन लायो ❀ यदुपतिसहित सकलगृहआयो

दो० अशन करन बैठे सकल, द्रुपदसुता के जाय।
धर्मराज पूछत भये, बचन सुनहु यदुराय॥

हनूमान रथ आपु सँभारयो ❀ तब पारथ भगदत्तहि मारयो
दश सहस्र रथ भीषम मारै ❀ नितक्रमसों नहिं एक उबारै
भीषम रहत कुशल नहिं देख्यो ❀ बन्धुबिरोध कठिनकरि लेख्यो
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशो ❀ केहिकारण जियकरहु अँदेशो
जो हरिचरण कमल मन लावै ❀ सो जगमें कलेश नहिं पावै
सदा भक्त की रक्षा कारण ❀ दीनबन्धु कीन्ह्यो तन धारण
जब प्रहलाद खम्भ में कह्यो ❀ नरहरिरूप तहां प्रभु गह्यो
असुर फारि यमलोक पठायो ❀ भक्त शीश पर छत्र धरायो
ते प्रभु सदा रहत तुम सङ्गहि ❀ कारण कौन करहु मन भङ्गहि
करिभोजन शयनहि मनलायो ❀ प्रात होत रण साज बनायो

दो० दल चतुरङ्ग सुसङ्ग लै, सब नृप तेजनिधान।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान॥

कौरव साजि समरमहि आये ❀ ह्वह मारि दोऊ दल धाये
शर अनेक बर्षन रण लागे ❀ धावहिं बीर क्रोध ते पागे
शायक घाव करत अति चांड़े ❀ उछरहिं गिरहिं तकियत खांड़े
असवारहि असवार प्रहारहिं ❀पकरहिंसुभटशीशअसिझारहिं

रथी रथी सों कीन्ह्यो जोराहि ❀ दन्ती सों दन्ती रणघोराहि
सन्मुख जुरे समर अति पण्डित ❀ दोउ दल मारुमारुधुनिमण्डित
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा ❀ घाल्यो घाव महाबल भीरा
क्षत्री अतिपौरुष निजकरिकर ❀ कीन्ह्यो भारत प्रलय भयंकर
बासुदेव स्यन्दनहि चलायो ❀ गङ्गातनय के सन्मुख आयो
दोऊ सुभट मिले अतियुद्धहि ❀ शर छांड़नलाग्यो अतिक्रुद्धहि
कर कोदण्ड वृकोदर लीन्ह्यो ❀ बाणवृष्टि अरि ऊपर कीन्ह्यो
यहि प्रकार बहु बिशिख पँवारे ❀ सहसन बीर समरमहि पारे
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु ❀ पांडव सेनहि मारि गिरावहु

दो० दश सहस्र रथ संग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
सिंहनादकियसमरमहि, साधेउ शारँग बान ॥

क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण ❀ पाण्डव दल कृत बहु संहारण
गिरा गँभीर सो भीम सुनायो ❀ स्यन्दनत्यागि गदा गहि धायो
तबहिं सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यो ❀ भीमअङ्ग शत शर क्षत कीन्ह्यो
दश सहस्र स्यन्दन रथ आयो ❀ दशदश शर तिनसबनचलायो
लक्ष बिशिख बेधे जब तनमें ❀ तबहिं वृकोदर क्रुद्धेउ मनमें
गदाघाव यहि विधिते मारयो ❀ दुइसै रथ चूरण करिडारयो
सहित रथी सारथी न देखत ❀ मांस मृत्तिका समुझे लेखत
अरु बहुस्यन्दन पदनते तोरयो ❀ करतलहतिबहुमौलिसोफोरयो
गहि बहु भीम चलायो स्यन्दन ❀ यहिप्रकार किय सेननिकन्दन
भीमसेन बहु कटक सँहारयो ❀ नृपति सुशर्मा आपु सँभारयो

दो० क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यो शरसंधान ।
हृदय वृकोदर के हन्यो, एकबार दशबान ॥

घायलभयो सह्यो सब बानहि ❀ क्रुधित गदागहिकियोपयानहि
करिकै नाद सुगदा प्रहारयो ❀ कूदि सुशर्मा आपु सँभारयो
भाज्यो तुरत तज्यो रणरङ्गहि ❀ सारथि सहित कियोरथभङ्गहि
कह्यो भीम भागत केहि कामहिं ❀ सन्मुख जुरौ करौ संग्रामहिं

भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ सिंहनाद करि हांक सुनायो
भीमसेन अस्थिर होइ रहिये ❀ मारतहौं तीक्षण शर सहिये
तब सारथि लै रथ पहुँचायो ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो
भूरिश्रवा बाण दश डारयो ❀ ते शर भीम सो काटि निवारयो
दोउ बीर सन्धान्यो धनुकर ❀ क्रुद्धित लगे चलावन बहुशर
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु सङ्गहि ❀ दोउ भट मच्यो महारणरङ्गहि
शल्य नरेश सात्यकी योधहि ❀ कृतबर्मा बिराट रण क्रोधहि

दो० द्रोणीअरुअभिमन्युरण, कठिन बजायो मार ।
बाणबुन्द बर्षत सघन, जिमिश्रावणजलधार ॥

नृपजयद्रथरु नकुल कृत मारहिं ❀ कठिनअस्त्र दोउसुभट सँभारहिं
घटउत्कच क्रुद्धित ह्वै धायो ❀ सप्तताल बहु बृक्ष चलायो
लै पषाण शिर ऊपर डारहि ❀ यहिविधिबहुत कटकसंहारहि
सकल पदाति पकरिकै खायो ❀ गजहि समेटि पेट पहुँचायो
कुरुपति कह्यो अलम्बू धावहु ❀ दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु
सप्त कोटि राक्षस लै सङ्गहि ❀ धायो धनु कर धरि रणरङ्गहि
दनुजराज शत बिशिखचलायो ❀ शर सों भीमपुत्र रथ छायो
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यन्दन ❀ धायो उतरि हिडम्बीनन्दन
लयो गदा कर दानवराजहि ❀ सन्मुख जुरयो युद्ध के काजहि
मुद्गर गदा सु दोऊ प्रहारहिं ❀ एकहियक क्रुद्धित ह्वै मारहिं

दो० नृपति अलम्बू भीमसुत, भयो सुघोर बिरुद्ध ।
बिकट भयंकर रूप धरि, कियो युद्ध अतिक्रुद्ध ॥

गदाघाव जब तनमों लागत ❀ शब्द अघात महारण छाजत
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने ❀ अटके मल्लयुद्ध अरुझाने
दन्त दन्त नख नखन प्रहारहिं ❀ गहे केश मुष्टिक सों मारहिं
मेघघटा सम अङ्ग सोहाये ❀ क्रुद्धित दशन बिज्जु चमकाये
अरुण नयन सोहत हैं कैसे ❀ प्रातहि उदय दिवाकर जैसे
रथके खम्भ शीश पर मारहिं ❀ पकरि शुण्डकुम्भस्थल फारहिं

महायुद्ध अति अद्भुत करणी ❀ कियो महाभय भारत धरणी
भीमतनय तब तेज सँभारयो ❀ दनुजराज गहि केश पछारयो
तब दनुजेश धरणिपर गिरयो ❀ महाअचल मानहुँ महि परयो
तासु हृदय पुनि चरण प्रहारा ❀ मुख ते चली रुधिर की धारा

दो० सबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हो खेत ।
भैरव भूत पिशाच गण, नाचत योगिनि प्रेत ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

तब भीषम शारँग कर लीन्हो ❀ बाण वृष्टि अर्जुनपर कीन्हो
कृष्ण शरीर बिशिखदश बेध्यो ❀ हनूमान बिंशति तन शोध्यो
पारथ के शर शोणित छूट्यो ❀ काटि सनाह भीष्म उर फूट्यो
पांच बाण मनमोहन मारयो ❀ सहस पैग पाछे रथ टारयो
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक ❀ अर्जुन यहि पुरुषारथ लायक
अब अपनो रथ रक्षा कीजे ❀ कमलनयन जोती कर लीजे
यह कहिकै तीक्षण शर मारयो ❀ रथको पैग तीनिशत टारयो
नन्दिघोष रथ श्रीजगबन्दन ❀ पारथ सहित पवनके नन्दन
लग्यो बाण रथ पीछे आयो ❀ साधुबचन यदुनाथ सुनायो
जीवन सफल गङ्गसुत तेरो ❀ बाण घात रथ डोल्यो मेरो

दो० श्रीहरि तुरँग सँभारिकै, लै आयो तेहि ठौर ।
तौलागि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथ और ॥

हर्षित ह्वै जय शंख बजायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो
सकलसुभट निजधाम सिधाये ❀ किये जाय बिश्राम सुहाये
धर्मराज सँग लिये सब भाई ❀ सहित गोबिन्द भवननिजजाई
अमृत भोजन सरस बनाये ❀ जेंवत भीम बहुत सचुपाये
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे ❀ कोमलबचन कहन कछु लागे
भीषम सरिस रच्यो पुरुषारथ ❀ केहिबिधि युद्ध जीतिये भारथ
धर्मराज तब भये दुखारे ❀ तब कुन्ती कछु बचन उचारे
सब संसार कहत परतक्षक ❀ पाण्डुवंश के माधव रक्षक

जब तुम सकलरहे यक भवनहिं ❀ खेलनका बालक सब गवनहिं
भीम और दुर्योधन सङ्गहि ❀ सदा बिषाद करत मन भङ्गहि
बुद्धिचक्षु तब हमहिं बुलायो ❀ मधुर बचन कहिकै समझायो

दो० दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं यक ठौर ।
तातें बसिये अनत कै, रचि देहौं गृह और ॥

दुर्योधन अरु करण बुलायो ❀ शकुनी सहित मन्त्र ठहरायो
थवइ बोलाय दयो धनदानहिं ❀ लाखभवन करिये निर्मानहिं
नगर बारुणा महल उठायो ❀ लाखसाज मन्दिर सब लायो
लाख कोट सब ईंट सँवारयो ❀ दैकरि लक्ष सघन बैठारयो
बुद्धिचक्षु कह बिदुर सिधावहु ❀ अपने नयन देखि तुम आवहु
नृपआज्ञा माथे करि लीन्ह्यो ❀ चढ़िबरबाजिगमनशुभकीन्ह्यो
आइउतरि देख्यो सब धामहिं ❀ लाग्यो सकल लाहको कामहिं
थवइन ते तब पूछन लागे ❀ यह बृत्तान्त कहहु मम आगे
यह सुनि थवई कहत सुभयऊ ❀ दुर्योधन मोहिं आयसु दयऊ
लाखभवन कीजो निर्मानहिं ❀ गुप्तरूप पाण्डव नहिं जानहिं
बिदुर बात मन में अनुमानत ❀ पापी दुर्योधन जग जानत

दो० देख्यों सुन्यों न जगत में, लक्ष भवन निर्मान ।
दुर्योधन रचना रची, पाण्डव मुये निदान ॥

चुपकरि रहौं पाण्डुसुत मरेऊ ❀ हत्या करन बीर नृप चहेऊ
रत्न मुद्रिका करते लीन्ह्यो ❀ थवई बोलि हस्त करि दीन्ह्यो
अब यक सुरँग करहु निर्मानहिं ❀ जैसे दुर्योधन नहिं जानहिं
सुनिकै बढ़ई द्वार बनायो ❀ ता ऊपर यक खम्भ लगायो
बिदुर गयो धृतराष्ट्र के आगे ❀ उत्तमभवन कहन अस लागे
द्विजबोलाय शुभदिवस धरायो ❀ गृहप्रवेश हम सब मन लायो
भीषम द्रोण साथ करि दीन्हे ❀ यज्ञ होम बहु बिधि ते कीन्हे
संध्याजानि किये सब गवनहिं ❀ सुतन समेत रहे हम भवनहिं
ब्याधा एक पाण्डु तेहि नामहिं ❀ सदा भ्रमै मृगया के कामहिं

मृगन मारि कानन ते ल्यावै ❀ विक्रयमांस सों सुतन जियावै
एक दिवस आहेर सिधायो ❀ देखन एक जन्तु नहिं पायो
सोच बढ़ो जिय भयो निराशहि ❀ बालकसबविधि परे उपासहि
दो० मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सौं दिननप्रमाण ।
हर्षितहोइ व्याधाचल्यो, साध्यो शारँग बाण ॥
पश्चिमदिशा जाल दै आयो ❀ उत्तरदिशिसों अनल लगायो
पूरबदिशा श्वान दृढ़ कीन्ह्यो ❀ दक्षिणदिशा फोंक शर दीन्ह्यो
चहुँदिशि मृगी देखिकै आयो ❀ कौनिउ दिशि निर्बाह न पायो
पश्चिम गये जाल में परिये ❀ उत्तर गये अग्नि में जरिये
पूरब गमने श्वान पछारै ❀ दक्षिण गये बधिक मोहिं मारै
प्रसवकाल स्वइ निकटहि आयो ❀ उदरमध्य स्वइ व्यथा जनायो
करुणा करै मृगी यह भाखै ❀ दीनबन्धु बिनु को म्वहिं राखै
तृण बन चरौं करौं जल पाना ❀ अपनो मांस बैर सब जाना
अहो कृष्ण सन्तन सुखकारी ❀ दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी
अब तुम दया करहु जगनायक ❀ यहिअवसर प्रभु होहु सहायक
दो० घूमत है मन भँवर में, सुखकी नदी अथाह ।
चहुंओर संकट पर्‍यो, हरिके हाथ निबाह ॥
जब यहि भांति मृगी अकुलानी ❀ दीनबन्धु यह रचना ठानी
बन में मेघ घुमरि करि आयो ❀ बरषि नीर तब अनल बुतायो
पवन तेज सब जाल उड़ायो ❀ श्वानहि झपटि व्याघ्र लैखायो
तड़प्यो बज्र व्याध शिर पर्‍यो ❀ चहूंओर प्रभु रक्षा कर्‍यो
दीनदयाल राखि तेहिं लीन्ह्यो ❀ सुखते मृगी प्रसव तब कीन्ह्यो
बधिक जबै आयो नहिं भवनहिं ❀ सुतसमेत नारी कियो गवनहिं
द्विज भोजन तब सुनिकै धायो ❀ मोते तब याचज्ञा लायो
पञ्च पुत्र तब देख्यो नयनहि ❀ शबरी ते तब पूछेहु बयनहि
कहा नाम तुम मोहिं सुनावहु ❀ क्यहिउद्यम तुम दिवसगँवावहु
कुंती नाम मोहिं द्विज राख्यो ❀ स्वामीनाम पाण्डु तिन भाख्यो

सुतको नाम युधिष्ठिर अहई ❀ दूजो भीमसेन यह कहई
तीजो अर्जुन सरिस सोहायो ❀ नकुल और सहदेव कहायो

दो० तब मैं हर्षित भई बहु, बैस सखी सुनु बात ।
पति सुत एकै नाम है, हम तुम भयो सँघात ॥

उत्तम भोजन सरिस जेंवायो ❀ सुतन समेत सेज बैठायो
शकुनीसुत उलका तेहि नामहि ❀ दुर्योधन ऐसे यहि कामहि
मध्य द्वार में अनल लगायो ❀ दृढ़ करि बज्रकपाट दिवायो
पसरी अग्नि लक्ष मिहलाने ❀ बाढ़्यो धूम सकल अकुलाने
चुइकै लाख देह मों परई ❀ उधिरै त्वचा बाह्नि सब जरई
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी ❀ दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी
कही भीम क्रुद्धित सहदेवहि ❀ तैं नीके जानत है भेवहि
हँसि सहदेव कह्यो यह बानी ❀ भले ठौर पूछेहु सज्ञानी
भीम कीजिये कहा हमारो ❀ बलते यह गहि खम्भ उखारो
बिदुर सुरँग कीन्ह्यो निर्मानहिं ❀ धर्मशरीर नीति सब जानहिं
भीमसेन गहि खम्भ उखारो ❀ देख्यो उत्तम पन्थ सँवारो

दो० वहिमारगसबमिलिधसे, आतुर कीन्ह्यो गौन ।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन ॥

लै कर गदा चलन जब ताक्यो ❀ धरिकै देह अग्नि तब हांक्यो
सप्तजिह्व देखत भय पायो ❀ भीमसेन तब बिनय सुनायो
आपु समान तीनिसौ देहौं ❀ भाषत सत्य समय जब पैहौं
द्वारावति महँ रह बनवारी ❀ सुखशय्या सँग रुक्मिणिप्यारी
ताति समीर अङ्ग में लागी ❀ भीष्मकसुता नींद सों जागी
अहो नाथ यह कारण कहिये ❀ शय्या अग्निआंचते दहिये
हँसि प्रभु कह्यो मौन ह्वै रहिये ❀ गुप्तबात काहुहि नहिं कहिये
लाखभवन कुरुनाथ सँवाख्यो ❀ पाण्डुतनय हम जरत उबाख्यो
अनलआंच अपने तनु लीन्ह्यो ❀ उन सबको निबाह करदीन्ह्यो
कृष्ण सहायक चितमें धरहू ❀ हे सुत शोच काज क्यहि करहू

दो० जरत उबाख्यो वह्नि ते, सदा भक्त की लाज ।
सबलसिंह चौहान कह, शोचकरहुक्यहिकाज ॥

करिभोजन शयनहिंमनदीन्हो * प्रात होत रणउद्यम कीन्हो
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांध्यो * हर्षित बदन चल्यो शर सांध्यो
दोऊ दल रण भूमिहि आये * हांक मारि पायक गण धाये
रहुरहुकहि कृपाण तबखोलहिं * मारत हांक पदादि सुडोलहिं
बजे निशान भयो आघाता * कोउ नहिं सुन केहूकरि बाता
पेलि गयन्द महाउत आये * पर्वत मनहुँ भूमि पर धाये
असवारहिं असवार सँभारहिं * सम्मुख जुरे खड्ग शिरझारहिं
रथी रथी सों युद्ध लगायो * क्रुद्धित ह्वै बहु बाण चलायो
क्षत्री सकल करहिं संग्रामहिं * जूझहिं स्वामिधर्म के कामहिं
कुरुक्षेत्र में प्राण गँवावहिं * चढ़ि बिमानसुरलोकसिधावहिं
नान्दिघोष श्रीपति रथ चाल्यो * डोली धरणि शेष शिर हाल्यो

दो० भीषम सों अर्जुन जुरे, कीन्हों धनु टंकोर ।
दोऊ दल चकित भये, जनु घुमरो घनघोर ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

भीषमसों अर्जुन यह भाख्यो * चारिदिवस अपनोप्रण राख्यो
दशसहस्र नित क्रम रथ मारयो * दैकर शंख भवन पग धारयो
यहिबिधिकरौं धनुष कर धारण * सकहु न आजु सेन संहारण
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ * कीजे जो सो है पुरुषारथ
साखी आपु अहैं यदुनन्दन * दशसहस्र रथ करौं निकन्दन
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ ठान्यो * पञ्च बिशिख शायक संधान्यो
निशितबिशिखगङ्गासुतमारयो * अर्जुन ते शर काटि निवारयो
शायक बिंश बिजयनर जोरयो * शन्तनुसुत बीचहि शर तोरयो
दोउ बज्र अतिबिशिखप्रहारहिं * जिमिजलधरबरषतजलधारहिं
बहुत युद्ध रण समता जान्यो * पारथ अग्निबाण संधान्यो

दो० प्रकटि अग्नि बारन चली, झपटत लपट कराल ।

गजरथ हय पदचर जरत, कौरव कटक बिहाल ॥
भीषम बरुणबाण कर लीन्ह्यो ❀ ताते अग्निनिवारण कीन्ह्यो
पाण्डव दल बूड़त सब जान्यो ❀ अर्जुन पवन बाण संधान्यो
पवन तेज सब नीर सुखायो ❀ ध्वजा टूटि धरणी पर आयो
भीषम तज्यो सर्प के बानहिं ❀ नागन मरुत कियो तबपानहिं
धाय डसैं सब बिषधर कारे ❀ यहिबिधि बहुत सैन्य संहारे
अर्जुन बरही बाण चलाये ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाये
भीषम अन्धकार शर छाजे ❀ देखत सकल पक्षिगण भाजे
अन्धकार भो कछू न सूझै ❀ अपनो पर कोऊ नहिं बूझै
हितअरुअहित देखिमहिपावहिं ❀ हांक मारिकर आपु जनावहिं
गजरथ हय पदाति सब धावहिं ❀ अभिरहिंगिरहिंपन्थनहिंपावहिं
पाण्डव सैन्य देखि नहिं पायो ❀ तब पारथ रबिबाण चलायो
भानुतेज कीन्ह्यो तम नाशहि ❀ पाण्डव दल पायो परकाशहि
दो० मार्तण्ड मण्डल उयो, देखत अतिहि प्रचण्ड ।
तब अर्जुन यहिबिधिदियो, भीषम बाहुकोदण्ड ॥
गङ्गासुत क्रुद्धित भयो मनमें ❀ शर मार्‍यो पारथ उर रनमें
अष्टबाण तब यहि बिधि जोरे ❀ घायलकिय रथ चारिउ घोरे
सप्त बिशिख मार्‍यो हनुमन्तहि ❀ सत्तरिशर बेध्यो भगवन्तहि
बिंशति शर रथ ऊपर मार्‍यो ❀ चाके चारि धरणि मों डार्‍यो
लै ताजन्ह प्रभु अश्वहि मार्‍यो ❀ महाकष्ट ते रथहि निकार्‍यो
अर्जुन देखि क्रोध जिय बाढ़्यो ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़्यो
भीषम के उर मध्य प्रहारा ❀ बहै प्रबाह रुधिर की धारा
चारि बाण छूटे अति पायल ❀ ताते भये अश्व रथ घायल
तीनि बाण सारथि पर लायो ❀ एक बाण ते ध्वजा गिरायो
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्यो ❀ भीषम कोपि हांकि रथ दीन्ह्यो
दो० अर्जुन रण अस्थिर रहो, रक्षा कीजै सैन ।
आपु सहद जोती गहो, पीतम पङ्कजनैन ॥

यह कहि तीक्षण बाण चलायो ❀ शर सों नन्दिघोष रथ छायो
पाण्डुतनयअसविशिख पँवारयो ❀ आवत शायक काटि निवारयो
भीषम के शर मारि गिरायो ❀ तब अर्जुन शत बाण चलायो
मारत शर शर सों शरखण्डित ❀ दोऊ जुरे सरस रणपण्डित
भीषम पर्वत शर संधान्यो ❀ देखि देव सब शङ्का मान्यो
चलैं पहार सकै को भाखन ❀ शतते सहस सहस ते लाखन
लक्ष पहार गगन में धायो ❀ भादौं मेघ उमहि जनु आयो
शब्द अघात होत हैं कैसे ❀ सागर मथत कुलाहल जैसे
पाण्डव दल त्रासित होइभागे ❀ हाहा शब्द पुकारन लागे
नन्दिघोष राख्यो जगवन्दन ❀ भीमरु रहे सुभद्रानन्दन
तीन महारथि रण महँ गाजैं ❀ सहित नरेश सकल भट भाजैं
अन्धकार यहि विधिते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो

दो० सुरगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम।
पारथ शर शारँग गहहु, कहे आपु सुखधाम॥

साधि बाग राख्यो हरि घोड़े ❀ अर्जुन बज्रबाण गुण जोड़े
गिरिते भयो बज्र तब दूनो ❀ फोरि पहार कियो तब चूनो
ऐसे बज्र बाण तब छूट्यो ❀ लक्ष पहार क्षार सम फूट्यो
विबुध लोग देखत सुख पायो ❀ सेना सकल समरमहि आयो
पुष्पमाल सुर कन्या डारहिं ❀ नन्दिघोषरथ सरस सँवारहिं
जयजय शब्द गगनमहँ बोलत ❀ चढ़े विमान अनन्दित डोलत
भीषम निरखि क्रोध उर छायो ❀ पारथसों कछु बचन सुनायो
अब अपनो दल रक्षा करिये ❀ सावधान कोदण्डहि धरिये
लघु संधान बिपुल शर त्याग्यो ❀ सहस सहस शर छूटन लाग्यो
गङ्गातनय तेज संभारयो ❀ अर्जुन काटि भूमिमहँ पारयो
भीषम चहहिं सैन्य संहारण ❀ पारथ प्रण रक्षा के कारण
नयनपलक लागन नहिं पावहिं ❀ श्रमजल दूटि नयनपर आवहिं
शर संधान घात नहिं पायो ❀ धनुष खींचि पोंछन मन लायो

गङ्गासुत तब अवसर पायो ❀ बाणन वृष्टि महा झरिलायो
दशसहस्र कृतखण्डित स्यन्दन ❀ कियो शंखध्वनि शन्तनुनन्दन
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई ❀ भीपम किमि यह शंख बजाई
बध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो ❀ गङ्गासुत अपनो प्रण राख्यो
गजरथ हय पदाति सब जूझे ❀ रुण्डमुण्ड कछु जात न बूझे
अर्जुनलखिअचरजकरिमान्यो ❀ महावीर भीषम कहँ जान्यो
संध्या जानि रथहि पलटायो ❀ कौरवदल सब भवनहिं आयो

दो० नन्दिघोष रथ फेरकै, पारथ कीन्ह्यो गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

सकल सैन्य बिश्राम सो कस्यो ❀ खान पान कर्महि अनुसस्यो
दुर्योधन भीषम पहँ आये ❀ बैठि बचन यहिभांति सुनाये
पांच दिवस कीन्हें संग्रामहिं ❀ पाण्डवकुशलगये निजधामहिं
तव बल नाथ जगत सब जानत ❀ देव दनुज गन्धर्व बखानत
क्षणमों पाण्डव सकहु सँहारण ❀ आप दया कीजे क्यहि कारण
तब भीषम कह बचन सही अति ❀ पूर्बकथा अब सुनहु महीपति
नन्द भवन जब रहे मुरारी ❀ धेनु चरावत अतिहितकारी
सुरपति यज्ञ गोप सब कीन्ह्यो ❀ सो हरि मेटि शैलकहँ दीन्ह्यो
यह सुनि देवराज दुख पाये ❀ प्रलयकाल के मेघ बोलाये
उठी घटा बारिद घहराने ❀ देखत ब्रजबासी अकुलाने
कृष्ण कृष्ण कहि सबन पुकारी ❀ अहो नाथ हम शरण तुम्हारी
तब हरि गोबर्द्धनहि निहास्यो ❀ भुजबल पकरि पहार उपास्यो
बायें कर पर राख्यो मन्दर ❀ यहिबिधि नाश्यो गर्ब पुरन्दर

दो० सप्त दिवस झरिलाइकै, बर्षा घोर अपार ।
ग्राम गोप रक्षा कियो, करसों धस्यो पहार ॥

ते प्रभु हैं पारथ रथ सारथ ❀ कहो कहा कीजै पुरुषारथ
बधौं कालिह पाण्डव परतक्षक ❀ जो नाहिं होइँ कृष्ण रणरक्षक

होत प्रभात दोउ दल सज्जित ❀ शब्द अघात दमाम सुबज्जित
भांति भांति बैरख फहराने ❀ राजहंस जिमि गगन उड़ाने
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❀ क्षत्री सकल क्रोध करि धाये
महारथी सब बड़े धनुर्द्धर ❀ सम्मुख जुरे गहे कर धनुशर
ऐसे बिशिख बृष्टि शर कियऊ ❀ शरके छांह भानु छिपिगयऊ
कोउ भट शेल शूल परिहारहिं ❀ कोऊ खड्ग शीशपर मारहिं
गदा अपर मुद्गर कर लीन्ह्यो ❀ ताते मारु भयंकर कीन्ह्यो
कोउ भूप गहि खञ्जन चोखे ❀ बाहत जहां रहत नहिं मोखे
तब सहदेव खड्ग निजकरधारि ❀ धर्मराजहित हतत सैन्यअरि
छत्र समेत बीर सुतअन्धहि ❀ भृकुटी सहितकाटगजकन्धहि
दो० यहिबिधिते सहदेव रण, कीन्हेउ गीधमशान ।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबान ॥
लघुसंधान बिशिख त्रय मास्यो ❀ ते सहदेव फेरि परतास्यो
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी ❀ लागे करन युद्ध अति भारी
सप्त नराच निशित कर लीन्हेउ ❀ ते शर बिद्धि मौलिपर कीन्हेउ
जयद्रथ नृपरु नकुल ते भारथ ❀ दो भट करत महापुरुषारथ
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो
द्विभट सरस लागे शर मारन ❀ जूझे सैन्य सहस्र अपारन
द्रोण आप रथ हांकि चलायो ❀ श्यामध्वजा रथ शोभा पायो
बर्षहिं बाण सकै को भाखन ❀ पाण्डव दल जूझे तब लाखन
यहिबिधिकृतबहुसैन्यनिकन्दन ❀ आगे भये सुभद्रानन्दन
गुरु के चरण प्रणाम जनायो ❀ एक बार शत बाण चलायो
सहसबिशिख औरौ कर लीन्हे ❀ ताते निकर सैन्य बध कीन्हे
दो० अभिमनु रण यहिबिधिकियो, सेना बध्यो अनन्त ।
मारेउ तीक्षण बाण ते, मतवारे मयमन्त ॥
द्रोणसुगुरु निज तेज सँभास्यो ❀ अभिमन्युउर बिंशतिशरमास्यो
अर्जुन सुत कृत शरसंधानहि ❀ द्रोणललाट हन्यो दशबानहि

यहिंबिधिकरतसमरअतिकरणी ❋ अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी
महारथी सब अपने घातहिं ❋ क्रोधित करनलगे शरपातहिं
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े ❋ हांक देत हरि हांकत घोड़े
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा ❋ पीत बसन तन शोभा पावा
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ❋ भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ
बासर पञ्च कियो संग्रामहिं ❋ सबमिलिकुशलगयेतुमधामहिं
होइहै आजु महाबल भारथ ❋ पारथ समुझि करो पुरुषारथ
कृष्ण देव रण को चित दीजे ❋ पाण्डुबंश की रक्षा कीजे

दो० यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छांड़्यो तीक्षण बान ।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित बाजि हनुमान ॥

चारिबिशिख यहिभांतिपँवार्यो ❋ नन्दिघोष हयघोष सुकार्यो
क्रुद्धि बिजयनर धनुकरलीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि भीषम पर कीन्ह्यो
असी बाण उर मध्य सुबेध्यो ❋ अष्टबिशिखअश्वनतनशोध्यो
दश शर सारथि के उर दयऊ ❋ शायक पञ्च केतुध्वज हयऊ
कोटि बिशिख सेना पर छोड़ेउ ❋ हयगज गिरे अमित रथतोरेउ
गङ्गासुत शर बर्षत कोप्यो ❋ पाण्डवचमू शरन सों तोप्यो
जूझे सुभट गिरे रण ओकहिं ❋ चढ़े बिमान चले सुरलोकहिं
जयमाला सुरकन्या डारहिं ❋ उत्तम रूप सुबेष सँवारहिं
यहि बिधि गिरे बीर सब जेते ❋ स्वर्ग भोग सुख पायो तेते
भीषम कीन्ह्यो सेन निकन्दन ❋ क्रुद्धित भयो पाण्डु को नन्दन

दो० अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि ब्यवहार ।
कुरुसेना मरिमरि पर्‍यो, क्रूर छांड़्यो संसार ॥

महायुद्ध करि सकै न बरणी ❋ लक्षण सुभट खसे हति धरणी
उठहिं कबन्ध शीश बिनु धावहिं ❋ खड्ग पाणिगहि मारण आवहिं
यहिबिधि कीन्ह्यो समरभयंकर ❋ मुण्डमाल बहु लीन्ह्यो शंकर
भीषम कह्यो धनंजय सुनहू ❋ अब मेरो पुरुषारथ गुनहू
यह कहि नारायणशर लीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो

बिद्युतइवशर कियो प्रकाशहि ❁ कोटितरणिजिमिउयोअकाशहि
देवलोक सब देखि डेरान्यो ❁ पाण्डव दल देखत भय मान्यो
बाणउदोतभयो अतिकेहिबिधि ❁ प्रलयकालबड़वानलजेहिबिधि
कुपितगङ्गसुत बिशिखचलायो ❁ डाटिहांक यहि भांति सुनायो
पाण्डव बंश न एक उबारौं ❁ सेना सहित सबै भट मारौं
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❁ पारथ सों भाष्यो बनवारी

दो० सब मिलिकै अस्त्रहि तजौ, तब पावहु जियदान ।
तीनि लोक नाशिय सकै, यह नारायण बान ॥

अर्जुन तुमहिं हमारी आनहिं ❁ त्यागकीजिये अब धनु बानहिं
यहि बिधिते माधव जब टेर्‍यो ❁ अर्जुन धनुष डारि मुख फेर्‍यो
श्रीहरि आपु कहन अस लागे ❁ पाण्डवदल सब सुनहु सभागे
डारहु अस्त्र गहरु जनि लावहु ❁ बदन फेरि मुख पृष्ठि देखावहु
आपु कृष्ण यहि भाँति पुकार्‍यो ❁ सहित नरेश अस्त्र सब डार्‍यो
बिन अस्त्रन क्षत्री नहिं मारहिं ❁ बिमुख भये शर नहिं संहारहिं
रणमें सबहि देखि शर आयो ❁ अस्त्र हाथ काहुहि नहिं पायो
भीमअस्त्र त्यागन नहिं कीन्हे ❁ सन्मुख रह्यो गदा कर लीन्हे
श्रीपति कह्यो भीम के आगे ❁ यह हठ तजो हमारे मांगे
कह्यो भीम सुनिये जगतारण ❁ कादरबचनकहिय क्यहिकारण
भारत में इतनो यश लेहौं ❁ प्राण देउँ पै पीठि न देहौं
अस्त्र गहे भीमहि तकि पायो ❁ प्रबल बाण संहारण आयो
बाण तेज महिमण्डल छायो ❁ नन्दिघोष हरि तजिकै धायो

दो० पृष्ठिन दीन्हेउ पाण्डुसुत, जान्यो निपट निदान ।
भीमहि राख्यो पेटतर, शर लीन्हो भगवान ॥

अपनो तेज आपु प्रभु लीन्ह्यो ❁ यहिबिधिबाणनिवारणकीन्ह्यो
ज्यहिबिधि धेनु बत्स पर धावै ❁ प्रीति पाइकै जठर लगावै
त्यहिबिधितेभीमहि प्रभुराख्यो ❁ जयजयशब्द बिबुधगण भाख्यो
पाण्डवदल देखत सुख मान्यो ❁ तब भीषम यहि भांति बखान्यो

साधु साधु श्रीपति गिरिधारी ❋ पाण्डुवंश के रक्षाकारी
कुन्ती सुदिन बालकन जायो ❋ हरि से हितू जगत में पायो
भीषम बचन सुनत सुख पाये ❋ तब हरि नन्दिघोष पर आये
धनुष बाण अर्जुनकर लीन्हे ❋ बाणवृष्टि हरि ऊपर कीन्हे
पञ्च विशिख भीषम कर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर दीन्हे
करगहि पारथ शरहि निकारे ❋ दशसहस्र रथ भीषम मारे

दो० शंख शब्द करिकै चले, सबै आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सेन विश्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

धर्मराज कछु कहन सुलागे ❋ मधुर बचन मोहन के आगे
भीषम कीन्ह्यो सेन सँहारण ❋ केहिबिधियुद्धकरिय जगतारण
नारायण शर भीषम मारयो ❋ मरत भीम प्रभु आपु उबारयो
बरु बन जाय तपस्या करिये ❋ भीषम के सन्मुख नहिं लरिये
अर्जुन कह्यो नृपति सुनिलीजै ❋ नितहिं शोचक्यहिकारणकीजै
सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो ❋ कथा पुरातन पारथ भाख्यो
पारिजात सतिभामहि दीन्ह्यो ❋ रुक्मिणिसुनतगहरुमनकीन्ह्यो
वाते सरिस पुष्प जब पावौं ❋ तब निजनाथहि बदन देखावौं
कह्यो कृष्ण अर्जुन सुनिलीजै ❋ आपु गमन कदलीबन कीजै
पुष्प सुगन्धराज लै आवहु ❋ धावहु तुरत गहरु जनि लावहु

दो० कसि निषङ्ग कोदण्डगहि, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
कदली बन पहुँचे तबै, उदित होतही भान ॥

पुष्प सुगन्ध देखि जब पायो ❋ तब पारथ तोड़न मन लायो
बानर चारि रहे तहँ रक्षक ❋ धाय कह्यो हनुमत परतक्षक
मनुज एक लीन्हे धनु बानहिं ❋ तोरत पुष्प मनो नहिं मानहिं
यह सुनि हनूमान चलि आयो ❋ क्रुद्धित तासों बचन सुनायो
अरे किरात चोर अपकारी ❋ यमपुर की इच्छा तैं धारी
नित क्रम हम पूजा मनलावहिं ❋ श्रीरघुबीर के शीश चढ़ावहिं

अर्जुन सुनत क्रोधजिय कीन्ह्यो ❀ यहिविधि ते प्रतिउत्तर दीन्ह्यो
तरु शाखा शाखा पर डोलत ❀ मर्कट झूठ समुझिनहिं बोलत
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत ❀ तिनको मैं नीको करि जानत
किये रहे शारँग कर धारण ❀ कपिपषाण ढोये क्यहि कारण

दो० शरते शारँग बांधिकै, जाइ सके नहिं पार ।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन बिचार ॥

हनूमान यहि भांति बखानत ❀ अधमकिरात रामनहिंजानत
जिन मारेउ रावण दशकन्धर ❀ कुम्भकरणजिन बध्यो धनुर्द्धर
बालि मारि सुग्रीव नेवाजा ❀ लङ्का कियो बिभीषण राजा
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे ❀ दलको भार सही शर कैसे
अर्जुन कह निज तेज सँभारौं ❀ सब संसारहि पार उतारौं
बांध बांधिकै मोहिं देखावहु ❀ तोपै प्राणदान तुम पावहु
पवनतनय इमि बचन सुनाये ❀ दोऊ बीर सिन्धुतट आये
जैसे मधुमाखी गण छाये ❀ यहिबिधि पारथ बाण चलाये
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाड्यो ❀ शत योजन बाणनते पाट्यो
हनूमान मन बिस्मय मान्यो ❀ नहिं किरात अपने उर आन्यो
है कोई यह बीर महाबल ❀ कपटरूप कीन्ह्यो मोते छल

दो० मोरे भारते शर चलैं, तौ त्वहिं बधौं निदान ।
भार रहै दृढ़ सिन्धुमें, करि निज सखा प्रमान ॥

अर्जुन कहा बांध जो टूटै ❀ तौ मेरी परतिज्ञा छूटै
क्षणक रहो यहि भांति जनायो ❀ हनूमान उत्तर दिशि धायो
रोम रोम में शैल सुबांधे ❀ कछुक अग्र कछु लीन्हो कांधे
यहिविधि रूप भयंकर कीन्ह्यो ❀ धरणिअकाशपरतनहिंचीन्ह्यो
रबि छपिगयो भई अँधियारी ❀ योजन सहस देह बिस्तारी
अर्जुन अन्धकार जब देख्यो ❀ अपने जियअचरजकरि लेख्यो
धुंधि मिट्यो तन देखन पायो ❀ रबिमण्डल में शीश लगायो
रूप भयंकर देखि डेरान्यो ❀ सूखे प्राण बिकल अकुलान्यो

कौन कुबुद्धि मोहिं विधि दीन्ह्यो ❀ हनूमान ते सरबरि कीन्ह्यो
परमभक्त जग में बलभारी ❀ जाके प्रभु रघुपति धनुधारी
जिमि पिपीलिकहि पर है आवै ❀ परे दीप महँ प्राण गँवावै

दो॰ पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश ।
सुमिरणकीन्हेउ ज्ञानकरि, तुमराखहु जगदीश ॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❀ यहिअवसर प्रभु होहु सहायक
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो ❀ परमभक्त दोऊ अरुझान्यो
हनूभार बसुधा नहिं सहई ❀ शरको बांध कहो किमि रहई
जो हनुमान जीतिकरि पावहिं ❀ पारथ को यमलोक पठावहिं
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई ❀ जाते रहैं दोऊ सरसाई
कमठरूप जल भीतर कीन्ह्यो ❀ शरके हेठ पृष्ठ प्रभु दीन्ह्यो
अरे शबर सुनु बचन हमारो ❀ धरत चरण अब बांध सँभारो
अर्जुन तब सहसा करि भाख्यो ❀ जाहु निशङ्क बांध मैं राख्यो
सुनि हनुमत अतिक्रुद्धित भयऊ ❀ आय पांव शर ऊपर दयऊ
दबी पृष्ठ हरि कपि के भारहि ❀ मुखते चली रुधिर की धारहि

दो॰ अरुणवर्णसागर निरखि, कीन्हो हनू बिचार ।
ऐसो को संसार मों, सहै मोर जो भार ॥

ज्ञानदृष्टि धरि ध्यान लगायो ❀ शर के तरे देखि प्रभु पायो
कूदि हनू तट कियो पयानो ❀ त्राहि त्राहि यह भेद न जानो
मैं पशु मूढ़ अकर्महि कीन्ह्यो ❀ हरिके शीश चरण निजदीन्ह्यो
कामरूप छांड्यो बनवारी ❀ आपु भये तब शारँगधारी
हनुमत सों प्रभु कहन सो लागे ❀ दोऊ भक्त तुम परम सभागे
प्रीति बिचारहु छांड़हु रोषहि ❀ क्षमा करहु पारथ के दोषहि
यहिबिधिहरि मिलापकरिदीन्ह्यो ❀ आपु गमन द्वारावति कीन्ह्यो
हम लै आयो सुमन घनेरो ❀ सब दिन प्रभु राख्यो प्रण मेरो
अर्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं ❀ आपु शोच कीजै केहि काजहिं
दृढ़ ह्वैके रण को मन लैये ❀ मारि शत्रु यमलोक पठैये

दो० मनबचक्रमजो हरि भजै, तजै और की आश ।
सबलसिंह चौहान कह, नाहिंनभक्त बिनाश ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

प्रात होत कीन्ह्यो असवारी ❀ साजै सैन्य महाबल भारी
दोउ कटक बहु बाजन बाजत ❀ गहे अस्त्र क्षत्री गलगाजत
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❀ मारु मारु करि सन्मुख आये
चतुरङ्गिणि सेना रण जूझ्यो ❀ क्रुद्धितअमितबिशिखसबछूट्यो
शेल त्रिशूल अरुशक्तिन मारहिं ❀ मुद्गर गदा शीश पर डारहिं
कोउ तहँ भये कटारिन मारहिं ❀ गिरत अन्त महि गिरे करारहिं
शर धारा गजदन्तहिं लागै ❀ चिनगी उठि बहु पावक जागै
पायक हाथ खड्ग लै फेरत ❀ मारत मारु मारु धुनि टेरत
दोऊ कटक लगे संग्रामहिं ❀ कुरुपति धर्मराज के कामहिं
मूशल घाव मारि शिर फोरहिं ❀ जूझि परे मुख नेकु न मोरहिं

दो० सेनासब यहिबिधि लरै, करै भयंकर मारि ।
महारथी रण हांकदै, भिरे प्रचारि प्रचारि ॥

महाबीर अतिबल शर शोधहिं ❀ हृदय खण्डि धरणी शर बेधहिं
भीमसेन बहु बिशिख पँवार्‌यो ❀ छादित शर भारत महि कार्‌यो
लखि कलिङ्ग क्रोधितहोइधायो ❀ महामत्त गज लक्षण आयो
सौ बान्धव कलिङ्ग के साथी ❀ औ नवलाख महाबल हाथी
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं ❀ शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं
लागत क्षत अतिकोप बढ़ायो ❀ रथते उतरि गदा गहि धायो
गदा घाव गज मस्तक फोर्‌यो ❀ पाँयन ते अनेक रथ तोर्‌यो
नृपकलिङ्ग कीन्ह्यो दृढ़ ठानहिं ❀ भीम अङ्ग मारेउ दश बानहिं
अपरबिशिखत्रयअतिबलकीन्ह्यो ❀ ते शर बिद्धशीश पर दीन्ह्यो
भीमसेन परतिज्ञा भाखत ❀ रे कलिङ्ग अबको तोहिं राखत
गदापवन ते सबहिं उड़ायो ❀ सेन सहित सब नभ पहुँचायो
हैं नव लक्ष संग तव हाथी ❀ सकल करौं तारागण साथी

दो० भीमसेन है नाम मम, जग परतज्ञ प्रमान ।
यहमिथ्या नहिं जानिबो, कोटि आन भगवान ॥

अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ ❀ भीम अंग प्रविशत सो भयऊ
अरु बनबास पवनगण छाये ❀ गदा बैठि निज भाव जनाये
धाये भीम गदा कर फेरत ❀ उड़े गयन्द महौ तड़ गेरत
पवनको तेज अकाश समाने ❀ ज्यों बबूर के पत्र उड़ाने
कुञ्जर सबै गगन मों लागे ❀ कौतुक छोंड़ि देव सब भागे
योजन एक सेन जो खायो ❀ गदा पवन ते सेन उड़ायो
कौरवदल देखत दुख मान्यो ❀ कालसमान भीम को जान्यो
पकरि शुगड गज मत्त चलाये ❀ ते कुञ्जर लङ्का पहुँचाये
अभिरे कनक कोटि शिर फूट्यो ❀ सहितभुशुगड दशन सब टूट्यो
बहुतक परे सिन्धु के धारहिं ❀ पकरिमत्स्यसबकरहिंअहारहिं
रबिमगडल मो जो पहुँचायो ❀ अजहूंफिरत गिरन नहिं पायो

दो० भीम भयंकर गज घने, फेंकै यहि व्यवहार ।
भारत के संग्राम में, कियो सिन्धु के पार ॥

देखत द्रोण क्रोध तब कीन्ह्यो ❀ रहुरहु भीम हांक तब दीन्ह्यो
सहस बाण उर मध्य सो मार्‍यो ❀ शरते तन जर्जर करि डार्‍यो
शायक छूटे जात न जाने ❀ कवच भेदि शर अङ्ग समाने
लघु संधान द्रोण शर मार्‍यो ❀ अपने रथहि भीम पगु धार्‍यो
लैकरि धनु दश साधेउ शायक ❀ द्रोण शरीर हनेउ बलशायक
नकुलहि और जयद्रथ भारथ ❀ दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ
शकुनी अरु सहदेव लराई ❀ महायुद्ध कीन्ह्यो प्रभुताई
द्रोणपुत्र अभिमन्यु संग्रामहिं ❀ सरसबिशिखछांड़तरणधामहिं
ऐसे शर क्रुद्धित है जोरहिं ❀ मनुज कहा पर्वत कहँ फोरहिं

दो० षष्टिबाण अभिमनु हते, कीन्ह्यो स्यन्दन भङ्ग ।
ध्वजा सहित वैसारथी, मारे चारि तुरङ्ग ॥

कीन्ह्यो अपर रथहि असवारी ❀ सहस बाण जोरे धनुधारी

अर्जुनतनय बिशिखअसजोरयो ❋ द्रोणीशर निजशरनते तोरयो
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहिं ❋ जुरे बीर अपने जयकामहिं
बासुदेव रथ कियो पयानो ❋ भीषम के सन्मुख लै ठानो
दोऊ बीर महा धनुधारी ❋ लागे करन भयानक मारी
दिव्य बाण अर्जुन तब मारयो ❋ सहस पैग पाछे रथ टारयो
भीषम कह्यो धनञ्जय सुनिये ❋ अब मेरो पुरुषारथ गुनिये

दो० श्रवणमूल आकर्षि धनु, हन्यो बिशिख समरत्थ ।
तीनि पैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो ❋ साधु बचन यदुनाथ सुनायो
अर्जुन कह सुनिये गिरिधारी ❋ मम उर यह संशय है भारी
ममयहिबिधिनिजबिशिखचलायो ❋ सहसपैग रथ को बिचलायो
तीनि पैग मेरो रथ आयो ❋ साधु बचन केहि काज सुनायो
हँसि भाष्यो तब शारँगपानी ❋ पारथ तुम यह चरित न जानी
ज्यों सब बिबुध गगनमो अहहीं ❋ ते सब नन्दिघोष महँ रहहीं
मेरु समान भार हनुमानहिं ❋ जगन्नाथ करि मोहिं बखानहिं
ऐसो रथ शर टारयो पारथ ❋ भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ
अर्जुन सुनत सत्य करि जान्यो ❋ महाक्रुद्ध ह्वै कार्मुक तान्यो
धाये बाण तेज अति पायल ❋ ताते भे गङ्गासुत घायल
अष्ट बाण ते हत्यो तुरङ्गहिं ❋ पुनित्रयबिशिखसारथीअङ्गहिं

दो० कोटि बाण अर्जुन तज्यो, कीन्हो लघुसंधान ।
चारि लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझेउ लागत बान ॥

अर्जुनयहिबिधिअतिबलकरयो ❋ भीषम कोपि धनुष कर धरयो
असी बाण अर्जुन उर मारयो ❋ गजरथ हय पदाति संहारयो
यहिबिधि करहिं युद्ध की करणी ❋ जूझहिं बीर परहिं रणधरणी
भीषम कियो सरिस प्रभुताई ❋ नरके शीश मेदिनी छाई
एकबिशिख यहिबिधिते जोरयो ❋ ताते पारथ को गुण तोरयो
तबकपिध्वजनिजधनुगुणदीन्ह्यो ❋ पारथ हर्षि धनुष कर लीन्ह्यो

गङ्गासुत तब समय बिचारयो ❀ दश सहस्र स्यन्दन तब मारयो

दो० शंखध्वनि करिकै चले, सकल आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कह, भारत के संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये ❀ दुर्योधन तब भीष्म बोलाये
सुनहु पितामह बचन कहौं बर ❀ तुमते कोउ नहिं बड़ो धनुर्द्धर
सप्तदिवस रणकृत जयहित यह ❀ पाण्डवक्षेम सहित गये निजगृह
यह कलङ्क नहिं मिटै तुम्हारो ❀ जो न प्रात दल पाण्डव मारो
सुनत क्रोध तन भीषम बाढ्यो ❀ तीक्ष्णशर निषङ्गते काढ्यो
महाकाल शर नाम कहावै ❀ इन्द्रबज्र नहिं पटतर पावै
यहि शर ते पाण्डव दल मारौं ❀ तब अपने भवनहिं पगु धारौं
दुर्योधन सुनिकै सुख मान्यो ❀ जीत्यों युद्ध चित्त में जान्यो
तम्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो ❀ तामहँ बास पितामह कीन्ह्यो
धर्मराज बन्धुन सँग गयऊ ❀ युत कमलापति निज गृह गयऊ

दो० सभामध्य बैठे सकल, द्रुपद बिराट नरेश ।
मधुर बचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश ॥

प्रात युद्ध होइहै केहि रूपहि ❀ मन्त्री कहहु भेद सब भूपहि
हँसि सहदेव कही सुनु स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तर्यामी
महाकाल शर भीषम राख्यो ❀ पाण्डव बद्ध प्रतिज्ञा भाख्यो
द्वारहि बस्यो गयो नहिं धामहिं ❀ समुझि कीजिये श्रीहरि कामहिं
सुनत युधिष्ठिर बिस्मय मान्यो ❀ बन्धुन सहित मुये यह जान्यो
कहो कृष्ण नृप शोच न करिये ❀ मेरो मन्त्र चित्त निज धरिये
अर्जुन को मेरे सँग दीजे ❀ छलकरि महाकाल शर लीजे
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो ❀ किमि तुम वह शर पैहो केशो
कमलनयन नृपको समझायो ❀ जब तुम सब बनबास सिधायो
काम्यकबन पर्णशाला छाये ❀ दूत आनि कुरुनाथ जनाये

दो० पाण्डव बनमों हैं निकट, बचन सुनो कुरुनाथ ।

सकलकटक सँगलैचलो, भीष्म द्रोण निज साथ॥
गोधन धन देखन मनलायो ❋ यहै आगमन सबहिं सुनायो
सुरगण सब जान्यो यह कारण ❋ कुरुपति जात पाण्डवन मारण
सुरपति कह्यो चित्ररथ धावहु ❋ दुर्योधनहि बांधि लैआवहु
आज्ञालै चढ़ि चलो बिमानहिं ❋ कटिनिषङ्ग लीन्हो धनुबानहिं
गन्धर्ब राय आइ तब हांक्यो ❋ चकित सबहिं गगनमुख ताक्यो
यहि बिधि बाण बुन्द झरिलायो ❋ मारि सबै सेना बिचलायो
अतितीक्षण गन्धर्ब शर लाग्यो ❋ धनुगुणकट्यो करण तब भाग्यो
नागफांस शर यहि बिधि सांध्यो ❋ बलते गहि दुर्योधन बांध्यो

दो० अपने रथकरि लै चल्यो, गगनपन्थ मो गौन।
त्राहि त्राहि टेरयो बिकल, सुन्यो युधिष्ठिर बैन॥

यह तो है दुर्योधन भ्राता ❋ अपकारी गन्धर्ब लिये जाता
अर्जुन कर कोदण्डहि धरिये ❋ बन्धनमुक्त बन्धुको करिये
भीम कही नृप चुप करि रहिये ❋ भूलि बात क्यहि कारण कहिये
गन्धर्ब कियो हमारहि कामहिं ❋ चलहु राज कीजै सुखधामहिं
धर्मराज कह सुनिये पारथ ❋ आज्ञा मानि करहु पुरुषारथ
यह सुनि अर्जुन धनु कर लीन्ह्यो ❋ शायकबृष्टि अकाशहि कीन्ह्यो
शरते रथ रोंक्यो दिबि धामहि ❋ गन्धर्ब उर मारयो दश बानहि
मनहिं बिचार चित्ररथ कीन्ह्यो ❋ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्ह्यो
पारथ तब इमि शायक साध्यो ❋ भूमि अकाश बाणते बांध्यो
दुर्योधन शरपर चलिआयो ❋ धर्मराज को दर्शन पायो

दो० लज्जितह्वै यहिबिधि कह्यो, अर्जुन राख्यो प्रान।
जो इच्छा सो मांगिये, कहत सुबचन प्रमान॥

पारथ कही सत्य दृढ़ कीजै ❋ समय परे मांगे बर दीजै
कुरुपति कह आजुइ बरलीजै ❋ अर्जुन को मेरे सँग दीजै
हरि अर्जुन कीन्ह्यो तब गवनहि ❋ आये दुर्योधन के भवनहि
कह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये ❋ सुनहु किरीटी यह मत कहिये

मुकुट मांगि नृपसों लै आवहु ❀ तब भीषम पहँ आपु सिधावहु
तब अर्जुन आयो नृप द्वारे ❀ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे
दुर्योधन सुनि तुरत बोलायो ❀ अन्तःपुरमहँ कपिध्वज आयो
आदर करि आसन बैठारे ❀ कहहु बन्धु क्यहि काम सिधारे
अर्जुन कह कुरुपति के आगे ❀ पावहुँ आजु पूर्ववर माँगे
मुकुटदान माणि भूपति दीजै ❀ अपनी सत्य पालनो कीजै
मन गोविन्द सुनत सुख पायो ❀ दीन्ह्यो मुकुट गहरु नहिं लायो

दो॰ मुकुट बांधि पारथ चले, भीषम के अस्थान ।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधन के जान ॥

भीषम कह्यो जानि कुरुराजहि ❀ आपुगमनकीन्ह्योक्यहिकाजहि
मांगे महाकाल शर दीजै ❀ निजकर हम पाण्डव बध कीजै
हँसि भीषम दीन्ह्यो तब बानहिं ❀ प्रात युद्ध कीन्ह्यो संधानहिं
हर्षवन्त है अर्जुन लयऊ ❀ यहि अवसर प्रगटत प्रभु भयऊ
कृष्णहिं देखि भयो छल जान्यो ❀ गङ्गासुत यहि भांति बखान्यो
हे प्रभु तुम पाण्डव के स्वारथ ❀ मेरो प्रण किमि कियो अकारथ
भारत में यश नेक न पायो ❀ नितप्रति तुम पारथहिं बचायो
शिवसनकादिकअन्त न जान्यो ❀ तुम पाण्डव के हाथ बिकान्यो
भक्ति हेतु केशव मन भायो ❀ बिना भक्ति प्रभु को नहिंपायो
कह्यो कृष्ण भीषम के आगे ❀ यश पैहौ रण सरस सभागे

दो॰ अपनो प्रण मैं टारिकै, तवप्रणकरौंनिदान ।
भक्तिबिबशलखिप्रकटकह, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो ❀ पारथ धर्मराज पहँ आयो
जिमि चातकमुखस्वातीबरष्यो ❀ बाण देखि पाण्डव दल हरष्यो
दुर्योधन सुनिकै दुख मान्यो ❀ प्रात होत रण कियो पयान्यो
हर्षितहोइ पाण्डव दल साजहिं ❀ भेरि दुन्दुभी मारू बाजहिं
दल चतुरङ्ग साजिकै आयो ❀ युद्धभूमि में शोभा पायो

प्रथम पेलिदीन्ह्यो गजमत्तहि ❀ गज रिपुदंति भयो चौदन्तहि
पदचर घाये बहुधा दमकै ❀ फेरत फरी खड्ग कर चमकै
चढ़े तुरङ्ग शेल कर लीन्ह्यो ❀ महामारु असवारन कीन्ह्यो
मारत शूल सजोवा टूटहिं ❀ वाहत घाव खड्ग शिर फूटहिं
मुरै न लरै खेत मो ठाढ़े ❀ महाशूर सब जिय के गाढ़े
रथी रथी करिबे रण लागे ❀ चलत न एक एक के आगे

दो० महारथी रण हांकदै, करहिं युद्ध यहि रूप ।
जोर जोर अरुझै सबै, भिरे भूपसों भूप ॥

सहस लाख कोटिन शर छूट्यो ❀ बाणन बाण बीचही टूट्यो
यहि बिधि युद्ध करैं रण सरसैं ❀ बहुबिधि बाण बुन्दसम बरसैं
काढ़हिं धनुष क्रोध कै रण में ❀ बाहे शेल हांक दै रण में
रथ ते उतरि गदा लै धावहिं ❀ आगे परहि सो मारि गिरावहिं
तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ❀ शक्ति शेल मुद्गर कर मारहिं
जूझि गिरे भारत रण धावहिं ❀ आनन्दित चढ़ि चले बिमानहिं
अर्जुन रथ हांक्यो कंसारी ❀ जोती गहे पिताम्बरधारी
श्यामशरीर कमलदललोचन ❀ सदा भक्तकर शोचबिमोचन
नन्दिघोष रथ आगे आयो ❀ तब भीषम यहिभांति जनायो
मुकुट बांधि कीन्हो मोसों छल ❀ आजु जानिबो पारथ को बल
जो हरि के कर अस्त्र गहावों ❀ तो शन्तनुसुत जगत कहावों

दो० धर्मराज कुरुपति सुन्यो, भीषम भाष्यो बैन ।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनों सैन ॥

गङ्गा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यों ❀ तो यह प्रण भारत में कीन्ह्यों
प्रभु को प्रण टारों परतक्षक ❀ आजु करों अपनो प्रणरक्षक
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलायो ❀ शोणित नदी अथाह बहायो
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों ❀ तो मैं बास अधोगति पावों
कठिन बाण शारँगगुण जोस्यो ❀ शरसागर पाण्डवदल बोस्यो
भीषम यहि प्रतिज्ञा ठान्यो ❀ दोदलअतिअचरजकरिमान्यो

यह सुनि देवलोक सब धाये ❀ कौतुक को बिमान सब छाये
प्रथम कियो है प्रण जगतारण ❀ हम नहिं करैं धनुष कर धारण
प्रभु पारथ को सारथि अहई ❀ भीषम अस्त्र गहावन कहई
यह चरित्र देखत सब मुनिगण ❀ रणमों आज रहै काको प्रण
दो० भीषम तब यहिबिधिकह्यो, करिहौं युद्ध अनन्त ।
पारथ रण आस्थिर रहौ, सारथि श्रीभगवन्त ॥
यह कहि लगे चलावन शायक ❀ दोऊ भट रणमहँ सब लायक
अर्जुन बाण हाथ ते छूटहिं ❀ मानहुँ वज्र गगन ते टूटहिं
लघु संधान कियो तब पारथ ❀ निजशायक छायो सब भारथ
दशदिशि सब बाणनमय सूझै ❀ निज पर नाहिंन कोऊ बूझै
यहिबिधि शर अकाशमें छायो ❀ रविमण्डल देखन नहिं पायो
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ़्यो ❀ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ़्यो
ऐसे सबल बाण गुण जोरे ❀ क्षण महँ अर्जुन के शर तोरे
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो ❀ पाण्डवदल बाणन ते तोप्यो
बीर सकल शर छांह समाने ❀ दृष्टि न परत जात नहिं जाने
क्रुद्धित यहिबिधि कृतसंधानहिं ❀ जलथल सूझिपरत सबबानहिं
दो० महाघोर संग्राम मों, अर्जुन धनु सन्धान ।
सबशरकाटे निमिषमों, तमखण्ड्योजिमिभान ॥
अर्जुन पाणि निशित शर छूटत ❀ भेद सनाह बपुष महँ फूटत
सारथि उर शत शायक मारे ❀ बिंशति बिशिख केतुध्वजपारे
अश्वनतनु यहिबिधि शरलागे ❀ थकितभये पगचलत न आगे
लक्ष नराच कटक पर डार्‌यो ❀ ते शर चोट मौलि अनुसार्‌यो
तब भीषम निजतेज सँभार्‌यो ❀ सहस बाण अर्जुन उर मार्‌यो
कोटि बिशिखलाग्योहनुमानहिं ❀ षष्टि नराच हन्यो भगवानहिं
गङ्गतनय शर अपर सुजोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे
शर अनेक सेना पर प्रेरो ❀ पाण्डव कटक हत्यो बहुतेरो
दो० सहस एक राजा गिर्‌यो, सेन सुबध्यो अनन्त ।

अरुण बरण सब देखिये, खेलत मनहुँ बसन्त ॥
भीषम अमित तेज महि साच्यो ❀ रुण्ड मुण्ड महि भारत माच्यो
महाशूर रण जूझत घायल ❀ मनहुँ नाद मोहे करसायल
यहिविधि कृतअतिरणभयकारी ❀ अर्जुन सों तब कह्यो मुरारी
अब अपनो दल रक्षन कीजै ❀ दृढ़ ह्वै शर कोदण्डहि लीजै
सुनि पारथ लीन्ह्यो करधनुशर ❀ प्रात समय जनु उदय दिवाकर
अति क्रुद्धित ह्वै कृत संधानहिं ❀ हृदय ताकि मार्यो बहुबानहिं
भेदि सनाह अङ्ग में लाग्यो ❀ क्रोधअनल उर अन्तर जाग्यो
भीषमविशिखनिशितअतिछूट्यो ❀ अर्जुन बपुष भेदिकै फूट्यो
घायल भयो सह्यो सब बानहिं ❀ ब्रह्मअस्त्र तब कृत संधानहिं
बाण उदोत तेज महि छायो ❀ देवलोक लखि अतिभय पायो
दो० पारथ अतिशय बल कियो, कृष्णअस्त्रसन्धान ।
चलत तेज अति उदित कृत, मनहुँ दूसरो भान ॥
कौरवदल अति देखि सकान्यो ❀ भीषम ब्रह्म अस्त्र संधान्यो
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण ❀ तब लाग्यो तीक्षण शर मारण
अयुत बाण हनुमन्तहि मार्यो ❀ गरुड़ध्वज तनु सहस प्रहार्यो
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मार्यो ❀ शरते तनु झांझर करि डार्यो
सहित बाजि स्यन्दन करिघायल ❀ थकितभये पदचलत न पायल
भीषम बाणवृष्टि अति लायो ❀ नन्दिघोष रथ शर ते छायो
तीक्षणबाण श्याम उर मार्यो ❀ पीतबसन रँग अरुण सँवार्यो
क्रुद्धित जलज नयन रतनारे ❀ चक्रपाणि कर चक्र सँवारे
रथ ते उतरि चले नारायन ❀ धाये आप उघारे पांयन
सजल श्यामघन अङ्ग सुहायो ❀ मर्कतमणि पटुतर नहिं पायो
मकराकृत कुण्डल मन मोहै ❀ डोलत झलक कपोलन सोहै
दो० गहे चक्रधर चक्र कर, चकृत चाहत खेत ।
चञ्चल धावनि बरण की, भीषम के प्रण हेत ॥
करमें चक्र सुदर्शन राजत ❀ कोटिभानु द्युतिसरिस बिराजत

श्रमजल रुधिर चलतयकसङ्गहि ❋ शोभित अङ्ग अनूपम रङ्गहि
बिश्वम्भर क्रुद्धित है धायो ❋ भूमि चली फण शेष उठायो
यहिबिधिप्रभुआतुरकियगवनहिं ❋ फहरतपीतवस्त्र लगिपवनहिं
गिस्यो छूटि ऊपर रण धरणी ❋ कबिपै छबिकछुजात नबरणी
कौरव दल देखत सब डरप्यो ❋ मानहुँ बाज बिहँगपर फरक्यो
तब अर्जुन छांड्यो निजस्यन्दन ❋ धाइ जाइ पकस्यो जगबन्दन
अहो नाथ अस्थिर है रहिये ❋ आपु अस्त्र क्यहिकारण गहिये
मोते अघ कह भयो जगतारण ❋ कर गहि चक्र चल्यो तुम मारण
यहई अयश जगत में पायो ❋ प्रभुकर भीषम अस्त्र गहायो

दो० प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर अपमान ।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्तबश्य भगवान ॥

चरणकमल गहि पारथ फेस्यो ❋ देखि पृष्ठ गङ्गासुत टेस्यो
साधु साधु श्रीपति बनवारी ❋ सदा भक्त प्रण रक्षाकारी
धनुषडारिकर कियो प्रणामहिं ❋ अस्तुति करनलगेघनश्यामहिं
तब भीषम यहि बिधिते भाख्यो ❋ दीनबन्धु मेरो प्रण राख्यो
बिप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❋ भक्तबश्य गोपिन मन रञ्जन
गणिका व्याध गीध गजतारण ❋ गोरक्षक गोवर्द्धन धारण
ध्रुवको अचल कियो परतक्षक ❋ द्रुपदसुता की लज्जा रक्षक
महाकष्ट प्रहलाद उबास्यो ❋ निकसि खम्भ दनुजेशहि मास्यो
रावण कुल समेत बध कीन्ह्यो ❋ लङ्का राज्य बिभीषण दीन्ह्यो
शाप शिला गौतम की नारी ❋ परसत चरण अहल्या तारी

दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि, करत चरण निजध्यान ।
सबलसिंह चौहान कह, भीषम कियो बखान ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

जय बृन्दाबन बिपिन बिहारी ❋ श्रीपति श्रीधर श्रीबनवारी
चढ़े आइ हरि पारथ स्यन्दन ❋ जोती गहे आपु जगबन्दन
अर्जुन कोपि धनुष कर लीन्ह्यो ❋ इन्द्र अस्त्र संधानहिं कीन्ह्यो

कौरवदल सम्मुख जो पायो ❀ क्षण में अर्जुन मारि गिरायो
महायुद्ध कीन्ह्यो नररूपहि ❀ मार्‍यो समर पंचशत भूपहि
सोहत मुकुटन अति मणिपूरी ❀ लोटत धरणि शीश ते भूरी
लागत उर अर्जुन के बानहिं ❀ कुरुदल रणमरि खसो निदानहिं
गङ्गासुत धनु क्रुद्धित लयऊ ❀ गुडाकेशपर शरझरि कियऊ
यहिविधि लगे हनन शर तीक्षण ❀ पाण्डवदलसहसनगिरेमहिरण
दशसहस्ररथ भीष्म निखण्ड्यो ❀ भवन चलत शंखध्वनि मण्ड्यो

दो० कुरु पाण्डव फिरिकै चले, आये अपने धाम ।
धर्मराज बन्धुन सहित, संगलिये घनश्याम ॥

भोजन को सबही मनलायो ❀ द्रुपदसुता यहिभांति ज्यँवायो
धर्मराज दुर्योधन भूपहि ❀ आजु युद्धकीन्ह्यो क्यहि रूपहि
तब पारथ यहि भांति बखानहिं ❀ हरि मेरो कीन्ह्यो अपमानहिं
रण में भीषम को प्रण रह्यो ❀ दीनबन्धु रण अस्त्रहि गह्यो
द्रुपदसुता यहि भांति बखान्यो ❀ पारथ तुम यह भेद न जान्यो
सदा भक्त प्रभु रक्षा कारण ❀ ब्रह्मरूप कीन्ह्यो प्रभु धारण
शिव सनकादिक अन्त न पायो ❀ शबरी के जूठे फल खायो
महिमा अगम अगोचर मोहन ❀ डोलत सदा भक्त के गोहन
बलिराजा हनुमान सयाने ❀ चरणकमल मन मधुप लोभाने
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ ❀ भीषमजन्म भक्तमय स्वारथ

दो० धन्य धन्य ते साधु तनु, भजत साँवरे अङ्ग ।
सुखदुखसम्पति बिपतिमें, होत नहीं चितभङ्ग ॥

सुनि माधव अतिशयसुखपायो ❀ करिभोजन शयनहिं मनलायो
होत प्रभात सजैं दौ अनी ❀ बजत दमाम भई ध्वनि घनी
बीर सकल रणधरणिहिं आये ❀ बँधे अस्त्र कर धनु शर लाये
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❀ महाशूर सन्मुख ह्वै आये
लेकर धनुशर कृत संधानहिं ❀ क्रुद्धित लगे पँवारन बानहिं
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❀ आगे परे ताहि यम लीन्ह्यो

महाबीर सब बिरद सुबांधे ❀ अरुझे ठांव ठांव रण कांधे
दल चतुरङ्ग करत रण घोरहि ❀ मरडे समर जोरसों जोरहि
तेज तुरङ्ग नकुल त्यहि राज्यो ❀ अति भयदायक सङ्गर साज्यो
महारथी बहु शर हत करहीं ❀ सहस सहस भट रणमहि परहीं
भीषम पर अर्जुन रण साजी ❀ हांक देत हरि हांकत बाजी
जोती गहे पतित के पावन ❀ बर्षत शर मानहुँ जल सावन

दो० पारथ कर कोदण्ड गहि, छायो बिशिख अपार।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर बिबिध प्रकार॥

तब भीषम निजकर धनु लायो ❀ अतिशयसरिसनराच चलायो
तीक्षण बाण महारन करई ❀ पाण्डव दल बहु भट संहरई
भीषम उर निज तेज सुधास्यो ❀ सहस नरेश युद्धमहि मास्यो
बीर सबै लागे शर मारन ❀ तब आये कोते हथियारन
शूल गदा मुद्गरन प्रहारहिं ❀ सन्मुख आय खड्ग शिरझारहिं
अभिरहिं सुभटकटारिनमारहिं ❀ पकरि केश रण चपरि पछारहिं
द्रोण करण कुरुपति के साथहि ❀ यहिबिधि लरैं अस्त्र गहिहाथहि
इतते तबहिं बृकोदर धायो ❀ गदा घाव बहु मारि गिरायो
बहुतक मींजि पांव ते डास्यो ❀ बहुतक गहि अवनीपर डास्यो
अरु बहु स्यन्दन चूरण कीन्हेउ ❀ हयगज फेंकि व्योमपथ दीन्हेउ

दो० घोरयुद्ध यहिबिधि कियो, भीम भयंकर रूप।
सहित सेन रणमें बधेउ, प्रबल तीनिशत भूप॥

नन्दिघोष हांकत जगबन्दन ❀ अर्जुन कीन्हेउ सेन निकन्दन
तीक्षण बाण क्रुद्ध कै मास्यो ❀ तीनि सहस्र नृपति संहास्यो
मरि भट पस्यो धरणि सब छायो ❀ रणमें रुधिरनदी बहि आयो
शोणितनदी जाति नहिं बरणी ❀ मन अथाह हमका बैतरणी
भीमसेन गजराज सँहारे ❀ परे समर सब भये करारे
धवल छत्र चमकत हैं कैसे ❀ बादत नदी फेन जल जैसे
शक्ती झलक मीन सम चमकैं ❀ कठिन ढाल कच्छप सम दमकैं

केश स्यवार सरिस अरुझाने ❀ मृतक तुरंग ग्राह सम जाने
कटे भुशुण्डि सरिस छबि पाई ❀ मनहुँ भूमि जल में उतराई
रुधिरनदी यहि रूप भयङ्कर ❀ नाचत महा मगन है शङ्कर

दो० भैरव भूत पिशाचगण, योगिनि मङ्गलचार ।
अन्त्र लपेटहिं कण्ठ में, सरिस बिराजत हार ॥

कोऊ गजमुक्ता लै आवहिं ❀ एक एक के श्रुति पहिरावहिं
नृत्यत भूत पिशाच सयाने ❀ रुधिर मांस सब खाइ अघाने
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं ❀ मांस खाइ मनमें सचुपावहिं
गगन उड़ाहिं पक्षीगण जेते ❀ रणमें भये तृप्त मन तेते
घायल मग्न सुभये रुधिरसरि ❀ उठेसँभरि पुनि शोकसिन्धुपरि
शूरन शीशकुण्डि लै आवहिं ❀ पीवहिं रुधिर योगिनी गावहिं
उठि कबन्ध धावहिं पुनि माथहि ❀ मारन आव खड्ग गहि हाथहि
भीषम सों अर्जुन बलभारी ❀ कीन्हेउ अतिभारत भयकारी
अरुणबदन देखत दिन भूल्यउ ❀ जिमिबसन्तकिंशुकतरुफूल्यउ
भूत पिशाच सुब्याह बिचारहिं ❀ धरहिं टोप शिर मौरसँवारहिं

दो० सबलसिंह चौहान कह, अर्जुन कृत रणखेत ।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गोधन मण्डल मण्डप छायो ❀ जम्बुक सकल बराती आयो
यहिबिधिकरत कोलाहल भारी ❀ भैरव सहित देहिं करतारी
तब पारथ संधान्यउ धनु शर ❀ गङ्गासुत मारेउ उर शत शर
अरुअतिनिशितअमितशरडाथ्यो ❀ रथको ध्वजापताका काथ्यो
तब भीषम दृढ़ कर धृत धनुशर ❀ होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर
दश शायक अर्जुनतन साध्यो ❀ सप्तबिशिख यदुपति अवराध्यो
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो ❀ नन्दिघोष हय रथ छत साध्यो
लाग्यउ षष्टिबिशिख हनुमन्तहि ❀ दशसहस्र रथ तब हतवन्तहि
दै जय शंख चल्यो गङ्गासुत ❀ पाण्डवदल सब चले भवन उत

दुर्योधन सब सेना लीन्हे ❀ अपने भवन गवन तब कीन्हे
दो० धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकन्त ।
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनन्त ॥
करि बिश्राम अस्त्र सब खोले ❀ नृपति युधिष्ठिर माधव बोले
चले सकल भोजन के कामहिं ❀ बैठे द्रुपदसुता के धामहिं
धर्मराज अति वचन सुनाये ❀ कंस निकन्दन प्रभुहि जनाये
नव दिन भयो महाबल भारथ ❀ भीषम खेत सरिस पुरुषारथ
दश सहस्र रथ नितक्रम मारहिं ❀ अरु अनेक सेना संहारहिं
कह्यो कृष्ण अब कीजै गवना ❀ चलिजैये भीषम के भवना
हम तुम अरु पारथ सँग लीजै ❀ गङ्गासुत के दरशन कीजै
पूछहिं जाइ मृत्यु को कारण ❀ यहिबिधिकहतभये जगतारण
अर्जुन सहित चले तब केशौ ❀ निशाकाल उठि चले नरेशौ
आये तुरत गङ्गसुत द्वारहि ❀ धायकह्यो यहिविधिप्रतिहारहि
दो० गङ्गासुत चितदै सुनौ, कह्यो जोरि युग हाथ ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्जुन हैं साथ ॥
सुनि भीषम आतुर होइ धाये ❀ कृष्ण दरश आनन्दित पाये
धर्मराज अभिबन्दन कीन्हा ❀ हँसि भीषम अङ्कम भरिलीन्हा
होय पाण्डुसुत कुशल तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो
पुलक सहित हरिके पद परश्यो ❀ बदन चन्द्र आनन्दित दरश्यो
आदर करि आसन बैठाख्यो ❀ शीतलजल सों चरणपखाख्यो
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहि ❀ आपुगमनकीन्ह्यो केहि काजहि
धर्मराज यहि भांति जनायो ❀ बन बन फिरत महादुख पायो
कै बसीठ यदुनाथ पठायों ❀ पांच ग्राम मांगे नाहिं पायों
तब हरि रच्यो युद्ध यह भारथ ❀ नवदिन किये आपु पुरुषारथ
दश सहस्र रथ नितक्रम माख्यो ❀ सेन अनेक समर संहाख्यो
दो० आपुयुद्धयहिबिधि कर्‍यो, तौ हम छांड़ी आस ।
पञ्चबन्धु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो बनबास ॥

सुनि भीषम यहि भांति बखान्यो ❋ धर्मराज यह बात न जान्यो
जाके सदा सहायक हरि हैं ❋ सो रणमों निश्चय जय करिहैं
जहां धर्म तहँ कृष्ण सो आवैं ❋ जहां कृष्ण तहँई जय पावैं
यह सुनि कह पाण्डवदलकेतू ❋ आपु युद्ध कीजै केहि हेतू
जो हमको जय दीन्हो चहिये ❋ अपनी मृत्यु आपु ते कहिये
तब गङ्गासुत हँसिकै कहई ❋ जबलगि अस्त्र गहे हम रहई
इन्द्र आदि जो रणमों आवहिं ❋ म्वहिंते जयतिपत्र नहिं पावहिं
तुमते कहौं सुनो यह कारण ❋ सन्मुख अर्जुन सकै न मारण
होत प्रात यहि बिधिते लरिये ❋ आगे आनि शिखण्डी करिये
द्रुपद कुमार अग्र जब ऐहहिं ❋ धनुष डारि हम बदन दुरैहहिं

दो० कन्याते भयो पुरुषतन, जानत हैं सबलोग।
तातै बदन न देखिहौं, प्रथम तज्यो तियभोग॥

सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❋ जब हम अस्त्र डारिकै रहिये
और बीर के शर नहिं फूटहिं ❋ परसत अङ्ग समर शर टूटहिं
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहिं ❋ मेरे उर करिहैं शर चोटहिं
यहि बिधिते भीषम समझायो ❋ सुनिकै धर्मराज सुख पायो
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो ❋ तब भीषम माधवसन कह्यो
दीनबन्धु पारथ के स्वारथ ❋ मेरो बल तुम करत अकारथ
हे प्रभु तीनिलोक के स्वामी ❋ सब जीवन के अन्तर्यामी
अर्जुन धन्य जगत यश छायो ❋ हरिसे सखा सहजहीं पायो
यह कहिकै तब कीन्ह्यो गवना ❋ धर्मराज आये निज भवना
भीषम कह्यो मृत्युको कारण ❋ सुनिहरषित भयोअधमउधारण

दो० धर्मराज पारथ सहित, हरषित पङ्कज नैन।
अमृतभोजनसारिसकरि, सबमिलिकीन्ह्योशैन॥

प्रात होत कीन्हे असवारी ❋ साजे सेन महाबल भारी
दोऊ दल अतिक्रुद्धित साजहिं ❋ शब्द अघात दमामे बाजहिं
ठोकठोक अपनी गति बोलहिं ❋ मारत हांक पदाति सुडोलहिं

कोटिन गज साजे मतवारे ❀ बाजत घण्टा चमर सँवारे
चले सुभट सब अस्त्रन धारे ❀ क्रुद्धित भये सैन्य ते न्यारे
रणमों करहिं शत्रुको अन्तहि ❀ छनता देखि देहि भुवदन्तहि
सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्रविमान परत हैं धोखे
ध्वजा तुरंग सहस फहराने ❀ चलत तेज बांके घहराने
तेज तुरंग बीर सब चढ्यो ❀ मानहुँ विधि अपने कर गढ्यो
पांवर लगे सरिस छवि राजत ❀ तबल अपर गजगाह बिराजत
पदचर करत कोलाहल धाये ❀ खड्ग हस्त लै शोभा पाये
समरभूमि केहरि सम गाजे ❀ युद्धभूमि में सरिस बिराजे

दो० कुरु पाण्डव चतुरङ्गदल, जुरे आनि कुरुखेत ।
क्षत्रीगण सब हांकदै, शारँग गह्यो सचेत ॥

सेन गँभीर कहत नहिं आवै ❀ कहै जो कबि सो अपयश पावै
क्रुद्धित बीर लगे शर वर्षन ❀ शतते सहस सहसते कर्षन
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❀ महामारु मयमन्तहि कीन्ह्यो
जस ऐसे क्रोधित गज धावहिं ❀ आगे परहिं सो मारि गिरावहिं
महारथी सब मारहिं अत्री ❀ ध्वजा पताका काटहिं क्षत्री
बरषत बाण कहत को बैनहिं ❀ लक्षण बीर समरकृत सैनहिं
दोऊ दल कीन्ह्यो रण घोरहि ❀ परे भीम दुश्शासन जोरहि
विंशतिशर दुश्शासन लीन्ह्यो ❀ भीमअङ्ग शरभेदन कीन्ह्यो
क्रुद्धित भयो पवन के नन्दन ❀ धायो उतरि छांड़िकै स्यन्दन
लैकर गदा कोप करि धायो ❀ हांक मारि दुश्शासन आयो

दो० दोऊभट यहिविधि भिरयो, भारतभूमि प्रमान ।
कौतुक देखत देवगण, हरषितचढ़ेबिमान ॥

मारत गदा कोप करि तनमें ❀ लागत घाव शब्द जिमि घनमें
शोभित रुधिर अङ्गमें कैसे ❀ ऋतुबसन्त किंशुक तरु जैसे
भीमसेन तब तेज सँभारयो ❀ हांकि गदा उर मध्य सो मार्यो
दुश्शासन तन मोह जनायो ❀ अपने रथहि बृकोदर आयो

देखि द्रोण गुरु शर संधान्यो ❀ भीम अङ्ग शायक ठहरान्यो
तीक्ष्ण बाण षष्टि गुण जोरे ❀ घायल किये सारथी घोरे
पञ्च बाण ते तोख्यो स्यन्दन ❀ आगे भयो सुभद्रानन्दन
अभिमन्यु हाथ तेज शर छूट्यो ❀ भेदि सनाह अङ्ग में फूट्यो
एक बार सारथि शिर खण्ड्यो ❀ चारिविशिखहयहतिरणमण्ड्यो
कीन्ह्यो बिरथ द्रोण से क्षत्री ❀ अर्जुन पुत्र महाबल अत्री

दो० द्रोण अपरस्यन्दनचढ़्यो, लीन्ह्यो चाप सँभारि ।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मारि ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

भीषमदेव कहन यह लागे ❀ सारथि रथहि चलावहु आगे
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❀ तिनते रण कीजै पुरुशारथ
यह कहिकै हांक्यो रथ जबहीं ❀ असगुनभये बहुतविधि तबहीं
बोलत काक भयंकर बानी ❀ बिना मेघ बर्षत है पानी
गीध निकर कर ऊपर छायो ❀ जम्बुक अपनो भाव देखायो
उगिलहिं खड्ग छांड़िकैखापहिं ❀ रथके खम्भ पवनाबिनु कांपहिं
यह असगुन जब देख्यो नैनहिं ❀ कुरुदल कहनलगे सब बैनहिं
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो ❀ यहिबिधिते कबहूं नाहिं देख्यो
सारथि कहै गङ्गसुत आगे ❀ असगुन होन बहुत बिधि लागे
भीषम बिहँसि कही यह बानी ❀ अहो मूढ़ यह बात न जानी

दो० पारथ के सारथि अहैं, निरखहु श्रीभगवन्त ।
असगुनकछुनहिंकरिसकैं, सन्मुख कमलाकन्त ॥

यह कहि भीषम रथहि चलायो ❀ डोली धरणि शेष शिर नायो
सिंहनाद करि हांक सुनायो ❀ मानहुँ जलद घटा घहरायो
क्रोधित है शारँग कर गह्यो ❀ नमित बचन नर हरिते कह्यो
सावधान हरि जोती गहिये ❀ पारथ की रक्षामहँ रहिये
यह कहि बाण सहस्र प्रहार्यो ❀ अर्जुन के उर मध्य सो मार्यो
दश शर श्याम अङ्ग हत कीन्ह्यो ❀ विंशतिशर हनुमन्तहि दीन्ह्यो

अपरचारिशरधनुगुण दृढ़किय ❁ धाये नन्दिघोष तुरगन दिय
तब अर्जुन लीन्ह्यो कर धनुशर ❁ युद्ध परस्पर होत भयंकर
दोऊ भट अरुझे रणधरणी ❁ क्रुद्धित शर छांड़त अतिकरणी

दो॰ यहिविधिते अर्जुन जुटे, गङ्गतनय के युद्ध ।
जलथलभारतभूमिनभ, शरपूरित कृतयुद्ध ॥

बाणतजतअतिशययहिकरणी ❁ जिमिजलधरजलवृष्टि सुवरणी
सहस बाण पारथ गुण मोखे ❁ तुरगन हरि हांकत अति चोखे
तीक्षण बाण पाण्डुसुत डाख्यो ❁ भीषम अन्तरिक्ष हति पाख्यो
अपर षष्टि शर कार्मुक धाख्यो ❁ ते सब अश्वन के तन माख्यो
लगे असी शर कपि के अङ्गन ❁ सत्तरि शर माख्यो यदुनन्दन
श्यामअङ्गशोणितछवि छाजत ❁ पीतवरण रँग अरुण बिराजत
जोती गह्यो धन्य अति चापल ❁ बर्षतशरश्रावण जिमिघनजल
यहिबिधि ते शर बरषा कियो ❁ शरके छांह भानु छपिगयो
नन्दिघोष रथ माधव सारथ ❁ बाणवृष्टि ते छायो भारथ
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यो ❁ तब अर्जुन धनु कर दृढ़ लीन्ह्यो
श्रीहरि कह्यो सुनहु हो पारथ ❁ सहि न जाइ भीषम को भारथ

दो॰ हांके पग नहिं चलत हय, शर छाये सब अङ्ग ।
भीषम के संग्राम ते, रणमें अचल तुरङ्ग ॥

अर्जुन जिय बिस्मयकरि मान्यो ❁ महाक्रुद्ध होइ निजधनु तान्यो
देवअस्त्र पारथ तन डाख्यो ❁ गङ्गासुत बीचहि ते काख्यो
अपरबिशिखतीक्षण कर धाख्यो ❁ ते शर पारथ के शिर माख्यो
अर्जुनसहित भये घायल हरि ❁ तुरँगथकेन चलतलघुगतिकरि
बरषत बाण बरणि को कहई ❁ पाण्डवदल लक्षणगति लहई
श्रीपति कह्यो सुनहु हो पारथ ❁ रचहु उपाय तजो पुरुषारथ
यह कहिकै हरि शंख बजायो ❁ सुनिकै नाम शिखण्डी आयो
अर्जुनसों हरि कहन सो लागे ❁ रणमें करहु शिखण्डी आगे
पाछे होइ शारँग कर धरिये ❁ यहिबिधि ते भीषमबध करिये

अर्जुन कह्यो सुनहु बृषकेतू ❀ कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू
जबहिं शिखरडी आगे आयो ❀ भीषम धनुष डारि शिर नायो

दो० बिना अस्त्र लज्जित बदन, हेरत नीचे नैन ।
अस्थिर ह्वै रथपर रह्यो, कह्यो कृष्णसों बैन ॥

दीनबन्धु पाण्डव हित कारण ❀ कपटयुद्ध करि चाहहु मारण
अर्जुन किये शिखरडी ओटहि ❀ भीषम उर कीन्ह्यो शर चोटहि
पारथबाण कुलिश सम छूटहिं ❀ कवचभेदि भीषमतन फूटहिं
गङ्गासुत यहि बिधिते कह्यो ❀ पै शर नहीं शिखरडी गह्यो
शर मारत अर्जुन मम हिये ❀ यह बिचार कीन्ह्यो चित दिये
घायल भे कांपत तनु कैसे ❀ शिशिर काल में गोधन जैसे
तब पारथ कृत पुनि संधानहिं ❀ हृदय ताकिकरि मार्यो बानहिं
चरणकमल मनकीन्ह्योध्यानहिं ❀ रसना रटत कृष्ण के नामहिं
रोम रोम यहि बिधि शर मारा ❀ बहै प्रबाह रुधिर की धारा
तीक्ष्ण अपर बिशिख कर धर्यो ❀ ते शर कठिन मौलिपर पर्यो

दो० भीषमको बल थकितभो, मारत अर्जुन तीर ।
तिलभरि देह न देखिये, भ्भाभ्भरभयोशरीर ॥

रथते गिरे गङ्गसुत धरणी ❀ जगमहँ रही सदा यह करणी
देखत सब कौरवगण धाये ❀ हाहा शब्दाघात सुनाये
द्रोण करण दुश्शासन अत्री ❀ धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री
करुणा करत कहत यह बैनहिं ❀ अहो पितामह राखहु सैनहिं
कुरुपति तबछांड्योनिजस्यन्दन ❀ आये जहँ गङ्गा के नन्दन
सेनापति ह्वै मुकुट बँधायो ❀ आपु कृष्णकर अस्त्र गहायो
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्ह्यो ❀ दोऊबन्धु ब्याह करिदीन्ह्यो
परशुराम ते युद्ध बिचार्यो ❀ उठिकै बाण धनुष कर धार्यो
रोदनकरि यहिभांति बखानत ❀ बिधिचरित्रकोऊनहिं जानत
मोरे जिय यह बड़ो अँदेशो ❀ पाण्डव सहित जीतिहौं केशो
तुम पायो क्षत्री के धर्महिं ❀ यह सब दोष हमारे कर्महिं

दो० भीषम घेरे खेतमा, रोवत सबै नरेश ।
सबलसिंहचौहानकह, चल्यो आपु हृषिकेश ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

धर्मराज माधव सँग लीन्हो ❀ रथते उतरि गमन तब कीन्हो
अर्जुन और भीम सब राजा ❀ चले पितामह देखन काजा
यहि अवसर गङ्गासुत बोले ❀ सुन्दर अधर मनोहर डोले
शरशय्या सब अङ्ग बिराजै ❀ लटकत शीश भूमिपर राजै
कुरुपति कहो हमारो कीजै ❀ उत्तम भांति शिरहनो दीजै
कोमल तूल पटम्बर भरयऊ ❀ आनि तुरत शिरहानो धरयऊ
तब भीषम भाष्यो यह बानी ❀ दुर्योधन तुम बात न जानी
अर्जुन समय बिचारहु मन में ❀ उचित शिरहनो दीजै तन में
सुनि अर्जुन शारँग कर लीन्हो ❀ तीनि बाण संधारण कीन्हो
सन्मुख ह्वै ललाट महँ मारयो ❀ भेदिशीशशरनिकारिसोपारयो

दो० फोंक बेधि शर पार होइ, गड़यो भूमिमें आन ।
यहिबिधिशरशय्यादियो, भारत के परधान ॥

धर्मराज बहु रोदन कीन्हो ❀ भीषमसों कछु कहबे लीन्हो
केवल दुर्योधन के पापहि ❀ परशुराम दीन्हो रण शापहि
ताते भयो मृत्यु को कारण ❀ सन्मुख दरश करहु जगतारण
हँसि भीषम यहिभांति बखानी ❀ साधु नरेश परम सज्ञानी
दक्षिणायन रबि घातक कहिये ❀ ताते शरशय्या मों रहिये
उतरायण रबि होइ हैं जबहीं ❀ करिहौं देहत्याग निज तबहीं
तबलगि क्षत्रिनको बल पेखहिं ❀ भारतयुद्ध नयन निज देखहिं
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं ❀ भीषम कछु भाष्यो उपदेशहिं
अजहुँ कीजिये कहा हमारो ❀ कुरुपाण्डवामिलिप्रीतिबिचारो
बांटि राज्य लीजै दोउ भाई ❀ बसुधा भोग करहु सुख पाई

दो० बिग्रह कुलको अन्त है, अजहुँ कीजिये प्रीति ।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

जाके सखा आपु जगतारण ❀ तासों युद्ध करहु क्यहि कारण
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो ❀ यह प्रण मैं अपने मन गह्यो
सुई अग्र महि देब न औरहि ❀ करौं युद्ध भारत रण ठौरहि
यह सुनिकै भीषम यह कही ❀ हरिकी शरण जाइये सही
जो रणको कुरुपति मन लावहु ❀ करणवीरशिर मुकुट बँधावहु
द्रोण करण सेना अधिकारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी
पारथ नहिं जीतहिं अपने बल ❀ जो नहिं कृष्ण करहिं रणमें छल
जहँ भीषम शरशय्या लीन्ह्यो ❀ तम्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो
गङ्गासुत कीन्हो जब भवनहिं ❀ धर्मराज आये तब भवनहिं

दो० पाण्डवदल आनन्द मन, जीति चले मैदान।
अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान॥

धेनु सहस्र दिये जो दानहिं ❀ जो फल सबतीरथ अस्नानहिं
जो फल होइ साधु के दरशे ❀ जो फल शम्भुनाथ के परशे
जो फल व्रत एकादशि कीन्हे ❀ जो फल होइ भूमि के दीन्हे
जो फल रणमें प्राण गँवाये ❀ जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये
जो फल कोटिन बिप्र जेंवाये ❀ सो फल भारत सुने सुनाये
व्यासदेव भारत के कर्त्ता ❀ बाढ़े पुण्य पापके हर्त्ता

दो० रामसिंह गोबिन्द हरि, कीजै सदा बखान।
भाषा भीषमपर्व कह, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
भीष्मार्जुनयुद्धवर्णननामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

इति भीष्मपर्व समाप्तम्॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ द्रोणपर्व ॥

श्रीगुरुचरण दण्डवत करिये ❀ जेहि प्रसाद भवसागर तरिये
बन्दौं रामचरण रघुनन्दन ❀ महाबीर दशकन्ध निकन्दन
दीरघबाहु कमल दल लोचन ❀ गणिका ब्याध अहल्यामोचन
ब्यासदेव कलियुग अघहरता ❀ चारि बेद श्रीभारत करता
श्रोता जनमेजय गुणसागर ❀ महाबीर कुरुबंश उजागर
वैशम्पायन ऋषिबर ज्ञानी ❀ बक्ता महा सुधारस बानी
सत्रह शत सत्ताइस जाने ❀ गनिसम्बत यहिभांति बखाने
पुनि बुधबार घरी शुभ जाने ❀ जादिन लङ्का राम पयाने
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❀ दशमीतिथि करि ग्रन्थ प्रकासा
उत्तम नगर सुरचना छाजा ❀ भूपति मित्रसेन तहँ राजा

दो० रघुपतिचरण मनाइकै, ब्यासदेव धरि ध्यान ।
द्रोणपर्ब भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ ❀ दुर्योधन मन बहुदुख कीन्हेउ
अब काको सेनापति कीजै ❀ जाके बल भारत करिलीजै
कही करण राजा सुनि लीजै ❀ जो मोकहँ सेनापति कीजै
अर्जुन भीम खेत महँ मारौं ❀ सेना सहित न एक उबारौं
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला ❀ नृपसों क्रोधवन्त है बोला
सूर्यपुत्र सेनापति करिहो ❀ ताके बल पाण्डव सों लरिहो

मोरे शिर जो मुकुट बँधैये ❀ अबहीं जयतिपत्र नृप पैये
सो सुनि करण क्रोधयुत भयऊ ❀ कम्पितअधर कहन कछु लयऊ
क्षणमहँ तो कहँ सकौं सँहारण ❀ हौं गुरुपुत्र सहौं तेहि कारण
यहसुनि नयनअरुण होइआयउ ❀ लैकर खड्ग कहन मन लायउ

दो० अरध रथी भीषम गनो, कुलहीनो जग जान ।
सेनापति तोकहँ किये, क्षत्रिन को अपमान ॥

क्रोधित करण खड्ग लै धायउ ❀ पकरि बांह राजा समुझायउ
अहो मित्र अब समय बिचारौ ❀ तजिकै कलह शत्रु संहारौ
सब मिलि यहै मन्त्र ठहरैये ❀ कहो जाइ तेहि मुकुट बँधैये
कह्यो करण राजा सुनि लीजै ❀ सेनापति गुरुद्रोणहिं कीजै
महारथी अरु अस्त्रहि जानत ❀ कुरु पाण्डव दोऊ दल मानत
सुनि शकुनी के मनमों भायउ ❀ साधु करणहित बात सुनायउ
जयद्रथ कृपरु शल्य ते भाखो ❀ दलकर भार द्रोणशिर राखो
जब जानी सबके मन माने ❀ दुर्योधन सुनि आपु बखाने
गुरू होहु सेनाकर रक्षक ❀ भारत युद्ध करौ परतक्षक
यह कहि आनि मुकुटशिरदीन्हेउ ❀ बहु विधि बिप्र वेद धुनि कीन्हेउ

दो० कही द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रशुराम ।
पांच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम ॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❀ मारों सबहिं जान नहिं पावैं
जो अर्जुनहिं जुदा करि पावौं ❀ बांधि युधिष्ठिर नृप लैआवौं
जब गुरुद्रोण कहे अस लीन्हेउ ❀ दुर्योधन प्रति उत्तर दीन्हेउ
जो आपुहि रणको मन लाये ❀ कोटिन अर्जुन मारि गिराये
तुमसों सबहिं सीखिये शायक ❀ पारथ कहा भये यहि लायक
हँसिकै द्रोण कही यह बानी ❀ राजा तुम यह बात न जानी
महारथी जगमों है पारथ ❀ नन्दिघोषरथ श्रीपति सारथ
धनुगाण्डीवअगिनिजेहि दीन्हे ❀ अक्षयत्रोण वरुण सों लीन्हे
सात बर्ष सुरपुरहि सिधाये ❀ देवअस्त्र सब सिखिकै आये

पुर बिराट रण कियो भयंकर ❀ बनोबास महँ जीतो शंकर
दो० शरसों सागर बांधिकै, जीति लियो हनुमान।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहिं समान॥
ताते यह उपाय चित धरिये ❀ पारथ बिलग कटकते करिये
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै ❀ यहि कामहिं आज्ञा मोहिं दीजै
परन करत पारथ संग्रामा ❀ लै जैहौं निश्चय निजधामा
चौदह सहस रथी धनुधारी ❀ वंश प्रकाशन के अधिकारी
जो अर्जुन कहँ पीठि दिखावैं ❀ हमसब बास अधोगति पावैं
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो ❀ अपने परम हितूकै जान्यो
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवां ❀ पाण्डव दलमहँ पारथ जहँवां
हरि अर्जुन बैठे यक सङ्गा ❀ कहत कथा भीषम रणरङ्गा
यहि अन्तर इन दर्शन दीन्ह्यो ❀ पारथ उठि सम्भाषण कीन्ह्यो
आदर कै आसन बैठायो ❀ भूप सुशर्मा बचन सुनायो
दो० परन करत पारथ तुम्हैं, युद्ध करन के हेत।
करहु और जो चित्त महँ, शपथ कृष्ण की देत॥
पारथ कोपवन्त तब कह्यो ❀ हांकत मोहिं कहसि धनु गह्यो
मानो परन काल्हि रण करिहौ ❀ ह्वै पतङ्ग दीपक महँ परिहौ
यह सुनि भूप सुशर्मा आये ❀ कुरुपति सों सब बात जनाये
प्रात होत दोऊ दल साजे ❀ शब्द अघात दमामे बाजे
गज काछे पर्वत से भारी ❀ पांव जँजीर नयन अँधियारी
रथपर रथी सरिस छबि बनी ❀ जगमगात हीरन की कनी
अरु अनेक असवार महाबल ❀ उदधि समान पियादन के दल
दुर्योधन अस कहिबे लागे ❀ सेनापति द्रोणहि के आगे
सब मिलि एकमतो ह्वै लरिये ❀ बलसों बांधि युधिष्ठिर धरिये
पाण्डव दल आये मैदाना ❀ तब पारथ यहिभांति बखाना
दो० आयसु हमरो सुनिय सब, अब हम करहिं पयान।
सावधान क्षत्री सबै, लरहु द्रोण मैदान॥

धर्मराय सुनिये कहि पारथ ❀ रणमों द्रोणसरिस पुरुषारथ
तीनिलोक जो अस्त्रहि धरई ❀ गुरू द्रोण सबको बश करई
धनुबिद्या भृगुपति जेहि दीन्ह्यो ❀ आपु समान महारथि कीन्ह्यो
भये द्रोण गुरु सेनारक्षक ❀ महा युद्ध होई परतक्षक
भीमादिक क्षत्री तेहि कहिये ❀ सावधान नृप के सँग रहिये
शूरसेन है बड़ो धनुर्द्धर ❀ जौलों रहै गहे शारँग शर
तौलगि नृप रण को मन दीजे ❀ नातरु गवन भवन को कीजे
हम अब जाहिं युद्ध के कारण ❀ शिशपकागण करहिं सँहारण

दो० अस कहिकै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान ।
दश योजन दक्षिण दिशा, समर केर मैदान ॥

नान्दिघोष रथ देखन आये ❀ सेना सहित सुशर्मा धाये
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे
तब अर्जुन मारे तीक्षण शर ❀ होन लगी अतिमारु परस्पर
शिशपकागण के शर छूटहिं ❀ मानहु बज्र गगन ते टूटहिं
अर्जुन सों लोहा उत बाजो ❀ इतहि द्रोण गुरु सेना साजो
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांधे ❀ युगल तुणीर बिराजत कांधे
शीश टोप हाथन दस्ताने ❀ जनु बानरगण सों अनुमाने
बख्तर झलकैं जोशन राजैं ❀ जिरह मेखला सरिस बिराजैं
चौसा चारु आनि कै दीन्हे ❀ गदा लयो साजहि दृढ़ कीन्हे
भूरिश्रवा करण सम क्षत्री ❀ कृतबर्मा अश्वथामा अत्री

दो० कोऊ काञ्चन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरङ्ग ।
दुर्योधन रथ साजिकै, शतभाइन लै सङ्ग ॥

श्याम तुरंग द्रोण रथ जोरे ❀ पवन बेग वे चारिउ घोरे
जानत हैं सारथि के मनकी ❀ बढ़त चलत तकि छाय सुतनकी
पाखर करी समे छबि छाजे ❀ हंस ग्रीष्म उल्लास बिराजे
चारिउ चरण नालकी चमकनि ❀ ज्यों घन में दामिनि सी दमकनि
आगे कुञ्जर शोभा पाये ❀ प्राबृट मेघ भूमि पर आये

चमर ढरत चौरासी बाजत ❀ श्वेतदशनअतिसरिसबिराजत
फेरत फरी खड्ग कर चमकत ❀ पग के भार मेदिनी धमकत
ता पाछे असवारन को दल ❀ शेल सांग कर लिये महाबल
कोटिन रथी महाबल भारी ❀ क्षत्री शूर बड़े धनुधारी

दो० महारथी सब साथ लै, कीन्हो द्रोण पयान ।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपिगे भान ॥

पाण्डव दल आये मैदानहिं ❀ आगे भीम गहे धनुबानहिं
कुञ्जर सों कुञ्जर लै जोरहिं ❀ दशनघाव मुख नेकु न मोरहिं
ठोकर अरु बृषोरसों मारहिं ❀ गहिकर शुण्डरथहि फटकारहिं
पैदर सों पैदर अरुझाने ❀ महाबीर सब बांधे बाने
असवारहि असवार प्रचारहिं ❀ सन्मुख जुरत खड्ग शिरझारहिं
लैकर धनुष रथी रण मण्डे ❀ बाणन ते अरिसैन्य बिहण्डे
आगे द्रोण पेलि रथ आये ❀ कृपा करण क्रोधित ह्वै धाये
भूरिश्रवा अलम्बुष क्षत्री ❀ जान्यो कृतबर्मा से अत्री
भीमसेन औ द्रोणहि भारथ ❀ महायुद्ध कीन्हो पुरुषारथ
भूरिश्रवा सात्यकिहि दोऊ ❀ लड़त हारि मानत नहिं कोऊ

दो० करणसाथ अभिमन्युभिर, कीन्हेउ शरसंधान ।
द्रुपद राउ जयदर्थ सों, महाभूरि मैदान ॥

कृपसों नकुल करहिं संग्रामा ❀ दोऊ बीर युद्ध जय कामा
भूप बिराट सुशर्मा क्षत्री ❀ उत्तर कुमार अलम्बुष अत्री
धृष्टद्युम्न कृतबर्मा सङ्गा ❀ शकुनी सहदेवहि रणरङ्गा
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ जुरे शिखण्डि गहे शारँग शर
घटउत्कच कीन्हो रण ठाना ❀ शल्य नरेश संग मैदाना
काशिराज जम्भन को भारथ ❀ कीन्हो खेत महापुरुषारथ
पांच कुमार द्रौपदिहि जाये ❀ ते शशिबिंदु युद्ध अरुझाये
जोर जोर अरुझे सब जबहीं ❀ धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं
अतिप्रचण्डधनुशर कर लीन्हे ❀ तीक्षण बाण फोंक शर दीन्हे

दो० पेलि फौज आये तहां, जहां धर्म सों राज ।
सबलसिंह चौहान कह, द्रोण कियो यह काज ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सेना सहित द्रोण जब आये ❀ धर्मराज कहँ देखन पाये
परी भीर राजा पर जाने ❀ शूरसेन तब शारँग ताने
धर्मराय कहँ पाछे घाल्यो ❀ क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो
बहुविधि बाणबुन्द झरिलाये ❀ तीन सहस रथ मारि गिराये
बहुरि अनेक चलाये साँगी ❀ कुञ्जर गिरे सहित चौराँगी
हय पैदल जो आगे पाये ❀ शूरसेन सब मारि गिराये
अटकी अनी देखि जब पाये ❀ तब गुरु द्रोण क्रोधकै धाये
आठ बाण तीक्षण कर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीशपर कीन्हे
शूरसेन शर सबहि सँभारे ❀ बाण पचीस द्रोण उर मारे
महाबीर दोउ बड़े धनुर्द्धर ❀ होनलागि तब मारु परस्पर

दो० शूरसेन नृप द्रोणसों, भयो जोर मैदान ।
जलथलभारतभूमि सब, शर छायो असमान ॥

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे ❀ रथ के चारि अश्व संहारे
सारथि युद्धखेत महँ आये ❀ रथते उतरि शैल लै धाये
तबहिं शैल नृप करते छूट्यो ❀ लाग्यो बाण बीचते टूट्यो
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे ❀ क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शर मारे
टूटि शीश धरणी पर पस्यो ❀ झलकत मुकुट जरायन जस्यो
शूरसेन जूझे मैदाना ❀ धर्मराय लीन्हो धनु बाना
दश शर भूप क्रोध करि छांटे ❀ ते गुरु द्रोण बीचही काटे
लगे द्रोणगुरु मनहिं विचारन ❀ धर्मराय बांधिये केहि कारन
रुधिर परे बसुधा सब जरई ❀ अर्जुन सुनै प्रलय पुनि करई
ताते गहि बन्धन अब कीजे ❀ दुर्योधन आगे करिदीजै

दो० अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ ।
धर्मराय रथ तजि भजे, रहा न कोऊ साथ ॥

देखि द्रोण राजा कहँ लीन्हे ❀ डारहि पाश चित्त महँ कीन्हे
अब यह कथा तहां चलि आई ❀ पारथ सों जहँ होत लड़ाई
जब तिन कीन्हो शर संधाना ❀ तब श्रीहरि यह बात बखाना
अर्जुन मेरो जिय गहबस्यो ❀ धर्मराज पर संकट पस्यो
मारहु बाण गहरु केहि काजा ❀ बांधत द्रोण युधिष्ठिर राजा
अर्जुन नयन अरुण ह्वै आये ❀ मनव्यापक शर तुरत चलाये
धावहु बाण विलम्ब न लावहु ❀ संकट ते धर्मजहि छुटावहु
द्रोण गुरू कर पाश उठाये ❀ तेहि अन्तर पारथ शर आये
बाण उदोत होत हैं कैसे ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसे
दोऊ कर भेदन शर कस्यो ❀ नागपाश धरणी गिरिपस्यो

दो० दश शर लाग्यो द्रोणउर, भेदन कीन्हो अङ्ग ।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरङ्ग ॥

अर्जुन बाण द्रोण जब लेखो ❀ गरुड़ पक्ष शर माथे पेखो
कनक फोंक लागे बहु दामा ❀ अङ्कित है पारथ को नामा
देखत बाण जानि गुरु मनमों ❀ पारथ फिरि आयो यहि रनमों
तबहिं द्रोण फिरि कीन्हों गवना ❀ धर्मराज पहुँचे निज भवना
कौरव दल जो खेतहि पाये ❀ चल्यो चल्यो करि अर्जुन आये
फिरे द्रोण लीन्हे सब सैना ❀ कुरुपतिनिरखिकह्यो तब बैना
धर्मराय कहँ बांधन धाये ❀ काह गुरू फिरिकै तुम आये
सुनि तब द्रोण कहै मनलाये ❀ असे हते अर्जुन शर आये
अर्जुन शर ते चेत न धस्यो ❀ करते पाश भूमि गिरिपस्यो
सन्ध्या जानि किये तब गवना ❀ कुरु पाण्डव आये फिरि भवना

दो० उभय सैन कुरुपाण्डव, सब आये निज धाम ।
अर्जुन सावकाश नाहिं, राति दिवस संग्राम ॥

कुरुपति तबहिं द्रोण पहँ आये ❀ बैठि बात यहि भांति जनाये
सबके गुरु तुम बीर महाबल ❀ पाण्डव नाश कहा करिये छल
जो आपुहि रण को मन दीजै ❀ क्षणहिं पांच पाण्डवबध कीजै

कीजै कहा कहतु यह बातन ❀ राजा सुनिये कथा पुरातन
जो कीन्ही है अर्जुन करणी ❀ ऐसो बीर न दूसर धरणी
द्रुपद नरेश स्वयम्बर ठानो ❀ लख नरेश बरण कै आनो
हम सब गये हुते तब साथा ❀ हलधर हते सहित यदुनाथा
यहि बिधि राजा यन्त्र बनाये ❀ नभ महँ काञ्चन मीन लगाये
नयन बनी हीरन की कनी ❀ कोइ क्षत्रिन की रही न मनी
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो ❀ बीरहु कहां गये बल भाष्यो

दो० जो कोऊ भेदन करै, मीन नयन महँ बान।
यह कन्या सोई बरै, कहत बचन परमान॥

सब क्षत्री सुनि मौनहिं गह्यो ❀ पारथ बीर सभा महँ रह्यो
ह्वै द्विजरूप कोऊ नहिं चीन्ह्यो ❀ शर अरु धनुष करणसों लीन्ह्यो
धरिकै पांव खड्ग गहि बाना ❀ खैंचि धनुष तब किय संधाना
तुम सब मिलि मिथ्या कै भाख्यो ❀ दीनबन्धु पारथ प्रण राख्यो
करण धनुषबल कोउ न पूजो ❀ सुरपति धनुष दियो तब दूजो
बहुरि धनुष लै शर संधाना ❀ मारयो मीननयन तकि बाना
गिरेहु कराह अनत नहिं गयो ❀ तब सबके प्रतीति जिय भयो
भूषण बसन विचित्र सँवारे ❀ द्रुपदसुता जयमालहि डारे
कन्या निरखि लोभ चित आये ❀ तुम शकुनी कहँ दूत पठाये

दो० धन अनेक द्विज लीजिये, बिप्रबंश कुरु ब्याह।
द्रुपदसुता कन्या रतन, कुरुपति कीन्ही चाह॥

क्रोधवन्त होइ पारथ भाख्यो ❀ शकुनी बधउँ कवन तोहिं राख्यो
भानुमती रानी म्वहिं दीजे ❀ सम्पति सब कुबेर की लीजे
सो सुनि भूप क्रोध तुम कीन्हो ❀ करण आदिकहँ आज्ञा दीन्हो
पुनि सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ पारथ एक सबै बिचलाये
जरासन्ध होते बल माहीं ❀ कोऊ छुइ न सको है छाहीं
हमसब मिलिकै अस्त्रहि गह्यो ❀ पै काहू सन खेत न रह्यो
क्षत्री सब गये बीरज खोई ❀ बानावरि नहिं पूज्यो कोई

दुर्योधन तब कहिबे लीन्हों ❀ गुरुसन विनय जोरिकर कीन्हों
आपुहि इहां काज चित दीजै ❀ पाण्डव सबहिं मारि यश लीजै
कह्यो द्रोण राजा सों बचना ❀ कालिह प्रात कीजै यह रचना

दो० चक्रव्यूह निर्माण करि, करहु युद्ध यह रूप।
बिन पारथ यह जगत मों, भेद न जानहिं भूप॥

निशा मध्य महँ गढ़ निर्मावा ❀ जाको अन्त कोउ नहिं पावा
सात खेल देखत मन भाये ❀ चक्राङ्कित बहु व्यूह बनाये
सात द्वार तामहँ निर्मावा ❀ दल बल सहित भूप सुखपावा
प्रथम द्रोण जयद्रथकहँ राखो ❀ सेन अनेक जात नहिं भाखो
दूजो द्वार द्रोण सम अत्री ❀ साथ अनेक महाबल क्षत्री
तीजो घोर करण दृढ़ कीन्ह्यो ❀ रथी समूह साथ महँ लीन्ह्यो
चौथे कृपा लिये बहु सङ्गा ❀ पँचयें द्रोणपुत्र रण रङ्गा
छठयें घोर बीर बहु अहई ❀ भूरिश्रवा आपु तहँ रहई
सतयें घोर कुरुपतिहि साजो ❀ शतबान्धव नृपसङ्ग बिराजो
तीनि सहस राजा नृप साथा ❀ सावधान क्षत्री गहि हाथा

दो० सातद्वार को दृढ़ कियो, चक्रव्यूह करि साज।
कुरुपति पठये दूत तब, जहां धर्म सों राज॥

दूत जाइ ठाढ़ो भो द्वारा ❀ जाइ जनावहु कहि प्रतिहारा
द्वारपाल जब जाय जनाये ❀ धर्मराज तेहि निकट बुलाये
आय दूत नावा तब माथा ❀ लाग्यो कहन जोरिकै हाथा
चक्रव्यूह रचि द्रोण बनाये ❀ ता कारण नृप मोहिं पठाये
उठिकै व्यूह भेद नृप कीजै ❀ नातरु जयतिपत्र लिखिदीजै
जो नहिं लरौ रहौ गहि भवना ❀ हारौ युद्ध करौ बन गवना
यह कहि दूत तुरत चलिआये ❀ धर्मराज सब बीर बुलाये
सबसों नृप यहि भांति बखानो ❀ चक्रव्यूहरण तुम कोउ जानो
जो कोई जानत तौ कहिये ❀ व्यूहभेद अब कीन्हो चहिये
जो नहिं भेद व्यूह को जानो ❀ युद्ध हारि गृह करो पयानो

दो॰ यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मराय सों बैन ।
चक्रव्यूह रण नहिं सुनो, काहु न देखो नैन ॥
जब बीरन यहि भांति जनाये ❀ सुनिकै धर्मराज दुख पाये
हरि रचना यह कीन्ह्यो भारथ ❀ सब उद्यम अब भयो अकारथ
चारि बन्धु सेना सब सङ्गा ❀ पारथ बिना भयो रण भङ्गा
भाष्यो भूप देखि सहदेवा ❀ जानत कोउ ब्यूह का भेवा
सो सुनिकै सहदेव बखानी ❀ तीनि बिना चौथो नहिं जानी
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई ❀ की प्रद्युम्न यह जान लराई
भूप युधिष्ठिर कहिबे लीन्हे ❀ शिशपका गण मोहिं दुखदीन्हे
भूप सुशर्मा द्रोण पठाये ❀ छलकै अर्जुन को अटकाये
जब राजा हिय शोक जनाये ❀ सभामध्य अभिमनु तब आये
दोउ करजोरि कहा तब राजहिं ❀ आपु शोच कीजै केहि काजहिं
दो॰ चक्रव्यूह रचि द्रोण गुरु, कियो चहत संग्राम ।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो बिधाता बाम ॥
अभिमनु कही सुनो तुम राजा ❀ अब बिलम्ब कीजै केहि काजा
ब्यूह भेद मैं जानत अहऊं ❀ सो बृत्तान्त आपुते कहऊं
छहों द्वार भेदन कर ज्ञाना ❀ सतवां द्वार भेद नहिं जाना
यम अरु इन्द्र बरुण जो रक्षक ❀ छहों द्वार तोरौं परतक्षक
सतवां द्वार भेद नहिं जाना ❀ सुनि राजा यहि भांति बखाना
भीमादिक कोउ भेद न पाये ❀ ब्यूह युद्ध केहि तुमहिं सिखाये
अभिमनु कही भूप के पासा ❀ कीन्हे जबहिं गर्भ हम बासा
प्रसव काल माता दुख पाई ❀ तबहिं पिता यह ब्यूह सुनाई
पारथ कही सुभद्रा आगे ❀ गर्भ मांझ सुनिबे हम लागे
छठौं द्वार को भेद बखाना ❀ सो हम सब अपने जिय जाना
दो॰ सातों द्वारके कहतही, हम लीन्हें अवतार ।
गीत नाद आनन्दते, मगन भये परिवार ॥
ताते अपर भेद नहिं पाये ❀ सत्यबचन नृप तुम्हैं सुनाये

तुम्हें कवन बिधि आज्ञा दीजै ❀ व्यूह युद्ध बीरन ते कीजै
पन्द्रह बर्ष बीर सुकुमारा ❀ तुम हमसबके प्राण अधारा
सुनिअभिमनुयहिभांतिवखाना ❀ नृप हम कहँ बालककरिजाना
अर्जुन पुत्र सहोद्रा नन्दन ❀ आजु करौं नृपसैन निकन्दन
द्रोण कर्ण सब बीर घनेरे ❀ आजु देखिहहु भुजबल मेरे
मारि सबै सरदार गिरावों ❀ तब अर्जुन को पुत्र कहावों
बांधौं भुजबल बली पुरन्दर ❀ सेना उदधि होइ किमि मन्दर
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलैहौं ❀ शोणित नदी अथाह बहैहौं
शोच करत नृप आपु अकारथ ❀ अब देखौ मेरो पुरुषारथ

दो० भीमसेन ऐसी कही, राजा सुनहु बिचार।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवां मो शिर भार॥

क्षत्री सबहि अस्त्र गहि हाथा ❀ पेलि जाहिं अभिमनु के साथा
सतवां द्वार पलक महँ मोरौं ❀ गदा घाव सों पर्वत फोरौं
भीमसेन यहि भांति बखाने ❀ सो सुनि धर्मराय मनमाने
साजेउ सेन दमामा बाजे ❀ बांधे अस्त्र बीरगण गाजे
भांति भांति बैरख फहराने ❀ सुर बिमान को खोज उड़ाने
आगे कुञ्जर शोभा पाये ❀ सावन मेघ उनै जनु आये
चारौं पाट बहत मदधारा ❀ जिमि झरना जल बहै पहारा
श्वेत दशन कबि किये बिचारा ❀ कज्जल गिरि जनु गङ्ग कि धारा
अंकुशलगे चलत गज ठनकत ❀ ठोकर पाँव लगत हय हनकत
नयनन मों दीन्हीं अँधियारी ❀ देखत रूप शत्रु भयकारी

दो० तुङ्गस्थल अतिक्रोध में, राजत ऊर्ध्व भुशुण्ड।
भूमि भ्रमै पर्वत मनहुँ, भये झुण्ड के झुण्ड॥

तेहि पीछे पैदल दल राजै ❀ बिबिध अस्त्र करमाहँ बिराजै
चले अश्व असवार फँदावत ❀ नृत्यकरत मानहुँ नट आवत
चले सारथी सब रथ हांकत ❀ युद्ध हेत क्षत्री रण डांकत
सैन सहित योजित रथ आये ❀ चक्रव्यूह जहँ द्रोण बनाये

देखत सबहिं अचम्भौ मानो ❀ कहां द्वार कछु जात न जानो
व्यूह अन्त कछु जानि न पैये ❀ कैसे कै रणमों मन लैये
अटकी अनी देखि जब जाने ❀ तबअभिमनु यहिभांतिबखाने
हम ह्वैवे सबही के आगे ❀ तुम सब आवहु पाछे लागे
यह कहिकै हांकन रथ चह्यो ❀ तब करजोरि सारथी कह्यो
तुम बालक कैसे रण करिहौ ❀ द्रोणी द्रोण करण सों लरिहौ

दो० सुनतबचनअभिमनुकही, सुनु सारथि मतिहीन ।
कपिगणसँग रघुनाथ के, कुश एकै बश कीन ॥

बालककरि मोकहँ मति जानहु ❀ हांकहु रथहि कहा मम मानहु
अस सुनिकै सारथि रथ हांक्यो ❀ डोली धरणि शेष शिर कांप्यो
भीमादिक रणभूमिहि आयो ❀ सिन्धुराज बहु बाण चलायो
इतते सब क्षत्रिन शर मारे ❀ जय के हेत बीर संहारे
अभिमनु कोपि लगे शर मारन ❀ शतते सहस सहस्र हजारन
तब जयदर्थ कीन्हि प्रभुताई ❀ जल थल सबहिं रहे शर छाई
अभिमनु महामारु जब जाने ❀ तीक्षण बाण कोपि संधाने
विद्युतसम शशिगण परकाशे ❀ चमकत दृष्टि नयनको नाशे

दो० पलक परत सब बीरको, रथ हांको रथवान ।
सबलसिंह चौहान कह, चक्रव्यूह मैदान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अभिमनु व्यूह भितर जब आये ❀ तब जयदर्थ सबहिं अटकाये
रथते उतरि भीम तब धाये ❀ पै जयदर्थ मारि बिचलाये
द्रुपद बिराट क्रोध कै धाये ❀ धर्मपुत्र सात्यकि सब आये
नकुल बीर सहदेव रिसाने ❀ धृष्टद्युम्न रण को अरुझाने
इत सब बीर क्रोध रणमण्ड्यो ❀ सिन्धुराजशर सबहि बिहण्ड्यो
गदा हाथ गहि भीम भयंकर ❀ प्रलयकालमहँ मानहुँ शंकर
दैकरि हांक क्रोधकरि धाये ❀ मनहुँ घटा घनमहँ घहराये
तब जयदर्थ कीन्ह संधाना ❀ भीम अङ्ग मार शत बाना

बाण लग्यो तब मोह जनायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो
दशशर धर्मराज उर मार्‍यो ❀ नकुल हृदय बहु बाण प्रहार्‍यो
दो० नृपति जयद्रथ क्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
सबै बीर मोहित भये, भारत के मैदान ॥
धर्मराज मूर्च्छा तजि जागे ❀ तब सहदेवहि बूझन लागे
यह कछु भेद जानि नहिं पाये ❀ नृप जयदर्थ सबहिं अटकाये
आदि कथा सहदेव सुनाये ❀ जेहि बिधि शङ्कर सों बर पाये
तब दुर्योधन ताहि पठाये ❀ जब हम सब बनबास सिधाये
लै द्रौपदिहि तबहिं हांको रथ ❀ बिधिबशमिलो पन्थमहँ पारथ
क्रोधवन्त पारथ शर सांध्यो ❀ नागपाश जयदर्थहि बांध्यो
शीशमुण्डि अपमानहिं कीन्हो ❀ भारत जीवदान तब दीन्हो
लज्जा पाइ भवन नहिं गयऊ ❀ शंकर की पूजा मन लयऊ
ह्वै प्रसन्न यह कह गङ्गाधर ❀ जो इच्छा मनमहँ मांगहु बर
पांच पाण्डवन जीतैं रन में ❀ यह इच्छा है मोरे मन में
दो० यह सुनिकै शंकर कहेउ, दीन्हेउ बर जयदर्थ ।
चारि बन्धु तुम जीतिहौ, पारथ अजय समर्थ ॥
यहि बिधि शंकर ते बर पायो ❀ ता कारण सबको बिचलायो
दुजे द्वार अभिमनु जब गयऊ ❀ तहां द्रोण ते दर्शन भयऊ
सब क्षत्रिन सों द्रोण सुनायो ❀ अभिमनु ब्यूह भेदिकै आयो
क्षत्री सबहिं लगे शर मारन ❀ यह अकेल उत बीर हजारन
अभिमनु ऐसो बाण चलायो ❀ शरते भरद्वाज सुत छायो
और साठि शर छांड़े पायल ❀ ताते भये बिप्र रण घायल
कोपि द्रोण पोतिक शर जोरे ❀ अर्जुनसुत बीचहिं धरि तोरे
तब गुरु द्रोण क्रोध मन भयो ❀ तीक्षण बाण चलावन लयो
दो० बहु पुरुषारथ गुरु कियो, रोकि रह्यो रणारत्थ ।
सबहिंपेलि भीतर गयो, अभिमनु बड़े समर्थ ॥
तीजो द्वार. करण है रक्षक ❀ अभिमनु आइ जुरे परतक्षक

सुनु अभिमनु पारथ नाहिं आयो ❀ व्यूहभेद कहँ तुमहिं पठायो
अभिमनु सुनि प्रतिउत्तर दीन्ह्यो ❀ बालककरि तुम हमकहँचीन्ह्यो
दृढ़ कै गहहु व्यूह द्वारो थल ❀ बूझि देखिहौ बालक को बल
व्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो ❀ कोपि करण तब बाण चलायो
सहस बाण अर्जुनसुत छांड्यो ❀ सब शर अन्तरिक्षमहँ काट्यो
तासे कीन्हो सेननिकन्दन ❀ क्रोधित भये देव रविनन्दन
तीक्षण बाण करण गुण जोरे ❀ सो अभिमनु सब बीचहि तोरे
दिव्य बाण अभिमन्यु चलायो ❀ भूमिअकाश दशहुँदिशि छायो
देखि अनीक सबहिं भ्रम भयऊ ❀ तौ लगि व्यूह भेदिकै गयऊ

दो॰ पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागी बार ।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य सरदार ॥

आये अभिमनु सबहिं पुकारे ❀ कृपाचार्य तब धनुष सँभारे
महायुद्ध कीन्हो पुरुषारथ ❀ तेहि क्षण भयो अनेकन भारथ
पुनि अनेक सेना बध कीन्ह्यो ❀ रुण्डमुण्डकछुजात न चीन्ह्यो
कृपाचार्य क्रोधित शर जोरे ❀ ते अभिमनु बीचहि सब तोरे
अपर पांच शर मार्‍यो लै जब ❀ चेत न रह्यो भयो घायल तब
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो ❀ द्रोण पुत्र तब देखन पायो
कर धनुशर गहिकै कत आवत ❀ मारु मारु कहि हांक सुनावत
अश्वत्थामा लीन्हेउ शर कर ❀ जलधरसम लागेउ बर्षहिं शर
क्रोधित होइ सहोद्रानन्दन ❀ क्षणमहँ कीन्हो सेननिकन्दन

दो॰ अर्जुनसुत अरु द्रोणसुत, परो आनि जब जोर ।
रण करकश दोऊ सरस, भयो युद्ध अतिघोर ॥

तब अभिमन्यु कीन्ह संधाना ❀ हृदय ताकि मार्‍यो दश बाना
एक बाण याबिधि ते छूट्यो ❀ काटो धनुष सहित गुण टूट्यो
औरौ साठि सहस शर मारे ❀ तिन बाणन सब सेन सँहारे
जबलगि द्रोणी धनुष चढ़ाये ❀ पेलि द्वार अभिमनु तब आये
पँचवां द्वार पेलि जब गयऊ ❀ छठयें द्वार उपस्थित भयऊ

अभिमनु जब आगे हांको रथ ❀ भूरिश्रवा आइ रोंकेउ पथ
या विधि बाण बुन्द झरिलायो ❀ रथ समेत अभिमन्यु छिपायो
इन्द्रअस्त्र अभिमनु तब छांड्यो ❀ सब शर निमिष एक महँ काट्यो
बाण काटि शर किये प्रकाशा ❀ जिमि प्रचण्डरविउयोअकाशा

दो० सहसबाणयहिविधिहनो, रह्यो न तनु में चेत।
पेलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत॥

सतयें द्वार आइ अरुझान्यो ❀ जासु प्रवेश भेद नहिं जान्यो
दुर्योधन सेना सँग भारी ❀ तीस सहस नृप छत्र के धारी
ते सब बीर आनि कै घेरे ❀ मारु मारु दुर्योधन टेरे
रथ पर शर बर्षत हैं कैसे ❀ मन्दर शीश बृष्टिजल जैसे
महारथी सब मेघ समाना ❀ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना
धनु टंकोर मेघ की गर्जनि ❀ खड्गछटा दामिनि की तर्जनि
शक्ति शूल बीरन कर छूटत ❀ मानहुँ बज्र गगन ते टूटत
महामारु क्षत्रिन जब कियऊ ❀ तब अभिमन्यु क्रोधतनु भयऊ
जो शर अर्जुन आपु सिखाये ❀ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये

दो० सब शर काटे निमिष महँ, सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखा समेत॥

सम्मुख सेन दृष्टि जो आई ❀ क्षणमहँ अभिमनु मारि गिराई
फौज मध्य अभिमनु है कैसे ❀ मृगदल महाकेशरी जैसे
हय गज रथ पैदर संहारे ❀ भूप अनेक खेत महँ मारे
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये ❀ कर्ण समेत बीर सब आये
सब मिलि घेरि लगे शर मारन ❀ एक बीर इत उतै हजारन
सारथि कही कुँवर सों बचना ❀ युद्ध अधर्म द्रोण की रचना
एक एक ते उचित लड़ाई ❀ यह अनीति हम देखी भाई
इत अभिमनु है एक जुझारा ❀ उत आये लाखन सरदारा
चहुँदिशिबाणबुन्दझरिलावहिं ❀ कहोकवनिदिशिरथहिचलावहिं
सुनि अभिमनु भाष्यउ यह बानी ❀ सारथि तुम यह बात न जानी

दो० चक्रव्यूह भीतर परे, शत्रुहि कीजै नाश ।
आनि परी शिर आपने, छांडु बिरानी आश ॥
सुनु सारथि अब शोच न करिये ❀ सन्मुख सब योधन सों लरिये
चाक कृत्य तुम रथहि घुमैये ❀ चहूँ ओर हम बाण चलैये
सारथि रथ हांको तब बांको ❀ जैसे चलत कुम्हार को चाको
द्रोण कर्ण जेतिक हैं आगे ❀ शत शत बाण सबन के लागे
सारथि तनु दश दश शर मारे ❀ द्वै द्वै शर आसन परिहारे
पांच पांच शर हस्ति बिदारे ❀ एक एक शर पैदल मारे
अर्जुन सुत याबिधि शर खाचो ❀ घायल सबहि एक नहिं बाचो
क्रोधवन्त होइ कुरुपति धाये ❀ सब बीरन सों बचन सुनाये
बालक एक करत संग्रामा ❀ तुम सबको पाल्यों केहि कामा
दो० सब मिलि मारौ घेरि रथ, गहरु करहु केहि काज ।
शिशु होइ सेना बधतु है, आवत तुम्हैं न लाज ॥
सुनिकै द्रोण कहन अस लागे ❀ दुर्योधन भूपति के आगे
यह अर्जुनसुत बड़ो धनुर्द्धर ❀ जबलगि धनुष रहै याके कर
महारथी जो कोटिन आवैं ❀ याहि ते जयतिपत्र नहिं पावैं
अर्जुन सम अभिमनु धनुधारी ❀ प्रलयसमय जैसे त्रिपुरारी
कही द्रोण दुर्योधन राजहि ❀ पक्षी युद्ध जीति किमि बाजहि
गज अनेक जो मारन आवैं ❀ एक सिंह की सरि नहिं पावैं
जो वाको धनु काटत कोई ❀ तौ रण में अभिमनु बध होई
अस सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ करणादिक आगे चलि आये
सेन मध्य अभिमनु है कैसे ❀ क्षीरसिन्धु महँ मन्दर जैसे
दो० अर्जुनसुत अति क्रोधकै, छांड़े तीक्षण बान ।
या बिधि सेना बधकिये, जिमि लङ्का हनुमान ॥
सब मिलि एक मतो है धाये ❀ रथहि घेरि चहुँदिशि ते आये
बहुतक कोपि बाण सों मारे ❀ शेल शूल मुद्गर परिहारे
जो शर कृष्णराय सों पाये ❀ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये

तातें अस्त्र भये क्षय कैसे ❋ तिमिर जाइ देखत रवि जैसे
जूझि गिरे कुञ्जर मतवारे ❋ रथ सारथि अश्वन संहारे
अभिमनु कीन्ही है यह करणी ❋ रुण्डमुण्ड तोपी सब धरणी
देखत कर्ण क्रोध जिय कीन्हे ❋ दैकर हांक धनुष कर लीन्हे
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा ❋ अभिमनुजारि करेउ धरिछारा
बरत अग्नि चलिभा तवजारन ❋ प्रकटीं शिखा हजार हजारन
तब अभिमनु जलबाण चलाये ❋ क्षण भीतर सब अग्नि बुझाये

दो० अग्नि बुतायो नीरसों, बाढ़ी जल की धार ।
कौरव दल बूड़नलगे, चहुँ दिशि परी पुकार ॥

रविसुत मारुत बाण चलायो ❋ पवन तेज सब नीर सुखायो
अभिमनु तज्यो सर्पकर बाना ❋ नागन कियो पवन सब पाना
डसि धाये तब बिषधर कारे ❋ याबिधि बहुत सेन संहारे
बरहि बाण तब करण चलाये ❋ मोरन पकरि सर्प सब खाये
अभिमनु क्रोधवन्त होइ रन में ❋ मारे बाण कर्ण के तन में
अपर साठि शर छांड़े पायल ❋ तातें भये द्रोण गुरु घायल
कृपके हृदय बाण दश मारे ❋ असी बाण द्रोणहि परिहारे
अपर पांच शर भाबुक छूटे ❋ भूरिश्रवा हृदय महँ टूटे
तातें धनुष पन्थ सुत अत्री ❋ मोहित भे दुश्शासन क्षत्री
मारे बाण काल के आके ❋ काटे रथ के ध्वजा पताके

दो० सात लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझि गिरे मैदान ।
जिमिबर्षतजलधरजलहि, इमि बर्षत ते बान ॥

अभिमनु कीन्हो सेन निकन्दन ❋ क्रोधितभये आपु रबिनन्दन
पांच बाण तीक्षण कर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर दीन्हे
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े ❋ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़े
दै गुण फोंक बाण परिहारे ❋ चारिउ तुरँग सारथी मारे
बिरथ भये कर्णहि जब जाने ❋ तब गुरु द्रोण शरासन ताने
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये ❋ अश्वत्थाम कृपा तब आये

दुश्शासन सब बन्धुन लीन्हे ❋ महामारु अभिमनु सों कीन्हे
रथी महारथि पैदल हाथी ❋ अभिमनु एक न दूजो साथी
कर्ण बीर रथ पर चढ़ि आये ❋ सब मिलि बाणबृष्टि झरि लाये
दो० उत सेना सरदार सब, इत अर्जुनसुत एक।
सबै बीर घायल किये, अभिमनु राखी टेक॥
कुरुपतितबहिं क्रोधअतिकीन्हे ❋ मारु मारु कै आज्ञा दीन्हे
सुनिकै कर्ण बाण कर लीन्हे ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे
जो शर परशुराम ते पाये ❋ क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये
दैकै हांक बाण तब छांटे ❋ करते धनुष कुँवर को काटे
टूटो धनुष कुँवर तब डारे ❋ करगहि शक्ति तबहिं परिहारे
तब अभिमनु अस कहा बुझाई ❋ देखि तुम्हारि अधर्म लराई
तुम हम ऊपर बाणहिं छांटे ❋ बीचहि कर्ण धनुष मम काटे
यह कहि कुँवर शक्ति परिहारे ❋ कर्णहिं हृदय ताकिकै मारे
मूर्च्छित किये कर्ण ते क्षत्री ❋ अर्जुनपुत्र महाबल अत्री
बिनु धनुपाणि कुँवर को पाये ❋ घेरि बीर सब निकटहि आये
दो० अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगगण के यूथमहँ, डरत न केहरि एक॥
लैकै शूल कियो परिहारा ❋ बीर अनेक खेत महँ मारा
जूझी अनी भभरि कै भागे ❋ हँसिकै द्रोण कहन अस लागे
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर ❋ सब क्षत्रिन महँ बड़ो उजागर
धन्य सहोद्रा जग में जाई ❋ ऐसे बीर जठर जनमाई
धन्य धन्य जग में पितु पारथ ❋ अभिमनु धन्य धन्य पुरुषारथ
एक बीर लाखन दल मारे ❋ अरु अनेक राजा संहारे
धनु काटे शङ्का नहिं मनमों ❋ रुधिर प्रबाह चलत सब तनमों
यहि अन्तर बोले कुरुराजा ❋ धनुष नाहिं भाजत केहि काजा
एक बीर को सबै डरत हैं ❋ घेरि क्यों न रथ धाइ धरत हैं
बालक देखु करी यह करणी ❋ सेना जूझि परी सब धरणी

दो॰ दुर्योधन या विधि कह्यो, कर्ण द्रोण सों बैन ।
बालक सब सेना बधी, तुम सब देखत नैन ॥
यह कहिकै दुर्योधन आये ❀ शब्द बीर आगे ह्वै धाये
क्षत्री घेरो अभिमनु रणमों ❀ मानहुँ रबि आच्छादित घनमों
लैकै खड्ग फरी गहि हाथा ❀ काट्यो बहु क्षत्रिन को माथा
अभिमनु धाइ खड्ग परिहारा ❀ सम्मुख ज्याहि पावै त्याहि मारा
भूरिश्रवा बाण दश छांटे ❀ कुँवर हाथ को खड्गहिं काटे
तीनि बाण सारथि उर मारे ❀ आठ बाण ते अश्व सँहारे
सारथि जूझि गिरे मैदाना ❀ अभिमनु बीर चित्त अनुमाना
यहि अन्तर सेना सब धाये ❀ मारु मारु कै मारन आये
रथको खैंचि कुँवर कर लीन्हे ❀ ताते मारु भयानक कीन्हे
अभिमनु कोपि खम्भ परिहारे ❀ यक यक घाव बीर सब मारे
दो॰ अर्जुनसुत इमि मारु किय, महाबीर परचण्ड ।
रूप भयानक देखियतु, जिमि यम लीन्हे दण्ड ॥
क्रोधित होइ चहूंदिशि धाये ❀ मारि सबै सेना बिचलाये
यहिबिधि किये भयानक भारथ ❀ साहस धन्य धन्य पुरुषारथ
ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हे ❀ दश सहस्र राजा बध लीन्हे
मारि सबै राजा बिचलाये ❀ करलै गदा कुरूपति धाये
शतबान्धव नृप संगहि आये ❀ अरु अनेक राजा मिलि धाये
चहुँदिशि महारथी सब घेरे ❀ क्षत्री सबै बीर बहुतेरे
नाना अस्त्र सबहिं परिहारे ❀ निकट न जाहिं दूरि ते मारे
दुर्योधन कहँ देखन पाये ❀ गहे खम्भ अभिमनु तब धाये
जुरे बीर क्षत्री बहुतेरे ❀ खम्भ घाव ते बधेउ घनेरे
जब नरेश के निकटहि आये ❀ द्रोण गुरू दश बाण चलाये
दो॰ गुरू द्रोण अतिक्रोध कै, मारे बाण अचूक ।
कुँवर हाथको खम्भ तब, काटि किये दुइ टूक ॥
खम्भ कटे अभिमनु भे कैसे ❀ मणिबिनु फणिकबिकल जग जैसे

क्रोधित भये सहोदा नंदनु ❀ चरणघात कै तोरेउ सो धनु
रथते कूदि कुँवर कर लीन्हे ❀ चक्रा उठाय रणहि शुभकीन्हे
चक्रा कुँवर कर शोभित कैसे ❀ हरि कर चक्र सुदर्शन जैसे
रुधिर प्रवाह चलत सब अङ्गा ❀ महाशूर मन नेकु न भङ्गा
गहिकै चक्रा चहूं दिशि धावै ❀ जेहि पावै तेहि मारि गिरावै
दुर्योधन पर चक्रा चलाये ❀ गदा रोंपि कुरुनाथ बचाये
क्षत्री घेरि लगे शर मारन ❀ जुरे आइ केते हथियारन
दुश्शासन सुत गदा प्रहारे ❀ अभिमनु के शिर ऊपर मारे
जूझे कुँवर परे तब धरणी ❀ जगमहँ रही सदा यह करणी

दो० धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहौ मैदान ।
पै गुरु द्रोण मलीन मुख, कहे वचन परिमान ॥

गुरु द्रोण यहि भांति बखाने ❀ हर्षि नरेश सबै सुख माने
अभिमनु मरण सुनैगो पारथ ❀ करिहै महाभयानक भारथ
इन्द्र वरुण यम होयँ सहायक ❀ कह नहिं अर्जुनजितिबेलायक
भीमादिक यह युद्ध बिचारे ❀ पै जयदर्थ सबहि शर मारे
क्रोधित भये पाण्डु के नन्दन ❀ फेंको सिन्धुराज को स्यन्दन
गिरे दूरि उठि निकटहि आये ❀ भीम उपर शत बाण चलाये
धर्मराय तब कीन्ह दरेरो ❀ पै जयदर्थ मारि मुख फेरो
लै अनीक सब कुरुपति धाये ❀ जहँ जयदर्थ लरत तहँ आये
कौरवदल जय शंख बजाये ❀ अभिमनु गिरे भूमि सुनि पाये
धर्मराय सुनि मौनहि गहेऊ ❀ सन्ध्या भयो युद्ध तब रहेऊ

दो० कुरुपाण्डव फिरिकै चल्यो, भयो युद्धको शेश ।
भीमादिक क्षत्री सबै, रोवत धर्मनरेश ॥

हाहा अभिमनुअभिमनु भाखेउ ❀ देखे बिना प्राण किमि राखेउ
सुत सपूत तोसों नहिं पावों ❀ अर्जुनको किमि वदन देखावों
रोवत भीम नकुल अरु मन्त्री ❀ सेना सबै महाबल क्षत्री
रोवत सबै भवन कहँ आये ❀ ऊर्ध्वबाहु केशहि छिटकाये

अभिमनु कहिकै सबै पुकारत ❀ दोऊ हाथ शीश पै मारत
अन्तःपुर पहुँची यह बानी ❀ श्रवणन सुनी सहोद्रा रानी
कुन्ती सुनत महादुख पाई ❀ रोदन करत शूल उर छाई
सुनत सहोद्रा जननी कैसे ❀ बिना जीव कठपुतरी जैसे
बहत प्रवाह नयन को पानी ❀ हिमऋतु मनो कमल कुँभिलानी
हा हा पुत्र परम सुखकारी ❀ सुन्दर मुख पै मैं बलिहारी

दो॰ पुत्र शोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत ।
नयन नीर कज्जल सहित, [illegible]

जो तुम्हरे पितु होते सङ्गा ❀ तुमसों को जीतत रणरङ्गा
कुन्ती सहित द्रौपदी रानी ❀ बहत प्रवाह नयन भरि पानी
करुणा करहि ठोंकिकै माथा ❀ रथ गये पैये नहिं हाथा
यह सुधि सुनि बैराट कुमारी ❀ बारह बर्ष बयस सुकुमारी
पति जूझे रण सुनिकै मखो ❀ मानहुँ शोक समुद्रहि पखो
कहां गयो प्रीतम सुखदायक ❀ चक्रब्यूह के भेदनलायक
जूझे खेत जगत यश लीन्हे ❀ जयमाला सुरकन्यन दीन्हे
तुम सुरपुर बिलसहु सुकुमारा ❀ म्वहिं अनाथ को नाथ बिसारा
हे स्वामी म्वहिं दरशन दीजै ❀ नातरु संग आपने लीजै
पांच मास मम भये बिवाहा ❀ बिधि यहि समय बिछोहा नाहा

दो॰ लगन ब्यास गनि थापेऊ, दाता त्रिय बैराट ।
अर्जुनसुतबरकृष्णहित, बिधिदुखलिखाललाट ॥

यह सुनि रोइ उठीं दुख बानी ❀ कुन्ती सहित द्रौपदी रानी
ठोंकि ललाट कर्म बिधि सोये ❀ सुनि दुख पशु पक्षी सब रोये
करुणा कर सब रानिन जाई ❀ उत अर्जुन ने रची उपाई
पारथ ब्रह्म अस्त्र परिहारे ❀ रणमा शिशपकागण मारे
जय करि कह कीजै हरि गवना ❀ हांको रथ जैये त्रियभवना
आजु चित्त कछु चञ्चल मेरे ❀ ताते उपजत शोच घनेरे
बाम आंखि बायों भुज फरकै ❀ जिय अकुलात चहत हिय दरकै

श्रीहरि सुनि यहि भांति बखानो ❀ मोरहु जिय अब है अकुलानो
की गुरु द्रोण सूझ क्षत कस्यो ❀ धर्मराय पर संकट पस्यो
सब जानत हैं अन्तरयामी ❀ अभिमनुमरण कहो नहिं स्वामी

दो० हांको रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरङ्ग ।
अशकुन देखो पन्थ महँ, भा पारथ मनभङ्ग ॥

आतुर ह्वै चलि आये तहँवां ❀ रोदन करत भूमिपति जहँवां
चलत प्रबाह अश्रु हैं नयना ❀ अर्जुन कही कृष्णसों बयना
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव ❀ नहिं जानत बिधि कीन्हो काधव
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां ❀ रोदन करत सबै हैं जहँवां
अभिमनु नाहिं सभामहँ देख्यो ❀ जूझ्यो पुत्र सत्य करि लेख्यो
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना ❀ अभिमनु कहाँ न देखहुँ नयना
धर्मराज सब बात सुनाई ❀ अकथकथा बिधिकी प्रभुताई
चक्राव्यूह गुरु द्रोण बनाये ❀ दुर्योधन कहि दूत पठाये
भेदहु व्यूह आनिकै लरिये ❀ नातौ हारि गवन बन करिये
सो सुनिकै हम बहुदुख कीन्हेउ ❀ सब क्षत्रिन को आज्ञा दीन्हेउ

दो० व्यूह भेद जानहिं नहीं, कहहिं सबहिं परिमान ।
सब क्षत्री हिय हारिगे, अभिमनु लीन्हो पान ॥

बहुत भांति मैं कहि समुझायो ❀ अभिमनु कैसहु मनहिं न आयो
छहों द्वार तोरौं सतिभावा ❀ सतवां को रण मोहिं न आवा
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ ❀ सतवां द्वार भार मम गहेऊ
सो सुनिकै साजी हम सयना ❀ चक्राव्यूह देखत तब नयना
देखत सबहि अचम्भव भयऊ ❀ अभिमनु व्यूह भेदिकै गयऊ
भीमादिक क्षत्री सब धाये ❀ पै जयदर्थ सबहिं अटकाये
छहों द्वार सुत पेलिकै गयऊ ❀ सतयें द्वार महारण भयऊ
सो सब काहुन देखो नयना ❀ जूझेउ पुत्र सुनेउ यह बयना
यह सुनि अर्जुन मूर्च्छित भयऊ ❀ रोइकै कृष्ण अङ्क महँ लयऊ
अर्जुन कृष्ण बिकल होइ रोये ❀ पुत्र शोक चाहत जिय खोये

दो० अर्जुन भाष्यो भीम सों, प्राण कि कीन्हे गौन ।
सुतहिं जुझायो खेतमहँ, तुम सब आयो भौन ॥
चौदह वर्ष वैस अति बारा ❀ द्रोण कर्ण के युद्ध बिचारा
याही समय होत हम साथा ❀ बधे घेरि सुत मनहुँ अनाथा
सुन्दर रूप मनोहर आनन ❀ खण्ड खण्ड वीरन किये बानन
करुणा कै पारथ यह भाखैं ❀ पुत्र बिना हम प्राण न राखैं
सुनु हो बीर महाधनुधारी ❀ तुमपर प्राण करौं बलिहारी
हम जीवत तुम जीवत रनमों ❀ यहै शोच आवत है मनमों
धर्मराय के कामहिं आयो ❀ हमहिं छांड़ि तुमकहां सिधायो
क्षत्री सबै बीर सरदारा ❀ सबहि कुशल जूझे तुम बारा
भीमसेन बहुतै गल गाजे ❀ सुतै जुझाय खेत तजि भाजे
सुनिकै भीम कहन अस लागे ❀ लज्जावन्त क्रोध सों पागे
दो० सब मिलिकै भारत रचो, राज्य भोग के हेत ।
अब रोवत बिलखत कहा, जब सुत जूझेउ खेत ॥
जो मैं होतिउँ सुत के साथा ❀ सेनसहित बधतिउँ कुरुनाथा
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ चलहु गवन अन्तःपुर कीजै
अर्जुन कही सुनो हो माधव ❀ अब उत जाइ कीजिये काधव
आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं ❀ रानिन में का बदन दिखैहैं
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये ❀ बहिन सहोद्रा देखन पाये
धाइ सहोद्रा चरणन लागी ❀ हे माधव हम परम अभागी
श्रीहरि तुम कीन्हे प्रतिपालक ❀ भारथ जूझिगयो मम बालक
अर्जुन से पितु मातुल केशव ❀ रण जूझे सुत बड़ो अँदेशव
करुणा करै सहोद्रा लागी ❀ बिह्वल बिकल शोक ते पागी
दो० बधू उतरि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजै जाहिं हम, पति सँग यादवराइ ॥
तेरे गर्भ बाल भाषो गनि ❀ कुरुपाण्डव को वंश शिरोमनि
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी ❀ एक छत्र बसुधा अधिकारी

या विधि ते श्रीपति समुझाये ❀ अन्तःपुर ते बाहर आये
भोजन पान कहूं नहिं कीन्हे ❀ सेना सबहि समर मन दीन्हे
अर्जुन निकरि चले बनबासा ❀ पुत्र शोक ते जीव निरासा
श्रीपति अग्र न देखो पारथ ❀ पाछे चले सखा के सारथ
बनमों पारथ भेंटि मुरारी ❀ गहि कर बचन कहेउ बनवारी
पारथ शोच छांड़ि अब दीजे ❀ निर्मल ज्ञान चित्त में कीजै
काको सुत बान्धव पितु जगमों ❀ पन्थिकमित्रआहिजिमिजगमों
सगरादिक ऐसे नृप भयऊ ❀ ते सब यहि धरणीमहँ गयऊ

दो० कोइ न काहूको अहै, कीजै हृदय बिचार ।
सबलसिंह चौहान कह, मिथ्या है संसार ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनिकै अर्जुन तब यह भाखो ❀ दीनबन्धु जिय जात न राखो
पारथ संग हमारे ऐये ❀ अभिमनु तुमकहँ आनि देखैये
यह सुनि पारथको मन हरस्यो ❀ करि प्रणाम हरिके पग परस्यो
बिनतासुतकहँ सुमिरण कीन्हे ❀ आये गरुड़ कहन मन दीन्हे
मेरे संग चलहु तुम पारथ ❀ सुरपुर जाइँ तुम्हारे स्वारथ
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना ❀ क्षणमहँ गयो देवनिशि भवना
देखो जाइ महारण रङ्गा ❀ अभिमनु लरत दैत्य के सङ्गा
कृष्ण कही अभिमनु पहँ जैये ❀ पकरि बांह सुत हरि लै ऐये
सुत कहँ देखि महासुख पाये ❀ मिलिबे को आतुर होइ धाये
मोहिं छांड़ि कित कीन्हे गवना ❀ हे सुत बेगि चलो निजभवना

दो० सो सुनिकै अभिमनुकही, काह बकत बिन काज ।
पुत्र पुत्र भाषत कहा, जीव न आवत लाज ॥

काको सुत काको रथ हाथी ❀ जैसे मिलत सपनमहँ साथी
पितु ते सुत सुत ते पितु करणी ❀ जैसे चलत रहट को ढरणी
हम शशि पुत्र बुद्ध है नामा ❀ रोदन काह करत बेकामा
यह सुनि अर्जुन बहुत लजाये ❀ रहे मौन कछु बचन न आये

मन महँ ज्ञान किये तब पारथ ❀ सत्य कहत जग सबै अकारथ
अर्जुन गये कृष्ण के पासा ❀ कही कहत सुनि बचन उदासा
शशि को पुत्र कहै बुध नामा ❀ काको सुत आयो केहि कामा
सुत नातो छांड़ो केहि कारण ❀ मोते भाषौ त्रास निवारण
आदि कथा हरि भाषन लागे ❀ सुनिये भारत परम सभागे
जब हम जठर देवकी जाये ❀ देव दैत्य सब जगमहँ आये

दो० क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीला के काज ।
कुरुपति कलिको अंश है, धर्म युधिष्ठिर राज ॥

सुरगण सब पाण्डव हितकारी ❀ कुरुपति असुरनको अधिकारी
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजै ❀ बुध सुत देहु जन्म जग कीजै
बिधि सों बिनय सुधाकर कह्यो ❀ इहई पुत्र मोर घर अह्यो
जौलगि सुतहिजन्मजग करिहौं ❀ काहि देखि धीरज मन धरिहौं
हँसि बिधि कही निशापति आगे ❀ पन्द्रह बर्ष देहु म्वहिं मांगे
जन्म सहोद्रा गर्भहि लैहै ❀ भारत मों बहुतै यश पैहै
पन्द्रह बर्ष लागि हम मांगे ❀ एको दिन नहिं रहिहै आगे
जो यहि बीच आव नहिं पैहै ❀ दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै
तुम ते कही सुनो हो पारथ ❀ शोच न कीजै आपु अकारथ

दो० अर्जुन को परबोध कै, लै आये प्रभु ऐन ।
शोक मिटा तन क्रोध भो, कहो कृष्ण सों बैन ॥

कालिह युद्ध जयदर्थहि मारौं ❀ नातरु देह अग्नि मों जारौं
यह प्रण मैं कीन्हो अपने मन ❀ बधौं शत्रु की देहुँ अपन तन
प्रणसुनि श्रीहरि कहिबे लीन्हे ❀ जयद्रथ कहँ शंकर बर दीन्हे
ताते अजय भयो है पारथ ❀ केहिबिधितुम करिहौपुरुषारथ
हम तुम मिलि कीजै अब गवना ❀ चलु जाईं शंकर के भवना
नर नारायण सङ्ग सिधाये ❀ क्षणमहँ गिरिकैलासहि आये
चहुँदिशि बनसपती सब फूले ❀ मत्त मधुप गुञ्जत रस भूले
बटतर बैठे हैं गङ्गाधर ❀ उमासहित हरिनाम जपत हर

अङ्ग बिभूति बसन मृगछाला ❀ चन्द्र ललाट गरे शिरमाला
शीश जटा महँ गङ्ग बिराजत ❀ लोचन तीनि मनोहर छाजत

दो० शंकर देख्यो कृष्ण कहँ, उपजो चित्त अनन्द ।
बिहँसि बदन पूछन लगे, शरदश्याममुखचन्द ॥

करि आदर आसन बैठारे ❀ कहो आपु केहि काज सिधारे
हँसि हरि कही सुनहु गङ्गाधर ❀ तुम दीन्हो जयदर्थहि को बर
अभिमनु जूझिगिरे भारत रण ❀ ता कारण पारथ कीन्हो प्रण
कालिह बधौं नहिं सिन्धुनरेशहि ❀ तौ मैं अग्नि में करौं प्रबेशहि
पारथही अब या बर दीजे ❀ कालिह बधहि जयदर्थहि कीजे
शंकर कही दीन्ह बर पारथ ❀ बधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ
जाको सखा आपु श्रीकेशव ❀ जय करिहौ रण कौन अँदेशव
लैकर धनुष बतावब बाना ❀ यहि बिधिते कीजहि संधाना
लै अर्जुन माधव गृह आये ❀ समाचार सब कुरुपति पाये
अर्जुन प्रण कीन्हेउ यहि कारण ❀ कालिह चहत जयदर्थहि मारण

दो० जो न बधौं जयदर्थहि, करहुँ अग्नि परबेश ।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये, सुधि सब सुनी नरेश ॥

सुनि जयदर्थ महाभय मानी ❀ इतई रहब मरण निज जानी
कुरुपति पहँ कीन्हो तब गवना ❀ कही जात हम अपने भवना
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै ❀ को सन्मुख होइ तिनसन लरिहै
तेहिकारण भवनहिं बासि कीजे ❀ शंकर शरण जाइकै लीजे
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना ❀ अबनहिं कीजिय ममअपमाना
हम सब तव रक्षा रण करिहैं ❀ कर्णादिक लै आगे लरिहैं
सब मिलिकै करिये पुरुषारथ ❀ कैसे तुमहिं बधैंगे पारथ
भागि गये पुनि अमर न होइहौ ❀ क्षत्रिन मध्य लाज बहु पैहौ
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं ❀ सांझ समय तब अर्जुन मरिहैं
पारथ मरैं युद्ध हम जीतैं ❀ तुम काहेक जिय मानत भीतैं

दो० सेनापति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहिं ।

सांझभये अर्जुनमराहिं, बिधि जय दीन्हो मोहिं ॥
ताते अब हम तुमसों कहिये ❀ करि सहसा अस्थिर ह्वै लहिये
सिन्धुराज तब बोले बयना ❀ कहूं न ऐसो देखेहुँ नयना
पारथ कोप धनुष जब धरिहै ❀ को समरथ जो सन्मुख लरिहै
जब बिराटपुर गोधन हरेऊ ❀ अर्जुन एक सबै बश करेऊ
मोहिं ते कहेउ यहै त्रिपुरारी ❀ पारथसम नहिं कोउ धनुधारी
उठिकै करण कही परतक्षक ❀ कालिह दिवस हम होवें रक्षक
तब जयदर्थ कहा समुझाई ❀ सबको बल हम जानत भाई
जो गुरु द्रोण बांह गहि राखैं ❀ रक्षा करहिं पैज करि भाखैं
तौ मैं रहौं सुनो नृप बयना ❀ नतरु जाइहौं अपने अयना
कुरुपति कही सबहि मिलि जैये ❀ जाय द्रोण सों बात जनैये
दो० यहकहिकैसबमिलिचले, गये द्रोण के भौन ।
आदर कै आसन दिये, किमिनृपकीन्हेउगौन ॥
सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ ❀ अर्जुन प्रण कीन्हेउ अस अहेऊ
कालिह दिवस जयदर्थहि मारौं ❀ नहिं तौ देह अगिनिमहँ जारौं
जो गुरुद्रोण होहु तुम रक्षक ❀ दृढ़कै बांह गहौ परतक्षक
कालिह दिवस जयदर्थ बचैये ❀ पारथ मरत युद्ध जय पैये
यह सुनि द्रोण कहे तब लीन्हे ❀ अब मन अपने मैं प्रण कीन्हे
ऐसो ब्यूह करौं निर्माना ❀ जाको भेद कोउ नहिं जाना
सब आगे होइहैं हम रक्षक ❀ देखो को आवत परतक्षक
जो कोटिन अर्जुन चलिआवैं ❀ तौ मोते नहिं द्वार छड़ावैं
कालिहकरौंयहिबिधि पुरुषारथ ❀ कृष्ण समेत जीतिये पारथ
यहि बिधि बाणबुन्द झरिलाई ❀ पाण्डव सेन मारि बिचलाई
दो० या प्रण मैं तुमते करहुँ, सुनहु बचन परमान ।
पारथ अन्त न पावहीं, करौं ब्यूह निर्मान ॥
कही द्रोण अब साजहु सैना ❀ रचत ब्यूह अब देखो नैना
कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे ❀ सुनिकै सबहि भूपगण गाजे

सारथि रथ जोते हय चोखे ❋ इन्द्र बिमान परतहैं धोखे
चढ़े अश्व असवार महाबल ❋ उदधिसमान पियादनको दल
सब जुरिकै आये मैदाना ❋ कीन्हे द्रोण व्यूह निर्माना
विकटव्यूह अति निकट बनाये ❋ जाको अन्त कहूँ नहिं पाये
कमलव्यूह तेहि मध्यहि फेरेउ ❋ शतदलको व्यूहहि तेहिघेरेउ
कमलव्यूह महँ व्युह बहुतेरे ❋ ते सब रहेउ अस्त्र गहि घेरे
आपु द्रोण राखो है चक्रहि ❋ सोमदत्त बल समता शक्रहि

दो० बाह्लीक गन्धार नृप, दोउ बाजिरहि ताहि ।
करणमध्य अस्थलरहो, सबहि सराहत जाहि ॥

अग्रभाग गुरु द्रोण बिराजत ❋ पहिरि सनाह सिंहसम गाजत
कमल मध्यमहँ जयद्रथ राखो ❋ महाबिकट बलजात न भाखो
षट योजन रचि व्यूह बनाई ❋ योजन तीनि बनी चौड़ाई
आठ क्षौहिणी दल सब राखे ❋ है समूह दल जात न भाखे
कही क्षौहिणी दल परिमाना ❋ यहि ते बुध करिहैं अनुमाना
रथपर एक रथी छबि पावै ❋ तेहि पाछे पचास गज धावै
गज पाछे शत शत असवारा ❋ बन महँ करत शत्रु संहारा
एक एक असवारन पाछे ❋ शत शत पैदल आवत आछे
इतनो होय रथी त्यहि कहिये ❋ शूरबीर कोई रण लहिये
ऐसो रथी पांच शत आये ❋ ताकी सेना एक कहाये

दो० ऐसो दल सेना जुरी, प्रतिनी कहिये ताहि ।
दश प्रतिनी जुरिकै चले, यही बाहिनी आहि ॥

ऐसे दल बाहिनि जुरि आई ❋ एक क्षौहिणी फौज. कहाई
आठ क्षौहिणी दल परिमाना ❋ कीन्हो व्यूह निकट निर्माना
गहिकै धनुष द्रोण गुरु कह्यो ❋ सब क्षत्री दृढ़ कै थल गह्यो
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये ❋ अर्जुनसों कीन्हो रण चहिये
अरुण उदय पाण्डव दल साजे ❋ शब्द अघात दमामे बाजे
स्वकर रथहि जोते बनवारी ❋ चढ़े आइ पारथ धनुधारी

पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हे ❀ दोउ तुणीर कसिकै दृढ़ कीन्हे
शिरपर मुकुट मनोहर नीको ❀ भाल उदित हरिमंदिर टीको
यज्ञोपवीत विराजत कांधे ❀ पीताम्बर कटि कसिकै बांधे
सुन्दर श्याम शरीर विराजत ❀ कुण्डल कान मनोहर छाजत
दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि, नहिं पायो ज्यहिअन्त ।
भक्त हेतु जोती गहे, महिमा अगमअनन्त ॥
धर्मराय मैदानहि आये ❀ तब श्रीपति यह बचन सुनाये
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❀ लै सेना इतही अब रहिये
जो सब मिलि रण को उरझैये ❀ ब्यूह भेद को अन्त न पैये
अर्जुन रथी संग हम सारथ ❀ देखो नृप नयनन पुरुषारथ
धर्मराय कछु कहिबे लीन्हे ❀ अर्जुन सौंपि कृष्ण को दीन्हे
तीनि लोक भाषत परतक्षक ❀ पाण्डुबंश के माधव रक्षक
पारथ बीर अहैं हम सारथ ❀ कहा शोच करिये पुरुषारथ
अस कहिकै माधव रथ हांको ❀ गर्जत नन्दिघोष के चाको
ध्वजा उपर हनुमन्त छबि पाये ❀ चञ्चल पवन अश्वगति धाये
पहुँचो निकट ब्यूह जब पेख्यो ❀ अतिअगाधदल परत न लेख्यो
दो० अर्जुन देख्यो द्रोण तब, संग कोउ नहिं सैन ।
क्रोधित शर संधानिकै, कह्यो कृष्ण सों बैन ॥
हे श्रीपति तुम अन्तरयामी ❀ मेरो प्रण यह सुन्यो न स्वामी
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं ❀ ब्यूह द्वार में जान न पावैं
श्रीपति कही धरहु धनु पारथ ❀ देखत कहा करहु पुरुषारथ
अर्जुन गुरुहि कीन्ह परणामा ❀ आशिष दीन्ह होय मनकामा
द्रोण प्रथम कीन्ह्यो संधाना ❀ एकहि बार तजे दोउ बाना
गुरु अरु शिष्य करत रण सरसे ❀ दोउदिशि बाणबुन्द सम बरसे
साठि बाण अर्जुन तन मारे ❀ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे
सहस बाण लागे हनुमानहिं ❀ लघुसंधान तजत गुरु बानहिं
दो० अर्जुन बर्षत बाण इमि, जिमि सावन जलधार ।

सघन सेन भेदन करत, निकरि जात शर पार ॥
तब गुरुद्रोण क्रोध जियक़ीन्ह्यो ❀ महामारु पारथ पर दीन्ह्यो
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे ❀ शरते पग ठहरात न घोरे
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ सरसनिरस कहि जात न बाना
इन्द्र अस्त्र पारथ तब कीन्हेउ ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हेउ
छूटत बाण शब्द घहरानेउ ❀ अचरज कै सबहीं जियजानेउ
हँसिकै द्रोण किये संधाना ❀ तजेउ स्वामिकार्त्तिककर बाना
ताते इन्द्र अस्त्र छबि कीन्हेउ ❀ तब पारथ यमअस्त्रहि लीन्हेउ
मृत्युक अस्त्र द्रोण परिहारेउ ❀ तब यम अस्त्रहि पारथ मारेउ
अस्त्र अस्त्र सों कीन्ह निवारण ❀ तब लागे तीक्ष्णशर मारण
पारथ बाण कीन्ह संधाना ❀ इत गुरु द्रोण सरस मैदाना

दो० कही द्रोण अर्जुन सुनो, हार न छांड़ौं आज ।
दीनबन्धु पारथ सहित, समुझि कीजिये काज ॥

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ ❀ गुरुसों होइ न सकै पुरुषारथ
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो ❀ व्यूह भेद अजहूं नहिं पायो
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं ❀ भेदि व्यूह जयदर्थहि मारहिं
अर्जुन कही उतै होइ जैये ❀ रणमों कैसे पीठि दिखैये
माधव कही न जानत पारथ ❀ भूलि बात यह कही अकारथ
कहा न कीजै अपने काजा ❀ द्विज गुरुते भाजे नहिं लाजा
अस कहिकै हरि रथहि चलायो ❀ द्रोणहि तजि अन्तरहोइ आयो
लै ताजन हरि अश्वन मारेउ ❀ दै करि हांक व्यूह पर डारेउ
बहुतक पारथ मारि गिरायो ❀ कछु रथचाक कृष्ण कचरायो
कछु हय धका उलटिकै डारेउ ❀ ताजन घाव कृष्ण कछु मारेउ

दो० नन्दिघोष रथ जाइकै, व्यूह किये परवेश ।
चहूं ओर शर वर्षहीं, क्षत्री सबै नरेश ॥

सेन मध्य रथ धावत कैसे ❀ बोहित चलत सिन्धुमहँ जैसे
अर्जुन कीन्हेउ शर संधाना ❀ मारन लगे क्रोधकरि बाना

अगणित कीन्हेउ सेन निकन्दन ❀ नन्दिघोष हांकत जगवन्दन
बीर अनेक आनि कै घेरहिं ❀ मारहिं मारु मारु कहि टेरहिं
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❀ लागे करन सरस पुरुषारथ
रथ पर लाग शूल शर बर्षै ❀ युद्ध देखि पारथ मन हर्षै
बीर अनेक. अस्त्र परिहारे ❀ खड्ग घाव रथ ऊपर मारे
अर्जुन कोपि चलायो बाना ❀ योजन एक कियो मैदाना
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बरधारी
योजन एक किये रथ आगे ❀ धर्मराय तब कहिबे लागे

दो० धनुटँकोर ध्वनि सुनिपरत, कहा होत धौं आहि ।
हरि अर्जुन सुधि लेनको, अब पठवों मैं काहि ॥

कह्यो नरेश सात्यकी जैये ❀ सुधि लैकै मोपर फिरि ऐये
नृप आज्ञा माथे धरि लीन्हेउ ❀ रणको गमन सात्यकी कीन्हेउ
तब सात्यकि देखेउ परतक्ष ❀ द्वारहि व्यूह द्रोणगुरु रक्षक
जबसात्यकिअतिनिकटहिआये ❀ हँसिकै द्रोण कहन मनलाये
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा ❀ निश्चय भयो काल को खावा
यह सुनि क्रोध भये बहु नाना ❀ एक बार मारे शत बाना
ते सब शर गुरु बीचहि काटे ❀ पांच बाण तिन फिरिकै छांटे
द्रोण सात्यकी भा रणरङ्गा ❀ दूनों बीर महाबल अङ्गा
दोऊ सरस रचेउ पुरुषारथ ❀ कीन्हेउ महाभयानक भारथ
द्रोण गुरू या बिधि शर जोरे ❀ व्यूह द्वार ठहरात न घोरे

दो० हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकि अज्ञान ।
बाहर होइ अर्जुन गयो, तुम चाहत इत जान ॥

यम अरु इन्द्र बरुण जो आवैं ❀ व्यूह द्वार होइ जान न पावैं
सुनि सात्यकी किये पदबन्दन ❀ बेखटके हांकेउ तब स्यन्दन
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ ❀ चक्रलीक मारग धरिलीन्हेउ
जाइ व्यूह कीन्हा परबेशा ❀ रण महँ जीते बहुत नरेशा
चहुं ओर क्षत्री शर मारत ❀ नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत

जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना ❀ चले सात्यकी मारत बाना
लरत सात्यकी आयउ तहँवां ❀ भूरिश्रवा भूप है जहँवां
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ क्रोधित लाग चलावन बाना
आयो रथ अति निकटहि जाने ❀ भूरिश्रवा आनि लपटाने
रथते उतरि परे दोउ धरणी ❀ मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहु करणी

दो० भूरिश्रवा महाबल, बर दीन्हो तेहि ईश ।
गहे केश तेहि खड्गलै, काटन चाहत शीश ॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हे ❀ शीश चलाय घात नहिं कीन्हे
ताते घात नहीं बनि आई ❀ इहां कृष्ण अर्जुनहिं चेताई
भूरिश्रवा खड्ग गहि हाथा ❀ काटत आहि सात्यकी माथा
मन व्यापक शर अर्जुन छांटे ❀ खड्ग समेत बाहु तेहि काटे
उठि युयुधान खड्ग जब लीन्हे ❀ भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे
बधि नरेश अपने रथ आवा ❀ हांकि तुरँग आगे पथ आवा
बिक्रम युद्ध करत पुरुषारथ ❀ पहुँचो जाइ लरत जहँ पारथ
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये ❀ भले भये सात्यकि तुम आये
अर्जुन युद्ध करत परतक्षक ❀ नंदिघोष पाछे तुम रक्षक
अस कहि रथ हांकेउ बनवारी ❀ दल मारत अर्जुन धनुधारी

दो० एकै शर अर्जुन हनै, गुण जोरत दश बाण ।
छूटतही शत होतहै, बधत सहस परमाण ॥

यहि बिधिते सेना संहारे ❀ सन्मुख बीर जुरे ते मारे
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ सौहैं जुरे गहे शारँग शर
रहु रहु करि कीन्हो संधाना ❀ अर्जुन उर मारे दश बाना
कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ❀ बीस बाण हनुमानहिं मारे
सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ ❀ क्रोधित है जोरे शर पारथ
पढ़ि रविमन्त्र बाण सब छांटे ❀ सोमदत्त को शीशहि काटे
मुकुट समेत परो शिर धरणी ❀ अर्जुन रण कीन्हीं यह करणी
बाह्लीक गन्धार महारथ ❀ सेन समेत करत पुरुषारथ

नृप कौमोद धनुष कर लीन्हे ❀ महाभार्थ पारथ पर कीन्हे
चहुँदिशि ते लागे शर मारन ❀ बहुतक जुरे कुन्त हथियारन

दो० शर बर्षत हैं बीर सब, शक्तिखड्ग की धार ।
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँ ओर की मार ॥

सेना सबै आनि रथ घेरे ❀ मारु मारु कहि चहुँदिशि टेरे
पै पारथ मन नेकु न भङ्गा ❀ शर संधान करत रण रङ्गा
अर्जुन बधत सेन यहि रूपहि ❀ प्रलय होत जैसे जल भूपहि
लाखन दल कीन्हे शर खण्डित ❀ रुण्डमुण्ड धरणीसब मण्डित
जुरे आइ सब बीर महाबल ❀ पलभरि पारथ नहिं पावतकल
यहिबिधि करत घोर संग्रामा ❀ जूझिगिरे कुरुपति के कामा
पारथ बीरन करत निकन्दन ❀ नन्दिघोष हांकत जगबन्दन
जो दल अर्जुन मारि गिराये ❀ लोथिनपर हरि रथहि चलाये
याबिधिसघन फौज अतिभारी ❀ प्रभु सारथि पारथ धनुधारी
महारथी सब बाण चलावहिं ❀ नन्दिघोष रथ छांह छिपावहिं

दो० कठिनअस्त्र आवतजबहिं, जाहि न रिपुबाचिजाइ ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर, अर्जुन अङ्ग बचाइ ॥

नृप काम्बोज कठिन शर मारे ❀ कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे
श्याम शरीर रुधिर छबि पाये ❀ पीतबसन तनु अरुण सुहाये
क्रोधवन्त अर्जुन शर छांटे ❀ शायक मोद के शीशहि काटे
हांकत अश्व जगत के तारन ❀ हर्षि बीर लागे शर मारन
बहुतक आनि रथहि लपटाने ❀ महाशूर सब बांधे बाने
नन्दिघोष रथ राजन घेरे ❀ सावधान अर्जुन हरिटेरे
बाहु बिशाल कृष्ण परिहारत ❀ अभिरत ताजन तासों मारत
पुनि अनेक शर अर्जुन छांटत ❀ रुण्ड मुण्ड बसुधा सब पाटत
याबिधि होत युद्ध की करणी ❀ महामारु कछु जाइ न बरणी
रथ पाछे सात्यकि है रक्षक ❀ बीर अनेक बधे परतक्षक

दो० याबिधि अर्जुन रण करत, होत घोर संग्राम ।

हांक देत हय हांकहीं, सारथिश्रीघनश्याम॥
याबिधि अर्जुन करत मसाना ❀ भारत अवनि करत मैदाना
जोती गह्यो पतित के पावन ❀ थके तुरङ्ग सकैं नहिं धावन
अश्व कियो चाहत जल पाना ❀ पारथ सों हरि आपु बखाना
दोइ पहर दुइ ऊर्ध्वहि भयऊ ❀ तृषित तुरङ्ग तेज घटि गयऊ
अर्जुन कहा न करो अँदेशव ❀ जल उपाय करिहैं हम केशव
अस कहि पारथ करि संधाना ❀ भूमि निरखिकै मारयो बाना
भेदि पताल गयउ शर तहँवां ❀ भोगावति गङ्गा हैं जहँवां
याबिधिते शायक परिहारा ❀ निकरी फूटि गङ्ग कै धारा
ताते भयो सरोवर ऐसो ❀ निर्मल नीर सुधा को जैसो
पारथ कही कृष्ण सुनि लीजे ❀ रथते तुरँग खोलि जल दीजे
दो० अस्त्र घाव क्षत्री करत, अभिरतबीर अनन्त।
केहिबिधितेजलदीजिये, भाषैं श्रीभगवन्त॥
अर्जुन कोपि किये संधाना ❀ मारयो सेन कियो मैदाना
तब पारथ शर पंजर छाये ❀ अर्ध नीर शर ओट छिपाये
ताते बीर निकट नहिं आयो ❀ नन्दिघोष नहिं देखन पायो
तब अर्जुन भाषेउ भगवानहिं ❀ खोलहु अश्वकरहिं जलपानहिं
श्रीहरि सुनिकै जोती छोरे ❀ किये पान जल चारिउ घोरे
स्वकर नाथ अश्वन को धोये ❀ फरकन लगे सबै श्रम खोये
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे ❀ मिश्रितकरि मिश्रिततेहिदीन्हे
और दवा प्रभु आपु खवाये ❀ होइ बलवन्त भये सचुपाये
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे ❀ गङ्गोदक भारी भरि लीन्हे
चारिउ तुरँग आनि रथ जोरे ❀ चञ्चल चपल दिनन के थोरे
दो० कुरुदल सबै अनन्द सों, करन लगे जलपान।
धन्य धन्य पारथजगत, अरिदल करत बखान॥
शर पंजर ते भारत आगे ❀ चहूँओर शर बर्षन लागे
महाशूर जो आगे आवत ❀ क्षणमहँ अर्जुन मारि गिरावत

चपल तुरंग हांकि रथ दीन्हे ❋ पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे
अर्जुन बाण गिरत दल ऐसो ❋ प्रबलपवन कदलीवन जैसो
यहिविधिलरत शक्रनहिंमनमों ❋ रुधिर प्रवाह चलत सब तनमों
बीरन अङ्ग देखि दृग भूले ❋ जिमि वसन्त किंशुकतरु फूले
अरुण बरण शोणित लपिटाने ❋ खेलत मनहुँ अबीरन साने
पेलि फौज रथ याबिधि धावत ❋ जिमि मैनाकधरणिपर आवत
याविधिते रथ हांकत केशव ❋ धर्मराज इत करत अँदेशव
खबरि हेतु सात्यकी पठाये ❋ सुधि लैकै अजहूं नहिं आये

दो० भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्जुन के ठौर ।
उत चाहत सुधि लेनको, बीर न देखौं और ॥

साहस कै बांधव शुभ कीजै ❋ अर्जुनखबरिआनि म्वहिं दीजै
पहर अढ़ाई दिन भा आई ❋ अबलौं जिनके खबरि न पाई
नृप आज्ञा माथेपर लीन्हे ❋ रण को भीमसेन शुभ कीन्हे
ब्यूहद्वार जब रथ पहुँचाये ❋ द्रोणगुरू देखन तब पाये
क्रोधवन्त शारँग कर लीन्हे ❋ ते शर गुरु बीचहिं क्षय कीन्हे
अपर पांच शर मारे पायल ❋ ताते किये अश्व रथ घायल
हँसि गुरुद्रोण कही यह बानी ❋ सब दिन भीम परम अज्ञानी
नन्दिघोष रथ हरिसम सारथ ❋ सके न द्वार जान यह पारथ
यहि मारग है जान न पैहो ❋ पारथ गये तितहि है जैहो

दो० भीमसेन अतिक्रोधकरि, कहे द्रोण सों बैन ।
द्वार पेलि अब जातहों, तुमदेखतबधि सैन ॥

अर्जुन के धोखे जनि रहिये ❋ सावधान होइ शारँग गहिये
धावा उतरि छांड़िकै स्यन्दन ❋ मनमें सुमिरे श्रीजगबन्दन
लघु संधान द्रोण गुरु मारत ❋ बायें अङ्ग भीम सब टारत
प्रबल तेज शोणित शर छूटत ❋ बज्र शरीर लागि सब टूटत
जाइ गदा रथ हेठ लगाये ❋ लै भुजबल गुरुसहित उठाये
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ ❋ गिरेउ न बीच कोश दुइ गयऊ

गिस्यो भूमि टूट्यो तब स्यन्दन * अश्व सारथी भयो निकन्दन
उठिकै द्रोण पयादे धाये * तबलगि भीम ब्यूह महँ आये
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे * सन्मुख ज्यहि पाये तेहि मारे
गज मारे अनेक मय कीन्हे * बहुतक फेंकि गगनमहँ दीन्हे

दो० बहुतक मारे चरणते, बहु मुष्टिका प्रहार ।
भीमसेन सेना सबै, याबिधि कीन सँहार ॥

रथ ते रथ गज सों गज मारे * पकरि अश्व पर अश्वप्रहारे
सन्मुख आय बीर शर जोरत * गदाघाव तिनको शिर फोरत
यहिबिधि कीन्हे सेन निकन्दन * हय गज मत्त तोर बहु स्यन्दन
लैकर गदा क्रोध करि धाये * बीरन मारत बार न लाये
हांक मारिकै गदा प्रहारे * एक बार सहसन दल मारे
यहि बिधि लरत चले परतक्षक * पहुँचे जाय कर्ण तहँ रक्षक
देख्यो कर्ण बृकोदर आये * रहु रहु कहि गुण धनुष चढ़ाये
आवत कहा और के धोखे * असकहि बाण चलायो चोखे
भीम अङ्ग मारे शर जबहीं * हांक मारिकै धायो तबहीं

दो० रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग ।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीमरणरङ्ग ॥

अर्जुन कही भीम प्रभु आवत * युद्ध करत हैं हांक सुनावत
श्रीहरि कही दूरि अति पारथ * योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ
करण अपर रथही चढ़ि आये * क्रोधित ह्वै बहु बाण चलाये
लाग्यो घाव भीम के तन में * अधिकक्रोधउपज्यो तब मन में
लैकर गदा कोपि परिहारे * चारि तुरंग सारथी मारे
चक्र सहित टूटो तब स्यन्दन * आतुर भागि चले रबिनन्दन
औरहि रथ कीन्हो असवारी * सन्मुख जुरे बीर धनुधारी
तब याबिधि कीन्हो संधाना * भीम अङ्ग मारे दश बाना
अपर साठि शर भल्लक लीन्हे * ते शर चोट शीशपर कीन्हे
तीन सहस शर ऊपर लागे * थके भीम पग चलत न आगे

दो० कर्ण धनुर्द्धर अतिप्रबल, याविधि मारे बान ।
भीम अङ्ग झांझर सबै, मोहि गिरे मैदान ॥
श्रमजल रुधिर अङ्गमहँ बह्यो ❀ गजलोथिन के बीचहि रह्यो
मूर्च्छित भये पाण्डु के नन्दन ❀ कर्ण वीर हांक्यो तब स्यन्दन
रहे दूरि अति निकटहि आये ❀ धनुष अङ्गतन खोदि जगाये
उठो भीम कीजै रण करणी ❀ मोहित कहा पर्यो है धरणी
खाहु बहुत सोवहु निजधामा ❀ रणमहँ काह तुम्हारो कामा
जीवदान मैं ताते दीन्ह्यो ❀ कुन्ती मातु मांगिके लीन्ह्यो
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे ❀ भीमसेन मूर्च्छा तब जागे
शीतलपवन परस तन कीन्हे ❀ श्रम भा दूरि गदा कर लीन्हे
अपनो बल तब भीम सँभारो ❀ सेना पेलि अग्र पगु धारो
याविधि चल्यो करत पुरुषारथ ❀ कृष्णसमेत लरत जहँ पारथ
दो० भीमसेन कह हांक दै, मैं पहुँच्यों अब आय ।
पारथ तुम निरखत कहा, बधो सेन मन लाय ॥
भीम सात्यकी पाछे आवत ❀ आगे नन्दिघोष रथ धावत
भीमसेन राजन संहारे ❀ पुनि सात्यकी अमित दल मारे
हांके तुरँग पतित के पावन ❀ रुधिर नदी अति बढ़ी भयावन
मत्त गयन्द भिरे हैं कैसे ❀ दोऊ ओर कगारक जैसे
बार सेवार सरस अरुझाने ❀ फेन समान जो पग उतराने
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं ❀ ढाल मनहुँ कच्छपसमदमकहिं
कटे शीशधर बखतर राजैं ❀ मनहुँ ग्राह जलमाहिं बिराजैं
याविधि कीन्हेउ खेत भयंकर ❀ नाचत मुण्ड लिये हैं शंकर
भूत बेताल पिशाच सयाने ❀ रुधिर मांस सब खाइ अघाने
दो० योगिनि खप्पर भरत हैं, काक कङ्क की भीर ।
गीध शृगाल अनन्दसों, बोलत सरितातीर ॥
यहि बिधिते कीन्हेउ रण भारथ ❀ पारथ करत जहां पुरुषारथ
महाबीर कोटिन शर मारत ❀ बाणन ते अर्जुन संहारत

यहि बिधि होत महारण शरसे ❀ अस्त्रसमूह बुन्द सम बरसे
सबै शूर सरदार महाबल ❀ पलभरि नहिं पारथ पावत कल
अर्जुन हाथ बाण जो छूटत ❀ सेना बेधि धरणि महँ फूटत
धर्मराय कुरुपति के सैनहि ❀ हित अनहित रबि देखत नैनहि
चक्रवाक पाण्डवदल जानत ❀ समउलूककुरुदल निशिमानत
बध जयदर्थ पाण्डुदल भावत ❀ कौरवदल सब चहत बचावत

दो० व्यासदेव उपमा कही, दोऊ दलहि बिचारि ।
अर्जुनप्रण जयदर्थबध, बाल अप्रौढ़ा नारि ॥

आतुर ह्वै अर्जुन शर छांटत ❀ बीर अनेकन के शिर काटत
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ हांक देत हांकत रथ सारथ
बाहुलीक कृतबर्मा अत्री ❀ सन्मुख आनि जुरे सब क्षत्री
मारु मारु कै सब रण टेरे ❀ चहुँदिशि नन्दिघोष रथ घेरे
अश्वत्थाम कृपा तब आये ❀ सब मिलि बाणबुन्द झरिलाये
सेन अनेक अस्त्र परिहारत ❀ सांग शूल मुद्गर सों मारत
यहिबिधि होत महारण भारी ❀ हरि सारथि पारथ धनुधारी
श्रीहरि तब अपने मन जाने ❀ पहर दिवस बाकी अनुमाने
जो सब दिवस बीति कै जैहै ❀ सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै
जो अर्जुन निजप्राण गँवावा ❀ मेरो अयश सबै जग गावा

दो० पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान ।
अर्जुनकेहिबिधिराखिये, करत शोच भगवान ॥

श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु ❀ बेंड़े होइकै सूर्य छिपावहु
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा ❀ तब रबि ओट सुदर्शन कीन्हा
गगन दिवस तकि तेज निहारी ❀ भई सांझ कुरुसेन पुकारी
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा ❀ पाण्डवदल सब भयो निराशा
संध्या देखि थकित भे पारथ ❀ डारेउ धनुष तजेउ पुरुषारथ
पारथ धनुष डारि जब दीन्हे ❀ मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे
दुर्योधन आनँद ह्वै आये ❀ सेन समूह सबै पलटाये

तब पारथ यहिभांति बखाना ❀ कुरुपति करहु चित्त अनुमाना
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ ❀ जिमिचातक जलस्वाती बर्षेउ
कुरुपति की आज्ञा जब पायो ❀ शतबन्धुनमिलिचिता बनायो
दो० चिता चढ़न अर्जुन चल्यउ, कहेउकृष्णसमुझाय।
धनुषबाण लैकर चढ़उ, क्षत्री धर्म न जाय ॥
हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ ❀ लैकर धनुष चितापर चढ़ेऊ
कुरुपति तब निरखनको लागे ❀ कही शकुनि जयदर्थहि आगे
तुव कारण मारेउँ सब सैना ❀ पारथ मरण देखिये नैना
याते और न है सुख कोई ❀ देखत नयन शत्रु क्षय होई
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं ❀ श्रीहरि गगन तकायो तबहीं
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये ❀ रवि प्रकाश भा दिवस लखाये
चकित सबहिं अचंभा माने ❀ तब श्रीहरि पारथहिं बखाने
अर्जुन गहरु करत क्यहिकाजा ❀ देखत तुमहिं सिन्धु के राजा
तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना
जूझे शीश परन महि चह्यऊ ❀ तब अर्जुनसों माधव कह्यऊ
दो० अन्तरिक्षशिरलैचलहु, सुनहु बचन परिमान।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान ॥
इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वचतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ लै शर शीश चल्यउ असमाना
हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये ❀ शरलागत शिर गिरन न पाये
पहुँचायो शिर पारथ बाणन ❀ जहां सुरथ तप साधत कानन
धर्यो ध्यान अञ्जलिकर साधत ❀ पुत्र हेतु शंकर अवराधत
कही कृष्ण अर्जुन सों ऐसो ❀ वाके हाथ परत शिर जैसो
यहि बिधिते अर्जुन शर मारे ❀ नृपके हाथ शीश लै डारे
छूट ध्यान चिन्ता मन कीन्हेउ ❀ मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं ❀ माथो सुरथ काटि गा तबहीं
छूटे प्राण गिर्यो तब धरणी ❀ कहिनजातिबिधिकीयहकरणी

अर्जुन देखि भये भ्रम भारी ❀ यह चरित्र कहिये बनवारी
दो० शीश गिरो वाके करहि, भूमिसो दीन्हेउ ढारि ।
प्राण तज्यो क्यहि कारण, हमसों कहिय मुरारि ॥
कथा पुरातन श्रीहरि कह्यऊ ❀ सुरथ नाम राजा यह रह्यऊ
सिन्धूराज महाबल भारी ❀ क्षत्री प्रबल बीर धनुधारी
राज भोग इन बहुबिधि कीन्हा ❀ पुनि तपहेतु जाय मन दीन्हा
शंकर की पूजा अवराधे ❀ सेवा करि गौरी ब्रत साधे
भयो प्रसन्न कहेउ गङ्गाधर ❀ जो इच्छा मांगहु सोई बर
दीजे पुत्र सुरथ यह कह्यऊ ❀ मरै न अमर सदा जग रह्यऊ
सुनिकै शंकर कहा बुझाई ❀ अमर छांड़ि मांगौ बर भाई
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी ❀ यह बर दीजै अन्तर्यामी
जो वाको शिर करहुँ निपाता ❀ तुरत मरै तब ताकत ताता
एवमस्तु कहि शिव बर दीन्हे ❀ तब जयदर्थ जन्म जग लीन्हे
दो० दिनदिन सुतबाढ़नलग्यो, गयो महारथ बीर ।
शिव पूजा संतत करत, श्रीसुरसरि के तीर ॥
दुर्योधन की बहिनि दुसाला ❀ कै बिवाह दीन्हेउ जयमाला
जब भारत रणको पग दीन्हेउ ❀ सुरथ जाइ तप बन में कीन्हेउ
सुत के कुशल तपस्या करई ❀ इनहिं कहै जयदर्थ सो मरई
ता कारण इनको शिर ल्याये ❀ ताहि मारिकै तुम्हैं बचाये
यहिबिधि सबमाधवकहि दीन्हो ❀ हांको रथ भवनहिं शुभकीन्हो
धर्मराय सेना सब लीन्हे ❀ पारथ पन्थ चितै चित दीन्हे
यहि अन्तर रथ देखन पाये ❀ सबहिं कहे हरि अर्जुन आये
पारथ तब नृप के पग परसे ❀ आनन्दित सबके मन हरसे
धर्मराय माधव सों भेंटे ❀ त्रिबिध ताप तनुकी सब मेटे
हरिभाख्यउ प्रण राख्यउ पारथ ❀ बधि जयदर्थ कियो पुरुषारथ
दो० धर्मराय भाषन लग्यो, श्रीहरि सों यह बैन ।
पारथप्रण रक्षा सदा, तुमहीं पङ्कज नैन ॥

जहँ जहँ गाढ़ पस्यो परतक्षक ❀ सबदिन तहां भये तुम रक्षक
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❀ जरत तहां प्रभु तुमहिं बचाये
रहौ पास सब दिन बनवारी ❀ द्रुपदसुताकी लाज निवारी
बन में दुर्वासा छल कीन्हेउ ❀ हेजगदीश राखि तुम लीन्हेउ
युद्ध के हेतु बिभीषण आये ❀ मारत प्रभु तुम हमहिं बचाये
जब कौरव बिष भोजन दीन्हे ❀ तहँहुँ आप रक्षा तब कीन्हे
बनमों तृषित भये बनवारी ❀ कर उठाय दीन्हेउ तुम झारी
दीनबन्धु मोरे हित काजा ❀ चरण धोइ बैठारेउ राजा
नारायण शर भीषम मास्यो ❀ मरत भीम प्रभु तुमहिं उबास्यो
हनुमत सों हठ पारथ कीन्हेउ ❀ दीनदयाल राखितुम लीन्हेउ

दो० पारथ प्रणरक्षक सदा, श्रीवर दीनदयाल ।
जाके तुमसे सारथी, ताहि न जीतै काल ॥

जो जो चरण तुम्हारे ध्यावै ❀ संकट मों प्रभु सबहिं बचावै
ग्रह गृहीत प्रभु सुमिरण कीन्हे ❀ धाये त्वरित राखित्यहि लीन्हे
प्रण प्रहलाद राखि बिन कारण ❀ नरहरि रूप धरो जगतारण
ध्रुवकहँ अटल करेउ सब ऊपर ❀ विद्यमान बिभीषण भूपर
भक्तवश्य भीषम प्रण कारण ❀ रणमहँ अस्त्र गह्यो जगतारण
धर्मराय यहि भांति बखाने ❀ श्रीपति सुनत बहुत सुख माने
दुर्योधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ ❀ आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ
तुम सब भये न कोऊ रक्षक ❀ बाधि जयदर्थ गयो परतक्षक
सो सुनि द्रोण कहन असलागे ❀ सत्य बचन राजा के आगे
बलते अर्जुन सक्यउ न मारण ❀ रच्यो उपाय जगत के तारण

दो० रविअस्थित निशि ह्वै गई, छलकीन्ह्योभगवान ।
भक्तपरण राख्यो कही, सबलासिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अब राजा जिय शोच न करिये ❀ आजुयुद्ध निशिकालाहिलरिये
साजी सेन बिलम्ब न लाये ❀ रथप्रति सबहि मशाल बराये

रथ प्रति चारि अश्व प्रति दोई ❀ यहिबिधि साज किये सब कोई
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे ❀ इत दिशि भीम पाण्डुदल साजे
बरत मशाल ज्योति उजियारी ❀ शोभा मानहुँ बरत सवारी
सुबरण शीश मुकुट छबिछाजे ❀ मौर मनहुँ बर शीश बिराजे
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे ❀ सुरकन्यन ब्याहन मन दीन्हे
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे ❀ बीरन धनुषफांक मन दीन्हे
गजसों गज रथ सों रथ जोरे ❀ पैदल सों पैदल रण घोरे
यहि बिधि लरत जोरसों जोरे ❀ महाशूर मन नेकु न मोरे

दो० अर्जुन लीन्ह्यो धनुषकर, कीन्हो शर संधान ।
श्रीमुनिसोंकरउदितछबि, रथ हांको भगवान ॥

पाण्डवदल अनेक रण मारे ❀ तब गुरु द्रोण बाण परिहारे
अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना ❀ कुरुदल जूझि गिरेउ मैदाना
निशाकालमहँ अति पुरुषारथ ❀ द्वउदल कीन्हेउअतिशय भारथ
शकुनी ते सहदेव लराई ❀ महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई
जुरे भीम दुश्शासन साथा ❀ दोऊ सबल गदा लै हाथा
नकुल भिरे कृतबर्मा क्षत्री ❀ कृपाचार्य अरु सात्यकि अत्री
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा ❀ दोऊ मचे महा रणरङ्गा
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा ❀ दोऊ लरत आपु जय काजा
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ ❀ बाणनसों छायो सब भारथ
अन्धकार भा निशि अँधियारी ❀ चमकतअस्त्र होत उजियारी

दो० सुनियतधनुटङ्कोरअति, निरखत अस्त्र उदोत ।
हांक देत क्षत्री सबहिं, निशा युद्ध इमि होत ॥

द्रुपद नरेश द्रोण गुरु साथा ❀ खड्ग लेइ गुरु काट्यउ माथा
गिरेउ द्रुपद धरणी महँ जबहीं ❀ पाछे को गुरुजान्यउ तबहीं
धोखे मित्र बध्यो हम रनमें ❀ उपज्यो शोच द्रोण के मनमें
महारथी करि एक न लागे ❀ चलहिं न एक एक के आगे
सूझि न परत सघन अँधियारी ❀ आगे परत जात मो मारी

मुकुट अनेक धरणि महँ परेऊ ❀ झलकत ज्योति जरायनजरेऊ
गुरू द्रोण सबही ते कह्यो ❀ निशि को युद्ध अचेतो रह्यो
दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यो ❀ गुरुद्रोण मन में दुख कीन्ह्यो
यहिबिधिकहासो कुरुपतिराजा ❀ गुरू शोच कीजै क्यहि काजा
अन्धकार निशि गये न चीन्हे ❀ अपने हाथ मित्र बध कीन्हे

दो० दुर्योधन भाषन लगे, कहोगुरुहिसमुझाय ।
द्रुपदमित्रक्यहिबिधिभये, सुनि संदेह नशाय ॥

द्रोण गुरू आये यहि बातन ❀ हे नरेश सुनु कथा पुरातन
तप कारण बन में हम आये ❀ यमुना मज्जन करन सिधाये
द्रुपद देखि कीन्हो परणामा ❀ आशिषदीन्ह होहु मनकामा
तब हम कहा कौन तुम अहहू ❀ कौन वर्ण क्यहि आश्रम रहहू
राजा द्रुपद अहै मम नामा ❀ बिधिबशताजिआयेनिजधामा
लिये किरातन राज हमारे ❀ हारे युद्ध बनै पगु धारे
रानी अरु मन्त्री लै साथा ❀ आये बनहिं अस्त्र नहिं हाथा
हम भाषो राजा सुनिलीजै ❀ मेरे साथ गमन अब कीजै
बाधि किरात तुम कहँ बैठावों ❀ द्रोणनाम तब जगत कहावों
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर ❀ जूझी सैन्य सकल जाके कर

दो० क्षत्री ह्वै जुरिनहिं सके, तुम द्विज कोमल अङ्ग ।
धनुबिद्याजानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग ॥

तब हम याबिधि बचन सुनाये ❀ ज्यहि प्रकार धनुबिद्या पाये
परशुराम जब यज्ञ बिचारे ❀ मुनि सब सुनत तुरत पगु धारे
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा ❀ लै सब बिप्र भवन शुभ कीन्हा
बच्यो न कछू सबै उन दयऊ ❀ तब हम जाय उपस्थित भयऊ
परशुराम यह बचन सुनाये ❀ अवसर गये बिप्र तुम आये
बच्यो कमण्डलु और कुशासन ❀ धनुषबाणकर एकन आसन
तब हम कही सुनो हे स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तरयामी
बहुत भांति दारिद्र सताये ❀ तब हम तुम्हें ताकिके आये

यकइस बार निक्षत्रिन कीन्हे ❀ धरती धन बिप्रन कहँ दीन्हे
कही नारि तुम बेगि सिधावो ❀ परशुराम ते धन लै आवो
दो॰ आशाकरि आये हते, पै बिधि कीन्ह निरास ।
कर्महीन जो जगतमों, भवन कुबेर उपास ॥
भृगुपति चित्त दया ह्वै आई ❀ निकट बोलि म्वहिं बैन सुनाई
धनुबिद्या चाहहु तौ लीजै ❀ दुखी बिप्रत्वहिं बिमुख न कीजै
यह कहि धनुबिद्या म्वहिं दीन्हे ❀ पुनि सब अस्त्र समर्पण कीन्हे
परशुराम दीन्हे धनु शायक ❀ तीनि लोकके जीतन लायक
जब सब भेद द्रुपद सुनि लीन्हो ❀ आनँदसहित मित्रता कीन्हो
जो आपुहि किरात बध कीजै ❀ आधो राज्य बांटिकै लीजै
लै द्रुपदहि प्रणशालहि आये ❀ फल अरु मूल अहार कराये
प्रात होत लीन्हें धनु बाना ❀ द्रुपद द्रोण मिलि कीन्ह पयाना
सुनि किरात सब आतुरधाये ❀ तीनि कोटि सेना जुरि आये
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❀ आये शत्रु युद्ध अब कीजै
दो॰ ब्रह्म अस्त्र संधानिकै, हम कीन्हो परिहार ।
तीनिकोटि चतुरङ्गदल, जारि कीन्ह सबछार ॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठाये ❀ तिलक देइ शिर छत्र धराये
भाषो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❀ आधो राज्य भोग अब कीजै
रहै राज्य अस्थिर तव पासा ❀ हम तप हेतु जात बनबासा
असकहि हम प्रणशालहि आये ❀ मुनिसमाज सँग तप मनलाये
बिधिवश पुत्र जन्म जग लीन्हे ❀ अश्वत्थाम नाम त्यहि कीन्हे
मुनिकुँवरनसँग खेलत डोलत ❀ बातैं मधुर अमीसम बोलत
सब मिलि कह्यो दूध हम पाये ❀ सुनि सो पुत्र मातुपहँ आये
बालक कही दूध अब दीजै ❀ माता कही कहा अब कीजै
तण्डुल हुते भवन महँ थोरे ❀ शिला ते बांटि नीरते घोरे
भरी द्रोण द्रोणी का दीन्हे ❀ हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हे
दो॰ हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान ।

निरखि नारि रोवन लगी, जियमों भई गलान ॥
त्यहिअन्तर हम भवनहिं आये ❀ रोवत देखि महादुख पाये
तिय लागी करसों शिर मारन ❀ हम पूछी रोवत क्यहि कारन
दूध स्वादु मम पुत्र न जानत ❀ उज्ज्वल नीर दूध करि मानत
हम भाषो जनि होहु निरासा ❀ चलहु तुरत द्रौपद के पासा
देखि नगर आनन्दित भयऊ ❀ तब चलि भूपति द्वारहि गयऊ
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो ❀ कहौ कि जाय मित्र नृप आयो
सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा ❀ राजा मित्र खड़े तव द्वारा
द्विजअतिदुखित बसनतनुफाटे ❀ सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे
द्विज संग्रह है बड़ो अपावन ❀ दूरि करौ पावै नहिं आवन
यह सुनि द्वारपाल सब धाये ❀ खेदिदिये हम जान न पाये

दो० शाप दिये हम क्रोधकरि, जानि परम बिपरीति ।
धनमदते अपमान करि, अतिउदासचितथीति ॥

पुरी हस्तिना तब हम आये ❀ तुम बालक खेलन मन लाये
कूपहि परो गेंद जब जाने ❀ तुम सब शोच चित्त अनुमाने
सिद्धबाण संधानहिं कीन्हे ❀ गेंद उठाय हाथ तब दीन्हे
तुम सब देखि अचम्भव भयऊ ❀ लयो गेंद भीषमपहँ गयऊ
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ❀ आये द्रोण सत्य हम जाने
आदर करि निजगृह लै आयो ❀ चरण धोय आसन बैठायो
धेनु अनेक बहुत विधि दीन्हे ❀ पांचक गांव समर्पण कीन्हे
मेरे संग रहो सुख पैहो ❀ बालक सब लै अस्त्र सिखैहो
सिखये अस्त्रनिपुण सब कीन्हे ❀ सब मिलिकै गुरुदक्षिण दीन्हे
पारथ ते कछु बाणहि लीन्हे ❀ यहै बात याचज्ञा कीन्हे

दो० द्रुपद मित्र मेरो रहै, तिन कीन्हो अपमान ।
बांधि चरणतर डारिये, मांगतहौं यह दान ॥

अर्जुन जाइ किये तहँ भारथ ❀ महायुद्ध कीन्हे पुरुषारथ
यहि विधिते पारथ शर सांध्यो ❀ नागफांस महँ द्रुपदहि बांध्यो

मम चरणन तर बांधि कै डारे ❀ गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे
तब हम छांड़ि द्रुपद कहँ दीन्हा ❀ मित्र जानिकै भाषण कीन्हा
यहिबिधि मित्रद्रुपद सुनु राजा ❀ मारेउँ आजु तुम्हारे काजा
सब मिलिकै आये निजधामा ❀ दोऊ दल कीन्हेउ बिश्रामा
होत प्रात कुरु पाण्डव साजे ❀ कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे
बेगि अनी आये मैदाना ❀ क्षत्री लगे चलावन बाना
दल चतुरङ्ग चले सब आगे ❀ नन्दिघोष हांकन हरि लागे
अर्जुन कीन्हे सेन निपाता ❀ कुरुपति कही द्रोणसों बाता

दो० हम अर्जुन सम्मुख लरैं, यह इच्छा मनमाह ।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु, को चलिहै नरनाह ॥

पढ़ि नारायणकवचहि दीन्हे ❀ रामकवच तेहि ऊपर कीन्हे
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये ❀ सन्मुख अर्जुन ते रण करिये
दृढ़ ह्वै धनुषबाण कर धरिये ❀ शत्रु निपाति राज्य पुनिकरिये
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ हृदय ताकिकै मारेउ बाना
निष्फल भये बाण सब टूटे ❀ कवच प्रताप अङ्ग नाहिं फूटे
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हे ❀ तीक्षण बाण दिव्य कर लीन्हे
मारेउ दुर्योधन के अङ्गा ❀ भेद न भये बचे सब अङ्गा
तब पारथ यहि भांति बखाने ❀ अहो नाथ यह भेद न जाने
सुनि श्रीपति यहि भांति बुझाये ❀ कवच भेद नृप द्रोण बताये

दो० द्रोणकवचपढ़िकै दये, बाण न फूटत अङ्ग ।
ताकारण पारथ सुनहु, होत सकल शर भङ्ग ॥

भेद जानिकै शर परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे
बिरथ भयो दुर्योधन जाना ❀ तब गुरुद्रोण बाण संधाना
पांच बाण पारथ उर मारे ❀ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे
अश्वन तनु मारे दश बाना ❀ सहस बाण मारे हनुमाना
पारथ कोपि गहे शारँग कर ❀ होनलागि अति मारु परस्पर
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े ❀ मारेउ रथ के चारिउ घोड़े

अपर और रथ किये सवारी ❀ अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी
महारथी सब हतैं धनुर्द्धर ❀ कठिनयुद्ध कीन्हे तेहि अवसर
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ ❀ सन्मुखरच्यो शैलसों भारथ
क्षत्री सकल करत संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराज के कामा
दो० बाणवृष्टि अतिहोतितब, शूलशक्ति परिहार।
मुद्गर तोमर फरी कर, गदा खड्गकी मार ॥
सबहिं अस्त्र क्षत्री परिहारहिं ❀ सन्मुखज्यहिपावहिंत्याहिमारहिं
यहि बिधि युद्ध करै मनलाये ❀ लै कर गदा भीम तब धाये
गज अनेक मारे तरवारा ❀ रथी अश्व पैदल संहारा
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना ❀ भीम अङ्ग मारे दश बाना
रथचढ़ि भीम धनुष कर लीन्हे ❀ बाणवृष्टि त्यहि दलपर कीन्हे
धृष्टद्युम्न दुश्शासन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महाबल अत्री
कृपाचार्य कीन्हे संधाना ❀ फिरे नकुल त्यहिसन मैदाना
काशीराज द्रोण रण मराडे ❀ बाणन ते रिपु सेन बिहराडे
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ ❀ बाणन ते छाये सब भारथ
द्रोणी अङ्ग तीनि शर मारे ❀ चारि बाण अश्वन परिहारे
दो० क्रोधवन्त द्रोणी भये, कीन्हेउ शर सन्धान।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥
इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
संध्या जानि किये बिश्रामा ❀ दोऊ दल आये निज धामा
भूप युधिष्ठिर कहिबे लागे ❀ मनमलीन मोहन के आगे
चौदह दिवस भये रण भारथ ❀ भीषमद्रोण सरिस पुरुषारथ
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे ❀ तब भीषम शरशय्या लीन्हे
गुरू कीन्ह सब सेन सँहारण ❀ अब उपाय कहिये जगतारण
श्रीहरि आपु कहन असलागे ❀ राजा धर्मराज के आगे
काल्हि भात याबिधि रण कीजै ❀ आज्ञा नृपति भीमको दीजै
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं ❀ आपु द्रोण मरिहैं बिनु मारहिं

कह्यो भीम सुनिये जगबन्दन ❀ द्रोणपुत्र फेंकौं गहि स्यन्दन
यहिबिधि कहि भूपहि समुझाई ❀ शयन किये निद्रा तब आई
होत प्रात कीन्ही असवारी ❀ कुरुपाण्डव साज्यो दलभारी
दो० बम्ब दमामा होत हैं, अरु बैरख फहरात ।
क्रोधवन्त रिससों भरे, बीरचले सब जात ॥
महामत्त कुञ्जर बहु आवत ❀ कम्बु मनहुँ घन शब्द सुनावत
उड़िकै गरद लागि असमानू ❀ सूझि न परत अलोप्यउ भानू
हरित अरुण बैरख फहराने ❀ उपमा इन्द्रधनुष समजाने
दोऊ दल अतिशोभा पावत ❀ हिंसत तुरँग जु पैदल धावत
धनु टङ्कोर घोर धुनि राजे ❀ उभय फौज महँ मारु बिराजै
क्षत्री सकल करन रण लागे ❀ अर्जुन द्रोण करण के आगे
श्वेतबर्ण पारथ रथ राजे ❀ श्यामबर्ण रथ द्रोण बिराजे
हांक देत हांकत जगतारण ❀ सारथि भये भक्त के कारण
अर्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ ❀ दल चतुरङ्ग भयानक भारथ
दो० दोउदलबीरनरणरचेउ, कहिन सकहिं कबि बैन ।
शरसमूह छाये गगन, रबि नहिं सूझत नैन ॥
कुञ्जर भिरत करत रण घोरा ❀ होइ चौदन्त जोर सों जोरा
रथी रथी सों सरस लराई ❀ छूटत बाण बुन्द की नाई
अश्व अश्व लै सम्मुख जोरहिं ❀ शूलघाव सों बख्तर फोरहिं
पैदल ते पैदल रण घोरा ❀ अरुझे सबहिं जोरसे जोरा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ तोमर गदा खड्ग सों मारे
जूझि गिरहिं भारत मैदाना ❀ सुरपुर गवनहिं चढ़े बिमाना
यहिबिधि करहिं युद्धकी करणी ❀ रुण्डमुण्ड पाटे सब धरणी
भूत बिताल योगिनी गावहिं ❀ जम्बुक अपनो भाव दिखावहिं
उड़हिं काक अन्त्रहि लै कैसे ❀ टूटे डोरि चङ्ग गति जैसे
यहि बिधि होतभयानक भारथ ❀ क्षत्री सबै करत पुरुषारथ
दो० गुरू द्रोण अति क्रोधकै, मारेउ तीक्षण बान ।

पाण्डव दल जूझे घने, शर छाये असमान ॥
अर्जुन बाण बृष्टि झरिलाये ❀ कौरव दल बहु मारि गिराये
उरझे खेत जोर सों जोरा ❀ लागे करन महारण घोरा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ सम्मुख जाइ खड्ग शिरझारे
कोतल भये कटारन जोरहिं ❀ जूझिजायँ मुखनेकु न मोरहिं
जहां जहां अर्जुन मन धावत ❀ तहां तहां हरि रथ पहुँचावत
सारथि भये भक्तके कारण ❀ करिताजन हांकत जगतारण
पारथ करते जे शर छूटत ❀ अङ्ग भेदि धरणीमहँ फूटत
गुरू द्रोण उत बाण चलावत ❀ श्वेतश्याम रथ शोभा पावत
अर्जुन कोपि किये संधाना ❀ द्रोण अङ्ग मारे शत बाना
गुरू द्रोण शर कोपि प्रहारे ❀ सो शर पारथ के उर मारे
दो० तीस बाण अश्वन हने, लक्षबाण हनुमान ।
पीताम्बर तन अरुणकरि, महाबीर बलवान ॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय सरषे ❀ गुरुपर लागि बाण बहु बरषे
पारथ द्रोण करत पुरुषारथ ❀ बलसम दोउ करत महभारथ
दोऊदल महँ लोहा बाजत ❀ सिंहनाद क्षत्री गण गाजत
अर्जुन द्रोण सरस शर छांटत ❀ बाणन ते बसुधा सब पाटत
शरशर भिरत होत चिग्धारा ❀ योगिनि हाँकदेत करिहारा
रथ ते उतरि भीम तब धाये ❀ गदा घाव सब बीर गिराये
कृतबर्मा राजा सँग साथी ❀ अश्वत्थाम नाम त्यहि हाथी
भीम उपर कुञ्जर जब धावा ❀ बीचहिं अर्जुन मारि गिरावा
द्रोण पुत्र कीन्हों सन्धाना ❀ क्रोधित भीम जुरे मैदाना
गुरुसुत लग्यो कठिन शर मारन ❀ पाण्डवदल रण गिरेउ हजारन
दो० भीमसेन अति क्रोधकै, गहिउठायकैरत्थ ।
द्रोणसुतहि फेंक्यउ तबहिं, महाबीर समरत्थ ॥
तीनि शतहि योजन परिवेशा ❀ बिधिवश गयउ उड़ेउ सो देशा

भुवनेश्वर शंकर अस्थाना ❀ अमर हतेउ नहिं त्याग्यउ प्राना
चूरण भये सहित रथ सारथ ❀ लाग्यो थक त्याग्यो पुरुषारथ
शंकर त्वरित नीर लै धाये ❀ बदन सींचिकै बिप्र बचाये
अर्जुन द्रोण सरिस रण माच्यउ ❀ जूझे घने अल्प दल बाच्यउ
सब सेना यहि भांति बखाना ❀ जूझे द्रोणपुत्र मैदाना
निजसेना सों द्रोण बखानत ❀ कितसुतगयोकहहु तुम जानत
सब मिलि कहैं गुरू सों बैना ❀ लरत भीमसों देख्यो नैना
की भाजो की जूझो रनमों ❀ यह कछु जानि परेउ नहिं मनमों

दो० कही द्रोण तब भीम सों, जुरो हुतो तुम सङ्ग ।
कहा भयो सुत कितगयो, कहौ सांच रणरङ्ग ॥

भाषो भीम गदा परिहारे ❀ रथ समेत चूरण करि डारे
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने ❀ मिथ्या बात भीम की जाने
कह्यो द्रोण सों पारथ बैना ❀ बध्यो भीम देख्यों मैं नैना
अर्जुन बचन सुनत मन ऊबो ❀ करुणासिन्धु बीच जिय डूबो
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना ❀ पूर्व आपदा बिधि निर्माना
अर्जुन के मन भयो अँदेशव ❀ केहिबिधि आपद पाई केशव
श्रीहरि कही सुनहु हो पारथ ❀ अकथकथाबिधिकी पुरुषारथ
तप साधत जब बनमहँ हते ❀ मुनि सबके आश्रम यकमते

दो० मुनिकुमार क्रीड़ा करत, सब मिलि एकै सङ्ग ।
उद्दालकसुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रङ्ग ॥

बाघ समान शब्द जो कीन्हा ❀ ऋषिनारिन कहँ बहुभयदीन्हा
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा ❀ शब्द बेधि इन बाण चलावा
मुखलाग्योशर बिधिकी करणी ❀ छूटे प्राण परेउ तब धरणी
सब बालक मिलि शोर मचायो ❀ सुनिकै सकल बिप्रगण धायो
द्रोणआइ देख्यो शिशु मर्यो ❀ अपने चित्त शोच बहु कर्यो
क्रोधवन्त उद्दालक भयऊ ❀ द्रोणहिंनिरखि शापतब दयऊ

पुत्र शोक हा त्यागत प्राना ❋ तुम ऐसे मरिहौ रण ठाना
यहिबिधि शाप द्रोण कहँ दीन्हा ❋ तबद्विजप्राणत्याग सो कीन्हा
वही समय अब आयो पारथ ❋ मुये द्रोण जीते हम भारथ
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों बचना ❋ करत सदा तुम मिथ्यारचना

दो॰ भूप युधिष्ठिर बूझिकै, तब त्यागहिं हम प्रान ।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदा बचन परिमान ॥

जबहिं द्रोण यह बचन सुनाये ❋ तब हरि धर्मराय ढिग आये
तबहिं द्रोण राजा के आगे ❋ कर उठाइ के पूछन लागे
सत्यबचन तुम सबदिन भाष्यउ ❋ हम दृढ़ता तुम ऊपर राख्यउ
जूझे सुत तुम देखे नैना ❋ हे नृप सत्य कहौ यह बैना
श्रीहरि कही भूप कहि दीजे ❋ अपने काज कहा नहिं कीजे
कही भूप सुनिये जगतारण ❋ मिथ्याबचनकहहुक्यहिकारण
सात द्वीप संपति जो दीजे ❋ तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजे
तब श्रीहरि अस कहा बखानी ❋ क्यहि कारण तुम भारतठानी
जबहिं भूप पांसा मन लाये ❋ तब यह धर्म बिचार न आये
राजा द्रुपद सुता पटरानी ❋ गहिकर केश सभामहँ आनी

दो॰ दुश्शासन अञ्चल गहे, हरण चीरके काल ।
तब यह धर्म कहां रहे, भाष्यो दीनदयाल ॥

तुम जब लाज छांड़िके दीन्हेउ ❋ द्रुपदसुता ममसुमिरण कीन्हेउ
ये बातैं बिसरीं क्यहि कारण ❋ यहिबिधि कही जगतकेतारण
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❋ अर्द्धरात्रि महँ अनल लगाये
बिदुर खम्भ को मारग लयऊ ❋ तब तव धर्म कहां नृप गयऊ
जब भीमहिं बिषभोजन दीन्हेउ ❋ सुरसरि बोरिगमनघर कीन्हेउ
पुर पाताल कौन गहि गह्यऊ ❋ तब यह धर्म कहां तव रह्यऊ
कृष्ण बचन नृप के मन आये ❋ तब द्रोणहिं याबिधि समुझाये
अश्वत्थामा हत रण भयऊ ❋ की नर की कुंजर कहिदयऊ

आधे वचन द्रोण सुनि पाये ❋ आधे महँ हरि शंख बजाये
सुनिकै द्रोण सत्य करि जानो ❋ अपनो मरण हृदयमहँ आनो
दो॰ यहि अन्तरमहँ सप्तऋषि, गगनपन्थमहँ आय ।
भरद्वाज मुनि साथ लै, द्रोणहि कहा बुझाय ॥
तुम ऋषिवंश महा अभिमानी ❋ क्षत्री धर्म करत अज्ञानी
अस्त्रघाव जो प्राण गँवावहु ❋ तौ तुम स्वर्गबास नहिं पावहु
मुनि सब देखि दण्डवत कीन्हे ❋ तब करजोरि कहन कछु लीन्हे
तुम आज्ञा माथे पर लीजै ❋ ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब कीजै
धरो धनुष झारी कर लीन्हो ❋ कै आचमन देह शुचि कीन्हो
अङ्गन्यासकरि नासहि गह्यऊ ❋ धरिकर ध्यान मौन ह्वै रह्यऊ
यहि अन्तर बिराट नृप आये ❋ सिंहनाद कै हांक सुनाये
द्रोण सँभारि अस्त्र कर गहहू ❋ मारत हौं तीक्षणशर सहहू
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा ❋ ध्यान छांड़ि शारँगकर लीन्हा
दो॰ दिव्यबाण संधानिकै, किये द्रोण परिहार ।
मुकुटसहितशिरटूटिकै, पर्योधरणिबिकरार ॥
भाषो ऋषिन द्रोण के आगे ❋ छांड़ि ध्यान तुम लरिबेलागे
दोउकर जोरि द्रोण तब कह्यऊ ❋ बीर हांक सुनि ज्ञान न रह्यऊ
ताते मैं बिराट बध कीन्हे ❋ यह कहि बहुरि नीरकर लीन्हे
करि अस्नान ध्यान दृढ़ साधो ❋ परमज्योति मनमों अवराधो
खैंची पवन ऊर्ध्वगति ध्याये ❋ ब्रह्मरन्ध्र भेदन कहँ आये
निसरो पवन ऊर्ध्वगति भयऊ ❋ हरि अर्जुन देखन को गयऊ
भरद्वाज ऋषि सप्तक जेते ❋ ब्रह्मलोक सँग पहुँचे तेते
भारत मन क्षत्री तब लाये ❋ धृष्टद्युम्न क्रोधित होइ धाये
रथते उतरि खड्ग लै हाथा ❋ मारो जाय द्रोण को माथा
शीश समेत परो तन धरणी ❋ द्रुपदपुत्र कीन्हेउ यह करणी
दो॰ पाण्डवदलजयजयकरत, जीतिखड़े मैदान ।

कौरवदलहिं मलीन मन, ज्योंसंध्याकोभान ॥
तब रथ हांकि करणचलिआये ❀ आगे है सेना अटकाये
संध्या जानि कीन्ह तब गवना ❀ कुरु पाण्डव आये फिरि भवना
आगे कथा कहन मन लायउ ❀ अश्वत्थाम कछु चेतन पायउ
ढउ करजोरि शम्भु के आगे ❀ यहिबिधि बिनयकरनतब लागे
फेंको रणते भीम भयंकर ❀ प्राणदान दीन्हेउ मोहिं शंकर
यहिबिधि बरदीजै म्वहिं स्वामी ❀ होहुँ जगत में मनसागामी
आजु राति पहुँचों कुरुखेता ❀ कुरु पाण्डव जहँ सेन समेता
शंकर कही बिलम्ब न लैहौ ❀ एक पहर महँ जाइ तुलैहौ
पहर एक महँ आयो तहँवाँ ❀ दलसमेत कुरुपतिरह जहँवाँ
दो॰ दुर्योधन भाषनलग्यो, द्रौणी सुनिये बात।
आजु युद्ध जूझे गुरू, धृष्टद्युम्न असिघात ॥
सो सुनि द्रौणी कीन्ह्यउ क्रोधा ❀ पाण्डव सहित बधौं सब योधा
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना ❀ तब पितुहिं देहौं जलदाना
यह सब कथा यहांतक रह्यो ❀ धर्मराय उत हरिसों कह्यो
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो ❀ इहै शोच मेरे मन रह्यो
मिथ्या दोष रहो है माधव ❀ नहिं जानों करिहैं बिधि काधव
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानी ❀ धर्म कि गति सूक्षम यह जानी
मिथ्या करिके स्वर्ग सिधाये ❀ सत्य कही ते नरकहि पाये
समय बिचारि बात जो कहिये ❀ अन्तकालमहँ ते सुख लहिये
धर्मराय परशंसा कीन्हा ❀ हरिसों कथा सु पूछे लीन्हा
तब श्रीहरि यह कह्यउ बुझाई ❀ नृप हरिचन्द्र राज जब पाई
दो॰ सत्यधर्मपथ नेमब्रत, सबहि चलत संसार।
साहभवन मूसनगयो, गह्यो चोर कोउबार ॥
लैके नृप आगे त्यहि कीन्हा ❀ बधहु तुरत यह आज्ञा दीन्हा
तब कोटवार मारिबे लाग्यो ❀ बन्धन तोरि चोरसम भाग्यो

ऋषि आश्रमके निकटहिं आवा ❀ देख्यो लता सघनद्रुम छावा
चोर दूत नृप देख न नैना ❀ यहिबिधि छिपेउ इहां मनु हैना
आइ गयो सब पाछे लागे ❀ कह्यो जोरिकर ऋषिके आगे
चोर एक भागो इत आवा ❀ सत्यकहौ मुनि जो लखि पावा
तब ऋषि कह्यो सत्य यह बैना ❀ लता ओट मैं देख्यों नैना
लै कोटवार बांधि तेहि टस्यो ❀ तब नृप चोर केर बध कस्यो
यह अपराध ऋषय शिरपस्यो ❀ अन्तकाल नरकहि थल कस्यो
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी ❀ समयजानि कै बोलिय बानी

दो॰ सत्यवचन सों भाषि कै, परो नरक अति घोर ।
हत्या लाग्यउ बिप्रकहँ, नृपबध कीन्हे चोर ॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई ❀ श्रीमाधव यह कथा सुनाई
परशुराम त्रेता अवतारा ❀ क्षत्रिनमारि उतारेउ भारा
पिता बैर कारण ब्रत लीन्हे ❀ इकइस बार निक्षत्रक कीन्हे
भूप सुबाहु बधो बल भारी ❀ पुर हस्तिना केर अधिकारी
भूप मारि सेना सब जीते ❀ भागे युग कुमार भयभीते
भृगुपति तिनके पाछे धाये ❀ बिप्रभवनमहँ बालक आये
महा त्रास तब बदन सुखाने ❀ हिमऋतुमनहुँकमलकुम्हिलाने
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक ❀ शरणागत कीजे प्रतिपालक
परशुराम त्यहि अन्तर आये ❀ महाक्रोध करि हांक सुनाये
बालकबेगि निकरिनहिंआवत ❀ नहिंतौ यहिघर आगि लगावत

दो॰ सभय होय तब बिप्रबर, परे चरण तब आय ।
स्वामी यह कारणकहा, आपुहि आयो धाय ॥

क्षत्री के बालक दुइ आये ❀ तेरे भवन देखि हम पाये
देहु निकारि तुरत बध करऊं ❀ तब अपनेभवनाहिं अनुसरऊं
दुइ बालक मेरे घर अहई ❀ हैं द्विज जाति पढ़त इतरहई
परशुराम कहि बालक लावहु ❀ तुरतआनिकै मोहिं दिखावहु

बिप्र कही चलिये अब भवना ❋ अभिअन्तरकहँ कीजै गवना
जबद्विज अभिअन्तर लै आयो ❋ द्वउबालकतब आनिदिखायो
परशुराम देखत अनुमाना ❋ क्षत्रियकरिनिश्चय जियजाना
मिथ्या कहौ बिप्र क्यहिकारण ❋ हैं क्षत्री दीजै म्वहिं मारण
कोटि शपथ कै बिप्र बखाना ❋ द्विजबालक हम निश्चयजाना
रन्धन करि बालक के हाथा ❋ भोजन करहु बिप्र इनसाथा

दो० सो सुनि बिप्र अनन्दह्वै, करि रन्धन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ ॥

परशुराम तब क्रोध निवारेउ ❋ उठिकै अपने भवन सिधारेउ
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये ❋ अन्त बिप्र बैकुण्ठ सिधाये
संशय धर्म भूप के कारण ❋ यहिबिधि आपकही जगतारण
श्रीमाधव यह आप बखाने ❋ भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने
कही कृष्ण राजा सुनि लीजै ❋ प्रात होत रण उद्यम कीजै
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ ❋ पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं ❋ कुरुपति कर्ण मुकुटशिर धरिहैं
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक ❋ महा मारु करि हैं परतक्षक
सुरपति शक्ति लई यहि कारण ❋ कर्ण बीर अर्जुन के मारण
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै ❋ बज्र शक्ति सों कौन बचैहै

दो० धर्मराय यहिबिधिकही, सुनिये श्रीभगवान ।
पाण्डव संकट परहिं जब, तुम रक्षक परधान ॥

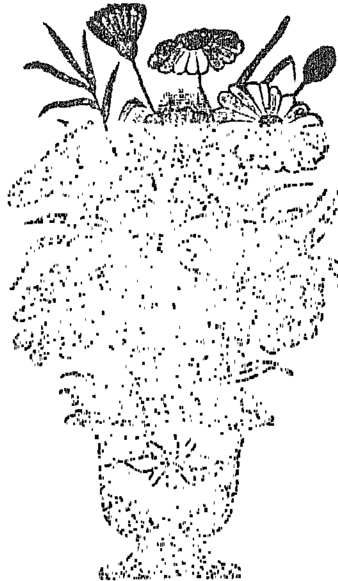
दीनबन्धु जाके रथ सारथ ❋ मारिसकै को रणमहँ पारथ
कुरुपति जरत सेनबल कारण ❋ मेरेबल तुमहीं जगतारण
यहसुनिकृष्ण बहुतसुखमान्यो ❋ नृपकहँ परम हितूकै जान्यो
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये ❋ करि आदर आसन बैठाये
तुम बल यह भारत हम ठाना ❋ मृत्युशेष आयो नियराना
मुकुट बांधि सेनापति हूजै ❋ अर्जुन रण समता नहिं दूजै

नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ ❀ पाण्डव सैन्य बधौं रण भारथ
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि ❀ निश्चय अर्जुन बन्धु सँहारहि
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये ❀ सेनापति करि मुकुट बँधाये

दो० पाण्डव के रक्षक सदा, भक्त वश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचितेद्रोणा ऽर्जुनयुद्धवद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्वसमाप्तम् ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ कर्णपर्व ॥

प्रथमहिं करि गुरु चरण प्रणामा ❀ जाते होहिं सिद्ध सब कामा
बन्दौं रामचन्द्र गुणसागर ❀ सीतापति रघुबंश उजागर
महिमा अगम और नहिं जाना ❀ परम भक्त जानत हनुमाना
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❀ तिथिपञ्चमि यह कथा प्रकासा
सम्बत सत्रह शत चौबीशा ❀ नौरँगशाह दिलीपति ईशा

दो० रघुपति चरण मनाइ कै, व्यासदेव धरिध्यान ।
कर्ण पर्व भाषा रचत, सबल सिंह चौहान ॥

गुरू द्रोण जूझे मैदाना ❀ दुर्योधन तब आपु बखाना
द्रौणी कर्ण शल्य सब अत्री ❀ अरु अनेक बैठे हैं क्षत्री
अब काके शिर मुकुट बँधैये ❀ जाते जयति पत्र रण पैये
द्रौणी कहा भूप सुनि लीजे ❀ आपु शोच केहि कारण कीजै
की मेरे शिर दीजे भारा ❀ नातरु कर्ण करहु सरदारा
रविसुत कर्ण महाबल भारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी
तब राजा यहि भांति बखाना ❀ गुरुसुतबचन कह्यो परमाना
शकुनी शल्य दुशासन भाखो ❀ दल को भार कर्ण पर राखो
कही कर्ण कुरुनाथ भुवारा ❀ जो सौंपत मोरे शिर भारा
करिकै युद्ध पाण्डवन मारहुँ ❀ सेना सहित न एक उबारहुँ
अर्जुन सहित एक गुण भारथ ❀ मनगामी श्रीपति हैं सारथ
कृष्ण समान सारथी पावों ❀ कोटिन अर्जुन मारिगिरावों

दो० शकुनी कह्यो विचारिकै, दुर्योधन सों बैन ।
शल्य सारथी कृष्णसम, और न देखो नैन ॥

मामा शल्य रचहु पुरुषारथ ❀ कर्णरथहि होवहु तुम सारथ
कही शल्य नृप लोग न थोरे ❀ कर्णरथहि हम हांकहिं घोरे
कुरुपति कही शल्य सुनु राजा ❀ कहा न कीजतु अपनो काजा
सारथि होहु हमारे स्वारथ ❀ कृष्णसमेत जीतिये पारथ
करगहि नृप बहुभांति बुझाये ❀ शल्यहि लिये कर्ण पहँ आये
कृष्णसमान सारथी लीजै ❀ रणमहँ सब पाण्डव बध कीजै
सुनिकै कर्ण अनन्दहि छाये ❀ धाइ शल्य कहँ कण्ठ लगाये
शल्य नरेश सारथी मेरो ❀ अब अर्जुनसम बधौं घनेरो
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ ❀ एकते एक सरिस नहिं कोऊ
बिप्रन सकल बेदध्वनि कीन्हे ❀ मुकुट नरेश कर्णशिर दीन्हे
सब दिन मेरो मित्र भरोसव ❀ अर्जुन सहित जीतिहैं केशव

दो० सेनापति कर्णहिं किये, मुकुट बांधिकै शीश ।
धर्मराय सों इतकहत, सत्यसिन्धु जगदीश ॥

अब अनर्थ उपजा अति भारी ❀ रविसुत कुरुसेना अधिकारी
लिये बोलि सहदेवहि आये ❀ सब मिलिमन्त्रबिचारन लाये
कही कृष्ण कुन्ती पहँ जैये ❀ पांचौ बाण मांगि लै ऐये
जे शर परशुराम तेहि दीन्हे ❀ अर्जुन बधन प्रतिज्ञा कीन्हे
नितप्रति वह पूजत है बाना ❀ पारथ पर करिहै संधाना
तब हमहूँ नहिं सकैं बचावन ❀ यहि बिधि कही पतितकेपावन
हम नीके जानत हैं भेवा ❀ की पूछहु मन्त्री सहदेवा
की कुन्ती जानति है तनमों ❀ पाप धर्म दोऊ हैं मन मों
द्रौणी कर्ण बिलम्ब न लइहै ❀ माता जानि त्वरितसो दइहै
सुनि कुन्ती उठिकीन्हेउ गवना ❀ आई त्वरित कर्ण के भवना
उठिकै कर्ण किये परणामा ❀ मातु गमन कीन्हे केहि कामा
सुनि कुन्ती यह बात जनाई ❀ अर्जुन कर्ण सहोदर भाई

दो० जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राजको भार ।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार ॥

सुनिकै कर्ण कही यह बाता ॥ क्षत्री धर्म कठिन है माता
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक ॥ अब तुम कही हमारे बालक
अशन बसन बहुभांति बड़ाई ॥ दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल ॥ ऐसे समय कहा कीजै छल
सात द्वीप इन्द्रासन पावों ॥ तौयहिसमय न चित्त डोलावों
तब कुन्ती मांग्यो सो बाना ॥ कर्णदीन्ह मन भय नहिं आना
जे दिनकर दीन्ह्यों ते बाना ॥ माता को दीन्हों करिदाना
कर्ण भये सेनापति भाई ॥ इन्द्रलोक महँ परी अवाई
सुनिकै इन्द्र चितहि दुख मानो ॥ अब अर्जुन को भयो निदानो
सुत सनेह हित तुरत सिधाये ॥ चढ़ि बिमान कुरुखेतहि आये
रथ ते उतरि द्वार पगुधारे ॥ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे
द्रौणी तब तहँ आय जनायो ॥ देवनाथ द्वारे पर आयो
आतुर चल्यो बहुत सुखमाना ॥ अपनो जन्म सुफल करि जाना
परदक्षिणा प्रणाम जनाये ॥ चरण रेणु लै माथ लगाये
आजु सुफल दिनभयो हमारा ॥ देवनाथ द्वारे पगु धारा
तुम तौ तीन लोक के स्वामी ॥ कहिय जानि आपन अनुगामी
सहस नयन तब कहा बिचारी ॥ सुनहु करण यह बात हमारी
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो ॥ हमहूँ कछु मांगन को आयो
कहौ सत्य जो मांगे दीजै ॥ तब तुम ते याचना कीजै

दो० कही कर्ण आनन्द सों, कियो सत्य यह जान ।
नाहिं न कीन्हा जन्मभरि, दीजै तन धन प्रान ॥

मेरो कर्म सबन सों भारी ॥ जो सुरपति भयो आय भिखारी
मांगौ तुरत गहरु जनि लावहु ॥ जो इच्छाकरिहौ स्वइ पावहु
दाता हो सब लोक बखाना ॥ कुण्डल कवच दीजिये दाना
जन्मसमय जो दिनकर दीन्हा ॥ ते हम अब याचना कीन्हा

सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो ❀ तालछोरिकै कवचहि काढ़्यो
हँसिकै कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो ❀ साधुसाधु सब देवन कीन्ह्यो
देवराज तब बाहर आये ❀ चढ़िविमान चलिबे मन लाये
अति अटको धरणी रथ जोरे ❀ हाँके थके मातलि सो घोरे
चकित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर ❀ अचल विमान भयो ज्यों मन्दर
तब मातलि यहिभांति बखाना ❀ पापभार नाहिं चलत बिमाना
सुर राजा याचञ्जा लायो ❀ भयो पाप रथ चलै न पायो
धन्य कर्ण जग में यश पायो ❀ जिन सुरपति को हाथ वँदायो

दो० कहमातलितबइन्द्रसों, बचन सुनौ परमान ।
कर्णहि हाथ उठाइयै, जाहिअकाश बिमान ॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये ❀ धन्यधन्य कहि बचन सुनाये
मांगहु बर जो इच्छा होई ❀ तव समान दाता नहिं कोई
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये ❀ आखर चारि न गुरू पढ़ाये
नाहिंन पढ़े ज्ञान मो अपने ❀ कहूं कह्यो कबहूं नहिं सपने
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो ❀ निष्फल दर्शन होइ हमारो
मांगहु वर तुम को कछु दीजै ❀ तबहम गमन अमरपुर कीजै
कही कर्ण मांगहुँ नहिं सुखते ❀ लियो चहहु तौ देहौं सुखते
निकरहिं प्राण देह बरु छांड़ै ❀ कबहुं न कर्ण हाथ को वाड़ै
कह्यो इन्द्र जब दानहिं दीजै ❀ विप्रमुखहिं कछुआशिष लीजै
परशुराम धनु बिद्या दीन्हे ❀ तबतुम चरण परशिकै लीन्हे
कह्यो इन्द्र यह नीति बिचारो ❀ सुनो कर्ण यक बचन हमारो
क्षत्री होइ दान जो लेई ❀ ता कहँ दोष कोउ नहिं देई

दो० कर्णअस्त्र गहि लीजिये, बिदित बेद यह बैन ।
भाष्यो ब्यास बिचारिकै, जहां देन तहँ लैन ॥

कही कर्ण जो अति हठ कीजै ❀ बज्र शक्ति म्वहिं मांगे दीजै
सुनिकै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे ❀ बहुरि बचन यह कहिबे लीन्हे
बज्र शक्ति जानत संसारा ❀ यह तौ है निज अस्त्र हमारा

कर्ण बीर जो यहै चलैहौ ❀ ताहि मारि मेरे कर ऐहौ
चढ़े जाइ रथ कीन्ह्यो गवना ❀ आये धर्मराय के भवना
राजा देखि दण्डवत कीन्हा ❀ हृदय लगाय शक्र तब लीन्हा
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये ❀ कुण्डलकवच माँगि हम लाये
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई ❀ कवचभेद भेदहि नहिं कोई
ता कारण दोऊ हम लीन्हे ❀ तोहिते वज्रशक्ति वहिं दीन्हे
अर्जुन कर्ण बैर है भारी ❀ तुम रक्षा करिहौ बनवारी
कहि सुरसाइँ गमन तब कीन्हे ❀ धर्मराय सेनहिं मन दीन्हे
प्रातहोत दोऊ दल साजे ❀ शब्द अघात बाजने बाजे

दो० गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ ।
पहिरि सजोदल अस्त्रलै, चढ़े बीर समरत्थ ॥

शैल नरेश आसु रथ साजे ❀ पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे
द्रौणी बीर दुशासन चढ़्यो ❀ अरु अनेक बीरन मन बढ़्यो
शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री ❀ दुर्मुख द्विरद महाबल अत्री
दुर्योधन रथ सोहै कैसे ❀ इन्द्र बिमान देखिये जैसे
यहिबिधि चढ़े साजि सब सैना ❀ कहो कर्ण राजा सों बैना
अक्षयत्रोण है अर्जुन बांधे ❀ घटत नाहिं कोटिनशर सांधे
मेरे रथ जो शर पहुँचैहो ❀ रणमहँ बिजयपत्र तब पैहो
राजा कही धरौ जनि धोखा ❀ दोऊ हाथ चलतशर चोखा
दशहजार हाथिन पर लादे ❀ चित्रितसबहि एकनहिं सादे
दशहजार भरि ऊंट लदाये ❀ दशहजार गाड़िन भरवाये
बीस हजार कहारन दीन्हे ❀ चलेसाथ सब बहिंगिन लीन्हे
कनकफोंक अति तीक्षण धारा ❀ गीध पक्ष ते सबहिं सँवारा

दो० कुरुपति चले साजिदल, सेना सिन्धुसमान ।
कर्ण तेज इमि देखिये, मनहुँ दूसरो भान ॥

श्वेत पीत बैरख फहराने ❀ अरुणश्याम रँग सबुजसोहाने
यहिबिधि ते कीन्हेउ दलसाजा ❀ बाजन लाग युद्ध के बाजा

धर्मराय कीन्हेउ असवारी ❀ श्वेत गयन्द महाबल भारी
भीमसेन अति शोभा पाये ❀ नकुल बीर सहदेव सोहाये
धृष्टद्युम्न लीन्हे सब साथा ❀ चढ़े तुरंग अस्त्र गहि हाथा
अर्जुन रथ कीन्हेउ असवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
पीत बसन तन शोभित नीका ❀ भालउदित हरिमन्दिर टीका
बाजन बजत शब्द आघाता ❀ श्रीहरि कही भीमसों बाता
धृष्टद्युम्न को साथहि लीजे ❀ सन्मुखयुद्ध कर्ण चितदीजे
भीमसेन यह साहस करिये ❀ अर्जुन के सन्मुख है लरिये
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ यहिविधिआपकह्योकेहिकारण
हांको रथ आगे भे लरिये ❀ सन्मुख युद्ध कर्ण सों करिये
दो० अर्जुन सुनिये मन्त्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जौलौं शक्ति कर्ण के हाथा ❀ करौ युद्ध जनि वाके साथा
इतना कहा हमारो कीजै ❀ चलौ जाय द्रौणी रण लीजै
दोऊ दल महँ बाजन बाजैं ❀ हांक देत क्षत्री गण गाजैं
गज सों गज रथसों रथजोरे ❀ मुख लागत हिंसत हैं घोरे
पैदल सों पैदल अरुझाने ❀ महाबीर सब बांधे बाने
बर्षै बाण सकै को भाखन ❀ शत ते सहस सहस ते लाखन
शल्य सारथी रथहि चलायउ ❀ आगे कर्ण पेलिकै आयउ
गहे धनुष कर बाणहिं फेरत ❀ अर्जुन कहां हांक दै टेरत
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❀ अस्थिररहो निकट नाहिं आयउ
यह कहि बीसबाण करलीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
करि संधान कर्ण तब भाषेउ ❀ जुरेउ आपु अर्जुन कित राखेउ
बाण पचीस भीमउर मारे ❀ सात बाण अश्वन परिहारे
दो० इतहि कर्ण उत भीमसों, युद्धभयो अति घोर ।
महारथी सब हांकदै, जुरे जोरसों जोर ॥

शकुनी सहदेवहि संग्रामा ❀ जुरे बीर अपने जय कामा
नकुलहि कृतबर्मा सों भारथ ❀ दोऊ सबल रण्यउ पुरुषारथ
कुरुपति धर्मराय तब सरसे ❀ छूटे बाण बूंद सम बरसे
घटउत्कचहिं द्विरद संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराय के कामा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ कोऊ गदा कोपि शिर मारे
खड्ग कटार उबाहहिं चोखे ❀ लागत जहां रहत नहिं धोखे
कोऊ पाश साजि शिर मेले ❀ अरस परसकरि आगे पेले
भीम कर्ण ते सरस लराई ❀ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई
कर्ण बीर ऐसे शर जोड़े ❀ मारे रथके चारिउ घोड़े
बिरथ भये भीमहिं जब जाने ❀ धृष्टद्युम्न तब शारँग ताने
यहि बिधि सरस बाण संधाने ❀ कुरुदल के शर छाँह छिपाने
बिरथहु भीम घात बनिआये ❀ लैकर गदा क्रोधकरि धाये

दो० कर मुष्टिका प्रहार ते, मारेउ सेन अनन्त।
गदा घात लोटत परे, मतवारे मयमन्त॥

देखि द्विरद आगे चलिआयउ ❀ भीम उपर शतबाण चलायउ
द्विरद संग आये शत भाई ❀ ते सब बाण बृष्टि झरिलाई
भीमहिं घेरि लगे शर मारन ❀ इत अकेल उत बीर हजारन
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे ❀ भीमसेन बायें कर मारे
युगरद शीश परो तब धरणी ❀ देखी सबन भीम की करणी
द्विरदहिगिरतसबैमिलि धायउ ❀ शूल शेल सब बाण चलायउ
बहुतक आनि गदा परिहारे ❀ बहुतकआनि खड्ग शिरझारे
क्रोधित भीम भयो अति ताते ❀ शतबान्धव महँ बीस निपाते
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे
शल्य सारथी रथ पहुँचावा ❀ रहुरे भीम कर्ण अब आवा
यह कहिकै मारे तीक्षण शर ❀ घायल है कै फिरे बृकोदर

दो० पाण्डव दल जूझे घने, लागत कर्ण के बान।
धर्मराय यह देखिकै, कीन्हे शर संधान॥

करगहि धनु कीन्हें संधाना ❀ कर्ण अङ्ग मारे दश बाना
अपर बीस शर पायल छूटे ❀ ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हे ❀ भूप अङ्ग शर भेदन कीन्हे
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई ❀ तुम मोसों रण रची लराई
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ ❀ मेरे बल समान है पारथ
शल्य सारथी कर्ण चेताये ❀ बांधौ नृपति घात भलपाये
जो लगि धर्मराय लै आये ❀ जयतिपत्र भारत महँ पाये
नागफांस को उद्यम कीन्हे ❀ धर्मराय खगपति शर लीन्हे
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ ❀ धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयंकर ❀ मुण्डमाल कीन्हेउ गर शंकर
द्रौणी सों अर्जुन पुरुषारथ ❀ कीन्हो महा भयंकर भारथ
सहस बाण द्रौणी तब छांटे ❀ आवत बीचहि पारथ काटे

दो० अर्जुन द्रौणी रणमचो, छूटत बाण अनन्त ।
हयरथ पैदल गिरत हैं, मतवारे मयमन्त ॥

दूनों दल महँ परी लराई ❀ संध्या काल आइ नियराई
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना ❀ आपु युद्ध कहँ करहु पयाना
माया युद्ध करिय यहि रूपा ❀ मारो मिलि कौरवपति भूपा
करत प्रणाम असुर सब धाये ❀ कुरुसेना के ऊपर आये
गगन पन्थ कीन्ही अँधियारी ❀ बरषहिं बाण मनहुँ घनभारी
वृक्ष अनेक गगन ते छूटत ❀ लागत शिला सेन शिर फूटत
यहिविधि मारु भयानक कीन्हे ❀ अन्धकार कछु जात न चीन्हे
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा ❀ कोउ न रहेउ काहु के साथा
अपने मन सांचो करि जानेउ ❀ प्रलयकाल अबआय तुलानेउ
दुर्योधन तब आपु पुकारे ❀ कहां कर्ण हैं मित्र हमारे
मारहु असुर बिलंब न लावहु ❀ संकट ते अब मोहिं छुड़ावहु

दो० कर्ण कही राजा सुनहु, बधहुँ असुर जो आज ।
बज्र शक्ति मेरे अहै, राखेउँ अर्जुन काज ॥

आजुराति अस्थिर ह्वै रहिये ❀ सबमिलिकै धीरज मन गहिये
राजा कही कर्ण सों ऐसो ❀ अहो मित्र बोलत हौ कैसो
जो सबमिलि अर्जुनकहँ मरिये ❀ अर्जुनमारि कालिह का करिये
सांग शूल मुद्गर परिहारत ❀ वृक्ष पषाण शीश पर डारत
अब जनि गहरु करो तुम भाई ❀ मारि असुर कहँ देहु गिराई
कर्ण पुकारि कही यह बानी ❀ राजा तुम तौ बात न जानी
अहैं कृष्ण पारथ के रक्षक ❀ तिन उपाय कीन्हेउ परतक्षक
मृत्यु बिना कोऊ नाहिं मरही ❀ भये मृत्यु को रक्षा करहीं
धीरज धरहु करहु मन गाढ़ा ❀ मैं अब धनुष लिये कर ठाढ़ा
बज्रशक्ति ते असुर न मारहुँ ❀ कालिह युद्ध अर्जुन संहारहुँ
अर्जुन मारि जीतिहौं भारथ ❀ कुरुपति करहुँ तुम्हारो स्वारथ
राजा कही मतिहि बौरानी ❀ आजुहिं मरे कालिह को जानी

दो० कर्ण कही बिधिकी रचित, टारिसकै सो कौन ।
मारतहौं अब असुरकहँ, रहैं सबै होइ मौन ॥

यह कहि बज्रशक्ति कर लीन्हे ❀ सहसनयनको सुमिरण कीन्हे
मारि असुरको कर्ण चलायउ ❀ छिटकीज्योतिअकाशहिआयउ
लागी शक्ति असुर उर कैसे ❀ लगतबज्र गिरिवर गिरिजैसे
पस्यो भूमितल असुरभयंकर ❀ मुण्डमाल लीन्हेउ सो शंकर
गई शक्ति सुरपति के हाथा ❀ बहुत अनन्द भये जगनाथा
साधु कर्ण सेना सब भाखे ❀ ऐसे समय कवन केहिराखे
उभय सैन्य अपने गृह आयहु ❀ सब मिलि खानपानमनलायहु
रोदन करै हिडम्बी कैसे ❀ बिछुरी गाय बच्छ सों जैसे
भीमसेन करुणा बहुकीन्हे ❀ कृष्णदेव कछु कहिबे लीन्हे
करुणा करहु कछू नाहिं होई ❀ जगमहँ अमर भये नाहिं कोई
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गँवाये ❀ आपु मरे अर्जुनहि बचाये
भीमसेन अब साहस करिये ❀ अपनो प्रण रक्षा मन धरिये

दो० क्षत्री होय प्रणको धरै, करै सत्य परमान ।

कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

त्रय दश वर्ष छूट भा देशहि ❀ द्रुपदसुता नहिं बांधे केशहि
जब यह बात कही बनवारी ❀ छूटो शोक क्रोध भा भारी
घायल धर्मराय दुख पावा ❀ अर्जुनसों यह बचन सुनावा
धृग अर्जुन धृग धनुशर तोरे ❀ कर्ण बाण झरझर तन मोरे
सो सुनि अर्जुन क्रोधहि पायउ ❀ करगहिकै यदुनाथ बुझायउ
सेना सबहि शयन मन दीन्हे ❀ प्रात होत रण उद्यम कीन्हे
कीन्हे बम्ब दमामे बाजे ❀ सावधान क्षत्री सब गाजे
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे ❀ बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हे
पहिरि सनाह किये रण साजैं ❀ चहुँदिशि भेरि दुन्दुभी बाजैं
माथे मुकुट बिराजत कैसे ❀ सूर्य प्रकाश अकाशहिं जैसे
शल्य सारथी जोते घोरे ❀ चञ्चल चपल दिनन के थोरे
खोदत महि फहरात हैं ठाढ़े ❀ मानहुँ सिन्धु मथन के काढ़े

दो० पाखर लाल लगाइकै, पुनि बाँधे गजगाह ।
चढ़े कर्ण गज कोपिकै, मनलरिबे की चाह ॥

दुर्योधन कीन्हे असवारी ❀ साजी सेन महाबल भारी
भई बम्ब बैरख फहराने ❀ चले बीर सब बाँधे बाने
पाण्डव के दल बाजन बाजे ❀ नन्दिघोषरथ श्रीपति साजे
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे ❀ अक्षय तूण बिराजत कांधे
करगहि धनुष चढ़े रथ पारथ ❀ जोती गहे कृष्ण से सारथ
धर्मराय कीन्हे असवारी ❀ आगे भये भीम धनुधारी
दल चतुरङ्ग रङ्ग करि आई ❀ युद्ध भूमि महँ शोभा पाई
सूर्खे महाउत लइ अधिकारी ❀ भिरे गयन्द युद्ध भा भारी
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा ❀ उरझे सबै जोर सों जोरा
कहीकर्ण अब रथहि चलावहु ❀ अर्जुन के सन्मुख पहुँचावहु
मारौं आजु खेत महँ पारथ ❀ देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ

हँसि कै शल्य कही यह बानी ❀ रविनन्दन यह बात न जानी
दो० हंस काग जैसी भई, तैसी भई निदान ।
अबहिं कर्ण बलदेखिबो, भारत के मैदान ॥
क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने ❀ हंस काग को भेद न जाने
भाषो शल्य कर्ण सुन बीरा ❀ एक दिवस सरिवर के तीरा
राज हंस सब चले उड़ाई ❀ सिन्धु पार महँ चली चराई
तिनसों काग कही अस बानी ❀ हमकहँ साथ लेहु खग ज्ञानी
कही हंस तुम जाइ न पैहो ❀ मरिहो बूड़ि पार नाहिं लहिहो
कही कागगति सबहि उड़ैहों ❀ तुम सब साथ पार मैं जैहों
यह कहि चले हंस के सङ्गा ❀ कोश चारि लौ उपज्यो रङ्गा
थको काग तब ढिग ह्वै आयो ❀ बूड़त हौं यह बचन सुनायो
कही हंस सुधि अबहिं भुलानी ❀ अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी
सुनिकै हंस निकट तब आयो ❀ पीठि उपर तब काग चढ़ायो
फेरि बहुरि लाये यहि पारा ❀ राख्यो काग नींब की डारा
सिन्धु पार सब गयो उड़ाई ❀ यह चरित्र हम देख्यो भाई
दो० शरसों सागर बांधिकै, जिन जीते हनुमान ।
शरपञ्जररथ राखिकरि, तिनसों तुमहिं समान ॥
जब बिराटको गोधन गह्यऊ ❀ तादिन कर्ण कहां तुम रह्यऊ
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना ❀ देखहु आजु युद्ध तुम नैना
हाँको रथहि बिलम्ब न लाओ ❀ अर्जुन के सम्मुख पहुँचाओ
सुनिकै शल्य तेज रथ हांको ❀ पवन लगे फहरात पताको
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे ❀ बाणवृष्टि करिबे मन दीन्हे
कह तब कर्ण भीम तुम अहहू ❀ अर्जुन कहां सो मोसन कहहू
यहै कहत अर्जुन तब आये ❀ नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो ❀ दुश्शासन सों युद्ध बिचारो
आजु कर्ण सों हमहिं लराई ❀ पुरुषारथ देखो सब भाई
यह कहिकै कीन्ह्यो सन्धाना ❀ लागे सरस चलावन बाना

कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ आवत बाण बीचहीं तोरे
दोऊ बीर बाण सन्धाना ❀ शर के छांह छिपाये भाना

दो० अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्ह्यो शर संधान ।
अन्धकारभा दिवसभौं, सूझिपरहिं नहिंभान ॥

चले बाण कवि सकहिं न भाखन ❀ शतसों सहस सहससों लाखन
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❀ शल्य सारथी उत अधिकारी
अर्जुनकर्ण करत मन जितको ❀ कृष्ण शल्यहांकतरथ तितको
अग्निबाण अर्जुन कर लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक गुण दीन्हे
चले बाण कौरवदल जारन ❀ प्रकटीं शिखा हजार हजारन
देखि कर्ण जल बाण चलाये ❀ क्षणभीतर सबअग्नि बुताये
जलकी धार सेन बिकलाने ❀ पवन बाण अर्जुन संधाने
परम बेगि तातें जेहि ताका ❀ टुटनलगे सब ध्वजा पताका
छांड़े कर्ण सर्प के बाना ❀ नागन कीन्ह पवन सब पाना
तब अर्जुन खग बाण चलाई ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाई
दोऊ बीर चलावत हैं शर ❀ बलसमान सो बली धनुर्द्धर
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला ❀ बाण मारि सूखे सरि ताला

दो० पक्षी उड़त गगन महँ, ताको दिशाअधार ।
देव न देखत युद्ध कछु, शर छायो संसार ॥

कोटिन अर्ब खर्ब शर छांड्यो ❀ दोऊ दल बाणन ते पाड्यो
कुरु पाण्डव दल सब भरमाये ❀ अर्जुन कर्ण न देखन पाये
दोऊ बीर सरस पुरुषारथ ❀ कीन्हे महाभयानक भारथ
चुत्रुक कही कर्ण के आगे ❀ अब मोकहँ सन्धान सभागे
लीलों कृष्ण सहित रथ पारथ ❀ अब देखहु मेरो पुरुषारथ
सो सुनि कर्ण बीर सन्धाना ❀ चुत्रुकसहित त्याग तब बाना
कही कर्ण अर्जुन संहारहु ❀ आजु जानिबो तेज तुम्हारहु
हांक मारिकै बाण चलाये ❀ चुत्रुक प्रकट देह धरिआये
देखत रूप भयंकर भावा ❀ भादों घटा उमाड़ि जनु आवा

दरबि बाढ़ि लाग्यो असमाना ❀ फण के छाँह छिपाये भाना
दो० रवि अक्षत निशि ह्वैगई, अर्जुन भाषे बैन ।
अन्धकार कस देखिये, कहिये राजिवनैन ॥
तब श्रीहरि आये याहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन
जब खाण्डव बन दाहन कीन्हा ❀ सारथि होइ जोती हम लीन्हा
शर पञ्जर छाये तुम कानन ❀ शत योजन घेरे तुम बानन
तादिन रथ ऐसो मैं हांका ❀ घुमिरत मनहुँ कुम्हारको चाका
खग मृग पशु जारत दवकानन ❀ बाहर होय न बचत है बानन
घुर्मि नाम नागिनि जब जानी ❀ तेजवन्त आकाश उड़ानी
तब तुम बेगवन्त शर छाँटे ❀ नागिनि गई पूंछ त्याहि काटे
ताको सुत यह चुञ्चुक नामा ❀ बसै पताल शेष के धामा
करकोटक को पुत्र कहावा ❀ बैरलेन भारत मों आवा
कर्ण के त्रोण रहत है तबसों ❀ कीन्हो युद्ध अरम्भन जबसों
तब अर्जुन यह भेदहि जाने ❀ क्रोधित बाण कीन्ह संधाने
अर्जुन क्रोध लगे शर मारन ❀ शत ते सहस सहस्र हजारन
दो० अर्जुन मारत कोपिकै, नाहिंन फूटत अङ्ग ।
चुञ्चुक के फण लागिकै, होत बाण सब भङ्ग ॥
गर्जत सर्प क्रोध ते कैसा ❀ प्रलयकाल बोलत घन जैसा
चुञ्चुक कही सुनो हो पारथ ❀ लीलत अहौं करौ पुरुषारथ
यह कहि बदन किये बिस्तारा ❀ मनहुँ उदर नाहिं अहहि पनारा
जो शर अर्जुन के कर छूटत ❀ गड़े न नेकु लागि सब टूटत
पाण्डव दल देखत भय माने ❀ धर्मराय अचरज करि जाने
नन्दिघोष रथ लीलै लीन्हेउ ❀ हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ
सुरपति देखि महाभय पायो ❀ हनूमान सों ऐस जनायो
दाबहु रथ सो जाइ पताला ❀ यहिबिधिबाञ्छितकीजियव्याला
ऊपर बल कीन्हेउ हनुमाना ❀ रथ गाड़िगयो पताल समाना
चुञ्चुक के मुख पीत पताका ❀ पवन लगे डोलत है ताका

दोऊ दल कीन्हेउ अनुमाना ❋ नन्दिघोष अहिउदर समाना
चुम्चुक फिरेउ कर्ण ढिगआवा ❋ साधु साधु कहि कर्ण सुनावा
दो॰ शल्य कही तब कर्णसों, झूंठ कहो क्यहि काज ।
पारथको को त्रासि है, जेहि सारथि ब्रजराज ॥
यहि अन्तर हरि रथहि उठायउ ❋ नन्दिघोष धरणी पर आयउ
पाण्डव दल देखत सुख मानेउ ❋ तबहिं कर्णसों शल्य बखानेउ
रथ समेत देखहु यहि पारथ ❋ हनूमान रथ पारथ सारथ
कर्ण कही चुम्चुक सों बानी ❋ मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी
चुम्चुक कही भयो छल भाई ❋ मैं तो कछु यह भेद न पाई
फिरि मोको कीजे संधाना ❋ करौं असन पारथ भगवाना
कही कर्ण यह उचित न होई ❋ बाण बटोरि चलाव न कोई
आश देइके कीन्ह निरासा ❋ पैहौ नाग नरकमहँ बासा
यह कहि नाग किये तब गवना ❋ जैहौ कर्ण काल के भवना
चुम्चुक जब भवनहिंगम कीन्हे ❋ अर्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हे
कब आवे कब शर सन्धाने ❋ कब छूटहि कोई नहिं जाने
यहि बिधि करत युद्धकी करणी ❋ अङ्ग भेदि फूटत शर धरणी
दो॰ महाबीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार ।
रण देखत मुनिदेवगण, कठिन बजाये सार ॥
अर्जुन कर्ण भयो रण घोरा ❋ परो भीम दुश्शासन जोरा
भीमसेन ऐसे शर जोरे ❋ मारे रथ के चारिउ घोरे
दुश्शासन शारँग कर लीन्हे ❋ बाणन बृष्टि भीम पर कीन्हे
चारि बाण ते अश्व सँहारे ❋ एक बाण ते सारथि मारे
शत शर भीमसेन उर लागे ❋ क्रोध अनल तनु अन्तर जागे
कर गहि गदा भीम तब धाये ❋ हांक मारि दुश्शासन आये
दोऊ बीर खेत महँ कैसे ❋ महामत्तगज उरझे जैसे
कर गहि गदा कोपि परिहारहिं ❋ एकहि एक कोप करि मारहिं
धमकत घाव लगेउ जब तनमें ❋ बाढ़त कोप दोऊ के मनमें

अस्त्र झारिकै दोउ लपटानेउ ❀ क्रुद्धित तरल युद्ध अरुझानेउ
करगहि कच मुष्टिक परिहारहिं ❀ शीशहि शीश कोपिकै मारहिं
उरसों उर पेलत हैं दोऊ ❀ पारिसकत नहिं टरत हैं कोऊ
दो० भीमसेन अतिक्रोधकरि, अभिरत अमित अनन्द।
आनि पछारेउ धरणिपर, मानहुँ सिंह गयन्द ॥
डरेउ भीम दुश्शासन कैसे ❀ ब्याघ कुरङ्ग पछारहिं जैसे
कहेउ भीम दुश्शासन बीरहि ❀ खैंचत कस न द्रौपदी चीरहि
खेलहु पांशा मुकुट बनावहु ❀ गहौ केश द्रौपदि लै आवहु
अबहिं सबहि सुधि बिसरी भाई ❀ मेरे चितहि आजु सब आई
भीमसेन कह नकुलहि धावहु ❀ जाइ तुरत द्रुपदी लै आवहु
पलमहँ नकुल गयो चलि भवना ❀ द्रुपदसुता अब कीजै गवना
मेलेउ भीमसेन अभिमानी ❀ हँसिकै चली आपु तहँ रानी
आई तुरत बिलम्ब न कीन्हे ❀ पौढ़े भीम दुशासन लीन्हे
कही पुकारि द्रौपदी रानी ❀ सुनिये बात भीम तुम ज्ञानी
ऐसे तौ तुम पांच सहोदर ❀ धन्य धन्य तुम धन्य बृकोदर
जब कीचक बिराटपुर मारे ❀ तादिन मेरे लाज निवारे
तनमन धनहि निछावरि कीजै ❀ तोपर प्राण वारिकै दीजै
दो० भीम भयंकर रूपधरि, कहेउ सुनौ दोउ सैन।
है कोऊ रक्षा करै, मोसे कहिये बैन ॥
कुरु पाण्डव जेते हैं क्षत्री ❀ कृष्ण सहित यदुबंशी अत्री
असुर नाग नर सुरहु पुरन्दर ❀ धरणी सिन्धु मेरु गिरिकन्दर
चन्द्र सूर्य तुम दोऊ साखी ❀ तीनि लोक देखत हैं आंखी
रक्षा करहु दुशासन मारत ❀ कही भीम हम भुजा उपारत
सुनि पारथ के जिय रिस बाढ़ी ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़ी
मारि भीम अब करौं निपाता ❀ कैसेउ सहि न जाति यह बाता
श्रीपति कही उचित नहिं होई ❀ आजु भीम सों जितहि न कोई
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा ❀ भीम अङ्ग परवेशित कीन्हा

हांक मारिके भुजा उपारे ❀ रुधिर द्रौपदी के शिर डारे
शिरसों परत रुधिर की धारा ❀ द्रुपदसुता तब बाँधेउ बारा
अरुण बरण तन सोहत कैसे ❀ असुर युद्धमहँ देवी जैसे
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी ❀ अर्जुन कर्ण रचेउ रण भारी
दो० शर बर्षत हर्षत दोऊ, हांकत रथ भगवान।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥
इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वभाषाकृततृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥
दोउ बीर हैं मेघ समाना ❀ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना
घन घहरात घहर रथ चाके ❀ बकपांती सम श्वेत पताके
ऐसे बाण गगन मों धावहिं ❀ शर रोकत शरपन्थ न पावहिं
कुरु पाण्डव दल नाहिंन सूझै ❀ अपन पराइ कोई नहिं बूझै
गज अरु शकट हजारनधावहिं ❀ कर्ण के रथहि बाण पहुँचावहिं
दो० अर्जुन कर्णहिं रण मच्यो, जलदबुन्दसमबान।
सरस निरस कहिजात नहिं, रह्यो मण्डिमैदान॥
कर्ण पांच शर भालुक लीन्हे ❀ लघु संधान किरीटन कीन्हे
दोऊ सारथि रथहि चलावत ❀ बोहित मनहुँ सिन्धुमहँ धावत
जूझी सेन लगे तीक्षण शर ❀ होनलागि अति मारु परस्पर
अर्जुन कर्ण करत रण करणी ❀ रुण्ड मुण्ड मरझ्यो सब धरणी
अर्जुन बाण कोपि परिहार्‌यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टार्‌यो
देखि कर्ण तब शर संधाना ❀ मार्‌यो नन्दिघोष तकि बाना
पैग अढ़ाई पाछे टार्‌यो ❀ साधु कर्ण यदुनाथ पुकार्‌यो
सुफल जन्म जग जीवन तेरा ❀ बाण घात डोलत रथ मेरा
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ साधुबचन भाष्यो क्यहिकारण
सहस पैग हम रथहि चलायो ❀ पैग अढ़ाई मम रथ आयो
तब श्रीपति बोले यह बानी ❀ अर्जुन तुम यह भेद न जानी
नन्दिघोष रथ मेरु समाना ❀ ध्वजपर परम भार हनुमाना
दो० महाविश्वम्भर रूप धरि, हांकत हैं यह रत्थ।

टारो रविसुत बाणते, महाबीर समरत्थ ॥

यह सुनि बाण लगे परिहारन ❀ जूझी सेना बीर हजारन
कर्ण कोपि भालुक शर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे ❀ सहस बाण हनुमानहिं मारे
श्याम शरीर रुधिर छबि छाये ❀ पीत बसन तन शोभा पाये
अर्जुन को तन झाँझर कीन्हे ❀ क्रोधित भये एक शर लीन्हे
कर्ण के हृदय ताकि कै मारयो ❀ भेदिकै अङ्ग निसरि शर पारयो
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हे ❀ घायल करि तन झाँझर कीन्हे
अरुण बरण देखत तन भूले ❀ मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले
यहि बिधि कीन्ह्यो बाण दरेरो ❀ दशहू दिशा दोउ रथ घेरो
दोऊ रथ यहि बिधि छबि पाये ❀ पर्वत मनहुँ भूमि पर आये
कही कर्ण अर्जुन सुनि लीजे ❀ सावधान मोते रण कीजे
अब यहिबिधिते बाण चलायो ❀ काटो शीश बिलम्ब न लायो

दो० मारतहौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह बैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पङ्कजनैन ॥

यह कहि नीलबाण कर लीन्हे ❀ जो शर ऋषि दुर्वासा दीन्हे
कृष्ण देव रण को मन दीजे ❀ अब पारथ की रक्षा कीजे
क्रोधित बाण किये संधाना ❀ देखिशल्य यहि भांति बखाना
जाके रक्षक श्रीजगत्राता ❀ ताको कर्ण कीन्ह चहै घाता
हृदय ताकि मारेउ तब बाना ❀ पलटि न करहुँ फेरि संधाना
यह कहि धनुषकरणलागिताना ❀ कर्ण हाथ छूट्यो तब बाना
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे ❀ छूटै बज्र इन्द्र कर जैसे
अर्जुन लगे कठिन शर मारण ❀ पै न सके यह बाण निवारण
आयो बाणकण्ठ ताकि जबहीं ❀ नन्दिघोष दाबेउ प्रभु तबहीं
जुटिके अश्वरथहि ढिग आयो ❀ कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो
मुकुट काटि शर बेधेउ धरणी ❀ जग में रही सदा यह करणी
धन्य कृष्ण पाण्डव सन भाखा ❀ दीनदयाल पारथहि राखा

दो० जाके सारथि चक्रधर, मारि सकै तेहि कौन ।
अर्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधारौन ॥

हाँक देत हांकत हरि घोरे ❀ अर्जुन कोपि कठिन शर जोरे
दोऊ बीर बाण परिहारे ❀ एकहि एक क्रोध ते मारे
शर अनेक बरषत हैं कैसे ❀ श्रावण मेघ महाझरि जैसे
पक्षी गगन उड़न नहिं पावत ❀ शर लागत धरणीपर आवत
अरुणबरण आये सँग आवहिं ❀ शर समूह ते पन्थ न पावहिं
ऐसे लाग चलावन बाना ❀ शर पञ्जर छाये असमाना
जूझी सेना पन्थ न पावहिं ❀ लोथिन पर रथ हांकि चलावहिं
गरजत नन्दिघोष के चाके ❀ पवन बेग फहरात पताके
शल्य सारथी रथहि चलावा ❀ नन्दिघोष सम्मुख पहुँचावा
अर्जुन करण जुरे हैं कैसे ❀ रघुपति सों रावण रण जैसे
इकते एक महाबल भारी ❀ बरण शूर दोऊ धनुधारी
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ रणसमबली करण अरु पारथ

दो० अर्जुनकरणहिंरणमच्यो, छूटत तीक्षण बान ।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन, भाजे छांड़ि बिमान ॥

शल्यहि कही करण तब ऐसो ❀ चाक भूमि परमै नहिं जैसो
जेहि दिन मैं बिराटपुर घेरी ❀ बैठी गाइ अहीरन टेरी
तब सहदेव बुद्धि उपराजो ❀ खुरदै बांधि आपु उठि भाजो
लाठी छांड़ि बहुत बिधि मारो ❀ अचल गाइ तन टरत न टारो
मैथुनि नाम गाय यक रहेऊ ❀ क्रोधित है अस मासन कहेऊ
जैसे अचल भयो तन मोरा ❀ रथ अटकै भारथ में तोरा
चाके चारि ग्रसैं जब धरणी ❀ तब न बनै कछु तामों करणी
यह सुधि मेरे मन में आई ❀ सावधान हांको रथ भाई
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी ❀ चाक छुवै नहिं पावत धरणी
अर्जुन कर्ण करत संग्रामा ❀ पलभार नाहिं पावत बिश्रामा
देवअस्त्र दउदिशि परिहारहिं ❀ एकहि एक क्रोधकरि मारहिं

गजरथ पैदल जूझे लाखन ❀ महा मारु कोउ सकै न भाखन
दो० नदी भयंकर रुधिर की, गजन करारे जान ।
भरत मांस जलफेन सम, लहरी चमकें बान ॥
ढाल मनहुँ कच्छप उतराने ❀ बार सेवार सरिस अरुझाने
बख्तर सहित परे धर जेते ❀ ग्राह समान देखियत तेते
गज भुशुण्ड टूटे कस जाने ❀ मनहुँ सूसि जल में उतराने
चक्रित फरी लसत हैं कैसे ❀ रुचिर पत्र पुरइनि के जैसे
शूर शीश देखत दिग भूले ❀ जैसे कमल सहस दल फूले
मांस बहुत सम सरस सोहावा ❀ नाव चलत जिमि रथ उतरावा
परि जँजीर जल शोभा पावहिं ❀ धीवर मनहुँ जाल छिटकावहिं
भूत प्रेत करते असनाना ❀ योगिनि मनहुँ करैं सो पाना
जम्बुक गीध काकगण आवहिं ❀ मांस खाहिं मन मोल चुकावहिं
नन्दी चढ़ि डोलत हैं शंकर ❀ मुण्डमाल गर रूप भयंकर
गजशुण्डहिलै योगिनि आवहिं ❀ दै मुख बिच करताल बजावहिं
नाचि कबन्ध देहिं करतारी ❀ कौतुक रचि रणभूमिहिं भारी
दो० आंत लपेटे गज चरण, किये पखाउज साज ।
भैरवगण या बिधि फिरत, खेत भयंकर लाज ॥
यहि बिधि युद्ध भयंकर भारी ❀ दोऊ भिरे खेत परचारी
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे ❀ भोरहिं उदित दिवाकर जैसे
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे
तीक्षण बाण कृष्ण उर दीन्हे ❀ हनूमान तन जर्जर कीन्हे
तब अर्जुन कीन्हे संधाना ❀ करण हृदय ताकि मारेउ बाना
घायल किये शल्य से सारथि ❀ एकते एक सरिस पुरुषारथि
बाणहिं त्यागत यहि ब्यवहारा ❀ जिमि बरषा बरषै जलधारा
रबिमण्डलमहँ शब्द सुनावहिं ❀ करण मारि अर्जुन यश पावहिं
सुरपति कही जीतिहैं पारथ ❀ मारौ कर्ण करहु पुरुषारथ
यहिबिधि कहहिं देवगण बानी ❀ सुनिकै शल्य अचम्भव मानी

कोऊ कहूं लरो नाहिं ऐसो ❋ अर्जुन करण भयो रण जैसो
रुधिर प्रवाह चलै सब अङ्गा ❋ महाशूर मन नेकु न भङ्गा

दो० घोर युद्ध यहि बिधि करत, दोऊ बीर समान ।
शल्य सारथी करणरथ, पारथरथ भगवान ॥

भीमसेन कीन्ही बहु करणी ❋ परे बीर लोटत सब धरणी
गजते गज हयते हय मारे ❋ रथहि पकरि रथ ऊपर डारे
सम्मुख जुरे गिरे गण जेते ❋ गगन पन्थ कहँ फेंकत तेते
जे अभिरे ते सबै पछारे ❋ बहुतक मींजि चरण ते डारे
लागे बीर गदा सों मारण ❋ दुर्योधन के बन्धु सँहारण
ते सब बहुरि कठिन शर मारे ❋ मुद्गर गदा शूल परिहारे
भूमि परे पर भीम न डरपै ❋ मनहुँ बाज पक्षिन पर झरपै
क्रोधित भये पाण्डु के नन्दन ❋ यहि बिधि कीन्हे सेननिकन्दन
तब अर्जुन छांड़े शर पायल ❋ शल्यसहित रबिनन्दन घायल
करण बाण ऐसे परिहारे ❋ अर्जुन हृदय ताकिकै मारे
कही कृष्ण सुनिये अब पारथ ❋ प्रणकहँ सुमिरि करहु पुरुषारथ
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❋ हांकत पद ठहरात न घोरे

दो० अर्जुनकरणहिं रणमचेउ, उपमा और न तासु ।
मारत शरके अग्र ते, उड़तगगनमहँमासु ॥

सखा साथ धरणी के ऊपर ❋ ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर
होनहार सो होय निदाना ❋ बिधि चरित्र कोऊ नहिं जाना
भाषो शल्य कर्ण सों ऐसा ❋ अटको चाक चलत रथ कैसा
सुनिकै कर्ण कियो दृढ़ ठाना ❋ मारो नन्दिघोष तकि बाना
सहस बाण अश्वन उर मारे ❋ थकित भये पगु टरत न टारे
असी बाण मारेहु हनुमानहिं ❋ शर अनेक घाले भगवानहिं
तीनि बाण पारथ उर मारे ❋ नन्दिघोष रथ टरत न टारे
कृष्णदेव हांको रथ बांको ❋ जैसे फिरत कुम्हार को चाको
चहूं ओर शर बर्षत कैसे ❋ भाद्र बृष्टि मन्दर पर जैसे

जेहिदिशि अर्जुन को रथ धावै ❀ तेहिदिशि कर्ण बाण झरिलावै
छूटत बाण कर्ण के करसों ❀ नन्दिघोष रथ घेरेउ शरसों
हांक देत हांकत रथ घोरे ❀ अर्जुन कठिन बाण गुण जोरे

दो० माख्यो पारथ क्रोधकरि, चल्यो बाण परचण्ड ।
कर्ण धनुर्द्धर श्री प्रबल, काटि किये शतखण्ड ॥

अश्वन शल्य बहुत विधि हांको ❀ छूटत नाहिं भूमि ते चाको
कूदि कर्ण रथ ते ढिग आये ❀ गहि चाका तेहि चहत उठाये
कर्ण बीर कीन्ह्यो बल भारी ❀ अर्जुन सों भाष्यो बनवारी
मारहु बाण गहरु जनि लावहु ❀ कर्णशीश अब मारि गिरावहु
पारथ कही उचित नहिं होई ❀ बिना अस्त्र नहिं मारहि कोई
यह अधरम करिये केहि कारण ❀ यह सुनि कही जगतके तारण
चक्रव्यूह महँ अभिमन्यु मारे ❀ तादिन कर्ण न धर्म बिचारे
आजु धर्म तुम शोचौ पारथ ❀ तौ भारत रण किये अकारथ
कुन्ती दिये बाण सो लीजै ❀ अर्जुन करण बधन तेहि कीजै
मारहु तुरत गहरु जनि लावहु ❀ बहुरि न ऐसो अवसर पावहु
रथ उठाइ करिहै धनु धारण ❀ तब अर्जुन तुम सकिय न मारण
सुनि अर्जुन कीन्हे संधाना ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताना

दो० दीन्हे हांक प्रचारिकै, चलो बज्र सम बान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

लाग्यो बाण कर्ण के कैसे ❀ इन्द्र बज्र पर्वत पर जैसे
काटो शीश परा तब धरणी ❀ जग में रही सदा यह करणी
कृष्ण आपु जय शंख बजायो ❀ पाण्डव सैन्य देखि सुख पायो
हर्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ पुष्पबृष्टि सब देवन कीन्हा
जयजय शब्द गगनमहँ बोल्यो ❀ चढ़ि बिमान आनन्दितडोल्यो
जूझेउ कर्ण जगत यश पायो ❀ निसरो रथ महि ऊपर आयो
छूटो चक्र धरणि ते जबहीं ❀ फेरयो शल्य हांकि रथ तबहीं

छूंछो रथ दुर्योधन देखा ❀ जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा
बिचलि सेन कौरवपति जान्यो ❀ आगे ह्वैके शारँग तान्यो
शरसों मारु भयंकर दीन्हे ❀ सेना सबै निवारण कीन्हे
संध्या जानि किये तब गवना ❀ द्वउ सेना आईं निज भवना
असअहमिति अर्जुन मन कीन्हे ❀ कर्ण मारि जग में यश लीन्हे

दो० महाबीर रबिसुत निरखि, कही कृष्ण यह बात ।
अर्जुन सुनिये श्रवण दै, षटजन किये निपात ॥

परशुराम जब शापहि दीन्हे ❀ कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हे
तुम हम धरणी कुन्ती माता ❀ छहउ जने मिलि कीन्ह निपाता
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ भृगुपति शापदियोक्यहिकारण
तब श्रीहरि आय यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन
रतन बर्ष व्याकरण पढ़ायो ❀ भृगुपति पहँ पढ़िबे को आयो
कटि में मूंज मेखला बांधे ❀ कीन्हे तिलक जनेऊ कांधे
निकट जाय परणाम जनाये ❀ कौन जाति कहँवां ते आये
मैं हौं बिप्र श्रवण सुनि लीजै ❀ आये पढ़न अनुग्रह कीजै
बिद्या मोपहँ आय घनेरो ❀ पढ़िये जो मन आवै तेरो
तब भाष्यो धनुबिद्या दीजै ❀ बालक जानि कृपा म्वहिं कीजै
धनुबिद्या सिखइय मुनि ज्ञानी ❀ करण चतुर्दशि आय तुलानी

दो० धनुष बाण लै हाथ महँ, करन चले अस्नान ।
खरी तुरत लै आयहु, पाछे शिष्य सुजान ॥

आगे चलत बृक्ष यक देखा ❀ फूले फूल कदम्ब अशेषा
परशुराम हँसि शारँग साधो ❀ मारो फूल कटो तब आधो
एक शरहि यहि भांति चलायो ❀ कटे सबै नहिं एक बचायो
परशुराम जलतीरहि गयऊ ❀ पाछे कर्ण बृक्षतर अयऊ
आधो फूल लाग है ऊपर ❀ आधो कटो परो है भूपर
मनहिं कही मैं बाण चलावों ❀ आधो है त्यहि मारि गिरावों
भूपर खरी धरै जो कोई ❀ बाढ़ै दोष पवित्र न होई

उछलाये तब कनक कटोरा ❋ लै धनु बाण हाथ गुण जोरा
यहि विधि ते कीन्हो संधाना ❋ कट्यो फूल सब एकहि बाना
बायें हाथ धनुष शर लीन्हे ❋ दहिने हाथ कटोरा कीन्हे
आये परशुराम के पासहि ❋ खरी लगाय पढ़े सो आसहि
करि अस्नान ध्यान तब कीन्हे ❋ चले तुरत भवनहिं मन दीन्हे

दो॰ आये वृक्ष कदम्बतर, देखिरहे होइ मौन ।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन ॥

सुनिकै कर्ण कही यह बानी ❋ आधो काटो मैं अभिमानी
परशुराम मन माहिं बिचारी ❋ भयो सपूत सिद्ध धनुधारी
यहिविधिते कछु दिवस गँवायो ❋ एक दिवस निद्रा मन लायो
आलस भयो शयन तब कीन्हा ❋ कर्ण जङ्घ ऊपर शिर दीन्हा
बज्र कीट कीरा जो रह्यऊ ❋ जटा सों निकसि जङ्घ सो गह्यऊ
भेदेउ जङ्घ निकरि तब पारा ❋ तासों चली रुधिर की धारा
तातो रुधिर अङ्ग सों लागा ❋ उठ्यो चौंकि भृगुनायक जागा
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो ❋ लाग्यो बज्र कीट यह जान्यो
सुधि अजहूं नाहीं त्यहि केरी ❋ कहु रे शिष्य जाति का तेरी
ऐसो विप्र कहां ते आयो ❋ बिनु डोले जिन जङ्घ छेदायो
क्षत्री जाति अहो मैं जाना ❋ छल काहेक कीन्हों अज्ञाना
विद्या दै बिनाश का कीजै ❋ बर अरु शाप एक सँग दीजै

दो॰ पांच बाण मैं देतहौं, जौलौं रहिहैं हत्थ ।
अजय होहि संसार मों, जीतै तौ समरत्थ ॥

जब यह बाण शत्रु कर जैहै ❋ तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै
बर अरु शाप दोउ जब जाने ❋ सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने
अर्जुन के जिय संशय रह्यऊ ❋ ता कारण या माधव कह्यऊ
धर्मराय तब बात जनाई ❋ मेरे जिय कस संशय आई
विप्र जानिकै विद्या दीन्ह्यउ ❋ क्षत्री जानि शाप किमि कीन्ह्यउ
या बिधि कही जगत के तारण ❋ धर्मराय सुनिये यह कारण

भीषम गये रहे तहँ आगे ❀ परशुराम ते सिखे सो लागे
विद्या अस्त्र बहुत बिधि दीन्हे ❀ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हे
विद्या पाइ भवन कहँ आये ❀ तब माता यह बचन सुनाये
मेरो कहा कियो तुम चाहौ ❀ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाहौ
दोऊ बन्धु साथ लै लीन्हे ❀ बाराणसी गवन शुभ कीन्हे
जानि स्वयम्बर सब नृप आये ❀ रङ्गभूमि सब राजन छाये

दो० अम्बे अम्बा अम्बली, तीनों कन्या साथ।
निकरीं भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ॥

जब कन्या इत पाँव न दीन्ह्यो ❀ भीषम देखि क्रोध जियकीन्ह्यो
तीनिउँ गहि कर रथहि चढ़ाये ❀ तब भीषम चलिबे मनलाये
भिरे नरेश किये रण क्रोधा ❀ गङ्गासुत जीते सब योधा
कन्या लै भवनहिं पहुँचाये ❀ माता सों तब बचन सुनाये
चित्राङ्गदहि अम्बिकहि दीन्हे ❀ अम्बहि चित्रबीज तब लीन्हे
अम्बालिका कोउ नहिं चाहे ❀ द्वउ कन्या द्वउ बन्धु बिवाहे
जो भीषम अपनो भल चाहौ ❀ तौ मोको अब भाय बिवाहौ
जो अपने मन इच्छा कीन्हे ❀ जाहु शाल्व पर आज्ञा दीन्हे
कन्या चली शाल्व पहँ आई ❀ भीषम मोकहँ दीन पठाई
शाल्व कही यह उचित न होई ❀ अब तोकहँ ब्याहै नहिं कोई
अम्बालिका बचन सुनि पाई ❀ तब फिरि परशुराम पहँ आई
गङ्गासुत मोकहँ हरि लाये ❀ करैं न ब्याह बीच टरकाये

दो० परशुराम सुनि क्रोधकै, कहा चलो मम साथ।
भीषमको हौं सौंपिहौं, पकरि हाथसों हाथ॥

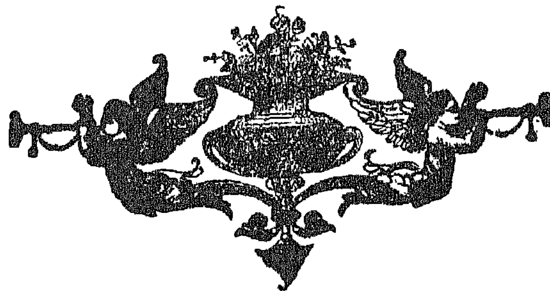
भृगुपति आय दिये तबदरशन ❀ भीषम दौरि किये पग परशन
इतना कहो हमारो कीजै ❀ जयमाला कन्या सों लीजै
कीन्हो कौल पिता सों अपने ❀ संगम नारि करहुँ नहिं सपने
की मानो तुम कहा हमारो ❀ की अब मोते युद्ध बिचारो
गङ्गासुत सुनि क्रोधहि पाये ❀ बांधि अस्त्र मैदानहिं आये

शिषि गुरु रच्यउ महारण भारत ❀ चौबिस दिवस रच्यो पुरुषारथ
देवन आइ बीच कर दीन्हा ❀ तब कन्या कछु कहिबे लीन्हा
गङ्गतीर शुचि चिता बनाई ❀ देखत सबहि जरत हौं भाई
क्षत्री होइ लेहौं अवतारा ❀ तब भीषम को करहुँ सँहारा
अस कहिकै निज देहै जारौं ❀ जन्म शिखण्डी भीषम मारौं
तबसों परशुराम प्रण कीन्ह्यो ❀ क्षत्री को बिद्या नहिं दीन्ह्यो
सुनिकै धर्मराय सुख माना ❀ सत्य बचन भाष्यो भगवाना

दो० जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहँ हरि बिजय प्रमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषा
विरचितेकर्णार्जुनयुद्धेकर्णवधवर्णनो
नामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति कर्णपर्व समाप्तम् ॥





श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शल्यपर्व ॥

जय जय गुरुचरणन चित दीजै ❋ रघुपतिपद अभिबन्दन कीजै
शारद चरण करहुँ परणामा ❋ बन्दौं बालमीकि गुणग्रामा
सम्बत सत्रह सै जग जाना ❋ त्यहि ऊपर चौबीस बखाना
कार्त्तिकमास पक्ष उजियारा ❋ दशमी तिथि को कथा उचारा
नौरँग शाह दिली सुल्ताना ❋ प्रबल प्रताप जगत सब जाना

दो० ब्यासदेव पद बन्दिकै, जा मुख बेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

जूझे कर्ण जगत यश पाये ❋ दुर्योधन यह बचन सुनाये
हा हा मित्र परम सुखदायक ❋ महायुद्ध करिबे के लायक
तुम पाये निज क्षत्री धर्मा ❋ यह सब दोष हमारे कर्मा
बलसों अर्जुन सके न मारण ❋ छलकरि बधे जगत के तारण
अब काको सेनापति कीजै ❋ जाके बल भारत यश लीजै
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❋ राजा सुनिये बिनय हमारी
जब पाण्डव निज देशहि आये ❋ करि बसीठ यदुनाथ पठाये
पांच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ ❋ हठ करिकै भारत तुम कीन्हेउ
अब करुणा कीजै क्यहि काजा ❋ साहस सदा चाहिये राजा
सदा धर्म अपने मन राखउ ❋ सत्य छांड़ि मिथ्या नहिं भाखउ
ब्राह्मण गउन की रक्षा करही ❋ परधन परनारी नहिं हरही
सुतसम प्रजा करो प्रतिपालक ❋ ज्यों जननी पालै निजबालक

दो० सदा दान सन्मानकरि, तजौं न शील स्वभाव ।
शरणागत रक्षा करत, देश प्राण वरु जाव ॥

मातु पिता की सेवा करई ❋ आज्ञा तासु शीश पर धरई
कृतबर्मा यहिबिधि कहिदीन्हेउ ❋ तब शकुनी कछु कहिबे लीन्हेउ
शोच करत नृप काह अकारथ ❋ अर्जुन तोहिं रचहु महभारथ
कृपाचार्य द्रौणी सम अत्री ❋ हमहूं हैं कृतबर्मा क्षत्री
शल्य नरेश अहै बल भारी ❋ क्षत्री महाबीर धनुधारी
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा ❋ दीजै भूप शल्य शिर भारा
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये ❋ मुकुट शल्य के शीश बँधाये
बिप्रन आइ बेदध्वनि भाख्यउ ❋ आगे कलश नीर भरि राख्यउ
बहुत भाँति शकुनी शुभ कीन्हे ❋ दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हे
शल्य नरेश आपु यश लीजै ❋ रण पांचो पाण्डव बध कीजै
भीषम प्रथम गिरे मैदाना ❋ द्रोण गुरू को भयो निदाना

दो० सेन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्ण से मित्र ।
शल्य पाण्डवन जीतिहै, ऐसी नृप के चित्र ॥

कही शल्य देखहु पुरुषारथ ❋ मारि पाण्डवन जीतहुँ भारथ
महायुद्ध करिहौं परतक्षक ❋ पै अर्जुन रथ श्रीपति रक्षक
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना ❋ रबिके उदय साजि सब सैना
कृपाचार्य अश्वथामा साज्यउ ❋ भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ
कृतबर्मा कीन्हेउ असवारी ❋ सेन अनेक बीर धनुधारी
अस्त्र बाँधि शकुनी तब आयउ ❋ चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ
कुरुपति रथ साजो है कैसे ❋ इन्द्र बिमान देखिये जैसे
चञ्चल चपल आनि रथ जोरे ❋ पवन बेग सों चारिउ घोरे
ध्वजा पताका बाँधेउ बाना ❋ बहुत भाँति बैरख फहराना
गज पाछे पर्वत सम भारी ❋ पांव जँजीर नैन अँधियारी
चारिहु पाट बहत मद धारा ❋ ज्यों झरना झर बहै पनारा
अति उतंग देखत छबि पावत ❋ मनहुँ मेघ धरणी पर आवत

दो० कुरुपति चले साजि दल, सेना सिन्धु समान।
हय रथ पैदल चले बहु, गर्द लोपिगे भान॥

धर्मराय कीन्ही असवारी ❋ पारथ रथ जोते बनवारी
अर्जुन अङ्ग सनाह बिराजे ❋ अक्षयत्रोण गाण्डिव सो आजे
चढ़े कोपि रथ भीम भयंकर ❋ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर
चढ़ि तुरंग पर नकुल स्वहाये ❋ धर्मराय कहँ शीश नवाये
कञ्चन रथ सहदेव बिराजे ❋ करअसुफरी सरिस शर छाजे
धृष्टद्युम्न क्षत्री गण राजे ❋ चढ़े तुरङ्ग बीर सब गाजे
गजअरूढ़ अगणित बल भारी ❋ जिनके नयन परी अँधियारी
पहिरि सनाह महावत चढ़े ❋ मानहुँ बिधि अपने कर गढ़े
क्रोधवन्त जानत रण घोरा ❋ छायालखि देखहिं भुज ओरा
कोपमान पैदल रण चांढ़े ❋ फरी लेइ चमकावत खांड़े
सांगि शूल लीन्हे कोऊ कर ❋ कोउ मुगदर लै कोउ धनुर्द्धर

दो० धर्मरायर्याहिबिधिचल्यो, दलबलकीन्ह्योसाज।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजराज॥

सेन साजि कुरु खेतहि आये ❋ द्वउ दल बीरन शोभा पाये
बम्ब निशान बाजने बाजे ❋ होत शब्द मानहु घन गाजे
कोहकत गज हींसत हैं घोरे ❋ आगे होयँ शूर रण जोरे
अग्रहि पेलि देहिं मयमन्ता ❋ क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता
रथी रथी शर बर्षन लागे ❋ कोप अनल उर अन्तर जागे
खमसी आनी जुरे असवारा ❋ मुगदर गदा शेल परिहारा
हांक मारिकै पैदल धाये ❋ महायुद्ध करिबे मन लाये
यहिबिधि लरत करत घनघोरा ❋ मण्डेउ खेत जोर सों भोरा
आगे शल्य हांकि रथ आये ❋ बाण बृष्टि रथ ऊपर लाये
शर अनेक बर्षत हैं कैसे ❋ जलद मनहुँ श्रावण महँ जैसे
नन्दिघोष श्रीपति पहुँचायो ❋ अर्जुन बाण बुन्द झरिलायो
द्रौणी भीम करत संग्रामा ❋ दोऊ जुरे खेत जय कामा

दो० कृतबर्मा अरु नकुल सों, भिरे खेत परिचारु।
शकुनी रण सहदेव सों, भई भयंकर मारु॥

कृपाचार्य कीन्ह्यो पुरुषारथ ❀ धृष्टद्युम्न सों मच्यो भारथ
कुरुपति धर्मराय रण सरसे ❀ छूटत बाण बुन्द सम बरसे
दउ दल महा बाजने बाजे ❀ करहिं युद्ध क्षत्रीगण गाजे
यहि बिधि सरिस लरावत बाना ❀ जूझै बीर गिरे मैदाना
शल्य हाथ तीक्षण शर छूटे ❀ सेन बेधि धरणी महँ फूटे
अर्जुन के बाणन के मारे ❀ कुरुदल लोटै परे निनारे
परे शूर महि लोटत कैसे ❀ लागत पवन पाकफल जैसे
क्षत्री सदा अस्त्र परिहारहिं ❀ एकहि एक क्रोध करि मारहिं
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे
सहस बाण मारे हनुमानहिं ❀ असी बाण ते श्रीभगवानहिं
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मारे ❀ शरते तन जरजर कैडारे
तब पारथ कीन्हेउ संधाना ❀ शल्य अङ्ग मारे बहुबाना

दो० आठ बाणते रथ हन्यो, तुरग अङ्ग शरबीश।
एकबाण यहिबिधिचल्यो, कट्यो सारथी शीश॥

शल्यहि भयो क्रोध अतिभारी ❀ करेउ अवर रथपर असवारी
यहिबिधि बाण बुन्द झरिलाये ❀ पाण्डवदल बहु मारि गिराये
अर्जुन त्यागि बाण यहि रूपा ❀ प्रलयकाल जैसे यम भूपा
कुरुदल पारथ किये निपाता ❀ जानत सबै युद्ध की बाता
ऐसे बाण क्रोध करि जोरे ❀ मानुष कहा शेष शिर फोरे
शल्य कोपि लागे शर मारन ❀ जूझै सेन हजार हजारन
भीमसेन द्रौणी ते भारथ ❀ दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ
मारे बाण क्रोध ते पागे ❀ चल्यउ न एक एक के आगे
सत्तरि बाण भीम उर लागे ❀ क्रोधवान उर अन्तर जागे
किये भीम तब लघु संधाना ❀ गुरुसुत अङ्ग हने शत बाना
दोऊ बीर करत घमसाना ❀ जरजर भये लगे तन बाना

क्रोधवन्त यहिबिधि शर छांड्यो ❀ भारत भूमि बाण ते गाड्यो
दो० यहिबिधि कीन्हेउ युद्ध बहु, दोऊ बीर समान ।
सात लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझि गिरे मैदान॥
अर्द्धचन्द्र शर द्रौणी छांड्यो ❀ धनुगुण भीमसेन को काट्यो
करते धनुष डारि महि दीन्ह्यो ❀ रथ ते उतरि गदा कर लीन्ह्यो
दैकरि हांक बृकोदर धाये ❀ मानहुँ काल देह धरि आये
द्रौणी कोपि बहुत शर मारे ❀ बायें अङ्ग भीम सब टारे
क्रोधित भये गदा परिहारे ❀ बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे ❀ सेना बधन भीम मन दीन्हे
धर्मराय दुर्योधन सारन ❀ बरषैं बाण मनो घन आवन
दोऊ भूप छत्र के धारी ❀ महाशूर क्षत्री अधिकारी
भालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
दुर्योधन कीन्हेउ संधाना ❀ धर्मराय उर मारेउ बाना
क्षत्री सबै करत रण सरसे ❀ चहुँदिशि बाणबुन्द से बरसे
कृतबर्मा सन नकुल लराई ❀ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई
दो० अर्जुन शल्यहि रण मचो, रथ चाके घहरात ।
हांकत हरि रथ हांकदै, पीताम्बर फहरात॥
श्याम शरीर जगत मन मोहै ❀ कुण्डल झलक कपोलन सोहै
श्रम जल बुन्द बदन पर कैसे ❀ मरकत मणि मुक्ताहल जैसे
सारथिरूप धरो बनवारी ❀ भक्त हेतु पाण्डव हितकारी
कही कृष्ण अर्जुन सों बैना ❀ चित धारि करौ शल्यसन सैना
सुनि अर्जुन लागे शर मारन ❀ जूझी फौज हजार हजारन
शल्य नरेश पाण्डुदल मारत ❀ जैसे अग्नि सघन बन जारत
बीरन हाथ तेज शर छूटत ❀ भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटत
महामत्त लाखन गज धावत ❀ आगे परत सो मारि गिरावत
ठोकर पुनि बखोरिसों मारत ❀ बहुतक छेदि दन्तसों डारत
बहुत लपेटि शुण्ड सों लीन्हे ❀ डारि चरणतर चूरण कीन्हे

तोरि शीश फेंकत हैं कैसे ❀ पाके ताल गिरहिं महि जैसे
अति उतंग देखत भयकारी ❀ यहि बिधि बहुतक सेन सँहारी
दो० पाण्डवदल जूझे घने, भई भयंकर मारि।
लैकर गदा हांक दै, धाये भीम प्रचारि॥
गदा घाव कुञ्जर संहारेउ ❀ ताते बदन फोरिकै डारेउ
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ ❀ गहिकरशुण्डधरणिमहँ पटकेउ
फेंके पैदल जात न जाने ❀ ज्यों बकुला को पंख उड़ाने
यहिबिधिकीन्ह्योसेनानिकन्दन ❀ दौरे देखि द्रोणगुरुनन्दन
क्रोधित ह्वै कीन्हे संधाना ❀ भीमअङ्ग मारे शत बाना
तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हे ❀ ते शर घाव शीश पर दीन्हे
भीमसेन तब धनुष सँभारे ❀ द्रौणी अङ्ग बाण दश मारे
यहिबिधि दोउ युद्ध अरुझाने ❀ अरुणवरण शोणित लपटाने
शकुनी कही भूपसों बाता ❀ कुरुपति सुनो युद्ध की घाता
दोऊ दल अटके अरुझाने ❀ महायुद्ध कछु जात न जाने
दो० अब आज्ञा म्वहिं दीजिये, लै धावों कछु सैन।
बेड़े होइ अरिपर परैं, आपु देखिये नैन॥
कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हे ❀ अपनी अनी साथ कै लीन्हे
दश सहस्र कुञ्जर मतवारे ❀ तीनि सहस रथ सरिस सँवारे
साठिसहस असवार महाबल ❀ डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल
क्रोधवन्त होइ शकुनी धाये ❀ बिदरि होइ पाछे कहँ आये
पैठे पेलि फौज महँ कैसे ❀ गङ्गा मिलीं सिन्धु महँ जैसे
शल्य खड्ग मुद्गर फटकारहिं ❀ शरते बीर शैल बहु मारहिं
मारे बहु पाण्डव दल बीरा ❀ भरकी अनी धरहिं नहिं धीरा
शकुनी रची युद्ध की करणी ❀ जूझी सेन परी सब धरणी
भयो शोर दल बैरख डोले ❀ दगा दगा पाण्डव दल बोले
छूटे बाण सकै को भाखन ❀ पाण्डव दल जूझे तब लाखन
महाशूर रण पलटि सँभारे ❀ मारु मारु कै सबन पुकारे

चलैं न एक एक के आगे ❀ उरझै सबै क्रोध ते पागे
दो० यहिविधि शकुनी सेनकी, जूझी फौज अनन्त ।
पारथ अब निरखत कहा, भाष्यउ कमलाकन्त ॥
नन्दिघोष फेरे बनवारी ❀ भये अघात शब्द अधिकारी
तब अर्जुन शर छांड़त कैसे ❀ प्रलयकाल घन बरषत जैसे
हय गज रथ कीन्हेउ बहु खण्डित ❀ रुण्ड मुण्ड धरणी महँ मण्डित
यहि बिधि कीन्हेउ सेननिकन्दन ❀ हांक देत हांकत जगबन्दन
तब शकुनी कीन्हे संधाना ❀ अर्जुन उर मारे शत बाना
कृष्ण अङ्ग बहु बाण प्रहारे ❀ बीस बाण अरवन उर मारे
तब पारथ तीक्षण शर छांटे ❀ मारे अश्व धनुष गुण काटे
सेना बधि अर्जुन रण गाजे ❀ चढ़ि तुरंग पर शकुनी भाजे
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं ❀ पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं
यहि बिधिते अर्जुन धनु खांचे ❀ जूझे सकल एक नहिं बांचे
बिरथ भये आये तब तुमपै ❀ मन्त्र एक नृप सुनिये हमपै
दो० धनुधारी अर्जुन सरिस, जीति सकै नहिं कोइ ।
कोता ह्वै सब मिलि जुरहिं, होनी होइ सु होइ ॥
कुरुपति के मन में तब आई ❀ कहा शल्य सों बूझौ जाई
उरझे शल्य युद्ध के घाता ❀ शकुनी आय कही तब बाता
शरते अर्जुन सकहिं न मारन ❀ अब लरिये कोता हथियारन
यहि बिधि कीन्हे क्षत्री धर्महिं ❀ हारि जीति राजा के कर्महिं
सेवक धर्म करहिं प्रतिपालहिं ❀ होई अन्त लिखा जो भालहिं
शकुनी शल्य लगे यहि बाता ❀ उत पारथ दल करत निपाता
शल्य नरेश क्रोध कै धाये ❀ धर्मराय के सन्मुख आये
भाष्यो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं ❀ धर्मयुद्ध करिये केहि रूपहिं
छांड़ेउ धनुष बाण की करणी ❀ रथहि छांड़ि धाये सब धरणी
सत्रह दिवस भयो रणभारथ ❀ भीषम द्रोण करण पुरुषारथ
आजु युद्ध मेरे शिर भारा ❀ उतारि लरहु कोता हथियारा

भूप शल्य भाष्यो यह बानी ❀ धर्मराय बोलेउ सज्ञानी

दो० भूप युधिष्ठिर क्रोध करि, कहेउ बचन परमान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेशल्यपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें ❀ निज कर आजु मारिहौं रनमें
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ ❀ रथते उतरि बचन यह भाखेउ
रथहि छांड़ि उतरे सब धरणी ❀ धर्मयुद्ध कीन्ह्यो यह करणी
धर्मराय त्यागी असवारी ❀ उतरे भूमि क्रोध करि भारी
दोऊ दल छांड़े निज स्यन्दन ❀ नान्दिघोष बैठे जगवन्दन
अर्जुन उतरि खड्ग लै हाथा ❀ धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हे साथा
नृप आगे सहदेव बिराजे ❀ बांधे अस्त्र फरी कर साजे
भीमसेन गहि गदा फिरावत ❀ नकुल शेल कर शोभा पावत
उतरे सबहिं युद्ध के शूरा ❀ क्षत्री धर्म महाबल पूरा
कुरुपति उतरि रथहि ते आये ❀ गहे अस्त्र कर शोभा पाये
महाबीर सब बांधे बाना ❀ अटके ठौर ठौर मैदाना

दो० दोऊदल यहिबिधि जुरे, कठिन बजाये सार ।
मुद्गर गदा शेल कर, छूटत खड्ग कि धार ॥

लागत खड्ग घाव शिर फूटे ❀ बाहत शेल सजोइल टूटे
मुद्गर धरत करत चकचूरन ❀ जूझि गिरे धर केतिक शूरन
फेरि खड्ग सहदेव सँभारत ❀ कौरव दल बहुते रण मारत
ऐसे हनत खड्ग कर साधे ❀ टूटि परहिं हय गय गिरि कांधे
क्रोधित शकुनि खड्ग परिहारे ❀ शिर काटत सहदेव सँभारे
हँसि सहदेव कही यह बानी ❀ सुनु मन्त्री शकुनी अभिमानी
तेरेहि मन्त्र भये सब नासा ❀ करहुँ आजुतोहिं यमपुर बासा
दोऊ बीर भिरेउ रण चांड़े ❀ उछरत तर्जि बचावत खांड़े
तब सहदेव घात करि पाये ❀ मारि खड्ग शिर काटि गिराये
कुण्डलसहित परेउ शिरधरणी ❀ महामारु कछु जात न बरणी

भीमसेन कर गदा सँभारे ❀ एकै घाव बीर सब मारे
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ ❀ मारेउ सेन कियो रण भारथ

दो० गदा हाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार ।
हय गज रथ चूरण किये, सेना बीस हजार ॥

हाथन शूर कटारिन मारहिं ❀ पकरि केश गहि भूमि पछारहिं
यहि विधि महायुद्ध रण होई ❀ पाछे पांव धरहिं नहिं कोई
जुरे शिखण्डी द्रौणी सङ्गा ❀ महायुद्ध कीन्हे रणरङ्गा
क्रोधित खड्ग घाव परिहारहिं ❀ दोऊ बीर ढालपर टारहिं
गुरुसुत क्रोधित औझरझारो ❀ कटो शीश ह्वै परेउ नियारो
अर्जुन गह्यउ खड्ग तब हाथा ❀ काटे बहु क्षत्रिन के माथा
कहूं शीश कहुँ परे अधर धर ❀ खड्ग सहित कहुँ परे कटे कर
कोऊ युद्ध करत रण करणी ❀ कोऊ कटे अधरधर धरणी
लगे शल्य महि परे कराहत ❀ कोऊ खड्ग कोपि शिर बाहत
कहूं देखियत गज को शुण्डा ❀ कहूं मुण्ड कहुँ लखिये रुण्डा
कहूं कबन्ध धरणि पर धावत ❀ शीशपरे महि जय जय गावत
कुञ्जर शीश रुधिर की धारा ❀ जनु गेरू रँग स्रवत पहारा

दो० कुन्त फरी तोमर गहे, लरत शूर परचारि ।
मारत बीरन क्रोध कै, निसरत पञ्जर फारि ॥

सेन सबहि लोटत लपटाने ❀ खेलत फागु अबीरन साने
मारत शेल सजोइल फूटत ❀ रुधिरधार पिचिकासम छूटत
यहिबिधि खेलत चांचरि रन में ❀ महाशूर शङ्का नहिं मन में
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी ❀ कौरवदल लोटत सब धरणी
कृतबर्मा तब आपु सँभारे ❀ पाण्डव दल बहुतै संहारे
कोऊ बाहत खञ्जर घोपा ❀ कोउ मारत मुद्गर करि कोपा
भीमसेन गज बहुत सँहारे ❀ जो आभिरे तेहि सबहिं पछारे
मारु मारुकै सब मिलि भाखत ❀ महाबीर सब लोहुन चाखत
आभिरत भिरत लरत मैदाना ❀ क्रोधित सबै शङ्क नहिं माना

यहि बिधिसों जोरत रणरङ्गा ❋ करत भोग सुरकन्यन सङ्गा

दो० दोउ बीर दल इमि लरत, जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े बिमान ॥

रहत खेत महँ शूर न कैसे ❋ देखत भोर तारगण जैसे
धर्मराय तब कहा बिचारी ❋ सुनो शल्य हित बात हमारी
अब हमसों तुमसों है जोरा ❋ चढ़ि रथ कीजै धनु टंकोरा
बाजा भीम खेत महँ खांड़ो ❋ धर्मयुद्ध मोते रण चांड़ो
तब रथपर कीन्ह्यो असवारी ❋ धनुष बाण कर गह्यो सँभारी
कह्यो शल्य अस्थिर अब रहिये ❋ मारतहौं तीक्षण शर सहिये
यह कहि शल्य बाण दश छांटे ❋ धर्मपुत्र त्यहि बीचहि काटे
सात बाण भालुक नृप लीन्हे ❋ ते शर चोट शल्य पर कीन्हे
दोऊ बीर बाण परिहारहिं ❋ एकहिं एक क्रोधकै मारहिं
कोपि शल्य यमअस्त्रहि लीन्हे ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं ❋ इत नृप इन्द्रबाणसों मारहिं
तीसर बाण युधिष्ठिर छांटे ❋ नृपको धनुष बाण गुण काटे

दो० डारि धनुष कर शूल लै, घालो घाव प्रचण्ड ।
सात बाणते धर्मसुत, काटिकियो शतखण्ड ॥

दोऊ बीर क्रोध ते पागे ❋ अशकुन होन बहुतबिधि लागे
दिशा धुंधि भयकारक भारी ❋ रवि अदृश्य बहु फिकर सियारी
जम्बुकगण बोलत रथ आगे ❋ रुधिर बुन्द नभ बरषन लागे
बैठे काक भयंकर बोलत ❋ भूमि चली अहिपति शिर डोलत
झंझर पवन बहै अतिभारी ❋ उलकापात होत भयकारी
गीधन आय शल्य रथ छाये ❋ ध्वजा टूटि धरणी पर आये
भये अघात शब्द घहराने ❋ अचरज करि सब काहू माने
भूप युधिष्ठिर हांकै दीन्हो ❋ क्रोधित शक्ति हाथ कै लीन्हो
मारत हौं अब शल्य सँभारो ❋ आजु जानिबो तेज हमारो
क्रोधित शल्य खड्ग कर लीन्हे ❋ शक्ति घाव राजा तब कीन्हे

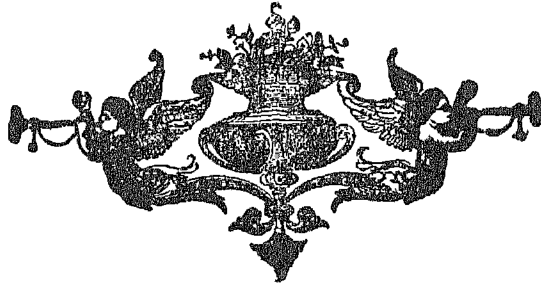
छूटत शक्ति शब्द भयो भारी ❋ दशौ दिशा कीन्ह्यो उजियारी
बज्रसमान शक्ति जब आई ❋ कुरुपति देखि महाभय पाई
दो० धर्म प्रबल सुतधर्म को, कीन्हो शक्ति प्रहार ।
ढाल फोरि कर छेदिकै, हृदय भेदिगा पार ॥
जूझे शल्य परे तब धरणी ❋ धर्मराज कीन्ही यह करणी
धर्मतनय जब शल्यहि मारो ❋ सब देवन जय जयति पुकारो
भीमसेन बल आपु सँभारो ❋ ज्यहि पायो त्यहि सबै सँहारो
द्रौणि कृपा कृतबर्मा भाजे ❋ जीति युद्ध पाण्डवदल गाजे
अन्ध धुन्ध भा खेत भयंकर ❋ नाचत महामगन मन शंकर
भूप युधिष्ठिर भाष्यो बैना ❋ अन्धकार नहिं सूझत नैना
कृष्ण समेत कियो तब गवना ❋ चले धर्मसुत अपने भवना
दुर्योधन तब शोचत मनमें ❋ कोऊ साथ रह्यो नहिं सँगमें
कीजै काह कवनि दिशि जैये ❋ बाढ़ो रुधिर पन्थ नहिं पैये
सात ताल भा रुधिर उँचाई ❋ हय गज भाषत बरणि न जाई
तुरग तुरंग कहत नहिं आवै ❋ रतनाकर की पटुतर पावै
बहे जात लोहित मँझधारा ❋ कवनि भांति जैये अब पारा
दो० पृथ्वीपति दुर्योधन, लक्ष छत्रधर साथ ।
लक्ष्मी जाके कन्धपर, त्यहिबिधि कीन्ह अनाथ ॥
तब नृप मन में कीन्ह बिचारा ❋ पैरि रुधिर जैये अब पारा
अस्त्र सनाह खोलि सब डारे ❋ लैकर गदा भूप पगु धारे
यहिबिधि भारत किये महारन ❋ एक लोथ पर परे हजारन
वार पार ढिग आव न जाही ❋ रुधिरनदी अति भई अथाही
पैरत भूप शङ्क नहिं मन में ❋ जात लोथ अभिरत है तन में
जबहुँ केश चरणन अरुझावैं ❋ पैरत जात पार नहिं पावैं
जहां द्रोण गाड़ो जय खम्भा ❋ अभिरे भूप गहो तब थम्भा
गहिकै खम्भ किये बिश्रामा ❋ जीव शोच पहुँचौं किमि धामा
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा ❋ बूड़िजात सब सहत न मारा

बिधिबश एक लोथ तब गह्यो ❀ बूड़ो नहीं भार तिन सह्यो
चलो लोथ गहि रोहित हेलत ❀ अभिरत मृत्यु गदासों ठेलत
बहुत कष्ट सों उतरे पारा ❀ तब अपने मन कियो बिचारा

दो० कौन बीर की लोथ यह, किय मनमाहँ निदान।
शल्यपर्व या बिधि कही, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते शल्यपर्वणि
शल्यवधवर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति शल्यपर्व समाप्तम् ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ गदापर्व ॥

गदापर्व अब करत बखाना ❀ दुर्योधन मन में अनुमाना
अन्धकार भो गयो न चीन्हा ❀ मुकुट ज्योति मुख देखै लीन्हा
लषण कुमार चीन्हि जब पाये ❀ करुणा करत भूप मन लाये
जूझे पुत्र हमारे काजा ❀ कहिहौं कहा भवन अतिलाजा
ऐसे सुत सपूत संसारा ❀ मुयहु समय म्वहिं पार उतारा
रोय कह्यो दुर्योधन राजा ❀ बिधि बिरुद्ध कीन्हो यह काजा
यहि बिधि लोथ डारि जो जैहैं ❀ जम्बुक काक गीधगण खैहैं
अग्नि देन अवसर नाहिं पाये ❀ कहो मृत्तिका दै करि जाये
गदा घाव धरणी पर मारो ❀ भयो गढ़ा तब लोथहि डारो
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो ❀ जम्बुक काक न पावहिं जैसो
महाशोच करि कीन्हो गवना ❀ पहुँचे जाइ सुकुरुपति भवना
अन्तःपुर कीन्हे परवेशा ❀ रानी चकित देखि यह बेशा

दो० एक बसन बूड़े रुधिर, अरुणबरण सब अङ्ग ।
गदाहाथ शिर मुकुट है, और न कोऊ सङ्ग ॥

रानी रोय ठोंकिकै माथा ❀ जिनबिधिकीन्ह्योहमहिंअनाथा
आदर करि आसन बैठाई ❀ धोइ रुधिर बस्तर पहिराई
दुर्योधन भाष्यो सब बचना ❀ ज्यहिबिधि भई युद्ध की रचना
सुनि रानी बोली यह बानी ❀ मेरी बात नाथ नहिं मानी

भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी ❀ जूझेउ खेत सबहिं बलभारी
गिरे शल्यसुत बन्धु गिराये ❀ खेत छांड़ि काहे तुम आये
जैये तहां जहां पितु आवै ❀ जौलों खोज भीम नहिं पावै
कछुक आनि मिष्टान्न जेंवाये ❀ दीन्ह पान कछु बिनय सुनाये
अब यहि समय भूप सुनिलीजै ❀ साहस छोंड़ि शोच नहिं कीजै
चारिहु युग ऐसी चलि आई ❀ कर्म लिखा सो मेटि न जाई
दुर्योधन सुनि कीन्ह्यो गवना ❀ आये त्वरित पिता के भवना
चरण परसि ठाढ़े भे आगे ❀ कौरवपति सों कहिबे लागे

दो० दुर्योधन सब बिधि कही, जूझि गिरे सब खेत।
अब उपाय का कीजिये, बूझत हौं सो हेत॥

सुनत शोच धृतराष्ट्रक कीन्हो ❀ करि करुणा कछुकहिबो लीन्हो
बिधि परपञ्च जानि नहिं जाई ❀ ब्यास सरोवर रहो छिपाई
गान्धारी भाष्यो तब बैना ❀ देखों पुत्र खोलि त्वहिं नैना
जबते पति देखो मैं आँधो ❀ तबते नैन पटी हम बाँधो
बसन राखि सुत आगे आयो ❀ पाछे ब्यास सरोवर जायो
एक बसन सों जङ्घ छिपाये ❀ दुर्योधन तब आगे आये
पटी खोलि गान्धारी हेरी ❀ हे सुत बात न राख्यो मेरी
बज्रशरीर भयो सुत तोरा ❀ उबरा जङ्घ दोष नहिं मोरा
अस कहि पटी नैन महँ दीन्हे ❀ करुणा सहित बिदा सुत कीन्हे
चलि निशङ्क दुर्योधन कैसा ❀ परमहंस छांड़त गृह जैसा
मातु पिता छांड़े त्रिय भवना ❀ लैकर गदा पन्थ कहँ गवना
तके सरोवर नृप तहँ आये ❀ फूले कमल सुवास सुहाये

दो० चक्रबाक सारस युगल, निर्मल जल गम्भीर।
मधुकरगण डोलत सदा, बहु मराल की भीर॥

पिछले पांव धसो जल राजा ❀ पाण्डव खोज मेटिबे काजा
यहिबिधि तृषित नीरतकि आये ❀ झलकत मुकुट देखि तेहि पाये
जलथम्भन बिद्या कर कैसे ❀ बैठो जाइ भवन महँ जैसे

लक्ष्मी कृपा बहुत बिधि कीन्ही ❀ कनकपलँग सोवन कहँदीन्ही
दुर्योधन कीन्हे बिश्रामा ❀ पाण्डु गये सब अपने धामा
जयकरि बिजयभवनकहँ कीन्ही ❀ कुन्ती हाथ आरती लीन्ही
रणमहँ इन मारे कुरुनाथा ❀ करै आरती तेहि निज हाथा
कही भीम सब बन्धु सँहारे ❀ दुर्योधन कहँ मैं नहिं मारे
धर्मपुत्र कह भो रण घोरा ❀ मोसन परेउ शल्य सों जोरा
अर्जुन कही मातु सों बैना ❀ कुरुपति हम नहिं देख्यो नैना
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा ❀ तब कुन्ती बूझा सहदेवा
मन्त्री मन्त्र बिचारत मनमें ❀ कुरुपति बच्यो कि जूझ्यो रनमें

दो० हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन ।
जीवत है दुर्योधन, गिरत न देख्यों नैन ॥

कुन्ती कही सुनहु हरि पारथ ❀ तुम भारथ रण कियो अकारथ
कुशल गये दुर्योधन धामा ❀ तो सेना मारे केहि कामा
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग धाये ❀ दुर्योधनहिं बधे यश पाये
तब कुन्ती यह बात जनाई ❀ कही कृष्ण मेरे मन आई
पाण्डव तबहिं चले हरि साथा ❀ खोजत खोज फिरैं कुरुनाथा
अन्धकार भा जात न चीन्हा ❀ बारि मशाल हाथ कै लीन्हा
जूझे बीर खेत मों परे ❀ झलकैं मुकुट जरायन जरे
कहूं मुण्ड कहुँ देखे रुण्डा ❀ कहूं गयन्द परे कहुँ शुण्डा
कहूं तुरंगम परे अरध खर ❀ कहूं चरण कहुँ परे बिकरकर
रुधिरपानकरि योगिनि नाचहिं ❀ जम्बुककाकलाथि बहु खाचहिं
कुरुपति खोज करत नहिं पावत ❀ देखो पन्थ ब्याध इक आवत
भीमसेन पूछे तब बयना ❀ दुर्योधन को देख्यो नयना

दो० कही ब्याध करजोरिकै, भीमसेन सों बात ।
बीर एक देख्यो हतो, ब्यास सरोवर जात ॥

गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये ❀ बीर एक हम देखन पाये
सुनी भीम मन महँ अनुमाने ❀ निश्चय कै दुर्योधन जाने

पांचौ बन्धु कृष्ण सँग आवत ❀ आगे ब्याध पन्थ दिखरावत
ब्यास सरोवर निकटहिं आये ❀ चरण चिह्न तहँ देखन पाये
धरत पांव दुर्योधन जहँवां ❀ फूलत करण धरणि महँ तहँवां
बिधि बिरोध काहू नहिं होई ❀ लक्षण भयो कुलक्षण सोई
यहि बिधि खोज करत चलि आये ❀ ब्यास सरोवर देखन पाये
अगम गँभीर सरोवर कैसो ❀ उठै तरङ्ग तरङ्गिनि जैसो
कृष्णदेव तब आप बखानत ❀ जलथंभन नीको नृप जानत
धर्मराज को भा अंदेशव ❀ जलमहँ कछु बल चलै न केशव
अब उपाय करिये प्रभु कैसो ❀ अबहीं निकरै कुरुपति जैसो

दो० महाबीर दुर्योधन, कहैं आपु भगवान।
अबहीं निकरत नीरसों, भीम हांक सुनि कान॥

भीमसेन आये तब तीरा ❀ दिये हांक दुर्योधन बीरा
निकरौ नृप बूड़ो केहि काजा ❀ कुरुबंशहि लावत हौ लाजा
सुनतै हांक क्रोध कै भारी ❀ उठिकर गदा गहो सम्भारी
पकरि बांह लक्ष्मी बैठाई ❀ पुनि राजा को बहुत बुझाई
जलसों निकरि युद्धमति करिये ❀ मेरो कहा चित्तमहँ धरिये
दूजी हांक भीम जब दीन्हो ❀ कटुक बचन कहिबे बहु लीन्हो
सुत बान्धव रण सबहिं जुझायो ❀ आपु भागिकै जीव बचायो
मानि गोबिन्द धरायो नामा ❀ जल मों आनि छिप्यो केहि कामा
भीम हांक सुनि कुरुपति कैसी ❀ द्रुमदावा लागी पुनि जैसी
गहि कर गदा उठन जब चह्यो ❀ आगे ह्वै कमला कर गह्यो
आस्थिर रहो सुनो मम बैना ❀ काल्हि देहुँ संपति सों सैना
दिवस अठारह भई लराई ❀ तीनि लोक फिरिकै हम आई

दो० तोसम लक्षणवन्त नाहिं, कस्यों कन्ध जेहि बास।
तीनि लोक महँ ढूंढ़िकै, फिरि आइउँ तव पास॥

काल्हि दिवस जो तेरे मन में ❀ जीति सकै नहिं पाण्डव रन में
ता कारण सुनु तोसों कहिये ❀ आजु धीर ह्वै जल महँ रहिये

सुनिकै नृप कमला के बयना ❀ पौढ़ि पलँगपर कीन्हेउ शयना
तीजी हांक भीम जब मारो ❀ निकरु निकरु कुरुनाथ पुकारो
छांड़त हौ कत क्षत्री धर्मा ❀ होइहहि सोइ लिखा जो कर्मा
महागर्व तुम सब दिन कीन्ह्यो ❀ निकरत नहीं भाजिजल लीन्ह्यो
धिक जीवन जल में है तेरो ❀ इतनी बात अंगवत मेरो
अपने बलते गनत न आना ❀ अब काहे तुम तजत गुमाना
मारहुँ गदा फाटि जल जैहै ❀ गहिकै केश अबहिं लै ऐहै
सुनत बचन दुर्योधन जस्यो ❀ बरत अग्नि मानहुँ घृत पस्यो
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं ❀ गही बाहँ कमला पुनि तबहीं
बन्धु बैर को सकहि निहारी ❀ पांयन ठेलि लक्षिमी डारी

दो० गदापाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आय ।
धर्मराय तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाय ॥

धर्म युधिष्ठिर के मन आई ❀ चलि सिंहासन बैठिय भाई
सब मिलि हम सेवा तव करिहैं ❀ आज्ञा सदा शीश पर धरिहैं
पांच गाँव अजहूं मोहिं दीजै ❀ अपनो छत्र सिंहासन लीजै
यह सुनि दुर्योधन हँसि भाखे ❀ धर्मराय तुम धर्महिं राखे
ऐसे समय न छांड़ौं टेका ❀ करिहौं आजु एक को एका
सुई अग्र देहौं नहिं दाना ❀ करहुं युद्ध भारत मैदाना
धर्मराय कह सुनिये भाई ❀ तेरे मन ऐसी जो आई
दोउ बन्धु अब हम सों लीजै ❀ तीनि तीनि समता रण कीजै
हँसि दुर्योधन भाष्यो बानी ❀ भाई तुम यह बात न जानी
अर्जुन भीम लेउँ जो दोऊ ❀ बांधत तुम्हैं न राखत कोऊ
धर्मराय तब कहा बुझाई ❀ एक एक ते उचित लराई
दुर्योधन बोले परिमाना ❀ राजा राजहिं युद्ध समाना

दो० कह्यो कृष्ण कुरुनाथ सों, यह है उचित बिचार ।
लरौ भीम सों खेत महँ, जय देइहि करतार ॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाख्यो ❀ कबते भीम छत्र शिर राख्यो
कही कृष्ण तुम बात न पाई ❀ चारिहु युगहि याहि चलिआई
भुजबल ते बसुधा कर भोगा ❀ ज्ञानी ह्वै सुकरहि पुनि योगा
भीम महाबल जीते भारथ ❀ लई राज अपने पुरुषारथ
तब भीमहिं राजा करि लेखौं ❀ धर्मराय नावहिं शिर देखौं
पांचहु बन्धु कृष्ण मुख ताके ❀ सब दिन रहत भरोसे जाके
धर्मराय जब शीश नवैहैं ❀ पल मों भीमसेन जरि जैहैं
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो ❀ लै हरिवंश भीमकहँ दीन्ह्यो
कृष्णदेव यह रचना ठाना ❀ ताको दुर्योधन नहिं जाना
श्रीपति कही बिलम्ब न लावहु ❀ धर्मराज अब शीश नवावहु
भीम बगल हरिबंशहि राखो ❀ सो तकि धर्म युधिष्ठिर भाखो
भूप भीम कहँ शीश नवायो ❀ जयधुनि करि हरि शंख बजायो

दो० दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवन्त ह्वै बैन ।
गदा युद्ध हम तुम करहिं, सब मिलि देखैं नैन ॥

गहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े ❀ क्रोध अनल उर अन्तर बाढ़े
मण्डलफिरहिं घात दोउताकहिं ❀ कोउ कोऊ कहँ यतन न पावहिं
रोंकत गदा गदा सों टारत ❀ एकहि एक क्रोध कै मारत
गदा प्रहार शब्द भा कैसे ❀ छूटत बज्र इन्द्र कर जैसे
सरस निरस कहिजात न काहू ❀ पण्डित गदा युद्ध बल बाहू
धावत गदा हांक दै हांकत ❀ पद के भार मेदिनी कांपत
कुरुपति भाष्यो भीम सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज हमारो
कही भीम अब जानत भाई ❀ गाल मारि जनि करहु बड़ाई
मोंते आजु पस्यो है कामा ❀ देखो को जीतै संग्रामा

दो० दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचण्ड ।
गदा रोंकि सम्भारिकै, भीम महाबलबण्ड ॥

कोपि भीम तब गदा प्रहारा ❀ महाबीर कुरुनाथ सँभारा

दोऊ बीर जोरते झरपत ❀ महाबीर मन नेकु न डरपत
यहिबिधि करत युद्ध की करणी ❀ भूमिपाल डोलति है धरणी
महामत्त तन उरझ्यो दोऊ ❀ प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ
गदा गदा सों लागत जबहीं ❀ निकरत अग्निभभूका तबहीं
गदा हाथ रण शोभा पावत ❀ पक्ष सहित पर्वत जनु धावत
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे ❀ सतयुग महँ बलि बाँध्यो जैसे
चढ़े बिमान देवगण देखत ❀ अपने मन अचरज करि लेखत
गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे ❀ कुंकुम अरु कज्जल गिरि जैसे
कलबलकरत भीम फिरि आवत ❀ गदा पवन ते पक्षि उड़ावत
जुरे भीम दुर्योधन कैसे ❀ प्रद्युम्नहिं शम्बर रण जैसे

दो० अयुत नाग बल दुहुँनके, महाबीर परचण्ड ।
मारत गदा जु कोपिकै, ज्यों टूटत यमदण्ड ॥

लागत गदा दोउ के तन में ❀ धमकत घाव शब्द जन घन में
चञ्चल चपल फिरत दोउ बांको ❀ घूमत मनहुँ कुम्हार को चाको
दोऊ बीर युद्ध मन लाये ❀ तीरथ फिरि बलभद्रहि आये
देखो तहां महारण घोरा ❀ परे भीम दुर्योधन जोरा
हलधर बिहँसि कही यह बाता ❀ कुरुपति सहित गदा के घाता
बल कछु अधिक भीम के तनमें ❀ हार जीत नहिं देखत मन में
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई ❀ केहि कारण अब रचहु लराई
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन ❀ कोउ न सकहि काहुको मारन
अजहुँ दूनहूं प्रीति बिचारहु ❀ जो मानहु हित बचन हमारहु
युद्ध घात दोऊ अरुझाने ❀ हलधर बचन हृदय नहिं आने
कहि बलभद्र कियो तब गवना ❀ कुरुक्षेत्र परिरक्षक कवना
कृष्ण भीम कहँ जङ्घ बताई ❀ निरखि बृकोदर घात लगाई

दो० भीमसेन तब क्रोधकै, मार्यो घाव बचाय ।
दोउ जङ्घ भञ्जन भयो, पर्यो धरणिपर आय ॥

गिरि कुरुपति धरणी में ऐसे ❀ काटत मूल परत द्रुम जैसे
पूर्ब बैर मनमहँ सुधि आई ❀ भीमसेन तब लात उठाई
हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा ❀ रहहु भीम कहिबे अस लीन्हा
अष्टादश क्षौहिणी सुवारा ❀ भनत गोबिंद जानु सब सारा
कृष्ण सहित भाष्यो सब राजा ❀ चरण प्रहार करत क्यहि काजा
करते चरण समेटन कीन्ह्यो ❀ बैठ सँभारि कहै तब लीन्ह्यो
क्षत्री धर्म न भीम बिचास्यो ❀ गदा घाव जङ्घन पर मास्यो
कही भीम दुर्योधन बीरहिं ❀ जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं
तादिन मैं सबसों प्रण भाख्यों ❀ तोस्यो जङ्घ प्रतिज्ञा राख्यों
श्रीपति कही कुरुपति राजहिं ❀ जब हम गये बसीठी काजहिं
तादिन मेरो कहा न कीन्हा ❀ कटुक बचन मोसे कहि दीन्हा
सेना संपति सकल गँवायो ❀ ज्यहि क्षण करगहि मोहिं उठायो

दो० दुर्योधन कह कृष्णसों, मैं हौं जन्तु समान।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी ❀ मोहिं दोष नहिं अन्तर्यामी
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना ❀ धर्मराय तब आपु बखाना
कुरुपति कही बचन परमाना ❀ सुनि माधव तब कीन्ह पयाना
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्हे ❀ भारत जीति भवन शुभ कीन्हे
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो ❀ दीनदयाल भक्तप्रण राखो
अस कहिकै आरती सँवारी ❀ प्रथम कृष्ण के शीश उतारी
धर्मराय सों माधव भाखो ❀ मेरो मन्त्र सदा तुम राखो
मो कहँ मति ऐसी बनि आई ❀ चलो साथ तुम पांचौ भाई
आजु राति बसिये नहिं भवना ❀ नन्दिघोष चढ़ि कीजे गवना
अस कहि पांचो बन्धु चढ़ाये ❀ योजन एक भवन तजि आये
अर्जुन हृदय शोच भा भारी ❀ का रचना यह कीन्ह मुरारी
सुमिरण शम्भुनाथ कर कीन्हा ❀ शंकर आय दरश तब दीन्हा

दो० श्रीहरि भाष्यो शम्भु सन, हम सब कीन्हो गौन।
आजु राति द्वारे रहौ, द्वारपाल ह्वै भौन ॥

गङ्गाधर भाष्यो परतक्षक ❀ आजु द्वार रहि हैं हम रक्षक
जो विधि रची होय पुनि सोई ❀ द्वारे जान न पावै कोई
लै पाण्डव माधव पगु धारे ❀ शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी ❀ गिरे भूप यह हिय महँ जानी
मध्य प्रहर निशि आयो तहँवां ❀ जङ्घ भङ्ग दुर्योधन जहँवां
बैठे कर सों गदा फिरावत ❀ जम्बुक गीध निकट नहिं आवत
गुरुसुत दूरिहिते कहि कारण ❀ अमर सदा सक कोउ न मारण
अजहूँ कहा हमारो कीजे ❀ पाण्डव मारि जगत यश लीजै
सुनि बोले तब द्रौणी ऐसा ❀ राजा बिनु रण कीजै कैसा
गन्ध रुधिर लै टीका कीन्हा ❀ मैं राजा तुम कहँ करि दीन्हा
मारि पाण्डवन पांचौ भाई ❀ बसुधा भोग करहु तुम जाई

दो० गुरुसुत भाषो क्रोध कै, दुर्योधन सों बैन ।
मारि पाण्डवन शीश लै, आनि देखावहु नैन ॥

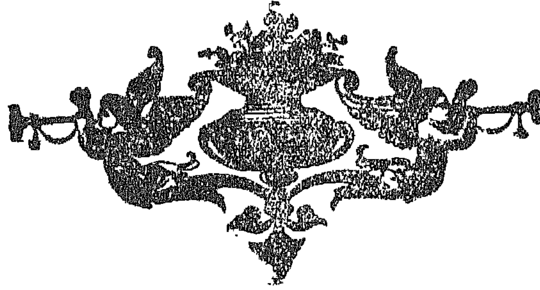
ऐसो कहि पुनि आयो तहँवां ❀ कृपाचार्य कृतबर्मा जहँवां
तासों बचन कहे अस लीन्हो ❀ दुर्योधन राजा म्वहिं कीन्हो
द्वौ जन मोरि सहाय जो कीजे ❀ पाण्डव मारि राज्य अब कीजै
बटतर तीनों मनहिं बिचारत ❀ एक उलूक काक बहु मारत
द्रौणी कहै देखिये नैना ❀ बूझे शत्रुहि को बल रैना
चलो त्वरित जाइय यहि कारण ❀ दिवस नाश को पाण्डव मारण
यह कहिकै तीनों जन आये ❀ द्वारे दरश शम्भु के पाये
गढ़ चहुँ फेर शूल है रक्षक ❀ दरवाजे शंकर परतक्षक
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❀ जात कहां ठाढ़े त्रिपुरारी
द्रौणी कहा रहहु तुम रक्षक ❀ जैहौं निकट होइ परतक्षक
अस कहिकै शंकर ढिग आये ❀ कै प्रणाम तब गाल बजाये

तब कृपालु हर भाष्यउ बानी ॥ मांगो वर द्रौणी बड़ ज्ञानी

दो० द्रोणपुत्र यहि बिधि कही, भीतर दीजै जान ।
गदापर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

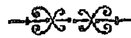
इति गदापर्व समाप्तम् ॥





महाभारत

सौप्तिक और ऐषिक-पर्व



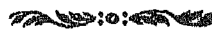
सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

सोते हुए द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को अश्वत्थामा ने मार डाला, तदनन्तर पाण्डवों पर ब्रह्मास्त्र के प्रहार करने की कथा वर्णित है।



लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट विपिनविहारी कपूर के प्रबन्ध से
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत सौप्तिकपर्व ॥

शम्भुनाथ बोल्यो यह बचना ❁ मनमें समुझि कृष्णकी रचना
द्वारे मारग जान न पैहौ ❁ गढ़हि फांदिकै भीतर जैहौ
कह्यो द्रौणि शंकर सों ऐसो ❁ फिरत शूल त्यागहिम्वहिंकैसो
काढ़ि भस्म शंकर तब दीन्हा ❁ जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा
कै प्रणाम तब तुरत सिधाये ❁ फांदो गढ़ भीतर तब आये
प्रथम गये द्रौणी चलि तहँवां ❁ कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवां
बैठे चपरि हृदय पर कैसे ❁ व्याध कुरंग धरत हैं जैसे
लैकै खड्ग कण्ठ मों धरिहहुँ ❁ कटिहौं शीश बिलंब न करिहहुँ
कनक पलँग पर कीन्हे शैना ❁ पांच पुत्र तब देख्यो नैना
पांच बन्धुके पांचो जाये ❁ रूप समान भेद नहिं पाये
खड्ग घाव तब द्रौणी कीन्हे ❁ पांचो शीश बामकर लीन्हे
यहि अन्तर दासी सब जागीं ❁ हा हा शब्द पुकारन लागीं

दो० जागिउठ्यो रनिवास सब, टेरत करुणा बैन ।
द्रोण पुत्र कर खड्ग लै, लाग निपातन सैन ॥

चौंकिउठे पुनि सब अकुलाने ❁ आपुस में बहुते अरुझाने
अन्धकार नहिं सूझै नैना ❁ मारु मारु करि भाषैं बैना
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते ❁ कृतबर्मा करि मारे तेते
अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत ❁ अपन परार कोउ नहिं बूझत
गढ़ भीतर द्रौणी संहारे ❁ निकरि चले कृतबर्मा मारे
भारत माहिं बचे हैं जेते ❁ निशा युद्ध महँ जूझे तेते
निकरि द्रोणसुत बाहर आये ❁ कृप कृतबर्मा देखन पाये

मारि पाण्डवन कीन्ह्यों काजा ❋ चलिये शीश देखाइय राजा
बैठे खेत कुरूपति जहँवां ❋ तीनिउ बीर गये चलि तहँवां
द्रौणी कही नृपति सों बाता ❋ पांचहु पाण्डव कीन्ह निपाता
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो ❋ मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो
धरे आनि शिर भूपति आगे ❋ मुकुट ज्योति सों देखन लागे

दो० पांच बन्धु के पांच सुत, भूप निहारे नैन ।
बिस्मयकरि भूपति कही, द्रोणपुत्र सों बैन ॥

करुणा करि भाष्यो तब राजा ❋ बालकवध कीन्ह्यो क्यहिकाजा
मूक भये दुख हृदय भुवारा ❋ बंश बार कीन्हे हत्यारा
असकहि प्राण तजे नृप जबहीं ❋ भय उपजो द्रौणी जिय तबहीं
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो ❋ द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो
कृतबर्मा जब चित्त बिचारा ❋ द्वारावती तुरत पगु धारा
भे आतुर द्रौणी चले तहँवां ❋ उत्तर नरनारायण जहँवां
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं ❋ लै पाण्डव हरि आये तबहीं
देखे सबै सैन्य संहारे ❋ पांचौ पुत्र तेउ गे मारे
करुणा करहि द्रौपदी सरसे ❋ आंसु नीर नैनन सों बरसे
अर्जुन देखि अचम्भव माना ❋ द्रुपदसुता यहि भांति बखाना
करुणा करि पाञ्चाली भाखी ❋ अब घट प्राण जाहिं ना राखी
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे ❋ अनुचर सहित सैन सब मारे
द्रौणिहिं बांधि तुरतही दीजै ❋ नातरु प्राण त्याग हम कीजै

दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो, हाँको रथ भगवान ।
बांधि लैआवों द्रोणसुत, यह प्रणकिये निदान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेसौप्तिकपर्वानु
कथनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति सौप्तिकपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत ऐषिकपर्व ॥

यह सुनि रथ हांको बनवारी ❀ क्रोध शोक पारथ धनुधारी
ज्यहि पथ द्रौणी किये पयाना ❀ तापथ रथ हाँको भगवाना
सुनि रथशब्द द्रौणि उत ताके ❀ जात कहाँ अर्जुन तब हाँके
सोवत पांचो बालक मारे ❀ भाज जात सुनु किमि हत्यारे
सुनि द्रौणी अपने मन जाना ❀ आयुआनि अबसमय निदाना
जाको भेद न अर्जुन जाने ❀ सोई बाण करै संधाने
यह सुनि शृंगी अस्त्रहि लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे
सुरगण देखि सबै भय माना ❀ प्रलय भये सबही मन जाना
पाण्डव बंश न एक उबारौं ❀ अर्जुन सहित आज सब मारौं
हांक मारि द्रौणी शर छाँटे ❀ भूमि अकाश आगिन ते पाटे
छूट्यो बाण तेज सों कैसे ❀ प्रलय अनल महँ धावहिं जैसे
अर्जुन निरखि अचम्भव माना ❀ श्रीपतिसों यहि भांति बखाना

दो० पारथ कही बिचारिकै, सुनु देवन के देव ।
कौन नाम है बाण को, बूझि परै नहिं भेव ॥

तब श्रीहरि यहि भाँति बखाने ❀ यह शर अर्जुन तुम नहिं जाने
गुरू द्रोण बञ्चित तोहिं कीन्हे ❀ पुत्र जानि वाको शर दीन्हे
त्याग किये यह शृंगी बाना ❀ तीनि लोक जाको भय माना
श्रीपति कही सुदर्शन धावहु ❀ पाण्डुबंश तुम जाय बचावहु
सात बाण तब अर्जुन मारे ❀ महाप्रबल शर टरत न टारे
बाण प्रताप सबन भय पाये ❀ नन्दिघोष तजि यदुपति धाये
बदन पसारि लीन्ह भगवाना ❀ महाबाण हरि उदर समाना
सहित युधिष्ठिर सबहिं बचाये ❀ गर्भ परीक्षित जरै न पाये
नागपाश तब पारथ लीन्हे ❀ क्रोधित द्रौणिहिं बन्धन कीन्हे
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे ❀ चले तुरन्त भवन पगु धारे

करुणा करति द्रौपदी नारी ❀ आय गये पारथ धनुधारी
अश्वत्थामहिं कीन्हे ठाढ़ा ❀ छूटे केश कुबन्धन गाढ़ा
दो० तनुप्रस्वेदबिगलितबदन, चितवनि नीचे नैन ।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोले बैन ॥
अरे मूढ़ काटौं अब शीशा ❀ द्रौपदि सुतन बैर लै ईशा
द्रौपदि देखि दया चित आई ❀ तब माधवसन भाष्यो गाई
विप्र बधेकर दूषण भारी ❀ बन्धन छोड़ि देहु बनवारी
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं ❀ द्विजहत्या परलोक नशैहौं
सो सुनि हरि बहुते सुखमाना ❀ धन्य द्रौपदी आपु बखाना
शीशचीरि श्रीहरि मणि लीन्हे ❀ पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हे
भारत रणमहँ सब हैं जेते ❀ सद्गति कीन्हि धर्मसुत तेते
पांच बन्धु श्रीपति सँगलाये ❀ देखे बुद्धिचक्षु पहँ आये
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे ❀ सबै कृष्ण पाण्डव के आगे
सब मिलि भीम सराहत तोको ❀ अङ्कमालिका दीजिय मोको
हरिरचना कै बृकोदर कीन्हो ❀ लोहक भीम आगु लै दीन्हो
अन्धभूप तब भुजा पसारे ❀ मिलत समय चूरणकरि डारे
भाष्यो भीम अद्भुबल भारी ❀ तुम रक्षा कीन्हे बनवारी
दो० गन्धारी सबही मिले, मधुर बैन जो भाखि ।
बहुतभांति परबोधकरि, समाधान करिराखि ॥
राजहि कहि गन्धारी रानी ❀ हरिरचना कीन्हो यह जानी
दिवस अठारह भा यहि भारथ ❀ यकशत पुत्र सहितरथ पारथ
सो संहार सकल हरि कीन्हा ❀ ते फल तोहिं शाप हम दीन्हा
हलधर सहित सकल परिवारा ❀ एक दिवस सब होइ सँहारा
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा ❀ हँसे कृष्ण रिस नेकु न कीन्हा
पुरी हस्तिना कीन्हेंउ गौना ❀ व्यासदेव भाष्यो यह रौना
पुर में बन्दनवार बँधाये ❀ अति आनँदमय शोभा पाये
नट नाचत गायन सब गावत ❀ वेद पुराणहिं विप्र सुनावत

कनक कलश गंगाजल भरयो ❀ व्यासदेव घट आगे करयो
द्रुपदसुता अरु धर्म नरेशहिं ❀ गांठिजोरिकीन्ह्योअभिषेकहिं
उत्तम बसन आनि पहिराये ❀ श्रीपति सिंहासन बैठाये

दो॰ दीन्ह्यो मुकुट शीशपर, मनहुँ उदित भे भान ।
जय जयभाष्यो देवगण, छाये बैठो आन ॥

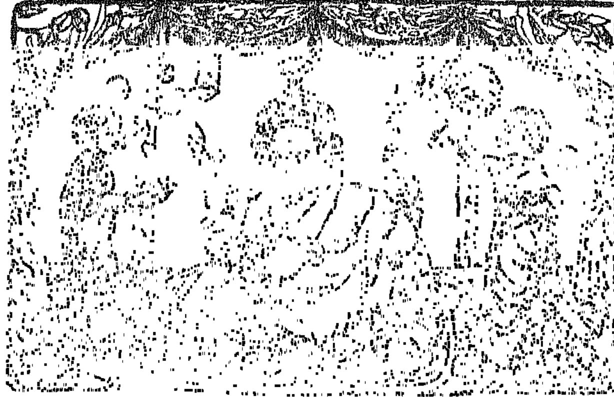
यदुपति तिलक आपु करलीन्ह्यो ❀ व्यासदेव ध्वनि बेदहि कीन्ह्यो
भीमसेन तब चामर ढारो ❀ अर्जुन छत्र शीशपर धारो
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो ❀ दीनबन्धु अपनो प्रण राखो
भारत तुम जीत्यो जगतारण ❀ कृपाकरीम्वहिं जगतउधारण
प्रभु तुम तीनि लोकके स्वामी ❀ जीव जन्तु सब के उरगामी
विप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❀ केशी कंस अघासुर गञ्जन
यह सुनिके श्रीपतिसुख मान्यो ❀ धर्मराय सों आपु बखान्यो
तुम हौ धन्य धर्म अवतारा ❀ परमभगत जानत संसारा
यहि अन्तर पुरबासी आये ❀ दिये भेंट अरु शीश नवाये
सब संसार सुखी भा भारी ❀ राजा धर्मराज अधिकारी
प्रजालोग सब करहिं अनन्दा ❀ जिमिचकोरपावहिंनिशिचन्दा

दो॰ द्रुपदपुत्र मन्त्री भये, पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंह चौहान कह, भक्तिबश्य भगवान ॥

भारत कथा सुनै मनलाई ❀ ताके निकट पाप नहिं जाई
जो फल सब तीरथ असनाना ❀ जो फल कोटिन कन्यादाना
जो फल होइ शरण के राखे ❀ जो फल सदा सत्य के भाखे
जो फल हो परमारथ कीन्हे ❀ जो फल पिण्ड गया के दीन्हे
जो फल रणमां प्राण गँवाये ❀ सो फल है यह कथा सुनाये

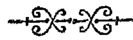
दो॰ भारत सुने अनेक फल, मोसे कहो न जाय ।
अनायास बैकुण्ठ लहि, दरश देहिं यदुराय ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाविरचिते
धर्मराजअभिषेककथासमाप्ता ॥



महाभारत

स्त्री-पर्व



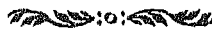
सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

दुर्योधन आदि सौ पुत्रों का मरना सुन, धृतराष्ट्र का दुःखित होकर व्यास आदि महापुरुषों को ज्ञान देना, पुनः गान्धारी-सहित सम्पूर्ण बन्धुओं का विलाप, कुरुक्षेत्र में तीन वीरों को बचे हुए देख क्लेशित होना तथा उन वीरों करके धैर्य देना, गान्धारी का कोप देख भीमादि भाइयों को क्षमा कराना, अपने-अपने कन्त की लोथों को देख सब रानियों का महाविलाप, धृतराष्ट्र करके श्रीकृष्णशाप, पुनः युधिष्ठिरादि करके मृतककर्म करना व धर्मराज का भ्रातृशोक से विरक्त होकर व्यासादि मुनियों का ज्ञानोपदेश देना आदि कथाएँ वर्णित हैं।



लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बिपिनविहारी कपूर के प्रबन्ध से

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा

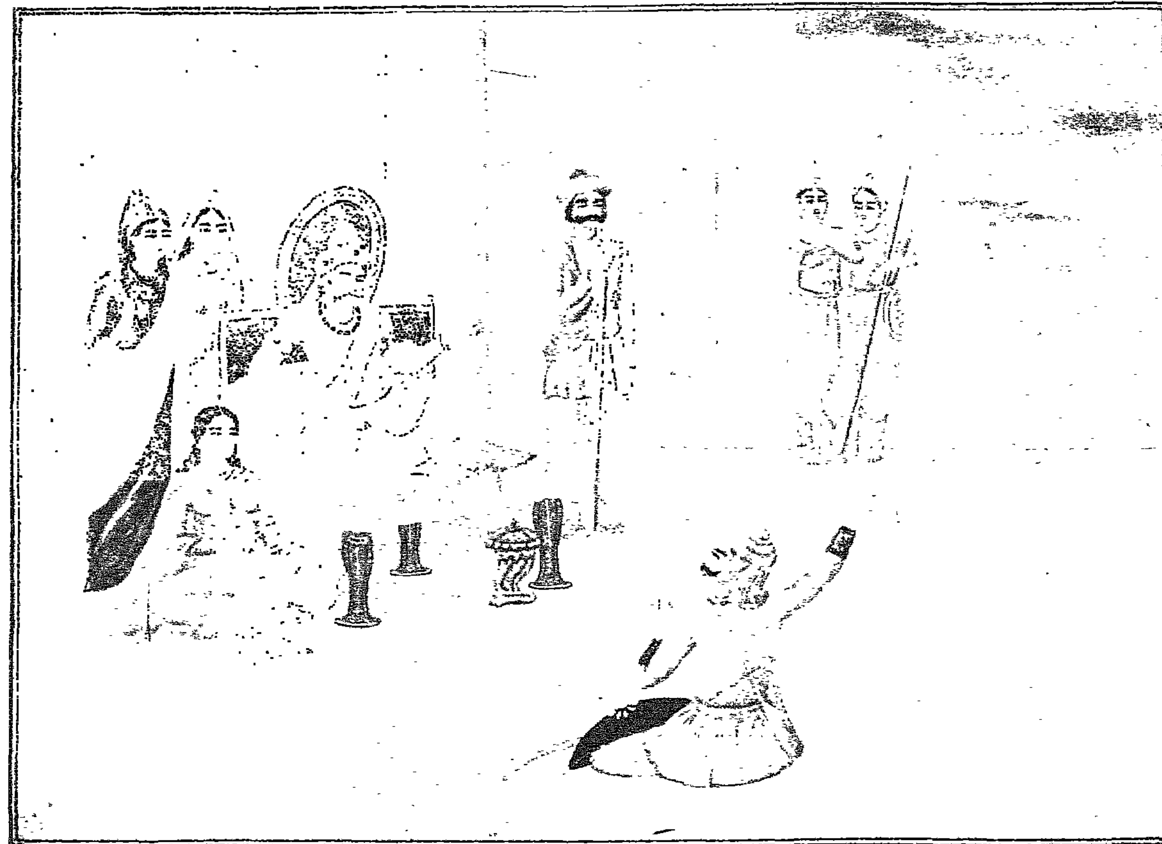
स्त्रीपर्व ॥

दो० जन्मेजय ते कहत हैं, वैशम्पयन बखान ।
स्त्रीपर्व भाषा रचौं, सबलसिंह चौहान ॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी ❀ जाते होइ पाप की हानी
संजय देख्यो मरे भुवारा ❀ बिस्मय मान्यो मनहिं मँझारा
जाइ तबै धृतराष्ट्र के आगे ❀ पुत्र मरण बिस्मय अनुरागे
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता ❀ मानो परी बज्र की घाता
रोदन करि तब अन्धभुवारा ❀ हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा
दुर्योधन सुत रण संहारा ❀ सबौ पुत्र जे हते हमारा
एक भीम सब रण महँ मारी ❀ का कीन्हेउ करतार खरारी
हा हा पुत्र पुत्र करि राई ❀ रोवै कुरु भूपति दुख पाई

दो० दुश्शासन अरु कुरुनृपति, सौ बान्धव लै सङ्ग ।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँभङ्ग ॥

हा हा भीषम पित्र हमारा ❀ हाय द्रोण हा करण भुवारा
जो जो गुण है पुत्र तुम्हारा ❀ सो सुमिरे तन जरत हमारा
है सुत शोक महा संसारा ❀ कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा
राज पाट सब परा तुम्हारा ❀ कनक पलँग के सोवनहारा
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ ❀ परा सुदेश सकल भुइँ गांऊ
बृथा काल सुत शोकहि पाये ❀ बाम बिधाता भा दुखदाये
कर्म दोष दुख लिखे हमारा ❀ सो अक्षर को मेटनहारा



संजय का पुत्र-शोक से व्यथित राजा धृतराष्ट्र को समझाना ।

परिचर्या करिबो हम काही ❀ पुत्र शोक हिरदय मां आही
वृद्धअवस्था विधि दुख दीना ❀ जैसे पक्षी पंख बिहीना
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा ❀ का रचना कीन्हों करतारा

दो० बिना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों बिनुभानु ।
चन्द्र बिना जिमि रैनि है, दीपक बिनु गृहजालु ॥

त्यों बिनु पुत्र बंश है ऐसा ❀ कुल को नाम नाश भा तैसा
परसुराम नारद समुझाये ❀ सुत के मनते बात न भाये
हमैं छांड़ि सुत कहां सिधाये ❀ गर्बवन्त है प्राण गँवाये
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी ❀ जीवन आश नहीं अब मेरी
भीषम करण और भगदन्ता ❀ द्रोणगुरू को भयो निहन्ता
महाबिलाप अन्ध नृप करई ❀ संजय तबै बात अनुसरई
राजा शोच तजो तुम यातें ❀ अब तुम सुनो ज्ञान की बातें
राजा अहौ परम सज्ञाना ❀ जानतहौ सब शास्त्र पुराना
जन्म मृत्यु दूनों सख्याता ❀ दूनों रहैं पिण्ड महँ ताता
जन्म मृत्यु माया ते धारण ❀ समुझो मन रोवत केहि कारण

दो० जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज ।
संजय तहँ समुझावहीं, अन्ध वृद्ध कुरुराज ॥

संजय नाम हते यक राजा ❀ पुत्र शोक ते भयो अकाजा
सुत हित चाहत प्राण गँवाये ❀ तब नारद मुनि जाइ बुझाये
जीवन मरण लोक दुख जाना ❀ कर्म फलित प्रापत परमाना
सब माया जानो तुम नरपति ❀ केवल सबै कर्म की यह गति
पुत्रहि केर समुझि मन दोषा ❀ हृदय माहिं करिये संतोषा
काहूकेर बचन नहिं माना ❀ साधनबचन सुन्यो नहिं काना
दुश्शासन मन्त्री सब जाना ❀ ताते मन्त्र गने नहिं आना
शकुनी करण मन्त्र परमाना ❀ काहू केर कहा नहिं माना
भीषम केर बचन नहिं राखे ❀ बहुतै नीति धर्म उन भाखे
गन्धारी के बचन न माना ❀ तेहि अपराध तजे तिन प्राना

दो॰ सदा पाप मनमें बसै, नाहिंन धर्म बिचार ।
सोई पाप ते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार ॥

ब्यास केरि बाणी नहिं मानी ❁ अतिशय अहंकार मति ठानी
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये ❁ पै विरोध वाके मन भाये
क्षत्री सब कीन्हें क्षय जानी ❁ कृष्ण केरि बाचा नहिं मानी
तुम नृप सुत बश कछु नहिं कह्यऊ ❁ पाप ते पुत्र नाश ह्वै गयऊ
ताते शोक तजहु तुम राई ❁ बहुत प्रकार मन्त्र समुझाई
सुनत कछू अधीर भा राजा ❁ महाशोक पुत्रन के काजा
छांड़े भूप ऊर्ध्व करि श्वासा ❁ पुत्र शोक ते भयो उदासा
रोवै धीर धरै नहिं राई ❁ तबहिं बिदुर राजहिं समुझाई
सुनिकै बचन धीर भयो राजा ❁ कीन्हेउ शोक पुत्र के काजा
उठो नरेश शोच नहिं करिये ❁ मेरे बचन हृदय में धरिये
काल बश्य है सब संसारा ❁ तीन लोक बश मृत्यु भुवारा

दो॰ जानै योग्य अयोग्य तब, जानै सब संसार ।
महाबीर क्षत्री जिते, सबै होत संहार ॥

बृद्ध ज्वान अरु बालक आहीं ❁ राजा प्रजा जिते जग माहीं
सबही मृत्यु सत्य प्रचराना ❁ जानहु राजा परम निधाना
सुनि नृप बात बिदुरमुख जबहीं ❁ भयो मौन धृतराष्ट्रक तबहीं
तबहूं होत हृदय नहिं धीरा ❁ मूर्च्छित भये अन्ध नृप बीरा
तबहिं ब्यास संजय यक साथा ❁ बिदुर सहित बोधे नरनाथा
शीतल नीर बदन में दीन्हा ❁ तबहीं हृदय चेत नृप कीन्हा
यहि प्रकार तब चेत जनाये ❁ रोदन करत कहन मनलाये
धिग यह जीवन जक्त हमारा ❁ पुत्र सुशोक सहै को पारा
महाबिलाप धीर नहिं धरहीं ❁ पुत्रशोक पुनि पुनि उर करहीं
बारबार रोवत है राई ❁ हा हा पुत्र परम सुखदाई

दो॰ धृतराष्ट्रक रोवै तहां, पुत्र शोक कर हेत ।
क्षणयक होत सचेत नृप, क्षणयक होत अचेत ॥

बहुविधि ब्यास कहत समुझाई ❋ तबहूँ धीर धरत नहिं राई
बिदुर और संजय समुझावैं ❋ काहुकि बात हृदय नहिं आवैं
महाशोक करि रोदन करहीं ❋ पुत्र नाम पुनि पुनि उच्चरहीं
तबहिं ब्यासमुनि कह समुझाई ❋ मन्त्र हमार सुनो हो राई
रोदन केहि हित करहु भुवारा ❋ यह सब देखन को उपकारा
मैं यकसमय इन्द्रपुर गयऊं ❋ नारद आदि मुनिन सँग लयऊं
तिहि अवसर बसुधा तहँ जाई ❋ बिधि सुरपति सों कह्यो बुझाई
कहौ देव मेरो उद्धारा ❋ मम ऊपर भवभार अपारा
पूर्ब विष्णु जे दैत्य सँहारा ❋ ते सब भये क्षत्रि अवतारा
भारी पाप सहै नहिं पारा ❋ यहै निवेदन सभा मँझारा
रोदन करि धरणी तब कहई ❋ सकल देवता साखी अहई

दो० तहां बिष्णु हँसिकै कहेउ, सुनु भुव बचन हमार ।
मनचिन्ता त्यागन करो, हम टरिहैं तव भार ॥

हैं निज बंश देवता जेते ❋ जगत माहिं जन्मै लै तेते
कुरुक्षेत्र भारत संचारा ❋ तहां होय सब को संहारा
जाहु पुहुमि अपने अस्थाना ❋ देव बिचारि कहौ भगवाना
बसुधा मृत्युलोक कहँ आई ❋ तबहिं बिचार करैं यदुराई
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा ❋ कलियुग केर अहै अवतारा
महाक्रोध चञ्चल है अङ्गा ❋ सो कलियुग आयसु करि भङ्गा
सौ बान्धव अरु करण भुवारा ❋ भारत हेत भयो अवतारा
हम सब कथा कही तुव पासा ❋ भयो युद्ध तेरो सुत नासा
ता कारण सब भयो सँहारा ❋ शोक तजहु अब अन्ध भुवारा
यह सब कीन्हें अन्ध भुवारा ❋ पृथ्वी केर उतारेउ भारा

दो० यहि प्रकारते व्यास तब, कहेउ बहुत समुझाय ।
धर्मरूप तुम अन्ध नृप, त्यागहु शोक उपाय ॥

धर्म स्वरूप युधिष्ठिर राजा ❋ ताते होय तुम्हारो काजा
पांचौ बान्धव पाण्डुकुमारा ❋ सो जानौ शत पुत्र हमारा

वे पाँचौ तुव सेवा करिहैं ❀ आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं
मोरे बचन सत्य सुनु राजा ❀ तुम्हरे क्रोधते पाण्डु अकाजा
राखहु नृपति आपने पासा ❀ दास भाव मन करै हुलासा
पाण्डव केर करौ कल्याना ❀ सुनि तब राजा करै बखाना
व्यास मुनीश्वर अग्र बिधाना ❀ सुनो सबै तुम अब दै काना
पुत्र शोक तनु जरै हमारा ❀ धीरज धरों सो कौन प्रकारा
तौ तुव हेतु बात हम माना ❀ पुत्र शोक त्यागे हम जाना
यहि प्रकार शान्तन नृप भयऊ ❀ तबहिंव्यासऋषितपहितगयऊ
शीतल जल राजा को दीन्हा ❀ व्यासबचनसुनि धीरजकीन्हा

दो॰ राजा को समुझाइकै, भे मुनि अन्तर्द्धान ।
व्यास बचनते अन्धकहँ, मनमें उपजे ज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासबलसिंहकृतेव्यासअन्ध
शोकनिवारणोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा तब संजय कहई ❀ दोउ करजोरि चरण गहि रहई
कछुक निवेदन अहै हमारा ❀ आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा
गन्धारी कहँ बात सुनावो ❀ अन्तःपुर में खबरि जनावो
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा ❀ मूर्च्छितगात भूमि परकासा
तबहीं बिदुर उठायो राजहि ❀ रोदन काह करौ बे काजहि
तब धृतराष्ट्र कह्यउ समुझाई ❀ आनु बिदुर सब स्त्री जाई
बधुन समेत संग गन्धारी ❀ सब लावहु यह कहा बिचारी
चलो संग तुमहूँ हम जैहैं ❀ सबही को अबहीं लै ऐहैं
यह कहि रथहि चढ़े तब राजा ❀ चले बधुन के आनहि काजा
गये तुरत तब महल मँझारा ❀ महाशोकते अन्ध भुवारा

दो॰ महादुखित रोदन करत, अन्तःपुरहु प्रवेश ।
सब जूझे कुरुक्षेत्र महँ, सबहुन सुना सँदेश ॥

रोदन करत भयो आघाता ❀ मानो परी बज्र की घाता

घर घर रुदन नगर में ठयऊ ❀ नर नारी सब रोवत भयऊ
आंखिन जे देखी नाहिं नारी ❀ परी भूमि लोटैं सुकुमारी
विकलवन्त रोवैं सब नारी ❀ छूटे केश न देह सँभारी
एक एक पट पहिरे अहई ❀ राजवधू स्त्री जे रहई
घरते बाहर चलीं पुकारी ❀ विकल सबै कुरुक्षेत्र सिधारी
गृह ते चलीं पुकारत जाई ❀ मनहुँ सिंहिनी पतिन गँवाई
एक को गहे एक धरि रोवै ❀ एक को हाथ हाथपर जोवै
कन्या पुत्र गोदते डारहिं ❀ परी भूमि में सबहिं पुकारहिं
कञ्चन पुतरी मनहुँ सँभारी ❀ रोवत लोटत भूमि मँझारी

दो० आरत नाद नगर महँ, सबै बधू आनाथ ।
सबै बधू तहँ रोवतीं, धरे हाथ पर हाथ ॥

सासु श्वशुर सब एकहि साथा ❀ रोवहिं सबै धुनैं महि माथा
चलि चलि नगरके बाहर तहँवां ❀ भयो युद्ध कुरुखेतहि जहँवां
सहित अन्ध नृप औ गन्धारी ❀ आईं सब कुरुखेतहि झारी
धृतराष्ट्रक तब देखन पाये ❀ तीनहु बीरन बचन सुनाये
कृप कृतबर्मा द्रोण कुमारा ❀ महाप्रबल तीनों सरदारा
राजा ते रोवत यह कहई ❀ बचन न आव नयन जल बहई
महायुद्ध कीन्हेउ कुरु राजन ❀ बचे न कोउ सुनिये महराजन
हम तीनों भारत में रहेऊ ❀ राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ
तीनों तब बोधत गन्धारी ❀ तजो शोच सुनि बात हमारी
जाना तुम्हैं क्रोध में राई ❀ तबहिं लोहकर भीम बनाई
क्रोध तजो राजा परमाना ❀ पाण्डव तनय पुत्र करि जाना
धर्मज के दुख देखु विचारी ❀ तुम्हरे पुत्र दीन्ह दुख भारी
व्यास बिदुर भीषम समुझाये ❀ बहुप्रकार हम ताहि बुझाये
काहू केर कहा नहिं माना ❀ हठकर कीन्हेउ रण मैदाना
तुम सब जानत हो सज्ञाना ❀ कहा कहों भाषत भगवाना
तुम्हरे चित्त दया नहिं आई ❀ पाये बहु दुख पांचौ भाई

पांच गांउ तुमहूं न दिवाये * अपने पुत्रहि नहिं समुझाये

दो० महादुःख सहि पाण्डवन, तब कीन्हों यह कर्म ।
मारन चाहो भीम को, काह कहौ तुम धर्म ॥

कृष्ण बचन सुनि अन्धभुवारा * कहै सुमति करि हृदय बिचारा
बड़े भाग ते भीम बचाये * धन्य कृष्ण अन्धहि समुझाये
क्रोध सकल अब गयो हमारा * महा कृपा भै पाण्डुकुमारा
पुत्र सकल रण जुझे हमारा * महाशोक भा नन्दकुमारा
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि * परशहि अङ्ग पाण्डवनयोधहि
धर्मराज अरु भीम जुझारा * पारथ सहदेव नकुल कुमारा
सबहि अन्ध चरणन लपटाने * तजिकै क्रोध दया बहु माने
पाण्डव पुत्र महा अज्ञाना * आपन पुत्र सत्य करि जाना
ऐसे पुत्रन शोक मिटाये * प्रेम हर्ष तब पाण्डव पाये

दो० धृतराष्ट्रक को परशिकै, पुत्र सुशोक मिटाइ ।
तब पांचौ पाण्डव बहुरि, गन्धारी पहँ जाइ ॥

गन्धारी पहँ कीन्ह पयाना * आइ व्यासमुनि तहां तुलाना
पुत्र शोक गन्धारी अहई * शाप देन पाण्डव को चहई
पट्टी बांधे है दोउ नैनहिं * तहां व्यास भाषे यह बैनहिं
बचन हमार बेद परमाना * तू आगे मैं करौं बखाना
शान्त होहु सब दुखन मिटाई * तुव सेवा करैं पांचौ भाई
जात युद्ध दुर्योधन राऊ * आज्ञा लै नहिं परशेउ पाऊ
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता * धर्मज संजय पाप निपाता
इतनी बात पुत्र सन भाषा * पूरण भयो धर्म अभिलाषा
बचन तुम्हार जक्त महँ टरई * तौ रबि चन्द्र उदय नहिं करई
सोई बचन भयो परमाना * बिरथै धर्म कुकर्म नशाना

दो० क्रोध क्षमा करु देवि तुव, कहेउ व्यास समुझाइ ।
धर्म वृद्धि क्षय पाप की, यहै सुनो मन लाइ ॥

व्यास बचन सुनिकै गन्धारी * तज्यो क्रोध तब कहेउ बिचारी

ठाढ़े पांच बन्धु भगवाना ❋ कहेउ ब्यास गन्धारि बखाना
जो कछु ब्यास कहत हैं बानी ❋ बेद प्रमाण सत्य हम जानी
पांचो पुत्र परम रिस नाहीं ❋ सुत को शोक भयो मनमाहीं
जेहि सम कुन्ती जननी तासू ❋ तैसे हमैं देखि परगासू
कुरुपति शकुनी करणहुँ चारी ❋ पापी सबै भूप संहारी
पाण्डुपुत्र पापहि मन दीन्हों ❋ जानु भङ्ग दुर्योधन कीन्हों
नाभी हेठ दाग पर हारा ❋ ताते मनुभा क्रोध हमारा
पापी भीम जानु में मारा ❋ सुनत त्रास भयो पाण्डुकुमारा
मन महँ त्रास हाथ तब जोरे ❋ मातन कहो दोष कह मोरे

दो० सबै बीर संहारिकै, बाच्यो एक भुवार ।
ताहि न मारैं जननि हम, निष्फल युद्ध हमार ॥

उनते जीति न सकेहु भुवारा ❋ पाप कपट करिकै हम मारा
अरु भाई कर दोष बिचारी ❋ ताते जानु भङ्ग करि डारी
जा दिन सभा द्रौपदी आनी ❋ जानु देखायो सो अज्ञानी
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा ❋ जानु भङ्ग ता कारण कीन्हा
राजा बिनु जीते ते माई ❋ केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे ❋ दीन्हो नहीं गर्व मन पागे
तबहुँ न मानी बात भुवारा ❋ कहु जननी का दोष हमारा
ता कारण नहिं धर्म बिचारा ❋ जसकरि जाना तस हम मारा
अपने कर्म भयो संहारा ❋ नाहिंन सुत कछु दोष तुम्हारा
यहु दुख मोहिं दीन्ह करतारा ❋ धर्मराज अस सुत रण मारा

दो० नकुल साथ दुश्शासनहिं, लरे प्रथम मैदान ।
तुम गहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान ॥

पाछे भीम कह्यउ समुझाई ❋ बिना दोष कीन्हों नहिं माई
रजस्वला जो द्रौपदी रानी ❋ गहि कर केश सभा महँ आनी
एक बस्त्र सोउ खैंचके लीन्हा ❋ तहँ माता हमहूं प्रण कीन्हा
भुजा उखारों जबहिं तुम्हारी ❋ पुरे प्रतिज्ञा तबहिं हमारी

क्षत्री धर्म प्रतिज्ञा कीन्हा ❀ ताते भुज उखारि मैं लीन्हा
याते जननी दोष हमारा ❀ क्षमा करौ मैं शरण तुम्हारा
तुम जननी मन आनेहु आना ❀ हौं मैं जानत कुन्ति समाना
तुम जननी हो बड़ी हमारी ❀ कृपा करहु अपराध बिसारी
मधुर बचन तब भीम सुनाये ❀ ऐसे मातहिं शान्त कराये
भीम तु क्रोध तज्यउ तब रानी ❀ परम हर्ष भयो शारँगपानी

दो॰ क्रोधशान्त देवी भई, भीमबिनयसुनिकान ।
तबगन्धारीशान्तिकरि, कहा सुनौ सज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्त्रीपर्वगन्धारी
संकोपशान्तिकरणन्नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तब गन्धारी कह्यउ बुझाई ❀ कहँ स्त्री धर्म युधिष्ठिर राई
सुनत त्रास कांपे नरनाथा ❀ ठाढ़े भये जोरि कर हाथा
बोले बचन त्रास भइ भारी ❀ जननी सुनियो बात हमारी
हम ते भा सब बंश सँहारा ❀ जननी आयों शरण तुम्हारा
शाप योग्य मैं माता नाहीं ❀ सहै शाप तुव को जग माहीं
धिग जीवन है जक्त हमारा ❀ अपने हाथ बन्धु संहारा
देवी सुनत भयो मन धीरा ❀ दीन बचन भाषे नृप बीरा
प्रति उत्तर तब कछू न दीन्हा ❀ मन को दुख प्रकाश नहिं कीन्हा

दो॰ तब माता धीरज धरेउ, नृपति बिनय कह बैन ।
तीन बन्धु देवी कहै, हम नहिं देखे नैन ॥

अर्जुन सहदेव नकुल कुमारा ❀ सुनत बचन तब भयो खँभारा
हरिके पाछे पारथ जाई ❀ भागि दुरे तब दूनों भाई
तीनों हरिके पाछे गयऊ ❀ शाप त्रास ते आतुर भयऊ
एक घरी सबही चुप रह्यऊ ❀ क्रोध शान्त गन्धारी कह्यऊ
पुत्र आउ अब निकट हमारा ❀ काहे कीजे त्रास कुमारा
अपनो हुकुम करौ अब जाई ❀ धर्मपुत्र तुम पांचौ भाई

देवी क्रोध तज्यउ परमाना ❀ पाण्डव शाप भयो परित्राना
गन्धारी तब बोली बाता ❀ आनौ कुन्ती शत्रु अजाता
पांचौ बान्धव कुन्ती लाये ❀ सबही मिलि कुरुखेत सिधाये

दो० गन्धारी कुन्ती सहित, पांच बन्धु भगवान ।
युद्धभूमि तब सबै जन, देखत ठाढ़ निदान ॥

तहँ शत बधू रूप उजियारी ❀ मानहुँ चन्द्रकला द्युतिधारी
अपने अपने कन्त उठाये ❀ रोदन करैं सबै बिलखाये
मनहुँ मृगी शिशु यूथ बिहाई ❀ रोदन करैं सबै बिलखाई
युद्धभूमि देखी भयकारा ❀ देखे बीर अनेक जुझारा
कुण्डल नाना रतन अपारा ❀ महारूप ते परे भुवारा
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा ❀ पूरिरहेउ रणभूमि मँझारा
बसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे ❀ नाना मुकुट रतनमय लेखे
शोणित नदी बहत है ऐसी ❀ सरिता यम बैतरणी जैसी
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा ❀ बहेजात शोणित की धारा
तीन तार शोणित गम्भीरा ❀ परे नृपति क्षत्री बलबीरा

दो० रोवत हैं सब त्रियागण, नानारूप अपार ।
आपन आपन कन्त को, रोदन करत पुकार ॥

काहू केर शीश है नाहीं ❀ काहू केर परे कटि बाहीं
काहू केर दोउ भुज नाहीं ❀ काहुहि शूल घाव तन आहीं
कोई कटे खड्ग ते आधा ❀ काहुहि परे भूमि पर काँधा
काहू केर जांघ द्वौ काटे ❀ काहू केर हृदय में छाटे
ऐसे परे बीर बहु तहई ❀ भारत रणहि भूमि है जहई
काक गृध्र जम्बुक जहँ नाना ❀ अरु दुर्गन्ध बास है घ्राना
बहुत रूप पक्षी गण आये ❀ मांस खाइ आनन्द बढ़ाये
प्रेत भूत बैताल अपारा ❀ नाचैं योगिनि ताल सँभारा
नचैं कबन्ध देत करतारी ❀ योगिनि डाकिनि करैं धमारी

दो० क्रोधवन्त धनु बाण लै, कोई युद्ध प्रकाश ।

उठे कबन्ध रणखेत महँ, प्रेतकरहिं सब हास ॥
कोइ पति कहि कोइ कहै कुमारा ❀ कोई बन्धु करि करै पुकारा
भयो महारण आरत शोरा ❀ रोदन भयो महाघन घोरा
रोवहिं शतहु बधू बिलखानी ❀ महाबिकल दुर्योधन रानी
सो कहँ लग मैं करहुँ उचारा ❀ भयो रुदन जहँ शब्द अपारा
हा हा कन्त प्राणपति राजा ❀ जाको यश सब जगत बिराजा
बासुक लक्ष्मी कन्ध नृपाला ❀ करैं सेवा लाखन भूपाला
छत्रहि छत्र रहत जग छाई ❀ सेवा करन आवत बहुराई
रतन सिंहासन पाट तुम्हारा ❀ नाम तुम्हार जान संसारा
रतन मुकुट आलंकृत नाना ❀ रूप देखिकै काम लजाना
अधिक सुन्दरी तुम्हरी रानी ❀ कर्मबश्य यह गति भै आनी
दो० अपने अपने कहैं सुन्दरी, शतबान्धवकीनारि ।
बहुबिलापकहिजातनाहिं, रोवहिं शीशउघारि ॥
लखि गन्धारी भई अधीरा ❀ देख्यो यह कारण यदुबीरा
सकल बधू रोवतीं हमारी ❀ तुमहीं सब अनाथ करिडारी
जो सुन्दरि मैं तुमहिं गनाहीं ❀ भईं अनाथ रोवत सब आहीं
राजा एक करै सुत सेवा ❀ ताकी यह गति कीन्ह्यों भेवा
जा तन अतर सुगन्ध सोहाई ❀ तौन शरीर गृध्र खग खाई
यात्रा समय पुत्रसन भाखा ❀ बचन हमार राउ नहिं राखा
ताहि दोष नहिं नन्दकुमारा ❀ सबै पराक्रम आहि तुम्हारा
जूझे सौ सुत रह्यउ न कोई ❀ अन्धनृपति की का गति होई
अस कहि रोवहिं ऊंच पुकारी ❀ ताहि देखि बोले बनवारी
तुम्हरे सुत मम बचन न माना ❀ मोर कहा सो तृण सम जाना
दो० भीषम द्रोण बुझाये, और बिदुर मुनिव्यास ।
कहा न मान्यो काहुकर, कीन्ह्यो रण परगास ॥

धृतराष्ट्रक तब बहुत बखाना ❁ इन कीन्ह्यो सब कर अपमाना
पाण्डव बीर महाबल भारी ❁ हठिकै कुरुपति रणहि बिचारी
अपने कर्मन भये बिनाशा ❁ नारायण यह बचन प्रकाशा
सुनिकै बात कहत गन्धारी ❁ अपने कर्मन गो अपकारी
दोष न काहू को मन धरेऊ ❁ सौ बान्धव तेहि संगहि मरेऊ

दो० क्षत्रिधर्म उन करेउ रण, सबै बीर मैदान ।
कुरुक्षेत्र तन त्यागिकै, सब चढ़िगये बिमान ॥

तब तीनउ जन कह्यो बुझाई ❁ सुनिये मातु परम सुखदाई
शोक तजौ न करौ बिललापा ❁ गये स्वर्ग सब कह संतापा
भीम पाप कीन्ह्यउ बहुसङ्गा ❁ ताते हम कीन्हेउ रणरङ्गा
मारे दल पाण्डव संहारा ❁ बधे द्रौपदी पञ्च कुमारा
पाण्डव को सो पराभव दीन्हा ❁ राजा द्रुपद पुत्र बध कीन्हा
अब आज्ञा दीजै नरनाहा ❁ जैये हमहूं निज थल माहा
बिदा मांगि तीनौं तब गयऊ ❁ द्रौणी ब्यासाश्रम पगु धरेऊ
कृप कृतबर्म द्वारका गयऊ ❁ कुरुक्षेत्र महँ सब जन रह्यऊ
गये सबै रण भूमि मँझारा ❁ जहँ बहु बीर परे बिकरारा
रोदन करैं तहां सब कोई ❁ बाम बिधाता काहु न होई
भयो शोर तहँ आरत भारी ❁ एक बार शत बधू पुकारी

दो० महाशोर कुरुक्षेत्र महँ, रोदन भयो अपार ।
नगर लोगकी नारि सब, रोवत करत पुकार ॥

राजा धर्म सुनो यह पाये ❁ कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये
पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा ❁ कुरुक्षेत्र तुरतहिं पगु धारा
प्रथमै धर्मराज गये आगे ❁ अन्ध नृपति के चरणन लागे
महीं युधिष्ठिर पुत्र तुम्हारा ❁ मोरे दोष न करौ बिचारा
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा ❁ क्षमौ दोष जो भयो हमारा
राज पाट सब अहै तुम्हारा ❁ हम सेवक समेत परिवारा

बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा ❀ तब धृतराष्ट्र शान्ति मन लीन्हा
अन्ध नृपति तब कह्यउ बिचारी ❀ भीम सबै मम पुत्र सँहारी
मिलन हेतु हमरी है आशा ❀ कपट बुद्धि मन में परगाशा
भस्म करन चाहै मन माहीं ❀ तब कह कृष्ण भीम यहँ नाहीं

दो० कालिह आइकै भेंटिहैं, भीम तुमहिं नरनाह ।
चारौ बान्धव मिले तहँ, बिनय बहुत करि ताह ॥

तब यह श्रीपति युक्ति उपायउ ❀ लोहे भीम तहां निर्मायउ
भीमसेन कहँ राखि दुराई ❀ लोहे भीम अन्ध पहँ लाई
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई ❀ मिलौ हेतुकरि कण्ठ लगाई
नृपके कपट आहि मनु भाई ❀ मारौ भीमहि दुख मिटिजाई
कहो बात हिरदयमहँ चाही ❀ पुत्रके शोक बिकल तन माही
हर्षत क्रोध मिले तब राई ❀ मनहुँ परी दुखिया निधि पाई
अयुत नाग को बल तनमाही ❀ क्रोधित भीमसेन को गाही
मिलत लोह चूरण करिडारा ❀ पुहुमी माहिं परा कै छारा
संजय हा हा करी पुकारा ❀ भीमसेन को करै सँहारा
सबही हा हा शब्द पुकारा ❀ भयो मोह तब अन्ध भुवारा
तब माया करि रोवन लागे ❀ भीम शोक हिरदय महँ पागे

दो० हाय भीम सुत राजा, बहुबिधिकरतपुकार ।
शोकशान्ति जबहींभयो, श्रीपति बचन उचार ॥

राजहि बात कहत यदुनाथा ❀ रोदन कहा करौ नरनाथा
अहै भीम सुनियो हो राई ❀ धृतराष्ट्रक को कृष्ण बुझाई
राजा कहत सुनहु बनवारी ❀ है सब रचना कृष्ण तुम्हारी
सर्बमयी तुम हौ भगवाना ❀ तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना
वैसी बुद्धि तासु को दयऊ ❀ जाते शत बान्धव मरिगयऊ
पाण्डव कह जीते पुरुषारथ ❀ भक्तहेतु कीन्ह्यउ तुम स्वारथ
पाण्डव कुल के भयो उबारा ❀ कौरव बंश कीन्ह संहारा

दिना अठारह अस रण रच्यऊ ❀ शत बान्धव महँ एक न बच्यऊ
मोर बंश तुम कीन्ह सँहारा ❀ कृष्ण लीजिये शाप हमारा
त्रिंशति षट संवत यदुराई ❀ तव कुल आपुस महँ कटिजाई

दो० छपनकोटि यदुबंश हैं, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार ।
लेहु कृष्ण तुम शाप मम, एकहि दिन संहार ॥

हँसिकै कृष्ण कही यह बाता ❀ को अस है जग में सज्ञाता
यदुबंशिन सों जीतन चहई ❀ कौन जगत में ऐसो अहई
आपहि बंश होय अपकारा ❀ यद्यपि पायो शाप तुम्हारा
पापी कुरुपति गयो सँहारा ❀ काह दोष धौं भयो हमारा
हम जब गये हत्यन दरबारा ❀ पांच गांव मांगे भूपारा
ग्राम देहि नहिं मारन चहई ❀ तव कुरुपतिसन भीषम कहई
मोहिं शाप केहिकारण दीन्ह्यउ ❀ सहै जगतपति कहिबे लीन्ह्यउ
सुनिकै लज्जित भै गन्धारी ❀ कृष्ण बचन सों शोक निवारी
पुत्र शोक छांड़ेउ गन्धारी ❀ तज्यो क्रोध तनु सुरति सँभारी
ऐसे सुनत शान्त सब भयऊ ❀ तबहीं कृष्ण हर्ष मन लयऊ

दो० क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अन्ध कुरूपति राय ।
पाछे तहँवां द्रौपदी, पुत्र शोक बहु पाय ॥

पांच पुत्र गये बधे हमारा ❀ बिलपै डारि भूमि मंझारा
गन्धारी गहि हाथ उठाई ❀ लीन्ह बधू कहँ कण्ठ लगाई
बहु प्रकार समुझावहिं बानी ❀ भइ तब मौनि द्रौपदी रानी
सबै बधू लै कन्तन रोवत ❀ देवलोक सब सुरगण जोवत
तरुण बयस सब ही हैं बाला ❀ प्रथम बयस अतिरूप बिशाला
छूटे केश न देह सँभाला ❀ व्याकुल सकल महाबिकराला
यह सब देखि परिहस्यो शोका ❀ पुत्र तुम्हार गये सुरलोका
रोइ सुभद्रा सुतहि पुकारी ❀ पुत्रहि बिना धीर किमि धारी
चक्रब्यूह युद्ध में बीत्यउ ❀ करण द्रोण बीरनते जीत्यउ

ऐसो पुत्र जासु को मरई ❀ तासु जननि किमि धीरज धरई

दो० कैसे जीवै मातु वह, और तासु की नारि ।
उत्रा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि ॥

देख्यो बिस्मय श्रीभगवन्ता ❀ रोवत पारथ शोच अनन्ता
उत्राहि देखि सबै तहँ रोवत ❀ कुन्ती रानि बधू मुख जोवत
सासु सुभद्रा कहि समुझावत ❀ उत्रा कहँ कर गहि बैठावत
यहि प्रकार रोवत सब नारी ❀ कुन्ती मातु करै मनुहारी
ऐसे एक एक भइ धीरा ❀ शोक ते व्याकुल रहै शरीरा
कुन्ती रानी औ गन्धारी ❀ कीन्ह बधुन की बहु मनुहारी

दो० आरत नाद मिटा तब, बहुबहु धीर धराइ ।
सबमिलि त्यागहु शोक अब, कहा युधिष्ठिरराइ ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्त्रीपर्वणि
कुरुपाण्डवविलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

आरतनाद शान्त जब भयऊ ❀ धृतराष्ट्र राजा सों कहयऊ
सुनहु बात धर्मज सुत राजा ❀ अब नहिं शोच करन को काजा
हरि की माया ते संसारा ❀ आवत जात न लागै बारा
मरे बीर भारत मैदाना ❀ दानव हते देव जे नाना
अष्टादश अक्षौहिणि दल भारी ❀ भारत भूमि परे सब झारी
द्रोण करण भगदत्त भुवारा ❀ और नृपति जे हते अपारा
और नृपति जिनके नहिं कोई ❀ समगति करौ सबन की सोई
राजा कैसो करै उपाई ❀ दाह कर्म बीरन के आई
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा ❀ लागे करन दाह कर काजा
धर्मज भीम धनञ्जय बीरा ❀ और नकुल सहदेव रणधीरा

दो० पांचौ बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश ।
बड़े बड़े सरदार सब, क्षत्री बीर नरेश ॥

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे ❀ दाह कर्म सबही को कीन्हे
पहले दुर्योधन शत भाई ❀ लषण कुँवर को दाह कराई
भूमि गुप्त करि कुरुपति धारा ❀ बाहर काढ़ि कुँवर को जारा
द्रोण बीर भगदत्त भुवारा ❀ और कलिङ्ग शूर बरियारा
कर्ण बीर अँगारमति रानी ❀ क्षेत्र मांझ सत्ती भइ आनी
और त्रिया जेहि सत मनमाना ❀ भई संग पति सती प्रमाना
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा ❀ अभिमन्यु दाह करै तब काजा
उत्रा सती होन को जाई ❀ कहैं कृष्ण तासों समुझाई
तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई ❀ कुरु पाण्डव के सरबर सोई
है दुइ मास गर्भ कहि भाखा ❀ बहु समुझाइ कृष्ण तेहि राखा

दो० बहु प्रकार उत्रा कहँ, कह्यउ कृष्ण समुझाइ ।
दुहूँ बंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ ॥

तब बिराट अरु द्रौपद राजा ❀ सोमदत्त के दाहन काजा
अंशुमान को दह्यो शरीरा ❀ चेकीतान दह्यो रणधीरा
काशीराज शिखण्डी बीरा ❀ धृष्टद्युम्न को दह्यो शरीरा
कैकयि और त्रिगर्त नरेशा ❀ दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा
जे द्रुपदी के पांच कुमारा ❀ गति कीन्ही तब धर्म भुवारा
है घटोत्कच भीम कुमारा ❀ और हलंबुष दानव बारा
दाहन कर्म सबहि को कीन्हा ❀ क्षत्री बीर जहां लगि चीन्हा
पाछे को जेतने असवारा ❀ अरु पायक जे भये सँहारा
भारत महँ जूझे हैं जेते ❀ दाहकर्म धर्मज किये तेते
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा ❀ गये गङ्गतट ब्राह्मण साथा

दो० तर्पण अरु अस्नान करि, क्षत्री देव प्रमान ।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान ॥

करि अस्नान नगर में आये ❀ तब कुन्ती पुत्रन समुझाये
सुत सुपुत्र भाषहि संसारा ❀ सोइ कर्ण सुत हते हमारा

कन्या कलँक भयो अवतारा ❀ सूर्यध्यान कीन्हेउ ज्यहि बारा
ज्येष्ठ बन्धु सोइ करण तुम्हारा ❀ प्रेत कर्म तेहि करौ भुवारा
यह चरित्र राजै सुनि पाये ❀ हाय करण तुम कहां सिधाये
भ्राता आजु बात सुनि पाये ❀ अनजाने रण तुमहिं गिराये
आगे माता नाहिं जनाये ❀ भाष्यो तब जब मारि गिराये
मो कहँ शोक सिन्धु में डारेउ ❀ पहले माता नाहिं सँभारेउ
तबहिं शाप माता कहँ दीन्हा ❀ तव गुण मातु कर्णबध कीन्हा
गुप्त कथा नारिन तन माहीं ❀ रहै कदापि कला उर नाहीं

दो० महाशोक राजा हृदय, कर्णहिं हेतु बिलाप ।
ज्येष्ठ बन्धु बधकीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप ॥

कर्ण बीर के कर्महिं कीन्हे ❀ बेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे
है बृषकेतु जो कर्ण कुमारा ❀ कर्म पिता के करै सँभारा
औरौ ज्ञाति सबै परिवारा ❀ कीन्हे कर्म बेद ब्यवहारा
तर्पण ज्ञान गङ्ग महँ कीन्हा ❀ पिण्डदान तब दश दश दीन्हा
यह कीरति जल में निर्बाहा ❀ पुनि बाहर आये नरनाहा
क्रियाकर्म सबके हित कीन्ह्यउ ❀ बहुत दान बिप्रन कहँ दीन्ह्यउ
बिदुर और धृतराष्ट्र भुवारा ❀ पांचो पाण्डव नन्दकुमारा
गृह में गये सबै यक साथा ❀ पाण्डव सङ्ग आप यदुनाथा
रहे गेह महँ सब जन आई ❀ कुन्ती अरु गन्धारी माई
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई ❀ चिन्तावन्त धर्मसुत राई

दो० ज्ञाति बन्धु को शोक है, धर्मराज मनमाह ।
दुख पावत हैं हृदय महँ, पाण्डवपति नरनाह ॥

यहि अन्तर तहँ सब मुनि आये ❀ पाराशर तब हर्षि सिधाये
नारद मुनि आये पुनि तहँवां ❀ सनक सनन्दनहू गे जहँवां
व्यासकपिलअरुऋषिगणनाना ❀ मुनि बशिष्ठ तहँ कियो पयाना
ऋषि जमदग्नि संग सब आये ❀ धर्मराज तब दर्शन पाये

पांचौ बान्धव बैठे जहँवां ❋ कुरुनृप और बिदुर हैं तहँवां
बन्धु शोकते धर्म शरीरा ❋ नयन स्रवत जल बहु दुख पीरा
राज पाट हित बान्धव मारा ❋ महाशोक महँ धर्म भुवारा
रोदन कर तहँ धर्म नरेशा ❋ बन्धु शोक तन भयो प्रवेशा
तबहीं व्यास सिखावन लागे ❋ राजनीति धर्मज के आगे

दो० बहु प्रकार समुझायकै, धीर धरायो व्यास ।
कृष्ण समेत बन्धु सब, बुद्धिचक्षु हैं पास ॥

सुर अरु असुर दनुज नर दारा ❋ बन्धु बन्धु ते बैर सँभारा
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना ❋ सदा युद्ध ते करैं निदाना
सदा सों यहै बात चलिआई ❋ तुम कह शोच करत हो राई
जन्म मृत्यु होते परमाना ❋ हरिमाया काहू नहिं जाना
तीनों रूप त्रिगुण अवतारा ❋ सिरजैं पालैं करैं सँहारा
जनमत संग मृत्यु तो आवा ❋ मायारूप गर्भ नर पावा
मरिहैं सबै न बचिहैं कोई ❋ जेतने देव दैत्य नर सोई
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा ❋ मरहिं अष्टकुल नागपसारा
मरिहैं धरती और अकाशा ❋ मरिहैं मेघ नीर परगाशा
मरिहैं चन्द्र सूर्य अरु तारा ❋ मरिहैं ब्रह्मऋषिहि संसारा

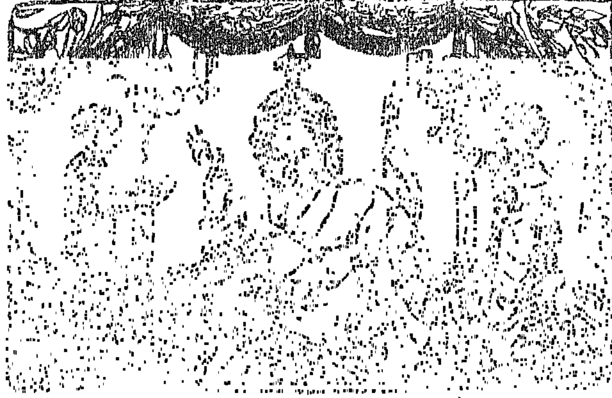
दो० शोक परिहरो धर्मसुत, देखहु ज्ञान बिचार ।
जो जन्मा सो सब मरा, मृत्युलोक संसार ॥

जेतक भये मही अवतारा ❋ कहां गये वे सबै भुवारा
केते भये कहत नहिं आवैं ❋ अन्तकाल सब मृत्युहि पावैं
राजा रङ्क मरैं सब भारी ❋ मरिहैं महाबीर धनुधारी
मृत्युहि लोक नाम यहि अहई ❋ जो कोइ जन्म आइकै गहई
मरिहैं सबै अमर नहिं कोई ❋ केवल सुयश रहै जग सोई
माता पिता बधू सुत भाई ❋ जीवत भरि माया अधिकाई
अन्तकाल एको नहिं अहई ❋ अपनो धर्म आप सँग रहई

धर्म कर्म जो जाको जैसा ❀ ताको फल पावै सो तैसा
व्यास कहैं राजहि समुझाई ❀ शोक करो क्यहि कारण राई
एक ब्रह्म कै सब यह माया ❀ देव असुर मानुष्य भ्रमाया
दो॰ राजा शोक न करौ तुम, कहेउ व्यास समुझाइ ।
एक धर्म साथी अहै, और संग नहिं जाइ ॥
जैसे एक चन्द्र नभ माहीं ❀ कोटि कला सम प्रकटै ताहीं
सर्व मध्य देखौं सोइ चन्दा ❀ एकौ अङ्ग अहै सब बन्दा
नाना घट माया बिस्तारा ❀ सुत पितु बन्धु मातु परिवारा
यक घट नाश जबहिं ह्वैजाई ❀ ताको जल सब भूमि समाई
तजिकै रूप पुरुष अस जाई ❀ चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई
दो॰ घट बिनाश ते पुरुष तब, लीन होइ तहँ जाइ ।
प्राकृत माया त्रिगुण जो, सो भरमावत आइ ॥
यहिप्रकार मुनिव्यास बुझायो ❀ धर्मराज को धीरज आयो
भारत कथा पुनीत प्रतापा ❀ नाशै सकल देह कर पापा
आवै मति दुर्मति मिटिजाई ❀ सत्यवन्त ते जानत राई
कहैं कथा मुनि बैशम्पायन ❀ जनमेजय सुनिये सुखदायन
स्त्री पर्व यहै बिस्तारा ❀ अब अभिषेक सुनौ भुवपारा
दो॰ क्षत्री सुनत जे शूरमा, मूरुख ज्ञान प्रकास ।
श्रवण पान जे करत नर, छूटत यमकी त्रास ॥

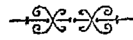
इति श्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासबलसिंहचौहानभाषाकृते
व्यासयुधिष्ठिरसंवादेधर्मउपदेशवर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इति स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥



महाभारत

शान्तिपर्व



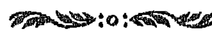
सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की
रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

श्रीभीष्मपितामहजी ने राजा युधिष्ठिर आदि पांचो भाइयों व
श्रीकृष्णचन्द्रजी व कृष्णद्वैपायन और अच्छे २ श्रेष्ठ ऋषि
मुनियों को ज्ञानोपदेश किया और उत्तरायण सूर्य प्राप्त
होने पर अपने शरीर को त्याग के स्वर्ग को गये
यही कथा उत्तम भांति से वर्णन की गई है।



लखनऊ
सुपरिंटेंडेंट बिपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।
सन् १९४६ ई०

अथ महाभारत शान्तिपर्व ।

राजा सुनो शान्ति बिस्तारा ❀ करत राज श्रीधर्मभुआरा
ज्ञातिशोक ते धर्मभुआरा ❀ भावत नहीं राज संसारा
दिन दिन महाशोच तब माना ❀ चौथेपन का कीन पयाना
शतबन्धुनरु द्रोण गुरु मारा ❀ रोवहिं धर्म दीर्घ जलधारा
कर्ण बन्धु सोऊ बध कीना ❀ भीषम तौ शरशय्या लीना
यहै शोच तौ राजा करही ❀ दिन २ तनु दुःखित दुखपरही
जेही अवसर मुनि सब आये ❀ नारद और बशिष्ठ सिधाये
मार्कण्डेय कपिल अरु भृगुमुनि ❀ जमदग्नी औरौ मुनीशगुनि
बृहदश्व लोमश सज्ञानी ❀ सब मन्त्रीगण बिदुर प्रमानी

दो० श्रीबलभद्र नारायण, पांचौ बन्धु भुआर ।
बैठे सबै सभा बिषे, सुनौ परीक्षित बार ॥

सबै करत राजा से बाता ❀ श्रीबलहरिमुनिऋषि सख्याता
परजा भाग धर्मसुत राजा ❀ पुरी हस्तिना शोभित साजा
बड़े भाग कुरु सब संहारे ❀ परम सुःखकर राज भुआरे
जस संजय नृप शोक गमाये ❀ नारद सबको कहि समुझाये
बेदव्यास ऋषी बहु ज्ञानी ❀ धर्मराज से कहे बखानी
ज्ञानतन्त्र सुनहू नृप बाता ❀ चलो बेगि भीषम पै ताता
व्यास बचन सुनिकै नरनाथा ❀ चले नृपति हरिबल हैं साथा
औरौ सबै मुनी सँग लाये ❀ कुरुक्षेत्र में पहुँचे आये
जहँ शरशय्या भीषम पाये ❀ बैठे सबै तहां मन लाये
शरशय्या भीषम कहँ देखा ❀ महा शोक बाढ़यो नृप पेखा

दो० रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन ।
हिरदय शोक प्रकाशिकै, कहै लाग नृप बैन ॥

बालक काल पिता के हीना ❀ तब प्रतिपालन तुमहीं कीना
मोसम पापी मुग्ध न आना ❀ भीषम मैं मारे अज्ञाना
सत्य बचन हमको गुरुजाना ❀ मैं कर पाप असत्य बखाना
जेठबन्धु कर्णहि रण मारा ❀ अस्त्रहीन पारथ संहारा
मोसम पापी जगत न कोई ❀ भये नहीं नहिं होवै कोई
पांच पुत्र द्रुपदी के गयऊ ❀ औ अभिमनु रणमें बध भयऊ
कौन सुःख है राज हमारा ❀ अल्पकाल पातक को टारा
जाऊं बनहि तजौं मैं राजा ❀ बनौबास कुमती के काजा
शोक अनल ते दहै शरीरा ❀ महाशोक से कह नृप बीरा

दो० राजा व्याकुल शोकहै, जगतबन्धु दुख ताप ।
कर्म लिखा नहिं जानहि, सहब कहा संताप ॥

कहही बात व्यास समुझाई ❀ समाधान है सुन अब राई
बाल युवा बृद्धहु किन होई ❀ अन्तकाल मरते सब कोई
दुख सुख है यक सम संसारा ❀ काल सर्व संहारनहारा
रोगी मरै बैद्य मरि जाई ❀ स्त्री पुरुष मरें सब राई
राजा प्रजा गुणी सब मरैं ❀ देवरु दैत्य जन्म सब धरैं
मरिहैं गँधरब यक्ष अपारा ❀ चांद सूर्य मरिहैं अवतारा
सिध संन्यासी मरिहैं भारी ❀ मरिहैं राजा रङ्क भिखारी
जहँवा जन्म मृत्यु है तहँवा ❀ दुख सुख सब एकै सँग आवा
यहै बात जब भीषम सुना ❀ सुनताहि हिरदय में तब गुना

दो० शरशय्या महँ भीष्म कह, सुनो धर्म नरनाह ।
जहँ संयोग बियोग तहँ, यही भेद जो आह ॥

पानी बिम्ब देख संसारा ❀ नाश होत नहिं लागै बारा
होतव्यता जो कर कर्तारा ❀ कहा तुम्हार रहब संसारा
जन्मे बीर रूप जग जाना ❀ होती मीच पतङ्ग समाना
रात्री दिन षटऋतु परमाना ❀ रचना रचते बिबिध बिधाना
पुनि पुनि आय करै पैसारा ❀ आवत जात न लागहिं बारा

कहैं व्यास सुनहू नृप सोई ❋ आशा छोंड़ि सकत नहिं जोई
औषध विद्या मन्त्र अपारा ❋ अन्न सेज औ बलि बिस्तारा
घना कुटुम्ब बहुत बिस्तारा ❋ अन्तकाल को राखै पारा
काहूकेर पुत्र पितु नाहीं ❋ भार्या भगिनी मातु न आहीं
जैसे पथिक चलै मग माहीं ❋ तैसे जक्त माय सब आहीं
एकहि संग रहै परिवारा ❋ अन्तकाल को देखनहारा

दो० कौन पन्थ कै गवन है, पाव न कोई चाह ।
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा ❋ घरी रहट जानौ संसारा
जैसे कर्म जौन छल करई ❋ सो प्रकार जग भुगते फिरई
मायाजाल कपट मन बन्दा ❋ सब घट पूरण बालगोबिन्दा
यहि से तरे नाम इक धाई ❋ यज्ञ ध्यान मनसाफल पाई
बिना भक्ति बिष्णुहि को देखा ❋ कोटियज्ञ औ धर्म अलेखा
पूर्वज पाप सोय फल पावै ❋ धर्मपन्थ से सो सुख पावै
गङ्गासुत तब कहत बखानी ❋ श्रुति इतिहास पुराण बखानी
अत्री कहेउ जनक के पाहाँ ❋ जनक यज्ञशाला के माहाँ

दो० स्वर्ग मृत्यु पाताल सब, सृजा प्रजापति ताहि ।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि ॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई ❋ पृथ्वी भारन व्याकुल होई
राय कहा परजापति ताहाँ ❋ पिंग भये भारत रणमाहाँ
दिनदिन सब बाढ़ी परिजाना ❋ परजापति से प्रथम बखाना
क्रोधरुद्र के नैन निहारा ❋ कन्या एक भई अवतारा
ब्रह्मा पाँह कहे सब बाता ❋ आज्ञा कहो कवन सख्याता
सबै जक्त अब करौं सँहारा ❋ तबै प्रजापति कहा बिचारा
मृत्युहि नाम प्रजापति भाखा ❋ अम्बु बृद्ध कै को गुणराखा
चौंसठ रोग तुम्हारे सङ्गा ❋ तव परिवार करौं गुण भङ्गा

सूर्य बदन यम को परमाना ❀ परम अधर्म बिचारहु नाना
दो० चित्रगुप्त सँग यम रहैं, मृत्युलोक संचार ।
सुन्दा गृहस्थीरयम, करत जगत संहार ॥
दण्डअस्त्र तब ताको दीन्हा ❀ यही प्रकार प्रजापति कीन्हा
शिव विद्याधर हैं परमाना ❀ गँधरब किन्नर सुर तब जाना
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा ❀ उपमा कौन कहै को पारा
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा ❀ सो सूरज नहिं तहाँ पसारा
योगी सिध संन्यासी जेते ❀ पश्चिम द्वार जात हैं तेते
पूर्व द्वार उत्तम अस्थाना ❀ तहाँ जायँ जो सुनौ बखाना
कन्या भूमी अन्न को दाना ❀ पूर्व माहिं सो पावहिं जाना
सत्यवन्त दाया परमाना ❀ अतिथि सेव परहित सनजाना
देवास्थल पुष्कर जो निकरै ❀ पूर्व द्वार से सब संचरै
तीनद्वार के भेद बखाना ❀ जौनकर्मकरि जेहिदिशिजाना
दो० उत्तम कथा प्रकाश किय, सुनो धर्म कर राव ।
जवन कर्म करता जवन, तहाँ तवन सो पाव ॥
अब सुन दक्षिणमार्ग भुवारा ❀ तहँ पर हैं चौरासी धारा
रात्रि दिवस है तहँ अँधियारा ❀ सात लाख औ तीनहजारा
हैं यमदूत तहां निहभीरा ❀ देखत सबै कुरूप शरीरा
लोहदण्ड सब के करमाहीं ❀ रहै द्वार यम रूप कुआहीं
पापी जीव तहाँ दुख पावै ❀ राजा हम से कहत न आवै
बहै नदी बैतरनी ताहाँ ❀ रक्त मांस औ जल औगाहा
नाना कृमी बिकट शरीरा ❀ जल सरिता सोहै गम्भीरा
तहँ जो जात सुनो सो काना ❀ भीषम भाषैं शास्त्र प्रमाना
परदारा परद्रव्य चोरावै ❀ मिथ्या सदा पाप तेहि भावै
स्त्री ब्राह्मण गोहत्या करहीं ❀ मातपिता गुरु चित्त न धरहीं
दो० नगर पापकर भज्जता, दुख देवै संसार ।
गुरुजन से हिंसा करै, तहाँ करत पैसार ॥

इनको तौ यमदुत लै जाई ❀ जहाँ धर्म यम राजा अहई
चित्रगुप्त तहँ करत विचारा ❀ जाको जस पावे संसारा
पावन शमन नदी गम्भीरा ❀ ताते दाहत विवश शरीरा
लोहदण्ड मारैं यम ताही ❀ ऐसे कष्ट देत बहु आही
ऐस प्रजापति सिर्जै ताही ❀ कर्मज फल सब भुगतें जाही
सब विष्णुहि माया जो अहै ❀ नानारूप भीष्म तो कहै
जन्मत संग मृत्यु अवतारा ❀ यहिते शोच न करो भुवारा
कर्म के बश नर पाव कलेशा ❀ छूटै न कोटिकल्प परवेशा
श्रीकृष्णपद चिन्तन करै ❀ कर्म बन्ध से सो उद्धरै

दो० याहि बिचारो भूपते, तजो शोक संताप ।
श्रीपति कर्ता सबन के, नाना पुण्यरु पाप ॥
ताते सब कर्ता हरी, करन करावन सोय ।
इन्हीं चरणलवलावही, इनसे और न कोय ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाशान्तिपर्वभीष्मदर्शधर्मराजा
पावनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा ❀ तजौ शोक शत करहु काजा
सो जस राजा कथा सँचारा ❀ भरत नाम राजा संसारा
हरि बिन और एक नहिं जाना ❀ महाराज भक्ती भगवाना
राज्य कियो बहुदिन बिस्तारा ❀ बन्धु राज्य दे बन पगु धारा
कियो प्रवेश महाबन नृपती ❀ निरत भक्तिपथ कृष्णकिगती
एक दिवस अस्नान के काजा ❀ सरवर मांह गये तब राजा
गर्भवती हारिणी यक आई ❀ नीर पियन को जल में जाई
पूरण गर्भ मृगी सो आहै ❀ माया बिष्णु सुनो जो आहै
पीकर नीर चली शिर नाई ❀ प्रसव समय तो आय तुलाई
उदरपीर जो भई अपारा ❀ प्रसव भई सो सुनो भुवारा
बालक एक नदी के तीरा ❀ राम चरित्र देख रणधीरा
दो० बिधि के रचना ऐसिहै, मृगी तजा तहँ प्रान ।

देख भरत राजा तहां, सर में करत स्नान ॥
देख नृपति शिशु परा अनाथा ❋ तबहिं ताहि पाले नरनाथा
तृण अरु नीर देत आहारा ❋ बहुत प्रीति कै पाल भुआरा
समय विचारि मृगा बन आये ❋ सुत समान तो पालहि राये
कितने दिवस बीति तब गये ❋ यक दिन मृगा भाग बन गये
पाये सँग जो मृग के तहां ❋ रहे परम सुख सँग में जहां
राजा हृदय महादुख आना ❋ ढूंढ़त नहिं पायो पछताना
कवन लेगयो मोर कुरङ्गा ❋ ताके हेतु सदा मन भङ्गा
कितने दिवस शोकमहँ गयऊ ❋ अन्तकाल राजा को भयऊ
तब यमदूत गये लै ताहीं ❋ हिरणा शोक हेतु मन माहीं
दो॰ कै विचार तब धर्म नृप, दीन मृगा अवतार ।
मृग स्वरूप में जो रहै, कौडलपुरी मँझार ॥
सहसलाख मुनिनेरे तो जाना ❋ कारण कहा ऐस भगवाना
तुम चेतौ माया अवतारा ❋ मृगारूप यह हेतु तुम्हारा
पूरब बात भयो तब ज्ञाना ❋ जलतृणतजे किया नहिं पाना
ऐसा शोक मृगा तज प्राना ❋ पाया तब दर्शन भगवाना
आगे जन्म भये अवतारा ❋ तब सो राजहि भयो उधारा
सगरे शोक काल के फांसा ❋ ताते भूप करै हरि आसा
हरता करता तारत हरि है ❋ तीनों लोक बखानत हरि है
चारो वेद प्रजापति धारा ❋ ध्यान धरे हरि पावन पारा
शेष सहसमुख गुण जो गावै ❋ नारद कपिल सनातन ध्यावै
मुनी करें तप जा पद आशा ❋ करै अनन्त अखण्ड प्रकाशा
दो॰ सो हरिबिना सुजक्त महँ, दूसर नाहीं आन ।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अंग्रित परमान ॥
सहस नाम तें धर्म न आना ❋ सहसनाम गाङ्गेय बखाना
चारि वेद में सार जो आहै ❋ सहसनाम से पाप न राहै
राम रमहि रामं रम रामा ❋ राम सहसन नाम समाना

राज स्वरूप व्याक भय नाहीं ❀ छूटे व्याध धर्म पद जाहीं
करि संक्षेप बखाने नाना ❀ सहस नामके महिमा श्राना
नाम अनन्त अन्त को जाना ❀ एक नाम से पद निर्बाना
पञ्च नाम से द्वादश नामा ❀ अष्टाविंश नाम है ज्ञाना
सत्य नाम सहसन में जाना ❀ पुनि अनन्त को नाम बखाना
परमतत्त्व अह नाम जो एका ❀ सुमिरहिं सन्त जो हृदयबिबेका
परमधर्म को सार है सोई ❀ नाम सहस्र पढ़े जो होई

दो० राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधा रवन ।
बिष्णु गोपाल शारंगधर, गोबर्द्धनधर जवन ॥
रावणारि कंसारि हरि, भक्तबन्धु भगवान ।
ध्यानकरौ मनजानिधरि, मनसाबाचा जान ॥
सर्वसार जे जगपती, इतना नाम बखान ।
नाम भजे पातक हरत, भूप सुनौ दै कान ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाशान्तिपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

राजा सुनौ कथा तौ अहै ❀ पुनि गङ्गासुत राजहि कहै
ब्राह्मण क्षत्री बैश्य सोहाई ❀ चौथे शूद्र बर्ण सुन राई
गङ्गासुत तब कहैं बखानी ❀ इनके धर्म नीति सज्ञानी
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना ❀ बिद्या बेद सहस्र प्रमाना
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना ❀ बेद प्रमाणहि जवन बखाना
योग न जाप न औ अध्यापन ❀ उद्यापन औ धर्मपरायन
इत्यादिक ब्रह्मबर्ण के धर्मा ❀ गङ्गासुत भाष्यो यह मर्मा
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना ❀ ब्रह्मज्ञान ब्रह्म परमाना
सुन्दर जन्म जातु संसारा ❀ संस्कार से द्विज संचारा
बेद अभ्यास बिप्र सुजाना ❀ ब्रह्म जनम से ब्राह्मण जाना

दो० सन्ध्यातर्पण बिबिधबिधि, बेद पाठ परमान ।
परमकर्म यह बिप्र का, भीषमकहाबखान ॥

क्षत्री गौ ब्राह्मण का पालै ❀ मन्त्री प्रीति शत्रु संहारै

दुर्भिक्षा जु अन्न कर दाना ❁ गाढ़ेशरण न जाय जो आना
रण में शूर धर्म मन माना ❁ है क्षत्री जो धर्म बखाना
बैश्य बणिज कृषि को संचारी ❁ द्विज बैष्णव पूजा अनुसारी
सदा धर्म जो यहै बखाना ❁ चौगुण बर्ण धर्म जग जाना
सुन्दर धर्म सुनै सब कोई ❁ तीन बर्ण को सेवत सोई
आलस तजो भक्त भगवाना ❁ चौगुण बर्णरु धर्म बखाना
आपन आपन राखहि धर्मा ❁ चार बर्ण के याही कर्मा
सृष्टि होय है केहिन न सेवा ❁ त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा
कै बीचार परै गृह माहीं ❁ तब तासू गृह भोजन खाहीं
राजधर्म जो सुन बिस्तारा ❁ मिथ्याबाद दण्ड नहिं सारा
धन्य प्रजा जो लोभ न करही ❁ दानरु धर्म यज्ञ मन धरही
जीति बाहुबल यह संसारा ❁ पालहु प्रजा पुत्र परकारा
बचन प्रतिज्ञा अहै प्रमाना ❁ भूप यही नित पाल सुजाना
मन्त्री दिश न धरै बिश्वासा ❁ प्रीति प्रतीति बचन परकासा
गऊ ब्रह्म जो बिष्णुस्वरूपा ❁ पूजा करब एक भाति भूपा
तीन दिना के सुनब पुराना ❁ राजधर्म सब सुनहु प्रमाना

दो० देव दोष मिथ्या नहीं, रहही रैन सचेत ।
राजनीतिका धर्म अस, रिपुसे जीतब खेत ॥

रानी धर्म पती कर सेवा ❁ यह बृत्तान्त सुनहु जो भेवा
सेवक धर्म पती सेवकाई ❁ बिनु बोले सबकर अधिकाई
ताते धर्मज सब सुख पावै ❁ गृहद्वारा बिवाह करवावै
दशहू अङ्ग गुरूका देई ❁ सेवक धर्म कहै पुनि तेई
गृह को धर्म अभ्यागत पूजा ❁ अन्नदान से आन न दूजा
बैष्णव धर्म यकान्तकै पाऊ ❁ लीन ज्ञान परसंग उपाऊ
लै संन्यास तपस्या करै ❁ भीषम राजा यह संचरै
सबहि धर्मसार यतनाऊ ❁ अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ

दो० परहिंसा परकर्म तजि, दयावन्त हित होय ।

क्षुधार्थी अन्नदान दे, यहिसे धर्म न कोय ॥

गुरु भक्ती पर नाहीं भक्ती ❀ भक्ती बिना जात तनु अगती
बिष्णुपरे सुर और जु नाहीं ❀ गुरुबिष्णु सम कहिये ताहीं
गङ्गा परे नदी नहिं कोई ❀ एकादशि सम ब्रत नहिं होई
बेद नाम जो साम प्रमाणा ❀ इन्द्रियनाम न रूप प्रमाणा
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा ❀ ताको कहिये उत्तम कर्मा
क्षत्री होय शोच का करहू ❀ ज्ञान हमार हृदय में धरहू
रण में क्षत्रि उपस्थित होई ❀ बन्धु पिता पुत्रहु नहिं कोई
ताते शोच तजौ परमाना ❀ राजा सुनिये करौं बखाना
साहसरण क्षत्री को कामा ❀ भजो चरण तुम श्रीघनश्यामा
हरिको चरण सदा मन लावो ❀ भवसागर तर निश्चय जावो

दो० पिता बन्धु सुत क्षत्रिको, रणमें कौन बिचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषमकर उपचार ॥
धर्म एक सँग होत निज, और संग नहिं कोय ।
यहिते वह मन राखिये, धर्म न छोड़ो सोय ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाछन्दकृताशान्तिपर्वतृतीयोऽध्यायः ॥३॥

वैशम्पायन कहैं बिचारा ❀ भीषम भाषे धर्म भुवारा
ब्रतन शिरोमणि एकादशी ❀ तुलसी पुष्प तीर्थ बनरशी
ताको राजा सुन बिस्तारा ❀ दुर्लभ जन्म जो कह संसारा
एकादशिकी महिमा याहै ❀ भीषम धर्मराज सों कहै
दैत्य मुरासुर अति बल भारी ❀ ताते हरि माया संचारी
युद्ध माहिं जीती नहिं पारा ❀ मुरा असुर दानव संहारा
हरि को नाम मुरारी तबसे ❀ हरिबासर जु जन्म है तबसे

दो० अनगिन माया बिष्णुकी, योगमाया संचार ।
एकादशि ब्रत महिमा, सो तो सुनो भुवार ॥

अवधपुरी इक मङ्गल राजा ❀ बिष्णुस्वरूप करै सो साजा

संभावती तासुकी रानी ❀ धर्म पुत्र गत शूर सुज्ञानी
एकादशि व्रत सो संचारा ❀ ताको राजा सुनो बिचारा
नृप के पुष्प बाटिका आही ❀ तोरे पुष्प उर्वशी जाही
मालाकार पती का दहै ❀ धर्म प्रमाण सभा तो गहै
राजा पहँ तो बात जनाये ❀ तब राजा देखन को आये
तब उर्वशि सब अर्थ सुनाये ❀ हमें सुरपती यहां पठाये
पुष्प हेतु आये तो कामा ❀ पतिव्रतरत धर्महि के कामा
एकादशि को पुण्य जो चहिये ❀ तबहि बिमान अमरपुर जइये
राजा पूछे सब व्यवहारा ❀ कहो भेद नाहीं संसारा

दो० दशमी एकहिबेर नृप,नियम करै आहार ।
एकादशिउपवास व्रत, शुचितनु रूपसवार ॥

एकादशि व्रत रहै उपासा ❀ प्रात द्वादशी होत प्रकासा
करि अस्नान अन्न दे दाना ❀ एकोतर से सेर बखाना
यहिके मांह चूट जो होई ❀ एकादशि निसरावा देई
बिना पीत उछरंग न करै ❀ ताको पुण्य सर्व को धरै
ताको पुण्य सो पावहि तबहीं ❀ जाय बिमान स्वर्गको जबहीं
तो राजा को जगमो नाहीं ❀ यहि प्रकार को जानत आहीं
खोजत एक तु भई उपाई ❀ रजक एक नगरी में अहई
तासु नारि सो रही कोहाई ❀ एकादशि को अन्न न खाई
क्रोध बिबश सो रही उपासा ❀ व्रतपूरण द्वादशी प्रकासा
तिन चरणन से छुये बिमाना ❀ तबहि बिमान तु स्वर्ग उड़ाना

दो० यहगतिदेखत भूपमणि, एकादशि परमान ।
पुत्र समान प्रजापती, पालत रूप सज्ञान ॥

दुखी दरिद्र कोइ पुर नाहीं ❀ धर्म बृद्ध सो राजा माहीं
एकादशि बिन और न जाना ❀ और देव नाहिं पूजत आना
दशमी घर घर डोंड़ि बजाई ❀ कहै दूत सब कहँ हँकराई
दशमी संयम के उपहारा ❀ हरिबासर त्यागी संचारा

एकादशी जागरण करै ❋ प्रातस्नान द्वादशी धरै
करै अनेक अन्न जो दाना ❋ पुर में गृह प्रति करै बखाना
ऐसी बात नगर संचारा ❋ गज बाजी नहिं पाव अहारा
वृद्ध युवा पशु नर अरु नारी ❋ बालक दूध न दे थनहारी
चारौं वर्ण प्रजा जे रहै ❋ पशु अरु जीवजन्तु जो अहै
पापक नगर नहीं लवलेशा ❋ ऐसा व्रत सब नगर प्रवेशा

दो० पशुश्वानादि गजादितक, और जीव चण्डार।
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिंयमलोकसँचार॥

एकबार कौतुक तौ भयऊ ❋ यक चण्डाल मृत्यु जो भयऊ
पापी महा रहा अपराधी ❋ यम के दूत चले लै बांधी
बिष्णुदूत तत्क्षण तहँ धाये ❋ यमदूतन को दूर कराये
बहुप्रचार से गये जु ताही ❋ जीवहि बिष्णुदूत लै जाही
यम के दूत भाग सब राई ❋ यमराजा सन खबरि जनाई
बिष्णुदूत मारे प्रभु काजा ❋ लै चण्डाल गये सुन राजा
बन्ध छोरिके हमका मारे ❋ जीवहि लै बैकुण्ठ सिधारे
रथ चढ़ाय लैगे पुनि सोई ❋ यम से दूत कहैं अस रोई
भागे हम लै आपन प्राना ❋ धर्मराज तुम सुनौ बखाना
धर्मराज दूतन दुख देखी ❋ अपने मन में बिस्मय लेखी

दो० दूतहिं सँगलै भूपमणि, ब्रह्मलोक पगढार।
ब्रह्मपास तौ जाय तब, कहा बचन संचार॥

मोर काज यह पद से नाही ❋ जेहि मन मानै दीजे ताही
कारण तासु सुनौ परमाना ❋ अवधनगर चण्डाल महाना
ताको लेन दूत सब गयऊ ❋ बिष्णु के दूत महादुख दयऊ
तब ब्रह्मा लागे अनुसारन ❋ सुनौ धर्म कहताहौं कारन
एकादशी बिदित संसारा ❋ महापातकी पावत पारा
एकादशी क्षुधा जो सहै ❋ ताहिके अनल पाप सब दहै
तोर दूत तहँ जाय न पारा ❋ एकादशी बिष्णु अधिकारा

सुना बात ब्रह्मा के जाना ❀ धर्मराय को आप बखाना
मोरा इह पद नाहीं काजा ❀ कहे बात ऐसे यमराजा
दो० तब ब्रह्मा कह बात यह, सुनौ धर्म के राव ।
करत पक्ष तव कारणे, रचिये एक उपाव ॥
नारद कहा नारि औ नारा ❀ ताते मोहित भये भुआरा
नयननमो ब्रह्मा को जाना ❀ सर्व देव को अंश प्रमाना
सिर्जा नानारूप अपारा ❀ लै ब्रह्मा तामें जिव डारा
सब पर एक किये परधाना ❀ मोहनी रतीरूप परमाना
मोरी बात अवधपुर जाई ❀ रुपमांगत को धर्म नशाई
लेकर पान सुकन्या जाई ❀ नगर निकट ठहरी बन आई
राजा तहां अहेरहि गयऊ ❀ तहां भेट कन्या से भयऊ
कामवश्य तो राजा मोहै ❀ कह कत मात पिता को अहै
तब कन्या कह बात बिचारी ❀ यहि बन में है बास हमारी
दो० सुरकन्या देवानुग्रह, भया मोर अवतार ।
ब्याह नहीं भा भूपमणि, रहत बनै मंझार ॥
राजा काम मोह के कहई ❀ अस स्वरूप जे बन में रहई
ब्याह न करत सो कौने काजा ❀ कन्या कहत सुनो हो राजा
मनबाञ्छित बर जो मैं पाई ❀ सोई कन्त सत्य समुझाई
राजा कहै चहो का सोई ❀ पचैं देव जो मन में होई
अवधनगर जो देश अनूपा ❀ मैं राजा रुपमांगत भूपा
अपने बल जीता संसारा ❀ दैत्य अनेक दुष्ट संहारा
सूरज बंश कहत मैं तोहीं ❀ आवै मन तौ बरिये मोहीं
कन्या कहा तेज मन जेते ❀ महाबली मैं चाहौं तेते
सत्यप्रण जो राजा कहिये ❀ तब हम राजा तुमको बरिये
सत्य हमार संग नरपती ❀ तौ हम मानी ताकहँ पती
दो० जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजै मोहिं ।
यही शपथ करिये नृपति, तबहम बरिये तोहिं ॥

राजा सत्य कियो परमाना ❀ कन्या तबहीं कीन पयाना
केतिक दिवस रहे तब राऊ ❀ मोहित भये मोहनी भाऊ
दशमी राजा संयम कियऊ ❀ एकादशि व्रत तब ते भयऊ
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े ❀ तबहिं मोहनी बोलत गाढ़े
खावहु पान भूपमणि राऊ ❀ तब राजा ताकहँ समझाऊ
एकादशि का संयम आहे ❀ मोरे हेतु नगर सब राहे
तब मोहनी कहत रिसियाई ❀ यह तो कन्त मोहिं नहिं भाई
राजा भय पुरबासिन सुना ❀ सुनत बात सबही मनगुना
दानरु यज्ञ होम के कर्मा ❀ जानो यज्ञराज को धर्मा
संन्यासी बैरागहु जेते ❀ व्रत उपवास कर्म हैं तेते

दो० पान खाइये भूपमणि, तजहू व्रतकर बान ।
परबशते यह खाइये, दीजै हमको दान ॥

राजा तब मोहनि से सुना ❀ सुनत बात सबही मनगुना
ऐसी बात बहुरि जनि कहो ❀ जो हमार जिव राखा चहो
तुमहूं व्रत करिये मनलाई ❀ लेहु अभयपद हरिपुर जाई
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ ❀ जाना भूप सत्य अब गयऊ
पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा ❀ देवआनि अब कहो भुआरा
एकादशी तजो तुम राजा ❀ जो चाहत हो सत्य सुराजा
नहिं तो देव पुत्रकर माथा ❀ नहिं तो व्रत तजहू नरनाथा
राजा सुनिके चकित भयऊ ❀ बिनती बचन कहे तब लयऊ
मानत नहीं मोहनी बाता ❀ राजहि शोक भयो तब गाता
निज रानी से जाय जनाई ❀ धर्मांगत पुत्रहु सुनि पाई

दो० पुत्र कहा सो बचन तब, सुनौ सत्य तुम तात ।
अन्तकाल पै देखहू, यही सत्य संघात ॥

धर्मांगत जु बचन तब भाखो ❀ मम मस्तक देकै व्रत राखो
बहुत प्रकार पुत्र समझावा ❀ रानी राजा के मनभावा
एकादशि व्रत करि अस्नाना ❀ पिता पुत्र दीन्हों बहुदाना

पुन पद्म आसन करि जैसे ❀ धरे ध्यान योगी जन जैसे
तहाँ मोहनी कहे बखानी ❀ संभावती केशधरि तानी
देव सबै तहँ देखन आये ❀ तब राजा कर खड्ग उठाये
आसन डोलेव शंकर जाना ❀ द्विजस्वरूप करिगे भगवाना
दिव्य एक रथ आयो ताहा ❀ दर्शन प्रकट दियो नरनाहा
नगरहु सहित परम पद पाये ❀ अन्तरिक्ष राजा मनभाये
तब मोहनि को श्रीभगवाना ❀ शाप्यो नरकग्राम परमाना

दो० मम भक्तन पर संकट, कीन तहाँ बरजोर ।
तातेअगति तुम्हारि भइ, नहीं तोर उद्धार ॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई ❀ तब राजा पहँ बिनती लाई
क्षमहु मोर दोष नरनाहा ❀ मम उद्धार करो जगमाहा
तब नृप हरि से बिनती लाई ❀ देव दयापति श्रीयदुराई
शाप अनुग्रह करु नरनाथा ❀ रहिहै तौ यह मोरे साथा
तब प्रसन्न भाषे भगवाना ❀ जाहू यन्त्र होव परिमाना
द्वादशि में जो पारण करै ❀ और शयन जो नींद संचरै
ताके व्रतहि धर्म बहु होई ❀ तुमका व्रत ह्वैहै पुनि सोई
तबहिं मुक्ति होई तव नारी ❀ जग बैकुण्ठपुरी अधिकारी
यह बरदान जो मोहनि पाई ❀ पुरी सहित नृपनगर सिधाई
भीषम भाषे पद्मपुराना ❀ धर्मराज सुनतहि सुखमाना

दो० एकादशी महातम, भाषे सब गांगेय ।
वैशंपायन कहत भे, जनमेजय सुनुभेय ॥
हरिबासर उत्तम सुव्रत, सर्व पाप क्षय होय ।
नाम सदा जो गावहीं, त्यहिसमान ना कोय ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वण्येकादशीकथावर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जनमेजय सुनिये यह काना ❀ धर्मराज से भीष्म बखाना
बनस्पती में तुलसि बखानी ❀ ताकी महिमा कह को जानी

तुलसी रोपहि पूजहि ताही ❀ प्रात दर्श से पाप नशाही
तुलसी रानि बिष्णु है राऊ ❀ करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ
एक पात्र राखे यदुराई ❀ जन्म जन्म के पाप नशाई
करै प्रदक्षिण नामस्कारा ❀ कबहूं यमपुर नहिं पैसारा
शीश नवाय पत्र शिर धरही ❀ तनुमेंके सब पातक हरही
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा ❀ अन्धमार्ग उजियारा कीन्हा
तुलसी दल पूजे भगवाना ❀ शालग्राम शिला परमाना
सदा बास बैकुण्ठहि पावै ❀ तुलसी महिमा कहत न आवै

दो॰ सुमिरण तुलसी मन्त्रको, लह बैकुण्ठ स्थान ।
धर्मराज के आग्रह, भीषम कहे बखान ॥

शालग्राम रूप हरि जोई ❀ तुलसी दल संतुष्टहि होई
पूरब दैत्य जलन्धर नामा ❀ तासु त्रिया बृन्दा गुणधामा
देवन संग महारण होई ❀ दैत्यहि जीतिसकै नहिं कोई
बृन्दा पतिब्रता अवतारा ❀ आप शरीर दैत्य कर धारा
तब हरिमाया करि बिस्तारा ❀ तासु धर्म नहिं दैत्य सँहारा
बृन्दा पहँ यह माँगेव हरी ❀ कै छल जाय नारि सो करी
रतिदानहि जब बृन्दा दयऊ ❀ तब रणमध्य दैत्य बध भयऊ
तब बृन्दा जाना सब भेऊ ❀ पाहन शाप हरी को दयऊ
दैत्यहि गति कारण तब नारी ❀ तब हरिपाहीं कहेउ बिचारी
हरि ने कही कोटि अवतारा ❀ पाहन खण्डव देह हमारा

दो॰ पत्र तोर मम पूजा, तैं तरिहै संसार ।
शालग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार ॥

सो तुलसी की ऐसी महिमा ❀ शंकर शेष बखानत हियमा
तुलसी माला जप जो करै ❀ ताहि फूल सच्यत जो धरै
शालग्राम शिला को जोई ❀ तुलसीदल से पूजत कोई
उत्तम पूजा कोइ करावै ❀ अन्तबास बैकुण्ठहि पावै
तुलसी मजन हरिके पासा ❀ भीषम कहे बात परकासा

तुलसी गृह मज्जन जो करै ❁ उत्तम मारग सो पगु धरै
तुलसी माहँ अर्घ्य जल देई ❁ अन्तकाल सुख पावैं तेई
तुलसी बास बदन परकाशै ❁ तौने बास पाप सो नाशै
तुलसी गेह द्विजन जो देई ❁ उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो लेई
तुलसी मृत्यु समय जल पावै ❁ पापी है बैकुण्ठ सिधावै

दो० तुलसी महिमा भाष्यऊ, धर्मराज सुनु कान ।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान॥

आगे सुनो धर्म के राऊ ❁ तीरथ माहँ बनारस भाऊ
जाति पत्र दै पूज महेशा ❁ यमके नगर न करु परवेशा
श्रीफल केर पत्र महँ सोई ❁ शिवा शम्भु संतोषित होई
शिव के लोक बास सो पावै ❁ काशी मध्य जु प्राण गँवावै
जो काशी में करवट देई ❁ मन वाञ्छित फल पावै सोई
जो काशी में करतो बासा ❁ यमके दूत न आवहिं पासा
जो काशी में नर कहुँ मरई ❁ तौ कैलास गमन सो करई
जो काशी में धरही ध्याना ❁ हो शिवलिङ्ग रूप परमाना
जो काशी में गोधन दाना ❁ ताको फल अनन्त नहिं जाना
जो काशी तीरथ नृप कहै ❁ हर त्रिशूल पै काशी अहै

दो० जो काशी महँ बास कर, सहित महातम राव ।
शिवस्वरूपतेहि अन्त है, यमके नगर न जाव॥

तरे पतित बहु गङ्गा पावनि ❁ देवमुनिन के शोक नशावनि
कोटिन लिङ्ग करै परकासा ❁ सदा रहत बासहि कैलासा
महिमा ताहि कहत ना आवै ❁ तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै
यमके द्वारन परी पुकारा ❁ काशीबास वर्ण अधिकारा
हरपूजा महिमा जो काशी ❁ बहुत प्रकार ब्रह्म परकाशी
धन्य धन्य लक्ष्मीहि जनावै ❁ संतत वृद्धि शत्रुक्षय जावै
रणमें जेतिक होत प्रकाशा ❁ तनु ते व्याधि होत है नाशा
शिवस्वरूप लिङ्गक परकासा ❁ अन्तकाल तेहि शिवपुरबासा

हर को बास जो काशी अहई ❀ भै कैलास मृत्युपुर रहई
दो० काशी का माहात्म्य यह, तुमसों कहा बुझाय ।
चेतौ धर्मज धर्म नृप, सेय चरण यदुराय ॥
औरो धर्म सुनौ नरनाहा ❀ कार्त्तिकमास नहान जो चाहा
औ बैशाख स्नान प्रमाना ❀ ताकी संख्या सुनिये काना
आठमास कार्त्तिक अस्नाना ❀ दश बैशाख स्नान प्रमाना
मास मास यहिबिधि जो करही ❀ गो सेवा औ दान सँचरही
पञ्चरतन पट पण्डादाना ❀ करे होम जो शास्त्र बिधाना
प्रतिव्रत मास यही परकारा ❀ ताके फल जो सुनहु भुआरा
नृप होवे सुधर्म परमाना ❀ पावै सुख जन्महि भरि नाना
नृप धर्महि तजि पापउ धावै ❀ नरक बास ताकारण पावै
दो० कार्तिक अरु बैशाख जो, ताको सुनौ बखान ।
भीषम भाषे नृपति से, पद्मपुरान प्रमान ॥
औरो धर्म सुनो दे काना ❀ कन्या अरु कन्या को दाना
ताके फल कत कहौं बुझाई ❀ बिष्णुलोक सन्तत सुखदाई
कन्या की ले धान्य जो कोई ❀ महापातकी जग में होई
ताकी गती कल्पभरि नाहीं ❀ धर्म कथा सुनहू मम पाहीं
गऊ दूध घृत मधु को दाना ❀ जाय स्वर्ग सो दिव्य बिमाना
दानधर्म को यह ब्यवहारा ❀ धर्मव्रत अब सुनौ भुआरा
शशी रवी अष्ट उपवासा ❀ ताके फलहि पाव कैलासा
धर्मव्रत जो यह परमाना ❀ ताके फल को करो बिधाना
दो० नानाधर्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखान ।
धर्मराज सुनते सबै, ताते पाप नशान ॥
सब पुराण परसंगतौ, भाषे तहँ गाङ्गेय ।
जो यह मत प्राणी चलै, सो न जन्म जगलेय ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

औरो भीषम कहा बखानी ❀ गङ्गा को माहात्म्य सुजानी
कन्दु नाम मुनि एकहि रहैं ❀ ताकी कथा भीष्मजी कहैं
सो गृह तज द्विजपहँ मन भयऊ ❀ पृथ्वी की प्रदक्षिणा दयऊ
नाना तीरथ भर्मत अहै ❀ केवल प्रीति विष्णुके रहै
धर्म रूप विष्णूके भगती ❀ चाहै सन्त होन नहिं अगती
दो० जेतिक तीरथ पुहुमि में, बन सर नदी पहार ।
भर्मत भर्मत जगत में, कीरति सब संसार ॥
चन्दरभाग नदी पर गयऊ ❀ चन्द्रकेतु राजा तहँ रखऊ
मण्डप एक अहै अनुपामा ❀ पञ्च वर्ष तहँ कर बिश्रामा
बिकट रूप देखा द्विज जाई ❀ महाशोक सो ब्राह्मण पाई
पांचौ कहैं क्रोध से बाता ❀ कहौ नाम सोई सख्याता
द्विज ने कहा कन्दु मम नामा ❀ कवन जाति है कितको धामा
सुनत बचन तब पांचौ कहैं ❀ पांचौ जना प्रेत हम अहैं
सूचीमुख शृंगीकर आहै ❀ जो यहि के बर ईप्सित काहै
दो० यह चारौजन प्रेत हरि, पञ्चक लेखक नाम ।
जौने पापहि प्रेत भे, तासु सुनौ परिणाम ॥
वर जो शीत प्रेत परधाना ❀ प्रथम कही ये आप बखाना
सत्य बात को झूंठ कहाये ❀ ताते महाकष्ट द्विज पाये
तो नहिं पाप प्रेत अवतारा ❀ परयोषित है नाम हमारा
सूचीमुख तो अतै बखाना ❀ मेरी बात सुनौ यह काना
ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा ❀ कर अपमान गर्बऊ पावा
वहां जाव जहँ यज्ञ सु होई ❀ ऐसा झूंठ कहा हम सोई
आशा देके विप्र बोलावा ❀ प्रेत जन्म ताही सों पावा
सूचीमुख ताते अभिधाना ❀ अब भृङ्गीकर करैं बखाना
अतिथि जु मांगा मोपहँ दाना ❀ क्षुधावन्त हम कीन बखाना
रहत अन्न मैं नाहीं दीना ❀ प्रेतजन्म ताही सों चीन्हा
दो० ठाढ़ो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन ।

क्षुधावन्त भो विप्रबर, प्रेत तबहिं कहि लीन ॥
लेखक कहता बात बिचारी ❀ ब्राह्मण सुन अपराध हमारी
लेखक कह माया भर्माऊ ❀ क्षुधावन्त तो यक द्विज आऊ
ठाढ़ विप्र आशा तब कीन्हा ❀ ताको मैं कुछ उतर न दीन्हा
पहर एक ठाढ़ा है रह्यऊ ❀ भा निराश मुखफिरिकै गयऊ
तौने पाप प्रेत अवतारा ❀ ताते लेखक नाम हमारा
वहिकै बात सुनौ परवेशा ❀ द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा
गुरु नारायण माना नाहीं ❀ विद्या पात्र गर्व मन माहीं
गुरू विप्र माना नहिं राई ❀ प्रेत कि योनि ताहि से पाई
सुनि पांचो जन केर उपाई ❀ बिस्मय होय कहा द्विजराई
काम भखनहो जगत तुम्हारा ❀ ताते देह धरेव संसारा
दो॰ लज्जावन्ताहि पञ्चजन, कहे बचन बिस्तार ।
मल मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करै अहार ॥
अन्धकार में रहन हमारा ❀ करो गोसाई मम उद्धारा
दयावन्त द्विज कहे पुराना ❀ गङ्गा केर महातम ज्ञाना
श्रवण परत पातक क्षय होई ❀ सुनत बचन तरिगे सब कोई
गङ्गा पतित पावनी अहै ❀ मृत्युलोक को महिमा कहै
एक समय सब देव उपाई ❀ बैठे सभा अनूप बनाई
विष्णु कहा शंकर से बाता ❀ पञ्चबदन रागहि सख्याता
शंकर कहेव देव से बानी ❀ धरो धीर मैं कहत बखानी
पञ्चबदन जो राग गँभीरा ❀ सबै देव धरिसके न धीरा
लिये कमण्डलु सो जल परै ❀ राग निमित्त तौ शंकर करै
दो॰ बिष्णुशरीरहि सोय जल, राख्यो ब्रह्मा जानि ।
सुनौ नृपति भीषम कहैं, गङ्गा चरित बखानि ॥
जब बलि छले त्रिपदहरि भयऊ ❀ एकजु पद आकाशहि गयऊ
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा ❀ वहिजलसे चरणोदक लीन्हा
कन्या रूप भई अवतारा ❀ जलस्वरूप प्रकटी त्रयधारा

सो गङ्गा मृतलोकहि आई ❀ सोइ महातम सुन मनलाई
पतितपावनी गङ्गा जु अहैं ❀ महापातकी पातक दहैं
सूर्यवंश तप सगर जु भयऊ ❀ साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ
महावीर सेना बलवाना ❀ अश्वमेध यज्ञहि नृप ठाना
बहुत मुनी आये सब राऊ ❀ अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ
सो सब ब्रत करिकै उपकारा ❀ श्यामकर्ण पूजा संचारा
साठि सहस्र पुत्र दल संगा ❀ परदक्षिण करि छुटा तुरंगा

दो० नाना देश जु सब जिते, कहत होय बिस्तार ।
सुरपति मन्त्र किये तब, यज्ञखण्ड अनुसार ॥

जाना इन्द्र मोर पद लेई ❀ तासे मन शङ्का मै तेई
इन्द्र आय तब मायाधरी ❀ श्यामकर्ण को लैगे हरी
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं ❀ बांधे अश्वजान कोउ नाहीं
लगी समाधि मुनी नहिं जानी ❀ गये इन्द्र निज स्वर्ग स्थानी
तब सब बहुतो खोज तुरङ्गा ❀ कहँ गो अश्व भयामन भङ्गा
तब पद चिह्न तुरंगम जाई ❀ देखा अश्व मुनी के ठाईं
तब सब खोदे पुहुमी माहा ❀ साठि सहस्र कुदारिन जाहा
देखा सबहि चोरकरि जाना ❀ मारा लात धरेव जो ध्याना

दो० छूटा ध्यान जु मुनीको, क्रोधित नयन निहार ।
साठि सहस्र समेत तो, भये पलक मो क्षार ॥

सगरभूप तब सुनि यह बाता ❀ साठि सहस्र जो पुत्र निपाता
पुत्र शोक राजा तब कियऊ ❀ महा खँभार यज्ञ नहिं भयऊ
जेठ पुत्र असमञ्जस आवा ❀ राजा ताके बेगि पठावा
कपिल मुनीसे कहौ प्रणामा ❀ हे मुनि कवन कीन हौ कामा
तब असमञ्जस गये पताला ❀ जहँवां ध्यान कपिलमुनिपाला
जाय प्रणाम कीन तेहि बनमें ❀ कपिल मुनी हर्ष तब मनमें
तब भाषा जो मुनी बिचारा ❀ बिना दोष मोहिं लातहि मारा
ताहि जरे सब राजकुमारा ❀ हम नहिं जानैं अश्व तुम्हारा

लै घोड़ा तुम जाहु कुमारा ❋ करौ जाय तुम यज्ञ सँचारा
करि परणाम अश्व तब लाये ❋ अवध नगर में तुरत सिधाये

दो० करी यज्ञ पूरण तबै, जो है तासु विधान ।
सगरनृपति अति हर्षिमन, दीना द्विजको दान ॥

यहि परकार यज्ञ तब भयऊ ❋ कितने दिवस बीतिकै गयऊ
सगरनृपति परलोकहि गयऊ ❋ असमञ्जस राज्यहि मन दयऊ
बन्धुबर्ग कस हो उद्धारा ❋ यह चिन्ता राजा अनुसारा
तब बशिष्ठ से पूछा जाई ❋ तिन गङ्गा को नाम बताई
ब्रह्म कमण्डलु में सो अहै ❋ करिकै ध्यान मुनी तब कहै
करिकै तप जो आनै पारहु ❋ कुल समूह तुरतै उद्धारहु
सुनिकै राय हेमअल गयऊ ❋ तहां जाय तपमहँ मन दयऊ
देवबाणि को भा संचारा ❋ तुम से नाहीं होव भुआरा
तोर पुत्र कै सुत अवतारा ❋ पुत्र तोर तौ करै उधारा
तब सुनि राजा गृह फिरगयऊ ❋ अंशुमान ताको सुत भयऊ

दो० असमञ्जस को अन्तभा, अंशुमान भे राव ।
केतिक दिन ये राज्यकरि, सन्तति नाहीं पाव ॥

सुनी बात यह जबहिं भुआरा ❋ मोरे सुतसे बंश उधारा
मोरे पुत्र भया तौ नाहीं ❋ ताते राज्य छोड़िकै जाहीं
राजा गये छोड़िकै राजै ❋ हेमाचल में तप के काजै
कै तप भूप तजे तब प्राना ❋ सोते धर्म रानि सब जाना
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी ❋ तब बशिष्ठ से कहा बखानी
बंश नाश ह्वैगो मुनिराऊ ❋ सुनि बशिष्ठ तब कहा उपाऊ
सूर्यबंश हित चिन्ता करै ❋ तब बशिष्ठ ज्ञानहि हितकरै
बाम बाम करु रति शृंगारा ❋ होई पुत्र करब उपकारा
रानी गृह आईं तब ताहा ❋ रति शृंगार कीन बिन नाहा

दो० रहस गर्भ आशा भई, सुनै जाय भव त्रास ।
दशममास के अन्त में, पुत्र जन्म परकास ॥

अस्थिबिहीन मांस कै देहा ❀ लै गमनीं बशिष्ठ के गेहा
मुनि कह जहां सुमारग आहीं ❀ अष्टबक्र मुनि न्हानकोजाहीं
सो मारग में राखु कुमारा ❀ होब अस्थि तौ सुनौ भुआरा
बालक लैकै तहां रखाई ❀ दूनौं रानी तब गृह जाई
अष्टावक्र मुनी तौ आये ❀ पन्थ में बालक देखन पाये
जाना मुनी करै अपमाना ❀ बिस्मय हर्ष बचन अनुमाना
अस्थिरहित वाके जो देहा ❀ अधिक बङ्क हो कहा सनेहा
जो बिन अस्थी देह सँवारा ❀ होइहौ दिव्य अस्थि सुकुमारा
कहत तासु तनु अस्थी भयऊ ❀ दै आशिष मुनि तब गृहगयऊ
रानी देखि अङ्क में लाऊ ❀ देखा बोल बशिष्ठहि ठाऊ

दो० हर्षित ह्वै मुनिनाथ तब, धर्‌यो भगीरथ नाम ।
बालदशा के अन्त तब, सुनहु सकल बखान ॥

पितृलोक केरा उपकारा ❀ वह सब कैसे होय उधारा
तबहिं भूप जो चाहै जाना ❀ मुनि बशिष्ठ तब जाय तुलाना
पाद्य अर्घ्य दैकर परणामा ❀ पितर उधारन पूजहि कामा
तब बशिष्ठ भाष्यो यह बानी ❀ गङ्गाबिनु नाहिं गति अरुजानी
राजा कह गङ्गा कत अहैं ❀ नारद सन बशिष्ठ तब कहैं
साँचे राव जु नारद आये ❀ गङ्गा मर्म पूछि मन लाये
नारद कहा सुनौ हो राऊ ❀ मैं यक दिन गो इन्द्र के ठांऊ
पूछेव गङ्गा महिमा ताहीं ❀ इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं
इन्द्र देश मैं आयों ताहा ❀ यम राजासों पूछे आहा
उनहुँ कहा मैं जानत नाहीं ❀ यह तौ मर्म ब्रह्म का चाहीं

दो० पूछा बिधि से जायकर, कह्योशम्भु पहँ जाव ।
शिवपहँ तब हम जायके, पूछा भेद बताव ॥

शिव कह तब गङ्गाका नामा ❀ नाशत पाप करै मनकामा
जाहु बिष्णु पहँ तुम मुनिराऊ ❀ गङ्गा भेद तहां सब पाऊ
तब बैकुण्ठ बिष्णु पहँ गयऊ ❀ महाभेद मैं पूछत भयऊ

बिष्णुकहा सुन चितधरि नारद ❋ गये बिष्णु पहला गुणशारद
सुने बिष्णु यह मनोकामना ❋ बड़ आश्चर्य चित्तमहँ आना
गङ्गा की महिमा जु बखाना ❋ बिष्णुरूप भे बिष्णु सुजाना
नारद गये जहां तौ राऊ ❋ पूछा महिमा गङ्गा नाऊ
देखा रूप शंख कर चारी ❋ चक्र गदा अरु पद्म सवारी
पूछा बात कहा तिन जानी ❋ चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानी
श्वान योनि में भा अवतारा ❋ बिना अहार महादुख भारा

दो० गङ्गाजल यक मुनी लै, जातरहे मग माहिं ।
और एक मुनि मांगेऊ, भेट भई तब ताहिं ॥

तेहि मारग पर परे हजारहि ❋ बिप्र बिप्र दोउ हर्षितकारहि
कुशसे जल मुनि मुनिपर डारा ❋ परा बूंद यक भाग्य हमारा
बूंद एक जल तनुमहँ डारा ❋ तासे रूप यह भयो हमारा
तब बैकुण्ठ माहँ हम आये ❋ नारद राजहि बात सुनाये
सो गङ्गा आने जो पावहु ❋ पितर सबै यमपाश छुड़ावहु
राजा सुनत बात बिस्तारा ❋ मन्त्री सौंपा राज्य भँडारा
माता पाहँ बिदा तब भयऊ ❋ मन्त्र एक भागीरथ दयऊ
प्रथम मेरुपर गे तप कीन्हा ❋ यम अरु नियममाहिं मनदीन्हा
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❋ मन्त्र एक भागीरथ कियऊ
सिद्ध करौ यह मन्त्र नरेशा ❋ पैहौ गङ्गा कर उपदेशा

दो० यही मन्त्रके सिद्ध हित, तब गे चलि कैलास ।
कथारूप गङ्गा अहै, महाशोक परकास ॥

बारह बर्ष तपस्या कीन्हा ❋ पूरण आश शंभु बर दीन्हा
गङ्गा अर्थ भगीरथ कहे ❋ कहारहे मोहिं पाहँन अहे
बारह बर्ष रहे निरहारा ❋ गङ्गा नहिं पाये करतारा
तबहिं बिष्णु का तप संचारा ❋ बारह बर्ष रहे निरहारा
नाना अस्तुति कै परकासा ❋ कह प्रसन्न हरि राजा पासा
चारी भुजा गरुड़ असवारा ❋ भागीरथ तब करै बिचारा

हौ तुम भक्त हमारे राजा ❀ करौं तोर मनवाञ्छित काजा
चलहु संग हमारे तहाँ ❀ पुरवैं आशा गङ्गा जहाँ
हरि आगे पाछे जु भुवारा ❀ आये तब ब्रह्माके द्वारा
अर्घ्य पाद्य गङ्गा तब दीन्हा ❀ वही नीर चरणोदक लीन्हा

दो० शीश माहँ चरणोदक, ब्रह्मा डारयउ ताहिं ।
शिवआराधन कीन्हउ, ब्रह्मकमण्डलु माहिं ॥

कन्या हरि से कहा बिचारा ❀ तुम्हरे चरण मोर अवतारा
बिष्णु कहा गङ्गा तव नामा ❀ पापबिनाशन जग बिश्रामा
जाहु मृतकपुर करौ न बारा ❀ तब गङ्गा बाणी संचारा
जगके पाप हमहिं निस्तरैं ❀ मेरे पाप कहो को हरैं
तोरे पाप हरैं हरि कहहीं ❀ साधुस्नान करैं तौ दहहीं
नरको पाप जन्तु तौ खाई ❀ वही जन्तु नर भक्षै आई
जासुके पाप तासुके पाहा ❀ सत्यस्नान तोरि गति आहा
सुनि जलरूप गङ्ग भइ तबहीं ❀ आज्ञा हरिकी पाई जबहीं
भागीरथ जो अस्तुति सारा ❀ माता पितृन कर उद्धारा
ब्रह्मा हरि को कर परणामा ❀ लै गङ्गाजल राजा आमा

दो० आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार ।
पहुँचे तौ कैलास महँ, शङ्कर देखि बिचार ॥

जाना गङ्गा चलीं भुआरा ❀ जटा तीन तौ तहां पसारा
जटामाहँ गङ्गा शिव लयऊ ❀ महाशोर भागीरथ कियऊ
हरि तुम बड़ दानी जु कहाये ❀ मैं सेवक नर दुख बहु पाये
तब गङ्गा तुमतो म्वहिं दीना ❀ अब बटपारी कै तुम लीना
शिवसमाधि हरि हर्षितभयऊ ❀ माँगु माँगु बर बोलनलयऊ
राजा कहा कष्ट बहु लाये ❀ महाकष्ट से गङ्गा पाये
छुटी समाधि शंभु सुख भयऊ ❀ माँगु माँगु बर शंकर कहेऊ
जो तुम राखा दीजे दाना ❀ मोरे पितृ होयँ परित्राना
अस्तुति बहुत भगीरथ कीना ❀ तब गङ्गाको शंकर दीना

के प्रणाम आये तब राऊ ❋ शंख बजावैं हर्ष उपाऊ

दो० हेमगिर्द दुर्गम शिखर, अटकी गङ्गा ताह ।
पर्वत लाँघि न पारहि, रोवैं तब नरनाह ॥

गङ्गा कहा पुत्रसे बाता ❋ इन्द्रपास अब जाव सख्याता
ऐरावत हस्ती लै आवो ❋ देहिमार्ग करि पारहि जावो
राजा गये इन्द्र के पाहा ❋ अस्तुति बहुत करै नरनाहा
बारहवर्ष तपस्या कीन्हा ❋ तबहिं इन्द्र यह आज्ञा दीन्हा
माँगु माँगु बर सुन नृप बाता ❋ ऐरावत दीजै सुरत्राता
इन्द्र कहा तुम गज पहँ जावो ❋ जासे मनबाञ्छित फल पावो
भागीरथ तब गज पहँ आये ❋ सबबृत्तान्त गजहि समुझाये
पर्बतमें करि दीजै द्वारा ❋ हमलै गङ्गा जायँ सो पारा
गज भाषा हमसे नहिं होई ❋ होय काज बच राखै कोई

दो० जो गङ्गा रति देइ मोहिं, देव तबै करिपार ।
नातौ हमसे होय नहिं, अन्ते खोजु भुआर ॥

सुनिकै राव गये फिरि ताहाँ ❋ गङ्गा जाना अन्तर माहाँ
रोदन भूप करौ केहि हेता ❋ आनहु गज तुम जाय सचेता
कहहु हस्तिसे बचन हमारा ❋ सहै हमार जु तीन प्रहारा
तौ हम देवैं रतिको दाना ❋ जाहु पुत्र मम करौ बखाना
तब राजा फिरि गजपहँ आये ❋ यह बृत्तान्त कह्यो समुझाये
सुनिकै गज तब परम अनन्दा ❋ भागीरथ कह सुन शुभदन्दा
तीन तरङ्ग हमारे सहै ❋ रति संग्राम हमारो लहै
भाषे गज सो सहब तरङ्गा ❋ तब तरङ्ग परहारेउ गङ्गा
एक लहर तब गजगै साहा ❋ दुःखित महाजीव अवगाहा

दो० गये बूड़ि गज तत्क्षणहि, पहिले लेत तरङ्ग ।
दूसरि लहरजो जलउठी, सहिनहिंसक्योगयन्द ॥

तब गज सुस्त भयो जलमाहीं ❋ गङ्गाकी अस्तुति तब काहीं
मैं पापी माता सुनु बाता ❋ राखु प्रहार शरण सख्याता

तव महिमा जानैं सब देवा ❋ करत चरण तुम्हरे नित सेवा
गङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी ❋ गर्भहिसे तव यह गति जानी
देव सबै मम राह उपाई ❋ सुनतै गज तब उठा हो राई
दन्तराय पर्वत गज ताहाँ ❋ भये रन्ध्र तब पर्वत माहाँ
चलिके पार भये गजधारा ❋ गजने इन्द्रलोक पगु धारा
आगे चले भगीरथ राऊ ❋ पाछे गङ्गा चार सिधाऊ
जह्नु मुनीश करैं तप जहाँ ❋ पहुँचे जाय अचम्भित तहाँ

दो० जाना मुनि हैं गङ्ग यह, आय मृत्यु अस्थान ।
परम हर्ष मन महामुनि, कर गङ्गा कहँ पान ॥

भागीरथ बिस्मय तब भयऊ ❋ तब मुनीशकी सेवा कियऊ
मुनिके पाहँ बिष्णु को धाये ❋ बारह बर्ष तु तहाँ गँवाये
कोटिन बिप्र गऊ दे दाना ❋ नाहिं गङ्गासम तीर्थ बखाना
बिष्णु आय हर्षित तब भयऊ ❋ मुनिकर ध्यान तुरत छुटिगयऊ
बिष्णु कहा तब मुनि सों बाता ❋ भागीरथ जगमहँ सख्याता
गङ्गा देहु बहुत सुख पाये ❋ पितृलोक उद्धारन आये
तब मुनि ज्ञान बिचारे तहाँ ❋ मैं गङ्गा देउँ केहि बिधि महाँ
मुत्र अशुद्ध मुख जूठा होई ❋ कहै उच्छिष्ट जगत सबकोई
जाँघ चीरिकै गङ्ग निकारा ❋ जाह्नवि नाम ताहि सों धारा
अन्तर्धान बिष्णु भे जाहीं ❋ भागीरथ हर्षित मन माहीं
आये देश माहिं तब राऊ ❋ माता पहँ धै गङ्गा लाऊ

दो० गङ्गा पाहीं कहा यह, गङ्गा कहि गोहराव ।
तबहीं माता तब तहाँ, और ध्रुव बैठाव ॥

माता पाहँ भगीरथ गयऊ ❋ मध्य नगर हर्षित तब भयऊ
कहेउ बात माता के पाहा ❋ गङ्गाका बृतान्त सब काहा
तहां देव गङ्गा परवाहा ❋ जाते जाय बिष्णुपुर माहा
यहि प्रकार पूछत हो राऊ ❋ अभ्यन्तर अब सुनौ उपाऊ
गङ्गा नाम गऊ इक रहै ❋ एक अहीर पुकारत रहै

गङ्गा गङ्गा नाम पुकारा ❀ गङ्गा चली सहस द्वै धारा
भागीरथ कहते तब बाता ❀ यह का कौन कहौ म्वहिं माता
तब गङ्गा राजा से कहेऊ ❀ तुम्हरा संशय अब नाहिं रहेऊ
तव पितृनको करौं उधारा ❀ पाछे हम तारब संसारा
भागीरथ प्रसन्न मन माना ❀ भीष्म धर्मनृप पाहँ बखाना
दो० कन्दु नाम जो ब्राह्मण, कहे प्रेतगण माहँ ।
चन्द्रभाग नहिं प्राप्ती, परम हर्ष मनमाहँ ॥
महापातकी जग में अहै ❀ गङ्गा परसत पाप न रहै
धन्य भाग्य जो लेत तरङ्गा ❀ पाप नाश अरु निर्मल अङ्गा
कोटिन विप्र गऊ दे दाना ❀ नाहिं गङ्गाके नीर समाना
सब तीर्थन में गङ्ग प्रधाना ❀ श्रुति स्मृति भागवत बखाना
याहि प्रकार द्विज कथा सुनाये ❀ पञ्च बिमान स्वर्ग से आये
प्रेतरूप तज ताही बारा ❀ बिद्याधर स्वरूप संचारा
स्वर्गलोक भा तेहि कर आमा ❀ गङ्ग महात्म्य सुनत मनमाना
जाके चरण गङ्ग अवतारा ❀ ते हरि सब दिन सङ्ग तुम्हारा
तजौ शोक सब धर्म नरपती ❀ हरि सहाय संतत तुम गती
सत्य सत्य जानौ परमाना ❀ यही देवपति श्रीभगवाना
दो० याहि प्रकार से भीष्मजी, सुनते पाप नशाय ।
गङ्गा केर प्रभाव कह, धर्मराज समुझाय ॥
सर्व नदी में गङ्गा, देवन महँ भगवान ।
छन्द माहँ गीता सही, धर्म न दया समान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिगङ्गोत्पत्ति वर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्मराज सुनहू परमाना ❀ भीषम भाषे अर्थ पुराना
महादेव सेवा मन लावै ❀ सो कैलासहि बास सुपावै
शिवका ब्रत चतुर्दशी अहै ❀ धन्यरु धन्यरूप हर कहै
चरत नाम ब्याधा संसारा ❀ सो कैलास माहिं पगु धारा

कौन रूप सुनते बिस्तारा ❀ भीष्म कहा सुन नृपति भुआरा
पशुन मारिकै बन से लावै ❀ मांस बेंचिकै दिन भुगतावै
एक द्विवस तौ उपबन जाई ❀ संध्या भइ यक जन्तु न पाई
महाशोच बाढ़ा मन माहीं ❀ कौने रूप आज गृह जाहीं
स्त्री सुत पुत्री उपवासा ❀ सब तौ अहैं हमारी आसा
यह चिन्ता ब्याधा के भयऊ ❀ महाशोच करता तब लयऊ

दो० कौन रूप गृह गमन करूँ, सबही परे उपवास ।
यह चिन्ता ब्याधा मनहिं, तनुके माहँ प्रकास ॥

महादेव को ब्रत दिन सोई ❀ महाशोक ब्याधा के होई
तब मन में यह करै बिचारा ❀ धिग धिग जगमें जन्म हमारा
तातें यह कानन के माहीं ❀ रहौं आज हम गेह न जाहीं
यहँ पर बाघ सिंह बहु आहैं ❀ जन्म अन्त अब ब्याधाकाहै
श्रीफल तरु प्रचठी सो रहै ❀ ब्याधा हृदय शोच बहु गहै
कर्म अङ्क पै सदा सहाई ❀ कर्म के हेतु दुःख सुख पाई
जो बिधनाहै लिखा लिलारा ❀ दूसर कौन मिटावनहारा
कर्महिसे सुख होत जो राई ❀ पावै सुख अनेक सुखदाई
सदा चित्तसों मेटत सोई ❀ लाख उपाय करै जो कोई

दो० ब्याधा रहिगो राति तहँ, श्रीफल तरुके डार ।
महाभयंकर निशि तहाँ, भये महाअन्धार ॥

क्षुधावन्त अतिही दुख पाई ❀ रोदन करत हृदय दुखदाई
अर्ध रात्रि से शंकर आये ❀ बृषभ चढ़े गौरी सँग लाये
भूत प्रेत जो दैत्य अपारा ❀ सिंगी डमरु झाँझ मझारा
ताही बनमें भा उजियारा ❀ सोई तरुवर परश भुआरा
तहँ बैठे हर उमा जो जाई ❀ ब्याधा है कउ मर्म न पाई
करते नृत्य महेश्वर तहाँ ❀ रोवै ब्याधा सो तरु महाँ
आंसुपात बहते हैं ताई ❀ कर्म भयो ताके फलदाई
एक श्रीफलपत्र प्रमाना ❀ आंसू भीजे रोवत नाना

पवन तेज पत्ता सो झरे ❀ महादेव के शिर पर परे
दो० महादेव हर्षित बदन, कहै बात तौ लीन।
ले बरदान आय अब, पुष्पाञ्जलि जो दीन॥
उतारि रूख से ब्याधा पड़ा ❀ हाथ जोरिकै सम्मुख खड़ा
शिव प्रसन्न होकर बर दीन्हा ❀ राजा श्री धन्यवन्ता कीन्हा
अन्तकाल सो गो कैलासा ❀ भोलानाथ भक्त परकासा
ब्याधा तब जानै नहिं पाये ❀ दैवी गति पत्ता हरि पाये
जगत माहँ करिकै सुख नाना ❀ अन्तकाल कैलास पयाना
भक्तबछल तौ शिव भगवाना ❀ ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना
रण में जो शत्रू संहारा ❀ सोय भवानी बर संसारा
राजा धर्म भक्ति मन धरौ ❀ शोक दुःख राजा परिहरौ
शोक करौ तौ गहि है नाहीं ❀ बचन मोर राखौ मन माहीं
केवल करौ हरी को ध्याना ❀ पावहु राजा पद निर्बाना
दो० तजौ शोक ह्वै राजा, चितवो राधारौन।
यहि प्रकार भीषम कहा, तौ कीन्हो है मौन॥
राजा सुना यही सब बानी ❀ तजा शोक तबहीं परमानी
देव मुनी सब जो अस्थाना ❀ सहित पाण्डवन श्रीभगवाना
प्रति बासर तौ राजा जाई ❀ सुना ज्ञान पितामह नाई
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन ❀ सुनतै पाप होत हैं खण्डन
सो चरित्र संक्षेपहि कहे ❀ पुनि बिस्तार बहुत तो रहे
दो० भीषम बर्ण्यौ धर्म सो, सुनो सत्य मम पाह।
महापाप सब नाशहीं, सुनते श्रवणन माह॥
नाना शास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान।
राजा हृदय राख यह, सत्य बचन परमान॥
इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥
वैशम्पायन गावन लागे ❀ जनमेजय श्रोता के आगे
यहिबिधिबहुतादिवसजबगयऊ ❀ उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ

भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना ❋ अब तजि देह करीय पयाना
धर्मराज के पाहँ बखाना ❋ राजा सुनौ बात परमाना
शरशय्या बहुतै दुख सहेऊ ❋ उत्तरायण सूरज अब भयऊ
अब शरीर तजिहौं परमाना ❋ धर्मराज से कहत बखाना
अबतो कली होब परवाना ❋ सन्तत भूप बिचारयो ज्ञाना
एही कृष्ण देव परवाना ❋ अन्तकाल गति श्रीभगवाना
हरिको छाँड़ि रहहु जनि राजा ❋ कहौं बात तोरे भल काजा
अब तोहार जो होय उधारा ❋ भीषम भाषे पाहि सुवारा

दो० अबबैकुण्ठे आव हरि, शून्य देव अस्थान ।
केतिक दिनके अन्तमें, गमनब श्रीभगवान ॥

नृपति युधिष्ठिरसे यदुराई ❋ बहु प्रकार भीषम समुझाई
हरिते भीषम कह्यो बखाना ❋ सर्वलोकपति हो भगवाना
कृपा करो हम तजें शरीरा ❋ बिश्वरूप तुमहीं यह बीरा
बहु प्रकारते अस्तुति कीन्हा ❋ तुरत शरणतब कृष्णहि दीन्हा
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना ❋ तादिन भीषम कहउ बखाना
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा ❋ सातो तीरथ कहे बिचारा
श्रीपति और जो पांचो भाई ❋ सबै पितामह लिये बोलाई
बिदाभये सबते प्रभु गाये ❋ तजे शरीर परम सुख पाये
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये ❋ बिष्णु दूत सँग लेने आये
रथ ऊपर भीषम बैठाये ❋ स्वर्गलोक की राह सिधाये

दो० परम हर्ष नारायण, भीषम तजो शरीर ।
गये बैकुण्ठ बिष्णुपुर, परम अनन्दित धीर ॥

धर्मराज तब रोदन कीन्हा ❋ क्रियाकर्म सबकर मन दीन्हा
कीन्हा कर्म बेद ब्यवहारा ❋ शास्त्र शान्ती कर संचारा
श्रीपति कहे राव सन बानी ❋ पुरी हस्तिनापुर महँ आनी
श्रीपति संग करहु सब काजा ❋ करहु राज्य हर्षित मन राजा
मोरी भक्ति करो मन लाई ❋ पुहुमी राज्य करो सुखदाई

हमको बिदा दीजिये राई ❀ हमहुँ द्वारका देखें जाई
हर्षित राजा करे बखाना ❀ गति हमारि तुमहीं भगवाना
मैं अनाथ तुम जनके साथा ❀ अस्तुतिकरत बहुत नरनाथा
पायो बँधुसँग द्रौपदि रानी ❀ मिलेउ सबै सँग शारँगपानी
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई ❀ भये बिदा तु चले यदुराई

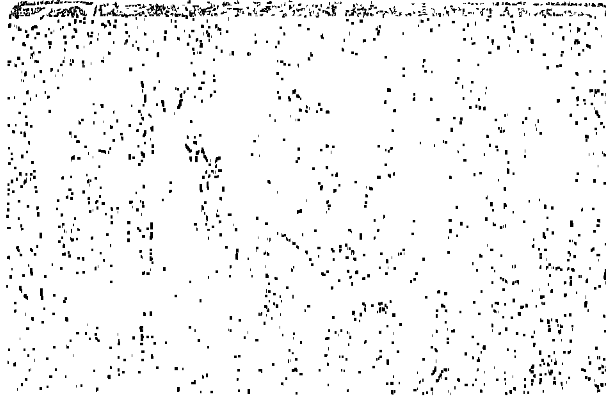
दो० सात्यकि रथको साजेऊ, श्रीपति भे असवार ।
सबते बिदा होय हरि, द्वारावति पगुधार ॥

हर्षित गये देव भगवाना ❀ द्वारावती नगर परमाना
आये द्वारावति यदुराई ❀ यदुवंशी हर्षित सब आई
धर्मराज राजा सुख करही ❀ सदा धर्म धर्महि हित धरही
नगरलोग सब तहँके सुखी ❀ स्वमहु तहँ सुनिये नहिं दुखी
पुत्र समान प्रजा प्रतिपाला ❀ धर्मरूप श्रीधर्म भुवाला
एही भांति राज्य नृप करही ❀ धर्मराज शोकित मन रहही
सजन सखा बन्धूजन जेते ❀ गुरू गोत्र कुल भीषम तेते
तिन सबको मारे निज हाथा ❀ यही शोच शोचै नरनाथा
प्रजालोग सब करैं अनन्दा ❀ जनु चकोर पाये निशि चन्दा
भारत कथा पाप क्षय जाई ❀ पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई

दो० बैशम्पायन कथा करि, पुरहस्तिना प्रकाश ।
जाते पावहिं परमपद, होत पापको नाश ॥
भारत कथा पुण्य फल, करैं नारि नर गान ।
शान्तिपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेशान्तिपर्व-
ण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति श्रीशान्तिपर्व समाप्तम् ॥



महाभारत

अश्वमेधपर्व

—:o:—

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की
रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

श्रीराजाधिराज महाराज युधिष्ठिरजी ने श्यामकर्ण घोड़ा छोड़-
कर समस्त दिशाओं तथा उपदिशाओं के राजाओं को
जीता था। उसी अश्वमेध-यज्ञ की कथाएँ वर्णित हैं।

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट विपिनविहारी कपूर के प्रबन्ध से

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९ ४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा ॥

अश्वमेधपर्व ॥

दो० गौरीनन्दन के चरण, बिनवौं बारम्बार ।
जिनके चिन्तन करतही, बिघ्न होयँ जरिछार ॥
पाराशर ऋषिके तनय, ब्यासदेव भगवान ।
आचारज हौ भारतके, करौ नाथ कल्यान ॥
महरानी बानी सुमिरि, करौं कथा सुखदान ।
अश्वमेध भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

बैशम्पायन कह्यो बुझाई ❀ यज्ञ कथा सुनु कुरुकुलराई
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका ❀ भीषम भये जबहिं परलोका
कह्यो ब्यास सन धर्मकुमारा ❀ मारा गोत्र पाप बहुभारा
यज्ञरु योग जाप का कर्मा ❀ कैसे पाप छुटै हो धर्मा
सुनी बात तब कहै ऋषेशा ❀ पातक खण्डब तोर नरेशा
परशुराम कहँ सब जगजाना ❀ हने मातु आज्ञा पितु माना
माता द्विज बध हत्या पाये ❀ अश्वमेध तब यज्ञ बनाये
यज्ञ कियो तब पातक हरे ❀ तुमहूं करो यज्ञ अनुसरे
रामचन्द्र दशरत्थ कुमारा ❀ रावण बंश कियो संहारा
बिश्वशर्मा को सो सुत अहै ❀ ब्रह्म बधन तो रामहि गहै
बाजी यज्ञ कियो प्रभु रामा ❀ द्विज बध छूटि भये निष्कामा

दो० अश्वमेध तुमहूं करौ, गोत्रहि बध दुख हेत ।
धर्मराज यह सुना जब, भाष्यो बात सचेत ॥

यज्ञसमर्थ जो धन मम नाहीं ❀ कैसे यज्ञ होय जगमाहीं

फल विहीन तरु पक्षि न जाई ❀ धन विहीन तस पुरुष कहाई
बिन धन धर्म कहो कस होई ❀ धन से हीन पुरुष जगजोई
कहै व्यास सुनु धर्मकुमारा ❀ अर्थ चहौ सुनु बात हमारा
पूर्व मरुत नृप यज्ञ बनाये ❀ सुर नर मुनिजन हर्ष बढ़ाये
दिये दान बहु बिधि परकारा ❀ किये अयाचक मग्न अपारा
लै न सके तो तजि नृप गयऊ ❀ गिरिहिमालयके बीचहि रह्यऊ
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानौ ❀ सुरतकरी धर्मराज बखानौ
द्विज धन लैके यज्ञ बनाओं ❀ यज्ञकरत तौ अपयश पाओं
व्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा ❀ सोसब द्विजन नहीं अधिकारा
पूर्व दैत्य बन राजा गयऊ ❀ ताही मारि देव धन लयऊ

दो० सोई धन हरिचन्द्र नृप, दीन्ह्यो मुनि को दान ।
पाछे बलि राजा भये, सब धन ताकोजान ॥

जो बलि राजा दीन्ह्यो दाना ❀ पाछे परशुराम जग जाना
कश्यप मुनि को दीन्ह्यो दाना ❀ ऐसे धन राजा को जाना
दान देय खाही बिलसाही ❀ ताको धन्य मुनी यश गाही
सो धन लै करु यज्ञ भुआरा ❀ कछू दोष नहिं लागु तुम्हारा
राजा धर्म व्यास सन कहही ❀ यज्ञ अश्व मोरे नहिं अहही
सुना व्यास तब कह अस बाता ❀ आनहु अश्व आह सख्याता
भद्रावति पुर हय है राई ❀ यौवनाश्व राजा के ठाई
दश करोड़ दल हयको रक्षक ❀ यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक
ताही जीति अश्व लै आओ ❀ धर्मराज ते बात जनाओ
भीम आदि बान्धव हैं जेते ❀ करि संग्राम थके नर तेते

दो० मेघवर्ण वृषकेतु है, बालक औ पितु शोक ।
तासन कछु नभाषिये, दोष देय सब लोक ॥

सुनिकै भीम कहत अस बानी ❀ करबे यज्ञ अश्व धन आनी
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा ❀ आनबधन अश्वहु जगकाजा
हमैं सहाय जगत के तारण ❀ केहिते डरिय कौन सो कारण

राजा कह्यो सुनहु सब भाई ❀ कत अकेल बाजी बहुताई
दश करोड़ दल राख तुरङ्गा ❀ कैसे भीम करब रणरङ्गा
सुनि कै बृषकेतू तब कहैं ❀ आज्ञा देहु संग हम रहैं
आनो भीम के साज तुरङ्गा ❀ यौवनाश्व को करिये भङ्गा
सुनते राजा कहे बखानी ❀ कैसे कह न सको यह बानी
तोरे पितहिं धनञ्जय मारा ❀ देखे मुख मन दुःख हमारा
तब बृषकेतु कहेउ सुन राजा ❀ कीन्हेउ भला कर्णको काजा

दो॰ सभा मांझ द्रौपदि कहँ, पराभाव सो दीन्ह ।
एहि पापते तजेउ तनु, उन्हके गति तुम कीन्ह ॥

पार्थ बाण से गङ्ग बहाये ❀ ताते पिता धर्म पद पाये
सुने भीम राजा सुख पाये ❀ मेघबरन तब बात सुनाये
भीम संग हम जैहैं तहां ❀ भद्रावती नगर है जहां
कै प्रण तेज अश्व लै आऊं ❀ धर्मराज को यज्ञ कराऊं
भीम पितामह कर्ण को नन्दन ❀ करि रण उत्कट हेतु तुरङ्गन
सुनि हर्षित भे धर्मकुमारा ❀ यज्ञ भेद बहु पुण्य प्रकारा
केते बिप्र कौन मति दाना ❀ केते घृत साकल्य प्रमाना
व्यास कहे सुनि बीस हजारा ❀ लाख कलश है घृत बिस्तारा
तीन लाख साकल्यहिं लाई ❀ इन्दु कुँदन के अश्व बनाई
पीत पूँछ अरु बपु है श्यामा ❀ चैत्र पूर्णतिथि कीजै कामा
कञ्चन पत्र बांध शिर ताही ❀ अपने नाम यज्ञपति चाही

दो॰ हम छोड़ा है अश्व यह, जगतबीर कोउ और ।
घड़ी एक जो गहि रखे, जीतब सो प्रण ठौर ॥

करे अश्व लघुशङ्का जहाँ ❀ सहसन गऊ दान दे तहाँ
एकहिं सेज द्रौपदी साथा ❀ साधन योग करो नरनाथा
यावत अश्व गेह नहिं आवे ❀ तावत भोजन बिप्र करावे
बीचहि खड्ग राखिकै राजा ❀ बर्ष दिवस सोवत यह साजा
नारी पासे मन जब जाई ❀ वही खड्ग चितवे तब राई

अश्वमेध इन्द्रहि मन धारा ❀ श्री ब्रत पाली नाहिं पारा
सत्यकेतु नाम सुनु राऊ ❀ अश्वमेध के सबै नशाऊ
ब्यास गये कहि अपने थाना ❀ राजा करहिं हरी को ध्याना
सुनत राउ तब चिन्ता करै ❀ कठिन बरत आशा हरि धरै
अभ्यन्तर आये भगवाना ❀ द्वारपाल ते कहे बखाना

दो॰ कहो जाय राजा पहँ, आये श्री भगवान ।
सबै जानिकै आनहीं, कीजे जाय बखान ॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं ❀ तुव अटकाव कि आज्ञा नाहीं
कहे कृष्ण रात्री परमाना ❀ कौने मत हम करों पयाना
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ ❀ जहाँ धर्मनृप स्थित रहेऊ
सुनि सब बचन बन्धु हरषाये ❀ सहित द्रौपदी बाहर आये
राजा हरिहिं कियो परणामा ❀ चारों बन्धु मिले सुखधामा
बिहँसि बचन तब राजा कहेऊ ❀ चिन्ता मम तव मनमहँ अहेऊ
तेहि पीछे रानी मिलि आई ❀ भे अचिन्त तब पांचो भाई
पञ्चाली भाषेउ परतक्षक ❀ सदा भक्त के हौ तुम रक्षक
सभामाहँ तौ लज्जा तारा ❀ दुर्बासा छल मन बिस्तारा
सदा भक्त के रक्षा कारण ❀ जगतमाहँ कीन्हे तनु धारण

दो॰ सावधान बैठे सबै, परम हर्ष मन कीन्ह ।
धर्मराज नृप समझिकै, हरि सन भाषे लीन्ह ॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा ❀ नाथ आयके दर्शन दीन्हा
अश्वमेध हम कियो बिचारा ❀ जो आज्ञा करे नन्दकुमारा
कृष्ण कहे राजा के पाहीं ❀ जगत माहँ ऐसा को आहीं
जाना मन्त्र भीम यह दीन्हा ❀ उदर भरे कर उद्यम कीन्हा
दैत्यनिसंग भयो मन भङ्गा ❀ कामी बिबश सदा सुखरङ्गा
जगत माहिं जो धर्म न जाना ❀ महाबीर भक्तन परमाना
जानत नाहिं आप बल वाहीं ❀ भक्त बीर सब देखा नाहीं
रामचन्द्र यज्ञहिं निरमाये ❀ चतुरङ्गिणि को संग पठाये

शुक्रमती इक ग्राम अहेउ ❀ तहँ श्रुतदेव सु राज रहेउ
तहँ भा युद्ध महाभयकारी ❀ पुनि बालक दोउ शरननमारी
दो० चारौं बन्धु बधे रण, कुश लव दोऊ बीर ।
तुम कत यज्ञ करे चहो, अस भाषे यदुबीर ॥
को तुम को तौ रक्षा करिहै ❀ को रण रचे अश्व को हरिहै
सुनिकै भीम कहे तब बानी ❀ अस कस भाषहु शारँगपानी
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहे ❀ पाछे मन्त्र राजपहँ कहे
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं ❀ जगत माहँ कोउ दूसर नाहीं
तुम तौ स्त्री के बश अहो ❀ कहते कहत मौन है रहो
धर्मराजको भ्रम उपजायो ❀ काहित काज नाश करवायो
अश्वमेध हम तो अब करिहैं ❀ ऐसे गोत्र पाप से तरिहैं
जेते बीर जगत में आहीं ❀ मारों सबहिं महारण माहीं
तुम हमार सर्बस हो स्वामी ❀ तुम सबही के अन्तर्यामी
सुनिकै कृष्ण हर्ष तौ पाये ❀ तब राजा ते हर्ष सुनाये
दो० धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात बिचार ।
पातक जो है गोत्रबध, हम कहँ देहु सुआर ॥
मैं तो पाप करों सब भारी ❀ सुखते कीजे राज्य अधारी
भीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा ❀ पातक कौन आपु हरिलीन्हा
पाप देहिं जो तुम कहँ राजा ❀ पाप बढ़ै अरु धर्म अकाजा
महापुण्य मख में जत होई ❀ तुम कहँ राजा देहैं सोई
हम तो यज्ञ करौं प्रण ठानी ❀ करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी
बृषकेतू जो कर्ण कुमारा ❀ मेघवर्ण सुत प्राण अधारा
मोर संग दोय जन जैहैं ❀ श्यामकर्ण अश्वहि लै ऐहैं
करौं युद्ध घोड़ा लै आवों ❀ तौ बृकओदर नाम धरावों
धन जन सब जो है नृप पाहीं ❀ लाओं शीघ्र हस्तिपुर माहीं
तुम सहाय जो हौ जगतारण ❀ तौ हम भरमहिं कौने कारण
दो० सुनिकै हर्षे जगतपति, हर्षित आज्ञा दीन्ह ।

अश्वमेध परवेश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह ॥
जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार ।
सोई यज्ञहिं कियेते, नर उतरै भवपार ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाअश्वमेधयज्ञकथनं नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनि राजा सो कथा प्रमाना ❀ यामिनिगत तौ भये बिहाना
मेघबर्ण अरु भीम सयाना ❀ वृषकेतू सँग कीन्ह पयाना
कुन्ती नृप औ श्रीभगवाना ❀ इन सब कहँ कीन्ह्यो परणामा
माता कछु सम्मर लै दीन्हो ❀ भीमसेन तब भोजन कीन्हो
पुनि माता कछु औरो लाई ❀ मेघबर्ण कहँ दीन्ह बनाई
भीम कहे तब श्रीपति पाहीं ❀ यौवनाश्व नगरी हम जाहीं
तुम रक्षा परजाके करहू ❀ सत्यबात यह हियमहँ धरहू
यह कहिके तीनों जन जाई ❀ यौवनाश्व पुर चले चलाई
तीनोंजना एक सँग भयऊ ❀ यौवनाश्व के नगरहिं गयऊ
ग्राम रम्य पुष्करणी अहे ❀ बन उपबन चहुँदिक् लहलहे
पुष्पबाटिका देखेउ जाई ❀ अनुदिन पुष्प रहे तहँ छाई

दो० पर्वत एक बिराजही, यज्ञ वेद पुर माहँ ।
तेहि पर पै तीनों जने, बैठे हय के चाहँ ॥

जब दोपहर दिवस भयो भारी ❀ जलके हेतु अश्व पगुधारी
श्यामकर्ण हय चालत आवै ❀ चँवर छत्र तापर छबि छावै
बहुतक दल हय गज सँगआये ❀ देखत मेघबर्ण मन लाये
भीमसेन सन कह तब बाता ❀ आनों जाइ अश्व सख्याता
यह कहिके तुरन्त चलिभये ❀ गिरि ते कूदि भूमिपर गये
राक्षस माया तब सञ्चारा ❀ दश दिशि करे लागु अँधियारा
पाहन बर्षा अधिक चलावे ❀ देखत लोगन दिशा गमावे
देवन दूत स्वर्ग महँ गयऊ ❀ इन्द्र पाहँ जाकर सो कहेऊ
दैत्य एक माया परकाशा ❀ जगत चहत है करै बिनाशा

दूसर दूत सुरेश पठाये ❀ मेघबर्ण ताकहँ समुझाये
दो० मेघबर्ण पुनि कहेउ तब, तुम शङ्कित केहि काज ।
लै जैहैं हम अश्व तहँ, यज्ञ धर्म के राज ॥
सुनत दूत गवने सचुपाये ❀ सुनासीर कहुँ जाय जनाये
तब सुरेश मन माहँ थिराना ❀ अश्वमेध सुनि बहु हर्षाना
मेघबर्ण माया संचारा ❀ सबैबीर भये शिथिल अपारा
पीछे अश्व हरण तौ करे ❀ पर्वत माहँ तबै पगु धरे
देखे भीम हर्ष तब माने ❀ राजा दल सब शङ्का आने
राजा दल देखै तब धाये ❀ रणहित तब बृषकेतु सिधाये
बीरन काहँ हांक जब दीन्हा ❀ सबै बीर यह भाषण कीन्हा
काह नाम औ जात तोहारा ❀ भाषो सो तो पाहँ हमारा
तब बृषकेतू कहा रिसाई ❀ युद्धसमय का जाति जनाई
युद्ध करो या भागो भाई ❀ नाम गोत्रका करो सगाई
तब बीरन सब रण दिय ठाना ❀ महामार नहिं जात बखाना
दो० महाबली सब सैन्य के, जल सम बर्षत बान ।
कोटि बीर शर बर्षते, कर्ण कुँवर पर आन ॥
कर्णपुत्र तब बाण चलाये ❀ अगणित बीरहिं मारि गिराये
भगे बीर पुरुषारथ देखे ❀ जुझे बीर रण माहँ अलेखे
राजा आगे परी पुकारा ❀ हरे अश्व सबदल कहँ मारा
राजा कह केता दल अहे ❀ हम ते रण करने को चहै
धावन कहै देवता अहे ❀ तीन बीर हैं सब तब कहे
यौवनाश्व नृप तहँ पगु धारा ❀ और चले सब राजकुमारा
कर्णपुत्र को राजा देखा ❀ बालक देखत अचरज पेखा
राजा पूछा कहो कुमारा ❀ नाम गोत्र का अहै तुम्हारा
सुने कुँवर तब कहे बिचारा ❀ कश्यप गोत्ररु कर्णकुमारा
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ तातें अश्व लेन कहँ आये
दो० यौवनाश्व तब अस कहेउ, तुम्हरे तौ रथ नाहिं ।

रथ लीजे मम पास से, करौ युद्ध रणमाहिं ॥
कर्णपुत्र तब कियो बखाना ❀ मैं ता रथ को युद्ध न जाना
राजा पुनि कह बाण चलैये ❀ कर्णपुत्र जब यह सुनिपैये
तुम तौ बृद्ध अहो मैं ज्वाना ❀ तुम्हरे दरश करैं भगवाना
राजा तब दश बाण चलाये ❀ कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये
तीन बाण राजा को मारा ❀ निष्फल कीन्हे सबै भुवारा
अर्धचन्द्र कुँवर तब छाँटे ❀ चमर छत्र गुण शारँग काटे
तब राजा धनु पै गुणधारा ❀ साठ बाण बृषकेतुहिं मारा
एकबाण कुँवर तब लीन्हा ❀ तीनबाण रिसकरितजिदीन्हा
सारथि अश्व तजे तब माना ❀ जूझे राजा सब दल जाना
अग्नि पवन के बाण चलाये ❀ उड़िकै सैन्य अग्नि जरिजाये
दो॰ तब राजा दूसर रथहि, क्रोधित भये सवार ।
बारिबाण तब भूपमणि, तहँ जो कीन्ह प्रहार ॥
ताते सब जो अग्नि बुताये ❀ बाणन कर्णकुमार छिपाये
भीमसेन तब देखन पाये ❀ राजा महामार मन लाये
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये ❀ काटे बाण बिलम्ब न लाये
पुनि इकबाण नृपति कहँ मारा ❀ क्रोधित भो मद्रेश भुवारा
मारेउ बाण कर्णसुत राऊ ❀ कर्णपुत्र को मूर्च्छा आऊ
देखत भीम क्रोध तब पाये ❀ गहि कर गदा क्रोध करि धाये
काह कहब राजा से जाई ❀ यह कहि भीम चले रिसिआई
धावत जँघते पवन चलाये ❀ हय गज रथ पैदल उड़िआये
बहुतै गज तहँ भये सँहारा ❀ जैसे पुण्य पाप करु छारा
यौवनाश्व राजा को मारा ❀ ताको नाम सुबेश उदारा
दो॰ कुँवर हांक तब भीम को, क्रोधित दीन्हे आय ।
गदा घाव तब धायके, मारे भीम घुमाय ॥
क्रोधित भीमसेन फिरि आये ❀ सो बैरी फिर भूमि गिराये
तब सुबेश आपुहि सम्भारा ❀ भीमसेन को भूमि पछारा

भीम उठाये गजते भारे ❀ राजपुत्र के ऊपर डारे
मारो गदा घाव भूवारा ❀ पड़े दोऊ रणभूमि मँझारा
राजा सुनो कथा अब आगे ❀ कर्णपुत्र मूर्च्छा ते जागे
यौवनाश्वको मारेउ बाना ❀ पाँचशरन नृप मोहन जाना
राजा मूर्च्छि परे मैदाना ❀ कर्णपुत्र धर्मी करि ज्ञाना
फेंट छोड़ि अंबर तब लीन्हा ❀ कुँवरपवन तब राजहिं कीन्हा
भाषे जो भक्ती भगवाना ❀ तब राजा पाये जिवदाना
यहि अंतर राजा तब जागे ❀ रहु रहु कै तब बोलन लागे

दो० चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावै पौन ।
देखत लज्जा भै नृपहिं, तब कीन्हा है मौन ॥

गल लगाय तब भेंटा राऊ ❀ तुमहीं हमरे प्राण बचाऊ
सदा धर्मरत तव पितु रहे ❀ ताके पुत्र कुँवर तुम अहे
देश राज धन प्राण तुम्हारा ❀ धन्य बीर हो धर्मभुवारा
अवरन केर नहीं है कामा ❀ चलो तहाँ जहँ भीम सुठामा
यौवनाश्व औ कर्णकुमारा ❀ भीम पाहँ हर्षित पगुधारा
कहे जाय तब युद्ध न काजू ❀ कर्ण पुत्र मोहिं रखेउ आजू
प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना ❀ तेहि पीछे दीन्हो जी दाना
अब है युद्ध काज कछु नाहीं ❀ चलो भीम मेरे पुर माहीं
अब मेरे मन उपजो ज्ञाना ❀ दर्शन जाय करब भगवाना
दश सहस्र गज श्वेत जु अहै ❀ लै चल मखको राजा कहै

दो० राजा यज्ञ अरम्भेऊ, रक्षक हम को जान ।
यहि प्रकारते प्रीतिकरि, पुरकहँ कीन्ह पयान ॥

भीति भये तब देखन पाये ❀ मेघवर्ण हय लेकर आये
नगर माहँ कीन्हा परवेशा ❀ अन्तःपुर पठयउ सन्देशा
आरति लै रानी करु साजा ❀ अन्तःपुर आये तब राजा
राजा कहेउ सुनो तुम रानी ❀ बीरन कै आरति करुआनी
कण्ठ शत्रु जो अहै हमारा ❀ सो तुम राखौ कर्णकुमारा

पीछे भोजन पान कराये ❀ हर्ष होय तब भोजन पाये
शयन किये रैनी सरुयाता ❀ गत भइ रैन भये परभाता
राजा उठि सेवकहि हँकारा ❀ सबते बात कहे संचारा
दल साजन को कर मनलाई ❀ हर्षित सब हस्तिनपुर जाई

दो० नगर लोग सब जेते, दलबल हय गज साथ ।
नगरहस्तिनापुरचले, जहँ दर्शन यदुनाथ ॥

यौवनाश्व माता के पासा ❀ जाय तहां ये बचन प्रकासा
माता चली हस्तिपुर माहीं ❀ कृष्णचरण जेहि पुर में आहीं
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ देश देशके नृप सब आये
सदा धर्म रूपहि भगवाना ❀ जाके चरण गंग परमाना
माता चलो ताहि पुर माहीं ❀ जहँ बस नृपति युधिष्ठिर आहीं
तब माता कहि बचन सुनाई ❀ कारण कवन तहां को जाई
देव धर्म नाहीं हम जाना ❀ वहां गये मम देश नशाना
गोरस अन्न दासि अरु दासा ❀ गये हमारे होहिं बिनासा
कृष्ण युधिष्ठिर का दोउ करै ❀ आपन पुर मिथ्या परिहरै
जैसे गृह वेहैं मन दीन्हा ❀ तैसे गृह आपन मन कीन्हा

दो० बहु प्रकार राजा कहे, माता मानति नाहिं ।
बांधि मातुकहँ राव तब, डारा डोली माहिं ॥

यहि प्रकार माता कहँ लीन्हा ❀ तब राजा चलबे मन दीन्हा
पुरके लोग चले सब संगा ❀ नृपति सदल हिय भरे उमंगा
नाना धन जेते गज श्वेता ❀ चले हर्ष नृप सबै सचेता
दिवस पांच तो पंथ सिराना ❀ देश हस्तिना आय तुलाना
योजन एक हस्तिपुर रहे ❀ राजा पाहँ भीम तब कहे
इहां रहो राजा तुम भाई ❀ मैं यह बात जनावों जाई
यह कहिके वृकओदर गयऊ ❀ हस्तिनपुर प्रवेश तब भयऊ
चारों बन्धु और भगवन्ता ❀ इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता
भाषेउ तब यह बात बुझाई ❀ अश्व सहित लै आयउँ राई

राजा सब परिवार समेता ❋ आयउ तव दर्शन के हेता
दरश चहै प्रभु तव चरननकी ❋ जो तारन सुर नर मुनिजनकी
तब नृप धर्मराज अस कहई ❋ जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई
जाय कहहु अस बयन हमारा ❋ तुम द्रुत नवसत करहु शृँगारा
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा ❋ वेगि चलहु कुन्ती के सङ्गा
भीमसेन द्रौपदि पहँ गये ❋ पूछा कुशल कहन तब लये
कहेउ भीम सब कुशल हमारा ❋ यौवनाश्व मम पुर पगुधारा
परभावति अति नैन बिशाला ❋ सखी सहस दश संग रसाला

दो० तुरे सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हारो चहत हैं, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी ❋ बिनु शोभा नहिं देव मुरारी
यहि अवसर नहिं यादवराई ❋ बिन गोविन्द नहिं शोभापाई
तब द्रौपदी भीम से कहीं ❋ हैं हरि निकट गये नहिं अहीं
इतना कहत भीम संचरा ❋ नृप के पास देखि हरि खरा
चले नृपति सँग चारो भाई ❋ कृष्ण सहित शोभा बनिआई

दो० रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गजचढ़ि चारो भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई ❋ हय बनाय कर अग्र चलाई
धर्मराज पै अमरहुँ जाई ❋ हनि निशान जनु घन घहराई
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा ❋ महि डगमगे सैन्य के भारा
आय दोउ दल सम्मुख भयऊ ❋ धर्मराज तब देखन लयऊ
देखि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❋ बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा

दो० यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार ।
तब रथ से उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञभाषाकृतेयौवनाश्वधर्मराज-
सम्मिलनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

बैशम्पायन ऋषि तब भागे ❋ जनमेजय सन भाषन लागे

यौवनाश्व तब लागे पाऊ ❀ आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ
तुम मोरे जस चारो भाई ❀ मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई
धरहु चरण उर करु सेवकाई ❀ जेहि ते अहै हमार बड़ाई
यौवनाश्व प्रणयउ यदुबीरा ❀ भो निर्मल बहु शुद्ध शरीरा
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा ❀ नृप द्रौपदि सह आशिष दीन्हा
धन्य तुरँग सब कहबे लयऊ ❀ जेहिहित तीन बीर चलिगयऊ
धनि वृषकेतु कर्ण के बारा ❀ जेहिते भयउ सुखी परिवारा

दो० भावी धन्य हमार यह, पूर्व पुण्य बहु कीन्ह ।
दर्शन नयन जुड़ानेउ, नृप ये कहिबे लीन्ह ॥

पुनि अर्जुन माद्रीसुत आये ❀ भे अनन्द तब अङ्कम लाये
अर्जुन नमस्कार तब कियऊ ❀ अस्तुति करि तब कहबे लयऊ
हमरे तुम जस धर्म नरेशा ❀ अतिगरिष्ठ जस देव महेशा
धन्य देश जहँ बसहु नरेशा ❀ हमरे भाग्यन यहां प्रबेशा
पुनि सुबेश पारथ से मिलेऊ ❀ करि प्रणाम तब कहबे लयऊ
वृषकेतू कै कीन्ह बखाना ❀ जिनके करत मिले भगवाना
धन्य तहां जहँ बस भगवाना ❀ बिनु गोबिन्द नर प्रेतसमाना
हरिसम दुर्लभ और न आना ❀ कृष्ण नाम नित करौ बखाना

दो० धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार ।
मिलकर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार ॥

पहर एक जब निशिगत भयऊ ❀ दामोदर तब कहबे लयऊ
सुनहु बात इक धर्मकुमारा ❀ यज्ञ काज सब करहु सँभारा
चैत पूर्णिमा गत भो राजा ❀ अब बिशाख शुभ करिये काजा
मासबिशाखतिथिनौमी धरिया ❀ तेहि दिन यज्ञ अरम्भन करिया
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ यज्ञ करे कहँ यह व्यवहारा
कञ्चन सुबरन सागर पारा ❀ तहँ रह बीभीषण भूआरा
तहँवां से कञ्चन जो आवे ❀ सोइ यज्ञ के यतन करावे
तब राजा मन बिस्मय कीन्हा ❀ कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा

तब अर्जुन अस कहबे लागे ❀ राजा कहहु हमारे आगे
जेहि कारण तुम बिस्मय करहू ❀ सो आयसु मेरे शिर धरहू
दो० तब राजा मन हर्षेउ, हँसिकै बीरा दीन्ह ।
अर्जुन लीन्हों बिहँसिके, चरण जुबन्दै कीन्ह ॥
कृष्णहिं किय प्रणाम करजोरी ❀ होहु सहाय जगतपति मोरी
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ बेगि जीत फिरु पराडुकुमारा
तब अर्जुन दक्षिणदिशि गयऊ ❀ तहँ यक राक्षस भेटत भयऊ
भाष्यो दैत्य भाजि कहँ जासी ❀ मारों तोहिं मेलिके फाँसी
तब अर्जुन तिष्ठित ह्वै कहई ❀ कौन बीर तैं डांटत अहई
तब दानव अस कहै प्रचारी ❀ राय बिभीषण के रखवारी
तब अर्जुन किय मन अनुमाना ❀ मारों दैत्य करों यश माना
दैत्य शैल शिर ऊपर छावा ❀ सम्मुख अर्जुन सपदि चलावा
अर्जुन सपदि बाण कर लीन्हा ❀ शैलकाटि तो दुइ टुक कीन्हा
दैत्य भाजि लङ्का कहँ गयऊ ❀ हनुमत सों भेटत तब भयऊ
कह दानव सुनु पवनकुमारा ❀ इक क्षत्री बड़ आउ जुझारा
तहँवां सों भागत मैं आवा ❀ तुम्हरे शरणहि जीव बचावा
दो० मैं जानत हौं रामहहिं, की तौ लक्ष्मण आहि ।
भागि आये हम तुम पहां, जाहु खोजलेहु ताहि ॥
यह सुनि पवनतनय मन हर्सा ❀ चलहु साथ नहिं कीजे अर्सा
कह दानव सुनु पवनकुमारा ❀ हम नहिं जाउब साथ तुम्हारा
शैल एक मैं उन पर डारा ❀ धनुष टँकोर कीन्ह वे छारा
तिनके डरसे भागि मैं आवा ❀ कैसे मुख मैं उनहिं देखावा
बन्दि चरण दानव गो तहां ❀ बीभीषण नृप बैठत जहां
तबकहिबचन ताहिसमुझावा ❀ बीभीषण सुनि आनँद पावा
तब हनुमत निजमन अनुमाना ❀ पवनतनय तौ पवन समाना
दो० पवन तनय तब ऊछला, उदधिपार चलिआय ।
सेतु बांध जहँ बांधेउ, खड़े हुये पुनि जाय ॥

हनुमत कोपि कहे अस बाता ॥ कौन बीर यह आहि निबाता
पूछ्यो आये तुम केहि कारन ॥ तब कह पारथ लाउ न बारन
कह अर्जुन सुनिये कपि बीरा ॥ हम अर्जुन आहहिं रणधीरा
गुरु सहोदर बध हम कीन्हा ॥ चिन्ता सोइ युधिष्ठिर लीन्हा
बोलेउ राज्य छोड़ि बन जाहीं ॥ भारी पाप भये हम पाहीं
गुनत गये रात सब बीती ॥ चिन्ता नृपहिं भयउ नहिं रीती
व्यास ऋषै तब पूछै लीन्हा ॥ कारण ताहि यज्ञ उन कीन्हा
तब राजा दोऊ कर जोरा ॥ सुनहु व्यासमुनि बिनती मोरा
गुरू सहोदर बध हम कीन्हा ॥ भारी पाप हमहिं बिधि दीन्हा
कहा व्यास सुन धर्म सुराजा ॥ त्रेता कियउ राम मखसाजा
रामचन्द्र त्रेता महँ भयऊ ॥ पूर्बिलकथा कहन तब लयऊ
रामचन्द्र रावण बध कीन्हा ॥ ताकारण यज्ञहिं चित दीन्हा
ऐसन यज्ञ तुमहुँ जो करहू ॥ तब यहि पापन ते उद्धरहू
व्यास ऋषय अस कहिकै गयऊ ॥ तेहिके सेवक बनचर रहाऊ
रामचन्द्र तब किय अनुमाना ॥ केहिबिधिउतरबजलधिमहाना
तीनि दिवस सागर तट रहेऊ ॥ तऊ न पथ सागर सन लहेऊ
तब कोपेउ लक्ष्मण बलबीरा ॥ खैंच श्रवण लगि धनु पै तीरा
कर धरि जाम्बवन्त समुझावा ॥ स्वामी उदधि आपु चलिआवा
सुनि लक्ष्मण मन धीरज भयऊ ॥ ब्राह्मणरूप सिन्धु चलि अयऊ
ऐ स्वामी का अवगुण मोरा ॥ केहि हित बाण शरासन जोरा
हौं सेवक तुव आदि गुसांई ॥ तुम मारहु मम काह बसाई
तुम जो मोकहँ दीन्ह बड़ाई ॥ उतरहि कपि तो का प्रभुताई
नलअरुनील जोकपिकर बीरा ॥ औ सुग्रीव आहिं रणधीरा
नल अरु नील खेल लरिकाई ॥ वाही समय ब्रह्मऋषि आई
तिन अशीश दीन्हा मनलाई ॥ सिन्धु शिला तोहिं दे उतराई
सो नल नील आहिं तुवसाथा ॥ आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा

दो० सो अशीश तिन पाये, कीजै कापर रोस ।

सो आज्ञा इन दीजिये, बांधहिं सागर चोख ।
तब हनुमत सुग्रीव बुलावा ❀ तुरतआय तिन प्रभु शिरनावा
तब कपि कहा सबहिं समुझाई ❀ गिरि पहार तुम आनहु जाई
तब सब मिलि पहार लै आये ❀ सेतु बांध तब तुरित बंधाये
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ चले बीर निर्भय मन कीन्हा
यहि मिसु सागर बांधेउ बीरा ❀ तब तुव लङ्क जरे रणधीरा
सेतुबन्ध चाढ़ि जाय न देऊं ❀ मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं
दो० रामचन्द्र कर सेवक, पवनपुत्र हनुमान ।
रण जीतेउ कौरवदल, देखों तुव अनुमान ॥
अर्जुन बाण हाथ कै लीन्हा ❀ तब हनुमन्तहि उत्तर दीन्हा
तोहिं राम अतुलितबल दीन्हा ❀ तौ समर्थ मम खोजै लीन्हा
तुम हनुमन्त पवनसुत जाये ❀ बलअनुमान न मोसन आये
कहु सागरहिं करौं जरि छारा ❀ कहु बाणन ते बांधों सारा
कहहु मारि पौरुष तुव चूरों ❀ की तोहिं मारि सिन्धुमहँ बूरों
कोपि बचन जब अर्जुन कहेऊ ❀ हनुमत तब सम्मुख ह्वै रहेऊ
दो० कोपि पूंछ तब फेरा, हनुमत बीर रिसान ।
दोऊ बीर बिचक्षण, दोऊ चतुर सयान ॥
तब अर्जुन धनु शर संधाना ❀ हनुमत सन भाषेउ परमाना
एकहिं बाण समुद्रहिं पाटौं ❀ तब निजनाम धनञ्जय राखौं
तब हनुमन्त कोपि कह बैना ❀ देखब बाण तोर भरि नैना
मोर बांध तैं चढ़िकै देखा ❀ तोर बाण मोरे केहि लेखा
तोरों बाण तौ हनुमत बीरा ❀ नातरु सेवक हों रणधीरा
जो तोरे जिय अस मन देऊ ❀ तब अर्जुनहुँ प्रतिज्ञा लेऊ
दोनों बीर पैज जब किये ❀ डोलेउ नारायण तब हिये
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता ❀ जहां हुते अर्जुन हनुमन्ता
दो० यज्ञविषम जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान ।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे, भक्तिबश्य भगवान ॥

ऊठे कृष्ण द्वारका बासी ❀ सबै कृष्ण घट आहिं निवासी
एक रूप राखे मख माहाँ ❀ दूसर देह सिन्धु तट माहाँ
खैंचेउ बाण शरासन ताना ❀ मारेउ शर पारथ सन्धाना
दोऊ बीर प्रतिज्ञा कीन्हा ❀ कृष्णचरण तब सुमिरे लीन्हा
उदधि पाटिगो आरहिंपारा ❀ कह अर्जुन सुन पवनकुमारा
जो यह पाव तोरु हनुमाना ❀ तौ न छुवौं मैं धनु गुन बाना
कृष्णचरित्र तबै यह कीन्हा ❀ बांध के तरे पीठ प्रभु दीन्हा
तब हनुमन्त कोपि कह बाता ❀ देखब बांध तोर मैं भ्राता

दो० हनूमान बहु कोप करि, उछल बांध बलबीर ।
जहँवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहिं शरीर ॥

तब हनुमत लज्जित है गयऊ ❀ दौरि चरण अर्जुन कहँ नयऊ
यहां बहुत जो कञ्चन पावों ❀ तब मैं हस्तीनगर सिधावों
कह हनुमत यह केतिक बाता ❀ सुबरन आनि देहुँ मैं भ्राता
तब अर्जुनकहँ धीरज दयऊ ❀ कहि यहबचन पवनसुत लयऊ
वही ठाम अर्जुनहि बिठावा ❀ आज्ञा लै हनु लङ्कहि आवा
तत्क्षण खोजे कञ्चन मेरू ❀ कञ्चन खोज लेत सहुँ फेरू

दो० खोजतबीतेउ तीनदिन, हनुमत मन अनुमान ।
क्रोधित भे तब हनुबली, लङ्का सबै सकान ॥

यह जब भेद बिभीषण पावा ❀ जहां पवनसुत तहँवां आवा
अञ्जलि जोरि बीनती कीन्ही ❀ कवन काजप्रभु आयसुदीन्ही
तब हनुमन्त कहैं सुनु बीरा ❀ कञ्चा सोन देहु रणधीरा
कहा बिभीषण अञ्जनि पूता ❀ तुम आपुही कीन्ह अजगूता
सगरी लङ्का खोरि जराये ❀ तहँ सो कञ्चन रहे न पाये
एक बात सुनहू हनुमाना ❀ रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना

दो० हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर वृथा कोहाहु ।
जिउ हमार तुव आगे, जैसे शशि को राहु ॥

यह तो बात पवनसुत सुन्यऊ ❀ परमज्योतिके सुमिरण कियऊ

बाणी यह तब भई तुरन्ता ❀ काहे कोपेउ तुव हनुमन्ता
प्रथम लात कंगूरन मारा ❀ सो खसि परेउ समुद्र मँझारा
सो कञ्चन समुद्र महँ अहई ❀ मांगि लेहु यह बाणी कहई
तबहिं बिभीषण बिदा करावा ❀ तबहीं चला पवनसुत आवा
डाटि दर्प जो कह हनुमन्ता ❀ देहु रत्न नाहिं बाँधु तुरन्ता
ब्राह्मणरूप उदधि प्रगटाना ❀ हनुमतसे छल कियो महाना
हम नाहिं जानहिं कञ्चन मेरू ❀ काहे कोपि कहत चहुँफेरू

दो० हम नाहिं जानहिं हनुमत, कञ्चन मेरु सुमेरु ।
जो घट मोरे होहि तौ, खोजि लेहु चहुँफेरु ॥

कहि यह सिन्धु हँसो मदमाता ❀ तब हनुमन्त कोपि कह बाता
जैसे लङ्का मैं जो डाहा ❀ तैसे आज समुद्र उछाहा
पवनपुत्र तब मैं हनुमन्ता ❀ नातो कञ्चन देहु तुरन्ता
नातो रारि होइ यहि ठाईं ❀ देखिहो आजु मोरि मनुसाईं
तब हनुमत लंगूर उठावा ❀ अवलोकत मीनहुँ डरखावा
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमन्ता ❀ बिधी विष्णु तब कांपु तुरन्ता

दो० देहु मोहिं कञ्चन नहीं, कह अस पवनकुमार ।
ब्रह्मा विष्णु जु रक्षहीं, तौ मारों परचार ॥

इतनी बात पवनसुत करिया ❀ सिन्धु डरे मत्स्यहु खरभरिया
कह राघव सुनु सिन्धु गुसांईं ❀ इहां मृत्यु हम सब कर आईं
देहु सोन सब के जी रहई ❀ राघव अस समुद्र से कहई
कह समुद्र जो है घट तोरे ❀ आनि देहु कस लावहु मोरे
उगलि मीन तब कञ्चन दीन्हा ❀ करन उठाय सिन्धु तब लीन्हा
पवनपुत्र के आगे आवा ❀ करिविनती हनुमत समुझावा
मैं नहिं जानों मर्म दोहाईं ❀ क्षमा करहु अपराध गोसांईं
राघव मत्स्य कहां तो पावा ❀ सोमोहिंआपुहिआनिमिलावा

दो० तबहिं पवनसुत हर्ष, कञ्चन लिये सुमेरु ।
आनि दीन्ह अर्जुन कहँ, अङ्कमाल किय फेरु ॥

तब हनुमत अर्जुन सन कहेऊ ❋ हम सेवक अब राउर अहेऊ
जहँ सुमिरहु आवें तोहिंपासा ❋ अरु हनुमत यहबचनप्रकासा
जैसे रामचन्द्र के काजा ❋ बिमुखहोहिं तौ मातुहिंलाजा

दो० तब अर्जुन सम्बोधेउ, सुनहु बीर हनुमान ।
हमहूँ तुरत अब जाहिंगे, जहँवाँ श्रीभगवान ॥

अङ्कमालिका अर्जुन किये ❋ पुर हस्तिन कहँ मारग लिये
हनूमन्त तब उहवाँ गयऊ ❋ तब अर्जुन हस्तिनपुर अयऊ
कीन्ह प्रणाम पार्थ तब जाई ❋ कृष्ण लीन्ह तब अङ्कमलाई
सुनि कुन्ती तब हर्ष कराई ❋ द्रौपदि सँग लै आरति लाई
राय युधिष्ठिर अङ्कम कीन्हा ❋ सहदेव नकुलचरणशिरदीन्हा

दो० पाँचौ पाण्डव मुदितमन, कृष्ण युधिष्ठिर राय ।
धन्य धन्य तुम अर्जुन, यज्ञ सम्बोधे आय ॥

सुन राजा अब कथा प्रमाना ❋ पतिव्रता परपुरुष न जाना
धर्मराज नृपती सख्याता ❋ पूछे व्यास ऋषी ते बाता
धर्म अधर्म पुण्य अरु पापा ❋ लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा
चारि वर्ण के धर्म प्रमाणा ❋ अपने धर्म केरि निर्माणा
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र बईसा ❋ चारों वर्ण धर्म परदीसा
जो जन जाप न होम प्रमाणा ❋ अपने धर्म करै निर्माणा
षट कर्मन बिप्रन परमाना ❋ इह सब बिना बिप्र कत जाना
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा ❋ क्षत्री धर्म याहि परकारा
कृषी बणिज बैश्यहु कर जाना ❋ सेवक धर्म शूद्र परमाना

दो० यहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव ।
रानी धर्म जो राजा, तोहिं कहौं अब राव ॥

पति आज्ञा सनद्ध रह जोई ❋ परपुरुषन से रहे अगोई
सासु ससुर की सेवा करे ❋ बीथिन माहिं सोचि पगु धरे
स्त्री धर्म इहै परकारा ❋ अब अधर्म जो सुनो भुआरा
कर्मन छहो हीन द्विज जोई ❋ क्षत्री बंश और जो कोई

आपन धर्म जो वैश्य न जाना ❀ दूसर कर्म करे परमाना
शूद्र गर्भ उत्तम ते करै ❀ इहै अधर्म रूप संचरै
ये गृह कहँ नारी जो जाई ❀ बिना काज सूनो हो राई
पति के आज्ञा नाहिं जो माना ❀ अपर पुरुष ते बात बखाना
बिधवा होके करे शिंगारा ❀ जानहु सब अधर्म के सारा
माता पिता पुत्र नहिं सेवा ❀ चञ्चल पुरुष नारि जो भेवा
दो० इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म उपाय।
पुण्य पाप औ राजा, सुनो सत्य मनलाय॥
गुरु को शिष्य जान सम हरी ❀ छेद बेद मन माहँ न करी
है गुरु ब्रह्म रूप समाना ❀ भिन्न भाव वाको नहिं जाना
सदा पवित्र सुकीरति रहै ❀ माता सम परनारिहिं कहै
भिक्षुक नाहीं होत निराशा ❀ कूप तड़ाग बाग परकाशा
येही पुण्य जगत महँ सारा ❀ व्यास कहै सुनु पाण्डुकुमारा
पाप कर्म कै सुनो बिचारा ❀ गुरु को आनहिं भाव निहारा
हृदय नाहिं सत सुकृत प्रकाशा ❀ परनारी ते सदा बिलाशा
भिक्षुक जन निराश फिरजाई ❀ ज्ञान धर्म हृदये नहिं राई
तनु अपवित्र सदा जो रहै ❀ मिथ्या बचन सन्त से कहै
गुरू द्रोह पावे न प्रसादा ❀ यह सबते है परम बिषादा
दो० यह सब पातक जगतहै, परधन हरु जो कोय।
सदा पाप मन बसत है, राजा सुनिये सोय॥
लक्ष्मी को भाषौं अस्थाना ❀ सदा पवित्र जौन नर जाना
सात बर्ष कन्या जु कहावै ❀ ताके दान धर्म फल पावै
पतिब्रता नारी जो होई ❀ सदा पवित्र रहति है सोई
द्विज बैष्णव अरु गुरुजन माना ❀ देवालय बहु कर निर्माना
काहू की निन्दा नहिं करहीं ❀ ताके गृह लक्ष्मी संचरहीं
अब सुनु राजा कथा बिछेदा ❀ जहां लक्ष्मी तहाँ न भेदा
जाके सदा जुआ मन भावे ❀ सुरापान में चित्त रमावे

परदारन रति सबै सुहावै ※ धातुनाम जो सबै चुरावै
पुस्तक तेल घीव अरु धाना ※ मूल पुष्प फल काठसमाना
अमवस्या संक्रांति सुहावे ※ एकादशी नारि मनलावे
दो० ग्रहणसमयअरुश्राद्धदिन, तियसँग भोग सुहाय।
देव गुरू नहिं मानहीं, तहाँ न लक्ष्मी जाय॥
व्यास कहे राजा के पाहा ※ यज्ञअश्व आनहु नरनाहा
धर्मराज भीमहि हँकराये ※ जाहु द्वारका हरिहित भाये
आनहु कृष्ण सहित परिवारा ※ द्वारावति मधुपुरी मँझारा
सबहि संग लै आवो जाई ※ राजा भीमहि कहा बुझाई
भीमसेन तब हर्ष अमाना ※ तब द्वारावति कियो पयाना
पहुँचेजाय कृष्ण के द्वारा ※ जेंवत थे तहँ नन्दकुमारा
बहुबिध भोजन परसे आनी ※ पवन करत चारों पटरानी
जाम्बवती अरु रुक्मिणि बाला ※ सतिभामा लक्ष्मणा रसाला
जाम्बवती तब हास्य बखाना ※ नँदगृह भोजन भूलेउ कान्हा
क्षीर पियत बन महँ यदुराई ※ सो सब चितसे दीन्ह भुलाई
दो० कौतुक नारी करत तहँ, सो नहिं कीन्ह बखान।
तेहि अवसरमें भीम तब, तहँको जाय तुलान॥
तब सतिभामा हरिते कहे ※ आये भीमसेन तौ अहे
इहाँ न आवन दीजे नाथा ※ बूझे भीम कहत तब गाथा
कौतुक भीम करन तब लागे ※ ठाढ़ होय आंगन महँ आगे
कैधौं अशुचि होउँ भगवाना ※ कैधौं मैं पापी अज्ञाना
कहा सोदाइ हरिके आहे ※ ऐसा काम कीन्ह जो चाहे
जो वाकहँ हम देखन पावें ※ नासा श्रवण हीन करवावें
जो कछु अटके कण्ठ तुम्हारे ※ देउँ गदा ते बेगिहिं टारे
कौतुक सुने हर्ष भगवन्ता ※ हँसिके भीमहिं कहे तुरन्ता
आवो भीम जु भोजन करहू ※ मनमें कछू रोष नहिं धरहू
दो० भीमसेन तब भाषेउ, जो तुम भये भुआर।

जानो हरि हम जेंयभे, आपुन करो अहार ॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष मनलाये ❋ बाँह गही भीमहिं बैठाये
भोजन पान तुरित करवाये ❋ किय आचमन परमसुख पाये
बैठे भीम निमन्त्रण दीन्हे ❋ बांचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हे
तब श्रीपति अक्रूर बुलाये ❋ पुनि प्रद्युम्न अनिरुद्ध मँगाये
कृतवर्मा तुरन्त हँकराये ❋ सुनि सात्यकी सारथी धाये
सबते कहा कृष्ण यदुराई ❋ साजहु दल हस्तिनपुर जाई
बाजिमेध सुयज्ञ परवाना ❋ देखहु जाय ताहि अस्थाना
सुनिकै सबहिं हर्ष तौ पाये ❋ आगे पुरके लोग सिधाये
वर्ण वर्ण हय चढ़ि सब धाये ❋ श्वेत बाजिपर श्रीहरि आये

दो० वर्ण वर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ।
बल बसुदेव बुझायके, भाषे नन्दकुमार ॥
रक्षा करो नगर के माहा ❋ रहो द्वारका कहो यदुनाहा
तब बसुदेवजु बोलन लागे ❋ प्रेम अर्थ श्रीपति के आगे
साधूलोग धर्म जो जाना ❋ तबतो सँग लीजै भगवाना
नारीबश कामीजन होई ❋ दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई
इन्हके संग गवन जनि करहू ❋ बचन मोर तुम हियमें धरहू
यह कहिके तब बिदा कराये ❋ कृष्ण चलेउ बहु हर्ष बढ़ाये
रानी सबै कृष्ण के सङ्गा ❋ हर्षित गात चले श्रीरङ्गा
भीम करत हाँसी मग माहीं ❋ देखत बहुत नारिके पाहीं
वर्ण वर्ण सब चालिभे तहाँ ❋ आये एक सरोवर जहाँ
कुञ्ज अनेक हंस बहुताई ❋ नाना भँवर तहाँ गुणनाई

दो० कौतुक प्रेमकथा हरी, कहे रुक्मिणी पाँह ।
भानु अस्त जब लीन्हहै, सदा भँवर रस चाह ॥
निशिके माहँ हर्ष तब पावे ❋ प्रातबिकासिके पतिहिंदिखावे
स्त्रीके मन थिरना रहे ❋ सुनि प्रत्युत्तर रुक्मिणि कहे
यहां न पक्षपात कछु राखौं ❋ सत्यबचन प्रभु तुमसन भाखौं

भौंरा तो बालक सम अहै ❀ माता के हिय भीतर रहै
बालक सम रोदन सो करै ❀ माता हिय अन्तर संचरै
प्रेम सहित सुत गोद लगावै ❀ प्रीति हेतु मन चञ्चल धावै
जब रुक्मिणि यह बात जनाई ❀ सुनतहिं कृष्ण परमसुख पाई
रहे रात भरि हरि पुनि तहाँ ❀ अनुपम पाथ सरोवर जहाँ
तबहिं चले आये यहि भाँती ❀ मिले हरी के बाल सँघाती

दो० नाना कौतुक सभा सब, करत श्याम को देख ।
परमअनान्दित हर्षहिय, आदि सखा सबपेख ॥

पाछे सब गोपी तब आई ❀ हर्षित दर्श कृष्ण को पाई
नाना कौतुक भाव बनाई ❀ चले अनेक संग मन लाई
सबै संग मिल चल भगवाना ❀ तब यमुनातट आय तुलाना
तहँ उतरे प्रभु श्रीयदुराई ❀ नगर लोग सब भेटेउ आई
ब्राह्मण अरु बन्दीजन नाना ❀ पावन गुण गावत सविधाना
पुर नारी देखहिं घनश्यामा ❀ संन्यासी को करैं प्रणामा
होके सावधान इत रहो ❀ धर्मराज को पुर महँ कहो
निशि भो बिगत प्रात जब भये ❀ सबै राखि हरि अंकुत लये
अश्व चढ़े सब जन ले साथा ❀ पुर हस्तिन गौने यदुनाथा

दो० नाना कौतुक अस्तुति, पन्थ माहँ बिस्तार ।
बहुत होत भये नाटक, सूक्षम किया बिचार ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञकृतकृष्णराजासम्मिलनो
नामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशम्पायन कथा सुनाये ❀ राजा गृह तो श्रीपति आये
तब अन्तःपुर गे यदुराई ❀ राजा देखि परम सुख पाई
धृतराष्ट्र अरु बिदुर बन्धुगन ❀ कृष्ण मिलेउ पारथसहसबजन
भेट कृपाचार्यहि से कीन्हा ❀ धर्मराज तब पूजन लीन्हा
आये संग बंश परिवारा ❀ कहे कृष्ण सब आउ भुआरा
पिता और हलधर को ताहीं ❀ रक्षाको राखो पुर माहीं

सुने धर्म राजा सुख पाये ❀ अन्तःपुर तौ श्रीपति आये
कुन्ती और सुभद्रा भेटी ❀ पञ्चाली भेटी दुख मेटी
पीछे धर्मराज पहँ आये ❀ धर्मराज अर्जुनहिं बुलाये
कुन्ती आदिक जेती नारी ❀ निपुण काज कर कर शृंगारी

दो० सबै संगलै चलिये, जेहि थल सब यदुबंश ।
धर्मराजके बचनका, सब नर कराहिं प्रशंश ॥

चले सबै संगहि हरि लीन्हे ❀ आगे सबन अश्वकरि लीन्हे
राजा चले सबै दल सङ्गा ❀ नारी सब तौ परम अनङ्गा
आये सबै यमुन तट जहां ❀ सब यदुबंशी उतरे तहां
देवकि और रोहिणी आई ❀ कुन्ती चरण परी सो जाई
रुक्मिणि अरु सतिभामानारी ❀ कुन्ती चरण परी व्यवहारी
पांचाली हरिजन तेहि परशी ❀ यहिपरकार त्रिया सब दरशी
सतिभामा परिहास कर तहां ❀ परम कथा सतिभामा कहा
पञ्च पुरुष बश तुम कस कीन्हा ❀ तब पञ्चाली यह बर दीन्हा
तुम कछु बोल हरी ते कहो ❀ कैसे पुरुष कीन्ह बश चहो
आपन तन मन दीजै वारी ❀ तबहिं कन्तबश करै सो नारी

दो० एक पुष्पके अर्थ तू, सखिकै दीन्हेउ कन्त ।
कैसे प्रीतमहोत बश, मुँहकी प्रीति अनन्त ॥

यहप्रकार ते कौतुक नाना ❀ सखिन सबै आपन हठठाना
सतिभामा देवन सन कहा ❀ करन अश्वपूजन सब चहा
देवन कहा कृष्ण के पाहा ❀ श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा
मातु अश्व को पूजन चहैं ❀ आज्ञा कहा नरायण कहैं
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ समाधान कै सब समुझाये
त्रिया अश्व पूजी घर आवैं ❀ तब तुव कार्य पूर मन भावैं
तब बीरन सब साज बनाये ❀ श्यामकर्ण के संग सिधाये
सब जब अश्वहि पूजन लागी ❀ कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी
गो अनुशल्य तहां बिकराला ❀ जहां अश्व को पूजैं बाला

कृष्णहिं बधौं शाल महँ आई ❀ लेउँ बैर मारौं यदुराई

दो० यह बिचारिकै राक्षस, घेरेउ जाय तुरङ्ग ।
शोर भयो त्रियथूथ महँ, बीर भये सब भङ्ग ॥

अश्व बांधि वह हमहीं राखा ❀ समाधान अपने बल भाखा
कृष्ण कहे पारथ ते बाता ❀ हरे अश्व सब के सख्याता
महागर्ब करि यह लै गयऊ ❀ आजुकाल दैत्यन यह भयऊ
धर्मराज से कह ब्रजराजा ❀ अश्वहरन से भै मोहिं लाजा
मरहिं बीर तुव हारहिं क्षत्री ❀ यौवनाश्व क्षत्री पति अत्री
अश्व लीन्ह अब का बरु चहिये ❀ ताकारण सबही ते कहिये
तब श्रीपति बीरा कर लीन्हे ❀ क्षत्रिनशीश नीच तब कीन्हे
काहू के साहस नहिं चीन्हें ❀ कामदेव तब बीरा लीन्हें
मैं गहि अश्वक्षणक महँ लावों ❀ कामदेव तब नाम कहावों
कामदेव चढ़ि रथ पर धाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये

दो० प्रदुम्न केरे हाथ तब, बीरा श्रीपति दीन्ह
बीर सबै चुप भवन गे, वृषकेतुहि सँग लीन्ह॥

कर्णपुत्र रथ चढ़िकै धाये ❀ कामदेव के साथहि आये
हांक दीन अरु शंख बजाये ❀ दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये
रहु रहु काम कहे जब बाता ❀ कर्णपुत्र देखेउ सख्याता
तब अनुशल्य काम परचारा ❀ बहु प्रकार ताही तुतकारा
पतिव्रत नारि पुत्र के पाहीं ❀ चले तेज तोरत धिक नाहीं
महाक्रोध करि दैत्य भुवारा ❀ पांच बाण कामहि के मारा
लगत बाण तब भयो अचेता ❀ उड़ि हरि पहँ छाँड़े तब खेता
देख क्रोध किय नन्दकुमारा ❀ तुरत कामको चरण प्रहारा
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा ❀ कर्म कमीन जन्मलिय कहा
गर्भपात काहे नहिं भयऊ ❀ हारे समर प्राण नहिं गयऊ

दो० गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश ।
काहे होत कुनाम मम, भाषे श्रीहृषिकेश ॥

सुनत भीम असगुन मनलाई ❀ ऐ प्रभु काम भागि नहिं आई
बाण तेज ते तुर उड़ि आये ❀ बरबस काम आप पहँ आये
सबै दोष क्षमिये अब कामा ❀ हम लै संग जात हैं धामा
कामहि संग भीम लै धाये ❀ गदा घाय बहु बीर उड़ाये
भीम ने गदा घाव दल मारा ❀ हाथ पायँ चूरण करि डारा
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ कोटिन गदा रथिनको मारा
कर्णपुत्र तब भीम ते कहई ❀ आप समान जगत को अहई
तुम लायक दल है यह नाहीं ❀ इत क्यों अस्त्र गहे रणमाहीं
सुने भीम हर्षित है कहई ❀ काम परा भय संगर रहई
तुम मारो रिपु को दल भारी ❀ हम राजहि मारब परचारी

दो० यहकहिक्रोधित भीमभो, तब राजा शिरधाय ।
कालसरिस शर मारेउ, भीममुरछि गिरजाय ॥

मूर्च्छित भीम देखि जगतारन ❀ आये इत रण को पगुधारन
क्रोधित दारुक रथ लै आये ❀ हांकमारि राजा पहँ आये
तब अनुशल्य हांककर दीन्हा ❀ मैंही इन को वध है कीन्हा
भीम काम रण महँ मैं मारा ❀ अब बल देखौं नन्दकुमारा
तबहीं दैत्यराज परचारा ❀ मारी बाण कीन्ह परिहारा
चारो बाण तुरंगहि लागे ❀ रथके अश्व तुरत ही भागे
भो अदेख रथ श्रीभगवाना ❀ तब हरिको आगमन बखाना
मैं तो पापी हौं भगवाना ❀ आप गये मैं भेद न जाना
पुहुपवन्त कन्या जो होई ❀ रजस्वला अस्नान करोई
तादिन पुरुष जो तजिके भागे ❀ गर्भपात की हत्या लागे

दो० मोर देश के सब नहीं, अरुमम पावन कीन्ह ।
दीजै दर्शन नाथमोहिं, सुनिहरि दर्शन दीन्ह ॥

जब श्रीहरि तौ आगे आये ❀ तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये
तीनि बाण तब प्रभुहि चलाये ❀ एकहि शरते काटि गिराये
हरिके बाण क्रोधते काटे ❀ औरहु एक बाण तब डाटे

प्रभु के तनु में लाग्यो बाना ❀ मूर्च्छित भये तहाँ भगवाना
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो ❀ भागे सैन्य चेत तब पायो
धर्मराज जब देखे नैना ❀ हा हा शब्द करे तब बैना
हरिप्रिया अरु रुक्मिणि रानी ❀ मूर्च्छित देखा शारँगपानी
रोदन करतीं हरि की रानी ❀ हा हा शब्द भये घनबानी
कछु चेते जागे यदुराई ❀ सबहि समोधि परम सुखपाई
तब सतिभामा कह्यो रिसाई ❀ कछुक चेत जान्यो यदुराई
जब प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ ❀ बलिअनुशल्यमलेच्छनकियऊ
दो० तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात ।
चण्डिरूप अब धरब मैं, दैत्य बधब सख्यात ॥
यहि अन्तर श्रीपति तब जागे ❀ महाक्रोध हिरदै महँ लागे
गहे अस्त्र रथही चढ़ि धाये ❀ युद्धभूमि रण भीमहिं आये
वृषकेतुहि कर शारँग धारा ❀ सत बाण अनुशल्यहि मारा
तब अनुशल्य चारि शर मारा ❀ वृष्यकेतु रण काटि प्रचारा
चारी बाण बहुरि कर जोड़े ❀ मारेउ रथके चारिउ घोड़े
एक बाण ते सारथि मारा ❀ रथ सारथि पैदल संहारा
तेहि क्षण सूरज देख न पाये ❀ हय रथ तब बेगही पठाये
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना ❀ शरनछांह अनुशल्यछिपाना
सारथि अश्व तुरत संहारा ❀ क्रोधित भो अनुशल्यभुवारा
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा ❀ तब करगहि वृषकेतु फिरावा
दो० कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्यहि गहि लाय ।
सम्मुख देखत कृष्णके, पन्द्रह बार फिराय ॥
फिर अस कहा सुनो जगनायक ❀ यह तुरङ्ग हरने के लायक
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा ❀ जो अनुशल्य बीरकहँ मारा
ऐसी बात कहन हरि लागे ❀ यहिअन्तर अनुशल्यहुजागे
जब देखा तहँ श्रीभगवाना ❀ नाना स्तुति हर्ष बखाना
कर्णपुत्र कहँ धनि कर भाखे ❀ तव प्रताप मैं श्रीपति लाखे

जो जगदीश्वर भगत उधारे ❋ ध्रुवहि अचल पद कर संचारे
स्तुति करत बहुत तहँ राऊ ❋ सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा ❋ हर्षगात आलिङ्गन दीन्हा
दक्षिण कर गहिकर हरि लाये ❋ धर्मराजके दर्श दिखाये
सम्मुख हाथ जोरिभे ठाढ़े ❋ धर्मराज तब बचन उचारे

दो० भीमआदि ममबन्धु जे, तुमहौ तिनहि समान ।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु, राजा कहे बखान ॥

तब अनुशल्य कही अस बाता ❋ देहौं शीश भुजा सख्याता
भाषे प्रभु अरु धर्म भुवारा ❋ धन्य धन्य हो कर्णकुमारा
तव प्रताप अनुशल्यहि पाये ❋ परम हर्ष तब राजा आये
पाछे राजा धर्म नरेशा ❋ सहित अश्व पुरका परवेशा
रथ तुरंग गज पैदल सारा ❋ नृप हस्तिनपुरका पगुधारा
पहुँचे जाय नगर के माहीं ❋ बीर आदि जेते सब आहीं
अरु क्षत्री गण जेते आये ❋ अर्घ्य देय आसन बैठाये
भोजन पान सबन करवाये ❋ ऐसे दिन तब बीस गँवाये
चैत्र पूर्णिमा पुरव प्रमाणा ❋ तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा
सबै बिप्र तहँ यज्ञ बनाये ❋ द्रुपदसुता नृप तबहिं नहाये

दो० गांठि जोरि तब राजा, बैठि यज्ञ महँ जाय ।
मणि सुबर्ण बहु दान दै, उठीं युवतिजन गाय ॥

यज्ञ दान जो कछु बिबिधाना ❋ तेहि प्रकार तहँ दीन्हो दाना
बाद्य शब्द घन मानो गाजे ❋ पूजा अश्व वेद तब साजे
उत्तम घरी वेद जो बरणा ❋ बांधि अश्व के माथ अभरणा
तामहँ लिखे धर्म के राजा ❋ अश्वमेध यज्ञहि तिन साजा
ऐसो क्षत्री को जग आही ❋ गहे अश्वको निजबल दाही
यह लिखिके पार्थहि बोलवाये ❋ अश्व संग तब भूप पठाये
यौवनाश्व अनुशल्य भुवारा ❋ प्रदुमन है अरु कामकुमारा
अपनी अनी संग कै लीजै ❋ तबहिगमनअश्वहिसँगकीजै

पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये ❀ धर्मराज को शीश नवाये
माथे मुकुट गाण्डिव हाथा ❀ और सेन क्षत्री सख्याता
दो० दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार ।
भेटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुवार ॥
सब सों बिदा भये सुख पाये ❀ पाछे शीश मातु कहँ नाये
अश्व संग नृप आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ कह माता सों लीन्हा
कुन्ती कह केतक दल सङ्गा ❀ निज बल ते गवनहु रणरङ्गा
पारथ कहे सबै सरदारा ❀ श्रीपति अरु हैं कामकुमारा
यदुबंशी ये सोहहिं संगा ❀ यदुनन्दन दीन्हो मम संगा
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हे ❀ कर्णपुत्र की रक्षा कीन्हे
तासों यज्ञ सफल नहिं पैहो ❀ जो पुत्रन कहँ कहूं जुझैहो
यह कहिकै तब आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ चरण बन्दना कीन्हा
चले पार्थ तब हर्षित गाता ❀ कर्णपुत्र पुनि चले सख्याता
भद्रावती कुँवर की रानी ❀ सुनिपतिबिदाहोत बिलखानी
दो० पियअनुरागिनिनारितब, कहत पार्थ सों बात ।
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ ॥
रण महँ कादरता नहिं करो ❀ मम लज्जा माथे पै धरो
कर्णपुत्र बामा सों कहै ❀ जो सब तीर्थ पुण्य पै अहै
गया पिण्ड तिरिया गति पावै ❀ हरी नाम यमदूत बरावै
यह सब तो जो झूठ बखानहिं ❀ तो हम भागहिं रण संग्रामहिं
ऐसे चले कहे रह सोई ❀ आपन सेना संग लगोई
श्रीपति और भीम उठि धाये ❀ पारथ को पहुँचावन आये
मध्यदेश गये तजा तुरङ्गा ❀ नाना दल पारथ के सङ्गा
चला तुरंग तेज पगु जाई ❀ तौ पारथ परसे यदुराई
धर्मराज माथे पर लीन्हा ❀ श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा
पारथ मेरो सब धन प्राना ❀ तुम रक्षा कीजो सज्ञाना
दो० यह कहि सौंपा काम को, पारथही यदुराय ।

भीमसेन ते पारथ, बिदाभये सुखपाय ॥
सेन संग पारथ चलि आये ❀ श्रीपति पुनि हस्तिनपुर आये
भीम कृष्ण हस्तिनपुर आये ❀ पारथ अश्व संग तब धाये
बाजै बाजन होत अघाता ❀ चले बीर पारथ के साथा
कर्णपुत्र अनुशल्य कराला ❀ मेघवर्ण यौवन भूपाला
औसुवेग जो प्रदुमन बीरा ❀ अनिरुद्ध बीर जो है रणधीरा
सैन समूह चले जो साजा ❀ महावीर तब बाजन बाजा
चले बीर ह्वै हर्षित नाना ❀ सबही बीर भगत भगवाना
महाबली सब दल है राऊ ❀ चले बीर आनँद उपजाऊ
दल चतुरङ्ग पन्थ नहिं पावै ❀ आगे अश्व तेज पग धावै
पाछे सैना बीर अपारा ❀ हय सँग चले बीर बिस्तारा
हय गज रथ जो पैदल नाना ❀ क्षत्री महाबीर जग जाना
दिशि दक्षिण प्रथमहि सो धाये ❀ छल बल महाबीर सँगलाये
दो० पवनबेग दिशि दक्षिणा, चला तुरन्त तुरङ्ग ।
हर्षित सब सेनाधिपति, करत कुतूहल रङ्ग ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेअश्वदक्षिणादिशिगमनोनाम
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

राजा सुनो ऋषी तब कहे ❀ माहि सरस्वती नगर इक अहै
नालपुञ्ज तहँका नरनाहा ❀ प्रथमहि अश्व गयो चलितहाँ
नाम प्रदीप राजनि कुमारा ❀ कुञ्ज महा त्रियरूप अपारा
नदी नर्मदा तट सो अहै ❀ तहां अश्व गो मुनि अस कहै
कुञ्ज माहिं स्त्री जब पाये ❀ तहँ पर बीर देखि मन लाये
पढ़ि पत्रहिं तिरियन समुझाये ❀ धर्मराज के हय यहँ आये
है रक्षक पारथ धनुधारी ❀ सुनि नारी सब गृह पगुधारी
तबहिं कुँवर रणकर मन धरे ❀ दल लै पारथ सम्मुख खरे
तब सब क्षत्री देखन धाये ❀ कर्णपुत्र तहँ आगे आये
भाषे रण महँ काह बिचारो ❀ पाछे पारथ पास सिधारो

दो० पांच बाण हनि कर्णसुत, मारे चारि तुरङ्ग ।
पुनि सारथि रथ काटिकै, कियो बीर तब भङ्ग ॥
अयगांसी शर राजकुमारा ❀ क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा
कर्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना ❀ तब अनुशल्य चलाये बाना
शरन छाँइ छपि राजकुमारा ❀ जुरे बीर दूनौ सरदारा
नीलध्वज सुनि दल लै आये ❀ बाणावरिकर पुत्र छुड़ाये
सब दल कहँ तब मारे बाना ❀ पार्थ हाँककरि क्रोध बखाना
क्रोधयुक्त सुनि पारथ पायो ❀ पांच बाण लै क्रोधि चलायो
एक बाण ते राजा काटे ❀ तब पारथ क्रोधित शर छाँटे
नीलध्वज तब मूर्च्छा पाये ❀ जागे महायुद्ध मन लाये
अग्निबाण तब राजा मारा ❀ पारथ दल में भयो संहारा
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ जरै लगे सब करैं पुकारा
दो० मारि पार्थ तब बरुण शर, पावक स्तुति ठानि ।
हाथ जोरिकै पार्थ तहँ, बहु प्रशंस उर आनि ॥
सदा कृपा तव हमरे पाहीं ❀ रथ धनुबाण दिये तुम आहीं
अब कह दुख यह हमको दीन्हा ❀ वारेक महँ सैना बध कीन्हा
तब कह पावक ऐसी बानी ❀ पारथ तुम तो भये अज्ञानी
सदा रहत सँग जगके तारण ❀ अश्वमेध कीजै केहि कारण
हम राखे राजा कर माना ❀ ससुर हमार महिप जगजाना
जनमेजय पूछत मन लाई ❀ नीलध्वज कत ससुर कहाई
कैसे नृप कन्या तोहि दीन्हा ❀ वैशम्पायन कह मन लीन्हा
नीलपुञ्ज के ज्वाला रानी ❀ स्याम नाम कन्या भै आनी
भइ तरुणी तब पूछहिं राऊ ❀ चाहो बर सो हमैं सुनाऊ
कन्या कहे मनुष नहिं काजा ❀ देव श्रेष्ठ जो बर देहु राजा
दो० बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान ।
जो मन आवत पुत्रि तव, हमते कहो बखान ॥
कन्या कहेउ चार कै करनी ❀ कीन्हे पाप छले ऋषिघरनी

सर्फ काम बरा हुइ अज्ञाना ❀ ऐसे सँगते धर्म नशाना
दूजो पति जो नारी करै ❀ कुम्भीपाक नरक महँ परै
अग्नी माहँ मरेते जरही ❀ ताते दुइ पति नहिं अनुसरही
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै ❀ बचन मोरपितु यह सुनलीजै
पुरजन राजा अचरज माना ❀ कन्या करै अग्नि को ध्याना
राजा कहा सर्व जो खाहीं ❀ सात जीभ ताके मुख आहीं
मुख अरु चर्मत्यागि सुख कैसे ❀ नदी नार नीचे बह जैसे
हरकाशशि तेज यश गङ्गा ❀ पृथ्वीमहँ तिन कीन्ह प्रसङ्गा
काहू बात न कन्या मानी ❀ समाधान कै तबहीं आनी

दो० चन्दन घृत अरु चिनी लै, तिल जौ मधुको राव ।
जायफल लौंग कपूरकी, आहुति होम कराव ॥

बेद बाक्य मन्तर अहिवाना ❀ बिप्ररूप तब अग्नि तुलाना
राजा पाहिं हर्षि पगुधारा ❀ देखि बिप्र तब पूछ भुवारा
को हौ देव कहाँ ते आये ❀ तबब्राह्मणअस बचनसुनाये
कन्या स्वाहा हम को दीजै ❀ ताते आये नृप सुनि लीजै
नृपति कहै सो पावक चहैं ❀ बिप्र कहे हम पावक अहैं
राजा कहा प्रतीत मोहिं कीजै ❀ अग्नी रूप आपनो कीजै
मन्त्री कहा यही बिधि जबहीं ❀ पावकरूप प्रकटकियो तबहीं
भइ प्रतीत तब स्तुति लाई ❀ कन्याकी तब मौसी आई
सो कहि द्विज चेटक यह करै ❀ प्रकट रूप अग्नी को धरै
राजा कहे आप गृह माहाँ ❀ परखाये कैसी जय ताहाँ

दो० ताके गृह पावक गये, रूप धरा बहु भार ।
चीर कंचुकिहि जारत, और शीश को बार ॥

राजा पहँ वह रोवत गई ❀ राखिलेहु वह पावक अहई
स्तुति करि नृप आगि बुझाई ❀ तबहिं ब्याहकी बात चलाई
मेरे गृह में संतत रहौ ❀ आवै रिपु तेहि जारत रहौ
ऐसे बचन करौ परमाना ❀ तब राजा दिये कन्यादाना

राजा गृह में पावक रहै ❀ वैशम्पायन राजहि कहै
सो बाचा से सैन जराई ❀ ताते पारथ स्तुति लाई
पारथ पहँ पावक तब कहै ❀ पयनिधि बहुतकछू अबअहै
अब देखो दल तुमही नैना ❀ उठिहैं सबै तुम्हारी सैना
सबै उठे जब पार्थ निहारा ❀ राजा पहँ पावक पगुधारा

दो० कहेजाय तब नृपति सन, पारथ मित्र हमार ।
मिलौजाय नहिं जीतिहौ, जेहि सहाय कर्तार ॥

पारथ मित्र कहे बैसाई ❀ मोहिं खवायो अन्नपुराई
बचन सुनत राजा खुश भये ❀ तब रानी को पूछन गये
मिलन मन्त्र ते कोपी रानी ❀ जब राजाको बोली बानी
सैना रण न जुझाये काहू ❀ कायर है मिलिबे को जाहू
राजा सुनत क्रोध कर भारी ❀ गो पारथ पहँ रण बिस्तारी
राजा क्रोधित धनु संधाना ❀ तेहिक्षण बहुतचलायो बाना
ऐसे बाण पार्थ तब मारा ❀ बाण छाहँ ते भयो अँधारा
बाण पार्थ के राजहि लागे ❀ रथ चढ़ाय सारथि लै भागे
है अचेत तिरियासे कहे ❀ सुतहि गवाँय मन्त्र तब गये

दो० अस कहि हय धन राजा, संगहि चले लेवाय ।
श्यामकरन करि आगे, पारथ भेटहु जाय ॥

भेटे जाय द्रव्य बहु दीन्हे ❀ हर्षित पारथ सो लै लीन्हे
सैनापति तुम राउ हमारा ❀ परममित्र पारथ संचारा
अश्व पाय चलिबे मन दये ❀ सँग नीलध्वज राजा भये
ज्वाला क्रोध शोक ते भारी ❀ तुरत बधौ गृहमें पगुधारी
बन्धौ पहँ सो रोदन कीन्हा ❀ मोर पुत्र पारथ बध कीन्हा
बैर लेहु पारथ ते जाई ❀ सुनतहि बात कहे सो भाई
अपने गृह महँ बैठहु जाई ❀ आयो हम कहँ खोवन धाई
सो सुनि ज्वाला क्रोधित भई ❀ रोवत गङ्गा तट चलि गई
तरणी चढ़े कहे सो नारी ❀ भयो पाप लखु गङ्ग हत्यारी

गङ्गातरिके मानुष जेते ❀ ज्वालापाहि कहे सब तेते
दो० पतितपावनी गङ्गजू, जगको पापबिनास ।
सिधमुनि तटतेहि जायकै, पावत सुरपुरवास ॥
धर्म रूप तब कहे भवानी ❀ गङ्ग दोषका कहौं बखानी
ज्वाला कहा अपुत्री भारी ❀ सात पुत्र दीन्हें जल डारी
एक पुत्र तब तात बचाये ❀ ताको पारथ मारि गिराये
सुनतहि गङ्गा क्रोध अपारा ❀ पारथ कहँ शापौ बिस्तारा
मेरो पुत्र पार्थ संहारा ❀ छठे मास सो जैहै मारा
ज्वाला कहा कृपा करु माई ❀ बाण जन्म लै मारब जाई
तब गङ्गा दीन्हो बरदाना ❀ ज्वाला तजे गङ्ग महँ प्राना
प्राण तजे भो शर अवतारा ❀ अर्ध चन्द्र पर्वत तनु धारा
जन्म बाण पाये परसंगहि ❀ पारथ सुत के रहे निषंगहि
बभ्रुबाहन है नाम भुआरा ❀ वही पुत्रते करब सँहारा
दो० यह चरित्र इतही भये, उत तब चलत तुरंग ।
नीलध्वज अर्जुन सहित, यौवनाश्व नृप संग ॥
जौन धर्म इक कानन रहा ❀ अश्व गयो वाही बनमहा
योजन एक शिला है जाहाँ ❀ अश्व जात भयो ताही माहाँ
पाहन लागि अश्व रहे कैसे ❀ चुम्बक लोहे लागत जैसे
कोटि यतन करि अश्व छुड़ावत ❀ शिलाछोड़ितबअश्वनआवत
तब सब शोच करन तहँ लागे ❀ कहे जाय पारथ के आगे
पारथ देखि शोच भयो भारी ❀ तब सेवकसे कहा हँकारी
देखो ऋषि कोई इत अहै ❀ पारथ बात सबन ते कहै
दूरि गये हेरन बन माहीं ❀ शंभरि नाम मुनी तहँ आहीं
नाहर गऊ सर्प शिष्य सन्ता ❀ मूस मँजारी संग अनन्ता
सदा प्रीति उनमें जहँ रहै ❀ ऐसो तेज मुनीको रहै
दो० द्युतिहि देखिकै मुनि कहा, बोलि धनञ्जय चाह ।
पारथ प्रद्युमन सात्यकी, यौवनाश्व नरनाह ॥

कर्णपुत्र संग ले गये तहां ❀ ऋषि आश्रम है बनमें जहां
पार्थ जाय तहँ बात जनाये ❀ धर्मराज यज्ञहि मन लाये
रक्षाहित हम सब इत आये ❀ बनमें अश्व शिला अटकाये
कौन उपाय अश्व अब छूटै ❀ गोत्रबन्ध को पातक टूटै
तब ऋषि कहे पार्थ सज्ञानी ❀ गीता सुनि के भये अज्ञानी
जो तुम काज करन को चाहो ❀ अस जनि कहो नारिते चाहो
कहो कि गोत्र बन्धु संहारा ❀ जो पालै सो मारनहारा
सर्व शरीर पुरुष रह मही ❀ गेह लिलार मुनी अस कही
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ ❀ अश्वमेध तौ करत अकारथ
पारथ कहा विष्णु की माया ❀ कोई जग महँ अन्त न पाया

दो० पारथके सुनि बचन अस, तब ऋषि कहै प्रकास ।
शिलाचरित्र जो कौतुक, हर्ष धनञ्जय पास ॥

संज्ञा पर्णीचगड इक रहै ❀ ताकी कन्या चगडी अहै
उद्दालक को दीन्हेउ ब्याहीं ❀ लै नारी आयो गृह माहीं
पति सेवा सिखवै सेवकाई ❀ चगडी सुनत क्रोध तब पाई
पति सेवा को मोहिं जो कहा ❀ मोसों नाहिं परोजन अहा
पुनि भाषे पूजा मन लाओ ❀ चगिड कहे का हेतु सुनाओ
पती पुत्र ते मोर न कामा ❀ तोरा बचन करौं परमाना
एक बार मज्जन लगि जाई ❀ कहे कमगडलु दीजै लाई
सुनतहि नारि क्रोध भयो भारी ❀ डारेउ फोरि भूमि दैमारी
पति के संग शयन नहिं करै ❀ पति की हँसी करत सो फिरै
दुष्ट त्रिया ते मुनि दुख पाये ❀ सुनत कमगडलु मुनिपदआये

दो० दुर्बल देखि उद्दालक, पूछेउ मुनि मनलाय ।
कौन हेतु दुर्बल भयो, कहो मुनी समुझाय ॥

तब उद्दालक बोलत भयऊ ❀ तिरियादुष्ट बिधातैं दयऊ
मोर कहा मनमें नहिं धरै ❀ अपने मनका कारज करै
पीतर श्राद्ध समय दुख पावैं ❀ क्यहिबिधिपितृश्राद्धमहँआवैं

तव हँसि कह्यो कमण्डलु बानी ❀ उलटी बात कहौ नहिं ज्ञानी
जो कछु कार्य करण तुम चहौ ❀ उलटे बचन नारि ते कहौ
हमतो गौतम तीर्थहि जैबै ❀ फिरत समय यहि मारग ऐबै
अस कहि मुनी कमण्डलु गयऊ ❀ तिरियहिआपु हीनमतदयऊ
काल्ही श्राद्ध पिताकी अहै ❀ प्रात कमण्डलु आवन चहै
मोते श्राद्ध कर्म नहिं होई ❀ केहिबिधिआवकमण्डलुसोई
सुनतहिं नारी क्रोधित भई ❀ बोली बात कन्त मति गई

दो० द्विजहिं बुलाओ प्रेमकरि, देव पिण्डको दान ।
उत्तम होवे श्राद्धविधि, मैं करिहौं निरमान ॥

बात उलटिकै श्राद्ध प्रचारा ❀ श्राद्धकर्म यहिविधिअनुसारा
जो कछु बचन कहै मुनि ताहीं ❀ तौन बात तिय मानति नाहीं
ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये ❀ इतना कहि मुनिनामनशाये
मुनि कछु कार्य करनको कहई ❀ प्राणजायँ बरु तिय नहिं करई
बात भूलिकै मुनि संचारो ❀ लै पिण्डा गङ्गा में डारो
सुनत बात क्रोधित ह्वै नारी ❀ लै पिण्डा घूरे महँ डारी
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी ❀ पाहन होहु जन्म हत्यारी
जब पारथ के दर्शन पैहौ ❀ शीघ्र शापते तब तरिजैहौ
शिला भई तब मुनिकी नारी ❀ फेरो हाथ बात सुन म्हारी
करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा ❀ जातहिं हाथ शिलामहँदीन्हा

दो० छूटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ।
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष ह्वै जीय ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधयज्ञकृतचुम्बकाश्वमोचनोनाम
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❀ पारथ अश्व चले मन लाये
छूट शिला ते अश्व सिधाये ❀ पम्पज पुरी अश्व तो आये
हंसध्वज राजा पुर माहीं ❀ पांच पुत्र राजा के आहीं
सुन्दरसेरन सबल कुमारा ❀ तीजे नाम सुरथ संचारा

चौथा पुत्र सुरथ परवाना ❀ सबते छोट सुधन्वा माना
दूत जाय राजहिं समझाये ❀ अश्व संग हैं पारथ आये
सुनि राजा मन चिन्ता आई ❀ तब सब सेनापतिहिं बुलाई
सब ते कहनलाग अस बैना ❀ अबलौं दीख न पङ्कजनैना
लखौं आज हरि आनँदकन्दा ❀ पारथ पास सदा यदुनन्दा
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू ❀ लाओ सबहिं दरश हरिकरहू

दो० हर्षित ह्वै सब आयकै, कह्यो सुनौ नरनाह ।
जो नहिं आवै युद्धहित, भुँजव कराहे माह ॥

राजा चले सबै दल साजा ❀ बाजन लगे अनेकन बाजा
बिद्रथ चन्द्रकेतु तब आना ❀ चन्द्रसेन सँग दल परमाना
चन्द्रदेव औ बरत सिधाये ❀ यह पांचौ राजा सँग भाये
सत्रह सेनापति लै साथा ❀ रणको चलत भये नरनाथा
पांच सहस इकसौ रथ आये ❀ सहस निशान तोप लदवाये
गजके ठाट पचासि हजारा ❀ लक्ष सहस्र रहैं असवारा
सब दल चढ़ि मैदानहि हये ❀ पाछे कुँवर सुधन्वा गये
दलमधि तेल कराहन भरी ❀ पावक लाय तप्त तब करी
जो नहिं आवै दलमहँ कोई ❀ मांझ कराह मृत्यु त्यहिं होई
शंख लिखित प्रोहित दुइ भाई ❀ बाचा हेतु सबसौं जाई

दो० चले सुधन्वा हर्ष हिय, माताको शिरनाय ।
कृष्ण दरश गति पाइहौ, माता कहेसि बुझाय ॥

तहँते गये कुँवर परनामा ❀ पाछे गये बहिनि के धामा
बहिनी करलै आरति कीन्हा ❀ तब बीरनते बोलन लीन्हा
बहिनि भेटिकै बाहर आई ❀ त्रिया प्रभावति देखन पाई
प्रिया कन्त सन कह वरि नारी ❀ ताहिछोड़ि कहँ चलेसिधारी
नारी एक सदाव्रत आही ❀ चलिये भवन देहु रति चाही
कुँवर कह्यो दिवस न होही रति ❀ तब नारी व्याकुलह्वै बिनवति
ऋतु स्नान कीन्हा मैं नाथा ❀ रतीदान दै करौ सनाथा

बिन अपराध पुरुष तियत्यागा ❀ गर्भ बधेकर हत्या लागा
बहुप्रकार नारिहि समुझाये ❀ मिलना कठिनबहुरिसुरझाये
दो० बिवशहि रसमे कुँवर तब, बिलमे तत्क्षणधाम ।
सुचित भये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम ॥
कुँवर कह्यो सुनु बचन हमारो ❀ को पीछे रह प्रश्न बिचारो
ताको भुँजहुँ कराहन माहीं ❀ याही प्रण कीन्हो मनमाहीं
तब नारी कह रतिदै जैये ❀ पीछे दरश लिहारो पैये
बिवश कुँवर नारी के परे ❀ टोप सनाह उतारी धरे
रति रस हेत तबहिं तौ साजा ❀ इत दलमाहिं हंसध्वजराजा
पूछनलाग सभन के पाहीं ❀ देखियत कुँवर सुधन्वा नाहीं
सुधि कराह भूला मैं जाना ❀ बेगि दूत तहँ करो पयाना
गहिकर केश कुँवर लै आओ ❀ ताहि कराहे माहिं जराओ
राजा दूत चलन मन दीन्हा ❀कारिरतिकुँवरशीघ्रशुचिकीन्हा
बांधि अस्त्र रथ भे असवारा ❀ हर्षित चलिभा राजकुमारा
दो० यहि अवसर में दूत सब, देख्यो कुँवरहि जाय ।
राजा आज्ञा जो दियो, कुँवरहि कहा बुझाय ॥
सुनतहिं शीश गाज जनु परी ❀ दूतन पाहिं बचन अनुसरी
आज्ञा तात अहै परमाना ❀ यहकहि कुँवरहि कीन पयाना
जातहिं गये पिता के आगे ❀ क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे
पारथ हरिके दर्शन कारण ❀ आये नहीं मूढ़ मति धारण
मेरी आनि कुँवर नहिं मानै ❀ सुनत कुँवर करजोरि बखानै
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहै ❀ रती दान जल्दी यक चहै
तेहिते म्वहिं ह्वैगई अबारा ❀ कीजे जो कुछ होय बिचारा
राजा दूतहि कह्यो बुझाई ❀ तेलहि तप्त करो अब जाई
अब तो नात पुत्र का नाहीं ❀ पूछो जाय पुरोहित पाहीं
सुनतहिं तेल तप्त तब कीन्हा ❀ प्रोहित पाहिं पूछ सब लीन्हा
दो० तबहिं पुरोहित अस कह्यो, अब पूछत का जानि ।

पुत्र हेतु माया विवश, ताते पूछत आनि ॥
वचन हीन राजा तब भयऊ ❋ अब हम यहाँ रहब नहिं कहेऊ
जाय दूत राजा पहँ कहेऊ ❋ राजाके मन चिन्ता भयऊ
राजागे प्रोहित के पासा ❋ बिनती करिकै वचनप्रकासा
करिबिनती प्रोहित दोउ भाई ❋ अपने सँग लेगयो लेवाई
तेल तप्त है पावक जैसो ❋ मन्त्री पाहिं कहै नृप ऐसो
मध्य कराह सुधन्वहि डारो ❋ तेलके मध्य जराय के मारो
मन्त्री गयो कुँवर के पासा ❋ करुवो वचन जाय परगासा
हमते कछु नहिं बनत बिचारा ❋ आज्ञातात जो कीन्हतुम्हारा
मधि कराह डारौ किन आना ❋ सुनाकुँवर तब कीन्ह बखाना
वचन तात का करो प्रमाना ❋ मन्त्र मोहिं भावै नहिं आना

दो० शोच कियेका होत अब, परवश जनि कोइ होय।
अब काकी शङ्का करो, कुँवर कह्यो असरोय ॥

तेल कराह अग्नि सम ताता ❋ कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता
मोसन घाटि भई जगतारन ❋ आयेते हरि दरशन कारन
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी ❋ तुहीं बिभीषण लिये उबारी
दीनदयाल राखि अब लीजे ❋ महिमा प्रकट आपनी कीजे
जैसे ग्रहते गजहिं छुड़ाओ ❋ ताहीबिधि अब मोहिं बचाओ
ऐसो सुयश रहै संसारा ❋ कुदा कराहे राजकुमारा
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा ❋ तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा
बहुप्रकार हरि अस्तुति ठानी ❋ कह्योअल्पनहिं बहुतबखानी
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली ❋ दीन्ह कराह कुँवर को डाली

दो० पावक उठा कराह सों, देखहिं सबदलबीर।
त्राहि त्राहिसबहिनकही, राखिलिये रघुबीर ॥

रोवहिं दलके सब सरदारा ❋ कुँवरहिं राखि हमैं किनमारा
शीतल तेल भयो सख्याता ❋ कुँवरबदन भयो कञ्जप्रभाता
केशव कृष्ण जपत यहिनामा ❋ प्रोहित संगकरै नृप प्रामा

कुँवरहि देखि पुरोहित कहै ❋ जाते अग्नि बरायनि रहै
कीधौं तेल तसनहिं आही ❋ कीकछुजरी कुँवर मुखमाही
दूतन कह्यो झूठ सब अहै ❋ केवल नाम कृष्ण को कहै
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी ❋ नरियर एक कराहे डारी
परत कराह फूटि छितराई ❋ प्रोहित के माथे लग जाई
तत्क्षण प्रोहित बहुत लजाना ❋ भक्तद्रोह मैं कियो निदाना

दो० धनि धनि कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरिवास ।
परा कराहे मों कहा, मिले कुँवर के पास ॥

विप्रआय अङ्कहि भरि लीन्हा ❋ अस्तुतिबहुतकुँवरकी कीन्हा
कुँवर प्रताप बिप्र सुख पयऊ ❋ भक्तिप्रभाव बदननहिंजरेऊ
ऐसी महिमा प्रभुकी बाढ़ी ❋ प्रोहित कुँवर दुहुँन कहँ काढ़ी
कुँवर साथ लैगये नृप आगे ❋ प्रोहिततबहिं कहन असलागे
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना ❋ इनके हृदय बास भगवाना
सुनि राजा तब सुतहिं बुलायो ❋ उठि नृप दौरि अङ्कलपटायो
राजा कुँवर दुहुँन सुख पायो ❋ बहुत प्रशंसा करि बैठायो
पितुके दोष धरहु नहिं मनमें ❋ मैं दलगमन करौं अब रणमें
हर्षित कुँवर तात पग परशे ❋ करि प्रणाम प्रोहितके दरशे

दो० रणको चले कुँवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।
गहो तुरँग तुमजाय अब, सबते कहा भुआर ॥

बीरन जाय अश्व हरि लाये ❋ युद्ध करनको राव सिधाये
कुँवर सुधन्वा सबके आगे ❋ बाद्य जुझाऊ बाजन लागे
सब दल समाधान करि रहे ❋ तब पारथ प्रदुमन से कहे
हमरो हय जो हरि लैगये ❋ अस बलधारी नृप सब भये
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा ❋ नीलध्वज कृतवर सरदारा
कामकहे अब उचितक अहै ❋ औरो सबहिं अस्त्र कर गहै
मेरी तात संमती अहो ❋ आप युद्ध कत कीन्हो चहो
कर्णपुत्र तब कहै यह बाता ❋ तुम दुइबीर प्रलय के घाता

इतहि रहो तुम हम रणजाहीं ❀ इतना कहि आये रणमाहीं
दो० कर्णपुत्र अरु नृपसुवन, दोउ भये इकठाँव ।
राजपुत्र तब पूछता, कर्णपुत्र के नाँव ॥
कह बृषकेतु कर्ण ममताता ❀ कश्यपकुलजो कह सख्याता
बृषकेतु नाम हमारो अहै ❀ सुनिकै बात सुधन्वा कहै
बन्धु छन्द मुनि गोत्र हमारा ❀ नाम सुधन्वा बीर अपारा
दोउ बीरन तो रण प्रणठाना ❀ क्रोधवन्त है गहि धनुबाना
नृपति पुत्र के मारे बाना ❀ सारथिरथ सबकिय भङ्गाना
मूर्च्छा पाय क्षणक महँ जागे ❀ बाणन बृष्टि करन तबलागे
दो० दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये वहि ठाम ।
कर्णपुत्र तब चढ़यो रथ, सुमिरि कृष्णका नाम ॥
कर्णपुत्र बहुजय रण लीन्हा ❀ बिपुलबीरक्षणमहँ बधकीन्हा
हना सुधन्वा बाण रिसाई ❀ कर्णपुत्र को मूर्च्छा आई
कर्णपुत्र रण मूर्च्छित जाना ❀ तब प्रदुमन हाँके मैदाना
तुर्तहिं काम पंचशर मारे ❀ सारथि हय पैदल संहारे
बिशिख लग्यो तब खसेतुरङ्गा ❀ जोती ध्वज छत्रहु भे भङ्गा
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना ❀ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना
तीनि बाण सारथि संहारा ❀ सिंहनाद करि राजकुमारा
नष्ट भयो रथ खण्ड तुरङ्गा ❀ दण्ड छत्र तो भे रदभङ्गा
दोनों बीर भिड़े रण करनी ❀ कबहुँ गगन कबहूंकै धरनी
गदा गदा ते क्षत बहु लागे ❀ मूर्च्छे दोउ कुँवर तब जागे
दो० कामदेव मूर्च्छित रहे, कुँवर रथहि चढ़िजाय ।
साहसक्षोहिणि सैन्यदल, मारतकुँवर रिसाय ॥
दीख तबै कृतवर्मा धाये ❀ कुँवर के ऊपर बाण चलाये
राजपुत्र बाणन ते मारा ❀ और बाण अश्वहि संहारा
एक बाण ते सारथि मारा ❀ रण महँ गर्जे राजकुमारा
तब कृतवर्मा साजि सिधाये ❀ देखतहीं अनुशल्यहु धाये

तीक्षण राज बाण बिस्तारा ❋ सो अनुशल्य कुँवरपर डारा
मूर्च्छित कुँवर परे रण माहीं ❋ बहुतै दल मारेगे ताहीं
हाहाकार करत सब भागे ❋ राजपुत्र यहि अन्तर जागे
क्रोधित कुँवर बाण तब मारा ❋ मूर्च्छाभइ अनुशल्य भुम्रारा

दो० क्रोधवन्त है राजसुत, मारे बाण अपार ।
हय गज रथ पैदल कटे, पारथ दल संहार ॥

पारथ दल तब भागन लागा ❋ ताक्षण बीर सात्यकी जागा
बिपरित बाण क्रोध करि छाटे ❋ पञ्च बाण ते धनु गुण काटे
दोनों बीर लड़त मैदाना ❋ दोनों मानहुँ देव समाना
रक्त भिजे जनु टेसू फूले ❋ देखत रूप बीर सब भूले
शेल चक्र कुँवर धै मारा ❋ मूर्च्छे सात्यकि रणहि मँझारा
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे ❋ तब अर्जुन रथ हाँक्यो आगे
कहा टेरि सुनु राजकुमारा ❋ मोर नाम अर्जुन धनुधारा
भीषम द्रोण कर्ण संहारा ❋ बड़े बड़े बीर और सरदारा
कुँवर कहा पारथ जगतारण ❋ सबरथ जिते बीरता कारण

दो० हरिसे सारथि साजिकै, आये हौ रणमाहिं ।
ताते भाषत पार्थ यह, जीति तुम्हारी आहिं ॥

तुमहिं जीतिहौं लैकरि काजा ❋ करिहैं यज्ञ हंसध्वज राजा
सुनि पारथ तब बाण चलाये ❋ दश बाणते कुँवर बिचलाये
काट्यो बाण कुँवर भयो क्रोधा ❋ राजकुमार महाबल योधा
बरषै बाण सके को भाषन ❋ सौते सहस सहसते लाखन
पारथ पावक बाण चलाये ❋ कुँवरके दलको बहुत जराये
बरुण बाण कूँवर तब मारा ❋ अग्नि बुझी बाढ़ी जलधारा
बर्षा की जनु उपमा पाये ❋ पवन बाण तब पार्थ चलाये
जलगयो सूखिउड़न दललागा ❋ राजहिं दीख पुत्र रिसपागा
तीस बाण क्रोधित है छाटे ❋ ध्वज पताक पारथ के काटे
कह्यो कुँवर अब पारथ सुनिये ❋ सारथि गिरे सारथी चहिये

दो॰ हरि सारथिको सुमिरही, जो चाहै कल्याण ।
नातरु बाम बिधाता, अन्तकाल तव प्राण ॥

पारथ सुनिकै जोती गहे ❋ रणदल माँझ जान अबचहे
महाकष्ट आयो परमाना ❋ पारथ तब सुमिस्यो भगवाना
सुमिरतही तुर्तहिं हरिआये ❋ जोती गहे पार्थ सुखपाये
तब पारथ ने कीन्ह प्रमाना ❋ राजकुँवर तब करे बखाना
आपन भाग्य बड़ा मैं जाना ❋ तुम दर्शन दीन्हा भगवाना
अस्तुति करिकै शारँग गहे ❋ बचन एक पारथ तब कहे
कृष्ण समान पायहौ सारथ ❋ आज देखिहौं तुव पुरुषारथ
पार्थ कह्यो शर तीन हमारा ❋ ताते करब तोहिं संहारा
कुँवर कह्यो तीनहुँ शर कटिहौं ❋ खण्डखण्ड करिमस्तककटिहौं
कह्यो पार्थ जो तोहिं न मारौं ❋ अपने पितु नरक महँ डारौं
इतना सुनि दौ बीर रिसाने ❋ क्रोधवन्त है शारँग ताने

दो॰ कुँवर कह्यो शर तोर मैं, जो न हतौं सुनु बात ।
तौ मम बास अधोगत, कुँवर कहै सख्यात ॥

राजपुत्र तब बाण चलाये ❋ हरिसमेत रथ माहिं बचाये
हाथ मारि सो पाछे गये ❋ पारथते हरि बोलत भये
तब पुरुषारथ देखौं पारथ ❋ बधपरतिज्ञा कीन्ह अकारथ
एक नारि कुँवर व्रत आहै ❋ ऐसी बात कौन निर्बाहै
हम तुमते यह व्रत नहिं होई ❋ कौन पुण्यते मारब सोई
राजकुमार बाण तब छाटे ❋ हय गज रथ पैदल सब काटे
कह्यो कुँवर गोबर्धन धरे ❋ गाय गोपकी रक्षा करे
पारथको अब राखौ हरी ❋ सुनत क्रोध पारथ तनुजरी
एक बाण पारथ कर लीन्हा ❋ तामहँपुण्य जगत पति दीन्हा
गोबर्धन धरि जो फल भये ❋ सोइ पुण्य हरि शरको दये

दो॰ धाये देखन देव सब, रहत काहि प्रण आज ।
दोउ बीर हैं भक्त हरि, काह करी ब्रजराज ॥

मारे पारथ बाण तुरन्ताहिं ❀ कुँवर बात यह कह भगवन्ताहिं
जो नाहिं शर काटिहै कै पापू ❀ यह कहि बाण चलाये आपू
अर्धचन्द्र तब बाणन मारा ❀ पारथ को शर काटि पवारा
अचरज सबै देवतन माना ❀ तब पारथ लिय दूसर बाना
रामअवतार पुण्य जो कीन्हा ❀ सो सब पुण्य बाणको दीन्हा
पारथ बाण करै सन्धाना ❀ कुँवर कहै सुनिये भगवाना
पुण्य तोहारे पारथ बाना ❀ मैं प्रण काटे तृणहि समाना
परनारी ते जो रति भावो ❀ बिन काटे सो पातक पावो
पारथ बाण तजे जो भारी ❀ करु संधान कुँवर धनुधारी
ऐसे बाण क्रोधकरि छांटे ❀ पारथ काहि वोहु शर काटे

दो० शङ्खध्वनि तब कुँवर करि, देवन अचरज पाय।
पारथ शर हरि सैन्य सब, काटे तृणसम भाय॥

कहै श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजै ❀ रहो युद्ध शङ्खध्वनि कीजै
हरिपारथ तब शङ्ख बजाये ❀ पाछे श्रीपति कह मन लाये
लेहु बाण सुनु बात हमारा ❀ यही बाण बध होय कुमारा
पारथ बाण हाथ लै लीन्हे ❀ मध्यकालबाँधि पश्चिम दीन्हे
श्रीपतिशर मन्त्रावलि कीन्हे ❀ सोइ बाण श्रीपतिकर दीन्हे
फर पर आप चले भगवाना ❀ पारथ सो शर करु संधाना
कुँवर कहै जाने जगतारन ❀ फर पर बैठिकै आवतमारन
मेरो प्रण सुनिये प्रभु सोई ❀ हरि हर नाम भेद कछु होई
जो नाहिं यह शरकाटिगिरायो ❀ तौ यह पाप जगतमहँ पायो
पारथ मारे क्रोधित बाना ❀ तीनलोक शर देखि सकाना

दो० कुँवर तेज तब बाणको, मारि माँझ शरमाहि।
काट्यो बाण सुपार्थको, रक्षकाल ज्यहि आहि॥

सबै देवतन अचरज माना ❀ पंखसहित आधा उड़िआना
आधा बाण लग्यो तब जाई ❀ राजपुत्र शिर काटि गिराई
जूझै कुँवर जगत यश पायो ❀ हरिकेचरण शीश उड़ि आयो

कृष्णहि कृष्ण जपत शिर रहई ❀ धाय कबन्ध अस्त्र कर गहई
शीशहि गहे हँसत भगवाना ❀ पारथ शर कीन्हा संधाना
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा ❀ राजाके रथ डारि सो दीन्हा
तब हंसध्वज शिर लै हाथा ❀ रोदन करत ठोंकिकै माथा
बहु बिलाप तो करै भुआरा ❀ ताको नहिं कीन्हा बिस्तारा
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा ❀ प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा

दो० हर्षित ह्वै हरि शीश गहि, दीन्हो गगन चलाय।
तहँ शिवशङ्कर पाय शिर, मालामुण्ड बनाय॥

दूसर पुत्र सुरथ है नामा ❀ पितुके सम्मुख कीन्ह प्रणामा
तात शोक वारण अब कीजै ❀ हमैं युद्ध की आज्ञा दीजै
पितु की आज्ञा हर्षित पाये ❀ रथ पर चढ़ि रणहेतु सिधाये
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा ❀ मानहु प्रलय गाज घनघोरा
अब कत जैहौ पारथ बीरा ❀ मेरो बन्धु मारि रणधीरा
हरी पुण्य दुइ जन्म को दीन्हा ❀ मेरो बन्धु तबहिं बध कीन्हा
यहि प्रकार सब कहा सुनाई ❀ पारथ पाहिं कह्यो यदुराई
बन्धु शोकते ब्याकुल आवो ❀ अब यासों नहिं जीतनपावो
पारथ कह्यो कौन रणधीरा ❀ सहसन बधे एक दिन बीरा
आप सहाय जगत के नायक ❀ सुरथ कहा मम जीतनलायक

दो० कृष्ण कहा पारथ सुनो, सुरथ शूर सतवन्त।
ताते प्रदुमन आदिलै, लड़हु कहा भगवन्त॥

सब बीरन मिलि कुँवरहि घेरा ❀ मारु मारु कहि सबहिन टेरा
पारथ के पाछे यदुराई ❀ आगे बीर घनेरे जाई
योजन त्रय पाछे हरि आये ❀ आगे बीरन गे अटकाये
सुरथ कह्यो पारथ है काहा ❀ सुने बीर हाँके रणमाहा
हम सन रण जो करिये आछो ❀ हरि पारथ को पूछो पाछो
सुनतहि सुरथ क्रोध तब पाये ❀ बीरन ऊपर बाण चलाये
ऐसो बाण क्रोध करि मारै ❀ पैदल रथ अरु अश्व सँहारै

बाणमयी जूझै रण माहाँ ❋ सबको मोहित कीन्ह्यो ताहाँ
सबै जीति गयो पारथ पहा ❋ रहुरहु हाँक मारिकै कहा
क्रोधित मारे बाण हजारा ❋ ध्वज अरु छत्र काटिमहिडारा
दो॰ पारथ मारे बाण सौ, काटे राजकुमार ।
लागे वर्षन बाण तब, मानहु सावन धार ॥
पारथ शर अवसर नहिं पावै ❋ ऐसे सुरथ बाण झरिलावै
तब पारथ सों कह्यो यदुपती ❋ देखो रथी सुरथ की गती
बन्धु शोक त्यहि मारन चहै ❋ इतना सुनि तब पारथ कहै
मार्‍यो पार्थ सुरथ रथ बाना ❋ धसिगयो रथ पाताल समाना
मार्‍यो सुरथ पार्थ रथ बाना ❋ लगत बाण रथ स्वर्ग उड़ाना
तब श्रीपति औरौ हनुमाना ❋ राखे रथ सम्भारि प्रमाना
पारथ बाण क्रोध करि जोड़े ❋ मार्‍यो रथके चारहु घोड़े
काटे सारथि छत्र निदाना ❋ कुँवरहि कह्यो पाय मैदाना
मैं मार्‍यो पारथ रथ बाना ❋ राख्यो हरिहि और हनुमाना
दो॰ कुँवर बाण फिरि मारेऊ, रथ पारथके माह ।
भाष्यो कहुपारथ अबहिं, रथ डारौं मैं काह ॥
सुनतहिं पार्थ पंच शर मारा ❋ मूर्च्छित भो तब राजकुमारा
क्षणक एक महँ चेतन पाये ❋ चाढ़ि रथ शर शोणित लपटाये
अर्धचन्द औ कर्ण वराहा ❋ तब प्रणामकरि पारथ काहा
जो नहिं रथते तोहिं गिरावौं ❋ तो मैं बास अधोगति पावौं
यह कहि पार्थ क्रोधशर छाटे ❋ ध्वजा पताक सुरथ के काटे
मार्‍यो सुरथ बाण तुरन्ता ❋ काटे ध्वजा दण्ड बलवन्ता
क्रोधवन्त पारथ शर छाटे ❋ रथ रथवान पताका काटे
तबहिं सुरथ क्रोधानल जरे ❋ लेकर गदा पार्थ से लरे
दुइ सहस्र तबहीं रथ मारा ❋ एक लक्ष मारे असवारा
गज अरु हय बहु पैदर मारा ❋ पारथ दूसर बाण प्रहारा
दो॰ गदा सहित करकाटिहौं, सुरथहिं कहा रिसाय ।

महामारु मैं करि अहौं, सुनु पारथ मनलाय ॥
युगल बाण पारथ तब मारा ❀ दूनहुँ जाँघ काटिकै डारा
कटे जाँघ कर शङ्का नाहीं ❀ युद्ध करे सुदकत महि माहीं
पारथ एक बाण तब लीन्हा ❀ तामहँ शक्ति देवतन दीन्हा
मारे बाण काट शिर जाई ❀ पारथ के शिर लाग्यो आई
पारथ तहाँ रहे मुरझाई ❀ शीशपरयो चरणन यदुराई
पारथ को श्रीहरिहिं उठायो ❀ तासों बचन कहन मनलायो
पारथ कह्यो धन्य मैं जाना ❀ मोको मूर्च्छित किय मैदाना
यहि शिरको परशै जो कोई ❀ महाशूर क्षत्री सो होई

दो० यहि प्रकार ते सुरथ को, मार्‍यो पारथ बीर ।
ऋषी कहत राजा सुने, जनमेजय रणधीर ॥
अश्वमेध फल पावई, मन बाञ्छितफल सोय ।
भावभक्ति जिय लावई, श्रद्धा सुन रण कोय ॥

इति श्रीमहाभारतेयज्ञपर्वभाषाकृतेसुधन्वासुरथबधो
नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

तब श्रीपतिने गरुड़ हँकारा ❀ आयो गरुड़ तुरन्त सँचारा
हरि कह शिर प्रयाग लै जैहो ❀ राखिशीश प्रयागमहँ ऐहो
गरुड़ कह्यो प्रभु तीर्थ अपारा ❀ गङ्गा यमुना चरण तुम्हारा
उत शिर लैजाऊं क्यहि काजा ❀ तबहीं बचन कह्यो ब्रजराजा
सुनो बात किय बिनय कुमारा ❀ मम भण्डार प्रागनिजभारा
सुनत गरुड़ शिर को लै चले ❀ भये मार्गमें कौतुक भले
हर गौरी तु गगन महँ आये ❀ जात गरुड़ को देखन पाये
भृंगी दूतहि शंकर कहा ❀ वह शिर लै आवो मम पहा
तब हँसि पूछहिं सती भवानी ❀ कहो भेद सब हमहिं बखानी

दो० शंकर तब हँसिके कह्यो, सुरथहि राजकुमार ।
पारथ मारे रण बिषय, सो शिर लिये सिधार ॥

हरि आज्ञा प्रयाग के माहीं ❀ शीशधरेको खगपति जाहीं

सोई शिर जो हम पहँ आवे ❀ मुण्डमाल के मध्य लगावे
याको अनुज सुधन्वा अहे ❀ ताको शीश प्रथम मैं गहे
अब जो शीश सुरथ को पावों ❀ मुँडमाला ग्रिव शोभा पावों
भृंगी चले गरुड़ पहँ आये ❀ जाके बचन कहन तब लाये
देहु शीश नत लिह्यौं छिनाई ❀ सुनतहिं गरुड़ क्रोध अतिपाई
पवन पच्छ हरि दूत उड़ाई ❀ हरको दूत हरे पहँ आई
श्वास पवन ते गरुड़ उड़ाये ❀ उड़तहिं उड़त प्रयागहिं आये

दो० गरुड़ शीशको डारिके, लौटि कृष्णढिग आय।
नन्दी ताहि उठायके, दीन्ह शम्भुको लाय॥

महादेव मुँडमाल बनाये ❀ सुरथ जूझ नृप देखन पाये
तब रणको नृप कियो पयाना ❀ देखत उतरे श्रीभगवाना
हाथ उठाय कहा भगवाना ❀ राजा राखो शारँग बाना
सुतको शोक छाँड़ि अब दीजे ❀ मेल मिलाप पार्थ से कीजे
राजा सुनत हर्ष तब पाये ❀ धाय कृष्ण के पद लपटाये
जो मैं रूप कृष्ण कर देखो ❀ पुत्र शोक मेरे क्यहि लेखो
तब पारथ से बाँह मिलाये ❀ पारथ मिले हर्ष अति पाये
पाँच दिवसमें अश्व छुड़ाये ❀ श्रीपति हस्तिनपुरहि सिधाये
धर्मराज पहँ श्रीहरि कह्यऊ ❀ सबही राजधर्म कहिदयऊ
अश्व छूट तब पार्थ सिधाये ❀ हंसध्वज को संग लगाये

दो० उत्तरदिशि अब अश्वचलु, महाभयानक देश।
महाकुञ्ज कानन बिषे, अश्वहिं कीन्ह प्रवेश॥

सरवर एक अश्व तब गयऊ ❀ प्रविशतजल अश्विनिसोभयऊ
केतिक दूर गयो दुख पागे ❀ सरवर एक और है आगे
ताको जल हय कीन्हों पाना ❀ अश्विनिते भयो बाघ प्रमाना
सभै अचम्भौ पूछहि राव ❀ याहि अर्थ मुनि हमैं बताव
अश्व अश्विनी भो केहिकाजा ❀ व्याघ्र भयो कत पूछे राजा
फेरि अश्व हैहै की नही ❀ सुनि मुनि बैशम्पायन कही

सतयुग माहिं देवि तस साधे ❀ वहिसर तट शंकर अवराधे
शंकर हेतु तबहिं मन लावा ❀ असुर एक पापी मतिभावा
कह्यो तबै कत करु अज्ञानी ❀ चलो संग करिबे हम रानी
सुनत शाप तब देवी दीन्हा ❀ भस्म तुरन्त दैत्य को कीन्हा
दो० सर परशे जो पुरुष भये, त्रिया होत परमान ।
यही शापते राज सुनु, अश्विनि भये निदान ॥
रक्त वर्ण मुनि सतयुग रहे ❀ दूजे सर स्नानहि गहे
करि स्नान ध्यान मन लाये ❀ सरवर को शापित भे पाये
यहि सरको जल प्रबिशै जोई ❀ निश्चय बाघसो प्राणी होई
वहि सरमाहिं अश्व जब गयऊ ❀ बाघरूप ताकारण भयऊ
पारथ मही शोध तो पाये ❀ तब सो हरिको चरण नवाये
तारो पाप सिन्धु भगवाना ❀ अश्विनि प्रभु करहू निरमाना
तबहीं दलहि ध्यान मन लये ❀ राजा सुनि प्रसन्न मन भये
सगरो दोष अश्व को गयऊ ❀ श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ
हर्षित भे तब चले चलाये ❀ स्त्री राज्य सो पहुँचे आये
दो० त्रियाराज को त्रिया सब, पुरुष नहीं है ताह ।
गन्धर्बराज शाप दिय, पुरुष न जन्मे चाह ॥
कीन्ह भोग तब गँधरब देखा ❀ महाक्रोध दैत्यनबध लेखा
दैत्य को मारि देश कहँ शापा ❀ पुरुष जन्म पुर होय न पापा
औरो पुरुष भोग मन धरै ❀ गये तीस दिन निश्चय मरै
यहि प्रकार ते शाप रिसाई ❀ तब गन्धर्व स्वर्गपुर जाई
तबते देश रूप यह भयऊ ❀ श्यामकर्ण हय तहँपर गयऊ
देखत एक त्रिया तहँ आई ❀ श्यामकर्ण सो हरि लैजाई
धर्मराजको हय यह अहै ❀ पारथ रक्षक नृप ते कहै
परिमल नाम रजा इक अली ❀ हँसिके कहेसि कीन्ह तो भली
लै हयशाला बांधेउ जाई ❀ साजि त्रियादल युद्धहि जाई
दो० हय गज पैदल रथन चढ़ि, चलीं सबै जो तीय ।

चन्द्रबदनी कठोर कुच, रूप बिधातै दीय ॥

पारथ पाहँ परीमल कहई ❀ अबहूँ आश अश्वकै अहई
आशा तजहु भोग करु आई ❀ युद्ध करै तौ कालहि खाई
तबहिं सबै दल मोहित भयऊ ❀ कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहेऊ
पारथ कह्यो सुनहु हो त्रिया ❀ तुम्हरेपहँगये पुरुष न जिया
परिमल कहै काल तब आये ❀ युद्ध माहिं जय कोयौं पाये
सततै भोग करौ मनलाई ❀ सुख में करौ परम सुख पाई
युद्ध करी जय पैहौ नही ❀ सुनिकै अस्त्र पार्थ तब गही
मोहन बाण हने तब पारथ ❀ हँसी त्रिया कह भये अकारथ
सुर नर मुनी शंभु उर धरें ❀ देखत हमहिं तासु मन हरें
मोहन बाण करहि का मेरो ❀ पारथ आज काल है तेरो

दो० मोहन बाण हमार है, देखत मोहत शंभु ।
मोहन बाण तुम्हार जो, मम का करत अनंभु ॥

नई बैस नवयोवन बारी ❀ मृगनयनी सरोज रतनारी
जब पारथ क्रोधित शर गहे ❀ तब देवन नभ दुन्दुभि महे
यह कहि पञ्चबाण तब मारे ❀ और सहस्रन बाण प्रहारे
तिरिया बधे पाप हो पारथ ❀ प्रीति करो तो होवे स्वारथ
पारथ सन तो प्रीति बिचारो ❀ परिमलते जो बचन सँचारो
यज्ञहि होत योग मन लइये ❀ लैकै दल जो मम इतआइये
नातो पुरी हस्तिना जइये ❀ फिरव तुरन्त मोहिं प्रतिपालिये
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना ❀ पुरीहस्तिना करिय पयाना
छूटा अश्व पार्थ तब चले ❀ क्षत्री वीर सङ्ग सब भले

दो० ऐसे तरु देखे सबै, फूलसुरभि परमान ।
औ मनुष्यसम फल लगे, अचरजभयो महान ॥

देखत सबहिन अचरज माना ❀ देखत चले अश्व परधाना
एक नैन देखा बँगदेशा ❀ देश बिदेश और प्रबिदेशा
गजके श्रवणन सम हैं काना ❀ एक देश देखा परमाना

तीन नयन अरु तीने नासा ❋ एक देश ऐसा परकासा
एक देश नरसिंह स्वरूपा ❋ भोग गंधरब सुख अनुरूपा
याहि सब देश अश्व तो गयऊ ❋ जीते सबै बश्य तब भयऊ
चलत अश्व आये पुनि तहां ❋ भीषम नाम दैत्य रह जहां
एक चक्रवर्ती पुर आना ❋ तहँको अश्वहिं कीन्ह पयाना
मेदु हाथ दो प्रोहित अहैं ❋ सुनी बात यह नृपते कहैं
अर्जुनादि सब लाय तुरंगा ❋ जासू बन्धु तोर पितु भंगा

दो० पिता शत्रु तुव आवत, बधौ ताहि महराज ।
रणमें धाओ बाण लै, यज्ञ करो जगसाज ॥

चारि मासके ब्रत हम अहैं ❋ निराहार हैं तुमते कहैं
मदिरा रक्तासव नहिं खाये ❋ बालक यती भाइ जे पाये
जटाधारि अस्नान अहारा ❋ कार्त्तिक कन्या भक्ष अपारा
अब तो वारन कीन्हे चहौं ❋ बधौं पार्थही ताते कहौं
भीषम सुनिकै क्रोधित भये ❋ युद्धहिं हेतु चलन मन दये
कोटिन दल लै दैत्य सिधायो ❋ लङ्काकी निशिचरि बहु आयो
दैत्यनि एक दीख हनुमाना ❋ भागु भागु सो करै बखाना
वह बन्दरकै जाना भाई ❋ पलमहँ लङ्कापुरी जराई
सुने एक अरु कहे बुझाई ❋ नरके मारे कौन बड़ाई
मानुष मारे रावण राऊ ❋ मैं कुचते सब सैन्य गिराऊ

दो० औरौ भाषो एक तो, तोरौं कुच सम बेल ।
कुचको अग्र हमारहू, योजन इकका मेल ॥

यह कहि स्वर्ग माहँ सो गई ❋ पारथको दल गो भहरई
बहुते दल तो मारो जाई ❋ दलपर जाय प्रकट तो भाई
लेकर दल तो आगे आय ❋ पारथ पाहँ कहे समुझाय
ताको हतिकै भीम सँहारौं ❋ पिता बैर लै यज्ञ सँवारौं
यह कहि बाण बृष्टि करलाये ❋ बृक्ष पहाड़ अनेक चलाये
लक्ष बाण तब पारथ मारा ❋ पर्वत बृक्ष अस्त्र सो छारा

वह दैत्यनी बड़ो दुख दीन्हा ❋ पारथ बीर बाण तब लीन्हा
मारे रथ पैदल असवारा ❋ दैत्यन दल तो बहु संहारा
प्राणअन्त भयऊ जब जाना ❋ तब राक्षस माया निर्माना
दो० बाघ सिंह औ गऊ सम, सेना भयो प्रमान ।
भीषम वह अचरज भयो, तपा रूप परवान ॥
माया ते पारथ तब कहै ❋ येह दैत्य देता दुख अहै
पारथ तौ माया सब जाना ❋ तुर्तहिं बधे ताहि परमाना
छूटे प्राण दैत्य तब गयऊ ❋ महाहर्ष पारथ को भयऊ
सब सेना को पल महँ मारा ❋ जीते रणमहँ पाण्डुकुमारा
मरे दैत्य जब सब हर्षाना ❋ पारथ रथ बैठे हनुमाना
चले अश्व तौ किये पयाना ❋ पारथके सँग दल बहु नाना
यौवनाश्व नीलध्वज राऊ ❋ हंसध्वज बृषकेतु सिधाऊ
मेघ वर्ण आहै अनुशाला ❋ कामदेवही पुत्र गोपाला
चले अश्व के पाछे जाय ❋ अश्व चला तौ तेज पराय
चले अश्व तब आये तहाँ ❋ मणिपुर नाम ग्राम इक जहाँ
दो० सत्यवन्त सब क्षत्रिगण, इक नारी व्रत बेश ।
सब राजा कर देत हैं, अर्जुन पुत्र नरेश ॥
पुरउपमानहिंजातकहि, जनु कैलास समान ।
ऐसी शोभा देखि तहँ, पुर इन्द्रासन जान ॥
इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञपर्वभाषाकृतेभीषमदैत्य-
बधोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
वैशम्पायन कहै बयाना ❋ पुर उपमा नाहिं जात बखाना
पारथ संग बीर जो रहैं ❋ बड़े बली हैं सब मिलि कहैं
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना ❋ तत्क्षण देखे मृत्यु निशाना
गीध उड़ैं पारथ शिर लागे ❋ सबहिं देखि तौ संशय पागे
नगर लोग अश्वहि तब देखा ❋ गे राजा ते कहैं बिशेखा
सुनतहि राजा बीर पठाये ❋ श्यामकर्ण को तुर्त मँगाये

कञ्चनपत्र शीश पर रहेऊ ❀ पठये राव जान सब अहेऊ
तब राजा मन्त्री सन कहै ❀ धर्मराज को हय यह अहै
पारथ ताको रक्षक अही ❀ मेरे पितु अस राजा कही
ताते मन्त्री कहै बिचारी ❀ कौनी बुद्धि करौं अब भारी

दो० तात भङ्ग मम तात करु, शापे तोकह तात।
ग्राह भई ता कारणे, पारथ तारु सख्यात॥

पारथको स्पर्श जब लीन्हा ❀ ऐसे त्रिया ब्याह तौ कीन्हा
छांड़ि गये होते जो ताता ❀ अब हम भेट करब सख्याता
करि मन प्रेम बुद्धि बीचारा ❀ आने अश्व कौन परकारा
मन्त्री कहै अश्व लै मिलो ❀ राजा कहै मन्त्र यह भलो
तब राजा बहु साज बनाये ❀ नाना द्रब्य अनेक मँगाये
नाना राग रङ्ग तब ठाना ❀ श्यामकर्ण लै किये पयाना
गज ते उतरि राव तब गये ❀ पारथ चरण माथ तब दये
मैं अब पुत्र तोहार प्रमाना ❀ चित्राङ्गदा गर्भ निर्माना
सम्पति राज्य लेहु अब ताता ❀ कीजै कृपा जन्मकर दाता
पारथ के दलका सरदारा ❀ सब पारथ सों कहै सुसारा

दो० पारथ मिलो न पुत्रते, देखौ सुतकर देश।
शीश चरण दै सुनि रहे, मणिपुरपती नरेश॥

पारथ उपजो क्रोध अपारा ❀ नृपके हृदय लात इक मारा
भाषत तोहिं लाज नहिं आवै ❀ बैश्यगती मम पुत्र कहावै
मोसे जन्म तोर नहिं अहै ❀ मेरो पुत्र ऐस नहिं कहै
अभिमन्यु पुत्र जानु संसारा ❀ चक्रब्यूह अकेल संहारा
नाच गान गन्धर्ब को काजा ❀ राजा भे तुहिं नेकु न लाजा
अश्वहि गहे सर्व मन लाये ❀ भय आतुर तब देखन पाये
युद्ध न भो तोहिं शरणन लागे ❀ देखत भय आतुरते पागे
बभ्रूबाहन सुनत रिसाना ❀ क्रोधवन्त ह्वै बचन बखाना
और सही सब जो तुम कही ❀ एक बात तौ जात न सही

कहे वैश्य सुत मोकहँ मारी ❋ तौ मम मातु भई व्यभिचारी
दो० अब तौ अश्व न देब हम, सुनु पारथ यह बैन।
बैश्यनते हय लेउ अब, देखों क्षत्री नैन॥
यह कहि अश्व बाँधि लैगयऊ ❋ तब रणहेतु युद्ध मन दयऊ
नृपको दल निकरो अति भारी ❋ आगे भये बीर धनुधारी
अश्वहिं राखि गेह नृप आये ❋ महाक्रोध युद्धहि मन लाये
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ ❋ महागर्ब ते गारी दयऊ
अब आवतहौं युद्धहि करे ❋ सुनत क्रोध अनुशल्वा जरे
नऊ बाण मारे अनुशल्या ❋ बभ्रुबाहन क्रोध भौ कल्या
धनुष सँभारा सौ शर छाटे ❋ तीनि बाणते इन्ह दल काटे
तब राजहिं भयो क्रोध अपारा ❋ लगे बाण बर्षन जलधारा
भीजे रक्त दोऊ सरदारा ❋ ऋतु बसन्त टेसू परकारा
चारि बाण राजा तब मारे ❋ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे
दो० पांच बाण ते सारथी, काटे ध्वजा निशान।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल्व लागे बान॥
भयो क्रोध अनुशल्व भुवारा ❋ और रथहिं भये असवारा
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❋ रथ समेत ते काम बहाये
शर शारंग करै संधाना ❋ मारे राव सहस इक बाना
तबहिं गदा लै राजा धाये ❋ जाय धाय अनुशल्वहु लाये
तापाछे नौ बाणहि मारा ❋ मूर्च्छा भौ अनुशाल्व भुवारा
सारथि लैकै तुरतहि आये ❋ पाछे कामदेव तब धाये
रहुरहु करिकै शर दश छाटे ❋ अयुत शरन ते राजहि काटे
दोनहुँ बीर लगे शर मारन ❋ सौते सहस हजार हजारन
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे ❋ बाणन बिना और नहिं सूझे
रुण्ड मुण्ड तब भै बहुताई ❋ रक्तनदी तहँ बहु बढ़िआई
नदी तरङ्ग बहत है भारी ❋ योगिनि सब तौ करैं धमारी
दो० कामदेव ने रण कियो, रक्त बहायो खेत।

रुण्डमुण्ड मय मेदिनी, नाचहिं योगिनि प्रेत ॥
जबहिं काम ऐसे शर ठाना ❀ तौ मणिपुरपति क्रोधरिसाना
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❀ रथ समेत तौ काम छुपाये
कामहि तनु तौ झंझर भयऊ ❀ ऐसी मार कामको दयऊ
दोनों बीर तजें क्रोधित शर ❀ होनलगी अति मार परस्पर
राजा मास्यो बाण रिसाई ❀ मोहित कामदेव भे आई
साँग गदा तब लेकर छाटे ❀ तीन बाण ते गद नृप काटे
दोनों शर मारहिं रिसिआई ❀ तब दोनों मूर्च्छित भयेजाई
क्रोधित राजा मास्यो बाना ❀ मूर्च्छित भयो काम मैदाना
मूर्च्छित काम बहुत दल मारे ❀ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे
बिकट कबन्ध रूप तब धावैं ❀ योगिनि गण तौ मङ्गलगावैं
दो॰ हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूं रुण्ड कहुँ मुण्ड ।
नाना अस्त्र सुहाथ महँ, मारत धावत रुण्ड ॥
बीर अनेकन पारथनन्दन ❀ पारथको दल कियो निकन्दन
तब अनुशल्व चेत भो धाये ❀ प्रद्युमन चेतत आगे आये
हंसध्वज नीलध्वज राई ❀ यौवनाश्व सुबेग सिधाई
मेघवर्ण आदिक सरदारा ❀ वह अकेल मणिपुरी भुवारा
सबै बीर मिलि शर तौ छाटे ❀ पारथपुत्र सबै शर काटे
जूझे बीर खेत मों लाखन ❀ महामारु भै सकि को भाखन
सुर तुरंग जूझी नहिं परे ❀ कायर प्राण प्रथम तौ हरे
लड़ि लड़ि शूर तजें तब प्राना ❀ गये अमरपुर बैठि बिमाना
सुरकन्या सँग रम सुख पाये ❀ अपनी देह अवनि दिखराये
कुञ्जर अश्व पदादिक नाना ❀ जूझे बहुत न जाय बखाना
दो॰ जैसे लव कुश रामते, मारु भई बिपरीति ।
पारथसुत अरु पार्थ ते, युद्ध होत यहि रीति ॥
राम कथा सब मुनि तब कहे ❀ जैसे रण तहँ होते भहे
पारथनन्दन बाण प्रहारा ❀ मूर्च्छित भो अनुशाल्वभुवारा

औरो बाण काम को लागे ❀ मूर्च्छित भये नेकु नहिं जागे
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना ❀ यौवनाश्व लीन्हें तब बाना
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे ❀ पारथपुत्र मांझ तौ काटे
पारथसुत तब मारे बाना ❀ यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना
तब सुबेग अमरष भरि धाये ❀ मणिपुरपति पर बाण चलाये
मध्यबाण तब राजा काटे ❀ बाण सुबेग और तब छाटे
मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ ❀ पलक माहँ चेतन तब पाऊ
चेत भये तब मास्यो बाना ❀ तब सुबेग मूर्च्छित मैदाना

दो० मेघबर्ण तब धायऊ, करले शारँग बान ।
महायुद्ध तब लागेऊ, राजा सुनहु बखान ॥

मेघबर्ण पुरुषारथ करे ❀ दल अनेक खेतन महँ परे
जबहिं मणीपति मास्यो बाना ❀ मेघबर्ण मूर्च्छित मैदाना
मेघबर्ण मूर्च्छा जब पाये ❀ तब हंसध्वज राजा धाये
रहु रहु करि मारे तब बाना ❀ मणिपति को छाये मैदाना
ऐसे शर तब राजा मारे ❀ रथ सारथि पैदल संहारे
हंसध्वज कीन्हा प्रभुताई ❀ पांच क्षौहिणी मारि गिराई
क्रोधित भये मणीपुर राऊ ❀ हंसध्वजपर बाण चलाऊ
रथ सारथी कीन्ह नीदाना ❀ हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना
जेते बीर सबै बध भये ❀ बृषकेतू सों पारथ कहे
जैये पुत्र हस्तिना देशहि ❀ कहोजाय सुधि धर्मनरेशहि

दो० कहो जाय वृत्तांत सब, अग्र राधिकारौन ।
जो तुम जूझे रण बिषे, कहै जाय सुधि कौन ॥

तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै ❀ हमहिं शाप दै प्राण गँवैहै
जब पारथ यह कहे बखानी ❀ तब देखा है मृत्यु निशानी
पारथ उपर गृध्र उड़ि आये ❀ रुण्ड छाँह लखि पारथ पाये
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ ❀ यह अब कष्ट जाय समुझाओ
मोरे बलहि यज्ञ नृप करे ❀ मोपर काल आय अब नियरे

देखन यज्ञ नैन नहिं पाये ❋ यह बड़ शोच मोरमन आये
दण्ड सहस्र छत्र जेहि लागे ❋ सोइ चला राजाके आगे
यज्ञ माहँ दीन्हा नहिं दाना ❋ नृपने कीन्ह शेष अस्थाना
गंगा जल नहिं रानी भरै ❋ यही शोच मोरे जिय धरै
जाहु तुरन्त कर्णके नन्दन ❋ कहौजायकै जहँ जगवन्दन

दो० कर्णपुत्र तब असकह्यो, जो रण तजि हमजाहिं ।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटिपरैं भुवि माहिं ॥

रहै सुयश सब यहि संसारा ❋ यहिते भल जो मृत्युबिचारा
ताको जन्म सफल है पारथ ❋ जो तन धन देवहि परस्वारथ
तन धन निष्फल ताको गयो ❋ पर उपकार बिमुख जो भयो
जीतें यज्ञ बड़ाई पावें ❋ जूझैं स्वर्गलोक को जावें
उत्तम देह पार्थ परमाना ❋ मणिपुरनृप है तृणहि समाना
बहुप्रकार पारथ समझायो ❋ कर्णपुत्र के हृदय न आयो
शारँग बाण हाथ करि लीन्हा ❋ रथचढ़ि तबहिं हांकतो दीन्हा
और बीर सम हमैं न जानो ❋ अब हमते रण तुमहीं ठानो
यह कहि तीन बाण फटकारा ❋ लगे मणिपतीगात भुवारा

दो० तब सँभारि मणिपुरपती, मारे बाण प्रचण्ड ।
सहित अश्वके सारथी, काटि किये नौ खण्ड ॥

कर्णपुत्र क्रोधहि तब पाये ❋ एक लक्ष तब बाण चलाये
रथ सारथि काटे पल माहा ❋ दोनों बीर बड़े बल बाहा
पारथपुत्र कहे तब बैना ❋ तो सम बीर न देख्यों नैना
कर्णपुत्र शर ऐसे मारा ❋ पर्वत पवन छाय अँधियारा
रवि कुबेर औ यमके बाना ❋ ते सब कुँवर करै संधाना
लेकर शम्भु बाण तब अत्रहि ❋ ताते हते पताका छत्रहि
मणिपुर नृपति हने अस बाना ❋ कर्णपुत्र नभ कियो पयाना
रविमण्डल मो पल इक रहे ❋ पितु प्रपिताके दर्शन भये
तबहिं बीर बसुधा पर आवा ❋ पारथसुत तब बचन सुनावा

दो० बिनतासुत जिमि इन्द्रबध, तैसे हति तुव प्रान ।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान ॥
तबमणिपुरपति स्वर्गहि गयऊ ॐ सूर्यतेज महँ छिपि सो रह्यऊ
वहँते जबहीं कीन्ह पयाना ॐ तोसम बीर न देख्यो आना
तब फिरि गये सूर्यके पाहा ॐ अंग अंग तनु जर नरनाहा
पुत्र सुपुत्र कहे रिसिआई ॐ हंसध्वजको बाधि प्रभुताई
ताते स्वर्ग देखायो तोहीं ॐ अजहूं बीर न चीन्ह्यो मोहीं
मणिपुरपति तब बसुधा आये ॐ वृषकेतू पर बाण चलाये
कर्णपुत्र स्वर्गहि महँ गयऊ ॐ पाछे प्रकट भूमिमहँ भयऊ
कबहुं अकाश कबहुं धरधरनी ॐ पार्थ ठाढ़ देखत रणकरनी
बाण लगे तब मांस उड़ाये ॐ अन्तरिक्ष महँ पक्षी खाये
पांचदिवसलौं तब रण कीन्हा ॐ रैनिदिवस सांसहुनाहिं लीन्हा
दो० मारे बाणजु क्रोधकर, मणिपुरपती नरेश ।
काटि शीश वृषकेतु कर, भये युद्ध करशेश ॥
उठी कबन्ध अस्त्र तो धरे ॐ शिर पारथ के रथ पर परे
हय रथ पैदल रुण्ड सँभारे ॐ देखा पार्थ रुदन संचारे
हा हा कर्णपुत्र धनुधारी ॐ सुन्दर मुख बलिजाउँ तुम्हारी
कुन्ती नृप भाई यदुराई ॐ इन सबते का कहिहौं जाई
बहुप्रकारते रोदन करही ॐ बिबिध भाँति बिलापसंचरही
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा ॐ आवतको नहिं दोष तुम्हारा
कर्णपुत्र का बदन निहारी ॐ मोहित भये पार्थ धनुधारी
शीश गोद लै मुर्च्छे पारथ ॐ रसना रटै श्रीपती सारथ
पारथ मूर्च्छित राजैं देखा ॐ आय निकट तौ कही बिशेखा
देखे मूर्च्छित पारथ आई ॐ बभ्रुबाहन परमसुख पाई
दो० मूर्च्छित जाने तात कहँ, धनुषहि अग्र उठाय ।
कछुबचन कहि मणिपती, भाषतकटकसुभाय ॥
सुनिये राजा श्रवण दै, ताको करौं बखान ।

शोच किये का काम है, गहौ धनुष कर बान ॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधपर्वभाषाबभ्रुवाहनयुद्धकर्ण-
पुत्रवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

बैशम्पायन करैं बखाना ❋ पारथपुत्र कह्यो परमाना
सुत बैश्यन को तब तुम कहेऊ ❋ ताकारण ते प्रण हम गहेऊ
सूझि परत नहिं क्षत्रिय कोई ❋ बैशम्पायन हय ले सोई
एते दल महँ बीर न ऐसे ❋ कर्णपुत्र कहँ देख्यो जैसे
तुम क्षत्री हम बैश्य सख्याता ❋ करौ युद्ध ऐसी कहि बाता
यह सुनि कर तब पारथ जागे ❋ महा खँभार क्रोध में पागे
बाण धनुष तब कर में लीन्हा ❋ क्रोधितह्वै रथचढ़ि शुभकीन्हा
करिकै क्रोध कहा यह पाहा ❋ रे मणिपुरपति जैहै काहा
मेरो दल तुमने सब मारा ❋ तोहिं बधौं अब पांडुकुमारा
औरो बहुत बात कहि आये ❋ बाणबृष्टि तो पारथ लाये

दो० क्रोधित पारथ बीर तब, बाण बृष्टि झरि लाय ।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब महराय ॥

कृतबर्मा को उत्तम साथी ❋ अश्वत्थामा नामा हाथी
भीमउपर कुंजर जब धायो ❋ बीचहि अर्जुन मारि गिरायो
प्रलयकाल महँ शंकर जैसे ❋ पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे
पारथ बाण करै संधानहि ❋ देखै कोइ न मर्महि जानहि
छूटत बाण न देखै पायो ❋ तब देख्यो जब मारिगिरायो
मणिपुरपति तब बिचले जाई ❋ पारथ लगे कोट महँ आई
बाण घावते गढ़ तब तोरे ❋ शर के घाव कँगूरा फोरे
नगर नारि नर रानी भागी ❋ शर ते पावक पुरमें लागी
जबहीं पारथ किय प्रभुताई ❋ क्रोध भये मणिपुरके राई
मारे बाण मणीपुर राऊ ❋ चारों हय के लागो घाऊ
तीनि बाण पारथ को मारे ❋ एक बाण ते छत्र सँहारे
सात बाण मुर्च्छे तब बीरा ❋ बेरथ भये पार्थ रणधीरा

दो० तब दोऊ जन भूमि महँ, युद्ध करत बिपरीत।
महामारु को कहिसकै, देखत सब भये भीत॥

पारथ ने जेते शर छाटे ❋ मणिपुरपति तुर्तहिं सब काटे
बभ्रुबाहन बोलै तब कीन्हा ❋ अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये ❋ सारथि भे हरि सदा बचाये
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे ❋ कृपिणी के घर भिक्षुक जैसे
मम माता है सती प्रमाना ❋ ताको दोष दीन्ह अज्ञाना
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना ❋ निष्फल होत ताहिको बाना
यह अपराध बूझ दै गारी ❋ अजहूं सुधिनहिंलीन्हतुम्हारी
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना ❋ तबलागि हम नहिं मारहिंबाना
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा ❋ मणिपति घायलभये अपारा
बभ्रुबाहन क्रोधित शर मारा ❋ बाणनते ह्वैगो अँधियारा

दो० प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुवार।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये ❋ पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये
गङ्गा शाप तुलानेउ आई ❋ बिसरा बल औ बुद्धि नशाई
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा ❋ लीन्हें अर्धचन्द्र शर हाथा
गङ्ग बैर लै ज्वाला रानी ❋ अर्धचन्द्र शर आप समानी
उहै बाण लै धनु संधाना ❋ तेज मनो द्वादशहू भाना
देखत शर पारथ अकुलाना ❋ लक्ष बाण बहु किय संधाना
पावक बाण लगे तब झारन ❋ पै वह बाण लगे नहिं टारन
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई ❋ तजे कबन्ध शीश उड़ि जाई

दो० कार्त्तिक सुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलबार।
सांझ समय जूझे तहां, पारथ पाण्डुकुमार॥

पारथ बध राजा तब धाये ❋ शंखध्वनि करि हर्ष मनाये
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं ❋ बन्दीजन तौ अस्तुति साजैं
नगर माहिं तब भूपति चले ❋ नाना शकुन होत सब भले

तब अन्तःपुर को शुभ कीन्हा ❀ रानी उतारि आरती लीन्हा
राजा सुनि तब आनँद मानो ❀ जीते सुत बहु हर्ष बखानो
दासी एक जाय कहि तहां ❀ चित्राङ्गदा उलूपी जहां
महाबीर है पुत्र तुम्हारा ❀ पारथ को कीन्हा संहारा
सुनत दोउ मूर्च्छित भुविपरी ❀ दासी सब तब बिस्मयकरी
राजा पाहिं कहा तब जाई ❀ माता दोउ मूर्च्छा खाई
सुनतहिं राजा अचरज पाये ❀ देखन मातुहिं तुर्त सिधाये

दो० कोइचन्दन कोइ पवनकरि, हाहा करत पुकार ।
अस देखा दोउ मातु कहँ, मणिपुरपती भुवार ॥

अलङ्कार बिन बिधवा जैसे ❀ मातुहिं जाय दीख नृप तैसे
माता कहँ तब भूप उठाये ❀ औरो बचन कहे मन लाये
हर्ष माहिं दुखभो का जाना ❀ माता हम सों कहौ बखाना
मेरो सुयश सुनो अस माता ❀ पारथ कहँ मार्यों सख्याता
हंसध्वज नीलध्वज राजा ❀ यौवनाश्व प्रदुमन रणगाजा
अनुशल्वा सुबेग जूझारा ❀ और महाबल कर्णकुमारा
अलङ्कार पहिरौ हे माता ❀ देखत हैं अब मङ्गलदाता
सुनत बचन माता तब कहै ❀ हे सुत तुम पापी बड़ अहै
पारथ कन्त हमारो अहै ❀ मेरो सुत है पापहि कहै

दो० मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतार्यो आज ।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवै लाज ॥

यज्ञनाशि धर्महिं दुख दीन्हे ❀ कुन्ती कहँ पारथ बिन कीन्हे
युद्ध समय पूछेउ नहिं मोहीं ❀ पापी पापबुद्धि भइ तोहीं
हम अब कन्तहि संग सिधावै ❀ रे पापी म्वहिं कन्त देखावै
यह कहि दोउ तिय बाहर गईं ❀ बिस्मय राय बहुत बिधिभईं
तब उलुपी भाषण अस कहई ❀ एक परीक्षा पियकै अहई
आप बिलोकत हैं अब रोय ❀ है उपाय करि सकै जो कोय
मणी सजीवन अहै पताला ❀ प्राण सजीव होय ततकाला

जीवहि पारथ जो मणि आवै ❀ बभ्रुबाहन सुनतै सचुपावै
हमरे पितुसन शंकर हारे ❀ बलसम भो को सर्प बिचारे
मैं पताल चलि मणि लेआवों ❀ जीतिनाग अब तात जिआवों
सुनत मातु कह हेतु बुझाई ❀ पुत्र न करु यह बाड़ लरिकाई
बिषम बिषैल तेज प्रत्यक्षक ❀ पन्द्रह कोटि नाग जहँ रक्षक

दो० सौ मुख कोइ दुइसै बदन, कोइ बदन सौतीन ।
चार पांच छः सात सौ, बदन आठ सौ कीन ॥

नागन केर मणी है प्राना ❀ परस्वारथ जिय देत को दाना
रहो पुत्र मैं मन्त्र उपावों ❀ अपनो भूषण पितहिं पठावों
तबहीं मन्त्रि बोलिके लीन्हा ❀ सबै आभरण साथहि दीन्हा
कहियो जाय पिता के पाहीं ❀ तुव दुहिता बिधवा भइ आहीं
मणी देहु तौ तात बचायो ❀ कह्यो तबहिं इकजो जब पायो
तात पाहँ जो सहोदर कहेऊ ❀ खलुकै रहो रहा नहिं चहेऊ
पुण्डरीक मन्त्री कह बाता ❀ नाशहोय तनु पार्थ सख्याता
पिण्ड लगै तो मणि का करही ❀ कैसे प्राण फेरि संचरही
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई ❀ सुनत बभ्रुबाहन तब कहई

दो० बड़े बड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात ।
जाहुडसी यह कहैं सब, मणिपति कहसख्यात॥

तब मन्त्री सबकहँ जो डसेऊ ❀ हर्षित होय पतालहि धसेऊ
पञ्च पेड़ दाड़िम के अहहीं ❀ ताहि देखि अब मोते कहहीं
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं ❀ पांचौ पेड़ आपुते जरहीं
जौनि परीक्षा मृतके पावो ❀ तो हम तुम मिलि प्राणगँवावो
देखो जाय जरे तरु आहैं ❀ तब रोदन करि चलिपियपाहैं
हाहा कन्त पुकारत चली ❀ संगहि उलुपी रोवत भली

दो० देखा जाये शीश भुइँ, दोउ त्रिया लागि पावँ ।
शीश लगाये हृदयमहँ, देह परी केहि ठावँ ॥

रोदन करत कन्तको देखी ❀ बहुत विलाप न जाय बिशेखी

हा हा कन्त किरात सँहरेहू ❋ राहु बेधकै द्रुपदी हरेहू
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो ❋ नृप बिराटके गऊ छोड़ायो
पावक शरण होत नरनाथा ❋ वन अखण्ड जार्यो हरिसाथा
रुदन करै अरु बात संचारी ❋ सुत मम शीशकाटि महिडारी
माता कह सुनिये अबराई ❋ दीजै कठिन चिता बनवाई
तजिहौं कन्त संग मैं प्राना ❋ सुनि रोदन करि पुत्र बखाना
पितुको जानि अश्व लै गयऊ ❋ मिलत तात गारी मोहिं दयऊ
सो माता अब कहा न जाय ❋ यहिते क्रोध हृदय मम आय
जन्मत हमैं मातु बध करती ❋ शोकसिन्धु केहि कारण परती

दो० बिभवबिलासहुलास रस, बिनपारथकेहिकाज ।
निश्चयअबपावक जरौं, स्वामी संग लै साज॥

सेवक बोलिकै राजा कहैं ❋ रचौ चिता जरनो हम चहैं
चित्राङ्गदा सुनत तब कहै ❋ आपुहिं जरौ हेतु का अहै
लै भूषण तौ चली प्रवेशा ❋ प्रथम गये व्यालन के देशा
सुतल तलातल सब परमाना ❋ देखे जाय लोक तहँ नाना
नागसुता सब धर्म सुशाला ❋ देखत पहुँचे सप्त पताला
गङ्गधार देखन जब पाये ❋ तब गङ्गा पहँ शीश नवाये
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा ❋ पूजत हरहि और नहिं दूजा
नागसुता सब देखहिं नाना ❋ मदनरूप लखि चित्तलोभाना
पूजि देवता तुर्त सिधाये ❋ सुधाकुण्ड तब देखन पाये
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं ❋ हरित बदन जे उपमा धरहीं
ताहि देखिकै अग्र सिधारा ❋ पहुँचे शेषनाग दरबारा
कर्कोटक जहँ मन्त्री अहै ❋ हरित बर्ण ते शोभित रहै

दो० भरी सभा महँ मन्त्री, दीन्ह आभरण डारि ।
तुव दुहिता बिधवा भई, भाषै बात बिचारि ॥

सो कन्या मणिहेतु पठाई ❋ जाते पार्थ जिये सुखदाई
सुनिकै शेष अचम्भो माना ❋ सबै कथा जो पूछि प्रमाना

केसे पार्थ तज्यो है माना ❀ पुण्डरीक सुन कियो बखाना
धर्मराज यज्ञहि निर्माये ❀ हयरक्षक अर्जुनहिं पठाये
बहुत देश जीतत जब आये ❀ तब मणिपुर जो अश्वसिधाये
बभ्रूवाहन पार्थकुमारा ❀ गह्यो अश्व जब सुने सुवारा
पिता जानि मिलने जब गये ❀ तब पारथ बहु गारी दये
तात क्रुद्ध ह्वै रण अनुसारा ❀ सब दल सहित पार्थ को मारा
तुव कन्या सब बिनय प्रमाना ❀ है सरवर संजीवन जाना
मणी देहु तौ बचिहै पारथ ❀ नातो सब जो भये अकारथ

दो० शेष कहै बिस्मय बदन, धृतराष्ट्रक की बात ।
सुनि मन्त्री आश्चर्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात ॥

मणी देहु औ अमृत भाई ❀ जाते पार्थ प्राण बचिजाई
सुनतै सबै नाग रिस ताता ❀ एकहि बदन कहे सब बाता
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ ❀ पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ
पुरी पताल नाग जहँ मरई ❀ कहो बात तब कत संचरई
यह मणि मृत्युलोक कहँ जाई ❀ औषध मन्त्र होब कत राई
तेज हमार हीन बिष होई ❀ भय हमार मानिहै नहिं कोई
ताते मणी दीन्ह नहिं चही ❀ सुनतै शेषनाग तब कही
मणि दीजै ह्वैहै यश मेरो ❀ और काम तो होय घनेरो
मन्त्री कहै देब नहिं राजा ❀ मणी गये नाशै सब काजा
धनुष बांधिके नागन खैहै ❀ गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै

दो० शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरिको दास ।
आये दूत सुआश करि, कैसे करहुँ निरास ॥

ग्वाल बच्छ जब ब्रह्मा हरे ❀ माया रूप कृष्ण सब करे
वर्ष एक बिधि रहे भुलाये ❀ सो पारथ के आय सहाये
मैं मणि देहौं जग यश रहै ❀ सुनत बात मन्त्री अस कहै
जो बिनाश नागन कुल कीजै ❀ मृत्युलोक तौ मणि यह दीजै
मन्त्री हेतु कहा सब यही ❀ राजा के मन बिस्मय रही

अब हम कछू कहैं नहिं बाता ❀ आहि के भवन गये सख्याता
पुण्डरीक के शेष बुझायो ❀ हम ते कछू नहीं बनिआयो
वहँ हैं कृष्ण जगत के तारण ❀ तुम पताल आये केहिकारण
शेषनाग तौ कह मन दयऊ ❀ आशा भङ्ग दूत तब भयऊ
भये निराश चले पुनि तहां ❀ नर नारी मग जोहत जहां

दो० रोदन करतीं त्रिया सब, बिस्मय मन बहुराय ।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहूंचे आय ॥

बातैं कह्यो सबै समुझाई ❀ पुरी पताल मणी नहिं पाई
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हे ❀ सुनत क्रोध बभ्रुबाहन कीन्हे
धृतराष्ट्रक राजा ते कहई ❀ मृत्यु भुवन को मणी न अहई
मणि अमृत हति सर्पहि लाऊं ❀ बभ्रुबाहन तब नाम कहाऊं
इन्द्र बरुण यम शंकर होई ❀ जीतौं सबहिं जो आवै कोई
इतना कहि किय रणके साजा ❀ लै दल चले युद्ध के काजा
पहुँचे जबहिं शेष सुनि पाये ❀ तब मन्त्री सन कहा बुलाये
आये रणहि मन्त्र का अहै ❀ सुनत बात मन्त्री तब कहै
हम तो जाब करन रण साजा ❀ मारहुँ सबहिं शोच का राजा
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये ❀ नाग सैन्य तब अद्भुत आये
हय गज रथ पर भे असवारा ❀ विषम बिषैल चले मणिआरा

दो० दोय तीनसौ चार मुख, बिषधर बीर अपार ।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थ कुमार ॥

देखत पारथ कुँवर रिसाना ❀ बर्षन लागे अद्भुत बाना
नागहिं अस्त्र बिषम फुफकारा ❀ मानुष जूझैं होत सँहारा
सेल्ह सांग मार्‍यो असि बाना ❀ मारो सर्प बीर बलवाना
बिषके तेजहि दल अकुलाना ❀ जूझा दल तब बहुत रिसाना
सहस एकइस दल बध भयऊ ❀ बभ्रुबाहन नाम तब लयऊ
धृतराष्ट्रक सो मारे बाना ❀ क्रोधवन्त है काल समाना
न्यूर मोरको अस्त्र चलायो ❀ ऐसे बहुत नाग बिचलायो

महा मारु तब प्रकटी भारी ❀ मारेगये बहुत बिषधारी
पुनि सब नागन कीन्ह दरेरा ❀ दशो दिशा में नरदल घेरा
बभ्रुबाहन तब बहुत रिसाना ❀ क्रोधित मारे मधुको बाना
दो० मधू प्रश्न करिकै तबै, मारत पिलके बान ।
चाम मांस औ हाड़ जे, छेदे उभय प्रमान ॥
ऐसी मारु भई घमसाना ❀ तबहिं नागदल सब भहराना
मारन गये क्रोध करि बाना ❀ मागे हेतु कहा सो माना
अबहूं मणी तुरन्तहि दीजे ❀ शेष कहा मन्त्री अस कीजे
शेषनाग उर हर्ष जु कीन्हा ❀ मणि अमृत दोऊ लै दीन्हा
मिलन हेतु सो सब पग धरे ❀ गृह में मन्त्री रोदन करे
बैरी पाण्डव दुष्ट हमारा ❀ मणि अमृत गै करै बिचारा
दुष्ट दुर्बुधी दो सुत अहैं ❀ तब ते बात तात सन कहैं
हम हैं ऐसो पुत्र तुम्हारा ❀ जिये पार्थ कैसे संसारा
आजु जाहु राजा सँग धाई ❀ हम कछु तबहीं रचब उपाई
दो० शिर आनब मैं पार्थका, रुण्ड रहै मैदान ।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान ॥
यह कहि तात तुरन्त सिधाये ❀ दूनौ बन्धु मणीपुर आये
भेद कोउ जानै नाहिं पाये ❀ पारथ को लै शीश सिधाये
कुञ्ज बिपिन महँ मलिके डारा ❀ शीश नहीं तब त्रिया निहारा
रोदन करैं त्रिया बहुरूपा ❀ मणिपति मिले धाय के भूपा
मणि अमृत दीजे तौ हाथा ❀ हर्षित चले मणीपुर साथा
शेष आदि सबही तब आये ❀ रणभूमी जहँ पार्थ गिराये
देखा तहां राव दुइ नारी ❀ काहु हरो शिर करौ गोहारी
राजा सुनतै मूर्च्छित भयो ❀ हे बिधि कौन कर्म तैं कियो
जबहीं राजा मूर्च्छित भयो ❀ पुरी हस्तिना की सुधि कियो
पारथ सपना मातुहि दयऊ ❀ कुन्ती हरिते बोलन लयऊ
दो० तेलकुण्ड महँ पार्थ अरु, सबन करे अस्नान ।

चढ़ि गर्दभन दखीनदिशि, कीन्हा रैनिपयान ॥
सोबर्तन सुलाल है फूल ❀ पारथ सपन देखि भय शूल
रोदन करि कुन्ती संचारे ❀ श्रीपति कीन्हा पारथ मारे
चले भीम तब कुन्ति डेरानी ❀ हरी गरुड़ पर आसनठानी
पार्थ हेतु चल शारँगपानी ❀ मणिपुर चले पहूंचे आनी
देखा रण श्मशान समाना ❀ तम्बू एक देख भगवाना
अगणित रानी रोदन करहीं ❀ कृष्णरु भीम तहां पगुधरहीं
देखा हरि पारथ के रुण्डा ❀ रोदन करैं त्रिया बिन मुण्डा
कह तब हरिहिं कौन रणराना ❀ को पारथ को कीन निदाना
हा पारथ करि कहा बखानी ❀ रोये भीम कुन्ति पटरानी
तबहीं भीम कहा असबानी ❀ ऐसो कौन वीर जग जानी
दो० मेरे देखत अश्व हरि, बधे पार्थ रणधीर ।
जाहि कुशलसो प्राण लै, ऐसो को यदुबीर ॥
बभ्रुबाहन रोदनकरि कहै ❀ हमतो पुत्र पार्थ कर अहै
कर्म दोष हत्या हम पाये ❀ तातहि अपने हाथ गिराये
अमृत हरि पताल ते लाये ❀ अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये
ताते भीम गदा परिहारौ ❀ मेरो शीश चूर्ण करिडारौ
मैं दर्शन श्री हरिके पाये ❀ जगके भय मोमन नहिं आये
श्रीपति हमैं मृत्यु अब दीजे ❀ मेरो पाप उऋण अब कीजे
चित्राङ्गदा रुदन तब करी ❀ कुन्ती के चरणन महँ परी
शोकित कुन्ती परि मुर्च्छाई ❀ शोष कहा सुनिये यदुराई
पाण्डुबंश बूड़त अब कैसे ❀ तुमहिं कियो रक्षा उपजैसे
सुनिकै हरि चिन्ता उर पागे ❀ सबै लोग तब बोलन लागे
दो० ब्रह्मचर्य जो पुण्य हम, कीन्ह जगत मोझार ।
तौ आवै शिर पार्थ को, चोर होउ संहार ॥
कहतै तुर्त शीश तब आये ❀ मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये
पाय शीश कन्धा पर धारे ❀ हरि मणिहाथ कहै संचारे

उरमें पारथ मणि तब राखे ❀ उठत पार्थहि श्रीपति भाखे
लागे शीश उठो तब कैसे ❀ चुम्बकमाहिं लोहलग जैसे
प्रद्युमन वहमणि धरि जगबन्दन ❀ रहुरहुकरि तब उठे अनन्दन
कर्णपुत्र सूबेग कुमारा ❀ यौवनाश्व अनुशल्यभुवारा
हंसध्वज नीलध्वज राऊ ❀ जागे सबै चेत तब पाऊ
पारथ आदि सबै जब जागे ❀ धाय कृष्ण के चरणन लागे
सेवक शेषनाग तौ भयऊ ❀ शेष अनन्द बहुत बिधि भयऊ

दो० नाना कौतुक बाद्यतब, होत अनन्द अपार ।
पैदल सैना पार्थले, सुनत नगर पगुधार ॥

बभ्रूबाहन लज्जा पाये ❀ सभामाहिं नहिं मुख देखराये
कहै पाप पितुको बध ऐसो ❀ पाप याहि छूटै धौं कैसो
करवट लेउँ दहौं तनु काशी ❀ हिमप्रयाग जाइहौं प्रकाशी
तबहुँ पापका छूटत अहै ❀ सुनिकै भीम बोधि तब कहै
सुनहू पुत्र शोच नहिं कीजै ❀ हमजो कीन्ह श्रवण सुनिलीजै
भीष्मपितामह मैं संहारा ❀ द्रोण गुरू अपने कर मारा
हरि दर्शन सों पाप नशाना ❀ तुव दर्शन पाये भगवाना
पारथ गहे तबहिं सुत हाथा ❀ गहि बैठारे अपने साथा
पुरमहँ भई अनन्द बधाई ❀ परमहर्ष माने यदुराई

दो० पांच दिवस आनन्द बहु, बीते मणिपुर देश ।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये नृपेश ॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई ❀ चित्राङ्गदहि लीन्ह सँगलाई
शेषसुता तो संग सुजाना ❀ कुन्ती अरु मम मातु प्रमाना
अब तो जाहुँ हस्तिना देशहि ❀ हम हस्तिनके संग बिशेषहि
सुनते सबको सँगकरि लाये ❀ भीम बिदा तो हस्तिन पाये
शेषनागको पूजा दीन्हे ❀ शेषागमन पतालहि कीन्हे
भीमसेन हस्तिनपुर गये ❀ सबै बात तो कहवै लये
बिस्मय हर्षतु धर्मकुमारा ❀ वैशम्पायन कथा सँचारा

पाण्डु बिजय यह पुण्य कहानी ❋ बाढ़े धर्म पापकी हानी
तब जनमेजय पूछन लागे ❋ कौनौ कौन देश नृप आगे
कहा भयो कैसो रण भारी ❋ वैशम्पायन कहौ बिचारी

दो० वैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुनु राय ।
मणिपुरते हय छूटेऊ, चले बीर सँग धाय ॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषामणिपुरतोहय
मोचनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

बभ्रुवाहन संग है पारथ ❋ वैशम्पायन कहै यथारथ
चलत पन्थ महँ कौतुक भायो ❋ ताम्रध्वज हय देखन पायो
मोरध्वज को पुत्र जुझारा ❋ अपनो अश्व करे रखवारा
मोरध्वजहि यज्ञ निर्माये ❋ पारथ को हय देखन पाये
पारथ को हय गह सो पाये ❋ पठै सचिव तौ अर्थ सुनाये
बहुत शुद्ध मन्त्री की बाता ❋ ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता
हरे अश्व दलको संहारा ❋ कहै कुँवर तौ काज हमारा
संवत मध्य यज्ञ तो करे ❋ अष्टम यज्ञ अश्व तब हरे
हरे अश्व तौ हर्ष अपारा ❋ तब पारथ दल परी पुकारा
हरो अश्व तब खरब भारी ❋ तब पारथ ते कह बनवारी

दो० महाबली तो मोरध्वज, सब राजा कर देत ।
बभ्रुबाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत ॥

कह्यो कृष्ण नर्मद के तीरा ❋ इनके तात यज्ञ करि धीरा
इनते जीति सके नहिं कोई ❋ यद्यपि सैना साजे जोई
गीध पुष्प दल करी प्रमाना ❋ अनुशल्या रह कन्धस्थाना
हंसध्वज नयनन महँ राखो ❋ और काम अनिरुद्धहि भाखो
सात्यकि पुत्र पच्छ के माहा ❋ मेघवर्णदल रक्षक ताहा
पारथसुत औ कर्ण कुमारा ❋ दोनों चोचन के रखवारा
ऐसे दल संयुत करवाये ❋ ताम्रध्वज पहँ कृष्ण सिधाये
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै ❋ आपे युद्ध हेतु मन गहै

आपुहि युद्ध करिय मनलाई ❀ मोको नाहीं भ्रम यदुराई
अर्धचन्द्र शर सैना करै ❀ अगणित ताम्रध्वज संचरै
दो० सत्रह बाणन हाथ लै, मार्‌यो बिरह अनङ्ग ।
तीनि बाण तो श्याम के, मार्‌यो ताकि अभङ्ग ॥
पांच बाण दारुक को मारे ❀ घायल भये न ज्योति सम्हारे
रण महँ गर्जा सिंह समाना ❀ मारा सात्यकि को तब बाना
कृतबर्महिं मारे नौ बाना ❀ सहस बाण प्रद्युम्न समाना
बाण सहस्र कामसुत ताना ❀ अनिरुध क्रोधे काल समाना
रह रह अब सह बाण हमारा ❀ यह कहि बहुत बाण संचारा
करिकै क्रोध बाण तब छाटे ❀ मोरध्वज ता बीचहिं काटे
पांचबाण ताम्रध्वज मारा ❀ मारे चारो तुरँग तुषारा
व्याकुल भये क्रोध रण ठये ❀ पारथ दल सब घायल भये
प्रद्युमन के रथ को तो तोरा ❀ तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा
दो० तब दोनों बसुधालरे, महामारु तौ ठान ।
मल्लयुद्ध तब ठानऊ, अनिरुध गिर मैदान ॥
औरे रथ ताम्रध्वज चढ़े ❀ महामार युद्धहि मन बढ़े
हरि ते भाषै अनिरुध गिरे ❀ तब देखत बृषकेतू फिरे
मारि हांक तौ बाण प्रहारा ❀ ताम्रध्वज को रथ संचारा
जौने रथ ताम्रध्वज आवै ❀ कर्णपुत्र सो मारि गिरावै
तबहीं क्रोध ताम्रध्वज भयो ❀ काल समान बाण तो लयो
तेहि शर मूर्च्छित कर्णकुमारा ❀ पांचबाण तो तेहि संचारा
ताते मूर्च्छित भो अनुशल्या ❀ देखत बभ्रुबाहन तब चल्या
पांचबाण रहु रहु करि मारा ❀ ताम्रध्वज रथ काटि पँवारा
यौवनाश्व पारथ सुत मारे ❀ ताम्रध्वज सो काटि पँवारे
क्रोधित बाण छाँड़ि तबदीन्हा ❀ बभ्रुबाहनको मूर्च्छित कीन्हा
दो० रहो कृष्ण रणमाहिं अब, सहो हमारो बान ।
क्षत्री भागेउ देखतै, पारथ दल महरान ॥

सबै बीर देखत हैं ताहां ❀ ताम्रकेतु डारत रण माहां
देखत पारथ बीर रिसाना ❀ ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना
नवो बाण पग अश्वन मारे ❀ और बाण ते रथ संहारे
औरे रथहिं भये असवारा ❀ नवो बाण पारथ कहँ मारा
और बाण ते रथ संहारा ❀ औरे रथहिं भयो असवारा
तबहीं क्रोध करै बहु लीन्हा ❀ बाण वृष्टि पारथपर कीन्हा
ते असदेखि सुचित तहँ भयऊ ❀ शंखध्वनि पारथ तहँ कियऊ
ताम्रध्वज का रथ संहारा ❀ औरे रथ चढ़ि श्यामकुमारा
क्रोधवन्त बाणन तब मारा ❀ पारथ के सारथि संहारा
और बाण पारथ के लागे ❀ मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे
महा मारु पारथ पर दीन्हे ❀ एक सहस्र मारि रथ लीन्हे

दो० ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान ।
तबहूं ताम्रध्वज बली, छांड़ा नहिं मैदान ॥

पारथ मारा बाण रिसाई ❀ ताम्रध्वज रथ मारि गिराई
औरहि रथ पर भो असवारा ❀ पारथ ऊपर बाण भहारा
पारथ के शर प्रबल समाना ❀ क्षोहिणि दुइदल गिरे प्रमाना
अयुत बाण ताम्रध्वज मारा ❀ पारथ क्रोधित बाण सँचारा
धनुषै गुन काटे तब पारथ ❀ दोय सहस मारे रथ सारथ
सातदिवसलग दिन अरु राती ❀ ऐसी मारु भई बहु भांती
ताम्रध्वज शर हते रिसाई ❀ पारथ को रथ चला उड़ाई
ऊपरते रथ भुवि करि भ्रामा ❀ हस्तकमल पर लीन्हे श्यामा
भुवि पर जब राखे यदुराई ❀ तब ताम्रध्वज कह बिलखाई
भूमें मैं उड़ाय रथ डारा ❀ राखे कर धरि नन्दकुमारा

दो० श्रीपति गदा घाव करि, औ करि चरण प्रहार ।
मूर्च्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार ॥

तीनि बाण हरिको तब मारा ❀ कह हरि पार्थ करौ संहारा
हम तुम आजहि इनको मारैं ❀ यहि अन्तर श्रीकृष्ण बिचारैं

मारे रिस करि पारथ बाना ❀ बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये ❀ ताम्रध्वज गुन काटि गिराये
तब ताम्रध्वज कहै रिसाई ❀ अब पारथ राख्यो यदुराई
जो नहिं रथ पर पारथ आये ❀ सारथि भे तब रथहि बचाये
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना ❀ पारथ दल तो सब भहराना
हय गज रथ पैदल हैं जेते ❀ वहि रण में बिचले सब तेते

दो० ताम्रध्वज को सबै दल, क्रोधित ह्वै भगवान ।
गहे चक्र तब चक्रधर, महा मारु तब ठान ॥

रथ ते बेगि उतरिकै धाये ❀ तीनि लोक तब शङ्का पाये
डगमगानि भुवि सब संसारा ❀ एक क्षोहिणी दल संहारा
तब सुचित्र बहुघातैं करै ❀ आय धाय श्रीकृष्णहि धरै
दहिने हाथ गहे तब धाये ❀ बायें कर पद शीश चढ़ाये
पारथ जाना मिले प्रमाना ❀ ताम्रध्वजहिं क्रोध तब माना
बाम चरण पारथ कहँ मारा ❀ हरि पर गिरे सुचित्रकुमारा
हरि अर्जुन तब मूर्च्छित भये ❀ लेकर अश्व चलन मन दये
हर्षिगात अपने पुर चले ❀ दूनो अश्व संग हैं भले
मोरध्वज तब देखन पाये ❀ दूजो अश्व कहां ते लाये

दो० ताम्रध्वज औ मन्त्रि ने, भाषे सब बिरतन्त ।
धर्मराज कर अश्व है, रक्षक कमलाकन्त ॥

रक्षक पारथ श्री भगवाना ❀ सबदल मोहित किय मैदाना
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहै ❀ धिक धिक सुत तू मेरो अहै
हरि को तजे अश्व लै आये ❀ धिकजीवन तोहिं गुरूपढ़ाये
बहुप्रकार ते डाटन लागे ❀ इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे
बभ्रुबाहन आदि सरदारा ❀ चेतन भये सबै बिस्तारा
पारथ कहै कहां यदुराई ❀ अश्वहि लिये कहां सो जाई
हमहूं को चलिये लै तहां ❀ सुनी बात तब श्रीपति कहा
रत्नपुरी मोरध्वज राऊ ❀ वह लै अश्व गयो परमाऊ

परम बली है भक्त हमारा ❀ माया कै कीजै संचारा
वृद्ध द्विज हम तुम हो बालक ❀ यहिविधिचलौ कहैं गोपालक
दो० नृप का सत्त देखाइहौं, तुमको पारथ बीर ।
बाल वृद्ध माया करी, चलौ नृपति के तीर ॥
सेन राखिके द्वउ जन आये ❀ रत्नपुरी निशि माहिं सिधाये
नर नारी कौतुक लख नाना ❀ प्रात होत नृप पहँलो आना
यज्ञशाल मो राजा अहे ❀ दूनौ अश्वहि देखत रहे
जाय बिप्र जब आशिष दयो ❀ तब राजा यह बोलत भयो
बिन प्रणाम तुम आशिषदयऊ ❀ मोको महापाप द्विज भयऊ
द्विज कह कछू पाप नहिं राजा ❀ याचकद्विजकी है यह काजा
करि प्रणाम तब राजा कहै ❀ कहो बिप्र मन कामन कहै
द्विजन कहो मध्यपुर ग्रामहि ❀ कृष्णशर्म्मा है मेरो नामहि
अपने सुत को ब्याह बनाये ❀ पुत्रबधू लै तुम पहँ आये
मार्ग माहिं घन कानन अहे ❀ तहां सिंह मेरो सुत गहे
दो० मैं बिलाप बहु कीन्ह तब, सिंह न छांड़े पुत्र ।
हम न गहै शिशुही गहै, खान चहत ममपुत्र ॥
सिंह कहै आयू जेहि अहैं ❀ ताको हम नाहीं द्विज गहैं
जो चाहत हो पुत्र बचावा ❀ तौ दीजै जो मम मन भावा
एक बस्तु मांगा हम पासा ❀ जाते हम आये करि आसा
मोरध्वज राजा तब कहै ❀ मेरे देश सिंह नहिं अहै
तब राजा पूछन यह लागे ❀ तुम ते सिंह कहो का माँगे
जो माँगे सो हमैं सुनाओ ❀ जामें तुम अपनो सुत पाओ
मिथ्या होय न बात हमारी ❀ तब द्विज यह बाणी संचारी
मोरध्वज को अर्ध शरीर ❀ म्वाहिंदे सुतकहँ ले द्विजबीर
तब हम कहा सिंह सुनु बीरा ❀ मोहित नृप कत देत शरीरा
तबहिं सिंह कह सत जो द्वैहै ❀ दीहै देह कछू ना कहिहै
दो० ताते नृप मैं आयऊं, अपने सुत की आस ।

धर्मराज साहस सुनो, सो तो तुम्हरे पास ॥
मोरध्वज हर्षित है कहो ❀ लेहु शरीर बिप्र जो चहो
कछु नहिं दुःख करो संचारा ❀ यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते ❀ हाहा शब्द पुकारत तेते
काल स्वरूप बिप्र इक आवा ❀ नगरनिवासिन बहुदुख पावा
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो ❀ राजा तहां जाय भो ठाढ़ो
करि अस्नान तुलसिदल लये ❀ कृष्णध्यान महँ अतिमन दये
तबहिं म्लेच्छ राजा ते कहे ❀ करवत शिर देखो जो गहे
पशु पक्षी रोवत पुर भारी ❀ तब रानी गइ कहै बिचारी
कुमुदावती तु रानी कहई ❀ अर्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई
दो० हर्ष गात द्विज भाषेऊ, सिंह कहा समुझाय ।
बाम अङ्ग जनि लायऊ, दहिना लाओ जाय ॥
बाम अङ्ग पतिबर्ता आहै ❀ ताते सिंह तुम्हें नहिं चाहै
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये ❀ करि प्रणाम तौ द्विजहिं सुनाये
पितु को अङ्ग पुत्र सो अहै ❀ मेरो तनु लीजे यह कहै
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई ❀ तबहिं बिप्र यह बचन सुनाई
सिंहहि कहा और नहिं काजा ❀ लाओ तनु मोरध्वज राजा
स्त्री पुरुष चीरिहैं देहा ❀ बिस्मय नहिं आनन्द सनेहा
मङ्गल करिके देह चिराओ ❀ दहिने अङ्ग बिप्र लै आओ
स्त्री पुरुष हर्ष तब करी ❀ करवतलै राजहिं शिर धरी
इन्द्र आदि देवनगण जेते ❀ नृप सत देखन आये तेते
नगर लोग सब देखहिं नाना ❀ स्त्री पुरुष तु हर्ष निदाना
दो० उलटे आरा नयन कर, अर्ध शीश गयो चीर ।
बाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चलो तब नीर ॥
देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं ❀ कादर दान लेत द्विज नाहीं
देत शरीर तु रोदन करैं ❀ याहि दान हम कैसे धरैं
बरु पुन्नही सिंह लै खाऊ ❀ यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ

संगहि पारथ करिके चलेऊ ❀ लोग सबै तहँ देखत भयऊ
तब रानी करवती उतारा ❀ गहे दाबि शिर हाथ भुवारा
कहहीं बात नाथ सुनि लीजे ❀ बिप्र काहि सन्तुष्ट करीजे
तजे शरीर बिमुख द्विज जाई ❀ अहो कन्त द्विज लेहु मनाई
तब राजा कर शिर धरि कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै
अहो बिप्र बिनती सुनि लीजे ❀ पाछे आप गमन जो कीजे
करवत ते नहिं दुःख हमारे ❀ बहुत दुःख जो बिमुख सिधारे
दो॰ बाम अङ्ग रोदन करै, हम निष्फल संसार।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज काज सँवार॥
सुनतहि बात हर्ष द्विज पाये ❀ हर्षित राजहिं रूप दिखाये
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा ❀ माँग माँग बर बोलै लीन्हा
दै शरीर तोषित किय मोहीं ❀ जगमें भक्त देखियत तोहीं
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो ❀ सबदल जीतिलियो जिन मेरो
तब राजा अस्तुति बहु कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै
माथे हाथ मृतक के दीन्हा ❀ सर्व कलेश नाश तब कीन्हा
राजा कह बिश्वम्भर देवा ❀ माँगहुँ बर सूनो हरि भेवा
जैस परीक्षा हमरी लयऊ ❀ स्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा ❀ ऐस न याचहु त्यहि जगतारा
यह कहि धन अरु सम्पतिदयऊ ❀ दूनहु अश्व आप सँग लयऊ
दो॰ यह भाषे जगहेतु कहँ, पाय दर्श भगवान।
करै यज्ञ हरि दर्श लहि, होय सदा कल्यान॥
अश्वदलहि नृप संगलै, चले मोरध्वज राव।
भक्त परीक्षा लेन को, तौ हरि कीन उपाव॥
इति श्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषाकृतमोरध्वजराजा
दर्शनपावनोनामदशमोऽध्यायः॥ १०॥
दूनो हय लै पारथ चले ❀ बैशम्पायन बोलत भले
दल समग्र चलि आयो तहां ❀ सरस्वति पुरी नगर है जहां

बीर भानु तहँ नाम नरेशा ❀ दोनौं अश्व करैं परवेशा
नगर के लोग धर्म अनुरूपा ❀ आये अश्व सुन्यो तब भूपा
पञ्च बीर को आज्ञा दयऊ ❀ तबहीं अश्व नृपतिपहँ गयऊ
सुरभ सुलभ अरु नीलममाना ❀ कुबलयबल पांचौ बलवाना
पांच बीर रण मों गह गहै ❀ तब मणिपुरपति रहुरहु कहै
शंखनाद तब बीरन कीन्हा ❀ धनुषबाण हाथै सब लीन्हा
बर्षन लगी बाण की धारा ❀ दोउ दल जूझै बीर अपारा
रथ गज अश्वरु पैदल लाखन ❀ जूझन लगे सकै को भाखन

दो॰ यहि अन्तर यम आयकै, सैना बधे हज़ार ।
जामाता यम नृपति के, भाषे नन्दकुमार ॥

तातै सैना इह बध कीन्हा ❀ तब पारथ पूछै कह लीन्हा
यमको कत नृप कन्या दीन्हा ❀ सुनतै कृष्ण कहै तब लीन्हा
राजाके मालिन भौ बारी ❀ योग स्वयम्बर भूप बिचारी
राजा पूछहि कन्या कहौ ❀ मांगहु बर जो मनमें चहौ
देव नाग अरु मनुज सुरारी ❀ जो बर चाहो कहो कुँवारी
कन्या कहै तात तै बाता ❀ यमराजा को चाहत ताता
कालहि पाय त्रिया जो मारै ❀ अन्त जन्म तो गृह पगुढारै
तबै कन्त दूसर तौ होई ❀ महापाप तातै है सोई
तातै प्रथमहि यम को बरो ❀ एक पुरुष दूसर परिहरो
नृपकन्या नृपपर मन साधै ❀ निशिबासर यमको आराधै

दो॰ नारद यह तौ जानिकै, यमपुरगो हरषाय ।
कन्याका वृत्तान्त सब, कहा धर्म सन जाय ॥

पांच पुराय जानौ सम राजा ❀ मालिनिसुधिबिसरे केहिकाजा
धर्म्मवन्त कन्या सो अहै ❀ सारस्वतपुर नृपको रहै
एकब्रत सो मनमहँ धरै ❀ यम राजा को चाहत बरै
जाय करौ अब ताको ब्याहा ❀ तब यम भाष्यो नारद पाहा
आपु जाहु हम पाछे ऐहैं ❀ बैशाख मास मों हमहूं जैहैं

शुक्लपक्ष मों ऐहौं सही ❀ नारद सुना चले तब जही
सारस्वत नगरै तब गयऊ ❀ सबै बात राजा सों कहेऊ
कहिकै नारद सुरपुर गयो ❀ शुक्लपक्ष बैसाख तु भयो
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ सबै लोग तब तुरतहिं आये
दुइ आहैं सबके सरदारा ❀ शुक्र प्रमेह रोग अपारा

दो॰ सब रोगन सों यम कहै, चलो संग बरिआत ।
ब्याह हमारो होत है, सारस्वत पुर जात ॥

तब सब रोग कहैं यह बाता ❀ पुण्य धर्म है ह्वां बहु ताता
वहां हमार नहीं संचारा ❀ तुरत तेज बल जाब हमारा
यमहि कहा पापी नर जेते ❀ रूप कुरूप देखिहैं तेते
धर्मवान जेते नर अहई ❀ रूप अनूप देखिहैं कहई
जाको पीड़ा कर बहु भाई ❀ ताको भेद कहौं समुझाई
ब्रह्मवधे कर पातक जाही ❀ ब्रह्म अंश क्षयी गहु ताही
गोदावरि गौतम इक मासा ❀ परशे क्षयी रोग को नासा
देव द्रव्य हरवरी सतावै ❀ तासु शरीर बिसूचिक आवै
ताको नाम खण्ड है भाई ❀ अजया कञ्चन मुख नहिं जाई

दो॰ कञ्चन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते जाय ।
गर्भपातके पाप ते, गहत जलन्धर आय ॥

एकोत्तर सौ तुला जो करई ❀ लक्ष छत्र दीन्हे सो हरई
रस अरु द्रव्य जो चोरी करै ❀ ताको ब्याधि अरूचित धरै
कञ्चन दान करे ते जाय ❀ गौवें देहि कहै यमराय
बेश्या संग हरै गुरुनारी ❀ सन्निपात पीड़ा तौ धारी
पङ्क उधारन को धन हरै ❀ यमराजा को चाहत बरै
श्रुति दै भूषण भेटत दाना ❀ दूनहु ब्याधि तुरन्त पराना
भूमिदान दीन्हे सो जाई ❀ पुनि द्विज भोजन जाय छोड़ाई
अरुचक तौ ताही गै धरै ❀ लाखन द्विज भोजन परिहरै
आशा भङ्ग पन्थ बटपारी ❀ शूलब्याधि तेहि होती भारी

दो० पक्षी कोटिन नाशकर, या बेंचत जो होय ।
हेमयज्ञ वैष्णव द्विजहिं, दान दिये क्षय होय ॥
बरदानि कादर हुचका होय ❁ लक्ष होम महँ नाशै सोय
साजुयोग जो दारे होई ❁ चुगुल रोग पावत है सोई
तेलकुण्ड दाना एक मासा ❁ तब सो व्याधि होति है नासा
निन्दा सन्त रोग मुख पावै ❁ लक्ष दान दे ताहि भगावै
परनारी देखत जो धावहि ❁ नैन रोगते बहु दुख पावहिं
गुरु अपनेको ध्यान जो धरही ❁ नैन रोग तुर्तहि परिहरही
अंश छोड़ावै घेघा होई ❁ पञ्च रतन दीने सुख सोई
देखत दान सूम मुरझाही ❁ मृगी रोग होता है ताही
कृष्ण धेनु कञ्चन कर दाना ❁ मृगी रोग जाता क्षय माना
दो० यज्ञ स्थित जो दाहतनु, डारत बन्दी माहि ।
शिवपूजे अतिहेतु सो, तब सो व्याधिनशाहि ॥
यही प्रकार और बहुतेरे ❁ नाना व्याधि पुरुष तनु घेरे
याहि प्रकार ते सबहि बुझाये ❁ तब सब सारस्वत पुर आये
राजा हर्ष गात ह्वै कहै ❁ कन्यादान देन तौ चहै
मेरे रिपु सों करहु लराई ❁ यह बाचा तौ कीन्ह्यो राई
तब कन्या दीन्हो यह दाना ❁ पारथ पाहँ कहैं भगवाना
ते बाचा ते रण हरि लाये ❁ ताते युद्ध हेतुको धाये
आप सबै रणको मन दीजै ❁ युद्ध जीति अश्वहि को लीजै
पारथ के रथ पर हरि आये ❁ युद्ध हेतु सबही मन लाये
बीर बर्म राजा तब आये ❁ पारथ सों तब बात सुनाये
करो युद्ध पारथ मन लाई ❁ महा मारु ह्वैहै प्रभुताई
दो० जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनीबात क्रोधित बदन, पारथ बचन प्रकासु ॥
छांड़ो अश्व कहैं हम राजा ❁ ना तौ महामार अब साजा
बर्म बीर तौ बोलन लागे ❁ अश्व . कहां अब पैहौ मांगे

दुओ अश्वलै मख मैं करौं ❀ तुम्हें समेत कृष्ण कहँ धरौं
मारे रण लायक नहिं पारथ ❀ पारथ सुनौ क्रोध पुरुषारथ
मारे पारथ बाण अपारा ❀ बर्मा बीर काटि शर डारा
तब सौ बाण पार्थ कहँ मारा ❀ साठि बाण तो नन्दकुमारा
पांच बाण मारे ध्वजराऊ ❀ लग्यो बाण तब मूर्च्छा पाऊ
जब राजा के सारथि आये ❀ तब पारथ बहु बाण चलाये
पारथ शर तो बर्षत नाना ❀ बीर बर्म मारे बहु बाना
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये ❀ बाण बुन्द ते बर्षा लाये

दो० पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय ।
सात बाण तब राजहीं, मारे पार्थ रिसाय ॥

नृप करि क्रोध साठि शरमारा ❀ सो शर लागे नन्दकुमारा
चारि बाण अश्वहि पर दयऊ ❀ तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ
बीरबर्म तब कह यह बाता ❀ मोरे जयकर पाव सख्याता
भीषम द्रोण कर्ण संहारा ❀ ते शर काम न आव तुम्हारा
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि ❀ नृपरथ तुम लैजाहु अकाशहि
घोर सिन्धु रथ डारो जाई ❀ सुना हनू तब चले रिसाई
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ ❀ बीरबर्म बहुबल तब कियऊ
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ ❀ लै रथ अन्तरिक्ष पुनि कहेऊ
जहाँ स्वर्ग माहीं हनुमन्ता ❀ पारथ रथ लै गयो तुरन्ता

दो० हनूमान सन भाषेऊ, लीजै रथहि हमार ।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार ॥

कहिये रथ लै डारों कहाँ ❀ क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहाँ
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा ❀ सुयश तुम्हार जगत मों बाजा
साधु भक्त औ बली कहाये ❀ बीरबर्म तो बात चलाये
मैं तो नाम सुना है तोरा ❀ लै रथ जान सकै नहिं मोरा
यह कह एक मुष्टिका दई ❀ हनूमान के पीरा भई
हरि राजा पारथ हनुमाना ❀ तब सब बसुधा आयप्रमाना

देखत श्रीपति हाथ प्रहारे ❀ बीरबर्म मूर्च्छित बिकरारे
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ ❀ तुर्त कृष्ण के आगे गयऊ
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी ❀ आयों शरणे कृष्ण तिहारी
तुव दर्शन करि पातक भागे ❀ प्रेम भक्ति हिरदय महँ जागे

दो० तब राजा अस्तुति करी, धनुषबाण दिय डार ।
करि प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये सुवार ॥

पारथ सन भाष्यो यदुराई ❀ इनते जय काहू नहिं पाई
बीरबर्म को जीतन पायो ❀ मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो
पारथ कह जो तुम्हें मनायो ❀ तासों जगमा जय को पायो
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा ❀ भांति भांति के बाजन बाजा
सब दल लैके नग्रहि गये ❀ दिन इक द्वै बीती जब गये
देश भूमि तब आगे कीन्हा ❀ अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा
शत सहस्र हाथी तो दये ❀ औरहु अश्व अनेकन लये
छूट अश्व तो संग नरेशा ❀ भरमत फिरा अनेकन देशा
नदी एक महँ पैठ तुरंगा ❀ तटहीं तट पारथ दलसंगा
पारथ भये अश्व तो जाई ❀ तबै सर्ब दल पार सिधाई

दो० परमानन्दित सर्ब दल, पारथ हयके संग ।
बैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनंग ॥
चले अश्वके संग सब, नाना बीर नरेश ।
आय देश सब जीतिकै, चन्द्रहास के देश ॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञकृतवीरवर्मविजयो
नामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बैशम्पायन राजहि कहा ❀ चलो अश्व तब आगे कहा
चन्द्रहास राजा जहँ रहै ❀ तहां अश्वचलि भो मुनि कहै
कित गो अश्व शोच सब पाये ❀ यहिअन्तर नारदमुनि आये
पारथ पाहँ कह्यो समुझाई ❀ कुन्तलपुरहि अश्व तब जाई
चन्द्रहास जो भक्त कहाये ❀ बड़े कष्ट राजा तब पाये

धृष्टबुद्धि बैरी तेहि अहे ❀ रक्षक सदा लक्ष्मिपति रहे
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये ❀ मही प्रसाद राज पद पाये
तब पारथ कह बिनती लाई ❀ चन्द्रहास गुण कहो गुसाँई
नारद कह भल समय सुहाये ❀ कथा सुने का हेतु सुनाये
अश्व कहां खोये मन लाई ❀ तब पारथ बोले बिहँसाई

दो० कुरु पाण्डवके युद्ध महँ, एक पलकके माहि ।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि ॥

सुनत कथा नारद तब कहहीं ❀ कदिदलदेश धर्म नृप रहहीं
ताके गेह जन्म इन लये ❀ जन्मत तात मातु मरिगये
लैके धाइ कुँतलपुर आई ❀ बर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई
तीनि बर्षको बालक अहे ❀ षट अंगुलि बायांपद रहे
ताको लोग दया करि राखैं ❀ लक्षण राज सबै तो भाखैं
धृष्टबुद्धि मन्त्री गृह माहीं ❀ एक दिना सो बालक जाहीं
जादिन द्विज उन भोजनदयो ❀ सोदिन बालक तहँवां गयो
रूप देखि मन्त्री सुख पायो ❀ करि बहु प्रीति अग्र बैठायो
द्विज मुनि तो कहते यह बाता ❀ बालक नृप होवो सख्याता
राजा हैहै आशिष दयो ❀ धृष्टबुद्धि तब चिन्तत भयो

दो० सब विप्रन को बिदा करि, मनमों करै बिचार ।
मदन अमल दो पुत्र मम, पै यह होत भुवार ॥

यह बालक राजा मुनि कहे ❀ ताते मन बहु चिन्ता गहे
मुनिके बाक्य झूठ नहिं सही ❀ बोलि चण्डालहिं मन्त्री कही
बालक हति चिह्नहि ले आवो ❀ धन सम्पति मोते बहु पावो
ले चण्डाल बाल बन गये ❀ दधि पावन शिशु मुखमोंलये
गोली खेले मुख मो रहे ❀ तब चण्डाल हतन को चहै
हरि माया मोह्यो चण्डारा ❀ पूर्व पाप कहँ जनु अवतारा
बाल बधे अघ का गति होई ❀ बालक कहँ मारो जनि कोई
बाम पाद षट अंगुलि देखी ❀ काटिलीन तो देखि बिशेखी

धृष्टबुद्धि को दीन्ह्यो जाई ❀ धन सम्पति चण्डालहि पाई
भई झूठ बिप्रन मुख बानी ❀ बालक हते होति रजधानी
दो० धृष्टबुद्धि आनन्दित, बालक बन महँ रोय ।
पशु पक्षी बन जन्तु सब, करि मनुहार सुजोय ॥
सो बन गयो शिकारहि राजा ❀ नाम कुलिन्द भक्त रघुराजा
ते बालक देखन को पाये ❀ हर्ष गात लै गोद चढ़ाये
धृष्टबुद्धिके सेवक सोई ❀ पाछे शिशू हर्ष मन होई
सत्रावती तासु त्रिय आही ❀ बालक लेकर दीन्ह्यो ताही
पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो ❀ गुरुको सौंपि पढ़े कहँ दीन्ह्यो
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे ❀ कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे
गुरु तब जाय कुलिन्दहि कहै ❀ तुव सुत बाउर हरि हरि कहै
औरहु कछू बात नहिं अहई ❀ तब कुलिन्द गुरुसों असकहई
सात बर्ष महँ बिद्या देहौ ❀ यज्ञरु जाप पवित्र सिखैहौ
दो० जादिन ते सुख पायऊ, राजा शिशु धन वृद्धि ।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु, सर्व तासु कर सिद्धि ॥
सात बर्ष मों यज्ञ कराये ❀ पुत्रहिं तबै पढ़न बैठाये
बेद पुराण शास्त्र तौ पाये ❀ क्षत्री ब्रत सब अस्त्र सिखाये
पारथ मनहिं हर्ष उपराजू ❀ ऐसेहि भक्तहि देखब आजू
पन्द्रह बर्ष के भये कुमारा ❀ दुर्ग बिजय कीन्हा संचारा
बहुतक देश जीति धन लाये ❀ अपने देश अनेक बसाये
द्विजबैष्णव तौ अगणित राखे ❀ ग्राम भूमिदै प्रीतिहि भाखे
ग्राम ग्राम महँ देवल दीन्हा ❀ कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा
घर घर सबै जपैं भगवाना ❀ श्रवण करैं सब बेद पुराना
सबही ब्रत एकादशि अहहीं ❀ परमानन्द प्रजा सब रहहीं
दुर्ग बिजय करि गृह पग धारे ❀ आरति हर्षित मातु उतारे
दो० रूप देखि सब मोहित, गृहमें गयो कुमार ।
कह कुलिन्द कुन्तल पुरी, आहै भूप हमार ॥

तिन्ह कहँ बस्तु पठाये कञ्चन ❀ बारह सेर सीप गृह रञ्चन
सेर षष्ठ रानी सचिवन ते ❀ सो सुत जाहु सेवकहि चेते
पत्री लिखि दीना ता हाथा ❀ औ कञ्चन दीन्हा है साथा
गयो पन्थ में पहुँचे ताहा ❀ जादिन ब्रत एकादशि आहा
करि अस्नान ध्यान मन दये ❀ तब मन्त्री के गृह को गये
भीगे बस्त्र देखि संचारा ❀ मन्त्री कुशल पूछि विस्तारा
कहै कुशल तो सबै सँदेशा ❀ और बस्तु तब दीन्ह प्रवेशा
पत्री पढ़ी सुनी सब बाता। ❀ दुर्ग बिजय देवस सख्याता
तब भोजन कहँ मन्त्री कहै ❀ सब परकार भवन मम अहै
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं ❀ एकादशी अन्न ना खाहीं

दो० प्रातकाल है द्वादशी, पारण कीन्हों जानि ।
बिदा होन जब लागेऊ, मन्त्री कहा बखानि ॥

चन्दनपुर हम देखन जाई ❀ बिदा मांगि नृपते चलिआई
राज्यकार्य्य मदनहि जो दीन्हा ❀ चन्दनपुर मन्त्री शुभ कीन्हा
जाय दीख चन्दनपुर थाना ❀ वही ग्राम कीधौं है आना
देखत मनमहँ चिन्ता भयो ❀ तब कुलिन्द के गृह को गयो
बहु आनन्द कुलिन्दहि करे ❀ तब मन्त्री पूछन मन धरे
जब तुम्हरे गृह बालक भयो ❀ मोहिं खबरि काहू नहिं दयो
कहै कुलिन्द नहीं त्रिय जाये ❀ कानन बिचरत बालक पाये
छठईं अँगुरी काटी कोई ❀ बालक व्याकुल बनमहँ रोई
हम लै आये पालै आनी ❀ मन्त्री सुनत बुद्धि हैरानी
जाना निश्चय बालक जो है ❀ चाण्डाल नहिं मारा सो है

दो० अन्न शैल सम लागई, मन आनन्द न पाव ।
क्यहिबिधि बालक मारिये, काधौं मन्त्रहि आव ॥

करिहौं झूठ मुनिन की बानी ❀ चन्द्रहास ते कहा बखानी
कागज मसी कलम लै आओ ❀ लै पत्री तुम मम गृह जाओ
चन्द्रहास आनी कै दयऊ ❀ मन में मन्त्री शोचत भयऊ

प्रकटहि बधे द्वन्द्व बहु होई ❋ गरलहि देकै मारै सोई
पत्री लिखे मदन को ताहा ❋ सोसति मदन पुत्र तो आहा
यही हेतु पत्री लिखि दयऊ ❋ चन्द्रहास गति दर्शन दयऊ
शील पराक्रम परिडत सोई ❋ हम सम्पति को ठाकुर होई
कछू बिचार हृदय नहिं कीजै ❋ तुरतै बिषया कहँ सुत दीजै
सबही काम सिद्ध तब होई ❋ कागज माहिं छापकरु सोई
चन्द्रहास को पाती दीन्हा ❋ मम गृह जाहु बोल असलीन्हा

दो॰ पत्री करमें लै तबै, कहै पितहि बिरतन्त ।
पाछे माता पहँ गये, बिदा होन सुत सन्त ॥

माता तबहीं आरति कीन्हा ❋ रक्षकदेव कहे तब लीन्हा
पद्मनाभ ऊदर हैं माधौ ❋ दोषहरण नरसिंहहि साधौ
कटि मधुसूदन मखपति जानू ❋ मुख नारायण रख प्रमानू
बक्षस्थल माहीं ऋषि केशो ❋ सब तनु रक्षक पवन नरेशो
श्री लेकर गृह को ऐहैं ❋ मनोकाम तुरतै सिधि पैहैं
करि प्रणाम माता को चले ❋ ह्वै सवार हय मोदित भले
पत्री पाग माहिं तब कीन्हे ❋ उत्तमहार शीश सों लीन्हे
चन्द्रहास तब उपमा पाये ❋ मानहु दूलह ब्याहन आये

दो॰ कुन्तलपुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुरेष ।
मध्य दिवस आये तबै, जहँवां बाग बिशेष ॥

शीतल छाहँ जु देखन पाये ❋ चन्द्रहास बिश्राम कराये
गज अरु अश्व अम्बतरु बांधे ❋ तृण अरु जल दे हर्षित साधे
पांचौ जने शयन मन दिये ❋ यहि अन्तर यह कौतुक भये
नृपकन्या तो अनुपम बामा ❋ पद्मक मालिन ताके नामा
मन्त्री की कन्या तो अहे ❋ संगहि सखी अनेकन रहे
वहि सर माहिं सबै तो गईं ❋ तूरि पुष्प न्हाती फिर भईं
कौतुक न्हान सबै तो कियऊ ❋ पीछे पग गृहको तब दयऊ
पाछे बिषया चली बिशेखी ❋ तहँवां चन्द्रहास को देखी

रूप देखि मोहित भयो भारी ❀ वही ठांव बिलमी घरि चारी
अश्वहि किये प्रणाम बनाई ❀ हे प्रिय जनु बिधि देहु जगाई
दो० पुरुषनिकट गइ नारि तब, देखति रूप अघाय।
पिता हाथ की पत्रिका, तासु पागमहँ पाय ॥
छाप खोलिके पाती पढ़े ❀ महाशोच तौ मनमहँ बढ़े
बिष दै यहिको तुरतहिं मारैं ❀ तब का बन जब सबै बिगारैं
रूप देखि भइ मोहित नारी ❀ मनमा तब इक युक्ति बिचारी
नख कनिष्ठते कज्जल लीन्हा ❀ जहँ बिष तहँ बिषया कै दीन्हा
पूरबबिधि तौ छाप बनाई ❀ बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई
चलि सखीनमहँ मिलिसो जाई ❀ नाना कौतुक सखिन बनाई
पूर्व देखि तब रही लोभाई ❀ लागी कौतुक करैं सोहाई
तब कन्या अपने गृह गई ❀ सांझ पहर की बेरा भई
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै ❀ खाये पान मगन मन होवै
गजारूढ़ है चलते भये ❀ मन्त्री गृह अभ्यन्तर गये
दो० द्वार द्वार प्रतिहार तौ, छठे द्वार महँ जात।
सप्तम द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात ॥
तिन तो जाय मदन सों कहा ❀ चन्द्रहास द्वारे महँ रहा
बेद पुराण सुनै तो आहा ❀ सुनत तुरन्त चले उठि ताहा
बाहर आय भेंट हियलाई ❀ भीतर को सो गयो लिवाई
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा ❀ सबै कुशल कहवे तब लीन्हा
गूढ़ पत्र तब तात पठाये ❀ यह पत्री पढ़ि बूझहुजाये
पढ़ने मदन सभामहँ लागे ❀ सोसति मदनलिखाहै आगे
यही हेतु पत्री लिखि दये ❀ चन्द्रहास गति सुन्दर लये
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम सम्पति कर ठाकुर होई
कछू बिचार हृदय नहिं कीजै ❀ तुरतहिं बिषया ब्याहि सो दीजै
पूरण कार्य सिद्धि तब होई ❀ मदन पढ़ै चिट्ठी महँ सोई
दो० हर्षित मदन हृदय महँ, तुर्त ज्योतिषी लाय।

सबै सुयोग सुमङ्गल, लग्न बिवाह धराय ॥

बिषया तहां मनाव भवानी ❀ चन्द्रहास बरदे कल्यानी
तृतिया ब्रत करिहों मैं तोरी ❀ तुम जो आश पुजावहु मोरी
अन्तःपुरे मदन तब गये ❀ सब बृत्तान्त मातुपहँ कहे
गोधन समय ब्याह परमाना ❀ चन्द्रहासबर बिषया बामा
बिषया ते सब सखिन सुनाई ❀ सुनते बिषया लज्जा पाई
लग्न भये तब बाजन बाजे ❀ मङ्गलचार सखीगण साजे
चन्द्रहास को तब अन्हवाये ❀ बिषया को शृङ्गार बनाये
बिबिध प्रकार लग्न धरवाये ❀ ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये
गोत्र पूछि कह तब मन लाई ❀ चन्द्रहास तब बात सुनाई
माता पिता गोत्र हरि अहै ❀ लै कुलिंद पारावति कहै

दो० शाखोच्चार उचारि कै, बेद जो बिबिध प्रमान ।
शास्त्रधर्म कुलधर्म मत, मदन देत हैं दान ॥

कन्यादान मदन तब कीन्हा ❀ गज तुरंग मणि मुक्ता दीन्हा
रजत सुबर्ण बहुत तेहि दीन्हा ❀ सब भण्डार शून्य तो कीन्हा
होम करी गँठिबन्धन भये ❀ भाँवरि सात अग्नि पर दये
दक्षिण ब्राह्मण सबहिन पाये ❀ यहि प्रकार ते ब्याह कराये
सब द्विज और पुरोहित आये ❀ दान देय सब बिदा कराये
मँगलाचार युवतिजन गाये ❀ बहुत गुणीजन मँगता आये
बिष देवायकै मारन चहै ❀ हरि सहाय तो नारद कहै
केवल हरिहि सदा मनलाये ❀ बिष देते बिषया सो पाये
परमभक्त प्रभु कपट न करै ❀ एक पिता भक्ती मन धरै
ताहि सदा हरि रक्षक अहैं ❀ काह करै बिष नारद कहैं

दो० मङ्गलदायक वही प्रभु, नारद कहा बखानि ।
बैशम्पायन भाषेऊ, सुनत दुःखकी हानि ॥

धृष्टबुद्धि चन्दनपुर माहां ❀ तब कुलिन्दको पाये ताहां
प्रजा लोगको दण्डै ताहा ❀ महाकष्ट चन्दनपुर माहा

बहु प्रकार ते कष्ट दिखावे ❀ यहि बिधि सबसों धन मँगवावे
मठ देवालय देखत जरई ❀ महाकष्ट कालिन्दहि करई
लूटि मारि लीन्हा जब देशा ❀ तब कुलिन्द को भई अँदेशा
मन्त्री महाहर्ष मन भयऊ ❀ जाना शत्रु नाशि अब गयऊ
इक दिन बसे दुजे दिन गये ❀ तीजे अन्त भोर जब भये
हर्षित ह्वै चण्डोल सवारा ❀ तुरत आपने पुर पगु धारा
सौ तीनसौ कहार सोहाये ❀ त्यहिचँडोल सम पवन चलाये
मारग माहिं सर्प एक रहै ❀ बिषया खाकी बातैं कहै

दो० मूँहकलश मो हम हते, देखा बिषया ब्याह ।
बूझा नहिं सो मन्त्रिने, चला हर्ष मनमाह ॥

वाद्य शब्द सुनियो मनभङ्गा ❀ बिधना कीन्ह छत्र को भङ्गा
गृहके निकट पियादे भये ❀ जहँ मंगत जन तहँवाँ गये
ब्याह अर्थ सबही तहँ कहे ❀ मन्त्री सुनत क्रोध उर दहे
भाषे चन्द्रहास है जाना ❀ मंगत जन भाषे परमाना
आगे जात द्विजन को देखा ❀ आशिर्बाद देत द्विज पेखा
चन्द्रहास बर भाग्यन पाये ❀ सुनतहि मन्त्री मारन धाये
गांठि गहे बहु क्रोधित पागे ❀ देखत सबै बिप्र तब भागे
काहु यज्ञ में सूत्र उतारी ❀ काहू कुश पैंती अगडारी
भागे द्विज गृह मन्त्री आये ❀ चित्र बिचित्रहि देखन पाये
स्त्री धूप दीप लै आई ❀ तब मन्त्री पूछा मनलाई

दो० कहा दये कह पायऊ, मङ्गल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊ, स्त्री कहैं बुझाय ॥

पूछे काह तासु कह दीन्हा ❀ स्त्री सबै निवेदन कीन्हा
धन रतनन दै कन्या दीन्हा ❀ सुनत क्रोध मन्त्री तब कीन्हा
क्रोधवन्त मन्त्री चलि आगे ❀ बर कन्या तो चरणन लागे
क्रोधित नैन सो देखत अहै ❀ सत्य असत्य न एकौ कहै
आगे बैठिके मदन बोलाये ❀ धिक धिक करि तब बात सुनाये

पत्री पढ़िकै काम न कीन्हा ❋ मदन जोरिकर बोलै लीन्हा
धन अरु रत्न अश्व गज दये ❋ सब भण्डार सून तव भये
सुनतै अधिक क्रोध उर भये ❋ जा बनबास तु आज्ञा दये
मदन कहा मम दोष न दीजै ❋ का अपराध प्रकट त्यहि कीजै
एक घाटि भइ है मैं जाना ❋ नहीं कुलिन्द बुलायो माना

दो० आज्ञा दीन्ही जाहि हम, लाओ चरण मनाय ।
तुमने लिखा सुसत्य है, जरहु काहि मनलाय ॥

सुनतै मन्त्री बहुतै जरई ❋ करमींजै औ हाहा करई
मन्त्री कह वह पत्री लाओ ❋ बांचि अर्थ तौ हमैं सुनाओ
मदन तुरन्त पत्रि लै आये ❋ बिषया नाम तु तुर्त बताये
देखत पत्री बिस्मय भयऊ ❋ बहुत बोध तौ पुत्रहि दयऊ
बिधिका लिखा मेटि नहिं जाई ❋ आन करत आनै होजाई
करि संतोष तु पोथी लीन्हा ❋ चन्द्रहास तब बोलन लीन्हा
जनि कछु संशय करु मनमाहीं ❋ तुमतौ हमरे पितु सम आहीं
कपट रूप भाष्यो तब बाता ❋ मनहिं बिचारै बध सख्याता
यहि हतिकै कन्या बिधवाओं ❋ करिकै छल यहि तुर्त मराओं
बोलि चँडाल कहै यह बानी ❋ प्रथमहि कपट करेहु अज्ञानी

दो० अब तौ मानहु बात मम, लैकर बान कृपान ।
पुर बाहर है चण्डिगृह, छिपि रहियो सज्ञान ॥

संध्या जाय मारियो ताहीं ❋ बहुतै धन पैहौ मम पाहीं
तब चण्डाल जाय छिपि रह्यो ❋ चन्द्रहास सों मन्त्री कह्यो
हमरे कुलकी चण्डी आहा ❋ पूजहु जाय कियो है ब्याहा
संध्या समय अकेले जैयो ❋ चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो
सुनत बात तौ पूजन चले ❋ मदन गये राजा गृह भले
कुन्तल राजै सपना पाई ❋ गालभ प्रोहित को समुझाई
बिना शीश देखा परछाहीं ❋ कहो बुझाय कौन फल आहीं
गालभ कहै अमङ्गल अहै ❋ अन्त निकट आये मुनि कहै

और परीक्षा बहुत बताई ❀ जाते मृत्यु जान सब राई
बहुत अरिष्ट तु सुने भुवारा ❀ ताको नहीं करै बिस्तारा
दो० कुन्तल नृपती मदनते, कही बात समुझाय ।
चन्द्रहास को राज्य दै, हम तप कानन जाय ॥
कन्यादान राजपद पाये ❀ तुरतहि चन्द्रहास को लाये
गोधुलि बेरा सब चलि आहीं ❀ आगे और लग्न है नाहीं
सुनतहि मदन तुरन्त सिधाये ❀ मगमहँ चन्द्रहास को पाये
धूप दीप नैवेद्य सुहाये ❀ कहँ लै चल्यो पूछि मनलाये
चन्द्रहास कह मन्त्रि पठाये ❀ अकसर चण्डी पूजन आये
मदन कह्यो हम पूजैं जाई ❀ तुमहिं तुरन्त हँकारत राई
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै ❀ आप बिजय राजापहँ कीजै
लै नैवेद्य मदन तब चले ❀ चन्द्रहास नृप गृह गयो भले
मदन कहे तो असगुन भये ❀ मनमहँ तौ बहुचिन्तित भये
दो० राजा तब अभिषेक करि, दीन्हा कन्यादान ।
राज्य देश भण्डार सब, दीन्हे हर्ष प्रमान ॥
राज्य देश संकल्पहि दीन्हा ❀ राजा बनहि गमन तब कीन्हा
मदन गये चण्डी गृह माहीं ❀ मृत्यु भवन ह्वैगो तब ताहीं
चाण्डालन तब कीन्हे घाऊ ❀ भूल खड्ग लै घाव लगाऊ
मदन तबहिं चण्डी ते कहा ❀ हमको बलि दीन्हे तुव अहा
परस्वारथ किय मैं गो मारा ❀ माता पूजत तुमने मारा
मैं नहिं महिषासुर हौं माता ❀ रक्तबीज नहिं शमन सख्याता
और निशुम्भ नहीं हौं माई ❀ परमज्योति तुम सुन मनलाई
यह कहि प्राण अन्त तब भयऊ ❀ रो चण्डाल सबै गृह गयऊ
चन्द्रहास राज्यासन पाये ❀ मन्त्री गृह लै त्रिया सिधाये
दूत जाय मन्त्रिहि समुझाये ❀ कहे जाय सब बात बुझाये
दो० राजा कन्यादान दिय, करि नृप बनै पयान ।
मन्त्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान ॥

चन्द्रहास जब आये आगे ❀ कन्यासहित चरण तब लागे
मन्त्री पूछ चण्डि गृह माहीं ❀ गये हते कीधौं पुनि नाहीं
चन्द्रहास कह मदन सिधाये ❀ हमहिं नृपतिके भवन पठाये
चन्द्रहास कहि गृहको गये ❀ पुत्रशोक मन्त्री कहँ भये
रोवत चलिभो चण्डी पाहीं ❀ अन्धकार रैनी भइ ताहीं
श्मशान महँ आये जबहीं ❀ भूत प्रेत सब भागे तबहीं
बरते चिता काठ यक लाये ❀ तेहि उजियार चण्डिगृह आये
डारि काठ तब पुत्र उठाये ❀ ग्रीव लगाय रुदन मनलाये
मण्डप माहँ खम्भ यक आह ❀ मारे शीश खम्भ के माह
मृतक भयो मन्त्री परमाना ❀ यहि अन्तर तब भयो बिहाना

दो० द्विज पूजन कहँ गयो जब, देखा गृहमों जाय।
मन्त्री मदन परे हते, चण्डीमण्डप आय॥

बिप्र जाय राजा ते कहेऊ ❀ चन्द्रहास तहँपर तब गयऊ
बहु अस्तुति चण्डी की करै ❀ कुण्ड खनाय यज्ञ संचरै
घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा ❀ बेद मन्त्र आवाहन कीन्हा
चण्डी पहँ राजा अस कहै ❀ तू तो शक्ति मातु जग अहै
मोरे हेतु पूजने आये ❀ मोते रिसकरि बलि यह खाये
यह कहिकै तब होम शरीरा ❀ सर्ब शरीर होम नृप बीरा
पाछे माथ उतारन चहै ❀ काढ़ि खड्ग हाथे महँ गहै
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी ❀ चन्द्रहास यह बचन बखानी
जन्म जन्म भक्ती भगवन्ता ❀ दीजै माता हमहिं तुरन्ता

दो० पाछे मांग्यो भूपने, ये द्वौ देहु जिआय।
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चण्डिका माय॥

तब हँसि चण्डी कह मृदुबानी ❀ अचलभक्ति होइहि सज्ञानी
बालापनका चरित तुम्हारा ❀ सो कलि में गावत संसारा
मुँदो नयन मैं देउँ जिआई ❀ सुनत नयन मूँद्यो तब राई
मन्त्री मदनहि दिये जगाई ❀ अन्तर्धान चण्डि ह्वै जाई

नयन खोलिकै राजा देख्यो ❀ उठे दोउ तब हर्ष बिशेख्यो
तीनहुँ जन तब मग्नहि गयऊ ❀ चन्द्रहास अस राजा भयऊ
तब पारथ पूछै मन लाई ❀ फेरि कुलिन्द मिले किमि आई
पारथ सों नारदमुनि कहै ❀ चन्दनपुर कुलिन्द दुख सहै
जो कुछ धन होते परमाना ❀ सब दे दियो द्विजनको दाना

दो० करि बिचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय ।
संशय यह तब मन्त्रिसन, कहा दूत कोइ जाय ॥

तब मन्त्री चन्दनपुर गयऊ ❀ बहुप्रकार अनुहारी कियऊ
चन्द्रहास चन्दनपुर गयऊ ❀ देखि कुलिन्द हर्ष मन भयऊ
सब समेत कुन्तलपुर आये ❀ परमहर्ष ते राज रजाये
बर्ष तीनि राजा तप कियऊ ❀ चन्द्रहास को सुत तब भयऊ
बिषयासुत मकरध्वज नामा ❀ पद्म नेत्र सुन्दर परमाना
पद्मक मालीनी बिद्वानी ❀ दोनों गर्भ दोउ सुत जानी
बाल दशा बीते जब ताहीं ❀ शालग्राम ब्रत साधे आही
शिला महातम उत्तम अहै ❀ शालग्राम निराञ्जन लहै
मृत्यु समय चरणोदक पावै ❀ पापी तरि बैकुण्ठ सिधावै
निरमायल जो भक्षत कोई ❀ देव पितृ सन्तुष्टित होई
दानी दाता द्वीपन राऊ ❀ चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ

दो० शालग्राम जहाँ रहैं, देव पितृ सब ताहिं ।
सर्ब तीर्थ जल पुण्य तौ, चरणामृतके माहिं ॥

तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं ❀ बिष्णु समान देवता नाहीं
तुलसी मञ्जरि हरिको बासा ❀ दर्शे पाप होत हैं नासा
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ ❀ सबै कथा तुमते कहि दयऊ
नारद देवलोक कहँ गयऊ ❀ सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ
दल लेकर कुन्तलपुर आये ❀ राजा अश्वहि देखन पाये
पत्र पढ़े राजा सुख पाये ❀ धर्मराजको अश्व जु आये
आज देखिबे श्रीपति नैना ❀ चन्द्रहास हर्षित कह बैना

मकरध्वज ते बात जनाई ❀ पूरब दिवस निकट भो आई
युद्ध रचे जग होहै नासा ❀ लैकै अश्व मिलो हरि पासा
दो० पन्द्रह दिन पर्यन्त हय, रक्षा कीन्ह्यो राव ।
पाछे मिलने हेतु तब, चन्द्रहास नृप आव ॥
तिलक सुतुलसी माल बिराजै ❀ मोरपंख रथ ऊपर छाजे
तब श्रीपति देखै कहँ पाये ❀ होय चतुर्भुज तुरत सिधाये
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे ❀ चारो भुजते अङ्कम लीन्हे
चन्द्रहास चरणन में परे ❀ बहु प्रकार ते अस्तुति करे
तब राजा से कह भगवाना ❀ इनके हृदय मोर अस्थाना
आकर मिलो भक्त यह आहै ❀ तब पारथ श्रीपति ते काहै
भारत माहँ कहे यदुराई ❀ प्रणको गुन आये दुखदाई
ताको मिलों कहो का राजा ❀ क्षत्री धर्म होत है लाजा
तब हरि भाषे यह तनु मेरा ❀ मिले आयकै हर्ष घनेरा
दो० प्रभू पुण्य सों राजा, भाषे श्री यदुराय ।
सुनत बिहँसिकै पारथ, मिले तुरन्तहि जाय ॥
प्रेम हर्ष भे अंकम गहे ❀ चन्द्रहास राजा ते कहे
मो मन करना हती लराई ❀ पै इक बर्ष आय नियराई
युद्धहि रचे यज्ञ करभङ्गा ❀ ता कारण मिलाप तुव सङ्गा
जहँ श्रीपती तहाँ रण कैसो ❀ यह अचरज मनमाहँ अँदेसो
अश्वरु धन राजा तब जाना ❀ राजा दीन्ह चरण भगवाना
श्रीपति राजा ता सुत किये ❀ प्रेम हर्ष आनन्दित भये
तीन दिवस रह तेहि पुर माहा ❀ छूटो अश्व चलो पुनि ताहा
चन्द्रहास कहँ तब सँग लीन्हा ❀ बालक ते जिन रक्षा कीन्हा
ते पुर छांड़ि रहब घर माहीं ❀ कृष्ण संग सैना करि जाहीं
लै दल चन्द्रहास तब चले ❀ पारथ संग चले सुख भले
दो० प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानन्द ।
चन्द्रहास संगहि चले, बिष्णु भक्त सानन्द ॥

चला अश्व भर्मत फिरै, नाना देश बिदेश ।
ऐस न कोई जगत महँ, पकरे अश्व नरेश ॥
इति श्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्वणिचन्द्रहासमिलनो
नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

बैशम्पायन कहैं बखानी ❀ चला अश्व बिधिवत परमानी
जौने जौन देश हय गयऊ ❀ सबै नृपति पारथबश भयऊ
पाछे अश्व चले जग माहां ❀ समुद्र माहँ परवेश्यो ताहां
पारथ तब शोचन को लागे ❀ दीन बचन भाषे हरि आगे
कहो कृष्ण का करौं उपाई ❀ तब पारथ सों कह यदुराई
तुम हंसध्वज पुत्र तुम्हारा ❀ मोरध्वज हम पञ्च भुवारा
ये सब रथी उदधि महँ चले ❀ दरशनमात्र रिपूदल भले
पांचौ रथ सागर महँ गये ❀ जल में रथ चलते तब भये
छाये मकरा देवल छाये ❀ पशु पक्षी तहँपर बहु आये
देखा पुनि इक दालभमुनी ❀ बटको पत्र धरे शिर पुनी

दो० जङ्घा भेदी लाल भ्रू, औ बहु अहैं भुअङ्ग ।
नमस्कार गे कीन्ह तब, पांचौरथ इक सङ्ग ॥

पारथ कहे गेह किन करो ❀ ऐसा कष्ट हेतु केहि धरो
मुनी कहैं दुख गृह में अहै ❀ स्त्रीग्रहण पाप बहु रहै
घरी घरी बीचारत नाना ❀ पैहैं पाप झूंठ परवाना
पालक नहीं धर्म पुनि नाना ❀ पाप पुराय बहुतै बीधाना
सुत नारी कब देखब नैना ❀ माया बिष्णू की सब चैना
ताते थोरे जीवन काजा ❀ ताते गृह कीजै नहिं राजा
मार्कण्डेय बशिष्ठ जो मुनी ❀ लोमश मुनी आदि हैं पुनी
प्रलयसमय हम देखा जेते ❀ पारथ बात कहत हैं तेते

दो० एक बट तरे आरहैं, तासु एकसौ डार ।
एक पत्र के ऊपरै, बाल रूप कर्तार ॥

बालरूप बट पत्रहि रहै ❀ पद अँगुष्ठ सो चाटत रहै

तैं प्रभु जाना मैं मनमाहा ❀ एही कृष्ण सन्त जग आहा
अब मोको आलिङ्गन दीजै ❀ धर्मराजको यज्ञसु कीजै
श्रीपति कहैं मुनी सौं बाता ❀ महामुनी तुम हौ सख्याता
एक बार करि गर्ब जु नाना ❀ हरि माया इक पवन उड़ाना
मोहिं समेत गयो लै तहां ❀ अष्टमुखी ब्रह्मा है जहां
उन पूछा तुमको यह अहौ ❀ इन कह ब्रह्मा जानत रहौ
उन कह अष्टबदन हैं मोहीं ❀ कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं

दो० अष्टबदन ब्रह्मा हम, तुम हौ कौन प्रकार।
यहै रूप तो बोलतो, भयो पवन संचार॥

दूनो ब्रह्मा गे तब तहां ❀ सोलह मुख ब्रह्मा है जहां
उनहु एक परकार सुनाये ❀ तीनौ ब्रह्मा पवन उड़ाये
बत्तिस बदन पाहँ तब गयऊ ❀ उनहु रारितो यहिबिधि कियऊ
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये ❀ चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये
उनहू रारि करै मन लाई ❀ पांचौ ब्रह्मा पवन उड़ाई
इक सौ अट्ठाइस मुख जहा ❀ उनहू गर्ब बात तौ कहा
छाहौ ब्रह्मा उड़िगे तहां ❀ शतमुख ब्रह्मा रहते जहां
तिनने सबको ज्ञान सिखायो ❀ यह दालभमुनि कथा सुनायो
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये ❀ बकदालभ मुनि सबै बताये
मुनि को लै चरडोल चढ़ाई ❀ अश्व दोउ लाये यदुराई

दो० चले अश्व तब लेयके, बकदालभ मुनि साथ।
बैशम्पायन कहत हैं, सुन जनमेजय नाथ॥

चले अश्व तब आये तहां ❀ जयद्रथ को बालक है जहां
दूतन कहा हमारे देशा ❀ अर्जुन कृष्ण कीन परवेशा
जो पारथ जयदर्थहि मारो ❀ सुनत मृत्यु त्यहि भये भुवारो
सभामाहिं मृत्यू तौ भये ❀ ताकी माता रोदन ठये
रोदन करत हरी पहँ गई ❀ पारथ हमैं महादुख दई
पती पुत्र मारयो दुइ सही ❀ देखत दयावन्त हरि कही

चलो पुत्र तव देखौं जाई ❀ सभामाहँ पहुँचे यदुराई
देखा नृपहि अचेतन परे ❀ श्रीहरि हाथ शीशपर धरे
उठे पुत्र कहतै भय त्यागो ❀ सुनतहि बात तुरत सो जागो
जागे हर्षित भै महतारी ❀ पुत्रहि लै पारथ पग डारी

दो० पारथ बिनती कीन्ह बहु, नेवता दीना शाल ।
पुत्रसहित हर्षित मनहि, चले यज्ञके काल ॥

श्रीपति कहत पार्थके पाहीं ❀ बर्ष तुलान चलो गृहमाहीं
दूनो अश्व गये बनवारी ❀ सबै नृपन सों कहा मुरारी
नीलध्वज हंसध्वज राऊ ❀ बीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ
चन्द्रहास्य अनुशल्या अहै ❀ यौवनाश्व बेगहि तब कहै
बृषकेतू औ कामकुमारा ❀ सब सों भाषो श्रीभर्तारा
हम तौ जात अग्र गृह आछे ❀ तुम सब मिलिकै आवहु पाछे
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ ❀ आनन्दित तब अर्जुन भयऊ
राजा सुनत हर्ष मन माना ❀ हरिको दै आलिङ्गन दाना
जहां जहांपर भै रण करनी ❀ करि बिस्तार सबै हरिबरनी

दो० भीम आदि पाण्डव सबै, परशे तबै मुरारि ।
नारी रुक्मिणि आदि जहँ, तहां गये बनवारि ॥

भीम सङ्ग हरिगे जहँ नारी ❀ सतिभामा परिहास बिचारी
नाना कौतुक भये हमारा ❀ ताको नहीं करे बिस्तारा
तब हरि भीम नृपति पहँ आये ❀ चले अग्र राजा समुझाये
धृतराष्ट्रक आगे तब कीजे ❀ आगेहो पारथ कहँ लीजे
कुन्ती आदि सहित गन्धारी ❀ औ जेती श्रीपतिकी नारी
बेदध्वनि कर ब्राह्मण चले ❀ कीन्हा गवन लोग सब भले
दधी दूब अक्षत औ माला ❀ यह सब लेइ चले द्विजपाला
आरति बहुतै भांति सँवारी ❀ चलीं साजि क्षत्रिनकी नारी
शंखध्वनि तो होत अपारा ❀ नाना भ्रमर करत गुञ्जारा
उतते अश्व अग्र हैं दोऊ ❀ बकदालभ्य संग हैं सोऊ

दो० भूप भूप सब भेंटते, मिलत सबै सरदार ।
स्त्री से स्त्री सबै, लेत अहैं इकबार ॥

मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ ❋ धर्मराज आनन्दित भयऊ
राजा सब तो करैं जोहारा ❋ पुण्य प्रतापी धर्मकुमारा
सब राजाको करि सन्माना ❋ यज्ञ रचा तौ वेद विधाना
अश्वमेध को मण्डप साजै ❋ अष्ट द्वार तो सरस बिराजै
बेलि पर्ण औ पुष्प बनाये ❋ यज्ञ साज सबही निर्माये
बकदालभ जो बर्णै धर्मा ❋ लागे मुनी यज्ञके कर्मा
वामदेव बशिष्ठहि आये ❋ पाराशर मुनि अत्रि सिधाये
भरद्वाज ऋषि गौतम आये ❋ मुनि अङ्गिरा आइ मनभाये
आठौ मुनी दया के पाला ❋ बरन कीन्ह है धर्म भुवाला
छीछन भै नृप द्रौपदि रानी ❋ हरिणा सींग गहे कर जानी

दो० धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गङ्गातीर ।
निज तिरिया लै जाइये, भङ्ग न गङ्गा नीर ॥

तिरियन संग चले सब भले ❋ अरुंधती बशिष्ठहुँ चले
कृष्णसंग श्रीरुक्मिणि रानी ❋ प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी
ऊषा अरु अनिरुध कै जोरी ❋ भीम सुसंग हिडंबी तोरी
बृषकेतू भद्रावति रानी ❋ मोरध्वज कुमोदनी रानी
यौवनाश्व चन्द्रावति चली ❋ नीलध्वज नन्दिनी भली
वेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये ❋ नारद सतिभामा गृह आये
कहे बात रुक्मिणि हरि प्यारी ❋ गांठि जोरि जल हेतु पधारी
तब सतिभामा मुनि ते कहे ❋ सदा कृष्ण मेरे ढिग रहे
तहाँ हरी मुनि देखन पाये ❋ ऐसे अष्ट नारि पहँ आये
गोपिन गृह कहँ देखन जाई ❋ तहवाँ देखा श्रीयदुराई

दो० सतिभामा श्रीजाम्बवति, रुक्मिणि नारी सङ्ग ।
गांठी जोरी चले हरि, भरन हेतु जल गङ्ग ॥

जलके हेतु तु सबै सिधाये ❋ तब राजा नारद पहँ आये

हरी सहित जेते हैं राजा ❀ गङ्गा माहँ करैं जल काजा
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरे ❀ पाछे और सबन संचरे
व्यास आदि जल पूजन करे ❀ कञ्चन कलश नीरसों भरे
चले नीर ले सब नृप रानी ❀ अरुन्धती रुक्मिणी बखानी
कलश भार दुखदायक अहै ❀ सुनिये बात जाम्बवति कहै
कर पर धर तौ कृष्ण पहारा ❀ शीशन धरे कलशको भारा
बहुतै कौतुक छिन कीन्हे ❀ आये सबै गङ्ग जल लीन्हे
बेदध्वनिकै कलश उतारा ❀ युवती गावहिं मङ्गलचारा

दो० श्यामकर्ण जल पान करि, रानी नृप अस्नान ।
द्रौपदि रानी धर्मसुत, जैसो यज्ञ बिधान ॥

धोती पहिरि मुनी सब आये ❀ उत्तम चन्दन अङ्ग लगाये
पारथ भीम देत हरि दाना ❀ राजा सबै किये अस्नाना
दक्षिणा भये यज्ञ के हेता ❀ सबकहँ पूजन कियो सचेता
बेद उचार मन्त्र तब कीन्हे ❀ धौम भीम ते बोलै लीन्हे
बायें श्रवण अश्व को मारा ❀ ताते चलै क्षीर कै धारा
तब सबहीं बिस्मयकै माना ❀ धौम कह्यो भीमहि सुनकाना
मारौ अश्व होइ द्वै खण्डा ❀ तबहीं भीम गहे कर खण्डा
तबहीं भीम क्रोध करि छांटा ❀ दोय टूककै अश्वहि काटा
शिर उड़ि रविमण्डल महँ रहे ❀ सुघर अश्व जग जीवनकहे
हयके हृदय आप हरिमारा ❀ हृदय चली रक्तकै धारा

दो० अश्वज्योति हरि अङ्गमों, प्रबिशतभै तब जाय ।
परा अश्व बसुधाविषे, भो कपूर तनु आय ॥

सो कर्पूर धराहै आगे ❀ व्यास होम करने को लागे
कुण्ड माहिं तब आहुति दीन्हे ❀ तबहीं व्यास कहनकहँ लीन्हे
इन्द्र आगमन परिश्रम करो ❀ तबहीं इन्द्र बचन अनुसरो
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो ❀ आहुति दें सब देव घनेरो
अश्वलिखा आहै गुरु पारा ❀ होम करो द्विज बेद उचारा

सो कपूर ते आहुति दये ❀ सब संसार संतुष्टित भये
यज्ञ धर्म आगम में लागे ❀ धर्मराज के पातक भागे
कृष्ण कह्यो सब राजा ठांय ❀ यज्ञ धर्म लीजै तन आय
अब आगे कलियुग जो ऐहै ❀ कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै
नृपति देव संतुष्टित भये ❀ सबै यज्ञ के पातक गये

दो० शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी सङ्ग ।
सहस दण्ड धरि छत्र तब, ताने नृपशिर रङ्ग ॥
भयो यज्ञ सब पूरण, भागे पाप अनन्त ।
जहाँ आप ठाकुर रहे, तहाँ सबै हर्षन्त ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❀ तौ सब राजा तहाँ न आये
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ श्रीहरिको आलिङ्गन कियऊ
पाछे देन लगे सब दाना ❀ जो कछु होवे यज्ञ बिधाना
व्यासहि भूमिदान तौ दयऊ ❀ साठ एक बकदालभ भयऊ
एक हस्ति अरु एक तुरङ्गा ❀ कञ्चन माल एक तौ सङ्गा
मुक्ता अञ्जलि गऊ हजारा ❀ सेवकचारि तु दिये भुवारा
एकक द्विज तो एतिक पाये ❀ करि मख सबै दरिद्र भगाये
गज सौ चार तुरंग हजारा ❀ प्रतिदिन दीन्हो भूप उदारा
त्रिनको भूषण पहिराये ❀ बैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये
प्रेमहर्ष धर्म नृप जाना ❀ सिंहासन बैठे भगवाना

दो० अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्ह्यो राउ ।
तीन लोक संतुष्टित, देवन आनँद पाउ ॥

पाछे नृपति मुनीजन आये ❀ षट्रसभोजन अमृत जिमाये
करि भोजन तब अचमनकीन्हा ❀ खरिकाशोधन केशव दीन्हा
त्यहि अन्तर ब्राह्मण दो आये ❀ झगरत धर्मराज पहँ धाये
एक कहै भूमी मोहिं दीन्हा ❀ इनने खेतजु बलकरि लीन्हा
कहै धान्य बांटी कर लीजै ❀ लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै
दूसर कहै भूमि है तेरी ❀ सबै धान्य है है कत मेरी

कृष्ण कह्यो धर्मजके पाहीं ❋ है अन्याय छुटो है नाहीं
तीन मास बीते कलि ऐहै ❋ आपन न्याय आप करिलैहै
तुम जो दीन बांटि के आधा ❋ ऐसे कली कपट दुख दाधा
यह कह घरको दीन्ह पठाये ❋ पाछे राजन बिदा कराये

दो॰ जहां देश है जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश ।
अश्वमेध भारत कथा, काटे पाप कलेश ॥

बिधि संयोग आय बन आवा ❋ बैशम्पायन कथा सुनावा
राय युधिष्ठिर कहबै लीहेउ ❋ ममअस मख काहू नहिं कीहेउ
एही बीच नकुल इक आवा ❋ मध्य उच्छिष्ट बूड़की खावा
तन मन देखि बुड़े पै सोई ❋ क्षण बूड़े क्षण ऊपर होई
यह अचरज तहँ देखत भयऊ ❋ यहि बिधि पहर एक सो गयऊ
कृष्ण देव सों राजा कहै ❋ यह चरित्र देखो कस अहै
उच्छिष्ट माहिं बूड़े उतराई ❋ तन मन देखि बहुत पछताई
ऐस नकुल मैं कबहुँ न देखा ❋ कञ्चन मुख कबहूं ना पेखा
तबहीं कृष्ण कहा समुझाय ❋ यह बृत्तान्त कहौं मैं गाय
पूरब कथा सुनौ नरनाहा ❋ जाहीते मुख कञ्चन आहा
सो बृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ❋ जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं
पूर्ब जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ ❋ बहुत दुःख तनुब्यापित भयऊ
सुत पत्नी द्विज के सँग आहा ❋ चारों प्राणी रह सँग माहा
परम दरिद्र दुखित सो रहई ❋ तीरथब्रत सो फिरि फिरि करई
नेम धर्म बहुतै सो करई ❋ अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई
चारों प्राणी बहु शुचिवन्ता ❋ निशिबासर ध्यावत भगवन्ता
भिक्षा मांगि बिप्र लै आवै ❋ आधा अन्न संकल्प करावै
याही बिधि बहु दिवस गँवावा ❋ ब्यासदेव तब नृपहि सुनावा
चारों प्राणि बिप्र सो रहेउ ❋ एकते एक धर्म बहु किहेउ

दो॰ एक दिवस चलि यात्रा, पत्नी सह द्विजराव ।
ऋषि अनङ्ग तहँ भूपती, सबही कृष्ण सुनाव ॥

चला यात्रा विप्र नहाई ❀ चारि दिवस सो अन्न न पाई
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ ❀ पञ्चदिवस याही विधि गयऊ
छठयें दिवस नगर इक आयो ❀ बिधि संयोग तहां कस भायो
जव कर खेत तहां इक अहई ❀ मारग बीच तहां सो रहई
जव काटी किसान लै गयऊ ❀ जव इक परा तहाँपर रहेऊ
तब द्विजसुत ब्राह्मणिसों कहेउ ❀ चुनहु आय बुद्धी यह किहेउ
पुत्र सहित द्विजबीनै लीन्हेउ ❀ एककजवचुनिराशिजोकीन्हेउ
जव सब चुनी बनावत भयऊ ❀ तबहीं विप्र कहत अस भयऊ
आधो आधा द्विज तब किहेऊ ❀ आधा अंश हाकिमहि दिहेऊ
आधा अंश गृहस्थ बिचारी ❀ जो उबरा सो लिह्यो सँभारी
सो ब्राह्मणि लैगे जतसारा ❀ जवको चूरन कीन सुसारा
सत्तुपीसि ब्राह्मणि लै आई ❀ दोना पांच ब्राह्मणी बनाई
पांचोपत्र कीन्ह द्विज जबही ❀ एकक पत्र चारलिय तबही
इकसो अभ्यागत कहँ राखा ❀ अस धर्मिष्ठ कृष्ण तौ भाखा
जबहीं भोजन चाहै लीन्हा ❀ स्तुति आय विप्र इक कीन्हा
तब द्विज चरण पखारा जाई ❀ बहु आदर आन्यो बैठाई
हर्ष सहित द्विजपत्र जु दीन्हा ❀ तबहीं द्विज कृष्णार्पण कीन्हा
कह्यो विप्र संतुष्ट न भयऊ ❀ आपन पत्र जो ब्राह्मण दयऊ
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा ❀ चारौ पत्तर जेवै लीन्हा
करि प्रसाद अचवा पुनि सोई ❀ नीर प्रवाह पुहुमि में होई
एक नकुल तहँ आव पियासा ❀ ठोर कुँवा ये नीर प्रकासा
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पिहेऊ ❀ कञ्चन मुखहि तहाँतक भयऊ

दो० अस कौतुक तहँ होतभा, सुनौ राव चितलाय।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुबर्ण होजाय॥

नकुल मनहिमन करै हुलासा ❀ अब बिधि मोर जो पुरवैआसा
सुना नकुल ने यह सदभाऊ ❀ राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ
बहुत ऋषय आये मखशाला ❀ औरौ बहु आये महिपाला

बड़ बड़ ऋषे तहाँ चलिआये ❀ प्रेम पुनीत देख मन भाये
औरो देव मुनीजन भारी ❀ तिनके सँग आये बनवारी
उनकर जूंठ परा तहँ होई ❀ तनु मोरा कञ्चन हो सोई
यहगुणजानि नकुल तहँ आवा ❀ उच्छिष्टमाहिं तनु आप बोरावा
सो जु देह सुबरण नहिं होई ❀ तब तब बुड़की मारै सोई
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई ❀ सुनतहि मानभङ्ग भो राई
राय युधिष्ठिर गर्ब गँवावा ❀ लजा बश ह्वै शीश नवावा
सबै ऋषे कहँ लज्जा आवा ❀ मान महातम सुनत गँवावा

दो० यह चरित्र सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मान जु भङ्गभे, रहे ऋषै शिरनाय॥

कृष्ण साथ लिय सब परिवारा ❀ द्वारावती नगर पग धारा
प्रेम हर्ष आनन्द उपाय ❀ कृष्ण द्वारका पहुँचे जाय
बैशम्पायन कहैं बखानी ❀ अश्वमेध है पुण्य कहानी
दुखी सुनै दारिद्र पराय ❀ रोगी रोग तुरत क्षय जाय
निष्पुत्री सुनतै सुत पावै ❀ पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै
सहसन धेनु देइ जो दाना ❀ सर्ब तीर्थ करते अस्नाना
पर्व अठारह सुन फल होई ❀ अश्वमेध जानो फल सोई
यह चरित्र सुनि जे मनलाई ❀ यमके दूत निकट नहिं जाई
कथा सुनत देते जो दाना ❀ प्रापति देव होयँ भगवाना
पाण्डव बिजय कहै अनुसारा ❀ कह संक्षेप करै बिस्तारा

दो० पाण्डवबिजय कथा यह, पुण्य श्लोक बखान।
अश्वमेध सम्पूरण, सुनु राजा सज्ञान॥

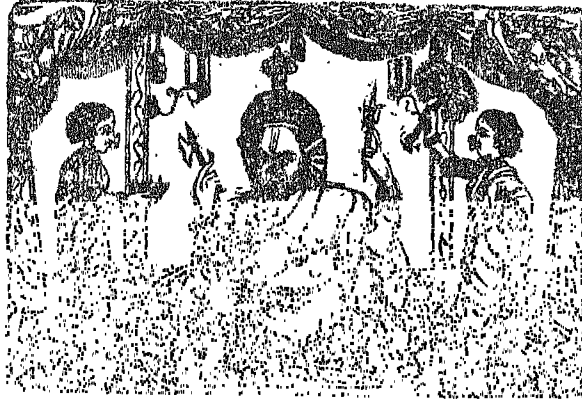
अश्वमेध मख पातक हरता ❀ राजा सुनो श्रीपती करता
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना ❀ तापर रह प्रसन्न भगवाना
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं ❀ सुन अनसुनी एकसम ताहीं
मनसा फल प्रापति तौ होई ❀ यही सत्यकै जानौ सोई
मनमों धरे ज्ञान गुरुदेवा ❀ मनमें पार होत नर सेवा

श्रद्धा मन जानो परवाना ❀ ताते परब्रह्म पहिचाना
काम क्रोध मद अक्षय चाहा ❀ भावै ज्ञान कहो का ताहा
का कामी के आगे ज्ञाना ❀ काह क्रोधते भक्ति बखाना
का लम्पटके आगे धर्मा ❀ कामी काह पुण्यका कर्मा
जैसे ऊषर बीज बोवाये ❀ तैसे यह सब भेद बताये

दो० भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परवेश ।
मनमें भक्ति न जासुके, सो नहिं फल उपदेश ॥

इति श्रीमहाभारतसबलसिंहचौहानकृतअश्वमेधयज्ञभाषा-
राजप्रयाणवर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
इति अश्वमेधपर्व समाप्तम् ॥





महाभारत

आश्रमवासिक, मुशलपर्व संयुक्त

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

विदुरकथा, सपत्नीक धृतराष्ट्र और कुंती का देहत्याग, और अर्जुन का श्रीकृष्णचन्द्रजी के हाल लेने के लिये रथारूढ़ होकर द्वारकापुरी में गमन, दुर्वासादि ऋषियों का तप-निमित्त द्वारका में गमन, दुर्वासाशाप, मुशल के खण्ड करके समुद्र में बहाना वहाँ मछली का खाकर बालिवत केवट का पाना, उद्धव का श्रीकृष्णजीकी आज्ञा के अनुसार बदरिकाश्रम-गमन, राजा जनमेजय का नव योगियों से सम्बाद आदि कथाएँ संयुक्त हैं।

—:०:—

लखनऊ

सुपरिंटेंडंट विपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९४६ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत आश्रमवासिकपर्व ॥

जयति जयति रघुबर श्रीरामा ❀ भक्त जनन को पूरणकामा
बन्दौं गुरु गोबिंद सब ताता ❀ बन्दौं पुनि श्रीपितु अरु माता
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा ❀ बार बार शिवकी करि सेवा
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी ❀ सबिधि काव्य जनकी जो सेवी
बन्दौं व्यासादिक मुनि नारद ❀ हनूमान जो ज्ञान बिशारद
सबलसिंह यह भारत भाखा ❀ श्रीप्रभु जब अरके दे राखा
औरँगशाह दिलीपति राजत ❀ मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत
ये नृप के पुरुषन महँ गाये ❀ सबलसिंह चौहान बनाये
सम्बत सत्रह से इक्यावन ❀ शुक्लपक्ष दशमी बुध सावन
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा ❀ व्यासदेव को सुमिरण कीन्हा

दो० लक्ष्मी के पति जौन हैं, हैं लक्ष्मीबश जाहि ।
सल्लक्षण जामें मिलैं, बन्दत हौं मैं ताहि ॥
श्रीहरि व्यापक जक्तसब, तेहिते बन्दिय सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, आश्रमवासिकपर्व ॥

नृपबर यज्ञ सरावत भयऊ ❀ कछुदिन अधम शम्भु बलिगयऊ
नृपबर यज्ञ सुभग श्रमभवा ❀ जादिन सभा अनूपम हवा
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो ❀ ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो
कथा बारता बिबिध प्रकारा ❀ सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा

दो० प्रथमहिं पूजियगणपतिहि, जाकी सेवा सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा आश्रमपर्व ॥

सब जन नृप बैठे आसन प्रति ❀ होइनि यज्ञ ठौर हाके अति
ताहि समय द्वैपायन आये ❀ नृप सब बन्दि भ्रात मुद पाये

सिंहासन पर नृपबर राजत ❀ नृत्य होत बाजन बहु बाजत
बैठे भूप सकल पृथिवीके ❀ अर्जुन भीम जीति पदवीके
बभ्रुबाहन हैं नृप अनुशाला ❀ नीलाम्बुज आदिक महिपाला
औरो बहु बैठे तहँ राजा ❀ बिविध तँबूर तबल जहँ बाजा
तब नृपबर जनमेजय बोले ❀ पाणि जोरि मुख अम्मृत खोले
सकल भूप तहँ रहे बखानी ❀ कहाँ हुते बलि शारँगपानी
कह मुनि सुनुनृपबचन सोहाये ❀ तुव हित हेत कहत हम गाये

सो॰ रहे दूरि के राय, जे आये नृप यज्ञ महँ।
जे नगीचके आय, निजनिज नगरनको गये॥
षष्ठमास की बात, यज्ञन्तर नृप है गयो।
रहे दूर नृप तात, द्वैपायन सह भूपमणि॥

नाच होइ तहँ बिबिध प्रकारा ❀ मुख मोरहिं जोरहिं सब तारा
उछरहिं और केश छिटकावहिं ❀ कुच देखाइके भूप रिझावहिं
द्वादश षोड़श बर्ष कि नारी ❀ करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी
तासु आभरण कौन बखाने ❀ पहिरे कर्ण मोतिया साने
त्रिबली तरल तरङ्ग सोहाई ❀ भ्रमिगण नाभि मनोहरताई
कटिकरकिङ्किणि तहँ छबिछाई ❀ पग नूपुर झनकार सोहाई
कुचयुग चक्रवाक जनु साजै ❀ मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै

दो॰ नाचैं नारी मनहुँ रति, अलकझलकछबिहोत।
चन्द्रबदनिमृगनैनिशिशु, भृकुटी कुटिलउदोत॥
सो॰ कुन्दकलीसमदांत, अधर अनूपम चिबुकतिल।
कुचसुचक्रकी भांत, तिलप्रसून नासा सुभग॥

यहि बिधि नृत्य होत दिनराती ❀ नृपसमाज देखत मुनिपांती
द्वैपायन नृप गे आश्रम को ❀ रैन ब्यतीत मिलन कोकीको
यहिबिधि होत रोजप्रति उत्सव ❀ आवत देशन के वकील सब
जीतत हारत सकल वकीला ❀ करतसुभगहित नृपगणमीला

बभ्रूबाहन नृप दुःशाला ❋ जीवनाथ आदिक महिपाला
करिकरि फौज साजि सबराजा ❋ बिदामांगि गे सहित समाजा
लै जनवास बिदा रानिन है ❋ चले नृपति सब श्रीशिवसुत है
करत बड़ाई धर्मज केरी ❋ निज निज धाम गये नृप फेरी
इहां हस्तिपुर धर्मज राजा ❋ नित नव मङ्गल मोद समाजा
बहुत बर्ष बीते सुखदाई ❋ आगे नृप सुनु कथा चलाई
यकदिन कृष्णचन्द्र बलरामा ❋ पुत्र पौत्र आदिक बर बामा
आये धर्मराज के धामहिं ❋ यथा उचित सबकीन्ह प्रणामहिं
बास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर ❋ कुन्तीभगिनिद्रुपदिमिलिआगर
यहिबिधि बीतिगये कछुकाला ❋ रहे कृष्ण गे हलधर बाला

दो० कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बलसँग दीन्हपठाइ ।
आपु रहे हस्तिननगर, आनन्दित सुखपाइ ॥

यहि बिधि कृष्णचन्द्र सुखदाई ❋ रहे हस्तिना मास गँवाई
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये ❋ तिन्हबोलायतिन्हबातजनाये
इनकी भूमि लीन्ह जोतनहित ❋ जोतत रहत सुनो हे नृप नित
तामें मिलो सघन भंडारा ❋ हमरो हक नाहिं ताहि पुकारा
सो हम धनहिं कृष्ण नहिं लीजे ❋ यादव पाण्डु न्याव करि दीजे
हमसों अन्नदेव ते कामा ❋ गड़ो मिलो सो याकर जामा
यह सुनि बोलेउ द्विजबर दूसर ❋ नाहिं हमार धन उपजो ऊसर
हम सों बर्ष दण्ड सों रहै ❋ और मिलै सो याकर अहै
नाहीं होत अन्न जब याके ❋ तबहूं लेत दण्ड हम साके
उपजै जो करोरि धन भाई ❋ तबहूं वहै मिलत है राई
उपजो जवन अवनि धन राजा ❋ हमसों नहीं कछू है काजा

दो० नृपबर सुनि द्विजबर बचन, कृष्ण पाहिं दै ताहि ।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षष्ठमास निरवाहि ॥

षष्ठमास महँ तुम द्विज आयो ❋ धर्मराय मुख न्याव करायो
यहसुनिगेद्विज निजनिज धामहिं ❋ सभाबन्दिनितप्रतियहकामहिं

सुनु आगे नृप सुत अब कथा ❀ मैं गुण गाइ कहत भइ यथा
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा ❀ द्विजन बुलाइ दान बहु दीन्हा
ह्वैके बिदा सुभद्रा पासहि ❀ द्रुपदिहि मिली बहुरिकै सादहि
मिलि नृप भीम पार्थसों भेंटत ❀ मन्त्रिहिनकुलहिमिलिसम्भेटत
कर्णपूत गान्धारी मातहिं ❀ तौ पितुअन्ध और बहुजातहिं
मिलत सबनसों चालन कीन्हा ❀ रथ ह्वै बेगि द्वारकहि चीन्हा
मिलत सबन यदुबंशिन आछे ❀ गये प्रथम मन्दिर कहँ पाछे
इत नृप धर्मराज शुभ करई ❀ चलै न मारग सत्य न टरई
बीते कछुक दिवस इमि ईछे ❀ आये व्यास शिष्यसह पीछे
देखि नृपति बन्धुन सह बन्दे ❀ अश्वासन लखि व्यास अनन्दे
कहा व्यास सुनु धर्ममहीसो ❀ कहेउ दास कारण सबहीसो
मम आगम तोहिं लागत फीको ❀ जाते होउ दास नृपहीको
धर्मज सुनत बन्दि हँसि दीन्हों ❀ कहेउ कृपा तव सबसुखकीन्हों
शत्रुन मारि राज्य हम पावा ❀ तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा

दो० अब कछु दिनसों महामुनि, लखत अन्य उपकार ।
मिथ्या बाक्य प्रमोद अति, और सकल आकार ॥

सो० ताहि समय सुनु तात, करत बतकही व्याससों ।
आयो द्विज बतरात, बोलिन्याव लागेकरन ॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी ❀ अन्न छांड़ि सब लेब करारी
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं ❀ करि करिया लेबै हम आहीं
सुनि बोलेउ द्विज दूजो बानी ❀ लेबै छीन कहत शिव आनी
याको भूमि बित्त सो चहिये ❀ और मिलै मोको नृप अहिये
यहसुनि सबहिंनाधिकधिकबोले ❀ वृक्ष हलै धरणी सब डोले
डर सबके तिहुँपुर सब कांपै ❀ जल समुद्र उछलै अरु तापै
धर्मज सुनत आंगुरी चापी ❀ पवन चली बसुधा सब कांपी

दो० सुनि धर्मज कम्पनलगो, भे प्रमुदित भूपाल ।
रामकृष्ण कहिकै गिरे, भे सचेत पुनि हाल ॥

आधो अर्ध दीन्ह के राजन ❀ तब लागो पूछन महराजन
अहो व्यास मुनिकारण कहिये ❀ नाहिंतो चित्त अनलसों दहिये
कहो व्यास यह कलियुग लागो ❀ धर्म धर्म नृपधर्महिं त्यागो
ताते आपु बद्रि पहँ जैये ❀ गलिहेवार हरि आश्रम रहिये
कलिमें सकल गोत्र बध करिहैं ❀ पाप तिहारे ऊपर धरिहैं
कलियुग नगरहेतु हम भाखा ❀ दोष झूंठ तव ऊपर राखा
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना ❀ व्यास धर्म बिन जाको आना
व्यासगये निज आश्रम काहीं ❀ कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं
चलो कृष्ण पहँ माँगि रजाई ❀ तब उत्तरदिशि चाह्यो जाई
सुनिअर्जुनअतिशय सुखमाना ❀ भीम नकुल मन्त्री हर्षाना
भगवन्त अर्जुन रथ साजा ❀ तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा
चारि बन्धु भूपति सँगलीन्हे ❀ हरिपुर ओर गमन नृप कीन्हे
चले अलौकिक देखत शोभा ❀ जितहिंजात तितहीं मनलोभा
कतहूं शिक्षित पण्डित बालक ❀ कतहूं जात सैनरिपुशालक
कहूं लरत गज अतिहित तारे ❀ उज्ज्वल गिरि समानभैभारे
माख महिष उष्ट्रादिक नाना ❀ लड़त शब्द फाटतते काना
कहत धनुर्बिद सूरति छीजत ❀ पुरबाहर ह्वै कोउ कोउ ईछत
कोउनृत नाटककरत रिझावत ❀ बारमुखी नाचैं गुण गावत
मालीगण सींचत कहुँ बागन ❀ मधुकर काम अन्धसहरागन
कहुँ कहुँ होत युद्ध के साजा ❀ आवत नृपन पत्र जहँ राजा

सो० को कवि करै बखान, जहां रहैं श्रीब्रह्मप्रभु ।
असकोत्रिभुवनआन, जोनभजतश्रीप्रभुअसहि ॥

कहुँ बिवाह चूड़ाकरनादी ❀ गावत मङ्गलचार सदादी
सर अरु बाग नदीतट पावन ❀ भ्रमंत नारी काम लजावन

दो०कोकिलापिकअरुमोरगण, सुमनसहितऋतुराज ।
रहत सदा हरिकी कृपा, होनितप्रति यह काज ॥

यहिबिधिलखतसबन्धुनृप, करतमिलनसबपास।
रामकृष्ण कहि मिलतसब, कुशलकहतहमदास॥
कहेउ कृष्ण नृपकहु केहिकाजा ❀ आये सकल बन्धु महराजा
व्यास बचन अरु न्याव बतायो ❀ कलियुग घोर पापमय आयो
जानचहत उत्तरदिशि प्रभु हम ❀ कीन्ह गोत्रबध हम नाहीं कम
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी ❀ हम तो पलक कोर प्रभु हेरी
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन ❀ कलियुग अहैघोर यहि काजन
तुम्हें गोत्र बध पाप न ह्वैहै ❀ पुनि कलियुगबासी नहिं छुइहै
कहिहैं धर्मराज जो कीन्हा ❀ पाप पुण्य उनहूं नहिं चीन्हा
सो० व्यास कहेउ यहि हेत, कलिबासी जोजन करत।
दोष तुम्हैं जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनो॥
कलियुग ऐहै घोर अपारा ❀ तामें चलै न कछुक अचारा
बृद्ध स्यान मम भुगिहैं राई ❀ मानहिं मातु पिता नहिं गाई
यौवन मदवश करहिं कुकर्मा ❀ तजिहैं देश लोक कुलशर्मा
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपूजा ❀ जोतजिदिवसकरहिंनिशिपूजा
बीर्य हीन क्षत्री ह्वै जैहैं ❀ तबहीं म्लेच्छ नृपति ह्वै ऐहैं
बैश्य देव द्विज सेवा हीना ❀ कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीना
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं ❀ बूझो नृप कब कलियुग ऐहैं
दो० भाद्रमास पक्ष कृष्ण जो, त्रयोदशी रबिबार।
अबते बाकी मासषट, कलियुगकर अवतार॥
जब कलियुग गङ्गा कहँ जाना ❀ तब ह्वैहैं अतिअवगुण नाना
नारि धर्म जो बिधवा करिहैं ❀ कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला ❀ संकर बर्ण होइ कलिकाला
कछुदिन करहु राज्य नृप आछे ❀ हमसह चलब कछुक दिन पाछे
अब तुम नगर जाइयो राजन ❀ प्रथमैं कहेउ किहेउ जब साजन
दो०सुनि नृप प्रभुके बचन बर, मिले सबहिं भूपाल।

अर्जुन रहिगे द्वारकहि, आगे सब जन हाल ॥

नगर आइ भूपाल सुहाये ❀ पौत्रहिं बोलि सुकण्ठ लगाये
माता को सब बात जनाई ❀ कृपाचार्य सुनते दुख पाई
धीरज धरि कुन्ती यह भाखा ❀ पतिसँग गमन मोहिंबिधिराखा
पुत्र बिना कस रहिहौं राई ❀ जावा चहत सुतहि तुम हाई
कलियुग केर प्रभाव बतावा ❀ तब कछु हृदय ज्ञान भरिआवा
कलियुगपुत्र जो पियअबआयो ❀ ताते मान मोहिं नहिं भायो
हम सबको तिलअञ्जलि दीजै ❀ उत्तर पन्थ गमन तब कीजै

दो० चलन कृष्ण आपहु कहे, तबलग माता जाय ।
आये अर्जुन तेहि समय, गये मातुलग धाय ॥

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी ❀ अर्जुन कही कथा जस हेरी
कहेउकृष्ण नृप रहो कछुकदिन ❀ सुनिनृप भयेप्रशंसत छिनछिन
है कारज अब हैहैं पारथ ❀ मातुजाब यह सब बिधिस्वारथ
संध्या भई सबन शुभ कीन्हा ❀ भोर अन्हाय दान सब दीन्हा
क्रिया कराई सुबिर सुहाये ❀ गये हुते बहु दिन अब आये
ताही समय आगमन कीन्हा ❀ पुरजन सहित नृपतिबर चीन्हा
वन्दि चरण सब जन तब ईछे ❀ चरण धोइ आसनपर पीछे

दो० कुन्ती द्रुपदी भगिनि प्रभु, तुवपितु मातुसबन्दि ।
आशिषदीन्हींमुदितमन, श्रीबरबिदुर अनन्दि ॥

संध्या देखि क्रिया नित कीन्हे ❀ भोजन कीन्ह सबन मुदलीन्हे
ताहि समय नृप बन्धु सयाना ❀ बिदुरहि कहेउ पौढ़िये आना
करहु तात अब तुम बिश्रामा ❀ यहसुनिकहेउ बिदुरनिजकामा
बिदुर कहे भूपति सो बोले ❀ चाहत मिलन भ्रात मन डोले
आज्ञा दियो धर्म के राजन ❀ बिदुर चले मिलिबे के काजन

दो० किङ्करजन लैगे बिदुर, चरण गहेउ कहिनाम ।
सुनतनाम नृपउठिमिले, सह संजय अभिराम ॥

सो० बिदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत ।
दीन्हेउ जो मुख चारि, ताकी प्रभुता है महत ॥

हा हा बिदुर कहत भूपाला ❁ असकहि दम्पति ठोंकतभाला
हाय बिदुर मम सुत सब जूझे ❁ अजहुँ क्षुद्रतन प्राण असूझे
नात गोत्रजन सों भयों हीना ❁ पुत्रहीन हम अबहूं चीना
मरत न फूटत हियो है भाई ❁ मम सम भयो न होने आई
अस कहि दम्पति रोवनलागे ❁ अस सुनि जनमेजय नृपआगे
धीरज दियो बिबिध परकारा ❁ दियो ज्ञान भू एक अकारा
तब बोले नृप अन्ध सुजाना ❁ कहँ कहँ गये बन्धु इत आना
इतते गये सुनहु नरपाला ❁ रहे उजयनी जहँ महकाला
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका ❁ सोमनाथ बसि भयो अशोका
गङ्गाद्वार बास तब कीन्हा ❁ आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा
बाराणसी तहां ते आये ❁ बिश्वेश्वर के दर्शन पाये
गये हिमालय कहँ भूपाला ❁ अलकापुरी लख्यो सुखशाला
ब्यासाश्रम दश बर्ष बिताये ❁ तहँ ते चित्रकूट कहँ आये
यह सतसंग ऋषिन कर लीन्हा ❁ ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा
तहँ ते गये बड़े सो देशहि ❁ भुवनेश्वर किये दर्श बिशेषहि
रामनाथ कर दरश सुहाये ❁ तात तहां ते इतको आये
लहि मैत्रेय पास कछु शुभगति ❁ तुमहिं देखिबे आयगये सति
तव सुधि बिसरति हुती न नेको ❁ देखत तुमहिं सुखी नहिं एको
चलौ भ्रात तप हेतु महाबन ❁ जहँ थलअहै ब्यासकर पावन
सुनु नृप दुख न मानिये एको ❁ सोइ हरि बिनुजगमाहिं न एको
सोई जल सोई थल जानो ❁ सगुन निर्गुन तैसेहि मानो
सोई पृथ्वी सोइ अकासा ❁ आपुइ स्वामी आपुइ दासा
आपुहि राजा आपुहि रानी ❁ सोई अग्नि सोई है पानी
सोई धन सोइ चोर कराला ❁ सोई मरत सोई है काला
सोइ है हीन सोई है पावन ❁ सोइ है राम सोई है रावन

हरि आपुइ नर आपुइ नारी ❋ आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी
आपुहि पिता आपुही माता ❋ आपुहि पुत्र आपुही भ्राता
आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी ❋ आपुहि महिष आपुही सानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई ❋ आपुहि आपु चरावन जाई
आपुहि भँवर आपुही फूला ❋ आपुहि ज्ञान बिना जन भूला
राज रङ्क दूजो नहिं कोई ❋ आपुइ आपु निरञ्जन होई
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका ❋ तैसे जानै ब्रह्म बिवेका
यहि प्रकार जाको मन लागे ❋ जरा मरण नाशै भ्रम भागे
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❋ ब्रह्मानन्द सुनहि तब पावै
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका ❋ सोइ है शोक सोई है हरषा

दो० मातु सोई पितु सुत सोई, सोई नृपति सोइ रङ्क।
एकरूप जानो सुखद, नृप मति करियो शङ्क॥

बोले बिदुर सुनहु हे राजा ❋ दुखअश देखिपरत केहिकाजा
कह्यो अन्ध नृप सुनि हे भाई ❋ भीम बचन मोहिं सह्यो न जाई

सो० और सकल सुखदेत, भीम कहत मोहिं कटुबचन।
सो न सहब मनलेत, को भाषै हरिकी रचन॥

बिदुरजाहिजिमिनृपकटुभाषत ❋ श्वानसमान नृपति दुखमाषत
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे ❋ टूक देखाय बुलावत पीछे
तस दुखदशा करत नरनायक ❋ भीम कहत नृपसे दुखलायक
खात शूद्र गृह लाज न आवत ❋ हीन बंश अजहूं हो रावत
ताते करो चलो तप जाई ❋ नातरु लहौ अधिक दुख भाई
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे ❋ बिदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे
सुनो बन्धु जगकर व्यवहारा ❋ जामें बँधो सकल संसारा
सुख दुख स्वप्न जानियो राजा ❋ यक इतिहास कहत तव काजा

दो० एक बणिक लै बहुतधन, चल्यो करन रुजिगार।

एक दिवस बनमों परा, सूर्य अस्त की ब्यार ॥
तहँ षट चोर मिले हे राजन ❀ लूटन संगचले तेहि काजन
बहुतचलो तब बणिक अजानो ❀ बसनहेत नहिं नगर निरानो
अधिकअधिकबनचलतपरतजस ❀ पके ताल यकरहो बैठितस
तहँ षट आकर चोरन लागे ❀ बणिक देखि भयबश तबभागे
बनमहँ परो भुलाय बणिक जब ❀ देख्यो तब चरित्र नृप सब अब
कहूं देखि भाजत गज भारी ❀ कहूं सिंह कहुँ सर्प करारी
दावा देखि जात भय भागत ❀ गिरत परत उठि कांटा लागत
दो० यहिबिधितेब्याकुलभयो, गिर्यो अँधेरे कूप ।
बैशंपायन मुनि कहेउ, सुनु जनमेजय भूप ॥
बटको बृक्ष हेठ पर राजत ❀ पकरि बणिकडालीकहँ ताजत
जो शाखा लटको मधि कूपहि ❀ ताहि रहे देखत हे भूपहि
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउ राजत ❀ शाखा काटि रहे पुनि गाजत
पकरि चहत सोइ हेठहि आवन ❀ हालत डार गिरत मधुपावन
मुखमधि गिरतचाटिसुखपावत ❀ कूपहि सर्प देखि भय लावत
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हों ❀ ऐसहि दशा सबहिं प्रभु कीन्हों
बोले तब नृप बचन सुहाये ❀ कोनत बन अब देहु बताये
बोले बिदुर सुनहु हे भाई ❀ जीवहि बणिक जानि जो आई
काम क्रोध अरु मोह लोभ मन ❀ इन्द्रिय यह जानो तसकरजन
अरु पुत्रादि सकल परिवारा ❀ पाइ सहायक चोर अपारा
जाते कहत बनाय जीवको ❀ उत धन धर्म अधर्म हीवको
जिमिब्याघ्रादिडरावतबणिकहि ❀ तिमिकुलचोरडरावतजनिकहि
बन है दुःख जोन संसारा ❀ स्त्री आदि कूप है कारा
है आयु वह शाखा जोन ❀ द्रब्य अहै तो बहता पोन
मूषक राति दिवस करिजानो ❀ काल सर्प को नृप करि मानो
कह संजय जो बिदुर बखानत ❀ हमहूं कहत जाहु अस जानत
दो० इन्द्री हय अरु मन बहक, देह सुरथ रथवान ।

याके बश भर्मत फिरत, जीवन कछु है आन ॥
सो॰ कह संजय मतिमान, रूपहि देखा साधुको ।
ताबिन कछु नहिं आन, जड़ चेतनउत्पन्निसत ॥
दो॰ भई ब्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भोर ।
धर्म नृपति आवत भयो, बन्दत पितुहित ओर ॥

नृपति भीम अर्जुन तबबन्दे ❀ नकुल देव सहदेव अनन्दे
नाम कहेउ तब पाण्डव चीन्हो ❀ गदगद ह्वै दम्पति शिष दीन्हो
कृपाचार्य मिलि बिदुरहि भेटत ❀ संजय मिलो तापत्रय मेटत
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे ❀ औरौ सकल बसैया नेरे
कर्णपुत्र नृप हृदय लगायो ❀ मेघवर्ण मिलि दुसह नशायो
बैठे निज निज आसनपर सब ❀ अन्धनृपति गदगद बोले तब
हो हो पुत्र धर्म सुखदाता ❀ किय प्रतिपालमोर अरु माता
दुर्योधन आदिक सब जूझे ❀ तबसों तुम मोको अति बूझे
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं ❀ रोमहिं राम अशीशत तोहीं
मम सुत तुमहिं दुःख बहु दीन्हो ❀ फल पायो ते आपन कीन्हो
अब मम देह सकल जरजरसै ❀ बलसुहीन सब निकरिगई सै
सरिता हेठ बृक्ष मोहिं जानो ❀ त्वक्ष उखरिबो शङ्क न मानो

दो॰ आज्ञा दीजै जाइँ हम, दम्पति भ्राता साथ ।
कर्ममुक्तिहित बनै कछु, उताहित धन जोहाथ ॥

नृपसुनि यहबन्धुनसहदुखअति ❀ बोलतभे तब ज्ञान चक्षुपति
हमरे तुम सबके सुखदाता ❀ केहिबिधि कहौंजाहु असबाता
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू ❀ होय सुभग सह मङ्गलसेतू
तब कुन्ती बोली बिलखाई ❀ हमहूं चलब संग तुव राई
सुनते सब काहुन समुझावा ❀ कुन्तीके मन नेकु न आवा
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे ❀ धर्मराज राजा के आगे
पुत्र मात सम्बन्धी जोई ❀ जानाहै औरौ सुन सोई

पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै ❀ भोर जाब पुनि सब ब्रत धरिकै

सो० सुनि धर्मज गुणऐन, बन्दि सबनि पितु पदपद्म।
आये निज निज ऐन, नित्यक्रिया भोजन कियो॥

नृप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये ❀ तिन नृपआयसु सुखद सुनाये
लै बन सबन बस्त्र पट नाना ❀ गजरथ बाजी उष्ट्र बिताना
अरु भोजन के साज अथोरा ❀ लै मतिद्दग पहँ जाहु करोरा
यह सुनि किङ्कर सकल बुलाये ❀ जो जेहि लायक ताहि सुनाये
निकरत सुखबानी किङ्कर जन ❀ लै सबगये मिलो अति अरु बन
लादि साज नृपमन्दिरमों सब ❀ होनलाग शुभकाज सकल तब

दो० निशाभयो पुनिव्यक्कमो, गये धर्म के राज।
पितहिं बन्दि लागेकरन, सबजनसबविधिसाज॥

होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा ❀ जस बिधिबेद कहेउ तसकीन्हा
भोजन श्राद्ध यथाबिधि कीन्हों ❀ दान अथोर बिप्र नृप दीन्हों
याचक सकल अयाचक भये ❀ यकदिन एकनिशा इमि गये
अरुणोदय लखि चालन कीन्हा ❀ दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा
आशिषदै निज धामन आयो ❀ जनमेजय सुनि मुनि सबगायो

दो० कुन्तीमिलिगन्धारिता, बिदुरसहित मिलिधर्म।
सबनमिलत आगे चले, पुरजनसह जिमि सर्म॥
पुरजनमहँ सुरराजसम, नृप धर्मज सह भाय।
नारी नर सब बिकल ह्वै, हा हा हा कहि राय॥

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा ❀ मिलिसबहिनयोजनयकआवा
धर्मराजकहँ आशिष दीन्हा ❀ संजय कहँ प्रबोध तब कीन्हा
सब काहुन पलटायो राजा ❀ गाङ्गेय मिले अर्ध महराजा
मायामोह तोरि तृणइव सब ❀ आगे चले सुनहु नृपबर अब
बिदुर कन्ध धरि कर नरपाला ❀ पति कन्धा गन्धारी बाला
तापाछे कुन्ती धरि हाथा ❀ चले नवाय गङ्गकहँ माथा

करि मज्जन अरु बहुकर दाना ❀ चले बनहिं चारिउ जन भाना
यहि बिधि करत बासमगमाहीं ❀ चले जात नित भय दुख नाहीं
व्यासाश्रममिलि सबमुनिजूहन ❀ भे प्रसन्न भोजन फलमूहन
व्यासहिंमिलतअधिकसुखपावा ❀ कहमुनि भलीकीन्ह जो आवा
जैमिनि शुकदेव बकदालम्भी ❀ औरौ मिले मुदित मुनितम्भी
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता ❀ सुतजूझन आदिक बहुबाता
कह मुनि प्रथम तुम्हें समुझावा ❀ नेकु हृदयमहँ ज्ञान न आवा

दो० निजतन तूल भराइकै, निजकर अग्नि लगाय ।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय ॥

सो० ताते करु तप भूप, हृदयराखिअव्यक्तप्रभु ।
देखि चराचर रूप, जोत्रिभुवनमहँएकप्रभु ॥

करन लगे तब नृपहो रानी ❀ बिदुर आनिकरि ज्ञानसुहानी
भे अद्भुत सदृश यमराजा ❀ मग्नफिरत बन और न काजा
उत नृप धर्मराज दुख पावत ❀ लख्यो तबै ऋषिनारद आवत
उठे सभासद मुनि कहँ बन्दे ❀ लख्यो धर्मनृप बहुत अनन्दे
अर्घ देइ आसन बैठार्यो ❀ मुनि समीप असबचन उचार्यो
त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ मुनीशा ❀ फिरत रहत तुम सदा अहीशा

दो० तुम मुनीश सर्बज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कहोखबरिकछु बिदुरकी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रम-
वासिपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बिदुर बिरक्त फिरत बनमाहीं ❀ त्यागो तन गे हरिपुर काहीं
तौ पितु और दोउ पटरानी ❀ गईं अग्नि जरि सुनु गुणखानी
भये बिकल सुनि बन्धु नृपाला ❀ जोगतिहोतबिकलजिमिकाला
रोवत बार बार हा हा कहि ❀ मूर्च्छित ह्वै कै गिरत अहैं महि
यह देखत बोले मुनि नारद ❀ सुनु नृपबर बिज्ञानबिशारद

मरण भयो न कछू यह जाना ❀ समुझनहेतु कहेउ असराना
हे पितु भक्त सदृश कोइ नाहीं ❀ परपितुमानत समपितु आहीं
अबचलि दरश करौ पितु केरा ❀ नातरु काल आयगो नेरा

दो० यह कहिकै नारद ऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर।
अब आगे सुनु नृप कथा, श्रोतनके शिरमोर ॥

तुरत तयार नृपतिबर भये ❀ बन्धु सहित नृप मिलि अबगये
पाति औ नारी सकल समाजा ❀ नगर महाजन अरु द्विजराजा
चले सकल जेहि राजत पुरमों ❀ बाण सदृश यह लागत उरमों

सो० चले नृपाल भुवाल, सहितबन्धुपुरजनसकल।
ठौर ठौर रक्षपाल, राखि चले हस्तीनगर ॥

नृप तब नगर राखि रक्षकगन ❀ चले सबनसहदुखित नृपतिबन
तीरथ करत बास भगवाना ❀ चले बनहिं जहँ कुरुपतिराना
गये ब्यास आश्रम के पासा ❀ भे पदत्रान बिहीन सुदासा
मिलतऋषिनकहँबिबिधबिधाना ❀ गये जहां हैं ब्यास सुजाना
मिलेब्यासकहँ बन्दनकरि करि ❀ बारबार शिर पद महँ धरिधरि
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया ❀ कृपा कटाक्ष सबनपर दाया
मिले पिता द्वौ मातन काहीं ❀ नाम सुनाइ कहेउ कछु नाहीं
सकल मोहबश जल नैननमहँ ❀ को अस कहै दशा नृप भै तहँ

दो० दै अशीश सबकहँ सबन, बैठे सब जनराय।
बैशम्पायन कहत हैं, जनमेजय पहँ गाय ॥

दुर्लभ देखि राय कहँ राजा ❀ सहमतु नहिं दुर्बल तपकाजा
बोले नृपबर गदगद बानी ❀ कहहैं बिदुर कहेउ तब रानी
कुन्ती कह भे परमहंस वै ❀ ढूंढ़न चले अकेल बनै स्वै
देख्यों भागिजात बनमाहीं ❀ गोहरायो ठिठुके त्यहि नाहीं
तदपि बृक्षआश्रित चीन्हों जब ❀ नयननीर भरि रहेउ ठाढ़ि तब
चरण गहेउ धर्मजके राजा ❀ ताहि समय दुन्दुभि बरबाजा
बिदुर त्याग तनु ताही औसर ❀ गे यमराज बिदुर ह्वैकै बर

देखि धर्म नृप बन्धु बोलाये ❀ कहि सब कथा नयन जल छाये
दाहन चहेउ तबै बाणीभय ❀ जीवनमुक्ति बिदुर यम कह हय

दो० यमराजा को अङ्ग है, बिदुर भक्त भगवान।
धर्मराजहियसुमतिभो, परबोधिक मुनिकान॥

सो० आयो राजा धर्म, कहेउ कथा सब बिदुरकी।
कीन्होंबिधिवतकर्म, निजकर राजाअन्धवर॥

रहे बनहिं कछुदिन शुभबीतत ❀ महादुःखलखि मुनिबर चीतत
पूछेउ सबसों को केहि चाहत ❀ जासों होत उऋणभों दाहत
कुन्ती कहेउ कर्ण मैं देख्यो ❀ गंन्धारी जामात्रहि लेख्यो
सुभद्राआदिक सुतकहँ भागत ❀ पितुसुतबन्धुपतिहिशरणागत
सबै कौशिकी तट लै गयऊ ❀ तपप्रभाव सब आवत भयऊ
दिव्यदृष्टि अन्धहि नारी सह ❀ सुनत लगायो कह हाहा तह
कोउ पति मिलत महामुद छाये ❀ कोउ कोउ पुत्रन हृदय लगाये
कोऊ भाई बापहि लावत ❀ दुख मिटिगे कोउ मङ्गल गावत
रैनि एक सुखसे सब बीतत ❀ अरुणोदयलखिसबजन चीतत
फांदे सब बन नृप छलमाहीं ❀ रहे न एकौ धौं कोउ माहीं
सकल मोहबश नारि अपारा ❀ धसीं जलै करि घोर चिकारा
कोउ कोउ बनमहँ ढूंढ़त भागत ❀ कोउ कोउ प्राणतजत भैलागत
कोउ कोउव्याघ्रादिकधरिखायो ❀ जलमहँधसिसब प्राण गँवायो
कोउ कोउ शून्यहोम मखशाला ❀ जरीं अग्निमहँ जे बरबाला

दो० सबकाहुनतनत्यागिकरि, गईं पतिनके साथ।
व्यास कहेउ यहधर्म सों, अबभलतबहिंअनाथ॥

सो० आये सुनि नरपाल, जहांहोमशाला नृपति।
सुनु अब कछु सुतहाल, बैशम्पायन कहतभे॥

धर्मनृपति मख करत रहे तहँ ❀ मखशाला रह व्यासकेर जहँ
अग्निप्रचण्ड शिखाअतिबाढ़ी ❀ अर्घ नृपति अङ्गहि तहँडाढ़ी

कुन्ती चलन चहेउ उठि तहँते ❀ अक्षबिहीन नृपतिबर जहँते
धर्म बिचारि जरी सँग तिनके ❀ रामकृष्ण कहि कहि वै जिनके
कोऊ ऋषि अरु पाण्डुकुमारा ❀ रहै न तब कोउ उठवनहारा
आय नृपति यह दशा निरेखी ❀ कीन्हों रुदन सुनत जिन देखी
रोय उठे सह नृप बन्धुन जन ❀ और नगरबासी आये बन
रोवहिं कुन्तिहि गन्धारी कह ❀ हाय हाय कहि अन्धनृपतिसह
लेकर अस्थि सुदम्पति केरी ❀ लीन्हे अस्थि बूढ़िमा केरी
कीन्हे कर्म सबिधि गङ्गातट ❀ जहँ पबित्रबन माहिं एकबट
कीन्हतिलञ्जलिदेयसबिधिबिधि ❀ चलेधीरधरि नगर नृपतिसिधि
करि बन्दनऋषिब्याससबनको ❀ चलेमगाहिंमहँ श्रम नहिं मनको

दो० बासचलनकरिमगनसब, नृपराजन सह भाय।
नारिसंग सुभद्र सह, द्रुपदी सह दुख पाय॥
सो० आयेनगर नृपाल, दियेतिलाञ्जलिदिवसनिशि।
एकादशसुखपाल, दिये बाजि नारी सबन॥
दो० द्वादशयें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर।
बासलसो दम्पति तबै, सह कुन्ती सब ओर॥

पायो बास सुखद सब काहू ❀ मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू
धर्मराज जो बिदुर कहायो ❀ निजपुर बास न्यावमन लायो
जनमेजय सुनि भाषन लागे ❀ सम्पुट जोरि मुनीशन आगे
नाथ कहो यम केहि अपराधू ❀ भये मनुज गुणबर अरु साधू
बोले मुनि राजा के आगे ❀ गदगद बचन रावके पागे
एक मण्डपी ऋषी सोहावन ❀ करतहु तप पवनमधि पावन
बहु तसकर चोरी कर लाये ❀ तहँ बन मध्य मोर करि पाये
तहँ बन डारि सकल तब भागे ❀ उन नृप आपु उदय लखिजागे
धन बिहीन लखि रक्षक डाटे ❀ तिनके चोप रह्यो नहिं काटे
चरण चिह्न देखत ते दौरे ❀ धन देख्यो देख्यो मुनि बौरे

धन लदाइ मुनि बूझन लागे ❀ अरे चोर क्रोधहि अतिपागे
धरे मौनव्रत मुनि नहिं बोले ❀ धन सहायकरि गयो नृप तौले
नृप देखत अति क्रोधहि पागे ❀ कहिकटुबचन कहन असलागे
शूली देहु चढ़ाय सुचोरहि ❀ दिय चढ़ाइ तब मुनिवर औरहि

दो० शूलीपर बैठे ऋषै, धरे तत्त्व को ध्याम।
कष्टपायसब ऋषि तबै, आये ऋषि के धाम॥

सो० खग मृग रूपनधारि, आयेमुनिबूझनलग्यो।
पाप कौन अस चारि, जोऋषिबरअतिकष्टहौ॥

दो० हरिइच्छाअसकहिदयो, सबसों मुनिबर गौन।
राय सुनत दीन्हों छुटै, आयो यम के भौन॥

हे यमराज कहौ केहि पापन ❀ लह्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन
कह यमराज सुनो मुनिराजा ❀ लह्यो कष्टअति सुनुसोइ काजा
है पतङ्ग गुद बाली कीन्हों ❀ तेहि कारण इतनो दुख लीन्हों
यह सुनि क्रोधित ह्वै ऋषि बोले ❀ अग्निशिखामुखअग्निहिबोले
शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत ❀ शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत
सुनि यमराज चरणगहिलीन्हों ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों
ह्वैहै शूद्र मुख भाषन कीन्हों ❀ हरिके भक्त और सिख दीन्हों
पुनि यमराज होइहौ आई ❀ आये मुनि कहि अति सुखपाई
बिदुर ब्यास तप बल ते राई ❀ भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई
बोले जनमेजय भूपाला ❀ ब्यास रच्यो नरबश सब बाला
बनमहँ देह त्यागि तिन्हकीन्हों ❀ माया तप यह चाहत चीन्हों
बोले मुनि तपबल ऋषिब्यासा ❀ कीन्ह देखु अमरावति बासा
मैं जानी नृप तुव मन इच्छित ❀ ताते आवत पिता परीक्षित
ताहि समय नभगहगह बाजत ❀ आवत देखि बिमानहि गाजत
किन्नर देव नृपति सँग आवत ❀ बाजत बेणु अप्सरा गावत
नील नारि नलनी कच राजत ❀ कुचयुग भरन फूलमकुबाजत

दो० चमकतमोतिनजोरिमुख, हँसत फँसतचितदून ।
लाजत देखत जाहि रति, मति न रहतशुभजून ॥
सो० यहिविधि सुभग सुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बारबार बन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा ❁ बाजे हरि तन आनँद बाजा
मिले परीक्षित कहँ सबनृपगण ❁ नातगोत्रसुत सह पुरजनजन
तब जनमेजय द्विजन बोलाये ❁ आशिष पाय प्रसन्न जनाये
देव सकल पितु सह उठि ईछे ❁ मज्जन करवायो सब पीछे
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो ❁ ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो
सिंहासन पर पूजा कीन्हों ❁ चरणधोय चरणामृत लीन्हों
सुभग सुगन्धित माला दीन्हों ❁ शय्यादै आश्वासन कीन्हों
तबपश्चिमलखिअस्तदिवाकर ❁ द्विजभूपन मिलि मिले पुत्रबर
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे ❁ चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँ बन्दे

दो० बाजैकिंकिणिचारुध्वनि, नाचन लागीं नारि ।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर, तनक न लागीबार ॥
तब जनमेजय भूपबर, मुनिअस्तुतिअनुरागि ।
सूत शौनकादिककहत, निशाबीतिसबजागि ॥

अरुणचूड़ अरुणोदय लागत ❁ श्रोता बक्ता सब जन जागत
मज्जनकरि आसन प्रति आये ❁ जनमेजय इमि अर्ज सुनाये
कहो तात सब कथा सुहावन ❁ पापनशनि समपुण्य बढ़ावन
शत्रुनशनि मित्रनि सुखदानी ❁ कलिनाशनिमुनिमहजिमिबानी
कल्पलता कल्पाय सुतासी ❁ कुन्दकली उचलित कुन्दासी
जीवनसी जीवात्मा ईशी ❁ परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी

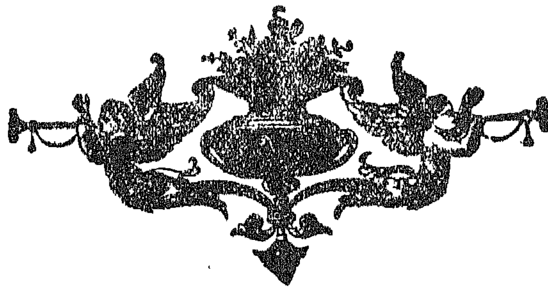
दो० जीवन धनसी ईशसी, पीससदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्योमहामुनि, कलिजन पापनशाय ॥

सो० मुनिबर भाष्यो बैन, राजासुनु धरिध्यान यह ।
सबसुखको जो ऐन, पढ़तसुनतसुखनवलनित ॥
यकदिन राजाधर्म, और उठे श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्होंनितकृतकर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥

ताहिसमय कलियुगसुधिआई ❀ देह दशा धर्मज दुख पाई
कह पारथ हरिपुर अब जैये ❀ उत्तर चलो कृष्ण पहँ लैये
मातुपिता के हित इत रहेऊ ❀ ते सबगाय सबिधि ते कहेऊ
अब रहिबो नहिं उचित सुभाई ❀ ताते लावहु श्रीहरि जाई
अर्जुन सुनत सुभग रथ साजा ❀ भीमहिं मिले सबहिं पुनि राजा

दो० बेगवन्त अर्जुन चले, जहां बसत भगवान ।
आश्रमवासिकपर्व कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते आश्रम-
वासिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ मुशलपर्व ॥

दो० श्रीगिरिजागणपतिसुमिरि, बरणिभक्तिहनुमान।
मूशल को भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
जनमेजय मुनिसों जवन, भाष्योमुनिशुभगाथ।
ताहि सुभग भाषा रचत, धरिशिरनिजप्रभुपाथ॥

बन्दौं गुरु गोविंद के पायन ❋ जिन प्रसाद हूजै सुखदायन
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति ❋ नारद शारद सुमिरि महामति
सुमिरौंआदिकाव्यघटव्यासहि ❋ जाकीसबिधि भांतिमोहिंआशहि
ईश्वररूप जानि जगती को ❋ सुमिरौंराम आदि शिव नीको
सम्वत शुभ सहस्र से तीशा ❋ भाद्रमास सप्तमि रजनीशा
औरँगशाह्व दिल्लीपति नायक ❋ सबलसिंह तब हरिगुणगायक
बैशम्पायन कहत सुनाई ❋ सुनहु सार्थ कुलबर नृपराई
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी ❋ गे हरिपुर सह कुन्ती रानी

दो० इत अर्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुखपाय।
मार्गमिले नारद सुमुनि, रथमों लिये चढ़ाय ॥

बिबिध भांति भाषत शुभगाथा ❋ जातचले अर्जुन मुनि साथा
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा ❋ मिले अमृतही श्रीबलरामा
अनिरुध साम्ब प्रद्युम्नसुआदी ❋ औरौ चले देखि मिलनादी
देखि पार्थ नारद मुनि राई ❋ उतरे रथ सुमिलनहित धाई

यदुबंशिन प्रणाम तब कीन्हो ❀ नारदमुनि आशिष तब दीन्हो
पग बन्दे पारथ हलधर के ❀ हिये लगाय कहतहौं नीके
जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती ❀ बन्दे चरण मिले सब जाती
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे ❀ मिले सात्यकादिक छलछूछे
यहिविधि मिलत पार्थसुनिराम ❀ राजहिं मिलि गे जहँ सुखधाम
सम बन्दे तहँ मुनिबर ईछे ❀ अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे
अर्घपाद मुनिबर कहँ दीन्हा ❀ बिधिवतपूजि सुआशिषलीन्हा
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ ❀ मिले पार्थ सब त्रियन यथारथ
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा ❀ मनभावत आशिष शुभलीन्हा
पटरानिन सेवा मन दीन्हो ❀ पार्थ कृष्ण मुनि भोजन कीन्हो

दो० भोजन करि बीरा लयो, सुभगसुगन्धित लोपि ।
तब सोये बर पार्थभट, बूड़ेउ नारद सोपि ॥

सो० आगम कहौ मुनीश, केहि कारण आवनभयो ।
कहेउनारद सुनिईश, ब्रह्मा पठयो आपु पहँ ॥

मानुष उमिरि अधिक है गयऊ ❀ अजहुँ न आवन हरिकर भयऊ
प्रभुडर काल डरत नहिं आवत ❀ यदुकुल कतहुँ जीव नहिं जावत
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे ❀ उग्रसेन आदिक ज्येठारे
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला ❀ ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला
कहति सृष्टि नइ नीति चलाई ❀ केहि कारण मोहिं ईश बनाई
चतुर्मुखा केहि कारण भाखत ❀ देवन में सरिता करि राखत
हौं पुनि उनहीं केर बनावा ❀ अन्तखोज प्रभु हमहुँ न पावा
तो निजकर क्यों नाहिं बनावत ❀ हमरे ऊपर दोष धरावत
ब्रज मों गाय गोप उन कीन्हो ❀ तब प्रथमै हम परचो लीन्हो
ताते अब यह उचित न तुमको ❀ हँसवन उचित प्रभू है हमको
ताते कृपा करहु बनवारी ❀ पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी
औरौ कही बात करजोरी ❀ कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी
हँसि कह प्रभु भो घोर नेवारा ❀ तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा

कह मुनि भार अथोर अपारा ❀ यदुकुल मरिहहिं काहुहिमारा
करिय नाथ अब कछुक उपाई ❀ जाते नाथ लोक निज आई
कह हरि गन्धारीसुत जूझे ❀ तब अस पुनि संजयसों बूझे

दो० श्रीहरि पक्षी पाण्डु के, जयकी आशा छूटि ।
अन्ध दीन्ह मेरे लिये, शत सुत विधनै लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजै तवै, सुनु माता अस कौन ।
हारि यहां मेटन चहै, मनमानी किय जौन ॥
यह सुनिक्रोधालुब्ध ह्वै, शाप गँधारी दीन्ह ।
अबते छत्तिस वर्ष में, जो मोकहँ तुम कीन्ह ॥

करि असमत गन्धारी शापा ❀ निजकुलहते सुनिजकर पापा
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा ❀ गुण गावत मुनि चले अकाशा
ब्रह्मा पास कही जो हेरी ❀ यदुकुल नाश आइहै फेरी
यहिविधि बीतिगये कछुकाला ❀ आगे सुनहु नृपति भो हाला
यक दिन ब्रह्मा अतिदुख पायो ❀ अजहुँन काशी श्रीप्रभु आयो
अस मन समुझि देव ले साथा ❀ गे द्वारकहि जहां ब्रजनाथा
करि परिक्रमा नायकरि शीशा ❀ अस्तुति करत देव दिगईशा
पाहि पाहि शरणागत बत्सल ❀ हे कृपालु पालन श्रीअत्सल
दीनानाथ देवकी नन्दन ❀ मैं तव शरण भक्तपालनजन
जय गोविंदवासी बृन्दाबन ❀ जयति देव जय जगजनबन्दन
जय जय जय माधव असुरारी ❀ तारण तरण गौतमी नारी
दशरथसुत जयजयजगपालक ❀ जनकसुता बारन हरिबालक
परशुराम निजरूप मानहर ❀ बनहिबासकियनाशत्रिशिरखर
मग मारीच बधन सीता छल ❀ बानरसंग सहित हनुमतबल
सेतु बांधि रावण को मारो ❀ अवधपुरी प्रभु भक्ति उधारो
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण ❀ चलिये निजपुर श्रीजगतारण
हे प्रभु भक्तबछल बनवारी ❀ हँसि तव मधुर गिरा उच्चारी
चलब कछुक दिन में हे देवा ❀ यह सुनि लगे जनावन सेवा

दो० सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व ॥
इति श्रीमहाभारतेमुशलपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गे निजधाम देव समुदाई ❀ अब नृप कथा सुनहु जो गाई
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे ❀ कृष्णचन्द्र सन बूझन लागे
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा ❀ जो प्रथमहिं प्रभुमन्त्र अरूपा
इतसों जाइ चलन जब चहे ❀ तब कुन्ती माता बश रहे
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई ❀ जान चहत उत्तर नृपराई
चलन हेतु प्रभु तुमहूं भाखा ❀ चलहु नाथ अब काहे राखा
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी ❀ सुनु नृप बोले शारँगपानी

दो० चलब कछुक दिनमें सुनहु, रहौ इतै कछु काल ।
सुनु असकहि राखत भये, श्रीप्रभु करिकै जाल ॥

रहे बहुत दिन आदर लहिके ❀ अतिमुद सहित बारता कहिके
यकदिन हरि असकह्यो बिचारी ❀ नाशहोइ केहिबिधि कुलकेरी
ताहि समय नारदमुनि आये ❀ हरिगुणगावत आदर पाये
तिनसों बूझेउ यदुकुल नायक ❀ नाश यत्न भाषो जेहि लायक
नारद कह बिन शाप दिवाये ❀ देखि न परत कि युद्ध मचाये
यह भाषत नारद सुनु राई ❀ ताहिसमय ऋषिमुनिगणआई
आये व्यासशिष्य सब साथा ❀ हमहूं हते सुनिय नरनाथा
भृङ्गी ऋषि भृङ्गी मुनिनायक ❀ देवल कपिलआदि सुखदायक
सनतकुमार सप्तऋषि राजा ❀ दुर्बासाऋषि सहित समाजा
बिश्वामित्र बशिष्ठादिक मुनि ❀ अरुकौण्डिल्यसुनौ भाषतगुनि

दो० अरु भृगुनायक अङ्गिरा, पाराशरऋषिराय ।
देखि कृष्णआदिक सकल, परे पार्थ सह पाय ॥

सो० उग्रसेन सह कृश्न, पायँ धोय भोजन दयो ।
हलधर कीन्ह्यो प्रश्न, केहिकारण आगमसबन ॥

बोले मुनिबर ब्यास सुहावन ❀ अशनदेहु इत कछुदिन पावन
चतुर्मास बरषाऋतु पावन ❀देहु अशन यहिहित सबआवन
रहब इतै सबमुनि सुखदायक ❀ करब सुतप जो आज्ञापायक
कह हलधर मम भाग्य अपारा ❀ महा महामुनि जो पगुधारा
रहो देव हम अशन सोहावन ❀ टिकयोमुनिन्ह अपावन पावन
नितप्रति भोजन सुभग बनाई ❀ बिलग मुनिन्हप्रति देत पठाई
यहिबिधिकछुकदिवस नृपबीते ❀ यकदिन सब शिकार हितरीते
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नाती ❀ लै आज्ञा है चढ़ि सबभांती
खेलि शिकार मारि मृग रूरे ❀ पुरहि पठाय चले मुदपूरे
आये मुनिबर जेहि बनबासा ❀ बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्बासा
कोउ कह मुनि भोजनहित आये ❀ मांगत भीख कतहुँ नहिं पाये
मिलो पेटभरि इतै अहारा ❀ परे ताहिते ये शठ द्वारा
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई ❀ जो बिधि लिखा होत है सोई

दो० कोउ कह हैं सर्वज्ञ निधि, कृपायतन मुनिराज ।
नृपन चाहियो दानशुभ,मुनिबरभोजनकाज ॥

सो० निन्दो मति सबकोय, इनकोमानत कृष्णबलि ।
जो बिश्वास न होय, कत न परीक्षा लेहु तुम॥

तुरत ग्राम को दूत पठायो ❀ मूशल काढ़ि एक लै आयो
पियो सुरा सब यादव बालक ❀ भयो मस्त हरिइच्छा सालक
बांधि साम्ब हियक.ढ़ि सुहावन ❀ मूशल राखि मध्य हियरावन
सुभग नारि गर्भिणी बनाई ❀ केश मूल गहना पहिराई
गेंदन के तहँवां कुच कीन्हे ❀ सेंदुर दै शिर बेंदी दीन्हे
बिछुवा आदि अभूषण जेते ❀ कहँ लौं कहौं किये सब तेते
जाय बन्दि मुनिबर दुर्बासा ❀ बैठि बचन असकीन्ह प्रकासा
हे मुनिबर सर्वज्ञ निधाना ❀ पुत्री पुत्र जात नहिं जाना
जो कृपालु है तुरत बतावो ❀ अतिशुभ सुयश जगतमहँ पावो
ध्यान धरी मुनिबर तहँ देखे ❀ छलसमुझै कछु और न देखे

क्रोधित मुनिबर बोले बैना ❀ सुत सुख देख्यो यह कुलनैना

दो॰ बोले मुनिबर क्रोधकरि, होय सत्य यह बैन ।
याही सुत के होतही, मरै कृष्ण सह सैन ॥

सो॰ सकुलसंहरिहैंसर्व, जिनटिकाय अपमानकिय ।
असमुनियेनृपपर्व, मरै रुक्मिणी जवन सिय ॥

यह सुनि सकल भभरि तब भागे ❀ मनहुँ सिंह कोउ सोवत जागे
मुनिहि सकोप बकत बहु बैना ❀ इत आये सब निज निज ऐना
सकल बात सब काहुन पावा ❀ जुरि समाज सब नृपपहँ आवा
सुनत कृष्ण अतिभये प्रसन्य ❀ उग्रसेन सह शोचत अन्य
शोचत बसुदेव अरु बलरामा ❀ बारबार कहि शिवहरि नामा
तब नृप मन्त्री ज्ञात बोलाये ❀ उद्धव सात्यकादि सब आये
शोच सुमत करि यह ठहराये ❀ बोलि लोहार सहस्रन आये
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ ❀ चूरन करि समुद्र महँ बहेऊ
ताते भयो सुखर उत्पन्य ❀ औरौ सुनौ कछुक नृप अन्य
एक चूर जो लोह बहायो ❀ शापसत्य हित मीन सो खायो
मीनहि ताहि पकरिकै लावा ❀ बालि नाम धीमर जो आवा
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा ❀ तीक्षण धार थोथ महँ सोहा

दो॰ सुनु नृप भावी मिटै कस, अरु श्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्णप्रभु, करतकोटिकहशाप ॥

कछु दिन बीतिगये यहि भांती ❀ आनँद जातदिवस अरु राती
श्रीप्रभुकृष्ण चृत्य अस जागी ❀ द्वारावती शाप नहिं लागी
असमन समुझि कृत्तिभगवाना ❀ चहहुँ प्रभासकरिय असनाना
यहसुनि सकल बुलाय सुबासी ❀ भोर चलनकह आनँदरासी
यह सुनि उद्धव हरिपहँ आये ❀ नमस्कारकरि अस्तुति गाये
पुनि रोवन लागे हाहा कहि ❀ कबमैं रहौं नाथ दुख यह सहि
तव मन मैं हौ निजपुर जैहौ ❀ नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहौ
नाते रहौं जहां हम पैये ❀ जो मन चहौ नाथ सो हैये

दो॰ कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहुँ सनाथ।
असकहि लागे रुदन तब, धरेउ चरणपर माथ॥
सो॰ भाष्यो श्रीप्रभु बैन, करत शोच तुमहौ कहा।
धरिपद निजहिय ऐन, करौ जाय तप बद्रिका॥
यह देखतहौ जौन सकल जग ❀ सो जानहु सबजाहि एकमग
हय गय द्रब्य पुत्र अरु दारा ❀ सो सबजानु झूठ ब्यवहारा
मरण काल कोउकाम न आवत ❀ कबि कोबिद मैं सज्जनगावत
मम नाभीते कमल भयो जब ❀ ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब
ताते भई सृष्टि बिस्तारा ❀ मैंहूँ धरेउँ बहुत अवतारा
चारि बेद श्वासन ते गाये ❀ मुखते द्विज भुजक्षत्रिय गाये
बैश्य जानु पद शूद्र बनावा ❀ याहीमें सब जग बेलमावा
तब श्रीकृष्ण कृपा अतिकीन्हे ❀ ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे
औ यह कह्यो सुनौ उद्धव तुम ❀ अब तुम जाउ बद्रिकाको गुम
नाश होन चाहत अब द्वारा ❀ किहेउ दिवसप्रति भजनहमारा
बृक्षयोनि ते मनुज होत जब ❀ सुमिरण मेरो उचित सुनहुतब
सुनि उद्धव तब शीश नवायो ❀ परिक्रमा करि तुरत सिधायो
इत यदुबंशी भोर भये जब ❀ चले प्रभास काल प्रेरित तब
सजिसजि साज चले सब कोई ❀ पुरजन कृष्णसहित बलि जोई
दो॰ कहँलगि कहिये सुनहुनृप, चले सहित यदुनाथ।
सात्यकि कृतबर्मा सहित, यदुजन पुरजनसाथ॥
उग्रसेन बसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु, सुखद सुगहिकै बाहिं॥
सो॰ उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेहबर॥
पारथ राखि नगर रखवारी ❀ आपु चलनहित कीन्ह तयारी
दारुक अरु पारथसों कहेऊ ❀ आयो कालिह नारिसह रहेऊ

गे सब प्रभाक्षेत्र सुख पाई ❋ तहँ नारद मुनि बीण बजाई
नारद आयसु दीन कृपाला ❋ जाहु नगर द्वारकहि बिशाला
सिखवो तात मातु नृप जाई ❋ मोह मूल को शूल नशाई
तहँ नारद असज्ञान सिखावत ❋ भूमिअकाशहि निजदरशावत
दो० वृक्षयोनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरिपूत।
तातें अजहुँ न सुमिरियो, होन चहत हौ भूत॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो, पूर्वभाग्य मुनिराज।
भक्ति मुक्ति मांगी नहीं, अब आवतिहै लाज॥
सो० मुनि बोले इमि बैन, तुवहित हेतहि कहत हम।
यकइतिहास शुनैन, नौयोगीश्वर जनकको॥
नौयोगीश ऋषभ सुत आये ❋ जनक देखिके शीश नवाये
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती ❋ सिंहासन दीन्हो मन माती
कृपा कीन्ह मम भाग्य अपारा ❋ ऋषभदेव सुत जो पगुधारा
जैसे कियो पवित्र मोहिं चरणन ❋ तैसे पूछत करिये बरणन
तब बोले योगी बर बैना ❋ निज इच्छित तुम पूछत हैना
कहा जनक कर सम्पुटकरिकै ❋ कौनबस्तु अस्थिर बिनभरिकै
जो कह धन स्त्री अरु बालक ❋ आज्ञाकारिकै अरु कुलपालक
ताते मुनि कछु अस्थिर नाहीं ❋ धनदकुशासन सब मरिजाहीं
ताते शोक होत है भारी ❋ है अस्थिर को कहौ बिचारी
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी ❋ अस्थिर नाश न कहिये तैसी
बोले कश्यप नामक योगी ❋ प्रथम भयो हरिहर यश भोगी
बहु सुखप्रास उन्हें मिथिलेशा ❋ जे हरिभक्ति ते त्यागि अँदेशा
पुत्र दार धन सब परिवारा ❋ भाग्यमान जिमि अलबकरारा
जे लपटे पुत्रादिक नेहा ❋ ते जब मरे बिकल संदेहा
ताते नाश बस्तु है जोई ❋ अलग रहे सुख पैहै सोई
हरि अवतार यहि हेतु धरतहैं ❋ गाय जाहि नरनारि तरतहैं
जो मन लाग एकधा नाहीं ❋ थोरा थोरा कीजिय ताहीं

जिमि भूखा अन ज्यों ज्यों खैहै ❀ त्यों त्यों बूत तासु के ऐहै
जोकोउमगनितप्रतिचलिहैं नर ❀ एक दिवस वै जाहिं पहुँचिबर
जो न चली वह पहुँची कैसे ❀ हे मिथिलेश भक्ति है तैसे
माया थोरी थोरी छूटै ❀ भक्ति थोरही थोरी जूटै

दो० पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप ।
सोई तौ थिरता सुनौ, और झूठ है भूप ॥

सो० योगीकहि भे मौन, करजोरे कह जनक तब ।
कहिये तपामितभौन, भक्तिरूप किमि होतहै ॥

तब हरिनाम दूसरो भाई ❀ सुनु नृप कहत सुलक्षणगाई
कबहुँ हँसत जब होइँ प्रसन्नित ❀ कबहुँ रोष लक्षण उनके इत
हंसन हेतु यह सुनहु बिदेहा ❀ करत भक्ति पर तुम हरिनेहा
धरते सगुण गाय जाते जन ❀ भवसागरतरि जाहिं जौनबन
गाय ध्यानधरि तरियतु जाते ❀ ये लक्षण हंसन मन माते
रोषन कर लक्षण यहि काजन ❀ सो अब सुनहु कहत मैं राजन
आयु हमारी बीती भारी ❀ फँसो रहो ममता अवतारी
बिनु हरि भक्ति बीतिगे सोई ❀ हे जनकेश देत बय रोई
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा ❀ उत्तम मध्यम और नकारा
सकल चराचर देखिय जौन ❀ चौरासी लक्षित नृप तौन
यक सों लखत ब्रह्म सबमाहीं ❀ हैं लक्षण ये उत्तम आहीं
साधू संगति सत पथ चलिये ❀ हैं ये लक्षण मध्यम पलिये
पुनि ये तेज बराबरि सबमें ❀ नहिं समुझत बिदेह वे जगमें
अब निकृष्ट लक्षण ये सुनिये ❀ माया मोह फँसे हैं दुनिये
काहू पहर असमरण पूजा ❀ ते करिलेहिं निकृष्टित मूजा

दो० जबलगितृष्णानहिंछुटत, तौलगिनहिंनबिरक्त ।
दूसर योगीश्वर कहै, तबलगिबिषयासक्त ॥
तीनिप्रकारित भक्तिके, सुनुलक्षणमिथिलेश ।

हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥
सो० माया जाको नाम, नारायण में लीन है ।
की है बिलग अकाम, तौन नाथ बर्णन करौ ॥
अन्तरिक्ष जो तीसर योगी ❀ सुनिये नृपति रामयशभोगी
माया हरि की ईहा जानो ❀ ताको त्रिगुणरूप है मानो
सात्त्विक राजस तामस जोई ❀ मारण उत्पति पालन सोई
बिनु हरि मायाकर भ्रमजाला ❀ काम क्रोध मद लोभ कराला
नाहिंन छूटि सकत कोउ राजा ❀ चहिये करिबो उत्तम काजा
महाप्रलय ऊपर हरि रचना ❀ चाहत जबहिं सुनहुनृपबचना
तब माया की ओरहि देखत ❀ माया महातत्त्व को पेखत
महातत्त्व सब उत्पति करिकै ❀ सब जगदेत बराबरि भरिकै
दो० नाशकरन चाहत जबहिं, मूशल धारा बर्षि ।
सुनो करत मायासहित, पारब्रह्म तहँ हर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर व्यवहार ।
समुझब हरिको उचितहै, सुनुजनकेशउदार ॥
जो माया हरि ईहा कहिये ❀ संसारी किमि उतरन चहिये
माया ते छूटै किमि योगिनि ❀ तुमहौ बैद्य बताइ अरोगिनि
पर बुधि नाम चौथ है जौन ❀ जब जान्यो हरि ईहा तौन
माया हरिइच्छा जब जानी ❀ तब हरि ईहा एकै मानी
हरि परिक्रमा करै नर जोई ❀ पावै सफल अफल नहिं होई
दो० ब्राह्मण लक्षण सहित है, ब्राह्मणकी मतिधीर ।
नहिं सो ब्राह्मणशूद्रसम, ताहिकहतमतिधीर ॥
ऐसो जानो जनक नृप, चारि बर्णकी चाल ।
पारब्रह्म को जानिबो, नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानो जिन्हैं, सो पायो मों लीन्ह ।
नातरुहै सब अन्यथा, जन्म बिधाता कीन्ह ॥

बोले जनक राय कर जोरी ❀ को अस बिना हृदय जोहोरी
कौन जीव सोवत हैं नाहीं ❀ जलथलनभ अकाश के माहीं
बोले पञ्चम योगी बैना ❀ हृदय तात पत्थरके हैंना
सोवत मीन सुनो नृप नाहीं ❀ और सकल भ्रमबश है जाहीं

दो० जगमें गरुआ कौनअति, अतिऊंचो है कौन ।
बोले षष्ठम योगिबर, अतिबर बुधिको भौन ॥
मेरोगिरि ते गरू है, मात सुनो नृप बात ।
आसमानते ऊंच अति, जानो है निज तात ॥

सो० कैसे मन नहिं लाग, बिषयामें मन सबनकर ।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तनसुखद सोहावनो ॥

ऐसे कृपा कृष्ण की होई ❀ मन लागै हरि यह सुनु सोई
जेते रोवां जानौ तनुमें ❀ तेते रोकन हारे जनमें
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं ❀ कर्म भोगवत है सब याहीं
बोले तब जनकेश उदारा ❀ काके बीज जगत बिस्तारा
कह मुनि पारब्रह्म को जानौ ❀ बीज कौन काको को मानौ
परदादा के दादा जाये ❀ दादाके पितु निज तब भाये
ताके सुत यह देह भई सुनु ❀ को ताको अस सकै भूप गुनु

सो० कहेउ जनक यह बात, कहौ कर्मब्यवहारअब ।
कह मुनि सुनु नृप तात, कर्मआदिब्यवहारसब ॥

दो० कही पूर्ब निष्ठाद्धिधा, ज्ञानयोग संचार ।
साख्यिनकह योगीनकह, कर्मयोग ब्यवहार ॥
अनारम्भ्य के कर्म ते, होत न नर निष्कर्म ।
सर्वत्याग संकल्पते, मिलत न सिद्ध सुधर्म ॥
मनसा इन्द्रिन रोकिजे, करत न तत्त्व बिचार ।
रहत लगाये बिषय में, मनसो मिथ्याचार ॥

असकहिकैयोगीसकल, गये ब्रह्मपुर ओर।
असकहिनारदमुनिगये, सकलमुनिन्हशिरमौर॥

अब नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ वहां टिके यदु यदुकुलराई
गड़े बितान अमौलिक लाखन ❀ राखनलगे सूरप्रभु माखन
वस्तु अमौलिक भांतिन केरी ❀ बाजहिं ठौर ठौर प्रतिभेरी
सेना देखि लगत भय हियमें ❀ तबहिं बिचारे श्रीप्रभु जियमें
सबते कहेउ चलिय अस्नाना ❀ करि अस्नान कीन्ह सबदाना

दो॰ प्रभाक्षेत्र अस्नानकरि, निशिहि टिकेउयदुवंश।
उतसुदेवमिलिसुनुनृपति, खैंच्योनिजनिजअंश॥

हलधर सह पुनि होत बिहाना ❀ सुरापान करि गे अस्नाना
भे मदमत्त उछाड़ें कूदैं ❀ और हनैं पुनि आंखी मूंदैं
देहिं परस्पर गारि प्रचारी ❀ नाहीं हँसहिं देहिं करतारी
पितु सुत नहिं घरनी हो बारा ❀ लाजहीन लपटहिं जनु दारा
लटपटाहिं धरणी ह्वै गिरहीं ❀ भाजत लड़हिं दौरि तेहि धरहीं
करहिं जलहिअस्नान सोहावन ❀ आपु बीरदल लागो आवन
पुनि पुनि जलउछालसबकरहीं ❀ डण्डठोंकि पितुसुतसों भिरहीं
एक पकरि बोरहिं जल माहीं ❀ बूड़हिं रोवहिं छांड़हिं नाहीं
एकहि डारि सुजल के माहीं ❀ चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं
उत सात्यकि कृतवर्मा जूटे ❀ भिरहिं प्रचारि केश शिर छूटे

दो॰ लरहिंभिरहिंयहिबिधिसुनहु, रहोनकाहुध्यान।
शापबश्य राजा सुनो, कोसुत कोपितु आन॥

सो॰ जलउछाल करिबीर, आयेनिज निजपक्षलखि।
जहँ सात्यकिकृतबीर, ह्वै समाज उमहत दोऊ॥

तब सात्यकि कृतबर्म बखाना ❀ भागेसि शठ नत कालनेराना
मम सहाय पाण्डव रण जीते ❀ मारे दुर्योधन भट रीते
सो मैं शत्रु आउँ कृत तेरे ❀ भागि बचो नहिं हनत सबेरे

तातै अजहुं मानु शठ बानी ❀ नत अब होनचहत कुलहानी
कह कृत होत अधम केहि धोखे ❀ निजकर बधब हनब शरचोखे
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई ❀ नत मारत बहु पाण्डवराई
अजहूं सात्यकि जीह संभारो ❀ नत अब शरन देत शिरभारो
सुनि सात्यकि कोपित ह्वै मनमों ❀ मानहुं जीतिचले रण घरमों

दो० अरेअधमसात्यकिकहेउ, सोवतले बहुमारि ।
सत्राजित पाण्डवसुवन, अजहुँबकत बशहारि ॥

सो० तब सात्यकि भटयुद्ध, पारथगुरुकोध्यानधरि ।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपिमध्यआवतभयो ॥

तब कृत कह अति कोपितबैना ❀ शठ धर्मातम देख्यों नैना
भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ ❀ ताहि समय बर पारथ रहेऊ
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा ❀ यह धर्मातम तव हम चीन्हा
असकहि सहपक्षी बर बीरा ❀ लै हथ्यार आयो तेहि तीरा
सात्यकि पक्ष सहित लै हाथा ❀ बज्रनाभिभजिगो तजिसाथा
जाय बचो अनिरुधसुत भागी ❀ शापवश्य लागी तब आगी
तब सात्यकि प्रचारि निजपक्षी ❀ कृतलैकरि सेनानिज अच्छी
बाक्य बादि करि करि उतकर्षा ❀ लागे करन मूल शर बर्षा
चहुंदिशि बाणगदा असिधारा ❀ भिरे बीर करि क्रोध अपारा
तदपि न जूझो कोउ बरबीरा ❀ टूटि गिरे हथियार व तीरा
तब सब समुद्रफेन खरलीन्हा ❀ तातै मारु भयानक कीन्हा
सुरामस्तभट जूझैं गिरिगिरि ❀ उलटिपलटि लपटैं पुनि भिरि भिरि
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी ❀ मारहिं सुभट फेनु तेहि घेरी

दो० शाप कृष्णमंशा प्रबल, अबला मनुष्य उपाउ ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ ॥

सो० जूझि गिरे बहुबीर, जे रहिगे प्रभुपहँ चले ।
योगाभ्यास गंभीर, तनु त्याग्यो जे सहसबर ॥

कृष्णचन्द्र तब भागि पधारे ❁ रहे जवनते युद्ध विचारे
मरे जूझि एको नहिं बाचे ❁ मन क्रम रहे शूर सब सांचे
इत तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना ❁ बैठे पीपल वृक्ष सुजाना
तातरु बैठि कीन्ह शुभ आसन ❁ लीलाकीन्हसुभग हितदासन
धरे जानुपर चरण कृपाला ❁ ताहि समय आयो बहुकाला
जान्यो नयन मृगाकर सोहत ❁ लैके धनुष बाण मन मोहत
बालिनाम बानर त्रेता कर ❁ धीमररूप छांड़ि दीन्हांशर
चरणमध्य चमकत तहँ जानी ❁ आयो लेन शिकार गिल्यानी
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना ❁ बन्दि चरण तब ऐंच्यो बाना
कह कृपाल बदला तुम लीन्हो ❁ रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हो
उत अर्जुन सब रथहि चढ़ाई ❁ रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई
दारुक पास कही अस बाता ❁ लै रथ जाहु अग्र तुम ताता
पाछे हम आवत सह नारिन ❁ जाते होइ न श्रम कंसारिन
दारुक हांकि सुभग रथ गयऊ ❁ उतरिरथहि हरिचरणननयऊ
उतरत दारुक के नरपाला ❁ हय समेत रथउड़िगो हाला
यह लखि दारुक बिस्मय पावा ❁ सब चरित्र तब कृष्णबतावा
यह सुनि सूत परेउ गिर धरणी ❁ तब हरिकही दुःखकी हरणी
तुम धरि ध्यान त्यागु तनुजाई ❁ अर्जुन पास कहेउ अस जाई
कछुक दिवसमें बुड़िहै ग्रामा ❁ कहेउ जाइँलै निजनिज सामा

दो० गीता ज्ञानहिं राखिहिय, जाय बद्रिका धाम ।
अबआयोकलियुगप्रबल, इतै न रहिबो काम ॥
ऐसे कहते कहत हरि, गह गह हने निशान ।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु, किङ्किणिनाद बिमान ॥

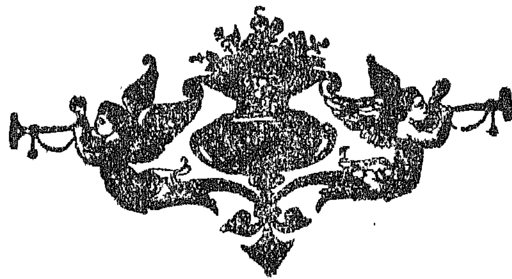
सो० याहिबिधिकृष्णकृपाल, गयेधामनिजनिजसुनहुँ ।
दारुक गयो उताल, अर्ज्जुनसों सब यों कहेउ ॥

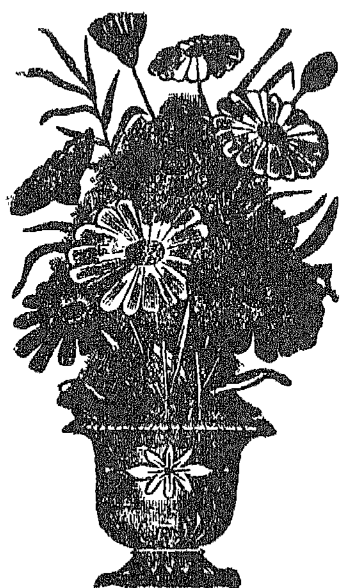
सुनि अर्जुन सह यदुकुल नारी ❁ रोवहिं गिरहिं मुर्च्छिसुकुमारी

दारुक जाय कतहुँ तनुत्यागा ❁ तब सबहिनकर मुर्च्छाजागा
सह नारिन गे जहँ रणपावन ❁ देखि भूलिगो को कत आवन
पटरानी अरु यदुकुल नारी ❁ अति दुखबूड़िमरीं कछुवारी
कछुक चितारचि धरिसुतनाती ❁ पतिसहजरतभईं सब जाती
गईंसकलमिलिनिजनिजअंशन ❁ अनिरुधसुत बिन रहेउनबंशन
इत अर्जुन पुनि धीरज धारा ❁ बज्रनाभ सह गे नृप द्वारा
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन ❁ बंशबृद्धि होवै अति पावन

दो॰ पाप नशै कीरति बढ़ै, व्यास गिरा परमान।
भणितपर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेमुशलपर्वणि
नामद्धितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



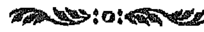




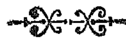
महाभारत

स्वर्गारोहणपर्व

सबलसिंह चौहान विरचित



जिसमें पाण्डवों को युद्ध से वंशक्षय होने का पश्चात्ताप करना व श्रीकृष्ण के वियोग से दुःखी होकर हिमालय के उत्तराखण्ड में गलकर स्वर्ग जाना वर्णित है



लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट विपिनबिहारी कपूर के प्रबन्ध से

मुन्शी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छापी गई

सन् १९४६ ई० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वर्गारोहणपर्व ॥

दो॰ प्रथमहिंगुरुकेचरणशुभ, सुमिरौं शीश नवाइ ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकलविघ्नमिटिजाइ॥
महादेव पदकञ्ज पुनि, सुमिरौं दोउ करजोरि।
जो अभिलाषा मन बढ़ी, सो पुरवौ प्रभु मोरि ॥

श्रीशक्ति मैं बिनवौं तोहीं ❊ माता पार लगायो मोहीं
हरिलीला बरणौं मन लाई ❊ सो तुम अक्षर देहु मिलाई
महाबीर सुमिरौं सबलायक ❊ भयभञ्जन मनबाञ्छितदायक
अगणित बिघनहरण हनुमाना ❊ सो भरोस मैं मन अनुमाना
दिहिनि मोहिं मन प्रभु उपदेशू ❊ सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू
कहौं हृदय गुरु को धरिध्याना ❊ त्यहिते पावों निर्मल ज्ञाना
अगहन मास पुनीत सुहावा ❊ बुधबासर हरि तिथि शुभ पावा
सम्बत सत्रहसै इक्यासी ❊ ताहि समय हरिकथाप्रकासी
हरिको रूप सकल जग जाना ❊ करिसबहिनकहँ दण्डप्रणामा
ईश्वर को शुभ रूप बखानी ❊ तीनि लोक सो शाखा जानी
चारिहु युग सो पत्र समाना ❊ शुभअरुअशुभ युगलफलजाना

दो॰ सबलसिंह करजोरियुग, सबसन्तन शिरनाइ ।
अस्तुतिकरत गणेशकी, अक्षर देहु मिलाइ ॥

सोमबंश हस्तिनपुर राजा ❊ नृपति युधिष्ठिर तहां बिराजा
कीन्हेउ महाभारत्त अतिभारी ❊ गुरु औ बन्धु सखा सबमारी
दुर्योधन को जीति भुवारा ❊ पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा
श्रीकृष्णकी आज्ञा पाई ❊ कीन्ह यज्ञ कछु बरणि न जाई

राज कीन्ह बहु काल सोहाई ❋ पाछे नृप के मन अस आई
गोत्रघात कीन्हें बहुतेरा ❋ कस होई भवसिन्धु निबेरा
व्यासदेव सों द्वौ कर जोरी ❋ सुनो नाथ अब बिनती मोरी
ज्यहि प्रकार हरिलोकहि जाई ❋ सो प्रसंग प्रभु कहो बुझाई

दो० तबऋषिव्यास बिचारकरि, बोले बचनबिनीत।
जाय हेवारे गलो तुम, तबतनहोय पुनीत॥

जो हेवार तन त्यागै कोई ❋ मन बाञ्छित फल पावै सोई
कोटि जन्म के पाप कमाये ❋ गलत हेवार पार तिन पाये
व्यास कहा नृप सुनु इतिहासा ❋ जो सुनि होय सकलभ्रमनासा
एक ग्राम यक पण्डित रहई ❋ नितउठि एकनृपति के जाई
श्रीभागवत सो जाय सुनावै ❋ दक्षिणा लै अपने घर आवै
एक दिवस तेहि मारग माहीं ❋ मिला नाग तेहि पण्डितकाहीं
नर बानी बोल्यो शिरनाई ❋ पण्डित दीनदयाल गोसांई
हमहिं भागवत आजु सुनावो ❋ हरिलीला अमृत रस गावो

दो० नागबचन सुनि पण्डित, मनमहँकीन्हबिचार।
हरिलीला पर प्रीतिलखि, तब कीन्हों उच्चार॥

अध्याय एक तब पण्डित बांचा ❋ मनक्रमवचनताहि लखिसांचा
कथा सुनाय बिदा जब भयऊ ❋ यकमोहर त्यहि दक्षिणा दयऊ
बिप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई ❋ नितमोहिं यक अध्याय सुनाई
गयो बिप्र तब अपने ग्रामा ❋ रहेउ नाग सो अपने धामा
नित उठि बिप्र भूपघर जाई ❋ श्रीमत कहै नृपहिं समुझाई
फिरती बार नाग गृह आवै ❋ यकअध्याय नित ताहि सुनावै
एक अशरफी सो नित देई ❋ पण्डित महा मगन ह्वै लेई
कछुक दिवस यहिबिधिगे बीती ❋ पण्डित नाग केरि शुभरीती
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा ❋ नाग सुमिरि मिथ्या संसारा

दो० पण्डित सों शिरनायके, नाग कहेउ मृदुबयन।
बचन एक मैं मांगहुँ, मोहिं देहु गुणअयन॥

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ ❀ जो तुम कहौ तौन मैं दयऊ
नाग कहेउ बिप्रहि समुझाई ❀ बद्रिक आश्रम चलौ गोसांई
बिपुल अशरफी मोरे धामा ❀ सो लैजाहु नाथ निज ग्रामा
सकलअशरफी तब द्विजलीन्हा ❀ लैकै नाग गमन तब कीन्हा
कछुकदिवसमहँ तहँ चलिआये ❀ बद्रीपति जहँ धाम सुहाये
जाय शम्भु के दरशन कीन्हा ❀ तब सो नाग उतर फिरि दीन्हा
निकट हेवारे कहँ अब चलहू ❀ जो मैं कहौं तौन तुम करहू
बिप्र निकट तब गयो तुरन्ता ❀ नाग सुमिरि तब लक्ष्मीकन्ता
कह्यो बिप्रसन सुनहु गोसांई ❀ मोहिं शीत महँ देहु चलाई

दो० बिप्र चलायो नाग कहँ, गिरो हेवारे जाइ ।
बिप्र चल्यो घर आपने, हँस्यो नाग ठट्ठाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि नागबद्रिकाश्रमगमनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

तब फिरि बिप्र उतर असदीन्हा ❀ जो तुम हँस्यो चहहुँ सो चीन्हा
तेइ तब कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ हँसेक भेद मिलै यक ठाँई
काशी पुरी शम्भु अस्थाना ❀ तहां क राजा परम सुजाना
त्यहिते जाइ पूछि तुम लेहू ❀ अनतेजाइ कह्यो जनि केहू
तबहिं तुरत द्विज गमनतभयऊ ❀ कछुकदिवसमहँकाशिहिगयऊ
पुरी मनोहर देख्यो जाई ❀ दरशनकरत सकल अघ दहई
तुरतहि चल्यो शम्भु दरबारा ❀ प्रदक्षिणा दै बिप्र उदारा
उठि तब चल्यो भूप दरबारा ❀ करि प्रणाम राजा बैठारा
प्रथमकथा द्विज कह्यो बुझाई ❀ सुनौ नृपति यहचरित सुहाई
नाग हेवारे ज्यहिबिधि गयऊ ❀ हँसेक भेद जौन कछु रह्यऊ

दो० सो वहु भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर ।
तब मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदयकी पीर ॥

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ बैष्णव तीन रहैं यक ठाँई
माहि प्रदक्षिणा करत सोहाये ❀ फिरत फिरत आश्रमयकआये

करत प्रसाद रहैं यक तीरा ❋ तीनिउ जने ज्ञान मतिधीरा
तहँवाँ एक श्वान चलि आवा ❋ त्यहिका दै तिन भोजन पावा
भोजन करि वै चलिभे आछे ❋ श्वान चला तब तिनके पाछे
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई ❋ हम नितवाह सुनोरे भाई
जन्मभूमि यह होय तुम्हारी ❋ रहो श्वान अस हृदय बिचारी
तब वह कहै लाग अस बूझी ❋ मोकहँ परत यहै अब सूझी
जहां मिलै मम उदर अहारा ❋ सोई है निज धाम हमारा
यह कहि चल्यउ तासु सँग सोई ❋ नित तिनके सँग भोजन होई
यहिबिधिमहि प्रदक्षिणा दयऊ ❋ तीनिउ जने हेवारे गयऊ
पाछे श्वान लागि तहँ गयऊ ❋ तीनिउ जने अमरपद लयऊ

दो॰ कुत्ताके श्रवणन महँ, रहे किलना द्वइ लाग।
कुत्ता गलेउ हेवारमहँ, तिनहुँ कीन्ह तनत्याग॥

सुनहु हेवारे कै प्रभुताई ❋ किलना दोउ भूप भे आई
जगन्नाथ पुर एक बिराजा ❋ यक मकसूदाबाद क राजा
मही होउँ वह श्वान सुहावा ❋ काशीपुरी रुचिर मैं पावा
सो वहु नाग हँसा अस जानी ❋ ब्राह्मण रहे बड़े बिज्ञानी
दैकै द्रव्य आइ तन त्यागी ❋ लौट्यो विप्र कौनसुख लागी
सो वह हँसा सुनहु द्विजराई ❋ मैं अपनी निज करणी गाई
यह इतिहास ब्यासअसकह्यऊ ❋ सबलसिंह संक्षेपहि लह्यऊ
सुनो युधिष्ठिर अस मन जानी ❋ गलौ हेवारे मन क्रम बानी
यह सुनि तब सहदेव बिचारा ❋ कह्यो भूप सुनु कहा हमारा
जो गुरु कह्यो सत्य सो बानी ❋ चलौ जहां हैं शारँगपानी
यदुनायक सों आज्ञा मांगी ❋ चलौ हेवारे महँ तन त्यागी
तुरत ब्यास सों आज्ञा लीन्हा ❋ द्वारावती गमन नृप कीन्हा
अर्जुन जाय तुरत रथ साजा ❋ त्यहिपर चढ्यो युधिष्ठिर राजा
अतिशोभितरथबरणि न जाई ❋ किङ्किणिध्वनि सुनि देव सिहाई

दो॰ पांचौ भाई चढ़े तब, श्रीगुरुचरण मनाय।

सिन्धु तीर द्वारावती, तहां पहुंचे जाय ॥

द्वारावती निकट नृप गयऊ ❀ तब रथत्यागि पियादे भयऊ
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहिं धामा ❀ तहँ नृप कीन्ह्यो दण्डप्रणामा
धर्मतनय सम्पुटकरि हाथा ❀ अस्तुति करत मनाइहि माथा

छं० नमामि शिखरधारणं । गोकुला गोपतारणं ॥
सुरेश मान मर्दनं । नमामि प्रभु जनार्दनं ॥
नमामि कंसमर्दनं । चाणूरगर्व गञ्जनं ॥
गयन्द प्राण रञ्जनं । ग्राह गर्ब भञ्जनं ॥
प्रहलाद प्राणरक्षकं । नृसिंह दुष्ट भक्षकं ॥
सिन्धुसुता नायकं । विप्र सुख दायकं ॥
मही भार टारणं । फणीश मानमारणं ॥
मच्छ कच्छ रूपराखी । ताके सब बेद साखी ॥
बाराह बपुष धारी । हिरण्याक्ष दुष्ट मारी ॥
नमामि रूप बावनं । ब्रह्माण्डाकियो पावनं ॥
नमामि गरुड़ बाहनं । तवशरण कामदाहनं ॥
नमामि चक्र धारणं । सुर धेनु दुःख हारणं ॥
जय बिश्वरूप स्वामी । कृपालु अन्तरयामी ॥
जय जक्तहरण न्यारे । नरदेह आय धारे ॥
मुकुन्द जक्त पालकं । गोबिन्ददनुजघालकं ॥
जय जय जलशायनं । जय सर्व गुणआयनं ॥
नमामि शरण आयों । श्रीकृष्णदरश पायों ॥

सो० यहि बिधि अस्तुति कीन्ह, पाणिजोरिकै धर्मसुत ।
कृष्णअङ्कभरिलीन्ह, करिदायाबहुबिधिमिलेउ ॥

सबलसिंह तजिमोह, जो सुमिरे हरिनामदृढ़ ।
सोई नर अति सोह, जन्म जन्म सुखपावहीं ॥

बैठे तुरत नृपहि बैठारी ❀ बोले बचन सन्त भयहारी
कहौ कुशल नृप हमहिं सुनाई ❀ हस्तिनपुर के सब कुशलाई
आयो सकल भाइ किमिआजू ❀ सो महिपाल बतावहु काजू
तब बोले नृप दोउ कर जोरी ❀ सुनहु मुरारी बिनती मोरी
हमसे ब्यास कह्यो अस बाता ❀ तुमनृपअगणितगोत्र निपाता

दो० कोटिन यज्ञ करहु जो, तीर्थ करहु समुदाय ।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नहिं जाय ॥

सो यदुनाथ कहौ समुझाई ❀ ज्यहिबिधि हम भवपारै जाई
तब बोले श्रीयदुकुलनाथा ❀ कर्म अकर्म सबै बिधि हाथा
एक बात समुझावहुं तोहीं ❀ जस नृप समुझि परत है मोहीं
आयो कलियुग महाअनीती ❀ अब न कोय निजइन्द्रियजीती
ब्राह्मण नहिं करिहैं शुभकाजा ❀ सजिहैं शूद्र तपस्या साजा
दाया धर्म रहित है जाई ❀ साधु निरादर जहँ चलिजाई
कलियुग तीरथ रहे छपाई ❀ बिरला कोउ तीरथ का जाई
कलियुग गौवैं दूध न देहैं ❀ कन्या बेचि सकल धन लेहैं
दायारहित सकल संसारा ❀ कोउ न आतम करहि बिचारा
मेघबृष्टि करिहैं अति थोरा ❀ मण्डलखण्ड बृष्टि चहुँओरा
राजा प्रजा त्रासि धन लेहैं ❀ बोइ किसान अंश नहिं देहैं

दो० करिहैं राज्य मलिच्छ सब,क्षत्री सब बिधिहीन ।
धर्महीन है जाइ हैं, तेहिते ह्वैहैं क्षीन ॥

कन्या द्वादश बर्ष प्रसूता ❀ षोड़श बर्ष जाइहै पूता
अर्थ लागि नर धर्महि करहीं ❀ बिना अर्थ नहिं दाया धरहीं
कलियुगकरम बिबिधपरकारा ❀ बरणत होई ग्रन्थ अपारा
सो संक्षेप कह्यों समुझाई ❀ आगिलचारित सुनहु मनलाई
श्रीकृष्णहि जब कह्यो बुझाई ❀ तब राजा के बिस्मय आई

बिबिधभांति मन कीन्हबिचारा ❀ अब नाहीं होई निस्तारा
तुरत कृष्णकहँ करि परणामा ❀ चढ़िरथचलतभयो निजधामा
आयो तहँवां पांचो भ्राता ❀ जहँवां रहै कुन्तिमा माता
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई ❀ काहे बदन सूख तव अहई

दो० कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा बिस्तार ।
सबलसिंह श्रीकृष्णप्रभु, भाष्यो सबै बिचार ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कहा नृपति मातहि समुझाई ❀ उत्तर पन्थ जाव सब भाई
सुनत कुन्तिमा नृप के बयना ❀ हृदय शोच भरिआयो नयना
क्यहि कारण मम पुत्र बिछोहू ❀ यहमनसमुझि भयो अतिकोहू
फिरि धरि धीरज कह्यो बिचारी ❀ सुनहु पुत्र यह बात हमारी
भूमि हेतु तुम भारत कीन्हा ❀ रणमहँलोह गुरुनसन लीन्हा
दुर्योधन के सेन सँहारी ❀ गुरु औ बन्धु गोत्रसबमारी
मारेउ करण दुशासन बीरा ❀ बिष्वक्सेन हत्यो रणधीरा
भीषमचार्य धर्मध्वज मारेउ ❀ अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ
बीर कलिङ्ग जौन धनुधारी ❀ कुँवर लक्ष्मण हत्यो प्रचारी

दो० बिबिधभांतिसंग्राम करि, जीत्यो बीर अनेक ।
पाइ एकछत्त राज्य अब, तजौ भीम की टेक ॥

सुनि माता के बचन बिनीता ❀ तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता
सुनु माता अब कलियुग माहीं ❀ राज्य करै कर पौरुष नाहीं
श्रीकृष्णहि आज्ञा शिर धरिहौं ❀ उत्तरपन्थ गमन अब करिहौं
राज्य परीक्षित देहु सुहाई ❀ करिहैं मातु तोरि सेवकाई
यह सुनि शीश परीक्षित नाये ❀ बोले नृप सन बचन सुहाये
तुम बिन नाथ मोहिं सुख नाहीं ❀ बन्धुहीन नहिं राज्य सोहाहीं
तब नृप पुत्रहि हृदय लगावा ❀ धीरज दीन बहुत समुझावा
सत्य बचन सुत कह्यो बिचारी ❀ क्षत्री धर्म सदा अनुसारी

दाया राख्यो मन करि धीरा ❋ पाल्यो प्रजा सदा तुम बीरा

दो॰ दायाराख्यो हृदय महँ, कहेउ सो किहेउ प्रमान।
राजधर्म लक्षण यही, ऐसे बेद बखान॥

भीमसेन सों कह्यो भुवारा ❋ बेगि करौ अभिषेक बिचारा
अगणित स्यन्दन तुरत सजाये ❋ ओषधिमूल फूल सब लाये
दूतन बोलि तुरत जल मांगा ❋ साजे बेगि अनेकन नागा
बिबिध भांति बाजन बजवाये ❋ ब्यास आदि सब ऋषै बोलाये
बिप्रन कीन्ह बेद उच्चारा ❋ जय जय शब्द भयो अनुसारा
महादिब्य सिंहासन आवा ❋ मणिनजटित बहुभांतिसोहावा
ब्यासदेव की आज्ञा पाई ❋ राज्य परीक्षित को बैठाई
ब्यासदेव तब तिलक करावा ❋ देशके भूपन माथ नवावा
पौत्रहि राज्य भूप जब दीन्हा ❋ सबहिनबिबिधनिछावरिकीन्हा
तबहिं नृपति मातहिं शिरनाई ❋ पांचो भाइ चले हर्षाई
गङ्गातीर तुरत नृप आये ❋ मणि मुक्ता बहुभांति लुटाये

दो॰ बोले बिप्र अनेक बिधि, दीन्हदान बहुभांति।
स्यन्दनहयगजबसनमणि, बरणतबरणिनजाति॥

बायु बेग साज्यो रथ पावन ❋ ऊंच ध्वजा अतिपरम सुहावन
सहित द्रौपदी पांचो भाई ❋ तिहि पर नृपति चढ़यो हर्षाई
उत्तर मुख तुरतहि रथ भयऊ ❋ नगरलोग ब्याकुल ह्वै गयऊ
रोवहिं पशु पक्षी सब नाना ❋ महाबियोग न जाइ बखाना
अब क्यहिके शरणागत रहिबे ❋ होइहि त्रास भागि कहँ जैबे
तब सबहिन समुझाय नरेशा ❋ कहि सब कलियुगको उपदेशा
धर्मराय सब कहँ समुझावा ❋ उत्तरदिशाहि बिमान चलावा
ब्रह्मचर्य ब्रतयुक्त सुहाये ❋ हरद्वार समीप नृप आये
को छबि हरद्वार की कहई ❋ दरशन करत महाअघ दहई
घाट सोहावन रतन जड़ाये ❋ जहँ बहु देव रहैं नित छाये

दो॰ हरि चरणन दरशनकरी, ब्रह्मकुण्ड असनान।

श्रीकृष्णपद सुमिरि तब, नृपफिरिकीन्हपयान ॥
हरद्वार उत्तर चलि आये ❀ बीरभद्र के दरशन पाये
करि दरशन नृप आगे गयऊ ❀ तपकानन प्रमुदित मन भयऊ
बिबिध मुनिनके धाम सुहाये ❀ भूपति देखि महासुख पाये
भरत दरश कीन्ह्यो हरषाई ❀ लक्ष्मण चरण बिलोक्यो जाई
करि परदक्षिण सुमिरि मुरारी ❀ सुरप्रयाग देख्यो भयहारी
फेरि नृपति तहँवां चलि आये ❀ शिव आश्रम जहँ बेदन गाये
शंकर दरश हेत मन ठाना ❀ सो गिरिनाथ हेत सब जाना
छिपे शम्भु महिषा उर माहीं ❀ ढूंढ़न लगे मिलहिं हर नाहीं
कह नृप सुनहु बचन अब ताता ❀ कहँ गे शम्भु कहौ सो बाता
दो॰ कह सहदेव बिचारि करि, सुनहु भूमिपति बात ।
यहै जानि छिपिरहे शिव, हम कीन्हे कुलघात ॥
सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं ❀ क्रोध कीन्ह बायूसुत तबहीं
जो महिषा उर छिपे महेशू ❀ तौ तुम सुनौ मोर उपदेशू
मम चरणनके बीच निकारी ❀ तब दरशन देहैं कामारी
भूप कह्यो सुनु भीमकुमारा ❀ क्रोध किये नहिं काज हमारा
शंकर दीनबन्धु जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावहिं शीशा
धर्मराय तब अस्तुति ठाना ❀ पांचौ भाइन यह मत माना
जय जय शंकर जनभयहारी ❀ दीनबन्धु भयहरन पुरारी

छन्द त्रिभंगी ॥

जय शिवशंकरशरण भयहरण व्यापक रूपअनूपा ।
पाणित्रिशूल दरिद्रदवन प्रभु कृपासिन्धु सुररूपा ॥
सुर मुनि पालक खलकुल घालक जय कृपालु वृषकेतू ।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू ॥
अङ्ग विभूति अभूषण सोहैं देखिरूप सुर नर मुनि मोहैं ।
कण्ठशेष गरलकृत भक्षन शीश जटा गङ्गाजी सोहैं ॥

हमहिं कृतारथ करनहेत अब दरशन देहु कृपाला ।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप बिनवैं जयजय दीनदयाला ॥
जयशिवसबलायकसबजगनायकगञ्जनबिपतिसमूहा।
गुण औगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर जूहा ॥

सो॰ यहि बिधि बिनती कीन्ह, पाणि जोरि धर्मराजतहँ ।
तब हर दरशन दीन्ह, तबकेदारपतिपरछिनृप॥
परछि केदार भुवाल,बिनयकरतमहिभालधरि।
जय जय शम्भु कृपाल, प्रभु मोहिं पार लगाइये ॥

छन्द ॥

नमामि ईश ईश्वरं । पाहि मे प्रमेश्वरं ॥
नमामि आशुतोषनं । समस्तलोक पोषनं ॥
अनेक रूप धारणं । बिभञ्जलोक कारणं ॥
गिरीश रूप आगरं । त्रिलोक में उजागरं ॥
कपालमाल शोभितं । पाहि शरण मैनितं ॥
नमामि गङ्ग धारणं । भवसिन्धुसुतातारणं ॥
व्यापकं बिभुं प्रभो । गुणाकरं कृपाल भो ॥
दयाल दीन नायकं । सन्त सुःखदायकं ॥
कराल काल भक्षकं । स्वभक्त दीन रक्षकं ॥
हिमवन्तसुतानायकं । सर्व सिद्धि दायकं ॥
निरङ्कार रूप नाथ । अर्थ चारि प्रभो हाथ ॥
शैलनाथ शिवनाथ । नागेश्वर रामनाथ ॥
दरशदियोजानिदीन। मैंतौ सर्वज्ञ हीन ॥
बार बार हाथ जोरि । राखो अभिलाषमोरि ॥

दो० बार बार बिनती करी, भूप दण्डवत कीन्ह ।
मनवाञ्छित बरपायो, शम्भु आशिषहिदीन्ह ॥

पांचो भाइ बहुरि शिरनाई ❀ आगे कहँ रथ दीन चलाई
चलेउ बद्रिकाश्रम को ताके ❀ अगणित पर्वत नांघत बांके
शैलावत पर्वत पर आयो ❀ महाऊंच नहिं मारग पायो
ताहि तूरि तहँ पवनकुमारा ❀ रजकर शृङ्ग तूरि महिडारा
निर्मल पन्थ कीन्ह बलवाना ❀ आगे चलत भजत भगवाना
बिश्ववती गिरि देख्यो जाई ❀ मारग तहां भीम नहिं पाई
बायें हाथ तूरि तिहि दयऊ ❀ तहां पन्थ अतिनिर्मल भयऊ
तिहि पर चढ़िगे पांचो भाई ❀ शिखर बिमानवती नियराई
तहां एक अति दैत्य प्रचण्डा ❀ आगे आइ मिला बरबण्डा
देखि नृपहिं अतिहर्षित भयऊ ❀ वचनक्रोध अतिशीतल कहेऊ
सुफल जन्म मम भयो भुवारा ❀ शत्रुदरश मोहिं मिलेउ तुम्हारा
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा ❀ मिटा कोटि दुख दारुण दावा

दो० आजु जन्म ममसुफल भा, सज्जनरिपु गृह पाइ ।
देहु युद्ध धर्मराज मोहिं, कहैंलाग गोहराइ ॥

कहा भूप सुनु निशिचर राजा ❀ मैं छांड्यों सब लौकिक काजा
ब्रह्मचर्य हम पांचौ भाई ❀ बर्त युक्त नहिं युद्ध सोहाई
अस्त्र सकल अर्जुन धरि दीन्हे ❀ अगमपन्थमहँ काहु न लीन्हे
शङ्कर दरश कीन्ह हम जबहीं ❀ भीमहु गदादीन्ह धरि तबहीं
पण्डित है भाई सहदेऊ ❀ नकुल न जान युद्धकर भेऊ
यहि मा लरनहार नहिं कोई ❀ हम सों युद्ध कबहुँ नहिं होई
यह सुनि मेघनाद अस कहई ❀ बिना युद्ध नहिं देवै जाई
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा ❀ पुनि पुनि कहै निशाचर बीरा
सुनिकै भीम क्रोधभरि आयो ❀ धर्मराय सों वचन सुनायो

दो० आज्ञादेहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतौं प्रचारि ।
भूपति कहेउ भीमसेन, राखहु क्रोध सँभारि ॥

कहा पन्थ कहँ जो कोउ जाई ❀ क्रोधै तजै शास्त्र अस कहई
हरिजनकहँ रिस कबहुँ न आवै ❀ द्वादश षष्ठ पुराणै गावै
दयत नृपति कहँ बहुत प्रचारा ❀ नहिं आवा कछु हृदय खभारा
मेघनाद तब गर्जत भयऊ ❀ जनु घनघोर महाधुनि कयऊ
प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा ❀ कीन्ह्यसि नाद महापरचण्डा
झपटि द्रौपदी को लै गयऊ ❀ भीम हृदय अतिबिस्मय भयऊ
कहा भूपसन पवनकुमारा ❀ नाथ भयो अपमान हमारा

दो० पञ्चाली को दैत्य अब, लैगा अपने धाम ।
धिक धिक जीवन जन्म मम, जो न कीन संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणिद्रौपदी
हरणंवैशम्पायनराजाजनमेजयसंवादोनाम
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

असकहि भीम क्रोध भरिआयो ❀ मानहुँ सोवत सिंह जगायो
ताल ठोंकि पर्वत लै धायो ❀ जहँवां असुरधाम तहँ आयो
कोटिन दैत्य महा बरियारा ❀ धाये गरजत बिबिधप्रकारा
शिखर प्रहार भीम तब कीन्हा ❀ मानहु बज्रघात करि दीन्हा
पवनतनय अति भुजबलजोरा ❀ सहस निशाचर गहि शिरफोरा
मेघनाद कहँ भूमि पछारी ❀ हाहाकार भयो अति भारी
मारि निशाचर तपासिनलीन्हा ❀ तबहिं द्रौपदी आशिष दीन्हा
धन्य पवननन्दन बलवाना ❀ अपनि प्रतिज्ञा कियो प्रमाना
धन्य महाबल अतिभुज जोरा ❀ राख्यो भीम सत्य तुम मोरा

दो० धन्य धन्य पाण्डवसुवन, द्रुपदी कीन बखान ।
पांचोभाइन सुमिरिहरि, पुनि फिरि कीन पयान॥

वैशम्पायन कहि समुझाई ❀ सुनु जनमेजय नृप मनलाई
कथा पुनीत सुनत दुख भागे ❀ पांचौ भाइ चले पुनि आगे
यूप कूप आगे शत बीरा ❀ देखत कूप भीम रणधीरा
कहा कूप सुनु पाण्डुकुमारा ❀ सुनहु नाथ अब कहा हमारा

क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये ❀ हमहूं दरश तुम्हारे पाये
अस शुभ बचन भूप जब कह्यऊ ❀ सुनत भीम तब शीतल भयऊ
आगे चले युधिष्ठिर राजा ❀ बेनवती देखिनि नृप साजा
देवसुता तब आगे आई ❀ दोउ करजोरि कहा शिरनाई
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा ❀ अबकछु सिखवन सुनहु हमारा
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी ❀ महाशिखर आगे भयकारी

दो० इहवाँ रहहु नरेश तुम, करहु बिबिधबिधि भोग।
सुरपुरते अतिसरिससुख, छूटै जक्क बियोग॥

कहेउ भूप सुनु कन्या बानी ❀ बेद चारि अस कहैं बखानी
राजपसार लोक तिन त्यागा ❀ हरिचरणन तिनकर मन लागा
तिनसम धन्य और नहिं कोई ❀ हरिहि पियार सदा वै सोई
अन्तसमय केवल पद पावैं ❀ फिरियहिजक्क बहुरि नहिं आवैं
मैं निज पुर त्यागो अस जानी ❀ कहतभयो नृप अति मृदुबानी
बेनवती समुझाय भुवाला ❀ बहुरि सुमिरिनिजइष्टगोपाला
धराशिखर ऊपर चढ़ि आये ❀ महागहन नहिं मारग पाये
भीम हृदय तब कीन्ह बिचारा ❀ धराशिखर अतिऊंच अपारा
सब पर्बत ते अति बिस्तारा ❀ ताके शृङ्ग तूरि महि डारा

दो० धरा पर्बतन तूरिकै, कीन्हों पन्थ पुनीत।
हरिहरसुमिरतबन्धुसब, आगे चलेउ बिनीत॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ ❀ देखि पाण्डवन मोहित भयऊ
आगे आइ नृपति शिरनाई ❀ मृदुल बचन अति कह्यो सुहाई
धन्य देव राजन शार्दूला ❀ सत्यबादि तुम सुकृती मूला
बिबिध बिलास महाअस्थाना ❀ करहु भोग नृप परम सुजाना
देवन कन्या परम सुहाई ❀ सो तुम्हारि करिहै सेवकाई
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये ❀ सो पैहौ नृप नित मनभाये
करहु बिलास त्याग निज हेतू ❀ रहौ नाथ सब बन्धु समेतू
उत्तर पन्थ गहन बहुतेरे ❀ तहँवां पन्थ न पैहौ हेरे

देव सुतन तब रूप देखावा ❋ देखि भूपके नहिं मनभावा

दो॰ भद्रकालिसों धर्मसुत, बहुविधि कहेउ बुझाइ।
इन्द्रपुरी सों सरिस सुख, सो मैं चलेउँ बिहाइ॥

हम जाइब श्रीपति के धामा ❋ हम से नहीं भोगसे कामा
भद्रकालि समुझाइ नरेशा ❋ आगे चलेउ अगम जहँ देशा
शिखर अनन्त महाविस्तारा ❋ शतयोजन सो ऊंच अपारा
चढ़ेउ युधिष्ठिर पांचौ भाई ❋ संग द्रौपदी पन्थ न पाई
आगे भीम पन्थ तहँ कीन्हा ❋ गिरिके शृङ्ग तूरि तब दीन्हा
नांघि अनन्त शिलापर गयऊ ❋ बद्रीपति कहँ देखत भयऊ
दूरिहिं ते प्रदक्षिणा कीन्हा ❋ ठाकुरके दरशन नहिं कीन्हा
अस्तुति कीन्ह नृपति हरषाई ❋ जय कृपालु सन्तन सुखदाई

त्रिभङ्गी छन्द ॥

जय भवतारण असुरसँहारण जय चक्रदधर स्वामी। महिभारबिभञ्जन सुरमुनिरञ्जन जय कृपाल अन्तर्यामी॥ जय गदापदुमधर जिनहिं नमत हर जासु चरण श्रीगङ्गा। प्रकट भई संसार में आइ कीन्हेनि पाप सकल भङ्गा॥ जय दुष्टनिकन्दन जय जगबन्दन तुम भस्मासुर भस्म करी। तुमहीं प्रभु प्रहलाद उबारेउ हरिणाकुशको उद्र बिदारेउ तब ह्वैकै नरसिंह हरी॥ ते सबलायक सब सिधिदायक जिनकर मन रत पदकञ्जा। सुमिरै नाम हेत सब त्यागी धन्य धन्य ते नर बड़भागी जिन माया को दल भञ्जा॥ तुमहीं प्रभु मधुकैटभ मारेउ तिहिके तनकै महि बिस्तारेउ सुर ताल को बल भञ्जा। मच्छ कच्छ नरसिंह रूप बावन परशुराम बपु ह्वै

हरि सुर सन्तन को दुख गञ्जा ॥ सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमहीं प्रभु यह जग बिस्तारा कोइ न पावै पारा । निगमागम निशि बासर गावैं शेष शारदा शङ्कर ध्यावैं बीते कल्प हजारा ॥ गुण औगाह थाह नहिं पावैं अपनी मति भरि सोहि नहिं गाई को कबि करै बखाना । जेहि पर नाथ दयाकरि हेरेउ तेहिकी मति मद मोह न घेरेउ सो चरणन लपटाना ॥ बार बार करजोरि धर्मसुत सहित द्रौपदी औ अनुजन युत अस्तुति करत सुजाना । मनबाञ्छित फल सो दीन्हेउ मोहिं जय कृपाल प्रभु मैं याचौं तोहिं यहि बर मन अनुमाना ॥ फिरि नृप बन्धु सहित गे तहँवां ऋषयसमूह बिराजै जहँवां कीन्हेउ दण्डप्रणामा । लोमशादि मुनि सकल बिराजैं निज निज बेदिन ऊपर राजैं तेज ज्ञानके धामा ॥

दो० गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम ।
अङ्गीऋषि शृङ्गीऋषि, जिनजाने हरिनाम ॥

पारस उदालीक मुनि ज्ञानी ॐ औ कौण्डिल्य महासज्ञानी
शोभाऋषै गर्गऋषि तहँवां ॐ मारकण्डेय सहित हैं जहँवां
सुरगुरु कपिलदेव तहँ आजा ॐ बिश्वामित्र करहिं तपसाजा
सूर्यबंश के गुरु तहँ देखे ॐ राजै धर्म धन्य करि लेखे
बामादिक अरु ऋषय बशिष्ठा ॐ ये सब बैठे सकल सरिष्ठा
बालमीकि सब ऋषै अनेका ॐ ऋषिदल मध्य जे परमबिबेका
भृगुनायक औ भारंगादी ॐ और सकल परमारथबादी
अत्रीमुनि तहँ ज्ञाननिधाना ॐ कुम्भज आदि सकल सज्ञाना
परमहंस देखत मन मोहै ॐ मानहुँ बेद धरे तन सोहै

सनक सनन्दन सनतकुमारा ❀ शौनकादि नारदहि निहारा
जान्यो सुफल जन्म मम होई ❀ ऋषि समूह जब देख्यो सोई
दो० सबकहँ कीन्ह्यो दण्डवत, धन्य जन्म निज जानि।
सबलसिंह नृप बन्धु युत, चरण परेउ तब आनि॥
तब ऋषि बोले गिरा सुहाई ❀ आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई
नारदऋषि बोले तब बानी ❀ सुनहु धर्मनन्दन बिज्ञानी
करतिउ राज सकलसुखनाना ❀ अबहीं काहेक कियो पयाना
बैतरणी अति दूरि भुवाला ❀ मारग अगम बसै बहुकाला
तहँको पहुँचब कठिन नरेशा ❀ काहेक तज्यो रुचिर अति देशा
हस्तिनपुरी महासुख सोहै ❀ जेहिके देखत सुरगण मोहै
सुनि नारदके बचन सुहाये ❀ भूप जोरिकर बचन सुनाये
मोरिभाग्य अतिबल ऋषिराई ❀ जो तव चरण बिलोक्यों आई
नृप करजोरि मुनिनके आगे ❀ अस्तुति करन लगे अनुरागे

छन्द नाराच॥

नमामि सिद्धिदायकं। मुनीश सन्त नायकं॥
बेद रूप आगरं। श्री ब्रह्मपुत्र नागरं॥
सर्बज्ञ नाथ ब्रह्ममय। नमोनमः कृपालजय॥
जयब्रह्मबिष्णुशम्भुरूप। अग्नि सूर्य चन्द्ररूप॥
बेदनाथ बेदरूप। तारो भ्रमजाल कूप॥
नमामि मोह त्यागी। हरि रूपमें अनुरागी॥
मोहिं दीन जानिकै। दरशादियो आनिकै॥
पाहि पाहि नाथ मे। सनाथ भयो देखि ते॥

सो० अहो भाग अवगाह, देख्यों चरण मुनीश तव।
छुटिगे कोटिन दाह, सबलसिंह नृप कहेउ अस॥
सुनहु ऋषय कह बहुरि नरेशू ❀ ज्यहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू
आयो कलियुग महाप्रचण्डा ❀ अब सबके उर बस पाखण्डा

नीति बिचार करी नहिं कोई ❋ बिबिधभांति अनीति जग होई
नारदऋषि तब बोले बयना ❋ सुनहु महीप सकल गुण अयना
मलकीन्हेउ तुम यह मतठाना ❋ जो उत्तर पथ कियो पयाना
नारद कहन लगे बिज्ञाना ❋ सुनहु महीप हृदय धरि ध्याना
यहितनुअमितअनीतिहिरहहीं ❋ अपनी बृद्धि सकल वे चहहीं
अस्थि मांस नारी त्वच जोरा ❋ काम क्रोध तिहिमा बरजोरा
माया मोह साज भय सङ्गा ❋ इनके बिबिध प्रकार तरङ्गा
रजो तमो औ सतगुण आवे ❋ इनसब जीव बिबिधबिधि भावे

दो॰ ये सब करहिं कर्मबश, जीव कहै हम कीन्ह ।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहिते इनमहँ लीन्ह ॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं ❋ बहुबिधि नींद बश्य ह्वै रहहीं
प्राकृतकर्म जीव कहँ लागै ❋ होइ सुखी जो इनकहँ त्यागै
कर्म अकर्म उभय जग करई ❋ त्यहिते देह अनेकन धरई
इन्द्री स्वाद भूलि जग माहीं ❋ हरिशरणागत आवत नाहीं
दश इन्द्रिन के दशौ बिचारा ❋ वे निशि बासर चलैं अपारा
नेत्रन रूप रूप बश करई ❋ देखै की इच्छा बहु धरई
श्रवणन शून्य सुनै कछु जबहीं ❋ जीवहि आइ करै बश तबहीं
जिह्वै पर रस रस को चाहै ❋ नासा गन्ध गन्ध बश राहै
त्वचा बसत अस्पर्श सुहाई ❋ शीत तपनि दुख सुखहि बताई
औरौ इन्द्रिन के अति स्वादा ❋ सो वे चहैं गयरि मर्यादा
औरौ चारि अवस्था गाढ़ी ❋ तिन बहुभांति जीवकहँ दाढ़ी
बालक होइ युवा ह्वै जाई ❋ बृद्ध होय तनु जाय पराई
योनि लक्ष चौरासी जोई ❋ कर्म निबन्ध करै जिय सोई
यहि प्रकार जिय हरिकहँ भजई ❋ रहत अधीन संग कस तजई
तीनि अवस्था बेद बखाना ❋ जाग्रत स्वप्न सुषोपति जाना
पांच पचीस तत्त्व बलवाना ❋ इन सँग जीव भयो अज्ञाना
शोधि मनै नहिं धावै पावै ❋ इनते गाँसि नादपर लावै

त्रिकुटी संयम चढ़े गगनमा ❀ सुरति बांधि देखो निजतनमा
पांचो शब्द होयँ झनकारा ❀ सोइ साहब त्रिभुवनते न्यारा

सो० प्राकृत संग छोड़ाइ, मनकहँ गांसि बिचारिकरि।
हरिपदसुरतिलगाइ, फिरि न परै भ्रमजाल नर॥
समदरशी ह्वै जाइ, एकरूप सब जक्त लखि।
कहु नारद समुझाइ, सबलसिंह भवतरै सोइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहण-
पर्वणिविज्ञानवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

जब नारद राजहि समुझावा ❀ तत्त्वज्ञान को भेद बतावा
तब नृप बहुरि हरषि शिरनाये ❀ सहित द्रौपदी पन्थ सिधाये
आबू शिखर गये सब भाई ❀ तहँवां दैत्य मिले समुदाई
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे ❀ राजहिं आइ पन्थ महँ घेरे
मांगहिं युद्ध गर्जि घनघोरा ❀ प्रलयकाल रव भै चहुँओरा
कोइ गयन्द ह्वै रूप देखावैं ❀ ह्वै केहरि कोइ गर्जत आवैं
अगणितरूप भयंकर देखी ❀ नृपति भीमसों कहेउ बिशेखी
क्रोध न कीन्हेउ पवनकुमारा ❀ अब मन सुमिरहु जक्त उदारा

दो० बासुदेव भगवान प्रभु, हरे कृष्ण गोपाल।
गोपीपति गोबिन्द कहि, आगे चलेउ भुवाल॥

तहँवां शीत प्रबल अतिभयऊ ❀ तुरत द्रौपदी तनु गलिगयऊ
पञ्चाली तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह बैकुण्ठनिवासा
देखि भीम अतिशोच बढ़ावा ❀ दोनों नयन नीर भरि आवा
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा ❀ तुम सम बर्त न काहू कीन्हा
जस रोहिणी चन्द्रमहिं जाना ❀ जस रुक्मिणी कृष्ण कहँ माना
तस अर्जुन कहँ मानेहु देवी ❀ निशिदिनचरणनृपति के सेवी
तब व्रत राखा कृष्ण मुरारी ❀ उभय सभामहँ होत उघारी
भीमहिं बाढ़ा शोच अपारा ❀ तब समुझायो धर्मकुमारा
भीमसेन तुम तजहु कलेशू ❀ निगमागमकर अस उपदेशू

भारत भयो द्रौपदी हेतू ❀ जूझिगये सब गुरुन समेतू
त्यहिकारण तनु गत ह्वै गयऊ ❀ धरहु धीर राजहिं अस कहेऊ
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा ❀ धर्मसुवन बहुबिधि उपदेशा

दो० जनअर्दन यदुनाथ कहि, शिरीकृष्ण कुलकेतु ।
आगे बढ़ेउ नरेश तब, पांचौं भाइ समेतु ॥

कछुक दूरि आगे जब गयऊ ❀ कञ्चनपुरी बिलोकत भयऊ
रतनखम्भ सब जड़ित सोहाये ❀ कञ्चनके कपाट बहु लाये
देवन कला बिबिध परकारा ❀ जिनके रूप न कोउ संसारा
रति रम्भा उर्वशी लजाहीं ❀ और त्रिया को लेखे माहीं
शिव हरिशक्ति गनै को भाई ❀ जक्तमातु उपमा किमि लाई
रूपराशि कन्या सब धाई ❀ धर्मतनय सों कह्यो बुझाई
अहहु भूप तुम शीलनिधाना ❀ राज्य करौ हमरे अस्थाना
बिबिधभांति सुखकरहु नरेशा ❀ देवसुतन कर अस उपदेशा
पांचों भाइ रहो सब जानी ❀ बोली सकल बचन रससानी
तब राजैं सब बचन सुनाये ❀ हम तौ राजभोग तजि आये
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी ❀ तब हमचले सकलसुख त्यागी

दो० राजबिषय रस भोग हैं, मैं त्यागेउँ अस जानि ।
शिरीकृष्णपदपङ्कज, मति लागे भय हानि ॥

अस कहि भूप चलत पुनिभयऊ ❀ नाम अनङ्ग शिलापर गयऊ
शीतप्रबल कछु बरणि न जाई ❀ सहदेव तनु तहँ गयो बिलाई
कीन्ह भीम तहँ अति अपघाता ❀ बुद्धिमन्त नाहिं देखिय ताता
कह्यो भीम भा बन्धु बिछोहू ❀ यहसुनि नृपहि भयो अतिकोहू
ज्योतिष सकल बिशारद भाई ❀ सकलशास्त्रमतिबरणि न जाई
बेदनिधान सकल गुण पूरे ❀ क्षत्री धर्म अस्त्र के पूरे
अहह बन्धु गत भे क्यहि पापा ❀ सुमिरिभीमअतिकीन्हाबिलापा
राय युधिष्ठिर तब समुझाये ❀ कूर्मशिला ऊपर चढ़ि आये
अतिघनघोर शिला तब कीन्हा ❀ नकुलहिआयतोपितेहिलीन्हा

कीन्हकोलाहल तेहि भयकारी ❋ अतिप्रज्वलित शीत त्यों डारी
तहँवां नकुल देह गलि गयऊ ❋ पवनतनयके अतिदुख भयऊ

दो० रूपराशि ममबन्धुदोउ, सकलगुणनकी खानि ।
रोवहिं अर्जुन भीम सब, बल औ शील बखानि॥

नृपति समेत क्षण ककरि शोचू ❋ आगे चल्यो छांड़ि सबशोचू
नाम गोमती शिला पुनीता ❋ त्यहिपरप्रबलअमितअतिशीता
गर्जि धनञ्जय कहँ लै लीन्हा ❋ गजपुरनाथ शोच तब कीन्हा
अहह बन्धु तुम यज्ञ कराई ❋ घोड़ा लायहु भूमि फिराई
तुम्हरे बल विप्रन कहँ दाना ❋ दीन्ह्यों मैं जो मो मन माना
महाधनञ्जय कृष्ण पियारे ❋ तुम राजन के गर्ब प्रहारे
तुव भुजबल सुरनाथ गयन्दा ❋ पूजि कूजि मैं कीन्ह अनन्दा
तुम बिनु दिशा शून्य ह्वै गयऊ ❋ अहह बन्धु कहँवां तुम गयऊ
धिक ममजन्म युधिष्ठिर कह्यऊ ❋ जो मम बन्धु नाश ह्वै गयऊ
क्षणक शोच फिरि शोच बिहाई ❋ आगे चलत भये द्वौ भाई
बैतरणी जहँ नदी सोहाई ❋ तिहि अस्थान गये द्वौ भाई

दो० बैतवती जहँ शिला बड़, गर्जा प्रलय समान ।
तिहितर तोपि गयो पुनि, बायूसुत बलवान ॥

नृपति युधिष्ठिर शोच बढ़ावा ❋ श्वानस्वरूप तहां यक आवा
ताहि देखि नृप कह्यउ बिचारी ❋ अहो श्वान कहँ बास तुम्हारी
उत्तर पन्थ स्वर्ग भयकारा ❋ तुम कहुँ देख्यहु भीम कुमारा
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा ❋ कहो श्वान कछु इनकर भेवा
यह सुनि श्वान कह्यो मृदु बानी ❋ सुनहु युधिष्ठिर नृप बिज्ञानी
बैतरणी यह नदी पुनीता ❋ कृष्णस्वरूप कहत अस गीता
मज्जन करहु पाप मिटिजाई ❋ फिरि नहिं जक्कजन्म नियराई
नरतनु मोह लोभ सँग लागे ❋ मायारवगुण तीनि अभागे
यह नरदेह मूत्र मल भोरी ❋ यहिमा पांच तत्त्व हैं जोरी
कामादिक बिष्ठा लपटानी ❋ करुअस्नान नृपति अस जानी

यामें मज्जन करै जो कोई ❀ पलटै देह देवतन होई

दो० श्वानकह्यउ समुझाइकै, करहु नृपति अस्नान ।
सकल पाप तब छूटै, आवै स्वर्ग बिमान ॥

तुरत नृपति मज्जन तब कियऊ ❀ छुटिगा मोह ज्ञानवर भयऊ
भूप श्वान की अस्तुति कीन्हा ❀ तुम ममपिता ज्ञान मोहिं दीन्हा
माता बन्धु सखा तुम मोरे ❀ यहिबिधि नृपति कहत करजोरे
तिहिक्षण आवा बिष्णुबिमाना ❀ तेजपुञ्ज रबिकिरणि समाना
को शोभा त्यहि यान कि कहई ❀ शेष शारदा त्यउ ठगिरहई
मुक्तन के गुच्छा चहुँ ओरा ❀ मणिनसिंहासन तिहिपरजोरा
महापुनीत रत्नमय सोहा ❀ जानै धर्मसुवन जिन जोहा
बिबिध सुगन्ध लपेटि सोहावा ❀ लेकै बिष्णुदूत तहँ आवा
धर्मतनय सन कहेसि बुझाई ❀ चढ़हु बिमान नाथ अब आई
चढ़ि बैकुण्ठहि चलो भुवाला ❀ तहँभोगहुसुखबिबिधविशाला
सकल देव जहँ श्रीभगवाना ❀ मुनिजन तहां बसत हैं नाना
बिबिधतपस्या जिनमहिकीन्हा ❀ तिनहिंनिवासतहांबिधिदीन्हा

दो० बिष्णुदूतके बचनसुनि, कहा नृपति करजोरि ।
श्वान चढ़ावो यानपर, प्रभु बिनती सुनि मोरि ॥

बिना श्वान नहिं चढ़ौं बिमाना ❀ नहिं बैकुण्ठ करौं प्रस्थाना
नृपबाणी सुनि सूर्यकुमारा ❀ कह्यो धन्य सुत ज्ञान तुम्हारा
चढ़हु तात हरिरुचिर बिमाना ❀ मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ ❀ सुरतरु सुमन बृष्टि नभ करेऊ
धर्मराज सुररूप देखावा ❀ राइ युधिष्ठिर पद शिरनावा
धन्य जन्म मम भयो सोहावा ❀ पिता तुम्हार दरश मैं पावा
नेमक्रिया सब सुफल हमारे ❀ तात चरण अब देखि तुम्हारे
नमोऽस्तुते कहि बारहिंबारा ❀ हरिबिमान पर चढ़्यो भुवारा
बिष्णु बिमान बैठि जब राजा ❀ तबहरिगणन अभूषण साजा
मुकुट मनोहर शीश बँधावा ❀ पीताम्बरपट आनि ओढ़ावा

नवभूषण भुज बांधि बहूंटा * कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा
हरिस्वरूप जस बेदन गाये * विष्णुगणन तस नृपहि बनाये
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना * ढोरत चमर उड़ान बिमाना

दो० यहिबिधि नृपहिं विष्णुगण, क्षणमहँ लैगे धाम ।
जे छलछांड़ि भजहिं हर, तिनहिंदेतगति राम ॥

हरिगण नृपहि धाम लै आये * श्रीनिवास के दर्शन पाये
देखि भूप दोनों करजोरी * जय दयाल राखहु रुचि मोरी
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा * यह सुनि आपु उठे श्रीरामा
क्षीरनिवास हृदय महँ लाये * गहि भुज अपने ढिग बैठाये
नृप बैकुण्ठ बिराज्यो जाई * बैशम्पयन कथा सब गाई
जनमेजय सुनि अतिसुखपावा * मुनिकहँ बहुरि हर्षि शिरनावा
कथा पुनीत सुनत दुख भागा * आगे बहुरि करहु अनुरागा
मुनिअभिलाष नृपतिकी जाना * फिरि आगे तब कीन्ह बखाना
हरिपुर नृपति जाइ सुख पाई * तहां बिलोक्यो चारिहु भाई
सहित द्रौपदी रूप अनूपा * द्रोणाचार्य सहित सब भूपा
देवरूप तहँ भीष्मपितामा * करणसहित राजहिं हरिधामा
दुर्योधन आदिक बलवाना * जिन जिन भरत युद्ध रणठाना
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते * हरिपुरमध्य बिराजहिं तेते
नृप बैराट सहित सुत देखा * औरहु बहुत करै को लेखा
गांधारी माता तहँ देखा * माद्री सहित धरे शुभ बेखा
जयद्रथ नृप अहिबरणकुमारा * सबहिनकहँ तहँ देखि भुवारा

दो० भारत महँ जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
बिबिधभांतिसुखपायो, धर्मसुतसहितनिहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पाण्डवा गयऊ * सुनि जनमेजय कहँ सुखभयऊ
बारम्बार जोरि युग पानी * ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी
आनन शशि तवनाथ पुनीता * अमृतमय यह गिरा बिनीता
तृषितहृदयसुनिअतिसुखभयऊ * नानाभांति लाभ मैं लहाऊ

यह तन कल्प पाण्डवन केरा ❀ सुनि छूटै चौरासी फेरा
ब्यासदेव भारत महँ भाखी ❀ यहिके चारि निगम हैं साखी
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी ❀ पाइहि सिद्धि सकल सुख भूरी
जो नर या कहँ झूठ बिचारी ❀ होइहि अधम नरक अधिकारी
क्षत्री सुनै समर जय पावै ❀ जो बिश्वास मानि यह गावै
ब्राह्मण पढ़ै सुनै छल त्यागी ❀ बेदनिधान होय बड़भागी
जो नर नारि सुनै मन लाई ❀ त्यहिकर पाप सकल मिटिजाई
अन्तकाल निर्भय हरिलोका ❀ जाइ बसै तजिकै यमशोका
काशी प्राग गया अस्नाना ❀ तसफलयहसुनि ब्यास बखाना
दान अनेक देय जो कोई ❀ तस फल होय सुनै यह सोई

सो० शंकर शारद शेश, चारिहु बेद सहस्र षट ।
सबकरअसउपदेश, भजुहरिचरणबिहायछल ॥
सबलसिंहमतिहीन, ब्यासकहततसकहेउहम ।
प्रभु तारत जनदीन, सोइ मनकर्मभरोसकरि ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि
श्रीपाण्डवस्वर्गवासवैशम्पायननृपजनमेजय-
संवादोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति श्रीस्वर्गारोहणपर्व समाप्तम् ॥